বালনাত জীকাৰৰ মুন্দানাত আন্দাক —१४% জনাকে কৰু নিশানক। জনাকেয়া কৈ

> Lakodaya Semen, Tetle No 145 BHARATIYA ITIBAS RE DRISHTS (Halwy) Dr. Iputi Franci Jan. Shere'the Josephia Publication Second Edition 1988 Price Sa. 10:00 O अस्तिक कामधेत दशय क्रफेलर मार्गाचर राज्यं औरत. दालका---------PROPER PERSONS इर्चक्य वर्ग राजको-६ Bus Inc. १६९०५१, देवाची तुमान कर्न, निज्ञीfielle steate tett

> > क्यारी जूरवासन, नाराचरी-५

ऋामुख

इस पुस्तकमें प्राचीनतम कालसे लेकर स्यतन्त्रता-प्राप्ति पर्यन्त सम्पूर्ण भारतीय इतिहासका क्रमबद्ध विहगावलोकन प्रस्तुत किया गया है। भारतवर्षकी सनातन भौगोलिक सीमाओको दृष्टिमें रखकर अवण्ड भारतक्के, जिसमें भारतीय सपके साथ हो पाकिस्तान और नेपाल भी सम्मिलित है, इतिहासका विवेचन अभिप्रेत रहा है। खण्डों और अध्यायोंके द्वारा जो विषय-विभाजन किया गया है उसकी योजना मेरी अपनी है। विषय-निम्न्पणमें यथासम्भव सर्वमा य अपना बहुमान्य तथ्यों, घटनाओं एव तिथियोको ही अपनाया गया है, जहाँ कहीं ऐसा नहीं हुआ उसका कारण निजी द्योध-खोजके निष्कर्ष हैं। जनसङ्या सम्बन्धी आंकडे १९६१ की जनगणनाके आधारपर दिये गये हैं। जहाँ सम्पूर्ण भारतकी भौगोलिक इकाईका प्रदन है वही भारत और पाकिस्तानके जनसङ्या और क्षेत्रफल-सम्बन्धी आंकडे सम्मिलित है। कुछ भौगोलिक नामोंको हाल ही में परि-बत्तित किया गया है। यथासम्भव नये स्वीकृत भौगोलिक नाम पुस्तकमें प्रयुक्त किये गये हैं।

सामान्य इतिहास-पुस्तकाँसे दो-एक अन्तर भी इस पुस्तकाँ दृष्टिगोचर होंगे। अन्य सामान्य ऐतिहासिक आधारोंके साथ-साथ जैन ऐतिहासिक आधारोका भी इस पुस्तकाँ पर्याप्त उपयोग किया गया है, किन्तु उसी सीमा तक अहाँतक वे अन्य प्रामाणिक आधारोंसे समिष्टत होते हैं अथवा इतने सवल और विश्वसनीय प्रतीत हुए कि उन्हें मान्यता देना उचित

भामुख

बान बार । बाबार प्रीतान-मनावेद वैक्शेश्वी बीर व के बार-बारियोचा बानेचा बार काम्यु तीच बा देशिय वाला है। बारे देश देशवा स्टेशत की बार बार बार किया है। वर्गाय साथ कार्य के बारने बारीय गांदरी वर्ग बारण बारा बारियों की बोड़ा-इस व्यक्ति वर्ग वर्ग के कार्य कार्य की बार मार्थ

द्यान्य प्रवास में दिश्य है में मूर्य वर व्याप को से में पूर्व कर सब बार है। इस प्रारम्भ मार्थिय क्रायों के प्रवास कर मुख्य कर स्थान कर प्रवास के प्रवास के प्रवास कर पूर्व कर है। इस प्रवास के प्रवास कर के प्रवास के

काता है प्रतिदानके विवार्णकों एवं द्वीप्रस्थानिकोश्चे एक पुरूपकों पुत्र वर्षाच्या कथा व प्रत्य व्यक्तपूर्व विवेत्यारी पुत्रिकोचर होती और मारतीन प्रीताबके काम्यानने नह कुलाव प्रीवक्त एवं कन्त्रीयो दिन्ह होती।

क्षेत्र राज्यंत्र बारवाय, स्कारत १० मधाना १६६१

-325,1-4.5 8,

मार्तीय इतिहास एक रहि

यह द्वितोय सस्करण

'भारतीय इतिहान . एक दृष्टि' व द्विनीय महत्त्रपणि इतना वीझ प्रवासमें सातवा श्रेय यदि तम और समयी वृद्धिगत लोकप्रिया एक स्वादेशताकी है ती, दूसरी श्रीर भारतीय ज्ञानवीठक मन्त्री एक लोकोटक चन्यमालाने नियामक भाई लक्ष्मीकडभोकी तत्वरता त्व मुक्षवक्षाका ।

प्रयम संस्क्ररणमें मुद्रणकी जो अमुद्धियों रह गयी थी ये इस संस्क्ररणमें टीक बर दी गयी है। मायाका भी यत-सप्र ययानद्यक गरिरकार विया गया है। यूरतकपर प्राप्त ममीद्याओं आदिया छाम उद्याक्त बतियम प्रमाम व्याक्त संदीयम प्रमाम व्याक्त संदीयम कर दिये गये हैं। वहीं कही मुख परिवर्धन भी किये गय हैं। भारतवाकी दो मानवित्र स्था बरतमें नामानुक्रमणिया दे दी गयी है, जो प्रयम संस्करणमें नहीं यां। इन संदीयमों एवं परिवर्धनी पुरुतकारी उपयोगितामें मानुक्त पृत्र होगी ऐसा विद्वास है।

इस संस्वरणमे गारणभूत पाठक, समीलक, मुद्रक, प्रकाशक खादि सभी मण्यनोंका में हुदयमें बामारी हैं।

सदनक

—उद्योतिषशाद जॅन

३७ शवस्वर १६६४



राण्ड १ प्राचीन मागत

१ प्राग् ऐनिहासिक काल

प्रान्ताविक - १, पूरवाका प्रारम्भिक रितिराम - ११, बास मात्र - १४, पूर्वे पापाण सुग - १४, पुरातन पाषाण सुग - १४, वन्य पापाण सुग - १५, बानु पागाल सुग - १९, निष्पू पाठी सम्मता - २५, वेदिक सम्मता - २९, वस्त्य काल - रामायणसे महामारत पर्यन्त ११।

- २ प्राचीन युग प्रथम पाद महाभारतस महायोर पर्यम्त - १५ - ६१
- प्राचीन युग द्वितीय पाट मगप साम्राज्य – ६२ – १०५ ।
- ४ प्राचीन युग हतीय पाद उत्तर भारत (ई० प्० २०० स ई० सन् ३०० तक) स्राच्य सातवाहन - १०७, पिरपमास्तर प्रदेशके विदेशी सामक - ११०, यूनानी या यवन - ११०, दण्दीपाध्यिम या पह्यत्र -११२, दण्टोगीयियन या दाक - ११३, भद्र घष्टा वेदा - ११८, कृपाण येदा, मालवा - १२२, मयुरा - १२५, नाग वदा - १३२ वकाटक वेदा १३७।

१८ मार्थाम युग - चतुर्व पाड् उत्तर सारत (सन्दर्भ संदर्भ रूक) कृत वंद - ११९, बनुस्युत - १४ वस्तुर्य

पूछ बंध - १११, बहुक्यु - १४ वन्युण विशेष विकासिता - १४१ क्यापुछ वन्या बहुक्यापिता - १४१ क्यापुछ - १४४ क्यापुछ वन्या बहुक्यापिता - १४१ क्यापुछ - १४४ क्यापुछ - १४४ व्यापुछ - १४४ व्यापुछ

बाराके वरवार - १६६ बेगाहरू ब्रांकीय -१६६ इस्टि-या हमेंबीके छाडीह - १७१ वालस्टीके स्वापंधी नरेब - १७१ नमेंख बंध - १७१, क्याहियारके बच्छापट रावे - १७६।

क्षिंग क्रान्दि राज्य और इक्क्ट मारव

स्तिम - १८ व्यक्तीयचे त्रवत्ति - १९६, तुत्रस्य -१४८, तिस्य तेस - १११ वत्त्रीर - २११ देशक - ११५, कृत्यो तस्ति - २१६, तिस्त्र - २१६ वस्त्राय - ११६, वेशक - २१६ दिस्त विश्वास प्रशासि - २१७ वस्त्र - २१८, व्यक्ति पृष्टि तीस २१८।

 स्टिंग मारत [१] वर्षे
 स्थान गंध - १४१, गांडच राम्य १४६, चौम्य राज्य - १४८, गैर राज्य - १५ करव्य गंध - २५१ वंश्वरेष्ठ - २५६

८. दक्षिण भारत [२]

वातापीके परिचमी चालुक्य – २७८, वेंगिके पूर्वी चालुक्य – २८९, राष्ट्रकूट वदा – २९२, कल्याणीके उत्तरवर्ती वालुक्य – ३१०, कल्याणीके कलबुरि – ३१९ ।

६ दक्षिण भारत [३]

पूर्वमध्यकालक प्रमुख उपराज्यवद्या — ३२३, सी दिसिके रहू — ३२५, कींकणक विलाहार — ३२६, कोगाल्व वद्य — ३३०, घगाल्व वंद्य — ३३१, अलुप या अलुब वंद्य — ३३१, गंगधाराका चालुबय वद्य — ३३३, तुलव देदामे वगवाहिका वग वद्य — ३३४, वारंगलके ककासीय — ३३५, देवगिरिके यादव — ३३६, द्वार-समुद्रका होयसल वद्य — ३३९।

१० विजयनगर साम्राज्य ३६२-३६०

खण्ड: २ विदेशो शासनमे भारत

(मुसलमान और भँगरेजी शासन)

- १ इस्लामका भारत-प्रवेश और दिल्लीके सुल्तान गुलामका - ४०४, खिलकीवक - ४०९, सैयदवंश - ४१९, सोदीवंश - ४१९, सूरियश - ४२१।
- २ पूर्व-सुगळकाळके प्रादेशिक राज्य

 वनाळ ४२५, जोनपुर ४२७, मालवा ४२७ गुजरात ४३०,

 कश्मीर ४३३, बहमनीराज्य ४३४, बरारकी हमादशाही ४३९, बीदरकी बरीदशाही ४३९, गोलकुण्डाकी कृतुवशाही ४३९, अहमदनगरकी निजामशाही ४४०, बोजापुरकी आदिलशाही
 ४४१, खानवेशका फ़ारूकीवश ४४४, राजपुत राज्य ४४५।

१ मुराह-साझारप - ठावेशत वावर -- ४९८ वृद्धार्च-४०१ जनवर ४७४ वर्गसीर-- ४९५३

४ मुगळ-मासाग्य-अवाग्यः वाहरती - अर्थवस्य - ५६६ वन्यांका सत्यः ५१९।

१ सरावष्टवाचात [१०००-१८६० ई] वस्तरनी बरमन्देश – ५४१ वृहण्यम् वस्त – हराबारने विकास – ४८ वस्तरी वस्तरी – ५५१ व्हासनी सामी –

तसानवीं जानारोज - ५५२ जुक्तकार बताव - हैराजारी रियान - ४८ वस्तरी वसारी - ५९१ वंधानवीं स्वारी १६ प्रोह्मकारे स्वार - ५५६ वैसूटी स्वार - ५५७ राज्युन राजे ५६१ कार - ५६४ जिल्ला - ५६६ देवरा -५७२ करारा गाम - ५८४ वर्ष सीर मंत्रुतीं - ५८५।

छत्ता राज १६१ कार - ६६४ जिल्ला - ६६६ स्वया -६५, स्टारा गाव - ५८४ वर्ष बोर शंक्षीय - १८६। ६. स्टोरवासियी-द्वारा सारवणी स्ट्रा स्टेन क्षित्र - ६३ लाईक्ल्यायेन - ६३१ वर बार स्टेर - ६३३ टाई केरको - ६६४ वर बार्ट

वानी ६१७ नार्व विकास १६०, नार्व विकास १६० वर्ष बार्व वरण्ये – ११८, वर्ष विकास विकास १९० वर्ष पार्क्य देश कोड – १११ वर्ष वर्ष वेदन – १११ वर्ष वर्षाम्बरण – १४१ नार्व वर्षाव्य – १४२, वर्षा वर्षाक्षित – १४४ बार्व वर्षाम्बरण – १४४ वर्षाव्य वर्षाम्बरण – १४४ च पुनवस्पात पुण (१८०६ १९४० वृं) विकासीय – १९९, मार्काल्य ब्राह्म और वैक्सिक विकास

- ६९८, विशिष राज्यो पूर्वने - ६६३ विरिक्त सावस्त्रो विराय मुक्ते - ६७२, व्यवसाय - ६८ अवस्त्र विरोध -

र देशी बारड - ७०६, विदेशी बादनार्वे बारड - ७१४ स सम्प्रीत दृष्टिश्चल एक परि

खरुड १ प्राचीन भारत





अध्याय १

प्राग्ऐतिहासिक काल

प्रास्ताविक — उत्तरमें सुविस्तृत उत्तृग हिमवान पर्वतमालामें सुरक्षित
तथा दक्षिणमें तीन कोर महासागरसे वेष्टित और मध्यमें विन्ध्यमेत्रलाद्वारा उत्तरापय एवं दक्षिणापय नामक दो विशाल भागोमें विभाजित
हमारे इम त्रिकोणात्रार महादेशका सर्वप्राचीन उपलब्ध नाम अजनाम
या। तदन तर यह भारतवर्ष नामसे विश्यात हुआ। यह नाम भी सहस्रो
वेष पुराना है। इम देशका मुख्य भाग आर्यवण्ड कहलाता था, विशेषकर
उत्तरापय। सज्ञा आर्यावर्त थो। उसके भी मध्य मागका नाम मध्यदेश
या। गंगा, यमुनासे युवत यह मध्यदेश ही प्राचीन भारतीय मस्कृतिका
चद्गम स्थान रहा है। इसो प्रदेशमें भारतीय धमं, दर्धन, ज्ञान और
विज्ञान आविष्कृत एव विकमित हुए, यहींमें देश देशान्तरोमें उनका प्रकाश
फैला, इसी प्रदेशका आध्यारिमक एवं बौद्धिक ही नहीं, राजनैतिक नेतृत्व
भी विरकाल तक न केवल सम्पूर्ण भाग्त देशपर ही वरन् उसके बाहर
भी दूर दक व्याप्त रहा।

सठारह लास वगमील क्षेत्रफल तथा लगभग चीवन करोड जनसल्याका यह विकाल भारतवर्ष एक पूरा महाद्वोप-सरीखा ही है। जल, थल, भूश्यित और जलवायु, जीव जन्तु और वनस्पतियों, खनिज और कृषि-चरपादनोकी जितनी और जैसी विविधता हम देशमें है अन्यप्र कहीं चप-लक्ष्य नहीं होता। जातियो, भाषाओ, धर्मों और सम्कृतियोंका भी यह एक अद्भतालय ही कहा बाता है। किंतु इतनी विषयताओं और विविध-

मधन तथा विनिध काचीने विनिध बातीय है दिखतीका आतमस हुआ । इन विदेशियोपैनी की का बीट शामकी किनाते बहु-बहु बद्धका बच्छीने बही माने कर्द केकर ही दन देशके शतिहानके एक वहे जानदा निर्माण हुआ है ।

unfern auten plettes anter fariff : & aumme unte परिवास दिन्द्रहा वक्शवाबाओं सैवर बोचन, वृर्ग्य श्रीत्रक अर्थि वर्गीरे क्षारी। वत्तरपूर्वने मैचान और निव्यवके नार्नेत्र क्षमा ब्रांडायने द्वीपी और कारी मानार्थी होते है। इन्हें हार्शी मारानिश्चीका विदेशों सम्मा-

कुत्त्व देशी और वर्गताहे जान मी न्यानारिक दर्व बांग्युर्तिक बन्दन्त मीर्शन्तम राग्ने रथे। अवद्यानिशार ही नारश्तका ही एक नार बनमा बाता या बात नार्राधवने हैंशन और बच्चानिका ही वहीं अनान क्षा नववानर ठडको अन्य देशीके बाज और पूचने चीव क्षा सुदूर कृषि शिवत देवीके बाब कांग्युटिक न्याब्यीटक क्षे राजनीतिक बाताबाउके

संबारते पुष्प व के जो क्यां-राज जीती तर दशात हात्र कर की हैं। विल्यु मारतरपता अह पृथ्वीकाण भौगीतिक ही पहा यह हम देखने नियानियों । शुप्तानुष अवश्य तथा देवी वर्त लांदगी। नवतामाँ शैरी वर्गे बन्ध नाता । आरुबीह अगलावरके बचा स्वित होते हवा बगुन बीमें ही बारनी बारता बीर मंतर्गानको बांच विश यह कर के के बारण मार्क बर्दने बाते. हाँ हायके शहर- वहत्त्वारणे ही। बाले वहीं पत्ती क्षय मान

रप्रपत्ती चोप नामापा का । प्राचेत सार्थ नरेय नवस्ती वर वान्त बण्डेती स्तिकाचा आता ना की अपनी दिवित्राय क्षांच कराने देशको नामरे^{तिह} इरकुरतावे वरिनेदा प्रशंस करता दा । बारन परन्यामाओं बीर बढ़रे कहुन्यायरोंने आरम्भवती देख समान

क्षोंका भागान होते हुए की जारपर्यांकी कोन्कृतिक जुबनार क्षमेंद्रे वृत्यात वं शाहित्यवे भारत्य प्राचीन वामते हो वृष्टिगीयर होते त्रयो है। त्व ही इस सार्व्याच्य एकताने देएकी नामनेतिक व्यवतानी की अन्य ति। हरणी नवार । सार्या हती हराडा योगस है। नामुख मात्राची मानव भेदोंको जितनो विविधता और विभिन्न मानव जातियोग मिन्नण मो जैना भातरयपमें रहा है ऐसा अन्यत्र फहीं नहीं रहा । स्तूत्र रचते दो प्रपान मानवी धाराएँ वहाँ उचल्क्य होती हैं, एक ऋग, यज्ञ, नाग शादिने यदाजोगी यह भारा निसे बर्तमानमें प्राय द्वादिह नामने मूचित किया जाना है और दूसनो उत्तर पश्चिमको और उदयमें आने गारी आर्य जातिके यदाजोगी यह धारा जो इण्डोआर्य कहनाती हैं। इनने अतिरियत प्राचीन बास्ट्रेलायह, मंगोसायह, मानस्त्रेर आदि और प्राला-तरमें ईनानी, यूनानी, दान, पह्नुद्र, कुषाण, हुण, सरब, तुर्ज आदि जातीय सरव भी मगय समयपर भारतीय जनतामें मिश्रिन होते रहे हैं। भाषानी दृष्टिमे भारतीय-प्रार्थ, द्राविह, और मानस्त्रेर—ये तीन तत्त्व भागतीय भाषाआंवे मृलाधार हैं।

पृथ्वीका प्रारम्भिक इतिहास—पृथ्वीक इतिहामके विषयमें दो विचारधाराएँ हैं। इनमें-मे एक शास्त्रतादी हैं जिसना विस्थास है कि सत्का कभी नाम नहीं होता और असत्का कभी उत्पाद नहीं होना । इसके अनुसार विद्य व्यवस्था और उसके अन्तर्गत हमारे पृथ्वीमण्डल तथा उसपर विवास परनेवाले मनुष्य आदि प्राणियोंकी परम्परा अनादि और अनन्त है। सू यमें-से यभी किनी प्रकार उनका अवस्थात् उदय हो गया या कभी भी उनका सर्यया क्या अभाय हो आयेगा, यह बात असम्भय है। पदायों अपने-अपने द्रव्य दोत्र काल-भावके अनुसार निरन्तर परिवर्तन परिणमन होते रहते हैं। इन परियतनोकी ही नोई-कोई सामूहिक अवस्थाविरोप ऐसी प्रस्थक एव आत्यितक होती है कि उन्हें सृष्टि और प्रस्थ आदि नाम दे दिये जाते हैं।

दूमरी विचारघारा सृष्टियादी सस्कारोंसे उद्भूत है। इसके अनुसार ईरवर बादि नामोंसे अभिहिस कांवत विशेषने किसी समय अपनी इच्छासे सर्वथा शूयमें-से हमारे विश्व, पृथ्वीमण्डल और मानवका एकाएक निर्माण कर दिया और एक समय ऐसा भी बायेगा जब वही दानित इनका सबधा



एच० जी० धैतगरे अनुमार यह काल ८० करोडमे ८० करोड वर्षे पूर्व तक रहा प्रतीत होता है। इस काल ४ प्रारम्भमें सम्पूर्ण पृथ्वी प्रायं एक रूप थी, अमी भारत यूर्ष, अफीका, अमेरिका आदि जैमो जीमालिक इवाइयों न यन पायों थीं। बिन्तु पह अनुमान किया जाता है कि भारतके हिमबान प्रदेश तथा दक्षिणी पठारकी रूपरेगा जुनास्थित इतिहासके प्रारम्भम ही यन गयी थी। यन्तुत हिमाल्यसे कन्यानुमारी पर्यन्त सम्पूर्ण वर्तमान भारतके दौचेना मूलायार भी सन गया था। इस प्रकार भारतवर्षका मूल चहानी आधार यमुष्यगर्भ जात जीवनमें प्रारम्भ ही अयस्यत था।

निर्जीय युगके उपरात जीव युगका प्रारम्भ होता है। इसके सीन खण्ड है-नहरा काल-पुरातन जीवपुरा (पेलेजीडन), दूमरा काल-मन्त्रजीय युग (मेसजोइर) और तोमरा काल-नन्यजीव युग (वेनेजोइक) । यह पहला राज डॉ॰ हेडेनफे अनुमार ४० से ३० फरोट और बैल्डके अनु-सार ३० से १५ करोड वर्ष पर्यत चला । इसी कालमें सर्व प्रथम घरातल-पर वनम्यतिया और जीव जन्नुमाके अपने सरलतम प्रारम्भिक स्वीमें उदय होनेका अनुवार किया जाना है, जितमे ही शनै -रानै जलचर, नमचर एवं यज्यर प्राणियोवा तथा जलाय एव स्यलीय वनस्यतियोंका विकास हुआ। इस मालमें मुतलको रूपरया भी वर्तमानछे निवास भिन्त थी। दूसरे कालमें पृथ्याने वडो ऐंठ मराह दिलायों, भृतलमें बढे वडे परिवर्तन हुए, जल-थल विभाजनमें अतर पटे। इस युगमें पृथ्वीकी भौगोलिक स्थिति बहुत करके जैन शास्त्रामें वर्णित 'अवाई होप-मनुष्य लोक'के सद्ग्र थी. अर्थात् उत्तरीय ध्रुवको मेद्र लेकर उल्टे मटोरे-जैसा एक अविच्छिन भूखण्ड या जिस चारों ओरसे मेखलाकी नाई एक वृत्ताकार महासागर घेरे हुए या । तत्परचात् फिर एक मेखलाकार अविच्छिन्न भूलण्ड था—दक्षिणी भारतके फुछ भाग, अफोका, दक्षिणी अमरीका, आस्ट्रेलिया आदिकी सयुक्त करता हुआ। उनके नाचे फिर एक वृत्ताकार महासमुद्र और वन्तमें दक्षिणी घ्रुव पर्यन्त कपर जसा एक अप भूखण्ड था। यह काल १५ है ४ करोड़ ली पूर तब नहा । दीन्य काम को ४ करोड़त ६ सात वर्ष वृत्र तक भवा । स्रोवक महत्त्वपूर्ण है । तम पूर्वने अधिकांत वयत । समूद्र, शीम नदी-बर जनाई कादि अर्थ वर्गमान स्थवनको प्रान्त हुए । इत पुनके कमानै चारै वालेवाच बीय-मण्ड, वगु इत्यादि एवं वृष्य-सन्त बादि वयसादियी मैं-ते मानवर्षाय सनवन्त्र सवस्थित है । बीट पती बुनके सन्तर्वे सर्वत्रवर क्षेत्राचे बीनोने प्रवचन प्राणी वानवक वस्तित्वके विश्व वाणे बाते हैं। भाचारानम्-नामको बन्धांत वेते हुई बहुडि हुई विन स्वानवे हुई क्रीय वस हुई बोर दिस काले हुई-एन बार्गांचे सम्बन्धने निक्रामीने बड़ा गठमेर हैं। रिन्तु करन निविध वय-नतान्तरोंके बध्यवको यह निव्हर्ने निर्देश निराधा का काता है कि पूर्णीय गर बाववड़े वर्षप्रवस करिनाकड़े मिन बनमप्रे बनाय जिन्छे हैं तकीते. मारतवर्षमें बढ़ श्रवहर विबनान मा बी मी पर्याल क्षेत्राओं : बल वस तथाने तथान भी करोड़ नहीं है कि मानगै इतिहास्त्रे अरस्य कार्यक्षे ही वारतपृति अनुसर्वी क्षीकानृति प्ती है। मानद बीर खबरी आदिव-तारोतिसाविक-कामानुके विकासका बुद स्थाप्तियों वर्ष अप्येतिसाससीयी यातामें चीवा बाल करमाया है। इंग्ले वीच विश्वान है--(१) वृर्व वाचान यूप--१ करोड़बे ६ बास वर्ष पूर्व दन-प्राप्तः निकान्त अगस्य बन्धवीयमः पूष्यच्या प्रकृतिहरः सम्बन्धिय रव मानने बामन्वित कावर व हुईकि कांत्रिया अरकता बारे और वीरे

सम्मानसर्थ कराय वस भूगची हवं बादिन कानाआनी इसकाश मी वर्षक निवाद होनी हैं / लहुना यह यूव दोनरे बातकर हो महैनाय पर्य मा बारि सारति के पीय नाक रानके पाक्षण हाराय होता है // री हुत्रार मानी हुंद्रार पर्यक्रमा कुल के पूर्व रहे रह हुतार पर्य कुल कुल माने। रान व्यक्ति वारानीय की नहें बातक वार्टि हुत्या वार्टि

धक मोजर जारियी अपन्य हा है। शिवस मजारोवें निवीप

त्रिपके पारण उन कर्माणी हिक्युण भी पहुँचे हैं। बारशारा शस्त्रपिक पित्राब करण हिम्मक्रमेंकि कारण्य इव मुनके अधितन पारने तथीं। १४ जास्त्रीय दुविहास एक सी ४००० से १५००० वर्ष पूर्वने मध्य हो। लिल हुआ। इस युगके अम्य-रास्त्र, राछ रछोंडे, औडार बादि भी पाषाण प अस्यियोंने ही बने हैं बिन्नु आदिन दगवे होते हुए भी वे पूच पापाण युगवानीकी अपेक्षा श्रेष्टतर हैं। इसी कालमें सर्वप्रवम मनुष्यके धर्मभायको किसी न किसी रूपमें अभिन्यतित दृष्टिगाचर होनी है। भित्तियोगर अद्गुर रेखाचित्रोंसे युक्त कुछ बादिमकालीन पर्वतीय गुफाओमें इसके चिह्न मिले हैं। अन्त्येष्टि सस्कार आदिके भी कुछ अवदीय मिले हैं। मृत व्यक्तियोगी वैठी मुद्रामें भूमिम्य कर दिया जाता था, साथमे आगामी जीवनमें उपयोग करनेके लिए भोजनादि सामग्रो भी रख दो जाती थी। ये छोग फल फुल, कन्दमुल तया विकारमें प्राप्त मांन आदिया भगण वस्ते थे। उनमें रेखाशास्त्रका भी ज्ञान विषसित हो रहा था। दक्षिण भारतमें कर्नूनकी गुफाओंने परी-क्षणसे पता चलता है कि उनका सम्बन्ध जादू टाने-जेसे किसी-न-किसी प्रकारके धार्मिक कुरवेंसि रहा होगा । ये लोग मृत व्यक्तियाकी देह गुकार्में ही छोटकर अयत्र जाकर रहने लगते थे। रेसा एव भित्तिवित्रोंसे अनुमान होता है कि इस युगक मानव समस्त चराचर पदार्थीमें जीवको सत्ता मानते थे, कितने हो सरलतम अपरिष्कृत एयं आदिमरूपमें सही, जीय या जीवनी यमितको सर्वन्यापकतामें उनका विद्यास था । ये पित्यूजक भी थे । मध्य प्रदेशके रायगढ़ जिलेमें स्थित मिगनपुरके निषट भित्त एव रेखाचित्रॉमे युक्त उस कालकी ऐसी गुफाएँ मिली हैं जो सम्भवतया उनके देवस्थान या मिंदर थे। मनुष्यो, पदाओ एवं आस्वेट आदिके चित्रोके अतिरिक्त जो कई रेखानिर्मित रहस्यपूर्ण सांकेतिक चित्र मिले हैं उनका कितने ही आष्यारिमक साकतिक चिह्नोंसे बय्भुत साद्वय है, वे वित्र कई मौलिक जैन मा यताओंको सांकेतिक अभिव्यक्ति जैसे लगते हैं।

(३) नव्यपापाण युग — ईमवोपूर्व लगमग१५०००-८००० वर्ष पर्यन्त नव्यपापाण युग चला । इस कालमें मानवको आदिम सम्यता और सस्कृतिने बढे दुतवेगसे प्रगति की । विविध पापाण, हाथोदौत, सींग, लकहो आदिक सम्बद्धे हो नहीं कर बीर चंदिर मी दिश्य मी बार अबि मुन्ता मेंच दीन व रूप वादिन क्यांकार बात मुंगारनी विशिष्ट क्यांक्रियों कें-मिल्मीन बादि भी मान करें। व वीन्य में केंद्र में हुएते कुन वादिशे नुस्तर मुस्तर होतियों नहीं परिशी रखाने विश्व को कांग्रे स्वत्रमें में। मूक मार्ग्य हुत बीर प्रमुक्ति क्यां नरांने क्यांन कोने बात बीं। मार्ग्य की मीत बन्तरों बार्च प्रमुक्ति क्यांन वादिनीयों को बातरब हुता। वादिन दिन्तर बातम नाम क्यांन-विवारित केंद्रों द्वारों द्वारा कर हुता। बादिन स्वत्रार मी मुन्द हुता। बोर्च बिल्मी केंद्र मार्ग्य क्यांन मिल्मीन बादिन बात्रीयां मी बात्रम्य हुता। बोर्च बिल्मी केंद्र मार्ग्य क्यांन क्यांन क्यांन मिल्मीन क्यांन क्यांन

वने। वर्षित प्रचारा को जानिक एवं व्यावकारिक बेटवारिक वह होनेने वीजमण हुवा। वर्षे वर्षे वाशीर उत्तीर जानिक हुए बीर क्लंदर दशा वार्षिक मान्याची एवं बचावेदा को क्लंदर्युर्व (दश्व हुवा। कुर्युर्द्धा जांकि ही किन्यु वर्षेक विषय चरित्र्यक स्वयत्ते वर्षे विस्था करने में केन क्लंब स्वावक वीक्स्याची बच्च वाल्ये वे इसकी हो

श्री सुम्पर-मून्पर व्यवस्थित वस्त्य-प्रत्य राज्य उपत्रश्य शादि वसमें स्त्रे, विद्वीके रूपने-प्रत्ये विधित व साथे विधिय वश्यव-मार्ड साल सीर

निवासन जन करता है और नह कि जनुस्तक वीसमध्ये अकरन प्राकृति। सन्तिको प्रमाणित करती रहती हैं, तक प्रत्येक स्टिक्ट क्षत्रके स्वस्त्रक

भारतीय इतिहास वृक्त धी

किसी-न-किसी प्रकार अनुष्ठान करनेकी प्रयाएँ प्रचिन्त हुईं। किनने ही वर्तमान अन्विदिश्वामो, व्यक्तियो अथवा पदार्थों को निषिद्धमान उनके सम्मानिषेव, परम्परागत आख्यािकाओ, दैत्री उपाख्यानो, छाककयाओ, यहाँतक कि सगोत और नृत्यके भी बोज नव्यपापाणयुगीन आत्मवादमें निहित थे। उस युगके जोववादकी अभिव्यक्तिका एक महत्त्रपूर्ण द्वार पाषाण-पूजा थो। विभिन्न आकृतियोके पाषाणखण्ड विशेष विशेष दैत्री शक्तियों अथवा देवी-देवताओंके प्रतोक या प्रतिनिधि समझे जाते थे। लिग-पूजाका भी प्रचलन था। कालान्तरमें वैदिक आयोंने पहले तो उसका विरोध किया किन्तु बादमें समझौतेकी भावनासे प्रेरित हो उसे अपना लिया। अस्तु जो लिगेद्वर ऋग्वेदमें इन्द्रका शत्रु कहा जाकर निन्दित हुआ वही अथवंवेदमें अनेक मत्रो-द्वारा पृजिन-विद्यत हुआ।

जैसा कि ऊपर निर्देश किया जा चुका है, देवमूर्तियोका सर्वप्रथम उसी युगमें निर्माण होना प्रारम्भ हुत्रा । ये मूर्तियां पापाण अथवा काष्ठको होती थीं। आज भी शायद इसीलिए काष्ट और पापाणको घातुर्जोकी अपेक्षा अधिक पवित्र और शुद्ध माना जाता है । साधु-सन्यासियोंके लिए भी काष्ट, पापाण या मिट्टोंके ही पात्र विहित हैं। देत्रपूजामें भाजन-पानकी विविध सामिप्रया समिपित की जाती थीं, कहीं-कहीं हिसक बिल भी होती थी। कृषि आरम्भ, चरागाह परिवर्तन, युद्ध यात्रा, आखेट आदिके अवसरोपर सानन्दोत्सव मनाये जाते थे जो भिन्न-भिन्न समुहोको प्रकृति तथा परम्प-राओके अनुसार हिंसक-अहिसक दोनो ही प्रकारके होते थे। व्यक्ति, कुटुस्ब, वस्तो अयवा समूहको मगल कामनाके लिए भी धार्मिक अनुष्टान किये जाते थे। स्वप्नों और उनके फलमें विख्वास था। इसमें सन्देह नहीं कि घकुनापशकुनों एव स्वर्धों का मानव सस्कृतिके प्रारम्भिक विकासपर अत्यधिक प्रमाव पडा है। ज्योतिप सम्बाधी प्राथमिक ज्ञान भी उन्हें था। ब्योमचारी. प्रह, नक्षत्र, तारिका आदिका वास्तविक रहस्य वे भले ही न जानत हों किन्तु चिरकाल सक प्रकृतिकी हो निरावरण गोदमें खेलते रहनेके कारण को ब्राह्म है मेराने मा पहुंचाने का है थे। बक्रेली बहु जम मुत्रदे कार्ति क किरमानी की । बत्तनाहरू विकास है को क्य कुन्दे जल्म विश्वतः वं बहुत्तेत्रमानी अवदेशापर के अनुसार दिशा नवा है। बाँद पन्याप प्रप्राप्ताओं और बंदर्गियोंका शिक्ति कियां बाये तो सबसे कथय तरत ऐसे निवेद जिसक अन्य सबसा अवत्र बाराम नुबन्ने समात आने बानेशने साहित बामन ही है। साहित इन्हें करेंद्र नहीं है कि बकान बणस्कानान समाता करत पार्थि मुद्रीन बण्डाब बार्यापर हो निवित वन दिवदित हुई है। इस बामडी सारता वर्ष बाचार-विकासके जनेज बारदेश बाजके देवर श्रमानमें की इटियाचर होते हैं : पत्रमान क्योंके मूत्र-बेनवाद, स्रमेक सह बदाधीते हेतं वर्षत्र मन्तरिद्वित होनेत्र वित्तराव पद्माता वित्तर्गा मृतिद्वी कुछ बोर शाराज-हुता, बन्त-सन्त व बन्त क्राक्टर्याडी पृशा पानिकाल 4) 44 41-mille Brieben, ungenen murabs, du #fe क्यों मुख्यों देन हैं। पृष्टिनोध निवारण फार्नेके बिट्ट स्थानीके डी के संपन्ती मीन-पार्व बतारका निम मारिको भूगी देखा हुई बन्दवर्गोका प्रमीन बीनि बरायन क्षेत्रे बरामां वाम अल्या, मन्त्र-क्षरः ब्राइ-दीवा बाय-नार क्रिराम्य कार पुरशाना, वैत्रिके किए पुरशास्त्र और क्रीमाके किए पर्यन बचोरे बर्धर पुनी बाजको अनेका इन्ये बन्दको खर्चिक दरिव बाल्य प्रतिकृत पहुनेपर वाणियाँ वा त्यानोके साथ परिवर्णन करना अही-वृद्धिवैति रोगींता जाचार करना शरधाँद बनेक चीवें बी बची वृषको हैंत है । पूर्वी बर्बा, निपर्का, बंदशानेका पहती. नुब्दारका बाह्र तथा अन्य अनै

वरेनु वर्ग विश्वी वरकरवाँडा कार्यक्रवाट क्यूरिये दिवस वर्ग १ वर-वरियर्जे वर्षान् मधी कारवाणीका वेचवीति वा स्थापितवी वकत वरिर वर्गास्त्रवाणी इस व्यवस्, वेच विश्व वर्गास्त्र कार्या वर्गाम्बर्णे वर्गान् वर्गेनीचा नाराण

न्तरवीय इतिहास । एक 🗐

ह है कोर्रिकोर अनुरक्षीका जाउदार व नेश निष्ट वर्शाण जारहर जिल्हे बा । बारास्पर बालका निषद वे लुखे । बार्व बेल्बी बाही हाई कही वृक्ष, पशु-पक्षो आदि योनियोमे जन्म लेना, देवी-देवताआको गदा, दान, चक्र, त्रिशूल आदि आयुर्धोसे युवन करना, दैत्य, दानय, प्रेत आदि दुष्ट आत्मा- ऑक्सा पूजन सत्कार करना, आमृद्रिक शास्त्र, प्रगेतिय आदि अनेक ऐसी मान्यताएँ हैं जो उत्तरकालोन सुसम्कृत जीवनमें उसत आदिम विचाराका प्रमाव स्पष्ट प्रदक्षित करती हैं। जैन, वैदिक, धैय, वैष्णव, शास्त्र, म्मार्त, बौद्ध, यहूदी, पारसी, ईपाई, इस्लाम आदि धर्मोमें बनेक रीति रिवाम, धार्मिक क्रियाएँ, मान्यताएँ एव विश्वास उस आदिम युगको वपौदीके रूपमें प्रहण किये गये। वस्तुत आजका सुसम्य मानय उन तयाकथित नितान्त असम्य आदिमकालोन मानयोका कितना ऋणो है यह ठोक-ठीक अनुमान करना और सनको महत्त्वपूर्ण देनोंका उचित मूल्यांकन करना सहल सम्मय नहीं है।

धातुपायाण युग-इम नव्यपायाण युगके अन्तिम पादमें अर्थात् ईसासे लगभग आठ-दस हजार वर्ष पूर्व एक नवीन युग प्रारम्भ ही रहा या जिसे धातुपायाण युग कहते हैं । इमीमें धने -शने धातु युगका प्रवेश हुआ जो प्रारम्भमें कहीं कीसा युग और कहीं ताम्र युगके रूपमें आया और अतत लोह युगमें आकर स्थिर हुआ । नव्यपायाण युगके अतमें ग्रामीण सम्यता स्थायो हो चुकी थी जिसमें पद्मुपालन और कृषिप्रधान चद्योग थे। किन्तु धातु युगके उदयके साथ-साथ नागरिक सम्यताका उदय होने लगा जो प्रारम्भमें बही-बढी नदियोंकी उपजाक घाटियामें फली फूली। उसके साथ-हो साथ नानाविध शिल्प उद्योगों, राज्यव्यस्था एव राजनीति, जलीय एव यलीय देशी विदेशी ध्यापार आदिका भी उदय हुआ और वर्तमान मानवकी बास्तविक सम्यता एव सस्कृतिका व्यवस्थित विकास प्रारम्भ हुआ।

मनुष्यती आदिमकालीन सम्यता और उसके इतिहासका जो ऊपर सिक्षिप्त विवेचन किया गया है, उसमें यह व्यान रखना आवश्यक है कि उक्त सुदीर्घ पापाण कालको जो विभिन्न युगोंमें विभाजित किया गया है और उन युगोको वर्षोंमें जो अविधयों दी गयी हैं वे सर्वधा निराधार न होते हुए भी अनुमान मात्र हो हैं। अनेक विद्वान् उक्त अविधयों में घटो शंबदी करवेके कळनें हैं किए भी वी बहुसाम्य तस हैं घटनाही ^{सर्क} बामार लिया नया है। दूसरी चात्र सब है कि बाहियमानदर्ग सरियत भीर बनकी प्राप्त केली ही लकाराका विकास सुम्मीके विक्रिय कार्यी वारा नदा है जिल्हु यह बारस्यक नहीं है कि अवस्थितत बीर जनस्था विकास सर्वत एक ही समयमें एक ही करने सबना एक-मी ही वर्की हुमा। नहीं करना देन और प्रयुक्ति बहुत हुत गही । वहीं । वहा जितिन। भीर नहीं नामु बुक्त और नामरिक नाम्याच्या प्रारम्य हो रहा वा से क्की बार्क्स कही मध्यक्षकान कुक्की और कहीं पुरावण पानासमूनकी 🗗 सरस्य बनदी ग्रहे । बाह की कृत्र सक्षेत्रा शास्त्रीमञ्जा दक्षिकी असे रिता अनेक होगों बारिने हो नहीं चारत-वेंद्र वैचके मी नुक मार्थीं क्या क्लारारामपुत्रीन बारिय बारायके संजय बाद्य क्याँ कार्य रहते करे वारो हैं। एक बाद बीर है कि साम्प्रेतिसांबक क्योगा बुनगरिकारी या कामानियोंने बतानेत हो नवते हैं जिल्लू करका क्षम वर्ष स्वकृष अस्ति नुनिरिश्त है। दलवें की ओई क्षेत्र वहीं है कि मारतवर्धनें नामने पुर्णातको सम्ब बागात प्रदेशोंनी अरेका यस गायमें थी वर्डी समित इच वेस्के अर्थात की वी जोर करत आनवात कंत्राति और समस्तान ^{की}

केन क्या प्रात्यम् अन्योग प्रकारेष () या । प्रात्यक्ते पूर्वेत अपूर्वोत्तम्य आरक्षेय परिकार्यके वाच करानेन्यः स्मूर्णेक विकारमञ्जा विकारका सम्बन्ध करोन्द्रेत् या नम्बद अर्थेत् देशा है कि वाचे पूर्ण्यारः साम्बन्ध करोन्यको विक्रा विकारे है वाचे केन्द्र प्रस्ता बासके काम काम्बन्ध प्राप्ता व्याप्ता विकार को व्युप्तिनेत्र स्मूर्ण्या गाँ व्याप्ति वाचा व्याप्ति व्याप्ति प्रदेश वाच्या वाचा वाच्या वाचा वाच्या वाच्य

नामें पूर्व न प्रीवर्ष वालेले जान जीवन्त्रीय देव साता है। वन

करेन्द्रम वहीं बरव हुवा का सीर इस अस्ति एवं विकासका इस्तिकी

बरम्गरके अनुवार मी दन कालीमें करारोतार क्युक्तों क्यूकी द्व बालीस इस्टिक्ट स्टब्स नस्पितयोंके आकार, बल और सुथ शान्तिमें ह्वाम होता गया केन्तु कृत्रिमता, प्रयत्न बौर उद्योगमें विकाम होना गया । प्रारम्भिक मानव विद्यालकाय, अतुष्य बल्झाली, निदशक, निर्दृन्द, निरीह और सुबी या, उमकी जीवन सम्बाधी आवश्यकताएँ अत्यन्त परिमित यीं और इच्टा करते ही वह उन्हें उसी स्थानके प्राष्ट्रितक बातावरणमें प्राप्त कर लेता या और सानुष्ट रहता या । कित् घीरे-घीरे उसकी शक्तियाँ क्षीण होने लगीं, प्रकृतिमे स्वत ही उसकी आवश्यकताआकी पूनि न होने लगो, उमे प्रवास और उद्यमको आवद्यक्ता प्रतोन होने लगो. सग्रह और सामाजियना उग्रमें आने लगो, ओर जिसे हम सम्यता कहते हैं उसका उसमें विकास हाने लगा । हिमप्रवधोंके उपरान्तका अर्थात् लगभग ५०००० वर्ष पूबके बादका जो पुरातन एव नव्यपायाण युग है वह यह सक्राति-काल था। जैन परमाराके अनुमार जो तोसरे मुखमा-दुवमा कालके अन्तिम भागमे चौदह कुलकर या मनुआका एकके बाद एक पर्याप्त अन्तरस होनेका उल्लब पाया जाता हु वे इमो कालमें हुए प्रतीत हाते हैं। उन्होंन देश हालके अनुसार अपन समकाशन मनुष्योंका नेतत्व और पथ-प्रदशन विया बताया जाता है। इनमें अन्तिम कुलकर नांमराय थे जो मध्यदेशमें जहाँ अयोध्या स्थित ह उम स्थानमे उरपस हुए थे। उहीके पुत्र प्रयम तार्थंकर ऋषभदेव थे।

नृतस्त्रविज्ञान (एन्द्रापोलाजो) मन्दन्धी एव पुगतास्त्रिक अन्देपणोंसे प्राप्त निष्मपोंकी प्राचीन अनुश्रुतियों एव मान्यनाओक साथ सगित वैठानसे यह स्पष्ट है कि इस प्राचीनतम कालमें जब मनुष्पकी सम्यत्मका सर्वप्रयम सदय हा रहा था, कमसे क्षम भारतवपस सम्बन्धित मनुष्य जाति तीन प्रयान रमुदायोने विभक्त थो जिनके आचार-विचार और सस्कृति एक दूसरेसे भिन्न थों। प्रथम समुदाय उत्तरी भारतके पूर्वी भैदानी मागमे गगा यमुनावे दोआवेसे लेकर अंग मग्ध पर्यत्त निवास करता था। ये लोग शान्तिप्रिय और शाकाहारी थे, स्रोक-परलोक, आत्माने लस्तित्व,

पूर्वन जोनवार करिये विशायन ये में के के विद्युपक में क्षांची पूर्णिय संदर्भ में में के अपने विशाय में कि को माने विशायन प्रतिकार करिया की माने विशायन कि अपने विशायन में कि अपने प्रतिकार में कि माने प्रतिकार में कि प्रतिका

हरिद्ध हुना को जाता गृह्य कुमकरतिक कर्मा हुनी वर्ष हुनी वर्ष भी कर्मा समानकारण हुन करावर प्रकारण हिम्म पर्य मारमीयक एवं वर्षित्र कुरिक साथे बारको को हिम्म प्रकारकेर बारम बारकारमा बागानगाक के साथे बारको साथे की बारे में सी मरित्र हुन्य स्वयं समान सीवेट कुमकरेटल स्था कर्माण सीवेट

मूर्ग है माने दन बरावेग्रंग तरूर वंदरे दूस या. व. १ वर व्यक्ति कर मूर्ग मा वर्ग माना भी शरणा (रोप्या) वर्षण मार्ग्य प्रति कर्मा के स्वाप्त कर के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त कर के स्वाप्त के स्वाप

भारतीय इक्तिएत : एक दरि

..

किया तो इन विद्याघरोंने विज्ञानका विकास किया। नाग, त्रमुक, यक्ष, यक्ष, यानर आदि अनेक कुलोंमें विमाजित यह भारतीय विद्याघर जाति माग्तीय महाधागग्में फैले हुए विभिन्न द्वीपों एवं प्रदेशोमें भी शनै -शनै फैल गयो। काला तरमें इस विद्याघर जातिक विद्यांकों ही द्रविद्य सजा दी गयी। मानवों और विद्याघरोंके वीच प्रारम्भये ही घनिष्ठ मैत्री सम्याघ रहे। परस्पर विवाह आदि भी होते थे जिसमे रक्तिमित्रण बढा। विद्याघरोंने मानवोंके ज्ञानसे लाग उठाया तो मानवोंके विद्याघरोंके विज्ञानसे।

सीसरा समुदाय मानव वशकी ही एक शाखा यो जो किसी बहुत पूर्व समयमें मध्यदेशीय मूल मानवजातिसे पृथक् होकर उत्तर-पश्चिमके पर्वतीय प्रदेशोंकी ओर चली गयी थी। यह समुदाय ज्ञान-विज्ञान दोनोमें ही वहत पीछे तक पिछडा रहा । पशुपालन इसका प्रधान कम रहा । यह समुदाय युमक्तड या और उत्तर-पिरवम भारतवर्ती अपने मुलस्थानसे चलकर इसके अनेक दल हिन्दूक्शके दर्शेष्ठे पार होकर मध्यएशिया तक फैल गये। वहाँसे एक शाखा कुछ उत्तरकी ओर जा बसी, दूमरी पश्चिमनी ओर यूर्पके युनान आदिमें और तीसरी ईरानमें बस गयी। कित् इन सभी शाखाओका परस्पर यातायात एव सम्पर्क चिरकाल तक बना रहा, जवतक कि वे विभिन्न भूमागोमें स्थायी रूपसे वसकर अपनी-अपनी स्वतत्त्र सम्यताके विकासमें सलान न हुई। अपने देश-काल, रहन-सहन, जीवन-ज्यापार आदि परिस्थितियोंके कारण ये लोग सामान्यतया भौतिकवादी, प्रकृति या प्राष्ट्र-तिक शवितयोके उपासक, मांसाहारी, हिमक एव प्रवृत्तिप्रधान रहे। ये ही लोग कालान्तरमें आय अथवा 'इण्डोआय' नामस प्रसिद्ध हुए । ये न हो मध्यदेशीय मानव आर्थोंकी भौति आत्मज्ञानरत ये और न विद्याधरोकी मौति विज्ञान एव कला-कुशल । असएव इनकी सम्पताके विकासका आरम्म उन दोनोंसे वीछे हुआ।

अस्तु, अयोध्या प्रदेशके नाभिसुत ऋष्मदेवने पापाणकालीन प्रकृत्या-श्रित असम्य युगका अन्त करके ज्ञान विज्ञान सयुक्त कर्मप्रधान मानधी परंत्र प्रोध पर नवीन बारशास्त्र प्राप्त केल या। उन्होंने बॉड फी, कृति पिरण वर्षान्वव और विवादण ओहिय पर्याप्ति क्या रेगूस पुराधीन परमामान, वंदग कर जीर दान कर वर्षान्व बरूपनेश स्माने को बनोदा निया । राज्यम्यस्था जो बस्त्र बंदल किया जीर वर्षाने वास्त्रकों विवादों होजन्मण विधी । वार्षाच्या बीद्य नीर पूर्वे कर्मा वर्षास्थानम् भी विशेष क्या निवाद करानु वास्त्री रही वर्षाने वर्षास्थानम् भी विशेष क्या निवाद करानु वास्त्री रही वर्षाने वर्षास्थानम् क्षानेश्वेष हार्योच्या करानुस्थान हारान्य हुआ। को

भी सीविक एवं गान्तवीशक वर्षक हैकर वस्त्रीति दिवसूर विदेश की नार्य सरकारा और वैकास पर्यक्री विवास काम रिना । बनारे पुर समझ् पर्यक् पक्षा कि सर्वेदक समूर्य सावकों पान रिका प्रमुक्ताये सोविका स्वरूप किया । कामिक नार्मी का देव सावकर्ष नहानारा और सामीन सावेद्य सरकार्य कार्य

क्षप्रनाका मुख्यपर सर्वप्रथम के नवः विना । अभीव्यक्ति हरिनापूर्ण

स्व क्या पुरस्त माम प्रश्नित या विश्व च्याराम्भी-वानियोरं पूर्व र प्रस्त है। बागब है पित्री विधायत स्वयंत्री विधाय करते में निवासी है। वाजब है कि वार्षी हैं। या वहें हैं विश्व स्वेत में ति वार्षी हैं। या वार्षी पूर्व स्वेत प्रति हैं। या वार्षी प्रश्नित प्रत्य क्षा के स्वयंत्री समित है। या वार्षी प्रवाद क्षा क्षा कि त्री के स्वाद क्षा कि वार्षी की स्वाद क्षा की वार्षी की स्वाद क्षा की वार्षी की स्वाद की वार्षी की स्वाद की वार्षी की की की वार्षी की वा

मार्च कद्रसम्बा था । इनके द्वारा बनुसालित बंग्रहर्शि ही समय संस्कृति बद्रमानी । श्रूपमके बयरलत सामेशको अधितमाथ साहि शिवस दीर्वश्रमे इस संस्कृतिया गीयण निवा मीट क्षण समयार क्याय बोमवर्कम गुरू-

बास्तीय इतिहास । एक दर्शि

क्त प्रचार किया।

सिन्धु घाटी सम्यता—जिस कालमें मध्यदेवमे उपरोक्त प्रमत संस्कृति घोरे-घोरे विकसित हो रही या श्रय उसी कालमें उत्रत झवमधर्म एवं ध्रमण सस्ट्रिसे वर्षवित प्रभावित विद्यावसको सीविकता एवं भौति-षता प्रधान उत्तृष्ट नागरिक सम्पताका प्रारम्भ एक आर पर्मदा नदीके माठेमें और दूसरों ओर मिचु मदीशी पाटोमें हा रहा था। वर्तमान पाताब्दीके प्रारम्भिण दशकोंमें भारतीय पुरातस्य विभागकी सोरमे सिच प्रान्तरे लग्याना जिल्में तथा परिषमी पत्रावर्ग मा टगुमरी जिल्में जी महत्त्वपूर्ण सुदाई एव शोज शोध हुई है उसमे भागतमें एक अरवन्त प्राचीन एव अत्युत्रपृष्ट मागरिक सम्यताचे अस्विरवपर आदवर्गजनक प्रकारा यहा है। किंचु पाटीकी मोहन्जोदरी (मुर्टीका टीसा) नामस विगरात उत्तर सम्यता सम्यमानवकी अधुनाज्ञात प्राक्षीनतम सम्यता मानी जाती है। पुरातत्वर्गोंने एव पुरा नगर सोद निकासा है जिसकी नगर योजना, पनकी देटोंके सुन्दर मुचार नवन, हाट-बाजार, चीरम्ने, गमामवन, विविध अन्त्र - रास्त्र, आभूषण, खेर - निकीने, मुदाएँ, मूर्तियाँ आदि विविध पुरातात्त्वक सामग्रीने जो यहाँस प्राप्त हुई है वर्तमान समारको आरचर्याभिभृत कर दिया है। गेहेंका रोनी और उसका भीज्याप्त-के रूपमें उपयोग, रुईंकी सेती और उगते बस्य बनाना, स्वर्णक आभूपण मादि सिन्धु पाटीने इन प्राचीन विद्याधरींने ही अधिपनार माने जाते हैं। विद्वानींके मतानुसार इस सम्यताका जीवनकाल ई० पुरु ६००० स लेकर २५०० वर्ष तक रहा प्रतीत होता है। अवतक विरेमिडा एव फैराओ वादशाहोंक पूर्ववर्धी प्राचीनतम मिस्रकी नीलघाटीकी सम्यता तथा परिसमी एशियामें दजला-फरातको घाटीको सुमेर सम्पता ही सव-प्राचीन समझी जाती थीं । किन्तु अब उपरोक्त सिन्धु घाटीकी मोहन्जोदहो सम्पता उन दोनोंसे ही पूर्ववर्ती हो नहीं बरन् मानवकी सर्वप्रथम नागरिक एव ओद्यो-गिक मन्यता अनुमान की जाती है, और प्राचीन मिस्रो, सुमेरी आदि सम्पताएँ उसके पोछेकी सथा अनेक रूपोंमें उसकी ऋणी मानी जानी हैं। वड़ सम्बदा लोहेंके बास्तिकारये पूर्वकी वर्णाम् बालुपायान्य (वैद्यकीनिविक) वा साम्यवकी गानी वासी है।

ना पासनुनन्नी नार्या बाठा है। ऐना प्रतीय होता है कि दीवरे दीर्वकर नानननावके बसर्वमें नर्वजनन इस प्राचीन बनन्दाका प्राप्तन हुना। वानवशनका विक्रिष्ट नर्वकन बस्त

है बीर दिन्यू देश पिरकाण तक माने जैनान सक्तोंके निया जातान प्रााहे। बीर्ट नाक वह निर्माल पर कान्यूपर कान्यूपर माने जातान (बहुन) मानिक मोने पिताना में भी मूना तक्कार है कि तिम्मू वारताके मून कार्यकों पूर्व तीर्मेंबर तारवकार पूर्व क्यूपासियोंनी ही संस्थानस्पाद है।। बार कार्यका मंत्रीयन एवं क्यार्य ही गृहि वस्तु मानिक भी तथा एसके प्रस्तु विद्याल स्थीत की वार्यक कार्यक्रमा मीरि

युवस संस्कृतिक करात्रक प्राचीन विधायन सर्वात् सार्यात्र प्रवेश कारिके पूर्वत में ऐसा अर्थीय होता है। बर साम जावका अपना है कि "निम्मू श्रीकृति एवं विशेष ब्रेम्यू रिके पुन्तात्रक ब्राव्यक्ते क्षां नात्र निर्माण क्षित्र होता है कि इस होती सार्याक्रियों नार्यात्र को सम्बन्ध या स्वर्णन होता है कि इस होती सार्याक्र्य सर्वात्र पुन्ता कार्यात्र साम्यात्र स्वर्णन होता है विद्या

सबस पराह परितरिक्व होती है। शोहप्योपरोक्त पंचारोते हक्युह्मस्त्रा इस्त्रा सबाम है। एन व्यापीनें गुला पूर्णपेक्ष सङ्ग्रांत्रेशके सर्वेत पूर्व पूर्व मुर्वालां कित्या है। वाल प्राव्छ ल्लुगार दे साले गोरेशकेंग्रे मृत्या है। एक बाव विवादणा क्या है कि "से मृत्या एरहका मृत्या करतो है कि बागुपाला प्राव्यों लिल्यू पारोके तिपारी व देखता प्राप्ता करतो हैं कि बागुपाला प्राव्यों लिल्यू पारोके पर्वेत ति एसी से। एम्बरूस प्राप्ता क्या है कि "विवाद सारोकी बाव मुसाबीं सारोक

राजवरण परिषया करन है कि "किन्तु नाटीकी बनेच जुलावीं बहित न केम्ब देशे हुई केवर्गुणियां शेवपूराने है और वह युद्दर करीनारें शिन्तुवासीयें कोव सार्वके प्रभारणों विद्ध करती है बहित कर्यापन केर मुणियां सो बीचकी करनेक्चर मुख्यों है। और बहु जायोत्सर्व काम

पारतीय इतिहास : **रह परि**

मुद्रा विशिष्टतया जैन है। बादिपुराण आदिमें इस कायोत्सर्ग मुद्राका उल्लेख नमुपम या वृपमदेवके तपश्चरणके सम्बन्धमें बहुधा हुआ है। जैन ऋवमकी इसे कायोरसर्ग मुद्रामें खट्गासन प्राचीन मृत्तियाँ ईसवी सन्के प्रीरम्भ कालको पिलतो है। प्राचीन मिस्नमें प्रारम्भिक राज्यपर्शोके ममयकी दोनो हाथ लटकाये खडी मृत्तियाँ मिलती हैं। कि तु यद्यपि इन प्राचीन मिस्री मृत्तियो तथा प्राचीन यूनानी कुरोई नामक मृत्तियामें प्राय वही आकृति है तथापि उनमें उस देहोत्सर्ग निस्सग भावका अभाव है जो सिन्बु घाटीकी मुद्राओंपर अकित मूर्तियोमें तथा कायोत्सर्ग मुद्रासे युवत जिन मूत्तियोमें पाया जाता है। ऋपम शब्दका अर्थ वृपम है और वृषमं जैन ऋषमदेवका लांछन है।" वस्तुत सिच् घाटीकी अनेक मुद्राओमें वृपम युक्त कायोत्सर्ग योगियोंकी मूर्तिया अकित मिली हैं जिससे यह अनुमान होता है कि वे वृषभ लाखन युक्त योगीश्वर तरपभकी मृत्तियौं हैं। ऋषभ या वृषभका अर्थधर्म मी है शायद इसीलिए कि लोकमें धर्म सर्वप्रथम तीर्थकर ऋपमके रूपमें ही प्रत्यक्ष हुआ। प्रो० रानाडेके मतानुसार 'ब्रह्मपमदेव ऐसे योगी ये जिनका देहके प्रति पूर्ण निर्ममत्व उनको आन्मोपलव्यिका सर्वोपरि लक्षण या। उत्तरकालीन भारतीय मन्त्रोके योगमार्गमें भी श्रष्टपभदेवको उक्त मानका मूल प्रवर्तक माना गया है। प्रो॰ प्राणनाथ विद्यालकार न केवल मिष्यु घाटीके धमकी जैन घमसे सम्बिधित मानते हैं वरन् वहाँसे प्राप्त एक मुद्रा (नं० ४४९) पर तो उन्हाने 'जिनेश्वर' (जिन इड्सरह) शब्द भी अफित रहा वताया है और जैन आम्नायकी थी, हीं, किल आदि देवियोंकी मा यता भी वहीं रही वतायी है। वहाँसे नागफणके छत्रसे युषत योगी मूर्त्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं जो सातवें तीर्यंकर सुपार्श्वकी हो सकती है। इनका लाउन स्वस्तिक है और तत्कालीन सिन्यु घाटोमें स्वस्तिक एक अत्यन्त सोकप्रिय चिह्न दृष्टिगोचर होता है, सड़कें और गलियाँ तक स्वस्तिकाकार मिलतो हैं।

कुछ विद्वान् मोहन्जोदहो सम्यताके प्राग्आर्यकालीन होनेमें सन्देह

शिक्षण हरिय की । क्ष्मणी बाधा सर्वे में मूर्ति प्रधारि क्ष प्रविशेष मे १ को हैरानके सम्बार 'मीएओएडीका जानीन नाव बण्डर सर्वीड् बररदेश का । बीर अपूर निर्देश अनुष्यकी वर्षत्रका विशितका मह क्रमाना सम्बद्धी जनभार वर्गप्रवन कम्पना वी । हो हैगान इस क्षावतारी प्रशिक्षण हो मानते हैं। यह कामानक यह बात प्यान के बोला है कि 'महर भने डॉबॅबर पुरनालावा शासन है। साम मायन इस fere gurriet med unt mitrit mutuf ufen ge ferfen मंद्रुतिको जानते है। ही एवं चीचण्यास्त्रीका बहुना है कि 'बारे दिक्तार वर्ग तीम मार्ग नुरुप बादि शिक्तिम शास्त्रीची दृशा बारि बारोंके कारक प्राचीन निष्कु कम्पना बैन वर्षके शाब अद्देशन माद्राय रखती है। मता यह मन्त्रा अनार्य अपना वनने बन सनैदिक के है ही अन्त देना प्रतीत होता है कि वक्त वाचीन किन्दु कामता है पुरस्कर्ता प्राचीन विद्यापर मानिके भीत से जिल्हें इविसीचा पूर्वज बहुत का सबसा है। तिल् बाव ही बन्डे जैरक वर्ड पार्विक मानार्थन सम्परेशके है मानवर्षी तुन भार वे को शीर्वकरोडे सानवर्ष और बाहव संस्कृतिके बचानक में । दीवरे बीनंबर मानवनायके नेवार करें दीनंबर परपान्त सकता बाद किन् बानगरि विशेषका बाध है। जुनस्रके कुलाना प्राप्त-मा बान प्रमाश क्लार्च नान छा । माथः हवी धनम प्रशासके बर्जनान माध्यमती विभेने बाला नामी वृषित वरेयवें कर्मानेतीके करने एक अन्य नामका निर्मातक होती सुरू हुई। इतका फाल ई प ३ 👔 र वर माना बाता है। हरणांशने जी बनार्य और अवैदिस के

विना प्रवर्धे क्रम परिवर्धी बाधीका को कामान्यरमें वैदिक क्षंत्रादिको सन्द

भारतीय इतिहास : स्थ धीर

40

करने हैं। इनके समुद्धार का^{र्या}ना मण निराध स्थान व्यास्त्रपत ही **है से र** निरमु नरस्ता आहे जनवताओं ही एक वार्षातक सरस्ता है। दिन्दु सम्बद्धान्य इसे परावे हैं कि विज्यु सम्बद्धा स्वयंत्री की वी नीमूं पर देनेवाले घे गुछ विश्रण रहा ही मक्या है। कार्य कार मगोदित वैदिक सार्योका हट पादालिक साथ हो सर्वप्रथम एव सबसे भीवण संघर हुआ। वैदिय साहित्वरे दस्यु, अनुर आदि यही थे। पिदचमी एरिवाम एक से बाद एक आनेवाली सुमेर, अस्नुर, बाबुकी आदि सम्बताओंका सम्पर्व अपनेने प्रवेच्छ मोहन्त्रीदरो एवं समकालीन हट्टपा सम्प्रताके साथ विशेष रहा। मिल्रकी प्राचीत्रसम सम्मता भी प्राय इसी गालकी है। ई० पू० २१५० के समम हट्टपावालोंके साथ पिदममी एवियाको सुमेरी सम्प्रताका सम्पर्क विदियत रूपने रहा प्रतीत होता है। तत्कालीन कालगणनामें यह विधि महत्वपूर्ण है। हड्टपा सम्बताको चिह्न गंगा, पम्बल और नर्मदाके कांटोंम पिदमी उत्तरप्रदेश (हिस्तनापुर आदिमें), पिदचमी राजम्यान तथा गुजरात वाटियावाड़ आदि प्रदेशोंमें भी प्राप्त हो चुके हैं को उनके जिम्तूत प्रसारके सूचक है। इस सम्बताको उत्तराधिकारिको इक्तर आदि परवर्धी सम्पताले मानी जाती है, और तदुपरात आर्थ (इन्ड आर्थनों) का तथा उनकी वैदिक सम्पताला उदय हुआ माना जाता है।

चैदिक सम्यता—आगों मूल नियासस्यानके विषयमं यहा मताभेद है, किन्तु अधिक संगत यही प्रतीत होता है कि वे मूलत भारतके
हो निवासी चे और मध्यदेशके प्राचीन मानववंशी आयोकी ही उस शासाले
मम्बियत है को ऋष्मदेवके समयमें होनेवाले मानवो सम्पताके उदयके
कुछ पूर्व हो पिव्वमोत्तर प्रदेशकी और विचरण करो मूलशासाले प्राय
पृथव हो गवी ची और चिरकाल पर्यंत पृथक हो रही। इसया एक कारण
यह भी रहा प्रतीत होता है कि उनका प्रयाह और विचरण पूर्वकी और
अपने मूल जातिबाचुओकी और न होकर पिव्यक्ती और अर्थात् पृथिमी
एशियाई देशोकी ओर हुआ। वहाँसे ये उत्तरी एशिया और पूर्वी एव उत्तरी
यूरॅप आदिको ओर भी फैले। इनका प्रधान वेन्द्र पिद्या एशिया रहा।
उनकी एक शाला जब ईरानमें वम गयी सो एक कान्य शाला किरस
मारतमें आयी और उनके को जातिबाचु यहाँ पहलेले हो पिद्यमीलर

ठटरर सामी स्मानो सहित्यों बनावीं सामिन्नेक नामीं राजमा की मार् पहुँदिया कुमा उत्तरेताको हैरिक श्रीप्रतिकों सम्म शिया। से में द सीकारण उत्तरीके सामुमादर आंद्राला केरिक पूत्र पाराधीन-देवारी समापार सिमान्ने हो एक बहुत है। सामीन देवारी और देविक संस्कृतिक सेवारिक पहुंदर्स कर बाव किस है। सेवार पूर्व प्रतारक एक सामिन्ने साधीनक क्यांनी राज्मार्थ विविद्य कुमाने आहम्मान है। बाव कि सेन्स्युक्त सामिन्ने हैं द १९०१ - क्या किसान वार्षी है। बाव कि सेन्स्युक्त सामिन्नों ही द १९०१ - क्या किसान वार्षी हो।

मांबर्गन्मियके बाबारमर वर्ष है पू ६ व पू के बीच बनुवान करते हैं। फिन्तु में गोनीं ही यह वांद्रधनीनिवर्ष धाने बाते हैं। बहुबत इब कम्पनो हैं पू व के नगमन निवर करता है बीर

प्रदेशने बड़े के क्याँ नदीन जोत्साहत कुँककर दल्होंने बरस्पती नदीके

क्षण्य र ा दे पू क्षण वैदिव बार्यामा निवास्त्र कर पर्यक्षण पास्त्र कर प्रतिकृति । तो वीच वार्याम निवास्त्र कर पर्यक्षण प्रतिकृति । तो वीच वार्याम निवास्त्र विकास वार्यक्षण प्रतिकृति । विकास वार्यक वीचि वार्याम निवासी वार्यक्षण प्रतिकृती वार्यक प्रतिकृति । विकास वार्यक वार्य

देरिक मार्टीके परिकर विकासों जिलाकाच्या जापर-विकार प्रकृत्वहून सम्मानिक मार्टिक वर्ष प्रतिविक्त बेठान क्षेत्रिक दृष्टिम्स मार्टि दिस्ती के बारुवार्टी बहुए कुळ वार्ववरणे प्राप्त हो वार्ती है। सामिक विकासकाच्या प्रकृति स्वापने पूर्णिय कामान और एमार्टी विक्ती सुद्धाने विकास सर्वोपरि स्थान, विशा या जनपद, ग्राम या वस्तीकी व्यवस्था, समाजमें स्त्रियोका सम्माननीय स्थान, बहुपत्नीत्य और बहुपतित्व, वण-व्यवस्थाका प्रारम्भिक रूप, अनुलोम-प्रतिलोम निवाह, मासाहार, सुरापान, छूतव्यसन सादि तत्कालीन सस्याओ, प्रथाओं एव लोकदशाकी रोचक सूचनाएँ मिलती हैं। ऋग्वेदसे ज्ञात होता है कि प्रारम्भिक वैदिक आयोंका यज्ञविरोधी हडप्पावालोंके साथ सांस्कृतिक एव राजनैतिक सघर्ष हुआ, युद्ध हुआ और सुलह हुई । चन लोगोंको आर्योने दस्यू और दास आदि सज्ञाएँ दीं । इस कालकी प्रमुख घटना दशराज युद्ध है। भारतके प्राचीन भारतीका भी इस येदमें उल्लेख मिलता है। मानवी सम्पताके मूलप्रवितक योगीश्वर ऋपभकी स्तुतिमें भी कुछ मन्त्र हैं। किन्तु साथ ही लिगेस्वरकी इन्द्रका शत्रु भो कहा गया है। कालान्तरमें ऋकसहिताके रूपमें सकलित इस प्रथम वेदमें दश मण्डलोंमें विभाजित कुल १०१७ मन्त्र हैं। जैन अनुश्रुतिके अध्ययनसे पता चलता है कि दसवें तीर्थकर शीतलनाथके उपरात्त सर्वत्रयम बाह्यणोने श्रमण-परम्परासे अपना सम्बन्ध विच्छेद करके अपनी पृथक् ब्राह्मण सस्कृति एव वैदिक धर्मको जन्म दिया था। हो सकता है कि वैदिक आयोंके समाजमें ब्राह्मण वर्गका सर्वोपरि स्यान देखकर मध्यदेशीय मानववशी ब्राह्मण उनकी और आकृष्ट हुए हों। वेदोंकी मापापर मध्यदेशकी अर्घमागधी प्राकृतका तथा ईरानी आदि पश्चिमी भाषाओंका द्विविध प्रभाव रहा प्रतीत होता है। लिपि जो उन्होंने अपनायी वह भारतके मानवविषयो-द्वारा आविष्कृत ब्राह्मी लिपि थी।

उत्कर्पकाल -रामायणसे महाभारत पर्यन्त - शनै वैदिक कार्योने भारतके आदिम निवासो मानवों और विद्याधरोंसे सुलह कर ली और उनका उनके साथ रक्तिमध्यण भी होने लगा। उन्होंने पूर्वकी ओर फैलना प्रारम्भ कर दिया और पजावसे लेकर समस्त पश्चिमी उत्तरप्रदेश उनका के द्र यन गया। उनको राज्य धनितयोका भी विकास हुआ जिनमें

दुरुप्यानाके राज्य कर जानून है। विशिष्टे नवील वाल्यामें पूर्व एर्ट पूर्ण क्षेत्रे बृद्धियन बजाय जायर वाल व्यक्ति क्राविष्ट ब्राव्यून बागर-वित्यवकी बाव क्रारि क्षित्रपर क्रावित्र च्यापूर्ण विष्ट पुरूष कारके वार्कानाम जीए क्षित्र भयोक शुरूपेके विषय यालकारी क्षावित्र बृद्धिक हो कहीं। वृद्धिकार वृद्धिकार करने क्षी पुरुष्ट क्षेत्रकारण क्ष्यविद्यानाम क्ष्यविद्यानाम क्षेत्र करने

कर्य पूर्वी उत्तरप्रदेशने वीजिन हीते चले वये । बीचरे डीमेंबर मूर्विपृष्ठके सबस तक वैदिक वर्ष वर्ष व्याप्य तंत्रप्रीकी बत्तरीतर सर्वात द्वारी बती । अभिनयन्त्रप्रको डीमेंबे कारापुके पूर्व वंगले बत्तक बतीध्याति स्वयंत्री

इत्तर तेनेत देशहीरारी व्यवण्यात भारतिय व्यवण्ड हुआ। स्वार्य वर्षाय तिर्दे स्वयः वर्षायाची एक स्वार्ण पुराव पुराव ह्या ह्या क्षेत्रे मान्ये मोक स्वार्ण प्राप्त वर्षाय स्वार्ण रामे वर्षे स्वार्ण रामे वर्षे स्वार्ण रामे वर्षे । स्वार्ण देश्य राह्य मार्थिकीय स्वार्ण रामे वर्षे । स्वार्ण देशा स्वार्ण स्वा

म्हानेरफे बपरामा महानु, बाल और अवर्त गानफ देन होना देरीने

सहार करने विश्व 1/2 में के यान परण वरण वास्तानिक वार्य हैं हिर्मिक करने हो जाने हैं हिर्मिक करने हुए जीता निक्क हैं। विशे मुन्ती वार्यकारों के कार्य करनोड़ा स्वार्यकार स्वार्यकार सुर्वा है। विश्व कर्मिक मुन्ती वार्यकारों के कार्य करने हिर्मिक करने हैं। विश्व कर्मिक विश्व करने हैं। विश्व कर्मिक विश्व करने हैं। विश्व कर्मिक क्षित्र करने हैं है। क्षार्य कर्मिक करने हैं। इस करने क्षार्य करने हैं। इस क्षार्य करने हैं। इस क्षार्य करने हैं। इस क्षार्य करने हैं। इस क्षार्यकार करने हैं। इस क्षार्य करने हमार्थ क्षार्यकार करने हैं। इस क्षार्यकार करने हैं। इस क्षार्यकार करने हमार्थ क्षार्यकार करने हमार्थ हमार्थ करने हमार्थ हमार्थ करने हमार्थ हमारथ हमार्थ हमारथ हमारथ हमारथ हमारथ हमारथ हमारथ हमारथ हमार

समन्वय या समझौतेका एक कारण यह भी प्रतीत होता है कि रामायण एवं महामारतको पटनाओके मुख्यमतीं कालमें वैदिन-आर्य समाजमें सित्रयोंकी शक्ति और प्रमाव अत्यधिक बद् गया वा-उनकी बलवती राज्यसत्ताएँ यत्र-सत्र फील गयी थीं, त्राह्मण मन्त्री और पुरोहित मात्र ही रह गये थे। इसी युगमें वैदिक दात्रियोकी राजनीतिक दावित सर्वोपरि षी और यही काल वैदिक सम्पताका चरमोत्कर्प काल है। महामारतके विनाशकारी युद्धने वैदिक गुगका ही अन्त नहीं किया, वैदिक अन्तिमी राज्यसत्ताको भी अत्यन्त अयनत कर दिया।

जिस प्रकार इस युगके प्रारम्भमें अयोष्याके रामने दोना सस्कृतियाँके समन्वयका स्तुत्य प्रयस्न किया था उसी प्रकार इस युगके अन्तमें यहुयंशी कृष्णाने वैसा ही प्रयत्न किया । ये दोना ही महापुरुष भारतकी मीलिक सांस्कृ तिक एकताके प्रतीक हैं—दोनों ही प्राचीन श्रमण एव ब्राह्मण सस्कृतियाँके योजको सुदृढ़ कहिया है। फुल्ल भी दोनों ही परम्पराझोंमें प्राय समान रूपसे सम्माननीय हैं। उनके ताऊजात माई वाईसवें सीर्यंकर अरिप्टनेमि भी यजुर्वेदमें स्मृत हुए हैं। कृष्ण स्वय प्राचीन मानववशकी हरिवश नामक यालामें उत्पन्न हुए ये और उन्होंने कुरु पांचालके वीदक आर्य समियोंके साथ विवाह एवं मैत्रो आदि सम्बाध स्थापित करके तथा अपनी विलक्षण कूटनीति-द्वारा मारतकी ममस्त तत्कालोन राजसत्ताओंको मिलाकर, लडाकर और प्रभावित करके चन सबका ही नेतृत्व किया तथा उनके वंशजा-द्वारा फालान्तरमें ईश्वरफे अवतारके क्ल्पमें पूजे गये। साथ ही श्रमण अथवा जैन परम्परामें भी वे नारायण, अर्धचक्री, त्रिखण्डो, श्रावकोत्तम, वपने समयके सर्वप्रतापी सवलिक्समान् आदर्श नरेश एव धर्मात्माके स्पर्मे स्तुत्य हुए हैं। स्वय पाण्डम य यु भी जैनधर्मके चपासक तथा अन्तमें जैन मुनियोंके रूपमें सप करते बताये गये हैं। रामायण एव महामारतको घटनाएँ वहुत थोहे-ते अतराँको लिये हुए ब्राह्मण एवं जैन दोना ही परम्पराओं में प्राय एक-सी पायी जाती हैं और

समान करने जीवजिन हैं। नातुका दीवी भारतहोंके में कथानक एक दूवरेंके परक है और निवासित प्रतिकालके जाराजते कृति अनुसूतिकम कामके जिन् बाह्यम परमारामा वैदिक बाहित्त, शामाध्य वर्ग बहाबारत नाम वधा पुरान इन्न जितने क्यांगीयों हैं क्याने ही बेन पुरान काहिए तथा पार्टिक बन्धित्यों को है। बैना कि हो। बयक्त विद्याबंदारका क्षम है, मारतका शाबीन प्रतिकास जिल्ला बेटींकी जान्य भएतेशाबीना है बराना ही बेस-

विरोधी मैंबोहर है। मैंशके आयोज शोकंबर भी मैंबे ही बलायिक ऐतिहाबिक नवन है क्षेत्र कि वेचीने एनिवास अस्तितन तथा बाह्यण परामयके बार्य अधिन बहारुकर । बस्तुतः क्षेत्र पुराषः क्रम्यकारि कर काल-बारनाची विकार वहीं अविक वृद्धियम्। श्रांत्रप्रता वर्ष वास्त्रविकताने

निरुट हैं । अवन तरहरि भी यून कारतीत जानीय नावर संस्ट्रेटि हैं भी वैदिक वर्ष बीट ब्रह्मून धेन्द्रतिके वरवके सम्बन्धाना कुछ पूर्व 🛐 ब्राह्मिकी मा चुनी गी और विशंतित ही चुनी थी। ब्राह्म-वैदिक बंग्ह्रातिके क्याके कारान्य यह बढके काम बोमर्च करती क्षत्रमूत करती आयान-वदान कच्छी तथा क्ष्मी नृषद् बता वी बनावे एकता हुई फलती-इन्स्ते और

निकृतिक होसी रही । नियासकारी मंत्रामारत पृत्वके अच्छो । काक-बाच चारतीय प्रतिपृत्वके

क्रोर्व नाम्बेन्द्रातिक इव मनुब्धियम्य इतिहास परक्का सन्त और नियन्ति इतिहासका गाएन होता है।

भारतीय प्रतिकास नक्ष शक्ति

अध्याय २

प्राचीन युग-प्रथम पाद [महाभारतसे महावीर पर्यन्त]

बहुत समय तक भारतीय इतिहासका नियमित प्रारम्भ छठो घताइरी ई० पू० में महावीर और वृद्ध-द्वारा क्रमदा जैन एव योद्धधमेके प्रचार तथा मगध साम्राज्यके उदयसे माना जाता रहा। इसके यांवका काल ऐतिहासिक तथा पूवना प्राग्ऐतिहासिक कहा जाता था। किन्तु इधर कुछ दशकांसे भारतीय इतिहासकारोका सुकाव भारतवर्षके नियमित इतिहासको महाभारत युद्धके ठीक उपरान्त प्रारम्भ करनेकी और वढ़ना जा रहा है। अस्तु, भारतवर्षका विधिवत् इतिहास अध गत लगभग तीन सांदे तीन सहस्र वर्षका इतिहास माना जाता है। इसका प्राचीन युग महाभारत युद्धके ठीक बाद प्रारम्भ होकर मुसलमाने-द्वारा भारतकी विजयके साथ समान्त होता है। इस छाई सहस्र वर्षके सुदीर्घ प्राचीन युगका पूर्वार्घ प्रधानतया वत्तर भारतके इतिहाससे ही सम्बन्धत है, दक्षिण भारतके सम्बन्धमें इस युगमें कोई विशेष जानकारी प्रान्त नहीं होती।

महामारत युद्धको एक ऐतिहासिक घटना माननेमें अब प्राय किसीको कोई जका नहीं है यद्यपि महाभारतमें कथित उसके वर्णनको जैसाका तैसा माननेमें प्राय सभी सकोच करते हैं। इतिहासकाल अथया भारतीय इतिहासके प्राचीन युगके आदिकालका सूचन करनेके लिए उक्त घटनाकी तिथिका निर्णय करना आवश्यक है किन्तु इसके सम्बन्धमें भी विद्वानोमें यहुत मतभेद हैं। प्रो० पार्जीटरके अनुसार महाभारतकी तिथि ई० प्० के कारण साधीय प्रांत्राक्य वार्यण पूर अराज्य हुआ साथा या कारण है। प्रदान पराम्याके अनुसार को क्या हाराव्य अन्य हुआ और स्वीत्राच्या अनेत हुआ। नगा है कि बहुआराफ्ष करन को निर्देश कारण अर्थ परिकारण में प्रायं हुआ की उक्त में बहुआ कर्या आप कर्या आपनी हो क्यों थी। १४गीवे क्या गांत्री हुन्या त्या वात कर्या मिराव्या वहरूसा है बीर समुद्रा यह अराज पुरस्कार पूर्व या। इक मीर मीर्थ कर, इस्त्रम कर्मान हुआ की हुनचे और तीर्थक कर, अराज मीर्युक्त क्या प्रदान हुआ की हुनचे और तीर्थकिक कर, अराज मीर्युक्त क्या कर साम्याक स्वीत की क्या कर्या हिंदा क्यांच्या वार्या करें

एरसेर्डिक क्रेक्न स्थानायके बरायक वाद पायने में देव बारियोरे पाद पात्र के—बाद हुए, पायक गृहेक श्रेषक पायी गूर्त विदेह, बदम श्रीवन कारीत मंदिराती होर सहका । हरी मी पूर (पायकों हरिकार्ड) वादक (पायकों विदेश) केट क्रेस (पायकों सरेक्य) विदेह (पायकों विदेश) क्रेस क्रांत्र (पायकों सामार्थी) क्रायक वीच पात्र मुख्य है। एस क्रांत्र कराये

भारतीय इतिहास : एक परि

यगप्र पुरस्तवान ह्वा

11

१९ है जो रवेश्यवस बनुसार, वो सोववान्त्र पार्थी वार्थीय वार्थीय कहार स्वावन्त्र हैं है वर्गन हात्रे बहुत्यर हैं है देश राव्यक्तियों नाव्यक्तियों कानुसार हैं है देश राव्यक्तियों कानुसार हैं है देश राव्यक्तियों साव्यक्तियों कानुसार हैं है देश राव्यक्तियां साव्यक्तियों कानुसार हैं है देश राव्यक्तियों कानुसार हैं है देश रिक्ति वृत्त्वस्त्र का को देशों कानुसार को देश राव्यक्तियां कानुसार को पार्थी कानुसार को पार्थीय कानुसार की पार्थीय क

नरेश पुर, इत्त्राफु और मागध इन तीन प्राचीन राज्य वशों में से ही किमीन न किसीके साथ सम्बन्धित थे। ये सभी राज्य उस समय प्राथ वेदानुषायी आर्यक्षत्रियों के हो थे। इनके अतिरिक्त जो अय राज्य पूर्व, परिचम, उत्तर और दक्षिणमें स्थित थे वे प्राय श्रमणीपामक क्षत्रियों के थे।

चपरोक्त १२ राज्य वंशोंमें भी सर्वप्रधान राज्य नुरुदेशमें हम्तिनापुर-के पुरु, कुरु अयवा पाण्डत्र विश्विमाका था। अर्जुनवा पौत्र परीक्षित् उनका सधीरवर था। किन्तु उसके समयमें हो वैदिक आयोंको बढ़ती हुई छिन्तके सम्मुल चिरकालंगे दवी रही नाग अ।दि द्रविष्ट जातियाँ फिरसे यत्र-तत्र सिर उठाने त्यों। पश्चिमोत्तर प्रदेशको तक्षशिला और मिन्यू मनको पातालपुरोके नाग विशेष प्रवल हो उठे। नवीन उत्माहमे जागृत, विशेषकर त्तसिशालके नागोने कुर राज्यके ऊपर भीषण आक्रमण शुरू कर दिये। उनके साथ युद्धमें ही परीक्षित्की भृत्यु हुई। उनके बेटे जनमेजयका भी सारा जीवन नागोंके साथ युद्ध करते ही बीता । उसने उनका भरसक सहार भो किया किन्तु उनके बढ़ते हुए वेगको राकनेमें वह भी असमर्थ रहा और हस्तिनापुर राज्य उत्तरात्तर क्षोण होता चला गया । जनमैजयके परचात् रातानीक, अस्वमेधदत्त और अधिसीमङ्गण क्रमश गद्दीपर वैठे। विधिमाने समय अयोध्यामें दिवाकर, मगयमें सेनजित् एवं विदेहमें जनक उग्रधेन राज्य करते ये और पजावमें प्रवाहण जैवलिका प्रभाव था। अधि-सोमके बेटे निचक्ष्के समयमें नागोंके निरन्तर आक्रमणांके अतिरिक्त कृष देशपर लाल टिट्टोका भयकर प्रकीप हुआ, भीषण दुर्भिक्ष पहा और स्वयं राजधानी हस्तिनापुर गगाकी बाढसे व्यस्त हो गयी । कुरुवंदी राजे देश-का परित्याग करके वत्स देशकी कौशाम्बी नगरीमें जा वसे । इस प्रकार

प्रदेशसे अन्त हा गया । तदनन्तर नागोंने उसपर अधिकार कर लिया । तभीसे गंबपुर या हस्तिनापुरका नाम नागपुर या हस्तिनागपुर भी प्रचलित हुआ । यह घटना लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ई० पू०की है।

3 4

उत्तरापयकी सर्वप्रधान बेदानुगायी क्षत्रिय राज्य शक्तिका कमसे कम कृष्ट

बन्द्र बहु। कारी या का असमें बते मार प्राप्त और ताब दी विश्वेष्ट्रे करतीये राज्यताध्य कम हो बचा बीट बहुं केंद्र राज्य स्वादित में बत्ता करी करीय वैद्यार्थित किल्पालित केंद्राज्य विश्वेष्ट स्वीत्य या। विश्वेष्टरा नेपाल्य भी जरीमें किल बड़ा और प्रयावका तुम्हिज वृद्धि या बीज्यावरी स्वाद्या हुई। ये तील सम्ब्रीमानक इस्त्र व्यक्ति में

नवंद पाढी पारको बारे कहा थे. मध्येषको बारे कुंबर मुझान्य बल्डि बी : जीनक नई बाद कबके सर्वीत हुना ! किसी नवर भोरावरी बांटेके बरमक पारको प्रकारी गीवन (गीवनवृष) सी इस्कें हरिमहिन्द बी !

प्राय: इसी बामपके लक्ष्मण विदेशमें अधील हुई । वहाँका राजा करान

कारोतें को प्रश्य का शामकेची पालब कविनतींका पात्रत स्वापित हीं कता । इस संपर्धि बंधावत नामका बंधा शक्षाती कालब्री बंधाद हुआ । इस

3 =

न्यारण के राज्यस्था मिनन प्रकर्ण या। उनका क्रमेण करवेद रूप में व्यक्तियों में मार्थ है। में राज्येस्था कर्तृत तिम्तू कर्मने वृंत्वित्तित्त्रमें स्टेंक करवेता शोर्ड मार्थ कर्मने क्ष्में प्रक्रिक रेप्ट्र सेनंदर व्यक्तियारण वण हुवा। मार्थ वर्गी क्ष्मा राज्य हुवा क्रिको सेनंदर व्यक्ति करवा क्षमा व्यक्ति क्षमा राज्य हुवा क्रिको सेन्द्रियार्गिकारों के व्यक्ति क्ष्में क्ष्मी क्ष्में मार्थ हुवा क्षिको स्टिमार्गिकारों कर्मा क्ष्मार्गिको स्थान क्ष्में क्ष्में क्ष्मा क्ष्में क्ष्में

हुए अनारके बम्बूक कोरफ पत्तां चना बता । इस प्रकार करी बती है वु के पूक कुर्व ही महानारतकामीय वक्ता वैश्विक अधिव राज्यक्ताओं-

आसीव इतिहास क्या दिव

का प्राप अन्त हो गया था और उनके स्थानमें एक और नागादि विद्याघर विवासको राज्यमत्ताएँ तक्षानिछा, पातालपुरी, उद्यानपुरी, पपायती, भोगपुरी, नागपर, अग या चम्या तथा दक्षिणके भिन्न भिन्न भागोमें स्थापित हा चुको थीं और दूमरी ओर लिज्छिब, मन्ल, मोरिय, आदि प्रात्य धनियोक से सनेक गण या मधराज्य यत्र-तत्र स्थापित हो चुने थे, साथ हो पुरानी राज्यमत्ताओं के स्थानमें काशी और मगध आदिमें इही दात्यों अवत्रा तथा-कथित छात्र-बन्धुओं को कई ऐसी प्रतापी राजत त्रीय धित्रयाँ प्रवल हो चुकी यों जो साम्राज्य पदकी पोषक थीं। काशीके बहादत्तने साम्राज्य स्थापित किया ही था। कुछ कालके उपरान्त मगध साम्राज्यका जदय हुआ।

बाह्मण परम्पराकी अनुस्रुतियोंमें लिच्छवि, मल्ल, मोरिय आदि जातियोको बात्य कहा है। धैजुनाक वशको मी सन्निय नहीं वरन क्षात्रबाध कहा है। प्रो० जयचन्द्र विद्यालकारके अनुसार, 'इस शब्दका प्रयोग होन-ताका भाव मुचित करनेके लिए किया गया है क्योंकि वे वात्य लोगोंके क्षत्रिय थे, और प्रात्य वे आर्य जातियाँ थी जो मध्यदेशके पूर्व या उत्तर-परिचममें रहती थीं। ये मध्यदेशके फूलीन प्राह्मण क्षत्रियोंके आचारका अनुसरण न करती थी। उनकी शिक्षा-दीक्षाकी भाषा प्राष्ट्रत थी और वेशभूपा (आयोंको यृष्टिसे) परिष्कृत न थी । वे मध्यदेशके ब्राह्मणोंके सस्कार न करते थे और ब्राह्मणोंके बजाय अर्ह ताको मानते थे तथा चेतियो (चैत्यो) की पूजा करते थे। वस्तुत इस कालम वैदिक आर्थोकी शृद्ध स तति अविशिष्ट ही नहीं रह गयी थी। रक्तिमित्रण, सास्कृतिक आदान प्रदान एव वहमा धर्म परिवतन आदिके कारण एक नवीन भारतीय जाति चदयमें आ रही थी जिसमें श्रमणोपासक चातुवर्णके श्रात्यो अथवा नाग आदि द्रविड जातियाका बाहुस्य था । आर्य द्रविद्धोमें भी घीरे घीरे रवनिमध्रण हो रहा था और परस्पर जातीय भेद-भाव मिटसा जा रहा था। व्यवसाय-कर्मके अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैरुष और जूद, इन चार वर्णोमें समस्त भारतीय समाज वेंटता जा रहा था। क्षात्र धर्म पालन करनेवाले चाहे वे वैदिक बार दो बन्नान हो आहे मानवहंतो बारी बीन बानों है और बहरेगा वर्गर दिल्यर बीवाहों जबश बीवाहों-जब बान-वारणों बीवा है बहरे के बीन बार्ग विशान दला हो प्रकार करने बार है वे हनों हो बहरे के समझ हो जो वर शांतरत परवेदे दिलों है जिस हैं बार है है है है है वह से अन्तवहारी जानाश होरी

दोनाय वैद्यां कि कर संबंधित र विश्वा नक्ष है यह के वर्णान्य निव्य क्षा है। प्रत्य त्यान क्षा है यह के वर्णान्य निव्य क्षा है। प्रत्य त्यान क्ष्मित होते हैं ते के हो। या प्रत्य क्षमित है। त्यों है है ते कि हों के व्यक्त कर्णा ने राज्य है। या प्रत्य है तो कि हों कि व्यक्त कर्णा ने राज्य है। या प्रत्य है या कि व्यक्त क्षा है। विश्वा कर्णा है विश्वा कर्णा है। विश्व कर्णा है। वि

बाह्य अनुवारित कर तथा बहाराशन वालीय हुन पान्नीवर ही

क्रमेल (कारा है थोत अनुपा दिवार —वारो वोहन संव कार भीत (भी) तंत (क्रम) दूर प्रश्नकता कार (अपन) दुर्विन सारह (अपन) अर्था न तारान रात्रीक-जून कार नुस्केट कारों सारह (सारहा) अर्थान (अर्था क्रमें क्रमें द्वील (क्रमें हुर्विन सारह (सीराम्)) अर्थान (अर्था क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें हुर्विन (सिराम), जान (प्रथा), और कारों (स्वादक्षे) निर्मा (सिराम) कि सारसादिकीने नाम (कारे हैं। वैत भारत्यों पूर्वि- अर्थ में वर्षे विश्व) अतम आर्थ कार्य (कार्य), प्रभा विश्व कार्या सीर कार्यों कार्य कार्य (कार्य), प्रभा विश्व कार्या सीर कार्यों कार कार्य (कार्य) कार्य कार्य कार्य सीर कार्यों कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य सीर्थ व्यक्ति हों। कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य सीर्थ व्यक्ति के कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य

का जानेस निषया है। इत ज़ूरियोड़े गुभ्याल्यक सध्यक्तमें मह शाह है कि

मार्लाव इतिहास । एक धीर

जैन सूचियाँ अप सूचियों की अपेक्षा अधिक बहुक्षेत्रव्यापी और सम्भवतया अधिक कालव्यापी हैं। दूमरी बात यह है कि विभिन्न अनुसृतियों को सूचियों । उनहों देशोका उल्जेष विशेष रूपसे है जिनके माथ उनके अपने-अपने धर्मों का अधिक सम्बन्ध रहा। उपगोक्त नामोर्मे भी उस काल (६ठी शताव्हों ई० पू०) में मगध कोमल, वत्म और अवन्ति ही प्रमुख राज्य ये तथा विजयोंका गणतन्त्र गणतन्त्रोंमें प्रमुख था।

इस श्रमण पुनरुत्यान युग या उत्तर वैदिक काल (१४००-६००-ई॰ पु॰) में एक ओर तो वैदिक यज्ञोंका कर्मकाण्ड बढा और दूसरी ओर ज्ञान व तरा विजनको एक नयी लहर लक्षित हुई। वैदिक मंत्रीको ऋक्, यज्य नाम और अयर्व नामक चार संहिताओं में सकलित किया गया। चनपर जटिल गद्य भाष्य बनाये गये जिन्हें 'ब्र'ह्मण' ग्रन्थ कहते हैं । एक दूमरे प्रकारके भी भाष्य वने जो 'आरण्यक' कहलाते हैं क्योंकि वे वनोंमें ऋषियों-द्वारा रचे गये बताये जाते हैं । वैदेंकि ही कथचित् आश्रयसे एक दूमरे प्रकारका आध्यात्मिक साहित्य उदयमें आया जो रहम्यवादी होने सयवा बैठकर कहा जानेके कारण 'उपनिषद्' कहलाया। शिक्षा, ध्याकरण, छन्द, निरुवन, ज्योनिय और कल्प नामके छ वेदांगोका भी विकास हमा। इस शान्ति युगमें यज्ञोंके पूजा-पाठ एव क्रियामाण्डको खूब बिस्तार दिया गया और सीघे सरल वेद मन्त्रोंके अर्थोको अत्यन्त दुरुह एव जटिल दना दिया गया। कहा जाना है कि इसी कालमें परोक्षित्की पौचवीं पीढीमें हस्तिनापुरके राजा अधिसोमकूष्णके समयमें नैनिपारण्यमें जब मृनि लोग यक्ष पर रहेथे तो वहाँ व्यामरचित प्राचीन ब्राह्मणीय अनुश्रुतिक सम्रह या प्राणको सूतोंने सब प्रथम गाकर सुनाया था। इमीके आचारपर ईसवी सन्के प्रारम्भवे लगभग रामावण, महाभागत आदिकी तथा गुष्त कालमें प्रमुव हिन्दू पुराणों ही रचना हुई।

दूमरी ओर यज्ञोंके कमकाण्ड और आडम्बरके विरुद्ध देशब्यापी विद्रोह हो रहा था। इनका मूल कारण कींहमायधान एवं आध्यात्मिक श्रमण बंदर्शकरा कारोरिकर पृक्षिणक अभाग था। वैदिक्यालके अधिक समर्थ हो बयुवकिके रिरोजिये एक कहर चण पही थी। अगवनरेश वर्गु वैद्योगीर चरके कहनमें वर्गक-सारय विचार कही करनाने केवल हुआ था। रह बहना-

के रिकार में मेन एनं बाहार पीनों हानुपतियों परनत है। सामी सामु दोनें पर सरिक्षीयों कि स्वारीति कार्यात्व हम्म बातुने सार्थ हमाने महित्याता नर्दिक्षायोंकी हम सामें जुन्यती पूर्व सहस्त में प्रकार सहस्तारकों करणान मानतें हुक वैशेष बाह्यमोंनी होग्या पेन पहुंगा क्यार रही करूरता सनुभागी होगा पना करा। इसके नेता हनुस्ता

सरामार्जिने हो बीर्थ कम्मान्य क्या वादिक दिनावा विशेष नीर स्मानस्थ दिन कोण्ये को प्रश्नीने बीर्यानस्थित प्रस्ताराक्षी कम्मान्य स्मित्र । निर्देश रूपा नेत्र पा । स्मान्य नीर्थ नेत्रिक नेत्रपति स्वार्यने स्मित्र स्मित्र क्षेत्रपति विश्वपंत्र कम तिरामस्य विश्वपंत्रपति स्वार्य-स्वर स्मृती स्वार्यना हुने नेत्रिक स्वारोधी पूर्व नवाधी क्षारी हम्मान्य स्मृती स्वार्यना क्षाराच्या व्याप्त्रपति स्वार्यन स्था दुस्पितिक स्थाप प्रितानिक निर्मत स्वरामा वृश्विता सम्मान्यन्तिक निर्मान कर्मन्यम्य स्मृतीची निरम्म स्वरामा वृश्वपत्ता सम्मान्यन्तिक निर्मान क्षार्यन्तिक स्वार्यन्तिक स्थापनिक स्वरामस्य

को प्रस्कात कामपारममध्ये अनुसानी नहीं में या नहीं हुए में देशिय

स्ट्रान्त यहां वाप्रिय वान्यक्ट्रान विश्वन वार्यात मा वान्यनियाही रारत्य अरब पर्यक्रिक वर्षण्य हिन्दा मा स्ट्रान्य अंदिन्तियेक विद्यारमाराम्य की नामात्रको वाच हात्या रिकाम कर्मुबर है कि बहुत पर्यो हुएरेका त्राव ही सहस्र है। अनेक क्यांनियाँनि को निर्मास्य की क्यांन्यनी कर मुख्य हुए किकों है। क्यों के प्रमोद क्यों कि क्यांन्यनीरिकासीय कीमीमार्थिक विद्यारमार्थ वह पूर्वन वाच्या क्यांन्यनिक कुम्बरामर्थी हो पूचक है। विश्व एवं वाच्या-विद्यार्थ क्यांन्यनाम्य हुए कुम्बर प्रमाद यह का ब्यूक्तियाँ क्यांन्यन्य व्यक्तियाँ विद्यार्थ विचल प्रमाद प्रमाद यह वह का ब्यक्तियों क्यांन्यन्य व्यक्तियाँ विद्यार्थ विचल प्रमाद व्यक्तियाँ का ब्यक्तियों क्यांन्यन्य व्यक्तियाँ विचल प्रमाद विवास व्यक्तियाँ क्यांन्य विचल प्रमाद विचल प्रमाद विवास विद्यार्थ विद्यार्थ विद्यार्थ क्यांन्य क्या रणको याजिकहिंसामे अरुचि हो गयी थी। वैदिक्षयमें इनना जिटल एव आडम्यरपूर्ण चना द्वाला गया था कि वह लोकग्राह्म हो नहीं रह गया था। यह दाने गने कित्यय वेदानुषायो ब्राह्मण विद्वानों में ही सोमित होता चला गया। जनसाघारण या तो श्रमणोपासक था या प्रह्मयादो जनकोके उपनिषद् घर्मका अनुसर्ता, अथया इन दोनों के समन्त्रयसे जो सदा-चार एवं भिनत प्रधान एक नवीन लोकधर्म सामान्यत अलक्ष्यरूपमें उदित हो रहा था उमोसे सन्तुष्ट था। वर्णाश्रम व्यवस्था इस युगकी इस नवीन धाराकी एक प्रमुख विशेषता थी।

इस युगके उत्तत श्रमणयमं पुनस्त्यानके सर्वश्रयम पुरस्का बाईसर्वे तीर्यंकर नेमिनाय या अरिष्टनेमि ये। उनका जाम यदुविद्यांकि दूरसेन जन-पदकी राजधानी शीरिपुर नानक नगरमें हुआ था। किन्तु उनकी साल्या- सहयामें ही यादश्रमण शीरिपुरका परित्याग करके पिरविधी समुद्रतटपर द्वारका नगरीमें जा बसे थे। वासुदेव कृष्ण इनके चचेरे भाई थे। कृष्णने प्रवृत्तिका मार्ग अपनाया और नेमिनाधने निवृत्तिका। विरकाल तक अहिसा- धमेंका प्रचार करनके उपरात्त काठियावाहक गिरनार या ऊर्जयन्त पर्वतसे नेमिनाधने निवृत्ति का

तीर्यंकर नेमिनायका प्रभाव विशेषकर पश्चिमी एय दक्षिणी मारतपर हुआ। दक्षिण भारतके विभिन्न मार्गोसे प्राप्त जैन तीर्यंकरोंकी प्राचीन मूर्तियोंमें नेमिनायकी प्रतिमाओंका बाहुत्य है, जी अकारण नहीं है। उत्तरापयके मध्यदेशमें उस समय वैदिक धर्म एव वैदिक क्षत्रियोंकी राज्यस्माएँ ही सवल धों। कि तु महामारतके विनाधकारी युद्धने उक्त राज्यस्माएँ ही सवल धों। कि तु महामारतके विनाधकारी युद्धने उक्त राज्यस्माओं साय-ही-साथ वैदिक धर्मकों भी वहीं निस्तेज कर दिया था। स्त्रय पाण्डवव घु अन्त समयमें नेमिनायके भवत हुए और उन्होंने दक्षिण भारतमें आकर जैन मुनियोंके रूपमें तप करके सद्गति लाभ की बतायी जाती है। महाराज कृष्ण और वलराम जो तत्कालीन राजनैतिक जगत्क प्रधान एव प्रभावधालों नेता थे, तीर्यंकर नेमिनाथके श्रावकोत्तम और अनुयायी थे। इन

अराजुनाधारे समारणे जलाराज्य और बहादेशने भी पापूर्वन मेंदूर्ण बाजिए में एक बार रिल्पानाय हो बया । ब्राग्स कार में अनिवासी राज्य mirt et in en eine fin au blentegen frige रच समय पुरुशयानको हिन्छ प्रकार आकृता पर्द्विमधी सद् अतर बस्ते क्रिश का पुत्रा है।

बरने नुष्क बयात पत्र भी पुर्तनावस दिल्ल केतनावसी ऐतिहरू निवाहर संपरतान व त ये दिन्दू द अब दि इतिहासवाचवी प्राथितक भीशा ६ श चारी हैं। ... के वे Gerer बात्कारस वृद्ध के बाव बाह पहुँ भी में क्^) है और यह कि बहुत्राज कुरमात्र कुरमा है उस बन बार्स काई बन्देड कहीं किया बाता बहर रच काती हत्या के लाऊनान आई तीर्च कर अधिक ने विकास मैतिहर्मन के बर्दशन म मा नका । वारण वहीं इ कामा । वरनुम प्रसिद्ध कीमफार स विकास वर्ष पुराशास्त्र को पूछा है, को बारवेट बर्बन का मि

करों को बहितात प्रत्यक के 🗊 प्राप्तवान कियानियार की प्राप्त हुनान् बर्धाः सरद प्रोप्त ए० जागानिक विद्वान वेशिनाय है ऐतिहारिकार्ति बरोह नहीं बन्ते त्यां भागेत व्यर्थेत बावधेत प्रवर्धेत ऐगरेप ब्राह्म संस्थ निवत वर्धान्त्रविका रोका वैद्यवेदीरिका नारविनान, बद्धानारतः जानवतः त्यान एवं बार्वध्येषः पुराच बादि प्रविद्ध धायीन बाह्यकीय बार्गा में याचे बरनेक विसर्व हैं। रतना ही बड़ी - बीर्च कर नेविन्यानका बनाए बारतके बाहर विदेखींने

भी पुरेश मंत्रेन होता है। वर्षन शह लाव 'राज्यनान' से लियारे हैं कि "मुत्र देना प्राप्त होता है कि बाधीनशायते बार बुद्ध का सेवाची महानुक्य हुए हैं इनमें गर्म आरिनाय का अवस्थित में इसरे मेकिनाय में में मीनगान ही स्वेणिनोविका निकासिकाके प्रथम शीविण छ । चीनियौँके प्रथम को नामक देवता थे। वो प्राप्ततान विकासकारने ट्रु मार्च कर् रे १९ के बालाईक दालन क्षत्र इंक्टियां में बाईट्सनाइटे बाल एकं मार्फेन कामधातन प्रकाशिक विना था। वनके अनुनार करा दानपत्रपर जो छेल अकित था उसका भाव यह है कि "सुमेरजातिमें उत्पन्न बाबुलके खिल्दियन सम्नाद् नेबुचेदनजरने जो रेवानगर (काठियावाड) का अधिपति है यदुराजकी इस मूमि (द्वारका) में आकर रैवताचल (गिरनार) के स्वामी नेमिनाथकी भिवत की तथा उनकी सेवामें दान अपित किया।" दान पत्रपर उक्त पिचमी एशियाई नरेशकी मुद्रा भी अकित है और उसका काल ई० पू० ११४० के लगभग अनुमान किया जाता है।

नेमिनायके उपरान्त उक्त श्रमण पुनक स्थान जान्दोलनके दूतरे महान् नेता वेईसर्वे तीर्थंकर पार्श्वनाय थे। ये काशोके राजकुमार थे और उरग-वंशमें इनका जनम हुआ था। यह वही वश था जिसमें इसी युगना ऐति-हासिक चक्रवर्ती सम्राट ब्रह्मदत्त हुआ था। डॉ॰ रायचीधरीके श्रनुसार काशी इस कालमें मारतका सर्वंप्रमुख राज्य था और शतपथ ब्राह्मणके श्रनु-सार काशोके ये राजे वैदिकधमं और यशोंके विरोवी थे। तीर्थंकर पार्श्वकी माताका नाम बामादेवी था और उनके पिता काशीनरेश महाराज अश्वसेन ये। प्राचीन बौद्ध अनुश्रुतिमें इनका 'असम' नाममे उल्लेख हुआ है तथा महामारत आदिमें भी अश्वसेन नामक एक प्रसिद्ध तत्कालीन नाग नरेशका उल्लेख मिलता है। पार्श्वका जम ई॰ पू॰ ८७७ में हुआ पा। ये वालब्रह्मचारी रहे।

बाल्याबस्पासे ही इनके हृदयमें ससार एव भोगोंके प्रति विराग तथा जोवमात्रके प्रति करणाका भाव था। तीस वर्षको अवस्थामें ती इन्हाने घरका त्याग करके वनकी राह छी। कुछ काल दुर्बर तपश्चरण करनेके फलस्वरूप इन्हें केवलज्ञान एव अहंन्त पदकी प्राप्ति हुई। तदनन्तर धेप जीवन इन्होंने देश-देशान्तरमें विहार करके धर्मका प्रचार करनेमें विताया। अन्तमें एक सौ वर्षको आयुमें ई० पू० ७७७ में इन्होंने विहार प्रदेशमें स्थित सम्मेदिशसर पर्वतसे निर्वाण छाभ किया। वह पर्वत आज पर्यन्त पारसनाय पर्वतके नामसे विख्यात है। वरेली जिलेका प्राचीन अहिन्छत्र

मामक रमाम जानिकामों विधिष्ठ करवावृति होती थी। व स्वसंपारकी मिर्चित बाराज्य पर है। इस्ता पर्व स्थान पद्म स्वाप्त मारा है। ब्या इस्त्री सिक्शोध प्रतिपादी प्रधान वस पूर्व विद्योक करा ब्रामार्थ सारक्येस पुन्त पत्मी स्वती हैं। इस्त्री प्रेतिवाशिक्यानी स्वाप्ति की सार्व्य की स्वाप्ति स्वाप्ति हुन प्रथम पूर्व स्वाप्ति स्वा

करकों परितर्क बानक गाँविनके बारियाकारी गरीय करकों भी ऐतिन इतिक कार्नित है। वे तीर्वकर प्रकारित तीर्विकों है। करका हुए वे तारित कार्नित कार्नित कर्मात कर्मात कार्नित कर्मात करकार तार कर केन मूर्निक करने क्यूंगी करकार को बीर कहारित क्यूंग वो स्वार्ध नहीं है। तैराइंट मानियों नुकारीय तार्व्य प्रधानिक विश्वासि तरकारणों कर अनुष्रुति प्रमाणित होती है। इनके अतिश्वित पाञ्चाल नरेश दुर्मुख या द्विमुख, विदर्भ नरेश भाम और पान्धार नरेश नागजित या नागाति, तीर्थ-कर पार्श्वके अनुपायी अप तत्कालीन नरेश थे।

टां॰ जाल चारपेण्टियरके अनुसार 'जैनधर्मके मूल सिद्धान्तींके प्रमुख तत्त्व महावारसे बहुत पूर्व, पारवनाथके समयसे ही व्यवस्थित रहे आये प्रतीत होते हैं। प्रो॰ हर्म्सवयके अनुसार गौनमबुद्धके समयसे पब ही पार्वनाय-द्वारा स्यापित जैनसघ, जो निर्प्रन्य मघ कहलाता या. एक विधिवत् सुमगिटत घानिक सम्प्रदाय था । प्रो॰ रामप्रसाद चाँदका कथन है कि 'यह आमतौरपर विश्वास किया जाता है कि महावीरसे पहले भी जैन साधु विद्यमान थे जो कि पादवनाय द्वारा स्थापित सबसे सम्यन्यित थे। उनके अपने चेंत्य भी थे। 'डॉ॰ विमलवरण लाहा भी इस तथ्यकी पुष्टि करते हैं और कहते हैं कि महावीरके उदयके पूर्व भी वह धर्म जिसके कि वे अन्तिम उपदेशक ये वैशाली तथा उसके आस-पासके प्रदेशींमें अपने किसी पूर्वरूपमें प्रचलित रहता रहा प्रतीत होता है। ऐसा प्रतीत, होता है कि कमसे कम उत्तरी एव पूर्वी भारतके कितने ही क्षत्रिय जन. जिनमें कि वैशालीनिवासियोकी प्रमुवता थी, पारवेनाय-द्वारा स्यापित एव प्रचारित धर्मके अनुयायी थे। आचाराग सूत्र आदिसे पता चलता है कि महावीरके माता-पिता पास्वके उपासक एव श्रमणींके अनुयायी थे। इसी प्रकार प्रो० जयचाद विद्यालकारका भी क्यन है कि अपर्ववेदमें भी जिन बात्वोंका उल्लेख हैं वे वहींनों और चैत्योंके ज्यासक थे। ये अहंत और उनक चैत्य वृद्धके समयके बहुत पहल्से विद्यमान थे। सभी तक आधुनिक पर्यालोचकोने केवल वीर्यकर पास्वको ही ऐतिहा-सिकता स्वीकार की है। अन्य पूर्ववर्ती तीर्यंकरोंके युत्तान्त पौराणिक गायाओंमें इतने उलझे हुए हैं कि उनका अमी तक पुनर्निर्माण नहीं हो पापा । तथापि इस बातक निश्चित प्रमाण है कि महावीर और बुद्धके पहले भी भारतवयमें वैदिक धर्मसे सर्वेषा भिन्न धर्म विद्यमान थे।'

pufen ut i ar fait ihnene gunte augebatt ein entet बारा बहुत करा देशक बने काफ दरा कीय क्रम्प्रेस करें गार में क्षारा बूर्निय के हैं. यालाय व अविक्र आयोज वेंग । नवा सम्बद्धा बर्द शारीण तार्थय ऐसा राजा को का हो। यह रक्षा व रचेंगा जा औ योष माम का । बार्चपुर कर पुनार । तम प्रश्रदेशके बार्वशावदा काम हैगी at a nieben gent merein auer ein me fid t einf बालपा बोरो से कोए नरवड - बारवे - बीच लाब - प्रतादत्र हैं की प्रतिक के। बध्ववृद्धिकारा विकारिय अवर वेल्डिका की बदलाना का मीट बारवश्वरा इसी बारवान्त्रर । की वानी ई. में बी ने बाती होता है 44 लिने हम सम्भ मी बरावन क्षा नाजा वर पृष्ट विकास के बुनानी वर्षिकीने देने मनाते हर स्वय निकल्य पान केस व । सन्दर्भ द्वत्राह नृति वरशावनाई वि महाराप्त पुर को बरशाधिकार के राजा खबर अबरेडान, बाल आदि नवरोने जैनका प्रयोगन था। ६४ -५४१ सन्तर है वृ वे होनेशके मुख्यी इतिरामके बनक है जित्रकों बन्ने बन्नी क्व ऐसे बारगीय वर्तका बन्नेस दिशा है जिनमें बर्च प्रशास्त्र बांगाता बांगत का और जिनके अन्याकी माप मध्यो है से से सु १८ में बलाब बुशशा दार्गरिक देवेदीएक मो रच्य महार्थार मीर मुखना समसानात था, बीचान्याचे क्लारंग्य हर्ष माराज्यनमें सरा कर्मावद्याग्यमें निरमास करता का नहीं प्रवास्थी बीपरिया तथा मांभाराभी दिशत पर्रमेका क्योप देशा का बहा तक कि परितय जनसारिकाको यो जार्रिक बुध्यये समस्य सामग्र या । बस्का मह भी पाचा था कि वह काले पूर कम्बांडा बुकान्य और वस्तिके बन्ध बकरा था । सपुर्वित्राणे इस सम्प्रदानके विकास आसीतिक्त वह बाराजिक

स्ती मी अपनु इस बारहे थे इस व किन्दे हैं कि बार्स की एकन शिक्ष के भी करें १ व औं केंचने रूप है रहा में के साल राजा राजा है मोनाइर्ट ने सम्बद्ध सारत वृक्त करवने क त्या या कि शान्त्रम् व बीन्य-द्वारा बीच वर्षे प्रयानके बहुत वृत्र बर्पार्गरशाय क्षत्रके रिमान्यत्रमणी वर्षे ाधनिक कहलाते थे। आत्माके समक्ष ये देहको हेय और नाशवान समझते । उपरोक्त विचारोका बौद्धधर्म या श्राह्मण धर्मसे कोई सादृश्य नहीं है तब कि वे जैन धर्मके साथ अद्भुत सादृश्य रखते हैं। और क्योंकि ये गायताएँ सुदूर यूनान एव एशिया माइनरमें उस कालमें प्रचलित थीं जब कि महावोर और दुद्ध अपने-अपने धर्मीका प्रचार प्रारम्म ही कर रहे थे अत पैथेगोरस आदि पाइवनायके उपदेशोंसे प्रभावित रहे प्रतीत होते हैं।

मेजर जनरल फ़लीगका कथन है कि 'लगमग १५०० से ८०० ई० पु० पर्यन्त, वरिक उसके बहुत पूज अनिष्चित कालंग्ने सम्पूर्ण उत्तर, पश्चिम तथा मध्यभारतमें तूरानियोका जिन्हें सुविधाके लिए द्रविष्ठ कहा जाता है, प्रमुख रहता रहा था। उनमें वृक्ष, नाग, लिंग आदिकी पूजा प्रचलित थी. किन्तु उसके साथ ही-साथ उस कालमें "सम्पूर्ण उत्तर भारतमें एक ऐसा अति व्यवस्थित, दार्शनिक, सदाचार एव तप प्रधान धर्म, अर्थात् जैनधर्म, अवस्थित या जिसके आधारसे ही बाह्मण एव बौदादि धर्मीके सन्यास-मार्ग वादमें विकमित हुए। आयोंके गुगा तट क्या सरस्वती तटपर पहेंचनेके पूर्व ही लगभग बाईस प्रमुख सात अथवा तीर्थंकर जैनोंको धर्मीपदेश दे चुके थे। उनके उपरान्त ८वीं-९वी शती ई० पू० में २३वें तीर्थकर पार्व हुए और उन्हें अपने उन समस्त पूर्व तीर्धकरोका अथवा पवित्र ऋपियोका ज्ञान या जो बढ़े-बढ़े समयान्तरोंको लिये हुए पहले हो चुके थे, उन्हें उन अनेक धर्मशास्त्रोंका भी ज्ञान था जो प्राचीन होनेके कारण पूर्व या पुराण कहलाते थे और जो सुदीर्घ कालसे मान्य मुनियों, वानप्रस्यों या वनवासी सामुओकी परम्परामें मौक्षिक द्वारस प्रवाहित होते वा रहे थे।'

कुछ लोग पार्स्वनाथके घर्मको चातुर्याम घर्म भी कहते हैं और इसका कारण यह बताया जाता है कि उनके द्वारा उपदेशित महाव्रतोंमें ब्रह्मचर्य व्रतको गणना नहीं थो, पेवल बहिसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह ही थे और भगवान् महावीरने उनमें ब्रह्मचर्यको सम्मिलत करके द्रतोको सख्या पाँच कर दो। कुछ आधुनिक विद्वान् अमवश यह भी कथन कर दते हैं कि वर्तमान दरेताम्बर मध्याप मृत्ये शर्यकी विष्याध्यास्त्र दिशारीर प्रशासि है we la fenter neatit ugiftet mirtiu & i fem gut uff क्रमेह नहीं है कि शायशी शिवासरमाशके बालू महाशीए एवं मुंडके बनव शह नियमल में । मोतम-केंग्री बोबायरों बहना इन बातकी सूचक क्षि चारपरत्माराके बहाचोश्यानात कालु शतिप्रव कार्तीर्वे बहाचोरके बनरेयके नतभेर रखते में लतः उमक्र नेशा केशीशा बदाचीरके प्रमान क्रिम नीतम समयाके बाध विचार-विवर्ध हुता और कम्पनका में अपनेत गरित्याम कर रिवे वर्षे । एक ऐसी भी अनुभूति है कि बीद्ध परिवे मूच प्रवर्तन बुदरीति तथा कर्मी काथी कार्रित्स वर्ष जीदनकायन सानि मारम्बर्वे समर्वरो परम्पराके ही बाचु वे ये बुक्कीर्त स्वयं बीडम बुद्ध वे मयरा दनके बोर्ड सैन वड, वह बहुबा ब्रांडन है।

न्यामाध्योत्तर वाक्या धवन-प्रवद्धार बल्टोक्च कार वरमेस्वर्वमे क्की बरामधे हैं वू में श्रीता और इस बबद बबके बनामून कैछ राजें तीर्वकर निर्वाण बागुन्य वर्ववाण बहुआर थे। बहानीरपूर मार्थिक अमृत्ये एक अवृत्तुत कारित अरब्धिन्तम वृत्तं वार्योकेक विचार सहरता वर वा । पारतकारी ही कही बचार कार बनाएरी हान मान्द्रि वर नरपेत्राची महरण्यात ती। चीनवें करातूनम और काओसे इराजने बरकुरत जुनानमें नेवेशीरत क्रिन्स्तीएमें मुन्त प्रत्यादि अवेड प्रकार विचारक वाचनिक एवं वनसर्वक शरपानीन क्रम्य कन्द्रके विभिन्न भागोरी माले-माले वय एवं विचारीया ज्ञापर कर पहें में और महाची बनदावारमधी जान शान कर रहे में । इस बक्ते क्षत्रेचकी एक कारान्य विधेयता वह वी कि सामानी गहरत और वदान्यरवर, को कि मनम संस्कृतिकी कामनास विशेषताएँ मी । स्वित्त वक्ष विदा नाटा मा । स्थर्न वारतपत्रि स्वेतकेषु, वहांकक वाळशंतन कार्रि पूर्वी दक्षान जापि एवं बांदर निवास जीतनिवारिक जनसम्बन्धका प्रचार कर रहे से है परिवर्ग क्रियाकाची काचि वृद्ध जीत वर्ष वर्ग विधेते सूच शाहित्वकी t

रचना कर रहे थे। वेदोपर निर्युक्त आदि टीकाएँ मी रची जा रही थीं। साथ हो कविल, कणाद, गौतम, जैमिनी आदि ऋषि साख्य, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा, योग बादि पड्दशनोंका विकास कर रहे थे। पड्वेदागो को भी व्यवस्थित रूप दिया जा रहा था और उनके अन्तर्गत तर्क, छन्द, व्याकरण, अलकार, ज्योतिष मादि तथा उपांगके रूपमें आयुर्वेद प्रमृति लोकिक विद्याओका सूजन भी प्रारम्भ हो रहा था। वानप्रस्य आश्रम एव प्रयुज्याका तथा विद्याभ्यास, साहित्य साधना, तपदचर्या एव तत्त्वचिन्तनका छोर वेदानुपायी समाजमें भी बढ रहा था। दूसरी बोर श्रमण परम्परामें यह लोकश्रुति जोरोंपर थी कि इस कालमें अन्तिम तीर्थंकरके रूपमें एक महापुरुप जन्म लेगा। अतएव उवत परम्पराफे अनेक विचारक एवा सुघारक अपने-आपको तीर्थकर घोषित करके अपने-अपने मन्तव्योका प्रचार करने लगे । मनखिलगोशाल, पुरण कश्यप, पकुष कात्यायन, स्रजित केशकम्बलिन, सजय बेलट्टिपुत्त, शाक्यमुनि गौतमबुद्ध, निर्फ्रीय ज्ञातपृत्र महाबीर इत्यादि व्यक्तियोने यह दावा किया। बौद्ध अनुध्र तिमें चपरोक्त (बुद्धके अतिरिक्त) छह तत्कालीन तीर्थकाका उल्लेख हैं। जैन अनुस्रुतिमें भी इन विभिन्न एकान्तिक विचारकोका उल्लेख है। उससे तो यह भी पता चलता है कि उस कालमें छोटे बढे मिलाकर कूल ३६३ 'पापंड' या घामिक सम्प्रदाय प्रचलित हो रहे घे जिनमें उपर्युटिनिखत द्राह्मण एव श्रमण विचारक और उनके मन्तन्य प्रमुख थे। सदाचारकी इस प्रवल लहरकी प्रतिक्रियाके रूपमें उच्छू बल एव नास्तिक लोकायत या चार्वाक मत-जैसे भौतिकवादी मार्गका प्रचार भी प्राय उसी कालमें हुआ जो अनेक तथा अधिक विकृत रूपों एवं गुप्त सम्प्रदायोंके रूपमें चिरकाल त्तक बना रहा । गोबालका आजीवक सम्प्रदाय भी मध्यकालके प्रारम्भके कुछ पूर्व सक चलता रहा। ब्राह्मण परम्पराके पद्दर्शन और वैदिक एव ु ... उपनिपदिक अन्य विवारघाराएँ भो स्वतन्त्र सम्प्रदायोंका रूप तो न छे सकीं, किन्तु उन सबके समन्वयसे तथा श्रमण विचारी एव मान्यताओं को तो बाबिक चरने बारायान् करते हूं। वाध्यतार्थं एक ऐसे प्रीतरण्यं बायाय पर्वतर काय एवं विकास हुवा यो बारती बनैवर्षिक बहुता सारत्य विरोधी प्रमानार्थों किवानी विवादी प्रमानी वृत्तं करानी ब्राहिक कार्य कोच्यीय एवं ब्यास्त्र होंगा बन्धा बन्धा पार्टी एक कि प्राप्तानियों बहुतरावस वह कार्या प्रमान वर्ष कर पता।

कररायोग वर्षीय विशेष जन्मेश्यीय गीतव गृह-हारा हरियारित स्र् प्रचारित गीत वर्ष है। धारवंति वयुवानी वरियमस्त्री धारवंती

बत्रपॉर्म बलम्म राजा युक्कोलम्के कुत्र निकाय गीवन ऐसी नदाम् निव्^{ति} में कि जिल्लो क्षाप संनात्पर पहरी पहीं । बाल्यावरमाने ही ब्लब्स हुरद र्वनारके दुनके प्रकोशन था। परवाकीके आवर्ड कम्हींने अद्योवण मानक एक गुणरांके बाज निनाह थी किया और बनके राहक मानक दें पुत्र की बरतन हुवा । फिन्तु बन्तरा तथी पुत्र राजनाठ बारिया बीर्स बर्ने श्रीनकर न रख कत्रा और एक श्रीवर्ण में अरवारण स्थान करने करनकी मोजमें क्रम किये । धनान परम्परार्वे क्रमका क्रम्म हमा का किन् चवर्ने भी उस क्षमा मैलागनेके समितिका सन्य वर्षक विकित्त विचार भारत्यें रचं करतन्त्रकान प्रचलिक ही रहे थे। सक्ष्रमार नीवाने रक्ते बाद एक कई मार्वीक बबोन क्वमें अवकन्तन किया। हुक दिन में व्हर्मनी मानाफे इंड वैंग काफ़ी जी विश्व ग्रेट स्थ्ये वस्थितिकार भारि प्राचीन बीड वानींत्रे स्वष्ट है कि क्ल्ड्रीने बैनानार एवं तपस्परण मा सम्बाह किया था । शाहाब परम्पाके वी कई बकारके शावनींगी र्चंदर्ग एरं अनुसरण क्यांनि रिया। रिग्यु दिवीचे वी क्यारी क्यांदिन हुई। नीई मार्ने वर्षे करिन मेंचा तो कोई बति तरक अवसा क्षेत्रके प्रतिपृष्ट ? क्षणार्वे अना नगरने बाहर एक बीजनके नृत्रके तीने बैठे हुए कर्ने नीवि सार्च हुई बीर क्यूनि जन्म-बारशो श्रुप्त नोशित कर दिना। वै तबागाः पारममूर्ति बादि नानीते थी. प्रतिश्च हुए । बाल्वे हारा सीत्रः विशावे सरे देव नालेकी बन्होंने बार्न बहानिश्चार्न या सम्बन्धार्यका गाम दिया। दाशिनक एव तास्त्रिक उल्झनोंमें उन्होंने उलझना नहीं घाहा। जो उन्हें उचित जैंचा ऐसे सदाचारके उपदेश-द्वारा उन्होंने ससारी मनुष्योंके दुष्य निवारणका प्रयत्न किया। बोधि प्राप्त हानेके उपरान्त उन्होंने सारि-पृत्र मौद्गलायन, आनंद आदि कुछ व्यक्तियोंकी अपना शिष्य और साधी बनावा। वाराणमीके निकट सारनाथ (ऋषिपत्तनके) मृगदावमें उन्होंने पहले पहल अपना उपदेश दिवा। कुछ सरकालीन राजाओने भी उहें आध्यय दिया।

उनको मृत्युके उपरान्त उनके भिल्लुसघमें मतभेद उताप्र हुए । उनके मीखिक उपदेशका शिष्योंने त्रिपिटकोक रूपमें वर्गीकरण भी किया। उनके कुछ उत्नाही बिष्य उनके धर्मका प्रचार दुढ़ता एव कुशलताके साथ करते रहे। फिर भी सम्राट् अशोकके समय तक बुद धर्मकी स्थिति हौंबाडोल हो रही। अशोकने बुद्ध घम अगोकार किया या नहीं, इसमें मतभेद है, किन्तु वालान्तरको त्रिदेशी बौद्ध अनुयूति उसे बौद्धधमका सर्वमहान् सरक्षक घोषित करती है। कमसे क्म इस बातमें कोई सादेह नहीं कि अदोकके शासन कालमें ही बोद्ध मधका पाटलिपुत्रमें जो सम्मेलन हुआ उमीमें यह निर्णय किया गया कि बौद्ध धर्मके रक्षार्थ एव प्रचारार्थ बौद भिक्षुत्रोंको विदेशोंमें भी जाना चाहिए। अस्तु, अनेक बौद्ध प्रचारक तिस्त्रत, बर्मी, मिहल तथा मध्य एशिया आदिकी आर दिना फिसी वाधा और कप्टकी परवा किय चले गये और उन्होंने वहाँ बौद्ध धर्मका प्रचार किया। चीन और तदनन्तर जापानमें भी घोडे समय परवात वे पहेंच गमे। स्वय भारतमें आनेवाले मुनानी, शक्, पह्नव, कृपाण, हण आदि विदेशी राजाआमें-से मी अनेकने इस धमको प्रोत्साहन दिया। भारतीय-यवन मिनेण्डर और कृपाण सम्राट् कनिष्कवा नाम बौद्ध धमके प्रिमिद्ध समर्थकोमें लिया जाता है। घादके भाग्तीय नरेशोंमें हपवर्धन बौर बगालके पालबक्षी नरेदा बौद्ध धमके अनुयायी एवं प्रवल पोपक थे। किन्तु हर्ष (७वीं घताब्दी) के उपरान्त ही बौद्धधर्म भारतवपसे रण वेश्ये ताथ प्रिपेरिण होने क्या और ११वी-१२वी प्राथमी इन १९ देखें उत्तरा ताथ ताथ देख हो क्या : जिल्लु मान हो जोन आपने, माने, क्या (ताथ हिन्दू मान हो जोन आपने, माने, क्या (ताथ हिन्दू माने हो क्या हो जाने क्या क्या कर हो जान माने क्या हो हो जान कर हो जाने कर हो जाने हैं जाने ही हैं जी कारों हैं जाने हों हैं जाने हैं जिस्से हैं जिस्से हैं जिस्से हैं जिस्से हैं जाने हैं जाने ही हैं जी कारों है जाने हों हैं जाने हैं जाने ही हैं जिस्से हैं जिस्से हैं जिस्से हैं जिस्से हैं जाने हैं जाने ही जाने हैं जाने ही जाने हैं जाने हैं जाने ही जाने ही जाने हैं जाने ही जाने हैं जाने ही जाने हैं जाने ही जाने हैं जाने ही जाने हैं जाने ही जाने ही जाने ही जाने हैं जाने ही जाने ही जाने हैं जाने ही जाने ही जाने हैं जाने ही जाने ही जाने ही जाने ही जाने हैं जाने ही जाने ही

किस्सी बंधी बीर जानी (कैसोनी) जनुसूनियोरर ही निर्वेद देखें पाना है और पन जमके परनार शहुन मानके है। बात मानुर्विन विद्यानी की राज्यसमी बहुन मानोक है है जुद निर्वेदिकों निर्वेद मिल सानुर्वित्त पान बहुआमा नात बर्जु है हु ४८३६ समार्थ है। बहुनों बाजू ८ स्थिती की करा क्याना नात है हु १५३ के पानर कार्य है। बहुनने ने पर्वे

भी आहें कहींने पर कींग पा कार्य लवान प वर्ष पर कर्षे नीतें प्राप्त हूं जोर सोपाने केंग्न पर पर क्यूमीन पर्व प्रमारते रिपाने । रंग पूर्ण मानुस्तरित संगीतिक अधिकारित प्रदार दिनाने । प्राप्त मानुस्तरित संगीतिक अधिकारित प्रदार प्राप्त केंग्न अपाधिक में भीर समया समारत करते थे। समस्य प्रदार परि तित संगित तीत्रियों में भीरती मानिक्सपति में यह स्थापन स्थापति हो ने सहस्ति राम्नेक्सपति केंग्न भीरत में प्रमारति में यह स्थापन स्थापति हो ने सहस्ति राम्नेक्सपति हो ने भीरति में मिन्न मानुस्ति में स्थापन स्था समय कुछ कालके छिए भले हो कुछ विवादग्रस्त रहो हो किन्तु मगवीर-द्वारा घर्मचक्र प्रवर्तनके चपरान्त उसमें किसीको कोई सन्देह नहीं रहा। उन्होंने न किसी नवीन धर्मका प्रचार करनेवाला दावा किया, न कोई नवोन मार्ग खोज निकाला, न किसी देवी-देवता या देवी अथवा गुप्त द्यक्तिका अध्यय लिया और न किसी राजा महाराजाको ही सहायता चाही । चन्होने एक सामान्य मनुष्यके रूपमें जन्म लिया, एक सामान्य समारी मनुष्यके रूपमें बाल्यावस्था एवं कुमारकाल व्यत्तीत किये, और स्व पुरुपार्थ द्वारा अपनी आत्माको उन्नतिके चरम शिखरपर पहुँचा दिया। क्षात्म-क्रह्माणके चिर-प्रचल्तित एव तीर्थंकरों-द्वारा प्रणीत मार्गका चन्होंने अपने जीवनमें शुद्धतम एव श्रेष्टतम रूपमे अवलम्बन करके उसका औचित्य परितार्थ किया था और लोक-कल्याणार्थ उसका उपदेश दिया था। यही महावीरकी सबसे वडी विशेषता थी और इसीके कारण विश्वके महापुरुषी-के उस महायुगमें भी वह अपना विशिष्ट स्थान रखते थे। आज भी, न केवल वह जैनधर्मके इतिहासके सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है बरन् प्राचीन भारतके इतिहासमें तथा विश्वके धर्मोंके इतिहासमें भी उनका एक महस्य-पूर्ण स्यान है। जैनवर्मका तो जो कुछ वतमान रूप है तथा उनके गत ढाई सहस्र वर्षीका जो कुछ इतिहास एव सस्कृति है, उस सबका सर्वाधिक श्रेय अन्तिम तीर्थंकर मगवान् महावीरकी ही है।

चैत बुक्ल १३ (३० मार्च सन् ईसयी पूर्व ५९९) के दिन प्राचीन भारतके यात्य क्षत्रियों के प्रसिद्ध बिज्जिस नामक गणतन्त्रके अन्तर्गत कुण्डग्राम (क्षत्रिय कुण्ड) के ज्ञातूक सशी कारपण गोत्री क्षत्रिय नेता सिद्धार्थकी पत्नी त्रिशला देवीने धर्ममान महाधीरको जन्म दिया था। यह कुण्डग्राम उक्त बिज्जिसधको प्रधान राजधानो वैशाली (जिसको पहचान विहार प्रदेशमें मुज्ञफरपुर जिलेके समाक नामक स्थानसे को गयी है)

के निकट स्थित था। उक्त सपके अध्यक्ष मैशालोको लिच्छत्री राजा

प्राचीन युग-प्रथम पाद

चेटक बहुत्तीरके मातागह#से । चितुकूकणी अपेकाके बहुत्तीर क्षानूच दूर भवना नारमुख और नारपन भी नड़कारों ने क्वाफि नाष्ट्रमुखनी बनेवाने ने किम्प्रदिश एक मैकाफिल परकार्य प्रमुखे जाना विज्ञका कारमार्थ प्रियकारियी विदेशका जो नहकाती दी धन नार्य में विदेश मा विदेशी ची रहमाने और अधिनीए, स्थाधिनीर शहाबाद वर्धनाय आहि निम बित नाव का कफ़ांबची इन्हें कवर-क्षमक्तर विक्र-विक्र कारवेंति प्राप्त हुई। बहायर बैटक्के वन पूत्र में जिनमें के क्षेत्र पूत्र तिह सकता स्थिता विश्वयक्त प्रवित्व प्रवास बेनाएडि वे ब्यासात बेटवरी देश वर्णि पुरियोगें-में चेवना नवकारेस सेविक दिन्तकारके साथ दिनाही की, हमरी मीजाम्बोतरेस यदानीको साथ, शीलरी स्वार्च देखने शाम स्पर्धके साथ जीवी विकृतिसीरण कारराज करवनके ताल और बोक्डी क्रमन्ति गरेंच परवस्त्रोतक बाथ विश्वको थी । बार ही क्षेत्रा और परवता वार्ष-सहाचारियी तुनारी रही जोर सहजीरके उपरेक्ष बार्विका वर्ती ! फेरपण बनस्य चरितार बहाबीएका सप्ता था । वसके निविश्व वायान मी भी अपने समयके प्रक्रिक्त गरेश से सहासीएक शक्त रहे । अनुके अस्टि रिमा परमके पाना वर्षकालन वर्णिक-गरेश जिल्लाम को बहानीरके कुछ भी ने, नापाती-नरेख प्रतेनम्बद्ध, जनुनके राज्य व्यवद्यंत्व हैप्रांक्यमरेव बीनन्तर, प्रेरक्ट्र-नरेस वित्रसाव वस्त्रसम्बद्धं पाता विश्वप्रकेन । पांचाक

भरेस वर तथा इंस्किनगुगना राजा राजार्थ अनेक ताशाधीन राजे-वहारीने महामोरके कारेबर्ड मधारित हुए बडाई बाई है। महामोरके कारेबर्ड मधारित हुए बडाई आहे हैं। बाद पड़ी थें। १९७ पास्टाफी मधार क्यार करना मह बिस्टा हुआ भी या और उनवे एक नम्याका जी कमा हुआ था। बिल्हु प्रपक्त निस्त मास्त्री ही जंगान्देहनीयोडे निरणा या और बोडवा नश्याम करोड़ी वसरी

Ł٩

का कर प्रमुप्तिके प्रमुद्धार नेव्य वा गीरके बागुन में ।

उत्कट भावना या। अतएव घरवालोके आग्रहमो उन्हाने अमान किया और तीन वर्षको आयुमे मार्गशीर्प कृष्ण दशमी (११ नवस्वर, ई० पू० ५७०) के दिन इम बाल्प्रहाचारी राजकुमारने समस्त नासारिश बैभवको ठात मार वनकी राह री। बारह वर्ष पर्यत चन्होंने दुर्दर तपव्चरण निचा और इस प्रकार अपनी आत्मानो सब प्रकारकी कमन्त्रालिमान गुद्ध कप पनित्र वना लिया । इम बीचमे न उन्हाने उपदेश दिया और न शिष्य वनाये तथा अतेक उपमग एव परीपह सहन किये। अन्तमें वयालीस वपनी आयुमें वैशास शुक्ता दशमी (२६ अप्रैल, ई० पू० ५५७) के दिन बिहार प्रान्तम जुम्मक ग्रामके बाहर ऋजुकूला नदीके सटप एक झालवृक्षक नीचे घ्यानस्य वठे हुए महायोगको यवलज्ञानको प्राप्ति हुई-और वे सवज्ञ. सबदर्शी, अहत परमात्मा हा गये। वहाँसे चलकर वे राजगृह अपरनाम पचशैलपुरक बाहर स्थित विपुलाचल पवनपर पहुँचे और उसी वर्षकी श्रावण कृष्ण प्रतिपदाके दिन प्रात काल उक्न पर्वतप उनकी समवशरण सभा जुडी और उनका सर्वप्रथम उपदश सर्वप्राह्य अपमागधी नामक लोकभाषामे हुआ, यही उनका धर्मचक्रप्रवर्तन था। मगध सम्राट् विम्यमार-श्रेणिक उनका सवप्रमुख श्रोता था। इन्द्रभृति, गौतम, अग्निभूति, वायुभूति, आयञ्यक्त, सुधम, मण्डिकपुत्र, मौर्यपुत्र, अकस्पित. अचल, मैत्रेय और कीण्डित्यगोत्री प्रभाम उनके ग्यारह गणवर या प्रधान शिष्य थे जिनकी अध्यक्षतामे अनेक श्रमण मुनियांके गण या सद्य मगटित हुए । महानती चन्दना उनके आर्थिका मधकी अध्यक्षा थी और मगधकी सम्प्राजी चेनना श्राविका समनी नेत्री थी। इस प्रकार मुनि-आयिरा-श्रावक-श्राविका रूप चतुविध सघके रूपमे सुव्यवस्थित जनसमुदायको विना किनी यण, वर्ग. जाति, लिंग आदिके भेदमावके महावीरने अपना उपदेश दिया । तीम वप पयन्त विभिन्न देश-दशान्तरमे निहार करके उन्हाने छोकरो मिन-मा माग दिखाया। पूर्वोक्त सभी प्रसिद्ध राज्यो और उनकी राजधानियोमें चनका विहार हुआ और तत्कालीन प्रसिद्ध राजा-महाराजाओंमे ने अवि- सांच करके कारोकांचे प्राथानित हुए। क्यानेन्द्रे कोन्ह्रोने तेन पूनि स्कार बारस्यास्य किया। करके व्यवेकोका सांस्य तीवार्थन सक्यानेन प्राप्ती सुर्वेक स्पर्ति मुंबा बीर बाहि निश्व के सामिक व्यविकास स्वाप्ति स्वाप्ति बता। कराने व्यविक क्रम्ब व्यवस्थान प्रेतकास्य, हो स्वपूत्तर र्रे । भेटकार विकार्यने १००० तथा बावसून व्यवस्थानित हो स्वाप्ति स्वाप्ति हो।

पूर्व सम्मय प्रशासि कमान-परीवाधि बाम निर्मा द्वीपाक्षार सम्बं प्रोस्ती महाप्तिरंदि विश्वपेत साथ किया। पातामा राज्यक्षील एउमा सम्बंदी स्टारकारी द्विरायण था। बद्धा धारत है कि कम कहन समेव रिते पुत्रपो सीर पात-भ्यारणायाणीने कियों सी मान्य पूर्व थी विष्यक्षी गरित प्रमुख में स्वरमान्या विश्वपेत्रपाल समाना और एविको योगोहर किया। समीचे योगानमके स्टार्मपाल सेकी बागृति हुई बागायी सारी है। स्वर्तिरेट स्वास्त्र किया सीयान-पोक्यों क्यों कमान केयावहाल स्वर्तीकी जनकीन हुई सा रहा सारा है। स्वर्तिक स्वरंपित क्यांत्रिक स्वरंपित क्यांत्रिक स्वरंपित स्वरंपि

दो नमें में को करके द्वारा गुज्यसीमार न्यूनिय बान्ने कसर में।
"ये पाराय न्यवस्थी सम्बद्धानों भी वर्षों या कुम्परी निकार मां!
-मानियामी बाने नमें व्यं स्थाने व्यं स्थानियों के लो-तुम्ब सीमीमी
| स्थानस्थी क्षान मानेक सामी मानोगों कापुरानों से सामाने माने मी पत्यार, परिका पारावेश कार्या मानोगों कापुरानों से सामाने माने भी पत्यार, परिका पारावेश कार्यि देशीरी स्थले कपन में। इस्ते सीमी (एना मोक स्थान पत्यों सार्य हुँ गीनीवरीके स्थानक भी वर्षों में। द्वारीयों के समेकीमार साथ महिलागार कार्यक्ष सामानार परिकार

स्त्राार कर पहुंचर वर्ष था। बहिंद्या सरवते क्रिक्स अधिक स्थि राष्ट्र, प्रदेश एवं स्थापक कर, वैद्यालिक एवं स्थापकारिक योगी हैं।

महाबोरके बोरनकावर्वे हो बनके सम्बन्ध श्रीप काल मक्त ^{हा}ँ

35

धनके ही गायते वर्धनानका कहकाना ।

दृष्टिपोंने महावीरने दिया उनना सम्मयनया अन्य किसी धर्मापदेशने नहीं दिया। जैन धर्मको उनका अन्तिम विकसित रूप देनेका थेय अन्तिम तीर्थकर महावीरको ही है।

महाबीरके निर्वाणीपरान्त जैन नयका नायक्त उनके प्रधान गणघर इन्द्रमृति गौतमको प्राप्त हुआ। महावीरका शिष्य हानेके पूर्व वह एक महान् वेदशास्त्रज्ञ प्रकाण्य ब्राह्मण पण्डित ये। महावीच्ये उपदेशोको ग्रांसला-वद, व्यवस्थित एव वर्गीरत रूपमें मकल्टित करनेका श्रेय इन्होंको है। ये बौद्धधर्म प्रवतक गीतम वृद्ध एवं यायसूत्रकार अक्षयपाद गीतमके ममसामियक होते हुए भी उन दोनोंसे भिन व्यक्ति है। ये भी अहत मेवली ये और महाबीर मबत् १२ (ई० पू० ५१५) में निर्वाणको प्राप्त हुए। इनके परचात् सुधर्माचार्यं सघनायक हुए। यह भी अहत देउली थे बौर म० न० २४ (ई० पू० ५०३) में निर्वाणको प्राप्त हुए । तत्परचान जम्बुन्वामी जैनसम्बे नायक हुए। ये चम्पाके एक कोट्यामीम श्रेष्टिके पुत्र थे और महाबोरके प्रभावसे उनके शिष्य हो गर्य थे। जैन मुनिके म्ब्पमें मत्रानगरके चौरासी नामक म्यानपर इन्होंने तपस्चरण किया था। म० स०६२ (ई० पू० ४६५) में जम्बूम्बामीको मोक्ष हुआ। एक अनुयुतिक अनुसार मयुराके चौरासी क्षेत्रसे ही इनका निर्वाण हुआ किन्तु एक अन्य मान्यताके अनुसार राजगृहके विपुलाचलपर यह घटना घटो थी। महाबीरको शिष्य-परम्परामें जम्बृस्वामी अन्तिम वैवली थे। मयुरा नगर क्षोर शूरसेन देशमें इनके द्वारा जैन धर्मका अन्यधिक प्रचार हुआ। इनके पश्चान् विष्णुकुमार, निन्दिमित्र, अपराजित, गोयर्दन लोर भद्रवाहने क्रमश मधका नेतृत्व किया। ये पाँचा ही श्रुतकेवली थे यर्घात् इन्हें सम्पूर्ण युत्तका यथावत् ज्ञान था । इनमें-से यन्तिम युतकेवली नद्रवाहका मृत्यू म० म० १६० (ई० पू० ३६५) में हुई। जैनघर्मक इतिहासमें इन आचार्यका अन्यन्त महस्त्रपूर्ण स्थान है। इनके समय तफ जैन सब अम्रण्ड अविभवत रहा था, किन्तु इनको मृत्युके उपरान्न उसके शाबुबोर्मे नटरेंड शंबगेर देखनेड बाजारपेर आहि प्रशास होने रुक्र 🗗 गर्व । अक्षणीर-बारा प्रपदेशिय अध-पुर्वेचा औ पुर्वज्ञात करके समय तक अविभिन्नन का बहु मी वीरे-बीर विकित्त होने सवा : यह शाम पुश्चिम्य परम्परागे गौनिक हारस पहता बाबा था बीर बसी शकार समझे नई थी वर्ष नाम तक मकता रहा । वह भी एक कारण मा कि बतका सनै-नाने विवेशाविक हान होता क्या । अवरोक्त नतमेशाविका एक संबंध बढा बाह्य निवित्त सम्म देखरो प्रक्रोबाका पद इत्यवकारिय यहातुमिक वा निवामी करने जान हारा पर्व तथना पाकर बाजार्व अहरात करने शहका मिन्द्रोड साथ शक्ति व देशको निहार कर नवे थे । धुक्तियाँ अपवान्तिके संगरान्य थी इस तामबोका गुरू वर्ष शहराय पंतिष देवमें दी स्वामी क्ष्मी रह नगर । बीलवर्ष क्षार्थ ब्यापेनी ही अनेकित या और इब विभागके राज्यावर्यते यह ब्रोट व्यक्ति क्यांन ही करें। क्यांटक देखने शहनतेक्यांस नामक स्वात-को अपना प्रमाप केमा नेतानर का रक्षिणीय निकल ध्रवसन्त रहित्य बारतमे विभिन्न प्रदेशीय देवा चारतीय स्वाहायरवर्ती होपादिकांचे सैन बर्मेश प्रचार वर्षे प्रमार करनेने विकल हो बना । इन नवका क्रियन बी यमें न्याने वेक्कनकर्ण गर्रिस्तियोके बनुवार पास् हो पना । बार शिक्त हो सामू ऐसे भी में को बुध्विक स्थान सम्बन्ध हो रह को के रिक्ट इक्तिक दुनिनामें में बाग बड़ार नियम-समय बाजार-निवादकी बावनात्वस ब्राविश न रख वके । बाग्य नामा प्रचारके विकिताकारके बीज बरन हो बने । माथाय स्कृतयहरू कनका लेतृत्व विका विश्व में जी बढ़ते हुए विविध्यापार एक सावक ज्ञागको राज्यमें बार्ख त हो। तथ र नामानारमं इन मामना जालाए नाजवाने गटकिएनमा परिश्वास करके बार्जनाची माना क्षत्र क्षांका की शास्त्राच वहाँदें भी मोर सक्षिक र्वत्रवमशी बोर तरकर बीराजुक वस्ताभीपुरती अस्ता स्वाबी हेना भनाता । इसे सामाण सामु तम् ईमबीका समय क्वाम्पीकं सन्तमे स्वेतास्तर

धारतीय इतिहास । एक ग्रीह

.

सम्प्रदायके जनक वने । इन दोनों शाखाआंके अतिरिक्त उत्तरापयके विभिन्न भागामें और भी अन्य अनेक जैन नाघु थे । इनके-मे अधिकतरने कालान्तरमें मयुरा नगरको अपना प्रमुख केन्द्र बनाया और इनका विकास भी स्वतन्त्र रूपसे हुआ। मयुरा आदिके जैन साघु महावीरोत्तर महासाव्यमें कर्णाटकी या मागघी एव पश्चिमी साघुओंके बीचकी एक महत्त्वपूर्ण कडी सिद्ध हुए। इस प्रकार महावीरके निर्वाणके उपरात जैनमध निरन्तर प्रगति एव विकासकी और अग्रसर होता गया और शनेक वालदीप, विकार एवं भेदादिके उत्पन्न होते रहनेपर भी तीर्यकराके मौलिक सिद्धातोंका प्रचार देश-देशान्तरम बढता गया।

2

अध्याच ३

प्राचीन युम-द्वितीय पाद काव सावारव

हम देव पूरे हैं कि बाक्सी बनाव्यी हैं-् के बावकी कात्रत वारायें होगड़ सामान्तर वा बहारह राज्य बच्चा परे। बार्च देश रहे बहारें को है। वसी नाव्य बच्चों यह राज्य-वर्तान हुं ी कोर कार्रेक कोना बाहेंच्यों में बंचों वहीं बहार कार्य कार्य प्रकार कार्य सावदार्थी संपन्न के बिकानचर्य देशम बचा या राज्य कार्य सावदार हों मानें बचेंच बचीन नार्यों वीर वच्चे में दो प्रतिपादनी राज्य बारायों ही बंजुल ही की बी कोर वच्चेंचे कार्य राज्य हैं बीर बच्चे ही बचा। बहेंचे काराव्याच्या व्यक्तिय राज्योंक्य करियान हिका सावदा होंच्या है। बच्चेंच काह्या वच्चेंचेंच वृद्धि कीर क्या है। होती बार प्रविद्धानिक वच्चेंचे करियान चारावरी बार्मान्यक एका

की नाजीऽनार नारत्याको जनुसार शांकीने मानेपाल स्वयंत्रा कारोत्ता स्वयंत्र प्रदेश विद्युवाल वह जोता हुए जाता नायाना वह होतिक पानवंत्र वीतुमाल वह नहमाता हुं। तह पाता को वंदने वराध हुया था तेमाने बहुएता प्रकारी हुए विदेश पानवंत्रा कम हुवा मा, का. मानके हुएता प्रकारी हुए विदेश पानवंत्रा कम हुवा मा, का. मानके हुन कम यहित वालवंदाना मुक्तमी मारपन्ते हुँ वैन धर्म रहा प्रतीत हाता है। राज्यक्रान्तिके उपरान्त इस वशके प्रारम्भिक नरेशोंम सर्वप्रसिद्ध राजा श्रीणिक विम्विसार था। हिन्दू पुराणीम उसके पिताका नाम नियुनाग या दौगुनाक, बौद्धसाहित्यमें भट्टि और जैन अनु-श्रतिमें उपश्रेणिक मिलता है। श्रेणिकके बुमारकालमें ही उसके पिताने विसी कारण कृषित होकर उसे राज्यमे निर्वासित कर दिया या और अपने दुमरे पृत्र चिलातिपुणको अपना उत्तराधिकार भीप दिया या। अपने निर्यासन पालमें श्रेणिवने देश देशान्तरावा अमण करके अनुभव प्राप्त क्तिया । इसी कारमें वह कतिपय जैनेतर श्रमण माधुओंके सम्पर्कमें आया कोर चनका भक्त हो गया तथा जैनधर्मसे बिट्टेप भी फरने लगा। पूछ अनुप्रतिपोक्ते अनुमार वह बौद्ध हो गया था विन्तु यह बात असम्भव प्रतीत होती है क्यों कि महाबीर के केवलज्ञान प्राप्ति (ई० पू० ५५७) के पूर्व ही यह फिरसे जैनधर्मका अनुयायी बन चुना या और उस समय तक वह-माय मतके अनुसार बुद्धने अपने धमका प्रचार प्रारम्ग नहीं किया था। श्रीणकका भाई चिलातिपुत्र राज्यकार्यने विरक्त था और उसने दत्त नामक जैन मुनिसे वैभार पर्यतपर मुनि-दीक्षा है ही। फनस्यम्प सन ई० पू० ५८७ के लगभग श्रीणया विस्त्रिसार मगघके सिहासनपर बैठा । चमने राजधानी राजगृहका जिसे गिरिवृज या पचधैलपुर भी कहते थे, पुन निर्माण किया एव राज्यका सगठन और पासनकी मुख्यवस्था की। उसके तया उसके वशजोंके प्रयत्नसे यह सुन्दर महानगरी मगध साम्राज्यकी ही नहीं वरन् सम्पूर्ण भारतवर्षकी प्रधान राजधानी बन गयो। उसके सिहा-सनारूद होनेके समय मगधका राज्य न विशेष वहा या और न वल्यान । कोसळराज्य एव वैशालीके विज्ञसघकी सीमाएँ इससे सटी हुई थीं। श्रेणिककी महत्त्वाकांक्षाका आभास पाकर वैशाली नरेश चेटकके नेतत्वमें कोसल तथा विजनवको सेनाआने मगधपर आक्रमण कर दिया, चिन्त् चत्र घेणिकने अवसर देखकर सन्धि कर छी। इतना ही नहीं, उसने चेटककी पुत्री चेलना और कोसलकी राजकुमारी कौशलादेवीके साथ विवास करक उस दोगों परिसामानी वहीयी शामनोको स्वानी मैत्रोके सुवने भी बाँच क्या - बनन महकी राजकुमानं लगाके नाम भी विवाह किया है क्रमानिकें उनके और जी की राजकरतामा तथा एक बाधाय क्रमा के माच विद्यार अन्यक्ष प्रतीय में विन्तु मार्ग तीम प्रगती । प्राथ गतियी की की प्रमाने भी बैनकरना अवस्ता ही प्रमाक प्रदर्शनी क्यों दिसाह रार्थ बेची अञ्चलकान्याना गण प्रचार बाजना निर्माणी सुरक्षित काण सेन्द्रिक बार-मार्ट राज्यको जीवकर अपना राज्यक्रमार करता सारम्य कर दिया और बलय प्रेंड बेने बड़े राज्यकों मी बीठकर करने बरने राज्यमें निष्य विधा । वर्ष राज्य-नेने राज्यक ब्रांडिन्स्त स्वानी बीर अबसे लेक्ट्र समाप्त नामात्रात्र सम्बद्धानारा भारतका श्रवण समित सिरुत्त हमें स्रांक्त्रभारी शहर बन नेपा ना । बहारान प्रमेनविश्वक क्रोनक राहर नी बनदान का और शहबके कविनाउपन्यम वैद्यानी एन निर्देशना क्यूनर विकार क्षेत्र में बाजिक क्ष्ममानी या किल् वे बीमों ही मेरिकक मानली एवं विक के जनक अणिताती करों। अण्डल में नेपाकी सामाजिस नामक करीं हुए । केवल सर्वाना-नरेस जनामधोत रतका एकवाच प्रवन प्रतिकृती का किन्दु वह दूर या और अवस्थी लड़ती हुई योलाको नेक्बेका उनकें यी बाजन म प्रजा - पारन्य (ईरान) के बाजके नाथ भी आर्थकर्म राज-वैक्ति माध्यम्भयान विनय अनीत बीता है । २ वय पर्यन्त राज्य करने

के बाराम्य कर है 9 1 में वीनेक्यां जुरा हुई। में एक नेपन एक फितारे एवं सामार्ग नोप्य हो की वा बहु बक मुद्दान सामन को वा जीन मारित्यत नाम स्वत्या है कि उनके प्राप्ती में हो किसी माराव्यी स्वामीर्थ की बोर न किसी सम्बद्धि और पी बहुबा स्वाम की कामा मुम्यानक करायी की ने किसी समुद्धि और पी बहुबा स्वाम वा विस्तित स्वयमार्थ न्याप्ती क्षेत्री सम्बद्धा करने साहत एवं माराव्योग औपनी व्योग कामार्थ क्षाप्ती क्षाप्ता हुआ नामी पारूप यहे जीवन्त स्वाम स्वाम क्षाप्ती कामार्थ कामार्थ क्षाप्ती कामार्थक क्षाप्ती कामार्थन क्षाप्ती कामार्थ कामार्थ युक्त इन जनतन्त्रान्यक सम्याओं द्वारा उसने माम्राप्यके उद्योग प्रत्या, व्यवसाय और व्यापारको भारी प्रोत्माहन दिया। ये श्रेणिया ही आगे चलकर वतमान जातियोके रूपमें घोरे-घीरे परिणत हो गयी। मम्राद् श्रेणिक जनपदाका पालक एव पिना कहा गया है। वह दयाशील एव मर्यादाशील था, माथ ही दानबीर एव निर्माता भी था। राजघानीने पुनर्निर्माणके अतिरिदत सम्मेदशिखर पर्दतपर जैन निपिद्यकाएँ तथा अयय जिनमन्दिर, स्तूप, चीत्यादि उसने बनवाये बताये जाते हैं। राजगृहवे प्राचीन भग्नावरोपोमे उसके नमयको मूर्तियाँ आदि भी मिली बतायी जाती हैं। क्षपनो अग्रमहिषी एव प्रिय पत्नी चेल्नाके प्रभावसे श्रेणिक जैनघर्मका भवन हो तया था। चेलना स्वय महावाँग्की मौमो (या ममेरी वहन) थी। महावीरका प्रयम ममवशरण श्रेणिकको राजवानीके ही एक महत्त्वपूर्ण भाग, विपुलाचल पवतपर जुडा था और वही ई० पू० ५५७ की शावण कृष्ण प्रतिपदाको उनका सवप्रथम धर्मोपदेश हुआ था। महाराज श्रेणिक सपरिनार एव नपरिकर इक्न समवगरण सभामें उपस्थित हुआ या और श्रावकोत्तम कहराया था तथा महावीरके श्रावक सबका नेता यना था। कहा जाता ह कि श्रेणिकने भगवानुमे एक-एक करके साट हजार प्रश्न किये थे और उन्होंने उन सबका समाघान किया था। इन प्रश्नोंके उत्तरा-के आधारपर ही विपुल जैन साहित्यका रचना हुई। उसनी साम्राज्ञी चेतना श्राधिका सधकी नेश्रो हुई। उसने अपनी समस्त नपन्नियो-महित महासती चन्दना आयिक निकट धर्मका अध्ययन किया बताया जाता है। श्रीणिकके अभवकुमार, मेधकुमार, वारिपेग, कुणिक आदि कई पुत्र थे। इन मबमें अभयक्रमार जेठे थे। यह अत्यात मेघावी, राजनीनि निप्ण एव धर्मात्मा थे। श्रेणिकके जीवन कालमें ही वह अपने साइयोंके साथ जैन मुनि हो गये ये। अतण्य श्रेणिकने नुणिक अपरनाम अजानशमुक्ते जो कि महारानी चेलनासे उत्पन्न हुआ था, राजपाट सौंपकर एकान्तमें घर्मघ्यानपूर्वक घेप जीवन वितानेका निक्चय किया । राज्याविकार पाने- पर पूरिपानो ने प्रवासी वाहणते व्यानो तिवा विभिन्नने वर्णपूर्ण सेवा दिया दिन्नु नागांव नार्णान कर्मपा करिया दिया दिया दिया दिया के बारा प्रोत्ये और को नारणा कुण नार्णके किए तथा में प्रिकेट करेडे कार्याविक क्षेत्र करावा था जिल्हा को प्रवास कार्या विकास प्रदु या सामा कि यह को बाराजें के निष्य कार्य के नार्णान कार्यानुकां में नार्यों के दिया कीपना करेगा जाता बक्कर अपना देशकार पर कारण प्रमान इस बारे दो अभिना कहा बक्कर अपना देशकार पर कारण प्रमान पूर्व कार्ये का क्षारी कहा विकास के स्वत्य के स्वत्य करें का स्वास्थ्य पर

दियां था। स्वाप्त्यपु पुरिष्य-व्यादे चिताके बोधवरणकर्षे ही (ई पू १९९ में) त्याके विकासकर वार्तिम हो पदा मा । वक्के पून बाठ वर्त-वे वह बंदीवादी प्रकारते प्रमाना व्यावक व्याव मारा मा । १ वर्षे राज बर्दिन करणा में हु १ दिने बात्रावाद्यों में कुछ हो। व्या पह बद्दान कराती करात करात वे दिन्याक व्याप विविच्यात्यां वेद बान्ने प्रान्तवार्गन करात करातिक व्याप्तिक व्याप्तिक व्याप्ति हो। १ वर्षे कर्मक प्रान्तवार्गन कराति करातिक व्याप्तिक व्याप्तिक व्याप्ति विवाद

महित्रमंत्रकी बहुन्द स्रोत्तः ही नवत्रके नियः तत्रवे बहे बहुन्य स्राप्त की भीर नवत्री स्वपन्ति जवान नामक यो सहस्य सन्तानसम्बे स्ता जीर

कृतिमें कर देगी पारोधी विशिष्टी विश्वनीय करनेता जिसका दिखा। कीकाओं पारचारी एवं बार्च बारांची को और रहना राहकूर्यों कर्या ग्रोतेलें पारचा महत्त्वाची एवं अस्ति काल कर । कर विशा दिल्लीकान्यने वाले (शादा पारचे भी बात वह रहने शिक्तु का और रिक्ती कार करने का वा शासकारमध्ये केन मूर्ति नारांच केने प्रति इस के 1 कि बोरें कर पारचा काल क्ष्मित होते बात हुए स्लो को है है

प्रदेशीय महाधीरका जनत का और नदात्वा गृहका की सन्त्राधिक

**

बादर करना था। बिम्बिसार और चेटकका वह मित्र था, कि तु अब उसकी वृद्धावस्या भी और उसके पुत्र अयोग्य थे। उनके पुत्र युपराज विदुडभने पिताकी इच्छाके विरुद्ध स्वयं गीतमबृद्धने जीवनकालमें ही उनकी जन्मनुमि कपिलवस्तुपर भयकर आक्रमण करने उने नष्ट-ऋष्ट कर दिया था। अजानगत्रने अवसर देव कोसलपर आक्रमण कर दिया और उसे पराजित करके उनका बहुनाग अपने साम्याज्यमें मिना निया। अब उसने वैजारीकी क्षोर च्यान दिया । जिन्छनि समियोंका यह प्रसिद्ध बन्जिसच एक क्षादर्भ गणतन्त्र राष्ट्र या । चनका विधि-विधान आजकी जनतन्त्रीय प्रणानींसे वहन-कुछ सादस्य रखता था । जनता या नागरियों प्रतिनिधि राजा कहनाते थे। इन राजाओको सहसा सहसा थी और वे वैशालीव सथागारमें बैठकर शुद्ध जनतन्त्रीय पद्धतिसे राजनैतिक तथा आय लौकिक एव धार्मिक विपयों-पर विचार-विमर्श एव बाद विजाद बण्ते ये जिनका निर्णय बहुमत-हारा होता या। मतदानमें शलाका (बैल्ट) का भी प्रयोग किया जाता था। **उस राष्ट्रको तथा** जिन्छविया अयत्रा विज्ञियोंके चरित्रको स्त्रयं महात्मा बुद्धने प्रधाना की है और उन्होंने अपने सधक सगठनमें भी लिच्छवियोंकी अनेक विविधाका अनुकरण किया । बुद्धधाय आदि प्राचीन बौद्धाचार्योने भी उनके बाबार-विचार एव प्रयासाँके सुन्दर वर्णन किये हैं । महाराज चेटककी अब मृत्यु हा चुत्रो थी और उमका मित्र राज्य कोमल पराजित हो चका या । फिर भी वैशालीपर खुके रूपसे आक्रमण करनेका अजावसमुको साहस न हुआ। अत उसने बम्मकार नामक एक धृत ब्राह्मणको वैशानी भेमा। वहाँ उसने अपने छल, कौणल एव विश्वासधात-द्वारा विज्ञमधको एकता एव शक्तिको निवल कर दिया और अजातश्रुको वैशाली विजय करनेका स्प्रवसर प्रदान किया । वई एक छोटे-मोटे राज्य भी उसने जीतकर अपने ् साम्राज्यमें और मिलाये और इस प्रकार अवन्ति नरेश पालकको, जिसने कि कौशाम्बी नरेश उदयनके वत्सराज्यको विजय करके अपनी शक्ति और अविक बढ़ा छी थी, छोडकर सम्पूर्ण भारतमें मगव सात्राज्यका कोई प्रयस क्रमा प्रमुख देशा (स्था (ई.ज. 1.) रिका कार्यक र र क्षेत्र स्थापन gertie lige eine mes mit er mit शास्त्राक्षत्र का विद्यालय हेन हेन्द्रहें) ईत्र काइल र श तमन्त्रकार का स्व ब्रुप्त प्रवृद्ध सम्बद्ध स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप का नह उस ना । अध्यक्तको पर निम्पय गै. शक्त शतको अपूर्त राज्या । ते का चा चा चा का ग्रीवरणी राज्याम (ई. पू. ६ ६५) न जब व्यान्या बास्त्रण दिया या ना उपनी ननावें त्या हान्द्रेय में दिवान का ना नगमी शंतरायशार है स्थान भी नारत-क म् आक्रमा प्रामाना बामनी बानरी रिमाया है । नामा बाली रवाई Ber (E o he jant gu ber fem & ere biefe u बोर कृष्टिक सामनवानामें जारण्य है । नर नरवर ह भे ी प्रशी द्राप्ते भा त । सम्म विनार पाराई ध्यानी मा ता । हुई दुनाद सम् न ना भी । अभागान्ते सामाराना । माधाने (क्ल्बर) बरन दूर वा बड़ा बारन है हैं हैगानियाँ है जनका र के बार है तबने बार ने मेने बिनेय बाबा ही हुई। अबाद नाव गाराव बाररपा भेदी कावाय ही बचारी शते संशासनाम धारण नायन जी माँन निमुख का अपनी गाँउन है पुष्ट क अके लिए बनन बारा थी। शामक संबद्धार कब मुद्दा विकार हो क्रमाना मही बाहते वार्गनाम लगर बन्छ । यह बाम अभाषकाका श्वापनी (बन्नाकार) का नाम्रास्त्रक उत्पोप कालनाव तर्थ स्थानार बोर मनुद्रिशी बोर अपन रिपाणी वीचित्री चमने भी प्रशास दिखा बीर उनीरी गीतिही बागाण। दुनिश-मसाग्यन नद्रातीरश बन्त

नार्ताच पूर्विकाल व्यवस्थि

अभाग्रेस्त या १ वट प्रमा ४ हे ग्रेट प्रमा

ያደር ነ ነ የሚገር

14

या और अपने युल-धर्म जैनायमंका ही अनुषामी था। रैप्यनके मतानुमार उसने जैन श्रावकके तन धारण किये थे। वह युदका नी
आदर करता था किन्तु उनका अनुषामी नही हुआ प्रतीत होता।
बौद नाहित्यमे उमका घटो निजा की गयो है और उस पिनृहता
कहा गया है। विज्ञु जैन अनुश्रुतिमें उमनी प्रयासा मिछती है। उसने
मृति निर्माण करायों भी प्रोत्साहन दिया। महावीर आदि सीथकराको
मूतियोंके अतिरिचत स्थय अपनी मूतियों भी उसने बनयायी प्रतीत होती है।
पर्यम नामक स्थानस किसी एक मूतिको डॉ० कादीप्रसाद जायसवालने
स्वय अजानग्रुकी मूतिके रूपमें चीन्हा है और उनके मतानुसार वह उमीके
कासी आविष्कार किया था।

अञातरायुके परचात् ई० पू० ५०३ में उसका पुत्र उदयिन (उदयी. अजउदयी अथवा उदयीमट) मगचक विहासनपर वैठा और विभिन्न मतीक अनुसार उसने १६, २४, २५ या ३५ वर्ष राज्य किया। वह भी राज्य प्राप्त करनेके पूर्व अपने पिता कृणिकको भौति अगदेशका शासक रहा था। जैन साहित्यमें उसका पर्याप्त उल्लेख मिलता ह और यहाँ उसका वर्णन एक महान् जन नरेशके रूपमें हुआ है। उसने पाटलिपुत्र नगरका, जिस कुमुमपुर मी कहते थे और जिसके भग्नावरीय वतमान पटना नगरक निकट मिले हें, निर्माण किया तथा राजधानीको राजगृतसे चठाकर पाटलिपुत्रमें हा स्थापित किया । इस राजाकी भी एक प्रस्तर मूर्ति मिली है । इसन मगधके एकमात्र प्रतिद्वन्द्वी अवितिको भी पराजित किया और उस महा-राज्यका बहुभाग अपन साम्राज्यमें सम्मिलित कर लिया। अब प्राय समस्त उत्तरा भारत मगव साम्राज्यक अन्तगत था। वुछ अनुष्युतियामें स्दयीक परचात् अनुरुद्ध, मुण्ड, नागदशक या दशक शादि अन्य राजे भी इम वशमें हुए वताय जाते हैं। किन्तु यह निश्चित है कि महाचार स० ६० (ई० प० ४६७) में मगधमें एक नये वशका प्रारम्भ हुआ जिसे नन्दवश कहते हैं और का क्रमान १५ जा १ ५ जर्व पष्टमा नगामक यहा । इसी वर्ष स्था-नीहक मानविक पाय-नाम क्रमान्तिक साम्य वंद्याता भी कमा ही बचा भीर क्रमीती सबस माज्यास्त्री ही कृष कारराज्यानी बज बची ।

इन नदीन बंगके सका नहारका बाव विध-विश्व अनुष्तिहोंने दिए-नाम काक्ष्मण बहुनाओं क परिवर्गन स्वयंत्राक्षण बहुत्वानि बहुतिक क्षारि क्षित्रता है, जिस्त करें क्या विविध नामीशा वानीक्षण वार शिया बड़ा प्रतीत होता है। एता न्यन्त है कि करुश नाव बारवर्गन विप्रानात मा और वह बुचनरेगणा पुत्र मादि न हाफर शीई बुदरा कमानी मा क्तिन्तु वा वृक्त देशमाच वयने ही नम्बन्तिन । यो वाद्योपनाच बाउन शासकी प्रत्योक निकट कक्षेत्री एक वृत्ति भी निनी की जिसपर उन्होंने भागा हा बान्यभनि मान मा या । यह पाप प्रकृत बान्य बहिए क्षेत्रा मुनर्वत्र है और विमुताय जान अभिकृष वंशते जनके बारहरियन होनेका । त्यारा इत्तर्धावणारी न होनेने बन्दि नाव बंध नरिकांत सुचक gai । वह बीर हनके द्रक बयत पूर्व-तन्त्रकि वायने ती प्रांत्रह है। कार्त १८ वस मन्नव (दे वू ४४९ वक्) राज्य किया बर्धाव होता है। सबब बाप्र। रनेनी संपताः विल्हार एवं विविध ब्रह्मंत्र क्षत्रको पूर्वपत् बनी चरी । इनका बद्धराविका । वन्तिकान नाकवर्त कामासील वा । है व

प्रश्निक कर प्रश्निक प्रश्निक क्षेत्र के प्रश्निक कर कि मा है वू प्रश्निक कर प्रश्निक के प्रिक के प्रश्निक के प्रिक के प्रश्निक के प्रश्निक के प्रश्निक के प्रश्निक के प्रिक के प्रश्निक के प्रिक के प्रिक के प्रश्निक के प्रिक के प्रिक

निलालेसमे बिटित है कि उसके जासनकालमें राजवृतानेकी माध्यमिका नामक प्रमिद्ध नगरी जैनपर्भगा प्रमुख केंद्र थी, जैनोकी दशौ धर्छ। बस्पी घी और न गेवल वहाँ महाबीरपी पुष्पल मायता घी चरन होक-ध्यवहारमें महाबीर सवनदा ही प्रजलन या । भारतमें ना मणताके प्रचल्तमा यह मर्व प्राचीत उन्लेख है। निद्वधानी हता गटार-हारा की गयी बतायी जाती है। उनके उपरान्त उनका पृत्र मध्यतिक राजा हुआ जिसने लगभग ४० वर्ष गण्य किया। यह भी अपने विनाक समान शक्तिशाली एवं प्रतापी नरदा था। इमीने दासर कार्ट्स मुर्ज १६२ (६० प्०३६५) में अतिम मृतपवली भद्रवाहुकी मृत्यु हुई। ऐसा प्रतीत होता ह कि इसी नरेशने धायनकालके अन्तिम वर्षीमें वह अनुश्रृति-प्रसिद्ध द्वादश-वर्षीय भयपर दुर्मिक्ष पहा या जिसकी पूर्वनूचना पाकर आचार्ग भद्रबाह कई महस्र निष्य मुनियांने साथ दक्षिण देशकी विहार कर गये थे। सम्भवत यह राजा भी उत्तरा भवन एव शिव्य था और च ठीके साय मृति होगर दक्षिणको चला गया था। इस दुमिक्ष पात्रमें जैनमधर्म प्रयम बार फूट पहनके बीज परे। दुभिक्षकी उपशातिके पश्चात स्यू रुमद्रके नत्त्वमें व्वेताम्बर अनुश्रांतका पहला जैन सम्मेलन एवं आगमाः को बांचना पाटलिपुत्र नगरम इसी गालमें हुई और इसी कालमें बौद्धांथी द्वितीय संगीति भी पाटलिपुत्रमें हुई ।

गहानित्वनेष उपरान्त मगधमे फिर एक घरेलू राज्यकान्ति हुई। उमके राज्यवालके बन्तिम वर्षोमें देश भयवर दुर्भिक्षसे पीडित रहा था, इस मनटकालमे जासन भी अन्यवस्थित हो गया था। स्वय वृद्ध राजा राज्यका परित्याग वर मुनि हो गया था और दक्षिणको चला गया था। इस परिस्थितिका लाभ उठावर एक साहसी एव चतुर युवक महापदाने राज्य सिहासन हस्नगत कर लिया। उसके अप नाम सर्वायसिद्धि और उप्रसेन (यूनानी लेखकोंका एप्रेमेंच) मिठते हैं। कुछ लोग अमसे उसे घनानन्द या घनानन्द भी कह देते हैं किन्तु यह नाम उसका नहीं वरन्



युनानी सैनिकोंके दाँत खट्टे कर दिये। किन्तु आक्रान्ताओकी विपुल सैन्य शक्तिके मम्मल अग्रोहेकी छोटी-सो सेना कबतक ठहरती, अन्तत उसका पतन हुआ और वीस हजार स्त्री बच्चोंने जौहर द्वारा अपना अन्त किया। लिखित इतिहासमें जौहरका यह सर्वप्रथम उदाहरण है। अने लगमग छेढ वर्षके प्रवास कालमें सिकन्दर और उसकी सर्वविजयी सेना पुरे पजाव और सिचको भी विजय न कर पायी। नन्दके प्राची साम्राज्यकी सीमार्मे ती प्रवेश करनेका उसे साहस ही नही हुआ। ई० प० ३२५ के प्रारम्भमें ही वह निराश होकर वापस लीट गया और ई॰ पू॰ ३२३ में वाबुल नगरमें चसकी मृत्यु हो गयी। पुरु और अम्भोको अपना कन्द प्रतिनिधि नियुक्त करके और थोडो-सी युनानी सेना छोडकर वह भारतसे चला गया था। यदि पजाव, सिन्ध एवं पिश्चमोत्तर प्रान्तके ये अनगिनत छोटे-छोटे राज-तात्र एव गणतन्त्र सगठित होकर और मिलकर एक साथ यूनानियोंके विरुद्ध खडे हो जाते तो वे निस्सन्देह सिकन्दरको पलक मारते ही बुरी तरह हराकर भारतको सीमासे खदेड बाहर करते । सिकन्दरके मुडते ही उसके दारा जीता हुआ भारतका अंश की घ्र ही पूर्ववत् हो गया और अधिकाश माग अविशय भारतको तो परिवमी जगत्के इतिहासकी इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटनाका भानभी न हुआ। भारतवासियोंके लिए वह इतिहासकी एक शोध्र ही विस्मृत कर दी जानेवाली गौण एव शुद्र घटना थो।

किन्तु सिकन्दरके मारत आक्रमणके कुछ सुपरिणाम भी हुए। भारतके बाहर पश्चिमी देशोंके साथ भारतवपके सम्पर्क और अधिक उन्मुक्त एव गहरे हो गये। पश्चिमोत्तर प्रदेशको छोटी-छोटी धिषतयोंके छिन्न भिन्न हो जानेने शोध्र ही भौर्य साम्राज्यका विस्तार अफ्रगानिस्तान पर्यन्त फैल जानेके लिए भूमि तैयार हो गयो। भारतीय धर्म, दर्शन, ज्ञान और विज्ञानके समस्त सभ्य पश्चिमो जगत्में प्रसारित होनेका द्वार बन गया। यूनानी कलाका भारतीय कला, विधेषकर मूर्तिकला, पर प्रमाव पडा। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह हुई कि सिकन्दरके साथ आनेवाले कई यूनानी

साम नार्वेष वान व्यवस्थ के तिया या और राम्यक्त माने वयस्य वारि साम पूर्वेश नेकूल करन और दिया था किनु व्यवस्थ करने ही साम्ये पाता था। बाद्य वर्ष परण यह स्वयस्य मानू रही सम्बर्ध है नु १६७ के क्षाप्रच भाग्य एवं पात्रपुत्तके व्यवस्थ में प्रचा पत्रम हमा पीर मीर्च पेचरी स्वयस्थ हुई। लाम्यक्ति सामा नाम्यो बस्ते व्यवस्थ स्वयस्थ स्वयम पूर्वे जिनस्या साम्यक है। जुहर नुमार्थ मानूबिया सम्बर हम कीन्से एक्स्ये समस्य निर्माण की स्वयस्थ क्षाप्रच स्वयस्थ स्वयस्थ हिंदी

देवर्थ बहुना एक वर दिया था। है भू ६५७ में बहुवा मन्त्र हुन्छ। बीच वर्षणी मार्चे ही कवने कर्मुक बुनाल देवार करना मार्मिशत स्मान्ति कर क्रिया और बान पानके धोटे-बोटे वहीची वैधींकी जीवकर अपने पारन्थ बिस्टार वर्ष प्रसिद्धका बंबद किया । एक दश्द क्विम बेबा केवर बद विरक्ष-विषयके फिल् मिलक बहुत । अनु पृथ्विया अध्य पृथ्विया कीरिका, ईराप्ट बाबुल बाहि प्रदेशींकी बीलाह हुना यह ईराक्टर यह पीड़ा बीर बक्ते जन्ममी गंधके निरंपुत एवं श्रात्तिकाची बाझाराको क्रिन्सनिर्ण करके क्षेत्र अपने बाह्य अन्य अन्य बना विमा । नारक्षके अनुपनेद अन-बेजरफे सोच एवं विकासियाचे हैरिए होकर सकते हैं व ३६७ में संबर पानीके परास्त्री अवेश विन्या, स्वाधिक्य वरेख अपनीको प्रवासिक कर अपना करव राजा अनावा और फिर एक-एक करके विश्वपानी हर्न र्पमानने विकारे हुए क्षेत्रे-बोटे राज्यी वर्ध नवतन्त्रीको विजय नरका जाराज किया। रिन्तु पक-पनपर क्षेत्र जीवन विशेषका कावना करवा पदा। मैकन भीर विपातके बोलावेवा राजा पुत्र वही जीरक्षापूर्वक सद्धा और क्षीयकशास ही इसका का पता । बाजरीयें बरोनेंचे बसकेशी रक्तकरे विकारणी मुक्तेब हुई । गर्तनाम जनगाओंक पूर्वम, अधोईके में एनकारक हेगी निरामी बहुत बीरताके साम कहे और कन्होंने विकासरके दुई र आस्तीय इतिहास : एक रहि

उनमें कुछ तो वनपासी (हिलोबाइ) ये जो नितान्त निष्परिग्रह, निम्पृह एव नग्न तपस्वी थे, बनोमें रहते थे, अल्पभोजी और विशुद्ध शाकाहारी थे, हाथमें लेकर ही भोजन करते और जल पीते थे, मृत्युके उपरान्त रावको जीव जन्तुओ-द्वारा भक्षण किये जानेके लिए वनमें ही छोड देते थे और मृत्यु निकट जानकर विविध उपायोंसे जीवनका अन्त कर देते थे, अर्थात समाधिमरण करते थे। वे देह और भीर्गामी चिन्तासे सर्वथा मक्त थे, जान ब्यान और सपमें छीन रहते थे। यह सब वर्णन जैन मनियांके अतिरिक्त अन्य किसी सम्प्रदायके माधुआपर पूर्णतया लागू नहीं होता। तक्षणिलाके निकट ऐसे ही मण्डन नामक एक प्रसिद्ध मुनिमे सिकन्दरने साक्षात्कार चाहा। मुनिने उसके निमन्त्रणका तिरस्कार कर दिया, इमपर सम्राट् म्बय मृतिके पास गया । प्रश्त करनेपर मृतिने कहा । कि यदि हमसे कुछ पूछना और लेना चाहता है तो पहले हमारी ही तरह अन्तर बाह्यसे नग्न हो जा। और फिर उन्होंने राज्यतृष्णा एव भीगलिप्सा-का त्याग करके आत्माकी चिता करनेका उसे उपदेश दिया। एक दूसरा साध् जिसका नाम कत्याण या सिक दरके साय ही बाबुल चला गया। वावुलमें जाकर उसने समाधिमरण पूर्वक चितारोहण किया। अपनी तथा स्वय सिकन्दरकी निकट मृत्युकी सूचना इस मुनिने सम्राट्की पहले ही दे दी थी। उसकी मृत्युके परचात् साम्राज्यकी क्या दशा होगी, यह भी बता दिया था। इन वनवासी श्रमणोके अतिरिक्त ऐसे भी खण्डवस्त्रवारी त्यागी श्रमण शावक ये जो बस्तियोमें रहते ये और धर्मोपदेश, शिक्षा, ज्योतिप, चिकित्सा आदिके द्वारा लोकोपकारमें रत रहते थे। इन त्यागी गृहस्यों (ऐल्लक, क्षुल्लक, ब्रह्मचारी आदि प्रती धावको) का लोग यहा आदर करते थे।

इन यूनानी लेखकाने तीर्थकर ऋषमदेव एवं उनके पुत्र भरत चक्र-वर्तीसे सम्बन्धित छोकप्रचलित अनुध्यतियाका भी उल्लेख किया है। नन्द, उपसेन, चद्रगुप्त मीर्य, अभित्रधात बिन्दुसार आदिके सम्बन्धमें उनके केन्द्रावे आपनी वर्गन नियो विश्वे आधारार जगानती बुगायी दौरार्गन सार्गेद्र विकारपार्थिक वार्गनी पार्वाचेत्र जीतींत्रक जार्गिक स्वार्थक स्वार्थक पूर्व व्यविक व्यार्थ वर्षन विशे जो तत्रामान बारागीच राध्यक्ष करण पूर्व वर्षास्त्र क्यार करे। याच मी बुगायी निवाहें केन्द्रीयोत्तरमा क्योत्राच नांग्युक वीवि विश्वा कारण सार्याच च्यारपार्थी पार्वाचेत्र सारायार्थिका विश्वेषण प्राप्त नियाशिका यो जा नही विश्वया सार्यां

निकार को सबके पुतानिकोंको परिवर्शनर प्रदेशकों गान्तार, नक्षांबना बारिके विकासी पात व्हेडोजें ही बारी बान् बान्ती बैडाव

और जिल्हें बर-पुर बनेदों गम रियम्बर निर्देश बाप बिके थे । इससी इसनियोंने जिल्लोसीटरर का जिल्लेसाइ वार्याने बल्लेस किया है और बनरे पर्वतिन इस क्लिको जाय गाउँ बाउबेड वही है कि इस स्पाति स्थान तावारीन विवास सेन साम्बोधा है। निकासकी हैने हैं। इस सावतींका क्षार्टनि भोगेरात एवं नैरियाद नामीन की क्षानेन किया है। दुसमें प्रसंब दोनर 'आंगाडी व' यहरता बुनानी क्या है । जैन काशियमें जैन सनियांका एक प्राचीन वर्ग 'बाक्ताीक नामके नृत्वित क्रिया बदा है। वैरिटाइ एक मास्तिक निया बन्तन हुन्थ है जो बारवया बनावो क्या ब्राह्मी होता है। तुरानी केमशोन जरूपी बीट शाहाचीका नुपत-नुपक स्वष्ट करने निया है और इसमें नाई क्रांदें नहीं है कि अवन्ति बनना वर्ति बार बैंग तातुवारा है। बीट विज्ञाति को धो-एक वयर बस्केश इप बन्धान्तींने निक्रते हैं बाबे हो यह रुष्ट्र है कि बक्तांने बोर्टीका ब्रॉक त्राव नहीं था । वरपुरा कायुनिक विद्वार्थाका बह बहस्यर होता है कि इस पुरानी कैताओंने युद्ध नीवमम बीर सीव निकारीका आर' दुख बी बालेम नये नहीं निमा येना ननना है कि वस बानमें कमी कर परिवर्गाचर मारवर्षे वीजवन वक बीच बमाधान था । वपशेषा जिल्ली-बोजिन्द मा अवन सामग्रीके ब्रायन्त्रमें मुनानी नेबाबीका बचन है कि न्तरतीय इतिहाल : एक प्रीर *1

चल्लेख मिलते हैं। इन चपरोक्त भिन्न कयाओं परस्पर बहुत-से अन्तर्म मी हैं। म्राह्मण साहित्यमें चन्द्रगुप्तको नन्दका मुरा नामक पृद्रा दासीसे चत्यन पुत्र वताया है, बौद्ध अनुश्रुतिमें उसे मीरिय नामक प्रात्यदात्रिय जातिका युवक बताया है। किन्तु बौद्ध तथा ब्राह्मण अनुश्रुतियों में चाणक्य बौर चन्द्रगुप्तका जन्मसे मृत्यु पर्यन्त पूर्ण जीवन-वृत्त नहीं मिलता। जैन अनुश्रुतिमें इन महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक व्यक्तियोंके सम्बन्धमें अथसे अन्त तक पूर्ण वर्णन मिलते हैं और वे भी कई विभिन्न हारोंसे। अत विभिन्न अनुश्रुतियो, ऐतिहासिक आधारो और मान्यताओंके समन्वय-द्वारा हमें उपलब्द हो जाता है।

आचार्य चाणवय मौर्यवशको स्यापनामें मूल निमित्त एव मौर्यसाम्राज्य-के प्रधान स्तम्भ थे। वे सम्राट् च द्रगुप्त मौयके राजनैतिक गुरु, समर्थ महायद तथा उसके राज्यके कूदाल व्यवस्थापक एव नियामक थे। राज-नीतिके ये महान् गुरु और इनका प्रसिद्ध अर्थशास्त्र अपने समयमें ही नहीं वरन् तद्त्तरकालीन भारतीय राजनीति एव राजनीतिज्ञोंके सफल मार्ग-दर्शक रहे हैं। प्राचीन जैन अनुश्रुतियोंके अनुसार आचार्य चाणनयका जन्म ई० पू० ३७५ के लगभग गोल्लविपयके अन्तर्गत चणय नामक ग्राममे हुमा या । इस स्थानको ठीक स्थिति अज्ञात है । बूछ अनुधृतियोंमें उन्हें पाटलिपुत्र और कुष्टमें तक्षशिलाका निवासी भी बताया है। इनकी माता-का नाम चणेदवरी और पिताका नाम चणक या जो जन्मसे ब्राह्मण और धर्मसे स्नावक (जैन) थे। जन्मसमयमें ही चाणवयके मुँहमें दाँत से जिससे सबको वहा बारचर्य हुवा। उसी समय मुख जैन साचु चाणक्यके पित्रालयमें आये और उसके पिताने उनसे इस बातका उल्लेख किया। चन्होंने वताया कि यह बालक वहा होनेपर कोई भारी राजा होगा। किन्तु ब्राह्मण चणक सन्तोपो वृत्तिका घर्मात्मा व्यक्ति या, राज्य वैमवको वह पाप समझता या अत उसने वच्चेके दाँत उखाह डाले। इसपर उन पुरान्त के ब ब्यूबारिके स्थित कार्तेण होते हैं वाले विशो जग नहीं बुतिके बड़ी : बहांक्य कि जगानुको विहासकारिकारों को विश् कार्यों हैं नु १११) आगीन मुगानो विहासकारिकारों हो है वह हो दर्भ सार्वे आर्युक्त विद्यानों के मुगान जाहें वेली हो अगा हुई थी। वेत आरादिकार के बना कार्या कर कार्या कर कार्या कर हुई था। कि बन्दें बहुए बुरियो एवं परिकालि विवासी को मुगानी केवरीने का किया है कि बें सी साराहारी हो से। साहिक दिवालां भी नहीं समेक्ष कारों कही किया है।

विश्वनारके बारक्यके कुछ वर्षकि परधान् चारतके एक वहरंगपूर्व राजन-क्रान्ति हुई । क्यारंक्य प्राप्त हुआ और्यवंत्रकी क्रक्के स्वापने स्थापना हुई

सीर कारकार नरवारामंत्र करने पराधेवर्गकी साठ हाता। एवं उपने क्ष्मीयके तथान नायक सरिव यीर करानुद्ध और सीर वह के बहानक एउटानिके निरम्बार शरिवा वहान पराव्या है। एवसका वाला करने सर्वाहारके एउटाने उत्तरास्त्र मुख्या के स्वाहार कर्याण होने हैं, नयपार्थे एवटानों सात्र प्रकृत कराने किया प्रदेशका पूरार्थी एक्ट्रा होने दें क्ष्मी सी कारक करेंद्र करेंद्र महिता प्रकृत कर्या कर्य प्रकृत होने कर्य स्वाहान कर्य प्रकृति करान। प्रमाण कर्य प्रकृति होने हो सीर वाली स्वाहान क्ष्मी है। शहर मिल्के विकोश से सुरा एक क्ष्मी होता कराने सिताय प्रकृती है। शहर मिल्के विकोश कर्य प्रवाहन करान होने सिताय सिताय प्रकृति है। शहर मिल्के विकाश के प्रवाहन हों प्रकृति होता है। सिताय प्रकृति हो। शहर मिल्के विकाश कराने प्रकृत करान स्वाहन किया दिवा स्वाहन क्ष्मीय प्रकृति क्षमा । एक्सा क्ष्मी क्ष्मा प्रकृत क्ष्मीय सिक्स स्वाहन क्ष्मीय सिताय स्वाहन क्ष्मीय क्षमा क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मीय हो। से सीर सार्थी क्ष्मीया साथ क्ष्मा क्ष्मीय क्षमा है।

अपुन्तिये की अपनान करिया अन्यवास और पत्तकुरतकी पास्य वार्तिके

नर्स्ताय इतिहास क्य परि

साधुओं नो सन्या सहररोंने थी अत मयूर पीपण एप स्यूरिपच्छी निर्माण-का व्यवसाय पर्याप्त महत्त्वपूर्ण था। घूमते घूमते घाणक्य एक दिन इसी गाँवमें पहुँचा और गाँवने मोरियवजी मुस्तियाके घर ठहा। मुन्तियाकी पुत्रो गभपती थी और उस उमी समय चाद्रपान करनका विचित्र दोतला उत्पन्न हुआ था। किंतु चाणक्यने इस रार्तपर कि उत्पन्न होनेवाले जिल्पार उसका स्वयका अधिकार रहेगा युक्तिसे वह दोहला धान्त कर दिया। तदन तर यह बहाँसे चल दिया। कुछ हो मास उपरान्त उम लडकीने एक मुन्दर तेजस्यी पुत्रको जाम दिया और उस दोहलेके आधारमे उसका नाम चाद्रगुष्त रक्षा गया तथा परिक्राजक चाणक्यमे को गयो प्रतिज्ञांके अनुसार उसे परिक्राजकका ही पुत्र कहा जाने लगा। नाय द्वारा चाणक्यका अपमान और चाद्रगुष्तका जन्म आदि उपरीक्ष्त घटनाएँ ई० पू० ३४५ को लगमग हुई।

विद्याल साम्राज्यके अधिपति पराक्रमी नन्दोन समृत नाग करना कोई हैंसी खेल नहीं था, जाणक्य इस वातको भली प्रकार जानता था। किन्तु वह दृष्टप्रतिज्ञ भी था लत धैर्यके साथ वह अपनी सैयारीमें सलग्न हो गया। लग्ने कई वप उसने धातृविद्याकी सिद्धि एव स्वर्ण आदि धन एव प्रकारनेमें व्यतीत किये बताये जाते हैं। आठ-दम वर्ष वाद फिर वह उसी प्राममें आ निकला। ग्रामके वाहर वनमें कुछ वालक खेल रहे थे। एव तेजस्वी वालक राजा बना हुआ था और लग्य बालकों पर दासन कर रहा था। कुछ देर तक चाणक्य वालकों के इस कौतुकको देखता रहा। तदन हर उसने उस वालकसे वार्तलाप किया और उसकी सुरतबृद्धि, वोरता, साहस एव तेजस्विताका दखकर वहा प्रसन्न हुआ। यह सामृद्रिक धास्त्रका भी ज्ञाता था और उस वालकके सामृद्रिक विद्धोंमें उसे चक्रवर्ती सन्नादके सब लक्षण दीख पढ़े। पूछताछ करनेपर माल्म हुआ कि यह बही बालक है जिसकी मालाका दोहला उसने स्वयं धान्त किया था। लस्तु वह उस बालकको साथ लेकर वल

श्रामुत्रीने यह मॉक्क्यपानी की कि लग बहु बातफ रचर्च हो रामा न हो क्षेत्रा दिला किया सम्बद्धानिक अवक्षत्रहे राज्य करेगा । यह प्राप्त होनेपर स्टादिमा सचा अनके निषश्यती स्थानीय रहनेपाने मापानीके मिनर पायकाने भीतह विद्यास्थायां (क्यू अप व्युतानुगीत वर्धन स्थाप पुराय, पर्वशास्त्र) की विका आका की और क्यो विधानों क्ष श्रामधार्वे यह पार्रपण हो नवा। यक्षोत्रति श्रामक एक स्थाना कृष्य छेके साम सम्बन्ध निरात हुना और नह शासनीनित शिसक्षतृतिसे संस्थिति बाम मोदन माठीए बरने बना एक बार बन्दनी एती मन्त्री भारि विषक्षये गार्थे वर्ग । बार्र करकी विश्ववाद्या बार्गने बसाब किय नियमें यह बतो दल्ती हुई । जायपरको यह शह बाद बातन हुई ही मुं क्वीराजनके लिए करके जिंकत परा - बहाराज क्वीवेनिये बहारयान्य विक्रमोरा बडा बाहर करता है और इन्हें कुछक बातारिके कन्तुह करता है मद बार क्यांत्रहित को । यह जानकर बार्टीक्यूच प्रदेश । यहाँ क्यांने ग्रावकाके क्ष्मरत चरित्रतीतो पात्काको बराबिट करके बंगवासक (रामपिशायके सम्बद्धः) का पत बाग्त कर किया । किन्तु बंबकी कुणपान विवासी बहुदि एवं बढ्ढ स्वयान्त्र शास्त्र क्रयात्र विद्वार दिस्तरूप मगरधान करनाम कड़के रह ही बच्च और बचने पानकरण मगरान रिया। प्रमानका पायकारे मुद्र होकर वर्ग्यत रहतो सहस ग्रह कारोकी सीयम प्रतिकान्धि । अस्ते कम्बद्धमवर्षे बानुशी-द्वारा की वसी मरिक्यमानीका रमरथ करके परिकाशको बंदमें वह एक देवे व्यक्तिकी धीनमें निकस पार की पाता होनेके क्षत्रकृत हो ।

 मूखे है, उसने सीमा प्रान्तोको हस्तगत किये विना ही एकदम साम्राज्यके केन्द्रपर घावा बोलकर भारी भूल की है। चाणक्यको अपनी भूल मालूम हो गयी और उन दोनोने अब नवीन उत्साह एव नौशलसे तैयारी प्रारम्भ कर दी। विच्यअटवीमें पूर्वसचित किये हुए विपुल धनकी सहायतामे चन्होने सुदुढ एव विशाल सैन्यमग्रह करना शुरू किया और परिचमोत्तर प्रदेशके यवन, काम्बोज, पारसोक, खस, पुलात, शबर आदि म्लेच्छ जातिया-की एक वलवान सेना तैयार की । वाह्नोक उनके अधीन थे ही । पजाबके मल्लि या मालव गणतन्त्रको भी उन्होंने अपना सहायक बनाया और हिम-वतकृट अर्थात् गोकर्ण (नैपाल) के किरात्तवशके ग्यारहवें राजा पचम उपनाम पर्वत या पर्वतेश्वरको विजित साम्राज्यका आधा भाग दे देनेका लोभ देकर अपना सहयोगी वनाया, और फिर मगय साम्राज्यके छीमावर्ती प्रदेशोको जीतना शुरू किया। एकके पश्चात् एक नगर, ग्राम, दुर्ग और गढ़ छछ-बल कौशलस जैसे भी वना अपने हाथमें करते चले गये। विजित प्रदेशाको सुसंगठित एव अनुशासित करते हुए तथा अपनी शक्तिमें उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए वे राजधानी तक पहुँच गये और उन्होंने उसका घेरा डाल दिया।

पर्वतकी दुस्साहश्वपूर्ण वर्वर युद्धिप्रयता, चद्रगुप्तकी अद्भुत सैन्यसचालन शक्ति एव रणकौशल और चाणक्यकी कूटनीति—तीनोंका सयोग
था। पाटिलिपुत्रपर भीपण आक्रमण हुए तथा उसके अन्दर फूट और
पद्यन्त्र रचाये गये। नन्द भी वीरतासे लहे, धननन्द आदि समस्त नन्दकुमार लहते-लडते बीरगितको प्राप्त हुए। अन्तत वृद्ध राजा महापद्यने
भी कोई आशा न देखकर धर्मद्वार नामक प्रमुख नगरद्वारके निकट हिषयाग
हाल दिये और आत्मसमर्थण कर दिया। उसने चाणक्यको धर्मकी दुहाई
देकर सुरक्षित चला जानेको याधना को। चाणक्यको अभीए सिद्धि हो
चुकी थी, अतएव उसने नन्दराजको सपरिवार नगर एव राज्यका त्याग
करके अन्यत्र चले जानेको उदारतापूर्वक अनुमित्त दे ही और यह भी कह

ert i wi au eren une ub feffere meremin femil Cimiti-की रागरे पत्र बणन विचा थी । वनके विष् अपूत्र ने नात्रवा बुदव वारी में mit-nit mer fer i f. g. gan d femer au iemmen gat i ntrapfort febul un in nam co mirrent merrt burtt greet eine taut i feit fein edit femigent mi -bid बर्जनारित हुमा अन्न बन्द सिन्द चाजुन्त है जनार ही दि तर gerfangt blies mife Arzeienen fie grantumer miet बारण सनुबर का १ वर्ग । बाहर । बुलती बिवार बहुता । कुमारी होने दे बहुत बनो के के वह बताहरू बन्नक ब्रान्क किया की किन् प्रमुक्त । भीवतान प्रकृत होतर दिवस्तर्थ क्षेत्र मन वर दिया बीर का क्षा है। का कारणाने बाबीय बानकारी क्षान की बीर निकलाई मारत्य बाहर निया है हो पशायके बाहुहियोची प्रवासकर मुख्येनी बनार्क रिक्स दिस्त कर रेका । इन प्रकार अपने बहुन-या प्रदेश नुवानियाँ बाजिएलके स्था प कर किया बीर है वु ११६ के कनवर पामराके शिरदानमें ब्रांना एक क्रोडा-मा धान मनवदाचारको बीमानर स्वारित बर दिया

है । १ व सनवार करानुष्ण कोर पाएसको हुए कारी-वी केयते बात कर्यकेस सामित्रमुं रहीक्या राजनोरार सामान्य कर रिया हिन्दु पायमार्थ कुरनीयांके सामान्य को सम्बन्धी समेत्र कीन यांनाके काणून व बुध सामान्य हिन्दा को सार के नाही नाहित सम्बन्धा करें व समान्य हिन्दा होता को सार के नाही नाहित सम्बन्धा करें व समान्य हिन्दा होता थी सार प्रवेष नाहित रही होते प्रवेष नाहित्स की होता था वह समान्य सामान्य के सार पारमुख पूर्ण नाहित्स में होता था वह समान्य की हात्स होता पारमुख सामान्य का सामान्य सामान्य का सामान्य की हात्स होता होता होता होता है। मूख है, उसने सीमा प्रात्तोको हस्तगत किये विना ही एकदम साम्राज्यक केन्द्रपर घावा बीलकर भारी भूल की है। चाणनयको अपनी भूल मालूग हो गयो और उन दानाने अब नवीन उत्पाह एव कौशलसे तैयारी प्रारम्भ कर दी। विक्वयञ्चटवीमें पूर्वमचित किये हुए विपुल धनकी सहायतासे उन्हाते सुदढ एप विवाल सैन्यसग्रह करना शुरू किया और परिचमोत्तर प्रदेशके यवन, काम्बोज, पारसोक, लस, पुलात, शबर आदि म्लेच्छ जातियो-की एक वसवान सेना तैयार की । बाह्नोक उनके अधीन ये ही । पजाबके मिल्ल या मालब गणतन्त्रको भी उन्हाने अपना सहायक बनाया और हिम-वतकृट अर्थात् गोकर्ण (नैपाल) के किरातवशके ग्यारहवें राजा पचम उपनाम पर्वत या पर्वतेस्वरको विनित साम्राज्यका आधा भाग द देनेका लोभ देकर अपना महयोगी बनाया, और फिर मगय साम्राज्यके शीमावर्ती प्रदेशाको जीतना शुरू किया। एकके पश्चात् एक नगर, ग्राम, दुग और गढ छल बल कौशलसे जैसे भी बना अपने हायमें करते चले गये। विजित प्रदेशोंको सूसगठित एव अनुशासित करते हुए तथा अपनी शक्तिमें उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए वे राजधानो तक पहुँच गये और उन्होंने उसका घेरा द्वाल दिया।

पर्वतकी दुस्साहसपूर्ण बर्बर युद्धित्रयता, च द्रगुप्तकी अद्भुत सै य-संवालन शक्ति एव रणकीशल और चाणक्यकी कूटनीति—तीनोंका सयोग या। पाटलिपुत्रपर भीषण आक्रमण हुए तथा उसके अन्दर फूट और पड्यात्र रचाये गये। नन्द भी वीरतासे लहे, चननाद आदि समस्त नन्द-कुमार लडते-लडते वीरगतिको प्राप्त हुए। अन्तत वृद्ध राजा महापद्यने भी कोई आशा न देखकर धर्मद्वार नामक प्रमुख नगरदारके निकट हथियार डाल दिये और आत्मसमर्थण कर दिया। उसने चाणक्यको धमको दुहाई देकर सुरक्षित चला जानेकी याचना को। चाणक्यको अभीष्ट सिद्धि हो चुकी थी, अतएय उसने नन्दराजको सपरिवार नगर एवं राज्यका त्याग करके अन्यत्र चले जानेकी उदारतापूर्वक अनुमति दे दी धौर यह भी कह ियाँ विश्वन तार पर्य विश्वन चर यह के जा तर वह ती कि उसी ।
कोर परे नार हो यह रोगा। त्या एक पूर्वि कार पूछ ना वेडर
कोर परे नार हा नारपा के साथ दिया। जो हुए प्राप्ति नारम्य
पूरा नारपाम पूरवाने दिवसी बसू नीमके साथ पीर क्षाप्ति
पूरा नारपाम पूरवाने दिवसी बसू नीमके साथ पीर क्षाप्ति
पूरा नारपा वा देशा हो बस्त पूर्वि हो वनर मोदीन हो गयी। प्रार्थ
पार्वि पार्मि कार्यो व्याव हो । इस नीमकि दिवसी कार्य परे
पार्वि कार्यो क्षा व्याव करवेशी अमुशि है दी। मुझा निक्ते
पार्वि कार्यो क्षाप्ति कार्या कार्यो हो । विस्तु इस पर्य करवे कार्य
पार्वि कार्यो कार्यो कार्यो कार्यो हो । विस्तु इस पर्य कार्य कार्य
पार्वि हो नार्यो कार्यो कार्यो हा । विस्तु इस पर्व कार्य कार्य
पार्वि हो निष्कि कार्यो कार्यो हा । विस्तु हो पहु कार्य कार्य
कार्य हो नार्यो कार्यो कार्यो हा । विस्तु हो पहु कार्य कार्य

डप-राजधानो बनाया । ई० प० ३१७ में मगदमें नन्दोका पतन हानेपर भी उज्जैतोमें नन्दांके कुछ बदाज गा सम्बाधी म्यतात्र यने रहे प्रता होते हैं। यही बारण है कि कुछ जैन अनुश्रुनियों में नादयाका जात म० स० २१० (ई० पू० ३१७) में और कुछमें म० स० २१५ (ई० प० ३१२) में कपन किया गया है।

उउनैनीको अधिकारमें करनेके उपराच उसने दक्षिण देशकी दिश्विजय करनेके लिए यात्रा को । सुराष्ट्रके मार्गसे उसने महाराष्ट्रमें प्रयेश किया। गुराष्ट्रमें गिरिनगरके नेमिनायकी यादना की और उद्य पवतकी तलहटोमें सुदर्शन चील नामक विशाल सरीवरका निर्माण अपने राज्यपाल वैदय पश्यगुज्नकी देश-रेजमे कराया। इसीके तटपर निर्याय मुनियांके निवासके लिए चन्द्रगुका आदि गुफाएँ बनवायीं । महाराष्ट्र नामण पर्णाटम तथा तमिल देश पर्या प्राप समस्त दक्षिण भारतपर उसन अपना आधिपत्य स्थापित किया। प्राचीन तमिल माहिस्य, अनुश्रुतियो एय कतिपय शिनालेगोसे मीर्योका दक्षिण देशपर अधिकार होना पाया जाता है। दक्षिणकी इस विजयमें एक और मी प्रेरव कारण या। चन्द्रगुप्तका पितृतुत्र मोरिय आयार्य भद्रवाह श्रुतिनेत्रलोका भक्त था । हादशक्षपीय दुभिक्षक मनय इन आचार्यके समध दक्षिण देशको बिहार कर जानेपर भी वे लोग उन्ही हो परम्पराने अनुवायी रहे और मगघमें रह जानेवाले साधुकी तथा उनकी परम्पराको उन्होने मान्य नहीं किया । भद्रवाहकी दिएय-परम्परमे जा आवार्य इम वीधमें हुए वे दक्षिण देशमें हो रहे अस उनमे उत्तर भारता निवासियोका कोई सम्पर्क नहीं हुआ परन्तु वे, यथा चाद्रगुप्त, चाणक्य आदि, अपने आपक्षे अाचार्य भद्रवाहुका ही अनुयायी कहते एव मानते रहे । अत्रव्य अपने परम्परागुरु आचाय भद्रवाहुने कर्णाटक देशके जिस कटवप्र या कुमारी पवतपर तपस्या को थी और समाधिमरणपूर्वक कारोर त्याग किया था तीयरपमें उसका वन्दना करना तथा उनकी शिष्य परम्पराके मुनियोसे

सारे करों न मान्यर 1 हिंगा वाचेंगे जा दोन व्हें नहीं करों करा है."

करना सम्मार रूपका विकास वाचेंग स्थान कर यह यह यह स्थितकों में कि लग्न देवार को स्थान कर यह यह यह स्थान के स्थान कर यह स्थान के स्थान कर यह स्थान के स्थान कर यह स्थान

बर्दमान हेश और क्यो कृत्या माँगो शरूरण बरण में नेहे बार में में स्थानों प्रान्त प्राप्त देगा है मोट होते हैं। सामना माँगों प्राप्तवात्रका का माँत प्राप्तवात बारा बरा प्राप्त कृतनी कहान विवाह निकास मानदर मानदर मानदर न अफ़ग़ानिस्तान और कन्दहारको भी खाली करके मीर्य सम्राट्वो समर्पण कर दिया। जो चार प्रान्त सिल्युकसने च द्रगुप्तको इस प्रकार दिये उनके नाम परोपिनसङाइ, अरिया, अर्खोधिया और गदरोधिया (कावुल, हिरात, कन्दहार और बल्विन्तान) थे। इसके अतिरिक्षन कम्बोज (वदर्शों) और पामीर भी मीय सम्राट्के अधीन हुए। सिल्युक्सने अपनी पुत्रो हेलेनका विवाह भी मौर्य नरेसके (या उसके युवराजके साथ) कर दिया। चन्द्रगुप्तने भी मैत्रीके चिह्न स्वरूप उसे पाँच सौ हाथी भेंट किये। इम प्रकार अपनी बीरता और पराक्रमसे चन्द्रगुप्तने अपनी स्वभावसिद्ध प्राकृतिक सीमाओंसे वद्ध प्राय सम्पूर्ण भाग्तपर अपना एकच्छत्र आधिपरय स्थापित कर लिया। इतनी पूर्णताके साथ समग्र भारतवर्षपर सम्भवतया आज तक अप किसी समाट्का, अँगरेजॉका भी, अधिकार नहीं हुआ।

इमी युद्धके परिणामस्वरूप मिल्युकसका मेगेस्थनीज नामक एक यूनानी राजदूत ई० पू० ३०३ में पाटलिपुत्रके दरवारमें आया, कुछ दिन यहाँ रहा और उसने राजा, उसकी दिनचर्या, राजधानी, शामनव्यवस्या, लोकदशा, रीति-रिवाबो आदिका वर्णन किया जो कि भारतके तत्कालीन इतिहासका सर्वाधिक मूल्यबान् साधन बना। दुर्भाग्यसे मेगेस्यनीजके वृत्तान्त मूलत नष्ट हो गये, विन्तु उसके दो-नीन सी वर्ष बाद जिन यूनानी इतिहासकारोने भारतके सिकन्दर सेल्युकसकालीन इतिहास छिले उन्हें वह प्राप्त थे, च होंके आधारपर और बहुधा उनके उद्धरणोसिहत ये इतिहास लिखे गमें हैं अव मेगेस्यनोजकी साक्षी बहुत-कुछ अशोमें आधुनिक इतिहासकारोकी भी प्राप्त हो गयी। मेगेस्यनीजने भारतवपके भूगोल, जातियो, प्राचीन अनुश्रुतियों, रीति-रिवाजों, जनताक उच्च चरित्र एव ईमानदारी, राजधानीकी सुन्दरता एव सुदृहता, सम्राट्के चरित्र एव दिनचर्या, उसकी न्यायप्रियता, राजनैतिक पट्ता एव शासन-क्र्यालता, विपुल चतुर्रागणी सैन्यशनित जिसमें चार लाख बीर सैनिक, नी हजार हायी तया अनेक अदत, रथ आदि थे और जिसका अनुशासन आदर्श था, प्रजाने

मानिके विकासेको सना सैयार्थन कारतीय सनुभूतियोहे चलकुछ मीर पापरान्त्राच रचापित एवं संपापित वीर्थ कालात्मको कत्तर प्राची राज्यका बहुत हुक कल हो बाता है। बनायी कल-मूख बक्तारा लीय रखना, निर्देशियोके नवनायकान्य नुवनाएँ बान्त बारता जाएन्छी व वर्षे वाजारका निकास अधिविद्याचा प्रवेशकार्य, राजास श्राप्ति हजी दार्थे-की न्यसमा थी। वेशका वेशी वर्त निवेशी व्यास्तर बहुद बहुद ना अनेक प्रकारके बच्चोय-वाने नहीं होते के और प्रकाशका बीनों ही बावन्त बन-वैत्रव प्रमाप में । निप्राधीना राज्यमें सावर था । स्वयं ब्राहाद सरकों **र**र्ग काराजींगी निम्मीनात करके वा काके नाम बाकर बाजकान नराजाई तैया था । शीरिश्यके मध्यासवर्गे कानून वारतके काले चळवारी क्षेत्रकी को परिभागा है बही बनुतके बनुत पूर्वना बन्धन सोग नीर्य बन्नाहके सबीन या । विकित अन्त और जरशन्तके वैश्वी वह स्रेव शीन विवासीमें निवर्ण था । बीचे नैरहीन बाक्यके मन्तर्वत भी क्षेत्र वा बद्द निवित्त नहस्राता ना मीर मनेक पड़ोंने विकारित वा । निराल जीता एवं दीवा मुख मारि केन मान्तिक प्रतीरोति नुका किको यो इस बसाएके शत्ता हुए हैं ।

चन्त्र पूर्व मोर्थ वर्गाचा थी था और वासुनीता विदेश स्माने बारर

नारतीय इतिहास नक रहि

परता या । जैन अनुपूर्तियोमि ब्राह्मण माहित्यकी नौति उस सृपल या सुद नही यरन् युद्ध शत्रियनुलोरपन्न फहा गया है। अत्यन्त प्राचीन निद्धान्त प्रन्य 'तिलीयपणाति'में उस उन मुकृटवढ माण्डलिक सम्राटामें व्यक्तिम कहा गया है जिहोंने जिनदीक्षा छेपर असिम जीवन जैन मृतिके स्पमें व्यतीत किया या । वह आचार्य मद्रवाहकी परम्पनमा अनुयायी या और उनका ही पदानुसरण करनेका इच्छुक था। अस ६० पू० २९८ में लगभग २५ वर्ष राज्य करनेथे उपराप्त अपने पुत्र बिद्रुमारकी राज्य दकर वह मृति हो गया और दक्षिणको और चला गया । सम्मवसमा मुराष्ट्रके गिरि-नगरकी जिस गुफामे उसने कुछ दिन निवास किया था उस च प्रगुफा कहा जाने लगा । वहाँमे यह कर्णाटक देशके श्रवणवेल्गोल स्थानमें पहुँचा । इसी म्यानपर भद्रवाह श्रुतकेवलीने दह त्याग किया था। अत इस स्थानवे एक पवतपर च द्रगुष्त मुनिने भी तपस्या की और ई० प० २९० के लगभग सल्लेखनापूर्वक देह त्याग किया । उनकी स्मृतिमे उसी समयसे बहु पवत चन्द्रगिरि नामसे प्रसिद्ध हुआ। उसके ऊपर जिस गुफा (चन्द्रगुष्व यमित) में उन्होंने समाधिमरण किया या उसमें उनके चरण चिह्न बने हए हैं। वहाँ लगभग देव सहस्र वर्ष प्राचीन वई एक शिलालेख भी अफित है जो इस सम्राट्के जीवनको उक्त महान् अन्तिम घटनाका उल्लेख करते है। इम नरेशके समयमें भारतवर्ष प्रथम बार अपनी राजनैतिक पूर्णता एव साम्राज्यिक एकताकी प्राप्त हुआ और मगद्य माम्राज्य अपने चरमोत्कर्षपर पहेंचा या।

चार्गुप्तकं परचात नन्दसुता सुप्रभासे उत्पन्न उसका पुत्र विन्दुसार अभित्रघात (यूनानी लेखकाका अभिट्रोचेटिस) सिहासनाम् हुआ । ई० पू० २९८-२७३ पयन्त लगभग २५ वर्ष उसने राज्य किया । अपने पिता और माठाके समान वह भी जैनधमीवलम्बी रहा प्रतीत होता है। यह अपने प्रतापी पिताका योग्य उत्तराधिकारी था और उसके राज्यकालमें साझाज्यका विस्तार, धांक्त, समृद्धि एय प्रसाप पूर्ववत् ही बने



पूर्व हाँ । आर । शामा पान्त्रीको उसकी एकमात्र प्रति प्राप्त हुई थो, तदुपरान्त ही विद्वानोने उसके सम्बचमें विशेष ऊहापोह प्रारम्भ को और उक्त प्रतिके आधारपर उसके मूलका समय ईसवी सन्की दूसरी-तोसरो शती निर्धारित किया। स्पष्ट है कि वह चाणक्यका मूल अर्थ-शाम्त्र न था।

लगभग ८२ वर्षकी आयुर्मे ई० पू० २९३ के लगभग महामित चाणधय-की मृत्यु हुई। बिदुसार अय स्वच्छन्द था किन्तु चन्द्रगुप्त और चाणवयके अभिभावकत्वमें जिसकी शिक्षा-दीक्षा हुई हो वह निकम्मा या अशक्त शासक नहीं हो मकता था। उसका शासनकाल शान्तिपूर्ण एव सुव्यवस्थित रहा। मध्यएशियाक भारतीय-यूनानी सम्राटोंसे भी उसके राजनैतिक आदान प्रदान हुए। मिन्न, सोरिया आदिके यूनानी नरेशोंसे उसने मैशीपूर्ण सम्ब घ रखे। सिल्युकसके उत्तराधिकारी अन्तियोकस सोतरने उसकी राजसभामें डेइभेकस नामक यूनानी राजदूत भेजा था। मिन्न देशके राजा टालेमोने भी डायनिसयो नामक दूत भेजा था। इन राजाओंने उसके साथ नानाविध उपहार एव भेंटोका भी आदान-प्रदान किया। उसने यूनानी दार्शनिकोंको भारत आनेका निमन्त्रण दिया था।

च द्रगुप्तने दक्षिणकी विजय की यी किन्तु उसे मुसगठित और स्थायी करनेका अवसर उसे नहीं मिला था। बिन्दुसारने भी दक्षिण यात्रा की। अपने कुल गुरु भद्रबाहुके ममाधिस्थान तथा अपने पिता मृनि चन्द्रगुप्तके दशन करने या सम्भव है उनकी मृत्युके उपरान्त उनकी तपोभूमि एव समाधिका दशन करनेके लिए दक्षिण देशको यात्रा करने जाना उमके व्यक्तिगत उद्देश्य थे, और विजित प्रदेशोपर भौर्य आधिपत्य स्थायो करना तथा पहली विजयसे छूट गय देशोंको भी विजय करके मागरसे सागर पर्यन्त सम्पूर्ण दिक्षणपर अधिकार करना उसके राजनैतिक लक्ष्य थे। और इन दोनोंमें हो वह सफल हुआ। मद्रवाहु एव चन्द्रगुप्तको तपोभूमि श्रवणवेल्गोलमें उसने कई एक जैन मन्दिर आदि भी निर्माण कराये बताये जाते हैं।

विस्तरी देविद्रानदार तारामध्ये अनुवारमें विन्तुनार बोध्य राज्यांकी दर्भ बन्दे निमरोत्ता बन्धेर विद्या था। बन्दव बासान्य अन्त्रे साध-वर्गद विरादण्ड था। याजवारे वरामण सक्तर प्रमान अन्तर पान्य-वर्गद विरादण को रोज्य था। वहुँ आ पान्यपण ही विश्व था। विन्तुनार बीन्धा विगोद त्वावाया विद्येष्ट हुवा। वर्ण वर्ण प्र राज्युनार वर्धोपणी वस्त्र वर्गन करने विद्यो हुवा। अस्त्री वर्ण राज्ये

विश्वादारं जरपाय बारणा वृत्र सक्ष्मेत्र प्ररिवेद्यास्तरस्य विरिवेद हुना बातृनिक प्रवेद्याणपारिक सन्तार क्यारी वनाता बारण्यांचे हैं सी रोक्टारं कर्मवहार्ग प्रमाणी है। उस भी बारण्योर के मान सार्वेद कि वह वीद्यानंता समृत्यांचे था। वीद्य साहित्य और मानुत्यान्ति स्व वाद्यो वस्तान्य्य समेर कथाई निकारी है सामान्य सिनानंत्र वादित्यांचे सार्वेद या कर्मिक्टारंत्र प्रमान बाता है। ब्रायून्य सुन्द्रीय सर्वेद प्रस्तान्त्र वार्ते या कर्मिक्टारंत्र प्रमान बाता है। ब्रायून्य सार्वेद प्रस्तान्त्र वार्ते सार्वेद सुन्द्र में सार्वेद स्वयून्य स्वयून्य स्वयून्य सार्वेद स्वयून्य सार्वेद स्वयुन्द्र स्वयुन्द्य स्वयुन्द्र स्वय स्पुस्तम्भेटल हैं और तीन गुहाभिकेट हैं। यत स्यागा मी यपों में इन विभिन्न शिलानेट कार पाश्यात्य एवं पौर्यात्य प्राच्याविशे तथा इतिहामकारोंने पहुत-मुख कहापोह किया है और उसके आधारपर सम्राट् अशोक परित्र, व्यक्तित्व, विचारों, धर्में, राज्यवाल एवं शामन व्यवस्या आदिया निर्माण और उसकी महत्ताका मूल्यारन थिया है। किन्तु इन जिलानेट में मियाय एक मास्की जिलानेट कोट कर अन्यत्र कही स्वयं अशाकका नामोन्सेख नहीं मिठता। केयस 'देवाशिय' या 'त्रियदर्शी' या 'देवानाप्रियन्य प्रियर्शीन् राजा' आदि पद ही उसके सूचक मिनते हैं। जिस शिलानेट में, सो भी वेषण एक ही बार, उसके मूल नामका उल्लेख हैं भी वह सम्बाध कारण (अशोकरसम क्य) में हैं और उसके आगे कुछ स्थान शृदित हैं जो पढ़ा नहीं जाता। ऐसे भी वर्ष विद्वान् हैं जो इन मब शिलानेट को केयल अशोक-हारा ही लिखाये गये नहीं मानते विका उनमें से कुछका श्रेय उसके उत्तराधिकारी सम्प्रतिको देते हैं।

दिलालेक्वोंसे अशाकको बोद्ध धर्ममा सर्यमहान् प्रतिपालक एवं भवत विनिन्न करनेवाली बौद्ध अनुभृतियोका भी विदेष समर्थन नहीं होता। वस्तुत शिलालेक्वोंके आधारपर अशोकके धर्मको लेकर विद्वानोंमें सर्वधिक मतभेद है। मुख विद्वानोंके अनुसार वह बौद्ध था और बौद्ध धर्मका प्रचार करनेके उद्देश्यसे ही उसने ये लेख लिखवाये थे। मुख्य अग्य विद्वानोंके अनुसार इन लेखोंके भाव और विचार बौद्धधर्मको अपेक्षा जैनधर्मके अधिक निकट हैं, उसका कुल-धर्म भी जन था अत वह भी यदि पूरे जोवन भर नहीं तो कममे कम उसके पूर्वार्थमें अवस्य जैन था। ऐसे भी विद्वान् हैं, और उन्होंनो बहुल्ता होती जाती हैं, जा यह मानते हैं कि वह न मुख्यत बौद्ध था न जैन धरन् एक नीतिपरायण महान् प्रजापालक मम्राट् था जिमने अपनी प्रजाका नैतिक उत्कर्ष करनेके हेतु अपना एक नवीन ममन्वयारमक, अमान्प्रदायिक एव ब्यावहारिक धर्म लोकके मन्मुख प्रस्तुत किया था।

रनहैं ने एर बिलानेवर्षे नीरवारे बन्तियोव दियो शिर्म (दू १११-२४) में निवृत्तपार क्षेत्र वा बिलाने क्षेत्रमें दिरोनन (ई नू १८१-२४) कार्त स्वत्योव वित्योव नव (ई रू १९५-१४८) बड्डॉव्याट बॉलामेल (ई वू १०)-११९) में ग्रीरान के निवृत्यार (ई नू १०)-१९९) मार्ड व्यवस्था हुन्या नीर्यान वार्गोच्या बिला वर्षा है बिलाने बच्चा दक्षा के बाद निरंपत की बाता है। बच्च बदेश एवर्जीयर वर्ष प्रदार्गित वर्ष एकारे स्वत्यव्यवस्था वर्ष वर्ष मोडस्था मुक्क माल्य वी १९

मापु, वरशका विवासेवायेन्य बहुबायका कर्णा बर्धायको मानी हुए जो बनते झान तपरीका चैन क्षे बीझ जनुमृतिकी तथा बार्डिक रिहासकं बगांच साथ सम्बन्ध करते हुए इस बरेकर बाजानारे की बार्फ स्यक्ष मुख्यार्थं प्रचारते सन्तरे हैं। बन्ते पक्षा चवारा है 💗 क्यारा शार्म मधील भी मधीक पण्डाकोक अधीवपण्ड सा अधीवमध्य था । रेपी-माजिप या जिम्हारी स्वाची क्यांचित्रों थीं । निम्मकार साहि जमके पूर्वजीते वमा जान की कई एक जारवीय बरेशोर्ड में बचानियां बारण की वर्षण होती है। बारी रिनारे साक्षणकालने वह करवैतीका सावक रहा का और क्ती क्रमा निकास सिरिकाफै एक जैनकर्मनुवासी धोब्धीको सन्पत्ति करने विवाह किया का जिसके पुत्राल कामध्य पुत्र करनत हुआ था। निर्द नारते अन्तिन दिल्ली संबोधने बर्धायकाने अर्थवर विद्रोदका वी व्याप किया वा और वह प्रवेदका यालक-नार वी वंजाबा वा । इन्हीं नारकी बर् विन्युनारके सुनीय जुल्म बाधि कई युनीमें स्वरंतिक शोध्य सव्य का मना भ्योप पुत्र न होते हुए भी नितान वहें हो बनराब बकान भीर बचराविषार बीचा । शिलुपारकी मृत्युके सपरान्त दम अन्य भारपनि विरोद किया विश्व अधीको बुद्धाने काम क्षमका "कर किया । असीवर्ष मोर पनठा मी तकके समुद्रक मी अक्त नहीं बाताद सम्बं। ज़िर मी बिद्यारकी मृत्यु (ई० पू० २७४-७३) मे तीन-चार वर्ष बाद ही वह अपना राज्यानिपेक करानेमें समर्थ हुआ। उसन एन विलालगर्ने २०६ सम्याका उल्लेख है जिसक विद्वानीन अनेक अर्थ किये हैं। ऐसा प्रतीत होता ही कि इस सम्या-द्वारा उसन अपने राज्यारोहणकी तिथि उस सम्यमें प्रचलित महावीर सवत्में ही है जिसके अनुमार यह ई० पू० २७१-७० में पहती है। बौद कथाओंका तो कहना है कि उसने अपने ९९ भाइयोको हत्या करके अपना चण्ड अलाक नाम सार्थक किया था और राज्य प्राप्त विया था। किन्तु यह कथन अतिदायोकित पूण हो नहीं प्राय असरव समझा जाता है। इसमें सन्दह नहीं कि प्रारम्ममें वह उस प्रकृतिका वृत्त निर्वयी एवं कठोर झायक था। अपने स्वयक्षे भाइयोका तया अन्य विराधियोका उसने दृतकासे दमन क्षिया था, किन्तु वियानत क्षत्त्रेआम नहीं।

उसने षुद्रालता थौर वठारतासे घासन किया, अपन घासनाधिनारियो एव अधीन राजाओपर पूरा नियन्त्रण रखा, किसने सिर उठाया
उसे ही बुचल दिया। किलिंग देशको विजय निर्वर्धनने ई० पू० ४२८में
को थो, सभीने यह राज्य मगधके अधीन रहता आया था, किन्तु ऐमा
प्रतान हाता है कि नन्दराज्यक्षातिके समय मगधमें आन्तरिक कलहको
दखकर विलाफ राजे स्थसन्त्र हा गय। सम्भवत चन्द्रगृत और विन्दुसारके घामनकालोंमें उन्होंने पुले रूपमें सिर नहीं उठाया, किन्तु यिन्दुसारकी मृत्युके उपरान्त होनेयाले गृह-युद्धका लाभ उठाकर उन्होंने मगधके
विकद्ध अपनी स्थतन्त्रता मुल्लम-खुल्ला घोषित कर दी। अत ई० पू०
२६२ के लगमग अपने राज्यथे ८वें वर्षमें एक मारी मेना लेकर अधीकने
किलगपर आक्रमण कर दिया। भोषण युद्ध हुआ जिसमें लाखो व्यक्ति
मृयुके घाट उत्तर गये। सर्वत्र प्रचण्ड अधीक महान्ता द्यदवा वैठ
गया, अव भवित्यमें पचासो वर्षो पर्यन्त कहीं कोई मीर्य सन्नाट्के विरुद्ध
सिर उठानेका साहस नहीं कर सकता था। किन्तु साथ ही इम भयकर

वर-संदारको देखकर वश्युक्क वैश वार्थि संस्थारिय एके प्रीप्त वयोग्गी हाला ठिल्मिक्स करो । कस्त्रे प्रतिका कर तो कि व्यक्तियों या पूर्वि एक्स्य निरा रहेया । कम्प्ये वस वार्यप्रकार तो त तो । बार्यु वार्य-वर्यपर ही मही बक्ते वाहर वीयाल प्रदेशपर यो कहका निल्मिक एकाविक्यर था।

धावन-स्वरत्या गुणाव थी. धामाण्यमें वर्षम चाल्ति और. वस्त्रि से क्षतः कर बज्राह्मे जपना ज्यान काच्यिपूर्ण कार्नोधी और विस्त । क्युन्यो बीर प्रसूजीके किए चिकिरसायन मुख्याने वृश्मे राज्यानीकी घरमार बीर नवींचा निर्माण करावा सहकोंके किनारे वृक्त करवाये, निमाने शासाएँ बनवाधी प्रत्यादि सनक स्रोकोपकारी कार्य क्यारे किने । वस्ते बनताके नैविक चरित्रको सम्रत करनेका मी त्रवल किया और वर्णे सत्तान्त्रदाविक नतोन्ति पैता करनेके किए एक ऐने राज्य-वर्धना प्र^{क्}रा किया थी। न्यान्तारिक एवं सर्वश्वाश ना । बसने बननी बीर बस्पेनी थेती हो क्योंके विद्वालीका बाबर किया काके विचार-दिवर्ष क्या बीर वनका बत्यंत किया। बताने वर्मनावासी बीर वर्मेत्सनीकी वी मीजमा की । प्राप्तकनके निवित्त स्थलनियों वसने बाधा की सीर सैंड, बीद और सम्बन्धका शाकाय परम्पराने की तोवों क्वं दर्शनीय स्वानीके देखा । विशेष कर्ता वर्ण कारावांके सम्मन्तित क्षेत्राओं, बाजने, वर्ण भीर समीका थी निरोक्तन किया । जिसमें बढ़ों थेर सुधारकी जानसम्बर्ध देशी वर्षे मेरधानास सम्बन्धानामुख्यास करावेका समस्य विमा । बीरस्म और न्यादहारिक क्षत्रिताको कर्तने वतना नृष्यक्त्य बनावा और वतने नर्वना ्रकारायें प्रचार करनेके किए प्रक्रियानांक्ष्य गीर्क स्थानी एवं केन्द्रीयें वचने किलो सर्वाचार्था विकासको एवं स्टब्जोपर सत्कोनै करवानी । वे अविकेच करने हैं पू २५५ के छपरान्त निवानिक सबनीयें किकान ने हरीय होते हैं। यस्त्रे अवस्थितीलाको प्रत्यवानके जानीयक शावजींके निय भी बचाने निकट 'बचवर' नायक पद्माविकोपर पुत्राई बनवानी में।

44

पालीय प्रतिकार : एक धी

गिरिनगरको तलहटोमें अपने जितामह गाद्रगुष्त-द्वारा घनवाये गये सुदर्शन तालका भी अपने यवन अधिकारी तुहयाम्फकी देश-रेसमें उमने जीर्णोद्धार कराया था।

ऐमा प्रतोत हाता है कि फलिंग युद्धके आग-पास अशोकने एक बौद सुन्दरीके माथ जिसका नाम सम्भवनया तिष्यरक्षिता या विदाह कर लिया या । यह स्वयं इस समय बघेट ययका या । इस बौद्ध रानीके प्रभावमें वह कुछ अधिक वाया और उसको प्रमन्न करनक लिए मन्भवत भीढ धर्ममें भी कुछ विशेष दिलचस्पी रेने लगा जिसके कारण बौद्ध लीग यह समझने लगे कि वह बीद धमका अनुयायो हा गया । सम्प्रतिकया खादि स्याओंस पता चलता है कि उसका प्रवेष्ठ पुत्र युवराज गुणाल बहुत ही सुन्दर था भीर उमरी और्ये कूगाल पद्मोके समान अत्यधिक आकषक थीं। उसकी विमाना तिष्यरक्षिता उमपर मोहित हो गयी फिन्तु राजकुमार सराचारी था अत गनी अपना कुचेष्टाआमें विफल हुई। प्रतिहिसासे दग्य रानीने पद्यत्र करके मम्रादकी मुद्रासे अकित एक आज्ञा भिजवाकर बुणालकी अन्या करवा दिया । मुणाल कुशल सगीतज्ञ भी था अत वह भिखारीके वैपमें राजधानीमें बाया और समाटके महरूके नीचे गाने लगा। गीसकी मिस उसने अपना पश्चिम और स्वमपर किये गये अत्याचारका भी सकेत किया । सम्राट्ने उसे पहचानकर तुरत बुलाया, सय हाल जानकर तिष्य-रिक्षताको जीते जी जलवा दिया, उसके साथिया एव सहयोगियोको भी कठोर दण्ड दिया, उसे स्वयं बहा पदचात्ताप हुआ और उसने कुणालके नवजात विका सम्प्रतिको अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

इसी ममयके छगभग पाट छिपुत्रमें भीग्गलायन तिस्सकी बध्यक्षतामें तीसरा बौद्ध सम्मेछन एव त्रिपिटककी सगीति हुई। मम्मेछनके नेताबोने यह निर्णय किया कि बौद्ध धर्मका प्रचार करनेके छिए बौद्ध भिक्षुओंको त्रिदेशामें जाना चाहिए। अत बर्मी, तिब्यत, मध्यएशिया, लका बादिमें बौद्ध प्रचारक गये। छका (सिह्छ) में उस समय विजयवंशी नरेश देशमादिन दिव्य राज्य करना या । यह सम्राट समीवर्ट मान मेंट आदित आराम-प्राप्त-प्राप्त वैत्री अम्बन्ध बनाये हुए मा ३ अवने अपर्यने बार्र हम बीद्ध प्रचारबॉबर जिनने नेता रुवर्ग सचारके वृत्र महेन्द्र और वृत्ती मंद्रशिक्ष चे नाइर श्वायन दिया । महेला जीर संपत्रिया नरमपाण अयोचने चनदी बीध कमीने उत्पन्न पुत्र-मुन्ता से । इसी नवपने निर्देशीने क्षेत्र वर्तरा क्ष्यार प्रापन हुता । बन्नार्की स्वर्थ इन बचार्के कार्र क्षापति ब की जन्म इयने बहाने कार्नाज शुरुप्रिका विरोधीने क्रमार होनेत्री बादमाने दमने दमने वचारात्रक शहरीन और नदावता मी है। ब्रांत होती है। जिल्लू बीड नाहित्यमें की बने यह गरा बीद चित्रित विया परा है की यन ब हारा ८४ - ल्यूच दियांन कराने वाले महिला बारत है बट बरिजयांका वर्त है । बाबावके कार तक बाद जानानात नर राज्य-पर क्या हवा था जिने चत्त करिन्त् नरेशने नांड करे दिया। नारनाथ बार्टिक बीख विशासिक चानुवाला वचने बनुवातन रिया । वे वाने बने बीड नहीं जनाती वरन बनवी वजर्राधनाकी मुख्य है। परमून अधीय बाजन्यो तीह बाजनपरिको रिलोपर निगय जैवे प्रतिहान

भार धेडांभिन्मीची कार्गिकरोंने सर्विक सहस्य यही हैं। ही अर्थास्तर मी समने देंग्यानिक वाय महिक स्वायत व्यापने हैं। जो वर्ष सार्थित स्वायत व्यापने हैं। जो वर्ष सार्थित स्वायत व्यापने हैं। जो वर्ष सार्थित स्वायत व्यापने हैं। जार अर्था में मार्थित क्षेत्र करों मार्थित कर महिला कर महिला कर में मार्थित कर मार्थि

अर्थशास्त्रमें दिये गये पिवत्र दिनो एव जैन परम्पराके पर्व दिनोंसे प्राय पूरी तरह मेल खाते हैं। शिलालेखोमें उसके द्वारा निग्रन्थों (नग्न जैन मुनियों) का विदीप रूपसे आदर करनेके उल्लेख हैं। ये उल्लेख अल्प-सल्यक इस कारणसे हैं कि उत्तर भारतके मगध आदि देशोमें इन नग्न दिगम्बर मुनियोका विहार अशोकके समयमें अपेक्षाकृत विरस था, दक्षिण देशमें उनका वाहुल्य था। मगयका जो जैन सघ इस कालमे प्रवल होता जा रहा था वह स्थूलभद्रकी परम्पराका था और खण्डवस्त्रधारी हो चला था। सामा य श्रमण शब्दसे सब प्रकारके जैन सावुऑका बोघ होता ही था। राजतरिंगणो एव आइनेअकबरीके अनुसार अशोकने कश्मीरमें जैन धर्मका प्रवेश किया था और इस कार्यमें उसने अपने पिता बिन्दुसार तथा पितामह चन्द्रगुप्तका अनुकरण किया था। कश्मीरके श्रोनगरको बमानेका श्रेय भी अशोकको ही दिया जाता है। वह र्नपाल मो गया था और वहाँ उसने ललितपट्टन नामक नगर वसाया था। उसकी पुत्री चाहमती एव जामाता देवपाल वही जाकर वम गये। कर्णाटकके श्रवणबेलगोलमें उसने जैन मन्दिरोंका निर्माण कराया बताया जाता है। इस विषयमें अनेक विद्वानोको सन्देह नहीं है कि अशोक जैनधर्मके दगामूलक उपदेशोंसे प्रभावित या। उसका कुल परम्परा धर्म जैनधर्म था ही। अपने जीवनके अन्तिम कुछ वर्षाम उसने राज्य कार्यमे विरत होकर एक त्यागी गृहस्य या यती श्रावकको भौति जीवन विताया प्रतीत होता है। इस कालमें चमकी दानशीलता अतिशयको पहुँच गयी बतायी जाती है जिसके कारण बमात्योने उसपर प्रतिवन्ध लगा दिये। राज्यकार्य कृणाल करता था। ई॰ पु॰ २३४ या २३२ में लगभग ४० वर्ष राज्य करनेके उपरान्त अशोध-की मृत्यू हुई। कुछ लोग उसकी मृत्यु तक्षशिलामें हुई बताते है।

इसमें सन्देह नहीं कि सम्राट् अशोकका स्थान विश्वके सर्वमहान् नरेशोमें हैं। उसका साम्राज्य अतिबिस्तृत एव अत्यन्त समृद्ध, उसका शासन-काल मुख एव शान्तिपूर्ण, उसका व्यक्तित्व महान् और उसकी प्रतिमा एवं प्रनार क्षर्यन्त में हे कर नकी यथीबा क्षत्र पार्थ नवाहर करना बर और एक विमान्त समाग्यानि निम्नू पर्ववान पूर्व प्रशासना बोबोहर के बोरियान करेन्द्र बात बोरिया किया मुनाय क्यों निरम बार्टर दिश्मोरर और प्रमय बार्टरी तथ मारतीय मन्दुर्गरण प्रमान पता स्थिते शनेतीने बात्रमा प्रानिक पुरन्तरामण न्यार्गत दिवा और यह मान्तीय कुम्बीका झमरार करानेवा एक वा । बोबलाड बारधवर मनद नाय सरकार की परिचयी है। व वयरिंग 📺 क्योलको करावे कररान्त प्रचया पूर पुषाय करानाम सुरम कार्याद्वा इमर्गादशारी हवा हिन्तु - केपने नीय वा बच उनहीं क्रमी क्षत्रवरदारात हत्यस प्रवत्त वर न्तर्यन शारकः विशक्ते वासवे क्षीर बालाल अस्वताल प्राप्त पूर्व लगा। बद्धाल बार्ज य व वेगीची बारती बचान राजकानी जनामा और बजोडका एक बन्द गीर बन्द्रशानिक

क्यान प्रवच्या दालक हुआ । रेना बनीन होना है कि बहु बाब बायके बिहा ही संप्रतिके अचीन का और इस अवस्य औपश्यकी दो धल्याई. क्ट को प्रकार की कार्रगीने और रूपये बनवने कुछ दूसरेन शादा रहतान शाराब हुई । एकरच आधीवक कानुकीना दिवीच जना या और उपने कारे जिह बरावर' मामन परत्यर को मचार्च बरवायी जिनमें जनके Comba Grb R मद्राप्त नाजीत प्राणाय प्रधानातिक संबन्धवं विवृत्ताचीकृते हैं व् १३१ है १६ तक संनाम ४२ वर राज्य किया। वह अर्थ लियाबह भयोप है समान हों एक बहुल, प्रमानन्त्रम वान्तिहित एवं बनावी नवाद या । वैनम्परी

सरवर्तिने एक बाउम जैन नरेशांची भौति सोचन कालीन विचा । वैर स्वर्णी हुन बालाने भी कर वनवरा गाँगरहाल करके स्थानियों बरका प्रयान है हु क्समा । संप्रतिने वैश वर्षशी प्रवास्था एवं प्रचारके लिए सब - इ.स्न रिया । बौद्धकरभूतिमें श्रीद्धकर्मके किन् अधीर ने जो पुत्र दिया बताना बाचा भारतीय इतिहास वस दक्ति

٠

मानवी पारराचे मैठा बाचार्व मुहारत सबसे वर्तन्त में १ उनके प्रचीतने

है जैन अनुश्रुतिके अनुसार मम्प्रितिने जैन धर्मके लिए उसमे गुछ अधिक हो विया बताया जाता है। अनेक तीथोंको बन्दना, जीणोंद्वार, अनिगतत नवीन जिनमन्दिरो एव मूर्तियोंका विभिन्न स्थानोमें निर्माण तथा प्रतिष्ठा, विद्योंमें जैन धर्मक प्रचारके लिए प्रधारय भेजना, धर्मोत्मवीका मनाना, साम्राज्य-मरमें अस्सा प्रधान जैनाधारका प्रसार परना इत्यादि अनेक कार्योक्ता थ्रेय इम सम्राट्यो दिया जाता है। विन्सेण्ट स्मियव अनुसार उसने अरब और ईरानमें भी जैन मस्कृतिके ने इ स्थापित किये थे। प्रो० जयध द विद्यालकारके अनुसार "चाहे च द्रगुष्तके चाहे सम्प्रतिके ममयमें जैन धर्मकी वृत्तियाद तिमल मारतके नये राज्योमें भी जा जमी, इसमें सन्देह नही। उत्तर पित्वमके अनार्य देशामें भी मम्प्रतिके समयमें जैन प्रचारक भेजे गये और वहाँ जैन साधुओंके लिए अनेक विहार स्थापित किये गये। अशोक और सम्प्रति दोनोंके पायसे मारतीय सस्कृति एक विद्य सस्कृति बन गयी और आर्यवर्तका प्रमाव भारतकी सीमायांके बाहर सक पहुँच गया।

अयोककी ठरह उसके इस पोतेने भा अनेक इमारतें बनवायों। राज-पूतानेकी कई जैन कलाकृतियां उसके समयको कही जाती हैं। जैन लेखकों-क अनुसार सम्प्रति समूचे भारतका स्थामो था। कई विद्वानोका यह भी मत है कि अशोकके नामसे प्रचिलत शिलालेखोनें-से अनेक सम्प्रति-दारा उत्कीण कराये गये हो सकते हैं। अशोकको अपने इस पौत्रसे अरयिक स्नेह था, इसी कारण उसने इसे अपना उत्तराधिकारों भी बनाया था। उनका कहना है कि अशोकको उपाधि देवानाप्रिय थी और सम्प्रतिको वह प्रयद्यान कहना था अत जिन शिलालेखामें देवाना प्रयस्य प्रयद्यान राजा'-द्वारा उनके लिखाये जानेका उल्लेख हैं वे सम्भवतया सम्प्रतिके हैं, विशेषकर उनमें-से भो वे शिलालेख जिनमें जोवहिसा निपध एव धर्मोत्सवा आदिका वणन है।

जैन साहित्य, विशेषकर स्वेताम्बर परम्नराके ग्राचों यथा परिशिष्टपर्व, सम्प्रतिकथा, आदिमें सम्राट् सम्प्रतिके विषयमें बहुत-कुछ लिखा मिलता

है । इन नरेशके कई श्रामिनी जीर पुत्र-पृष्टियों भी । बीह बनुप्रियोंन मी टब बरेक्टर क्रफेल जिल्हा है। जिल्हा शामी शामी प्रचलित विन्ध-केमोर्ड बाजारपर यनके कनी गरेगके बाद्य वर्गसामक मर्थोच्य बादबॉके अनुनार इत नदानारन्त्र राज्य स्वारिक करनके प्रयत्वेके किए वन रावाची गुजमा बीरश्य नर्याच्य गिनारणा ताला दवराद्रचढ नम्राट् बाउर on नकेनलन को बानों हैं। विजयमधी बन प्रशासका प्रशास प्रशास केनके किए जा बने एक स्थानीय बनकी स्थितिये फटाकर विश्ववर्ध बतनेने महाबच्च हो चनपा नृषता रंगाई नगरे सिद्ध विने वद शक्काट् कामटेक्टाइन-के इसलीम हो जाती है। बाजी वार्धविकता वर्ष परिच दिचारीके मिन् ब्रह रोजन समाद भारकम वारीनवनका व्यवस विकास है, जनमें शाहारा किन्तार एवं बानन प्रवासीय यह यार्चनेत सहानुकै समस्या है। बनसी कोबी नरस पुनरावृत्तियाने वृत्ते प्रस्तराहित अवस्थियाँ ब्राज्येकरी मैना अनित होती है। जनेक गांतान यह खारीका उनर जोर नुसन क्रमाद बाधवरके मनाम का । निवयके नवच्छाचीन ब्रह्मा वरिश्राच्छे बोहिनों हम प्रकार गरिगांगत यह भारतीय समार आहे वह सबीच हो या वस्त्रीत क्षवदा शहा-रोते दोनों ही नवान करन हो। भारतीय हरिस्टाहर्फ बीरव हैं और चंदेने ।

करनम् भी का वर्गमे मनगम् राज्य किया । वर्गमं वर्षके वीर्यास्य काममो भी वर्षणो मैकागाल्याने ही हाराज्य हैं। बदा वा वर्षके कर स्वीतिक सिना कर्गानी वर्षके पुत्रपाने हाक्त्याल वह राज्यनाव कर स्वाय नीमामेन वर विद्या खाते ही वर्षका राज्याल ५ वर्षके समय होता है भी वैन मानुसन्ति वर्षास्य है। तेम्बरी रिनाइकरर सारामां कर्षणा राज्यान ५० वर्षका है। मार्टिने कराज्य वर्षका वृत्य वार्षिक्य वर्षकीयेने विद्यादवार

है वृ १९ के सम्बद्ध ६ वयती बायुने सम्प्रतिकी मृत्यु हुई।

बैद्ध । यह यो मक्ते क्लि एवं मन्त्र पूर्वजेती शांति वैव - वर्मता अनुवादी

या। इसने भी दूर-दूर तक जैन धर्मका प्रचार किया बताया जाता है। इसने अल्पकाल हो राज्य किया। इसके खपरान्त यूपमेन, पुण्यधमम् आदि कुछ अन्य राजे हए और उज्जैनीमें १४८ यपके खपरान्त ई० पू० १६४ में मीर्य बदाका अन्त हो गया।

मगधमें दशरयके पश्चात् देववमन्, मनधनुष और वृद्रद्रध आदि राजे हुए । इनमें-से एक-आध राजा प्रजापीडक भी था। अतिम नरेश बुद्रुद्रथकी . इसके ब्राह्मण मन्त्री पुष्यमित्र शूगने घीखेने हत्या करके गज्यसिहासन-पर अपना अधिकार कर लिया, और इस प्रकार मगवमें लगभग १३७ या १३३ वर्ष बाद ई० पू० १८४में मौर्य वशका अन्त हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्प्रतिके घामन कालमें ही ई० पू० २०४के लगभग मौर्य माछाज्यकी एकता भग होने लगी यो और कममे कम वे प्रदश जिनपर मौर्यवशके ही राजपुरुप प्राातीय शासक ये स्वताव हान लगे थे। यही कारण है कि कुछ जैन अनुवित्यामें मौर्यवशका काल १०८ वप भी दिया है। करमीरमें सम्प्रतिका भाई या चाचा जालक (जलोक) स्वतन्त्र हुआ, कुछके अनुसार वह जैनी या और यूष्टके अनुमार धैत । उसने म्लेच्छाके, जो सम्भवतया यूनानी थे, आक्रमणमे देशको मुनत किया बताया जाता है। कान्यपुटज पर्यन्त उमने अपने राज्यका विस्तार कर लिया था। गान्धारपर वीरसेनका राज्य था जिमका उत्तराधिकारी सुभगमेन था। इसने यूनानी नरेश अन्तियोक महान्के साथ प्यवर्ती मीर्यों की भौति मैत्री सम्बाय स्यापित किये थे। यनानी युवाडेमस और उसके उत्तराधिकारियाने इस शास्त्राका अति किया। ... कुछ छोटे-छोटे मौय राजे मगम, पदिचमी माग्त, राजस्यान, खानदेश. -कावण आदिके ब्रुष्ठ भागोमें बहुत पीछे तक राज्य करते रहे। कलिंगमें चैत्र या चेदिवणका उदय हो चुका था। दूसरी वाती ई० पू० के पूर्वायम कॉलग चक्रवर्ती सम्राट् मारवेलके कालने उसका चरमोत्कर्प हुआ। दक्षिणमें आ प्रविनका उत्थान हुआ। इस प्रकार मौर्य वदाके साथ-हो-साथ मगध साम्राज्यका भी अवसान हो गया ।

बरुपरे हैं यू १८४ तक अववय ११३ वर्ष वर्षेण मंत्र पेयारी क्षांकर मा कि इ कार्रेक्टर प्रवृक्त अधिकार है वू १६४ में उट सब सम्बद र बा परन्ता हो एहा इस बंधवा है बहुत पूर्ण कर कहर शासकता करने बीडा का र लक्ष्मीत कहे अन्यापार दिये वरूचे मार्ने है । रांबर न हर्माननमन्त्रवद्यार अव वा सहनाय है । वर्गरांब क्षीर प्रारा बार्डि । बाहार देवील अध्यास्त्र है जागाएव हो उचना दुवी बाब-में तकाई बाधाय हो। बाम्मा शावाच्यका प्रशासाल का बहा निर्मान रित किया बारा है। इना कायब दिन और विव्युक्त करा तथा वीराविद erme an feurem neum un's eine fie en abuf unebene श्री दिना बनावर माश्रा है विस्तु वह अवने विश्वत बारण हथा इस रिकास मामेर हे. एक का स्थापन (मन्त्र है. प. १.) के पूर त्तव क्रमार्गिकारी वरानी । गा शिक्षिक मार्था पर कार क्या किया और माध्यांत्रका सर्व बावण वर्तमा ब्रदेशको शीह हत्या । दूसरी मीर वृश्यि अरेख ब्यारवेलन सम्बन्ध आज्ञायम दिवा । यह श्रेष वृश्यिके देव

िरेष्ट्र सरव गा. पनता लायनेय जरना थी उपे लाग्न मा । सप्त आरक्षेत्रने समय गरेयको पराधित दिया और यन व्यक्तिको निक्क सरके बहान ब्रारिशियको जिन प्रतिकाकी कार्याकृत में ब्राप्त कर वर्षे नारन के बचा - बबने बनानी शिवर । वो बसे तरह बस्तवित विद्या और बहे mubult feere aure fem i armung ga nurfe uren b कार्रे निवद विविधास संग संख्या व साम्बा क्यापित हो सर्था । बृह्त्परितिक (दे प् १६४-१६) अपनी-शिवदेयका प्रत नंबया अपन धानक को । यनके कररान्त धनांकच वा वनुष्टिच और वानुविचने ६। यह (ई q tte- c) वर्णन कहाँ राज्य शिष्य । वे नरेथ ब्राह्मण थमके ही मनुराधी वर्ष गीवर में । दिन्तु जरतेनी बालाके धावक मैन बनदे प्रति बहिरद ही रहे प्रतीत होने हैं।

क्ष्मपर्ते मी ई. पू. ७३-७३ के सरवन शन्तिन गुंव वरेयके लाहाय ٠. बारतीय प्रविद्धान : २६ रहि मन्त्री वसुरेव कन्वने अपने स्वामीका वध करके राज्य हस्तगत कर लिया। ४५ वर्ष तक (ई० पू० २८ तक) कण्य वशका मगवपर अधिकार रहा। ये एक गौण स्थितिके राजे रहे।

शुग वशर्मे दस और कण्य वशर्मे चार राजे हुए बताये जाते हैं। अपने मालविकाग्निमित्र नाटकमें महाकवि कालिदासने शुगवशी विग्निमत्र-को अमर बना दिया है। शुग-कण्यकालमें मगब हतप्रभ या और विदेशी यूनानी, पह्लव, शक आदिको भारतमें राज्य स्थापन करनेका अवसर मिल गया । डेढ सौ वर्षके इस युगकी सबसे वडी देन यही हैं कि वर्तमान हिन्दूघर्मकी रूप-रेखा इसी कालमें वनी, मनुस्मृति, रामायण, महामारस तथा पुराणोका सकलन प्रारम्म हुआ और हिन्दुओंकी धार्मिक अनुभूति एव प्राचीन रचनाएँ लिपिवद्ध होने सगीं तथा नवीन साहित्य रचा जाने लगा। श्रमण सस्कृति तथा उसके जैन, बौद्धादि घमौंके साथ समन्वर करके हिन्दूधर्म एक नवीन रूपमें उदय हुआ। देवी-देवताओकी मिक एव उपासना, मृतिपूजा, जीव दया आदि इसके प्रधान अग थे। मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्रोंके द्वारा सामाजिक जीवनका नियमन करना भी इस युगं ब्राह्मण सुवारकोने आरम्भ किया। **इ**स ब्राह्मण पुनरु**द्धार आ**न्दोलनः परिणाम-स्वरूप मगघ एव मध्यदेशमें बौद्ध और जैनधर्म भी धिनतही एव अवनत होते चले गये। जैनधर्मके तो सुदृढ केन्द्र कर्णाटक, मध्यमारत सौराष्ट्र, कॉलग, मयुरा मादिमें स्यापित हो चुके ये और वह वहाँ फलत फुनता सप्राण बना रहा, किन्तु बौद्ध धर्मको विदेशोका तथा यवन, शब क्पाण, हण आदि विदेशी शासकों और उनके द्वारा घासित प्रदेशोंका प्रधान साम्रय रह गया।

अष्याय ४

प्राचीन प्रग-हतीय पाइ

शीर्व कामान्यके पायके ताकनी-मान, विदेशकर शुंक-काम मुख्यें होत्र

वक्तर सारत (ई पूर्व ०-ई सन्द्\$००)

बाह्यरार ब्रोलियो एक बाद करायें बादी बचा पूर्व-रक्षिपने कॉक्सका चैन (चिति) बंब क्लारी चींबचारवर्षे बाल्यसातिका बातवाहर बंध और बतार परियममें बारत, एक पहुरा पुताब बादि विवेदी व्यक्तियों । इनके अखिरिता मुरूर इजियाँ कील नायक, बेरल बारायुद लाहि बीडे-बीडे राज्य बे और वर्षी बाटा दर्व मध्योतने तेन, बन्द वंदवि कर्तिरस्त दस बन्द क्रेडि-क्रेडि पास तथा रण्डल मैं ३ वे वच्छन वीचेन, बर्जुधारतः क्युम्बर, पुरात पुरित्य जाति में । चंजाय-क्रियके अविद्य माध्य वर्ष मापेरमय रहति रिस्पारित होतर पातन्यवती और पक्षे धाने में । बाधव धीर दी दोन्न ही चन्तवनों की गाने बहतर नव्यवादको सार्वनी प्रदेशों वस बंदे और श्राम्यका वह प्रवेच आक्रमा क्रुबाने बन्दा । बारोज्यको धारमेजिक योग्त होन हो नहीं और इसके ब्रास्य अविवाद स्थाप एवं बरवदापीने बेनल होते शक्ते वये । क्षरीका तीन बाबास्य वर्षकारीवैनी अधिको चैच पेपका करने

शरूर्य जैन बचार स्वापेषसञ्जन बारनेक्के बनावें हैं व २ ०-१५ के क्याबर रहा। प्रक्रियकी करप्रीरीर-क्षण्यदेवीर प्राधीकीं रर हाप्येप्रस्था बार्टर-

आन्ध्र-सातवाहन-रूपरी शनित आध्र जातिके सातवाहन वशको पी । आप्नोंका सर्वप्रथम उल्लेख ऐतरेय बाह्यणमें मिलता है । यहाँ इनकी गणना पुण्ड, शबर, पुलिन्द, मुतिब आदि जाति बाध्य नीच व्यक्तियों या दस्यवोमें को गयी है और इन्हें अनाय कहा गया है। कि तू प्रथम शती ई॰ का रोमन इतिहासकार प्लिनि आन्धोंका एक शवितशाली जातिके रूपमे उल्लेख करता है जिसका यिस्तृत साम्राज्य दक्षिणापदपर या और जिसके पास एक लाख पैदन दो हजार अध्वारोही और एक हजार हामियोकी भारी सेना थी। प्रतिष्ठानपुर या पैठन इनकी राजधानी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि शुगकालके प्रारम्भमें ही प्रियदर्शकि शिलालेखोंमें उत्लिखित दक्षिण देशवासी भीजक, पैठिनिक, रिट्टक, पुलन्दि आदि जातियाँ आध्र जातिके सातवाहुन कुलको अधीनतामें सगठित हो गयी थीं । ये साठवाहन ब्राह्मण एव नाग रक्तिमश्रणसे उत्पन्न हुए ये यद्यपि वे अपने-आपको याह्मण ही कहते थे और अपने शिए 'एक ब्राह्मण', 'खत्तियदपमानमदन' आदि विशेषण प्रयुवन करते थे। मत्स्यपुराणमें इस कुलमें ३० राजा हुए बताये हैं जिन्होंने ४६० वर्ष राज्य किया। अन्य पुराणोमें १७, १८ या १९ राजा तथा जनका राज्यकाल ३०० वर्ष बताया है। विमुक इस वशका प्रयम राजा बताया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि तीसरी शती ई॰ पु॰ के अन्तके लगभग सिमुकने पैठनमें अपना राज्य स्थापित कर लिया या। सम्प्रतिकी मृत्युके उपरान्त इस राज्यकी शवित बढने लगी। जैन अनुश्रुतिके अनुसार सिमुकने २३ वर्ष राज्य किया कि तु अपने अतिम वर्षों वह दूष्ट और दुराचारी हो गया था जिसके कारण उसे गद्दींसे उतारकर उसका वघ कर दिया गया और उसका भाई कन्ह राजा हुआ। उसने नासिक पर्यात अपने राज्यका विस्तार कर लिया। तीसरा राजा शातकर्णी प्रथम बहुत महस्यामाक्षी था, नानाघाटपर उसने अपनी मृति स्थापित की थी, पहिचमी मालवाकी विजय कर ली थी और शुगोधे युद्ध किया था। उसने राजसूय और अक्ष्यमेघ यझ भी किये थे। कृष्टिक प्रकर्मी बारवेजने वेदे नरामित करके बबकी बहुत्याकांकाने नाया ही और क्लके 'विकासप्तवम्' एवं 'काशिश्वरव' जाति निक्तेको व्यर्वे किया । कशकी विकास परनी भागनिका नारत क्रियाचे की क्रियाकेट-से प्रवर्ष राज्यकाषमा कुछ नता प्रकता है । क्रम राजा बातकर्जी विदेश क्ष दिल्ले ५६ वर्ष राज्य क्षिया नताना नाता है । क्लमे कुल बंधका सन्त कर दिया और पूरी याच्या वर्षीय विवेदा शालाको विवय कर किया। शासनी राजा सुप्रतिक संस्वर्देश रचतिया क्षात्र वा शास्त्रिवाहव ना । प्रचन्ने इत्रवदे वश्र-बद्धराद ध्रमक बहुराय नादि शास्त्रवहुयोके प्रदिक्ष्यी हर्र बीर वर्त्वाने रातपादम करिएके बढ़नेने बाना थी। हामका समय र रुप ई के करमय बन्धा जाता है। हातके बाद जार-गाँव कराकार्मीय निर्वेश राजे हर और फिर चीतनीयम बायकर्ती बहोबर बैटर । यह रन बंदका दर्गीयक जवानी गरेक था। यक्त-बहुत्तत ब्रह्मान जवका अपन प्रतिहासी या । मोदारीनुसमें वर्त कुछ द्वारा प्रश्नावित किया । किन्तु नह-भारते क्षपरान्य बसके मृत्यी वक्षीनदिक और पक्षपने श्रीराज्येत जनत नेवें की माँच दावी बीर रार्रपार्शके राज पुर शारी रखा । पार्रपार्शी और क्षणराज्य यह प्रशिक्षण क्षणका एक को वर्ष पूर्वन्य बच्च दिशके कुरानका नहते बादनाहर बंध और फिर सवप नंता थोगों हो। बनान्त ही वर्षे । बीराबीपुनका राज्य प्रवास करान्यों है का क्रायुक्त है। क्ष्मणी मृत्युके बनरान्य बस्का पुत्र को पुत्रुक्ती पाता हुवा रिश्वके राज्यके १९वें बनमें शक्ति निवासी शीवनी सम्बोगे शाविकने एक कृद्य विकास्त किसराना था । यह देश गीरामीपुण चालकर्मीको प्रचलित सहस्रता है बीर इक्ष्में भते बक-महान-वनशेना बहारतची बतामा नवा है वर्ग बबके प्रदाप और

विनयोगा करोज किया थया है । क्यानतीके समयपि शहबहुध संबो समरोजे र पुत्र निवास् सामिकाके केवाचे सिमि काम साही है पू का कारार्थ मिरिया बार्डे हैं। का अनुसार्वे का सामान्यों क्रिकेको कही होती। वासीय प्रविश्वय पुरु स्त्री

मालता एव पश्चिमी राजस्थानपर भी अधिकार कर लिया था। उसके उत्तराधिकारी घातकर्णी तृतीयके साथ क्षत्रप छ्रद्रधामन्की कन्याका विवाह हुआ था, किन्तु क्षत्रप-सातवाहन सधर्पका अन्त नहीं हुआ। अन्तिम नरेशोंमें यज्ञधी घातकर्णी अधिक प्रसिद्ध है। उसके चौदीके सिक्के प्राप्त हुए हैं जिनमें क्षत्रपोका अनुकरण पाया जाता है। इस वैश्वका अन्तिम ज्ञात नरेश श्री पुलुमयी द्वितीय था। तीसरी शती ई० के प्रारम्भके लगम्म इस सातवाहन वश्यका अन्त हो गया। इसके अनेक महारयी पदवीवधारी सरदार, जो अधिकाशत नागनातीय थे और मूलत आन्ध्रोंके सेवक होनेसे आन्ध्रमृत्य भी कहलाते थे, दक्षिण एव मन्य भारतके विभिन्न भागोंमें स्वतन्त्र हो गये।

पैठनके ये सातवाहन राजे अधिकाशत बाह्यण धर्मानुयायी थे किन्तू वे अन्य घर्मोंके प्रति भी सहिष्णु थे। प्राचीन जैन साहित्यमें सातवाहन राजाओंके अनेक उल्लेख मिलते हैं और उनमें-से कई एकका जैन होना भी सूचित होता है। किन्तु क्योंकि यह उल्लेख 'पैठनका शालिवाहन राजा' करके ही प्राय पाये जाते हैं अत ऐतिहासिक नाम-सूचीमें उन्हें चीन्हना दुष्कर है। इन जैनराजाओं में सतसईके रचियता हालके होनेकी सम्भावना है। यह प्रसिद्ध प्राय महाराष्ट्री प्राकृतमें बार्याछन्दोंमें लिखा गया है और जैन विचारोका प्रभाव उसपर लक्षित होता है। सातवाहन राज्यमें प्राकृत भाषाका ही प्रचार था। ये राजा स्वय तो विद्वान् या विशेष विद्यारसिक नहीं थे किन्त विद्वानोका आदर करते थे। जैनाचार्य शर्ववर्य-द्वारा कातत्व व्याकरणकी रचना सथा एक अन्य जैनाचार्य काणिमक्षु या काणमृति-द्वारा प्राकृतके मुळ कथा-गुन्यकी रचना और उसके आधारपर गुणाइयकी वहत्कयाको रचना इन्होंके प्रश्नयमें हुई प्रवीत होती है। इनके राज्यमें जैन मुनियोका स्वच्छन्द विहार था। इन्हींके कालमें जैनसघ दिग्रवर एवं . श्वेताम्बर सम्प्रदायोमें विभवत हुआ और इनका राज्य उन दोनों सम्प्रदायों-के साधुओका सन्धिस्यल था। दिगम्बर परम्पराके जैन आगुमोंका सर्वप्रथम शंकवन एवं किरिवडीकरण जी दल्हीकं कालवे और बम्बन्डय स्पे^{कि} राज्यने क्ष्मा था।

पश्चिमोत्तर प्रदेशके विदेशी शासक-(१) वृत्रानी या वरत-विकन्तरकी मृत्युके वरधन्त वरस्यक्षिकार्थे क्षाके क्षेत्रावरि किन्युकरणे क्रमा ब्राप्ताच्य स्थापित कर क्रिया या निवकी बीमाएँ मारतवर्षेकी राग्रे करती थीं । क्लिपुक्चके बंबले करतन १ वर्ष धरूप किया । मीर्ने बुझारीके बनके रुमाँके जाताने अवेश करवेशा प्राप्त गरी किया बरन् क्तके वैश्वपूर्व क्रम्यन्य हो। एवं । बुनानिबीकी कुछ क्रोडी-मोदी बन्तिमी भारतपर्वते सरस्य वर्ष पर्वी । बसीतके त्रमध्ये विस्तृतक बंदका सम्बद् ब्रान्तिकोस क्षेत्रीय राज्य कर पहा यह । यस यह किसके राजाने साथ प्रतिहरितारों चेता था तो अवसर रेक सबसे मैंक्ट्रिया प्रान्तका सामन निर्मान रीयर स्थान हो क्या और इस बकार इच्छे बैक्तिम बंक्सा प्रारम्ब हाता । है व र क के समझन सकते बत्तात्त्रीयानों प्रधीतेनतके सार बमार वार्तिकोच दुरीको बन्ति कर भी और अपनी कना गुर्वादेनको पुत्र विनिद्रित्व (रिनित्र) के बाज न्याव भी छवा वैनिद्रनाकी स्वयन्त्री स्टीनार कर सो । कावक पात्रीनै इस कनप सम्मदेशका सामन ना मी बान्यरदेश एक गीर्नेकी राजकुगार था। क्यांवर है पू १९ में दिनिय वैदित्याका बाधक हमा । चारतवर्ष में अवस ब्रान्तिक विस्तारमा भेन को ही दिया काता है। कर्तन भारतकर बाक्रमन लिया। बबुरा मीर पांचानके राजे काक बाबी। यन वर्ते । यह पंत्रका बैध्यरक बारे तकी रीक्य हुवा कुनुक्दुर (कार्राक्ट्रक) एक जा पहुँचर । किन्तु कार्यक्रावा समाद् कारमें अने अलाकनवड़ी जुबना नावर इन बाजन्याओं वरस्तर कृत पर नदी और वे राजवाबीकी पूर्व विजय किने जिया है। बारव बीर पर्हे । मनव वर्ष जन्मवेशको तो प्रमुख वर्षना धारवेशने बुनानी विभिन्न निरात बाहर क्या, क्लिन नेमान शक करना बविकार बना ही रहा । बानल (स्वाक्नोब) की, जिल्हा नाम अपने रिठाफी स्वतिमे

चसने यूपोडेमिया रखा या, चसने अपनी मारतीय राजधानी वनाया। इस युनानो आक्रमणके परिणामस्वरूप पत्तनोन्मुख मौर्य सत्ता मृतप्राय हो गयो। वृहद्रथ मौर्यके याह्मण मन्त्रो पुज्यमित्र खुगने सम्भवतया इसी स्वर्ण अवसरका लाम चठाया और अपने स्वामोको हत्या करके वह स्वय मगध राज्यका स्वामी धन वैठा। विमित्रके थापस चले जानेपर उसका वायसराय मिनेण्डर (मिलिन्द) जो सम्भवतया उसका उत्तराधिकारी भी हुआ, ई० पू० १६०−१४० तक सामलमें बासन करता रहा। यह घासक जैन और वौद्धोंके सम्पकमें आया और उनका भक्त हुआ। बौद्धाचार्य गामसेनका उसपर विशेष प्रमाव था। मिलिन्दप्रञ्हो (मिलिन्दके प्रकृत) नामक प्रन्यका नायक यही यवनराज बताया जाता है। इस प्रचम जैनों और उनके सिद्धान्तोका मी उल्लेख है और इस धमके विषयमें राजा तथा उसके साथी अन्य यूनानियोकी जिक्कासा प्रकट होती है।

वैक्ट्रियाके यूनानियोका राज्य तो प्रथम एतान्दी ई० पू० के प्रारम्भके लगमा समाप्त हो गया किन्तु अनेक यूनानी भारसमें वस गये। उन्होंने जैन, थोड, भागवत आदि भारतीय धर्मोंको अपना लिया और धर्न -धर्न वे भारतीय जनतामें ही समा गये। विदिधाके राजा भगदत्तके दरवारमें हिलियोदर नामक यूनानी राजदूत आया था और उसने वहाँ गरुडक्वज बनवाया था जिसपर अकित लेखसे उसका भागवत धर्मानुपायी हाना स्वित होता है। मिनेज्डर सम्भवतया बौद धर्मानुपायी हो गया था। इसी कालके एक यूनानी इतिहासकार ट्रोगसने अपने एक पूर्ववर्ती लेखकका और प्रमाण रूपमें उसके लेखोंका उल्लेख किया है। प्रो० टार्न आदि विद्वानोक्ता मत्त है कि ये यूनानी इतिहासकार भारतवर्षमें रहे और वहाँ जैनोंके विद्याप सम्भक्तों आये प्रनात होते हैं वर्योक्त उनके लेखोंसे पता चलता है कि वे जैनोंसे, उनके आचार-विचारोंसे और उनकी ऐतिहासिक अनुश्रुतियोंसे मली-मौति परिचित थे और उन्हें ही उन्होंने अपना आधार बनाया था। सम्मव है कि इन भारतीय यवनोंमें-से अनेक जैन सामुआंसे

प्रभावित होकर बीन वर्षके अनुवानी जी हुए हों। बुनानी केन्क दिरोपीन वर्षे बत्तरी अप्रीकाके प्रविवेशियाने येथ शायु विचारते निके वे । एक मनवा-भार्न (बैन बापू) प्रथम क्सी हैं में भारीभते जाना करके रीज (वा एकेन्द्र) ची पट्टेंचे के । बड़ों क्रमणी बनाधि विद्यमाथ पढ़ी बजावी माठी है । (१) इस्टोराजियम वा पहुन-विक्तियाकी आँति गाविमा भी

जिलके सन्तर्गत बहुनाथ ईरान मा और शिक्षकी सुत्रवानी सम्बद्धना इन्द्रशर की विस्तृद्रकांची बनानिजेंकि साम्राज्यका एक प्रान्त मा वैतित्यक्ति ही जानः साथ-साथ यह थी रक्तान्य 🗗 बना था विन्तु आराज्ये वैतिन्ताने बचा रहा । इक्का शायक बहुब लाजवा वा । विकिन और विक्रिक्ते समय पानिवाका शामा निर्धारिक प्रथम (ई वृ १७१-(1) वा । दिशिय क्य शास्त्रको विकास बंधान वा सम स्व राम स्थालम् हो नमा मा । धर्म-धर्मे प्रथमे अपनी श्राप्ति बद्धा की और हैं हैं १६८ के अनक्ष किमानगाको योथ कमार्थ गर्गामा प्रदेशप पत्नी affect at fine : tob entifect for fre ft (f. f. १११-८८) के क्याने वालीका बाळवण हवा । यहके में हारे और गार्नि

कांकि बंबीन ही को विन्यु बीध ही फिर स्वानन हीकर नाप्सके परिचयोत्तर अरेक्टर का को और क्यांने व्यक्तिय बतायो दवा दिया। है व अपन ब्रह्मधीनै बीनीम कार्यं से पाविका प्रजा हर । राज्ये यनुपार मनेत प्रतिक्ति आहि राजै थी पाष्ट्रिय ही में । इस पंचके अस्तिन गरेडीम वर्षप्रिय योग्याञ्चर्यस्य (मिल्यर्ग) है जिस्से इन १९०५५ है पर्वत पान रिया । क्षार पुक्र व्यक्तिक और क्षिक्त भी रिके हैं । प्रशीने तमय वैष्ट मानव नावच नावधे जासाने आला और क्या रिक्ट बार्ट्स कर्मनवर ईनाई लक्का अचार किया है से सी एक अनुसूति है। पार्थिक पार्थिक मानेक व्यक्ति वी मूनाविकीकी वादि ही करायेगारकी

यों मुक्तरका करण है कि सामकामाने में नहीं साकृत होते से बोट सैक-

निर्दिश रचनोर्थे वस गरे थे। विशेषकर गणुरावाची पार्विवर्मेक विरासी 111 नार्त्ताच प्रविदास रह रहि धमम दोक्षित हा गये थे यरापि अपनी जाममूमिक बहुत-में सस्कार उन्होंने बनाये रखें।

(३) इण्डोतीधिया या दाक-चीनी अधारसि पता चलता है कि go पुरु १७५-१६५ में रूगभग मर्वेर हुपीका अन्यान हुआ जिन्हाने परिचमी पौनते यू घी छोगाको खदेष्ठ याहर किया । यह यू घी या तुलारी लोग परिचमकी आर वढ गय और सोर नदीके तटपर उन्हें उन्हीं-जैमी एक अप अमणकारी जाति मिली जो धक थी। तुरप्कीने धनोको उनवी ज ममुमिसे खदेश अत व भारतमे चीमान्त प्रदेशोंकी बार बढ़ आये और यवनो एव पह्नचोंके राज्योंके विभिन्न प्रान्तोपर टूट पढे। विध्रेटेटम द्वि० (ई० प० १२३-८८) ने चनको पराजित करके अपने अधीन कर लिया, किंतु प्रथम जाती ई०पू० के प्रारम्भम (ई०पू०८५-७५ के रुगमग) ये बोलनको घाटा और विलोचिस्तानके मार्गम भारतमें घुत बाये नौर समस्त रिप्यु घाटोपर छ। गये । पुष्यालावतीको उन्होते अपनी प्रधान राजधानी बनाया । अपने मूलस्यान सोयिया (शवस्यान) की स्मृतिमें उन्होंने अपने इस नवीन वाग्रम्थानका नाम मी इण्डोसीथिया (शकस्थान गा शककुल) रखा। इनका सबसे गडा सरदार शाहानुशाही कहलाता या भीर **उग**के अधीन अनेक शाही (शक सरदार) थे। ई० पू० ७० के लगभग आचार्य कालक द्वितीय उज्जैनके दुराचारी राजा गदभिल्लके अत्या-चारासे पीडित हा और अय सब उपायाँसे हारकर इन शकशाहियोंके पास सि युवर्धी शबस्थानम पहुँचा । वहा एक शाहीका अतिथि हुआ । कालकके ज्योतिप-सम्ब ची ज्ञान और वृद्धिमत्तास बाही बहुत प्रभावित हुआ । उसी समय युद्ध बाह्मनुषाहीका एक दूस एक छुरा और कटोरा छे र बाहोके पाम आया जिस देखत ही वह पर-घर कांपने लगा। कालकने पृछनेपर शाहीने कहा कि उसका स्थामी उससे नाराज हो गया है और इन वस्तुओंको भेजनेका अथ है कि वह अपना सिर उस छुरेसे काटकर उसी कटोरेमें रखकर शाहानुशाहीके पास मेज दे अन्यया उसका सकूट्रम्ब बन्त करा दिना नावेगा। यह जी वाजून ह्वा कि ९५ अल्प कार्यिके राम भी वैदा ही मर्वकर क्लोका जाता था। नाक्कने अपवर देख का ९६ बाहिनोंनी इसन दिना और पनवे नहां कि यदि ने इनकी नार्ट मानकर माक्रमेरर वाजनव करें जीर पुढ़ वर्षक्रिकार वसव करें वी क्रमी बहुत-ता बन एवं नवीन अदेश निक बायेना और बाहिनुबाही करने भी में मुक्त हो मार्गेने । नतएन ने तम बाही नाक्षत्रके बाव पह वर्षे और शैराष्ट्रके वार्वके गावकार्ये प्रविद्व हुए । धार्वते बाक्यके बाव वर्ष राज्यमोनो पी बहानसार्थ काब के किया । है पु ६६ में इन पर शास्त्रिमें वर्शनकारे राज्यके बहुन वक्षों दिवन करके बज्जेंगी सहरता वैस शाम और नान्ये एवं वच्चवराको करानेके किए एक बंबद स्थापित निर्म को पूर्व वा प्राचीन एक बंदश कहवाता है। वह काक्रमें वर्गातम मुक्त इक्रिस्टने भारत्य होनेवाका प्याचीर बंबत वहाँ बचकित रहा उठीठ होंगी है बहाद्य क्वाची नवताके बनुवार वहातीर निर्वाचके ४६ ह वर्ष वाद इस अन्त क्षत्र चंद्रत्वी अमृति हुई। विर जालेवर की चार वर्ष तक वर्धीवरण बोध्यानुर्वत करूप था। बन्ता ई ४ ६१ वें बच्चे परास्थि होतर mer-auru er fint : utwait nath un but feuffen ar रिध्य क्या अन्य सम्मीकीनर जनीका धान्य हो बता और सम्मीने **व्य**ी क्षते रहना चन्ना । ताकनक्य स्वयन्त्रकारोधी ने बोट् दबसी बाज्य-इनाची रमश्यीन नी विशेशी वर्णींक निरंत्रच खावनको वे बहन नहीं कर बन्दी में । रूपने काक्य की अपने स्थनहारते वह वा । बदा नर्प विरुक्त पुत्र कीर विकासीताके नेतृतारों नाकावण का को हुए और है र ५४ में बन्होंने बन्होंने बन्होंनी करतेंगी के निवास बद्धार फिद्धा । सब मैं धनकारी कुछ हो नापन विचन देवारी. और वर्ग कुछ जो छानुमें हो बन दर्भ पुत्र मनुराने का बनै और पुत्र नायानकी बन्न का चारे । बार्गने कुलकारवीके काले बक्रकाहानुवाहीको जी त्रवंत कर किया और नामगावके

118

पर राज्य करने छगें। भारतीय घर्मी, रीति-रिवाजी, नामादिकोंकी अपनाकर और भारतीयोके साथ विवाह सम्बन्ध आदि करके ये भारतीय नरेशोंकी मौति ही यहाँ बस गये। इस प्रकार ई० पू० ५० के लगभगसे सन ६० ५० के लगभग तक जो विभिन्न शक धाक्तियाँ भारतके विभिन्न भागोम सत्तारूढ रहीं ये निम्न प्रकार हैं-(क) पुष्कलावतीके प्रधान शक नरेश-शाहानुशाही-जिनमें सर्व प्रसिद्ध महार्थ मोगा था। उसके सिवनोपर कतिपय भारतीय तथा यूनानी देवी देवताओंकी मूर्तियाँ अकित मिलती है। स॰ ४२ और ७८ के दो अभिलेखोंमें उसका नामील्लेख मिलता है जो ई० प० ६६ में स्थापित पूर्व शक संवत्में होनेसे ई० प० २४ तथा सन १२ ई० के निर्वारित होते हैं। उसके अतिरिक्त अजेस प्रथम और द्वितीयके होनेका और पता चलता है जो सम्भवतया उसके उत्तराधिकारी थे । इन शक शाहानुशाहियोंके उपरान्त पुष्कलावतीपर पद्धवीका अधिकार हो गया प्रतीत होता है। विन्दुफ़र्न (गोण्डोफ़रनीज) जिसका समय १९-४५ ६० निश्चित होता है, इस कालका प्रसिद्ध पह्लव नरेश था। उसका सं० १०३ का अभिलेख भी पूर्वशक स० में होनेसे सन् ३७ई० का है। विभिन्न प्रान्तोंके शक क्षत्रप इन पह्नवोंको भी शक शाहानुशाही-की भौति अपना अधिपति मानने लगे।

- (ख) उपरोक्त शक क्षत्रपोमें-से एक शाखा सक्षशिलामें स्यापित हुई थी जिसमें लिसक, कुगलक, पतिक आदि क्षत्रप हुए। इनका उल्लेख स॰ ७२ (सन १२ ई०) के अभिलेखमें मिलता है।
- (ग) एक शाखा सुदूर वाराणसीमें स्थापित हुई जिसमें मेविक आदि नाम मिलते हैं।
- (घ) एक शाला मयुरामें स्थापित हुई, इसमें हगन, रज्जुबल, घोडास आदि नाम मिलते हैं। मयुराके ये शक महाक्षत्रप शत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इनके, विशेषकर क्षत्रप शोडासके, मयुरासे अनेक शिलालेख प्राप्त हुए हैं जिनमें कई यथा सं०४२ (ई० पू० २४),

यं ६२ (वन् ६ हं) आरोत्हें निविद्युल्त मी है। इन प्रियम्बर्गते क्या भारता है कि वे धारत जान क्यारील पार्वान यनित्रकारी एवं जाती नरेस में । तनक जान पुत्रत आरोपनएस ही जुला से नीए है

न्तीं बारतीय पर्योग बादर बच्चे हैं। वैनवर्गनी और धी हमा बारपंत्र पूर्व मानित होता है और वचने में बोरक पूर्व मण्डे होते हैं। मृत्यूनी मान्य बारवार्गनी विद्यानी में बार विद्यानीनों हैं। वैद्यानी हैं। वैद्यानी के बारित के बार्व मुख्य में सर्व बारित हैं। यह गान्ये बच्चा वैश्वपंत्र पद पूर्व मुख्य में मानित वारणी पूर्व बारोंने गांवी महाने वैद्यानी के स्मित्य के स्मानित वारणी

रितर कर दिया हो दर जानिने नीयानु एवं नुवयप्तरर साविकार करके स्वारत एउटन स्वार्धित कर स्विधः व कृत कोर सावकेत (स्वाध्योदन सीर बुट्टर और दिवनेत वार्धिव्यादेक प्रत्य कर माह्यकोत सित्त नीवेत कर्म गुद्ध (अनु स्वय नामानी देखाँचे नामाने में बहुत प्रतिक्वात्मों दें महे । महापन स्वय प्रधान कर्मार्थित अग्रयोदन महाप्यादन महेन सेता माहित सेत मुद्दिनेत करके व्यापन नामान्य कर्मार्थ्यम्य स्वयान क्रिया माहित स्वयान क्रिया माहित स्वयान क्रिया माहित कर्मार्थ्यम्य स्वयान स्वयान क्रिया माहित स्वयान स्वयान क्रिया माहित स्वयान स

नार्शाप इतिहास एक ग्रंड

निश्चित होता है। यूनानी भूगोलवेत्ता टार्छमीने मी इस नरेशका चल्छेख किया है। नहपानके अपने तथा उसके जामाता उपवदात या व्ययमदत्त और फ़ुशल मन्त्री अयमके कई शिलालेख प्राप्त हुए है जो वर्ष ४१से ४६तकके हैं। सम्भ-बतया नहपानके पर्वज भूमकने अपने अन्तिम दिनोमें अयवा स्वय नहपानने क्षपने राज्यारम्भमें ही मालवा देशके बहुमागपर अधिकार करके यह नवीन वर्षगणना चाल को थी । किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि स्वय उज्जैनीपर उसका अधिकार नहीं हो पाया और इस महानगरीको प्राप्त करनेके लिए पैठनके सातवाहन नरेशोंके साथ उसको प्रतिद्वन्द्विता एव सधर्प बराबर चलता रहा । अन्तत सन् ६५ ई० के लगमग गौतमीपुत्र शातकर्णीने भगकच्छपर बाक्रमण किया, घोर युद्धके उपरान्त नहपानकी पराजय हई और उसने सचि कर ली। सातवाहन नरेशने अपनी विश्वयके उपलक्ष्यमें नहपानके अनेक सिक्काको हस्तगत करके और उनपर अपनी भी मुहर लगाकर अपने राज्यमें चाल किया । नहपानने राज्यभार अपने जामाता उपवदात. मात्री अयम और सेनापति यशोमतिकको सीपकर स्वय जिनदोक्षा ले ली प्रतीत होती है।

इस समय तक इन शकाका प्राय पूर्णतया मारतीयकरण हो चुका था, इ होने भारतीय आचार-विचारो, भाषा और नाम, वेप-भूषा और प्रथाएँ, धर्म और सस्कृति अपना लिये थे। एक जैन अनुभृतिके अनुभार इस महाराज नरवाहनने अपने मित्र मगधनरेशको मुनिरूपमें देखकर सनकी अरणासे अपने राज्यश्रेष्ठि एव मित्र सुबुद्धिके साथ मुनिदीक्षा छे ली थी। इस समय दाक्षिणात्य जैनसघके नेता सधाचार्य अर्हद्वित थे, वही सम्मवतया इसके दीक्षागुरु थे। सन् ६६ ई० में उन्होंने महिमा नगरीमें एक महामुनि सम्मेलन किया था। इसी सम्मेलनमें सर्वप्रथम निर्मन्य दिगम्बर सषम नन्दि, सेन, सिंह, देव, भद्र आदि उपसंघ उत्पन्न हुए थे। इसी कालमें गिरिनगरकी पूर्वीक्त चन्द्रगुफामें अविद्याय आगम झानके धारक एव अष्टाग निमित्तके आता धरसेनाचार्य सप्त्या करते थे। अपना अन्त सार (नार सानगर और आवन नाशाहे विनिज्य हैं बारेनी बांगी के की ह दिवा साहोते सांदियारे वर्तन्तानीयाओं है जूरेण कि सारे वर्तन्ता के सुर्वेद की नवार्त्वाओं की जान जुलान हैं भारति बालाओं सानने किया हुए आधारी तक देश साहे सारेने दिवाशी सामें कि नीका बाते कहें पत्तावार कियानी सारेना बात कर्य वर्तन वालगा पत्ता दिवा में कि निवास सारे की कर्य हैं कि साम प्राप्त किया मुल्ले किया की कीलाई सारे की कर्य हैं कि समस्य प्रत्यावर पुरास्त की हुवाले सारे की क्षा है कि समस्य प्रत्यावर पुरास्त हैं हुवाले सारे की कर्य हैं कि समस्य विवास स्वयंत्र की हुवाले यह बात की सारे का क्षा कर कर कर सारे की सारेन सम्बाद कि सारे के साराम्य हैं क्या कर सारे किया सारे की सारेन सार बाते कि सुन्ता की सारे किया है किया सारे की सारे सारक से सारे

 धानोंपर भी किसी युद्धमें आंशिक विजय प्राप्त की । मातवाहनोने सकाके नवप्रचलित सवत्को भी अपना रेनेका प्रयस्न किया, इसी कारण यह कालान्तरमें धक-शालिवाहन सवत्के नाममे भी प्रमिद्ध हुआ। धनपकालके प्रयम सी क्योंमें सक-सातवाहन प्रतिद्वन्द्विता और भी अधिक सीप्र हो गयी और सातवाहन साम्राज्यों अन्तके साथ ही उसका अन्त हुआ।

चष्टनका पुत्र जयदामन् या । उतने अपने पिताके साथ कुछ वर्ष राज्य किया किन्तु पिताके जीवनकालमें ही उसकी मृत्यु हो गया प्रवीव होती है। उसके उपरान्त उसका पुत्र महादात्रप रुद्रदामन् प्रयम राजा हुआ । उसके राज्यारममके कुछ वर्ष बाद हो। उसके पितामह चष्टनकी मृत्यु हुई। ठद्र-दामन्के सन् १३० ई० के विलालेखके समय तक चष्टत जीवित था। रद्रदामन इस वशका सर्वाधिक प्रतापी नरेश था, उनके समयमें दावप साम्राज्य उन्नतिके चरम शिव्यरपर था। इस राजाके मन् १५० ई० के एक वृहत शिलालेखमे, जो कि जुनागढ प्रशस्तिके नामसे प्रसिद्ध है, जनकी अनेक विजयों, पराक्रमों, लोकहितके कार्यी आदिका पता चलना है। यह शिलालेख ऐतिहासिक दृष्टिमे अत्यात महत्त्वपूर्ण है और गिरिनगरके सुवसिद्ध मुदर्शन तालके तटगर ही अकित है। रुद्रदामन्ते भी उस ऐतिहासिक सरोवरका जीर्णोद्धार कराया था । घडदामन्का पुत्र दामजदश्री था जिसने गिरिनगरकी पूर्वोक्त च द्रगुफार्ने आगमोद्धारक आचार्य घरसेनके स्वर्गवासकी स्मृतिमें एक शिलालेख उत्कीर्ण कराया था। उसके उपरान्त रुद्रसिंह प्रथम गहोपर बैठा वह भी जैनधर्मका अनुयायी रहा प्रतीत होता है। प्राय इसी कालमें इस वशकी एक राजमहिलाने महाबोरको जाममूमि वैशालीकी सीर्य-यात्रा की थी जैमा कि वहाँसे प्राप्त उक्त महिलानी कतिपय मदाओंसे विदिस होता है।

पहिचमी घनोका यह महाक्षत्रप वश २४२ वप पर्यन्त उज्जैनी राज-घानोसे एक विस्तृत प्रदेशपर राज्य करता रहा। दूसरी-सीसरी शताब्दीमें सो दक्षिण भारतके भी अनेक भाग उसके अधीन थे। ३२० ई० में कुठारामधी स्वारमाने ग्राम-माम बार्शनार इस बंधारा आदिशार वार्यों हुमा। बन बनव ठफ इस बंधारी नई याबाएँ वर्ष बन-धानार्थे वर बुंधें भी और बीर-बीर्ट यह राज्याश व्यक्तिम चीनी यत्रमानि बन्त ठ० हम रहा बन कि पुत्रमुख विकासीरमाने उत्तव। आस पूर्वीया बन्तेर हर

रहा क्य कि पण्युष्य विकासीश्यमे उत्तरहा जाया पूर्वन्ता वरणा रिया। वर्गनेशने वर्णा वर्षांद्र ज्ञान वर्णांद्र जाया वर्णांद्र ज्ञान के ज्ञान

प्रसार हूँ। वस् ६४ हैं के लक्ष्यन ८ वर्षणी बायुत दुवुणके गुँहै हैं।

क्वार्के पुत्र व हर्तात्रिकारी किल वस्तिकार्य किल्ल मंत्रीचे गए वर्षणे

क्वार्मिक्ष र्येवार क्वार्थ वर्षिकारी करायुक्तिय प्रधानत व्यविद्या रहे किला। अपने कर के देश है जन्न ७ है। जा क्वार्थ रह व्यविद्या क्वार्थ करायुक्तिय के त्रीविद्या के त्रीविद्या के त्रीविद्या है।

क्वार्थ करायुक्तिया की तराव्यव्या पुत्र वर्षिक्त का व्यव्या क्वार्थ के त्रीविद्या के त्रीविद्या के त्रीविद्या करायुक्ति के व्यव्या क्वार्थ के त्रीविद्या करायुक्तिया के त्रीविद्या करायुक्ति के त्रीविद्या के त्

बारण हु। न्यू पणनावक वानुष्या प्या अववाद हुआ हूँ। हत्त्रण करातीकारी और त्यावकार गृह बरिक्ष वा वो वार्य्य हुपान वंद्रध्य कर्मसाम् वरिक्ष और तृत्राम् वासानकार कंदरात्त्रण गी. हुपान (देशपर) क्षणी प्रथम प्रकारण थी. बरिर वार्यमा सुन्धा करारात्रणों। नृष्टी काला कर बक्ते राज्या सिरार था. वार्य वार्य-तार्यमाने वर्षा और वहार्योगी करात्मा वार्य कर किया कारीर कर्मी पण्यका और या. वोट पाणियों गार नाथे वार्य सम्बद्धा सारात्म बोरान बाह्य सीनी क्षणीनों में दिस्स गी.

जारबील इविद्वारत । एक प्रवि

बौद्ध अनुश्रुतिमें उसे अशोकके समान ही बौद्ध धर्मका गक्त और प्रथमवाता कहा गया है और उनमें उनके द्वारा पेशावरमें एक मौद स्तुप वनयाने, पारमीरमें चनुर्य योद्ध सम्मेलन युनाने और बुद्धचरितके कत्तां प्रशिद्ध बौद्ध विद्वान् अश्ववायको प्रथय देनेके उल्लेख मिलते हैं। यह बौद्ध धमके महायान सम्प्रदायका पोषक रहा बताया जाता है। कि तु विद्वानों-पा मत है वि उसके सामाज्यमें सभी धर्म प्रचलित ये और वह धर्मसिहिप्ण नरेश समोका आदर करता था । मयुराके अनेक जैन शिलालेक्सेंपर उमका नाम अवित है। यामस आदि विद्वानांके अनुसार कमसे कम अपने राज्य-कालके पूर्व भागमें उसका झुकाय जैन धर्मकी और अधिक रहा प्रतीत होता है। कहा जाता है कि एक प्राचीन जैन स्तूपका भी उसने जीगोंद्वार कराया था। कनिष्ककी मृतियाँ भी मिली हैं। उसके समयमें बीद साहित्यका सर्वप्रयम प्रणयन प्रारम्भ हुआ । कनिष्ककी राज्यारोहण विधि सन ७८ ई० मानो जाती है और मुछ विद्वानांके अनुसार वही प्रचित्त शक सबतुका प्रवर्तक था। किन्तु जैसा कि पीछे कहा जा चुका है शक-मधत्की स्थापना भद्रचष्टन वशये गस्यापक चप्टन द्वारा उज्जनीकी विजय-के उपलक्ष्यमें हुई प्रतीत होती है। सम्भव है स्योगमे कनिष्कका राज्यारम्भ भी उत्तर-पिवनमें उसी वर्ष प्रारम्म हुआ हो। उसके सथा उसके उत्तरा-घिकारियोंके लेखों में जो वर्षसम्या मिलती है वह उसके राज्यके प्रथम वर्षसे चाल हुई प्रतीत होती है, बादमें उहाने एक सवत्का रूप ले लिया जो सयोगसे शक सबत्के अनुस्य होनेसे उत्तरापयमें भी लोकप्रिय हो गया । कनिष्ककी हत्या उसके सेनानियोंने उसके सोते समय कर दी थी । उसके उपरान्त क्रमश ह्विष्क (१०७-१३८ ई०), कतित्क द्वि० (११९ ई०), बिशादक, वासुदेव (१५२-१७६ ई०) इत्यादि कई राजे हुए। इन राजाओंके अनेक जैनाजैन दिलालेख मधुरा आदिसे प्राप्त हुए हैं। ये सभी धर्मोके प्रति सहिष्णु रहे प्रतीत होते हैं। जैनधर्मकी, विद्येष-कर मयुरामें, इनके कालमेंवि शेष उन्नति हुई। वासुदेवके उपरान्त कूपाण बाधारच्यां अरार्थाः आराम ही बती । आरार्धे क्या आर्थे हुएयें बर्गिकार सी-सीर्ध कर बता और में (सरकी और बतने वाते रो बर्ग में रामी रंग्ये रंग नवे । रामार्थ संबोध करको वहां को बत्यों करते हुए हैं अने ही बता। में हुए कि बाव्यकरें समय राज करहें में हुए बत्यें बती रही। तीमधी बतीन पार्शनपुष्ठें मुल्यों के बाद की प्रोधे हैं? बतान रहें में

आह्रपा---वर्गन वरणः वार्तरपानं व वर्गव वर्गन वर्गाम् व दर्ग महास्मानेने वर वा १ वर वरण वर्गन वंदा वर्गन वर्गनम वर्गन वर्गन वर्गन वर्गन वर्गनम वर्गन

कर्मा दिन करने करावा था। यह गोर भी बारण द्या गोव होंगा हैमूमारी कार्य (क्लावर्ड मांग्राम्माध्यक्ते नाय जारी क्लावर्ड क्लाव्यक्ता क्लावर्ड क्लाव्यक्ता क्लाव्यक्ता हैकार्यक्री मांग्राम क्लाव्यक्त जुनेश्वर व्यक्ति क्लेष्ठ प्रतिपार्व्यक्ते
कार्यक्रम में करने क्लाव्यक्ति क्लाव्यक्त

करके व्यापार-वाणिज्यमें हो अपना जपयोग लगाना प्रारम्भ कर दिया किन्तु अपने गणत प्रारमक येणी सगठनकी और भी बहुत पीछे तक भग नहीं होने दिया। मालव लोग विराट देशमें भी अधिव स्पिर म रह सकें और अन्तत अागे बढ़कर उज्जैंगी प्रदेशमें यस गये। सम्प्रतिको मृत्युके जपरान्त इन स्वतन्त्रता प्रेमी माल्योंने उज्जैनीको के द बनाकर अपनी गणत प्रारमक सत्ता स्थापित कर हो और धीरे-घीरे अपनी धिक बढायो। यह देश भी उनके कारण मालवा कहलाने लगा। शुगो और कण्योंने राज्यकालमें मालवेके मालवगणने पर्याप्त धिक्त संचम कर ली थी।

ऐसा प्रतीत होता है कि कलिंगचक्रवर्ती सम्राट् सारयेप्टने मालवगणकी भी विजय कर लिया या और सम्भवतया उसकी गणतन्त्रात्मक सत्ताको भी माय कर लिया था कि तु उसके नायक के पदपर अपना कोई राजकुमार नियुक्त कर दिया था। यह पद उसकी वंश-परम्परामें मढ़ हो गया। ईन पूर्व ७४ में इसी बदाका महे द्रादित्य गर्दमिल्ल मालवगणका अध्यक्ष और उज्जैनीका गणतात्रीय राजा था । यह बहुत अत्याचारी और दुराचारी धासक या । गणोकी भी अबहेलना करता या । उस समय उज्जैनी जैनोंका प्रधान केंद्र थी, जैन साध्विमों और साधुओंका वहीं स्वच्छन्द विहार होता था । कालक दितीय उस कालके एक प्रसिद्ध जैनाचार्य थे, जो पूर्वावस्थामें एक राजकुमार थे। उनकी बहन सरस्वती भी साब्बी या। वह अनिन्य सुदरी भी थी। उनत साम्बीका भागमन जब उज्जैनीमें हुआ तो उसके रपपर गर्दभिल्ल मुग्म हो गया । उसने अवरदस्ती अपहरण करके उसत सान्त्रीको अपने महस्रमें उठवा मैगाया। सूचना पाते ही बालक वहाँ माया. उसने गर्दभित्लको बहुत प्रकार समझाया, मनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियाँ-से भी कहलवाया कि तु उस दुरावारी निरकुश शासकको अपने दृष्ट अभि-प्रायसे विरत करनेमें यह समर्य न हो सका। गर्दभिल्लके भयसे आस-पासके राजे भी हस्तक्षेप करनेका साहस न कर सके। अत सायस्त कालक क्या दरीको वर्षेत्र संच्य केवर अस्त्र अन्य अस्तर्यको की नाचर क्षा बारा हरा है ने ६६ के व वेद दुन्हें बन्दर का बबरा । बन er tie fe me fit aus man f. a din niene agen a't wijt dreit er die enfag feer me fet eit er erreit. का क्या जानावरण कर काराया है। ब्राप्त हुआ है करवी कार्यारी erent at weren en een feel'er ar feer feiffft क्षत्राती कार्वेशन क्षत्र को । इस्तावता क्षेत्र कार्यक्त वह सामा है गी

ferregunt artist anners artists and after all after

49 47 45 61 2 girt og det foggetigt bredt grift f. of the American and Afrend more free aft, got all fills की मेरिया राजस्थात वर्णका हैंका।

विकासीत कारण में देवा है स्वतंत्र कारण कारण कारण कारण दर्व गांच्या १६५ बावस का अर्थन्यत करातीय अध्यासमाध्या पा men & da menfen m err er demire mer at : se auf की काली है। हि होती सर्वत साथ बाहराहरों बारवीती क्ष सामान र्वातान क्षत्र अन्त्र प्राप्त के क्षति (क्षत्र) विकासिक में विरयान परना धाना किया और आहे हैंसा अन्यशा नवा मार्ग

राज्यानी कार्निको विस्तवस्त्रीय क्या दिया, बन्य हिं यू ५ वर्ग इत नावर ना विकास तर है के प्रश्निकार प्रवर्ध सर्वेद्य नार्थ में PRI DATE

femmilim alle und dum munter al qui que ufmit का बाता गांग है, जिलू बबको जुन्हें बनाल ही बोक्स है की #2 करों बार चेंद्रशक बायकात बंधी गरेकने कार्वशत अधिकार करहे िंद बोर मंदर्न पान क्या । वीच-दीवर्त कुछ बालक लिए सपरें-ते ए बा दूपरेडे बर्पकारहे तो यह नवर त्या । तब २६-६६ है के अब द्यार्थनीतर नुप्रनिक बहरात्र सहरात (वेन बानवृतिकीता सरसमूच म

मात्रीय इतिहास : एक गर्रे

नभीवाहन) का अधिकार अवस्य रहा प्रतीत हीता है। सन् ७८ ई० में अहरातों के उत्तराधिकारी पिवनी शक सप्तपांके वश सस्यापक मद्रमणने इस नगरपर स्थायो अधिकार करके शक सवत्की पूर्न प्रवृत्ति की और लगभग सी हेढ़ सी वर्षों तक इसी वशके अधिकारमें यह प्रदेश चला। शनैं - शनैं मालवगण भी इस पराधीनसामें क्षोणप्रभ और क्षोणप्रक्ति हो गये।

अन्तस ४थी शती ई॰ प्रारम्ममें गुप्त साम्राज्यका उदय हीनेपर इस प्रदेशपर उस वशका अधिकार हुआ और उज्जैनी गुप्तोंकी उपराजधानी वनी । इस समय तक यह नगर वरावर जैनधर्मका एक प्रमुख केद्र वना रहा । श्वेताम्बर सम्प्रदायका सो यह प्रथम प्रधान केन्द्र था, किन्तु गृप्त कालके उदयके पूर्व ही इस स्थानसे पश्चिमकी और हटकर उन्होंने सराष्ट-देशकी वल्लभी नगरीको अपना प्रधान केंद्र बना लिया था। फिर भी उज्जैनो महानगरी विभिन्न धर्मो और सस्कृतियोका सिन्धस्थल बनी रही। मारतीय साहित्य, ज्ञान और विज्ञानके सूजनमें इस महानगरीका सर्वीपरि स्थान रहा है। राजनैतिक राजघानी न रहनेपर भी घाताब्दियों पर्यन्त यह नगरी भारतवर्षकी सांस्कृतिक राजधानी वनी रही और इसको वैसा बनाने-में जैन धर्मावलम्बी विद्वानों, मुनियो और श्रावकोका भी महत्त्वपूर्ण हाथ रहा । जैनधर्म और साहित्यके इतिहासके साथ इस महानगरी और मालवा देशका सदूद सम्बाध है। भारतके सर्व प्रसिद्ध एव सर्व प्राचीन छीकिक सवतो-प्रथम शक (ई० पू० ६६), विक्रम (ई० पू० ५७) और शक शालिवाहन (७८ ई०)—का जन्मस्थान मी उज्जैनी ही है।

मथुरा — मथुरा नगरका जैन, बैष्णव, हौव, बौद्धादि विभिन्न भारतीय धर्मोंके साथ अत्यन्त प्राचीन कालसे ही धनिष्ठ सम्बन्ध रहता आया है। भागवत धमके परमदेव भगवान् कृष्णकी यह लीलाभूमि तथा उसके अनुयायियोका महातीर्थ रहा है। वुद्धका भी वहाँ आगमन हुआ धताया जाता है और कृषाण कालमें यहाँ कई विशाल बौद्ध स्तूप एव विहार विद्यमान थे। धैयोंका भी इस नगरके साथ प्राचीन सम्बन्ध है, और सहको

वर्षे भर्तना बह नगर कतरानवर्षे येन संस्कृतिका वी अनुन्त देश रहा है। क्रम पाने इतिहासमें इस नगर और निपडवर्ती प्रदेशको न्यूरवर्ष त्यी भारत है। महिरुद्रशंपके अनुसार आदिशालीय ५१ देवींने मृत्ये देश और बक्की राजधानी नवुराकी तत्त्वा जी। नहारीरकार्त महाज्याररी, प्रमुख राज्यों क्ष्यं राज्यानिकोर्वे थी. इसकी समया हरें हैं। रवित्रों वैनापालीने करने अन्योर्थ पारवय ना वश्चिमी वर्षा (वर्षा) ते जेर करनेचे किए इस नगररा स्थील सारा: 'क्रफर क्यूप्र' वाली क्ति है। निर्वाण माध्यम् महत्त्वम् अदिशिन्ते वानावे वया निर्देश पूर्विके जिल्लाको सम्बद्धको बहुत्तक देशनिविक्की मुत्ते अस्ति मनुरापा एक प्राचीन सेन क्रोमें होता बिक्र दीवा है। बुहलराजानी इत अनुष्रिके अनुवार 'उत्तरावादे वक्षा एक शहरवृत्वे अवर व निवक्त सर्वातः १ शायोने सीम सपने वर्धने द्वारोंके क्षार तथा चीयारी पर जिल मूर्तिसाँकी श्यापना करते में । अनेक सैन पुरानों, परिनी क्षामी बना अन्य गानिक जन्माने क्यूदा क्यरण क्रकेब नामें बाते हैं। इक आर्थान बमुक्तिक अनुभार बातर्व ग्रीवंकर तुपार्ववाक्ते वस्पर्वे

कुमैय गानको देशीने मनुसमे यानवीयाः स्वर्णनारीः जिल्लापुर बद्धावा को । न्याभारत कार्नने इस प्रवेकार इरिजंबने इत्तप्त क्युबोहर्गेका राज्य के । मैन परम्नाके विरेक्ट बकाकानुकानि परिमक्ति शारास्य हम्म और वनपननो वालकीका-मृति वनुग्र और अवके बाल-गालका प्रदेश मा हण्यनाय शंस्त्रात्रेश श्वक्षेत्रके शंकत क्वर्णको याचे अनुसार विस्कार तक राज्य करते थी । इसी वंबने बाराए बालक धानाचा पुत्र धानपुत्रार वित्तरशास्त्र वैत्रपर्यका पर्व अस्त था । बह स्वरेख औरकर वित्यमी बीर पत्र पता मां बीर बड़ी बखते जीवजीने क्रमीटक देवने कर कैन राज्य स्वापित किने जो नामकास तक वस्तरे रहे। २३वें रोजेंबेर सर्वनायका यो क्युराने विद्वार क्षत्रा था बीर काले बनस्वरमने स्था^{न्}र

भारतीय इतिहास एक प्री

्व पूर्व में, उपरोक्त देय निर्मित स्वर्णमयो स्नूपको इंटोसे ढेंक दिमा गया या। जुहरर, स्मिय, बोगल आदि पुरातत्वज भी इस स्तूपके अवसेपोको देगकर इसी निष्कर्णपर पहुँचे कि यह जैन स्तूप ईसासे बमसे कम पौच छह सो वर्ष पूर्व निर्मित हुआ था। अन्तिम सीर्यंकर महावीरका पदार्पण भी इस नगरमें हुआ बताया जाता है। उस समय यहाँका राजा पद्मोदयद्य पुष्ठ उदितोदय था। सम्ययत्वकोमुदी कथामालका घटना होत्र और समय यही है। महावीरकी घिष्य-परम्परामें अन्तिम केवली जम्बूस्वामीने मयुराके चौरासो क्षेत्रपर दुर्दर उपस्वरण किया था। उन्होंके उपदेशसे इस नगरमें महान् दस्यु अञ्जतनोरने अपने ५०० माथियों-सहित दस्युवृत्ति छोड़कर मुनियत घारण किया था और घोर उपसर्ग सहन करते हुए सद्गति प्रास्त की थो। इन मुनियोको म्मृतिमें यहाँ ५०० के उगमण स्तूप निमांण किये गये थे जिनके अवसेप मध्यकाल तक विद्यमान थे।

नन्द और मीर्यकालमें मथुरामें जैनघर्मकी यया स्थिति रही निश्चयसे नहीं कहा जा सकता। ४यी वाती ई० पू० में द्वादत्तवर्षीय दुर्भिक्षके कारण उत्तराययके जैन संघवा एक वहा माय अन्तिम श्रुतिकेयली भद्रवाहु-को अव्यक्षतामें दिवाण देशको निहार कर गया था। दुर्भिक्षको समान्तिपर भी उनमें-से अधिकाश साधु वहीं रह गये और उनका सगठन कालान्तरमें मूल सघके नामसे प्रसिद्ध हुआ। मगधमें ही जो साधु रह गये थे उन्होंने स्थूलमद्र और उनके विष्योंके नेतृत्त्रमें अपना पुथव संगठन कर लिया। दुर्भिक्षके समय आपद्धमंके रूपमें इन मागधी साधुकोंने जो विधिलाचार प्रहण कर लिया था यह वर्न -शर्न रूद होता गया और कालान्तरमें दिगम्बर- स्वताम्बर सम्प्रदाय मेदना कारण बना। मथुरा आदि मगधसे दूरस्थ प्रदेश दुष्कालके प्रकोपसे उतने अस्त नहीं हुए थे, अत ग्रहांके जैन साधु कर्णाटकी (दिक्षणी) और मागधी (उत्तरी) दोनो ही धारालोंसे अपने आचार-निवचरमें कुछ निलक्षण रहे। दुष्कालका यह प्रभाव अवश्य हुआ कि ४यी-३री धारी ई० पू० में मथुरामें बौद्ध और स्राह्मण धर्मोंने विदीय

तक एकर विकास और वे वैजवनिक वाल प्रसिद्धियां कार्य करें, व्यूर्ण कि प्राचीन पैन स्मूर्ण के विजयां को कार अपने नरस्तर कार्य में हैं। एसम्मेल प्राचीन विकास मान पूर्विष्ण का कार्य के प्राचीन किया मान पूर्विष्ण का कार्य के प्राचीन कि प्रमान कि प्राचीन किया कि प्राचीन किया कि प्राचीन किया कि प्राचीन किया कि प्रमुख की प्राचीन किया कि प्रमुख की प्राचीन किया मान किया कि प्रमुख की प्राचीन किया किया कि प्राचीन किया किया कि प्रमुख की किया कर करता। उपनी किया करियों कि प्रमुख कि प्रमुख की कर करता। उपनी किया करियों कि प्रमुख कि प्रमुख कि प्रमुख के कर करता। किया करियों कि प्रमुख कर करता। उपनी किया करियों कि प्रमुख कर करता। उपनी किया करियों के प्रमुख कर करता। उपनी करियों कर करता। उपनी करियां कर करता। उपनी करियों करता करता। उपनी करियों कर करता। उपनी करियों करियों कर करता। उपनी करियों कर करता। उपनी करियों करियों कर करता। उपनी करिय

रिया बोर क्यू में यह बार-बाप बरलर धनुवार क्यू हारोस्पूर्ण की कूछ बोर नेक्स बारहर्जन स्थितहर्ष जावक की र बनुवा स्वर वेर्ड, से नेक्स, में म प्रति बनोध्य ही विश्वस्था वहीं या तरह करें, होंग (बार, बच बार्कि), कुमारी बच पहुल, हुमान बार्कि सिंग्स केंट्रे निरंकी व्यक्तियों के चीर्काव्योकी वी सम्बन्ध प्रति सा नामुक्त केंट्र

एंको रिकार स्टेडाकर राजन वाकारायोथी पूर्वत वारोप्टा होनी यायाँ पूछा एंकर प्रश्नित पूछा क्या स्थापिक सावस्त कारो कर वास प्रकार प्रश्नित प्रश्नी क्या स्थापिक सावस्त कारो कर वास प्रकार कारा (कारावार्ट पूर्व कार्य वंदा करिया । व्यूक्त पूर्वाच राव स्थापिक स्वाप्त कार्य कार्य कार्य कार्य अपूर्व कर स्थापिक समाने और स्थितकर संस्थाधी डीको कार्य राज्य सम्भाव्य प्रश्नी सेन व्याप्त होरी स्थापिक सावस्त कार्य रूपी सम्भाव्य प्रश्नी सेन व्याप्त कार्य कार्य प्रश्नी कार्य रूपी सम्भाव्य प्रश्नी सेन व्याप्त कार्य क्या स्थापिक स्थाप विद्याल, दिलास्त्रम्म, बायागपट्ट, अष्टमंगलद्रक्य, देदिशान्त्रम्ज, तोरन्, जिनालय, प्रपा (वायदे)), चदपान आदिशे अवदोष प्राप्त हुन है। दर्ष प्रस्तर-सण्डॉपर ऋषम-वैराग्य, महायोर-म मादिशे भौराणिश दृश्य प्रस्ति है। कई एकपर दिनम्बर मुनियोशो और पुष्टरर लण्डवरन्यागी अद्य-फालक मायुऑकी मृतियाँ चरकोण हैं। भारतीय स्वा घर धादि विद्यां। नर नारियोंनी मृतियाँ भी निजी येपभूषामें अधिन मिल्ती हैं। शोर-ब्रीयन्त्रस्त सम्बन्धित अनेक दृश्योंसे मधुरा-नियासियाकी तालाखोन येपभूषा, अल्ब्रकार, मनोरजन, कलाप्रियता आदिषर सुन्दर प्रकाश पड़ता है। अपने उत्कृष्ट कारीनरीये कारण ये अवदीय आज भी भारतीय क्लाने गौरक माने आते है।

प्राप्त जिलालेखामें-से डेढ सौसे अधिक प्रकाशित हो चुके हैं और **उनमें आधेरे** लगभग तिथिगुषत हैं । अधिकाश यप संख्या ४ से ९८ तक्ये है। कुछमें शक महादात्रप रज्जुबल, बोडास, मैयकिके नाम अंकित है सीर मुख्म किन्ति, हुविष्क, बिराष्ट्र, वासुदेव आदि कुपाण सम्राटि । मयराये इन जिलालेखोंके आधारपर ही प्रयम चती ई० पूर के शक-सत्रयों तथा प्रथम व दितीय शताब्दी ई० के कुपाण-नरेशोका पूर्वापर एव कालक्षम स तोपजनक रूपमें निध्चिन करना सम्भव हुआ। इन अभिलेखोंमें भक्तीं-द्वारा विविध धर्मायतनो, उपकरणो, कलागृतियो एव लोकोपयोगी वस्तुओं निर्माण कराने और दान देनेके उल्लेख हैं। उनमें लगभग साठ जैन गुरुक्षा-का उनके विभिन्न कूल, बामा, गण तया उपाधियो-सहित नामोल्लेह हैं, लगभग तीस तपस्त्रिनी साव्यियानि, लगभग एक सी गृहस्य श्रावकों और लगभग पचास महिला श्रविकाबोंके भी नामोस्लेख हैं। इन लेखांसे पता चलता है कि उस समय विभिन्न वर्णी, जातियो, वर्गी और व्यवसायोंके भारतीयज्ञन तथा मथुरावासी यवन, सक, पह्नव, कुपाण आदि विदेशी भी जैनधर्मके भक्त ये । उनकी स्थियाँ भी स्थतन्त्रसापूर्वक पुरुपोंकी मौति ही धर्मका पालन करती थीं, बल्कि दान देने और धर्मायसनोंका निर्माण बरानेंहें उनने भी वाणे ही भी। राज्य ही बही में स्वेचकरे काणी में हो बरावी है। इस बातरें बातरें मार्गित्रमार्थ संकार भी गुण मार निक्त पूरा प्रदोश होता है। बमागार मैत्यस हम बायद बारिये बात विकार पर। यह मून परिप्तृता हमें पर बाराताओं प्राथमीन मेतन होता पर। में होत्यान मीर मेहनावार वहने बाता पर।

बदी बारण है कि बैनगंबरी बासे-बारबी गोकिन बहुवेशकी विकारते एवं दरेपानगांची पूर्वत पूर्वीका दोशों बाराई बच कि असे बीच कारकार बैठकी भाईको कलरोजर चारा करती का रही दी बनुसके बैंच बुद स्वर्थ इत गोर्नीने वृषक पहुंकर थी शुपलक्षका ही प्रवास करते में । बज शोगों ही नरमारासीने यनुगति मनेक वृद्ध समान करते समान्त हुए और जन्माना राष्ट्राचीन वर्त वीमी बादायायीके हीमशी कही किह द्वता । सर्वे बीर इती शावने प्रमुख्यपके नैतृत्वने वस अवस्थातन मध्यक्षात्रका जनवामी तक्षम क्षमा थी। एक क्षेत्रान्या क्षम्यकाम ब्रह्म करतेका रियान बरके होनों काँके बीच बच्चीया कराना बाह्य या और श्रीकांची क्या तीम वारामी वीचे पूर्वण मिणार्थ बार्रिश वाराष्ट्रीय । वर्श्यांचवारी बरियोंने के सम्बद्धक इसी नगरके देते. सैजानिसक विचारीका साहितिक बचार बारम्य किया को संग केरणाते कुठके वैश्वतको रक्षा करना चाहरत बा । और इसे नवरणे चैन बुध्याने बर्ध्यम्य वह नामा बरावणी आन्धे-सन ब्रह्मया जिल्ला वहेरण करमाराज्य जैनकुष्या बोबबन करावा बीर क्षेत्रीमें विजिल्न सामित्व-एकाला झारान कराव्य था ।

दोनों हो बाजबीक बेला बानजीको विशेषक करने बोर मुख्य ब्रोहिसका निर्मित करनेका निर्मित करने के। तुम्यु काम दासर दार प्रदे करूपने करा यह पश्चाद, पुणान जार्ग प्रीक्षित्वाची करेनों विर्वित्याने कर बनावन ही दाए था। अब्रोहके बनावे हो नेक्सपनाका प्रचार कराजिय कर पश्चात यह पह यह हिसे हुए क्रिमीसिटी बोर बनिक्त क्रिस्टावर निर्मा श्रीकाली बाहायकान्य प्रदास कर्मिंग क्रमप्रकी वाल्माको, सीति आदि बिद्धानोंके नेतृत्वमें ग्राह्मणीय साहित्यके प्रणयनकी भारी प्रोत्साहन दिया । उघर सिहलद्वीपमें वहींके राजाके आश्रयमें वीद-सघ पालि त्रिपिटकको सकलित एव लिपिबद्ध करनेका प्रयत्न कर रहा था। फलस्वरूप स्वय मारतमें फनिष्कके आध्ययमें अश्वघोप, पादर्व, वस्पित्र बादि बौद्ध विद्वानोंने चतुर्य बौद्ध-सगीति वुलायी स्रीर स्वतन्त्र साहित्यका भी निर्माण करना प्रारम्म कर दिया था। ऐसी स्थितिम मथुराके दूरदर्शी जैन गुरुओंने भी सरस्वती आन्दोलन-द्वारा अपने कट्टरपन्यी धर्मबन्घुओंने सकोच एवं सकीर्णताको दूर करनेका प्रयत्न किया, यह स्वामाविक ही था। ई० प० १६० के लगभग कॉलग चक्रवर्ती सम्राट् खारवेलने उही धाके कुमारीपर्वतपर एक मुनिसम्मेलन किया था। सम्मवत मयुरासंघके प्रतिनिधियोंके प्रभावसे ही उक्त सम्मेलनमें सरस्वती आन्दोलनका प्रारम्भ हुआ जिसका कि पदक्षेप स्वयं खारवेलका जैन नमस्कार मन्त्रसे युक्त वहुद शिलालेख या । मथुरामें इतनी बड़ी सस्यामें लिखाये गये तत्कालीन जैन शिलालेख उक्त आन्दोलनको प्रगतिके प्रतीक हैं। इतना ही नहीं, मथुरा सघने पुस्तकधारिणी सरस्वतीदेवीकी विधाल प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित करके इस बान्दोलनमें जान ही टाल दी। दूसरी शती ई० के पूर्वार्यमें कूपाण नरेशोंके शासन-कालमें बाचार्य नागहस्ति-द्वारा प्रस्थापित सरस्वती-देवीकी जो खण्डिस मृत्ति मयुराके ककाली टीलेसे प्राप्त हुई है वह न केवल जैन सरस्वतीकी ही सर्वप्राचीन उपलब्ध मूर्ति है वरन् अन्य सम्प्र-दायो द्वारा निर्मित उनत देवीकी ज्ञात मूर्तियोमें सर्वप्राचीन मानी जाती है। मयुरामें जैन सरस्वतीकी वैसी मूर्तियाँ बहुत पहलेसे ही बनसे लगी थीं इसमें कोई सन्देह नहीं है और इसी कारण ज्ञान-जागृतिके उस प्रथम महान् जैन आन्दोलनको सरस्यती-आन्दोलनका नाम देना उप युक्त ही है।

मयुरासे प्रचारित इस आन्दोलनका परिणाम यह हुआ कि दक्षिण एव उत्तर भारतके कुन्दकुन्द, शिक्षार्य, कुमारनन्दि, विमलसूरि, उमास्वामी बारि बरेक निक्रमायार्थ हेंडवी यनके प्रारम्बके वृत्ते हो सन्द-स्वमार्थे बंबाम हो नवे और मापनोंके नंतरावती बाधान बुन्तर करने करे। अप- प्रवस राती है. में 🖟 काले बन वार्राणानको विकासराचार्थि माने बर्गाइ आक्रवानको करानित हुएँ निकास कर राज्य तथा सारक-बरम्बराहे शाबारहे प्रमामगीन करमानुबीय अरमानुबीय और प्रवस-मुद्देलके भी अनुभा सन्ध रचने प्रारम्भ कर विके अवस्थि आनम-अन्तर्थ मीबिक प्रस्परा क्यके बाद क्षम जो चनवी शही । इस मापन वंकमनका

क्ट वरिकाय बार्ट हजा कि क्रिक क्षत्रपेरको अनुस्थाने दाख्या पाईचै वे

बहु म टक बस्ता जीर प्रथम धरी हैं के अभिनय नाथने र्जन हम जनसंब जबच्च दिवम्बर जाम्यान और श्रीताम्बर क्षम्प्रदान इन दी जेरीने क्षाके किए विकल हो बया। व्येकाम्बर वार्यके बाद बक्ती जानन-बरानराको वी दुछ एका हो निवसित करने अने बरिर बक्के बंदसमना विरोध भार-प्रोप को वर्ष कार क्षम करते रहे । बद्धरि बयरमाने दोनी पानेंद्रे दीय बसमाय एएक्वेड प्रस्तानी विकास हुए तबारि बनेश बरवानी-बहनीतन पुत्र तक्क हुवा । वक्कविवानक क्रप्रान्त मी क्ष्म्रोते. बाजी-बाजनी बीतो ही क्ष्मेंते कुम्म एका म बाजी

आपनी विकास रोज बनाज विकास सीच व स्तेताकर होते । अस्त्री अंध-साधारा मी बनानि रक्तन्य हो रखो । फिन्द बच शीवचा काजदाव भी नहीं मगान्य और बाध क्षत्र दोलींक बीचवी कही ही नवे रहे । कुदान बास्के क्परान्ध वर्ष ११८ १२७ वर २९९ (बस्मध्यमा धन वंश्त) के भी मेन विकारेच ब्युपने ताना हुत हैं। इस बावर्त पार्रावर बाधोग नन-धन्तरमक बंधधान इत प्रदेशकर पहा और ने को बैदकरेंके प्रति विदेशन पढ़े ज्यीत होते हैं। यनुसाधा लैंग संघ नीक्षेत्रक जन्मक बना पहा मीर कम्पनता प्रयान की करता रहा। बन वे ०--११३ ई के मान मार्ग सान्तिकाचे सञ्चलको सनुवर्ते हो स्वेदान्बर कानुबोधा इक क्रमीयम क्रफी डारा मान्य जावकनएम्बराधा चंक्रमा करनेके क्रियू ह्राय

किन्तु वह परस्पर मतभेदके कारण विफल प्रयत्न हुआ। इससे स्पष्ट है कि इवेताम्बर और सायद दिगम्बर दोनों ही सर्घोंना कहुर एवं बहुमाग अश्च मयुरायालोको सन्देशको दृष्टिसे देगता था और उन्हें दूसरे पक्षको ओर झुका समझता था। इस प्रकार जैन धर्मका एक प्रमुख केन्द्र बने रहने हुए भी मयुरामें ८वीं-९वीं छती ई० पर्यन्त दिगम्बर दवेताम्बर भेद उत्पन्न न होने पाया।

मयुरासे प्राप्त प्राचीन जैन अवरोपोंके सम्बाधमें अनेक देशी एवं विदेशी पुरातत्त्वर्गों, कला-मर्मज्ञा, इतिहासकारा और विद्वानोंने जो अपने अभिनत प्रकट किये है उनसे उपत अवरोपोंका घामिक, सास्कृतिक एथ ऐतिहासिक महत्त्व भली प्रकार प्रकट है। उनसे भारतवर्षकी साम्कृतिक अभिवृद्धिमें प्राचीन मथुराके जैनोंके प्रशसनीय योगदानका मूख्याकन करना भी सम्भव हो जाता है।

नाम वंश्य—नाम जाति मारतको एक आर्येतर ही नही चरन् प्रामार्य आदिम जाति थी। महाभारत युद्धके उपरान्त उसकी शक्ति एकवारमी प्रवल वेगसे जागृत हो उठो थो और उसने वैदिक अथवा आर्य शिष्य राज्याको प्राय समाप्त हो कर दिया था। नाम जातिके ही काशोके उरम वश्च और तदनन्तर मगमके श्रीश्वाक वशने प्रथम ऐतिहासिक भारतीय साम्राज्यकी नींव डानी थी। नाम जातिके क्षत्रियोको नाह्यण लोग प्रायम्धिम कहते थे। नामोंके अतिरियत वैसी हो प्रामार्य अन्य जातियोके भी अनेक प्रारय काश्य वश उदयमें आ गये थे। आरयशिय मुख्यत्या श्रमण्यरम्पराके उपासक थे, उनमें-से विज्ञ, लिच्छित, झरल, मल्ल, मोरिय, शावय आदि अनेक वशीने अपने गणत प्रस्पापित कर लिये थे। किन्तु नन्द एव मौर्य सम्रार्थोके ववृते हुए प्रतापके सम्मुख ये सभी गणतन्त्र हतप्रभ हो गये थे और शनै शनै शनै मगम साम्राज्यमें समा गये। पंजावमें आर्य जातियोंके भी कुछ गणत श्रेत किन्तु सिकन्दरके आक्रमण और तदनन्तर अप विदेशो शासकोंके कालमें थे सब क्षीणशक्ति और छिन्न मिन्न हा

जावी । अबके बाय-ही-काम अमेल पुराने ममराज्ये की किरते बतायन्त् हर । यह नामधारिका दूबरा ऐतिहाशिक पुरस्तान मा । बार-बराटक पुत्रके इतिहानके बद्धारवर्त्ता स्व वा नामीप्रचार बारबराक्के बनुबार इन काक्के जबन आप नाक्केंबरा करकार निविधाने हुआ था । पुरिषे बायन-वालमें यह नगर उपरामा ना राज-महिनिविधा प्रक्रिय निवाहत्त्वान था। है यू अवश्रम ११ में दिए नामक वान रामा शिरदाना धारक निवृत्त हुना और वहके सनगण नीविन रामराज प्रवर्णन और वंतरने अवद क्यों है व के बाउने जनवर हफ इन प्रदेशपर बानन दिया। श्रृतींके प्रत्यके बाद ने मान राजे हाथ स्पर्कत हो क्षे में दिन्तु कर्मानीमें विक्रमावित्यके स्वचानके सार्थ तथा शरनन्तर मक-बहुरानोकै नारच नाव बांच करनी पान्यानीनी निरिधार्ते ब्रह्मकर लाकिनरके विकट पद्मावतीयें के वर्ष । बहुई बनवर ई पू र हे बन् ७८ है. नवन नुपननी विज्ञानी स्थलनी पुरवश्य बत्तमग्रह, धरच्या विषया साथि सामग्रामि अन्यः स्थानन वास्त स्था। प्रतिन्य-हास चयर बास्त्रने कुरान बरित्तर। 🚁 विस्त्रार होनेके नारण

वने ने । जुनानोंशी अवनतिने बान बदायर शामनाति दिस्ने प्रकार्यने

पर्वतिने एकिए एक्टर को बक्कों कह पार करते हैं। इसी फराकी है के बरुपारि पूरान कालामके समित्र रिशो में बहुति रिपक्कर बर्चकरा है है। इस वा द्वारा वालिएएंटि हों को में एके बक्कों राजवारी बराकर कार्योंके साथ-मार्थक अध्यार पान करते करें। रह बर-कार्योंक व्यंत्र प्राथम बाल्क परन्यार (कालक पत् १८०-१७ हैं) वा और एक्टी में व्यू पीय अन्यार पर पहलार है। पहला द्वार हो है बरामार्थक पंचा विकों नावा हो। सो में इस कारण नामायारी यह पंचा रहा बार्या होता है कि इस्ता बाहुकर राज्य करता करता है। ऐसा बार्यों होता है कि इस्ता बाहुकर राज्य करता करता है

मानकोल सम्बारियमें नमें नये और हीयांशासद एवं बहच्युरके पर

det wern frett fi to Berg gillege, einesten albeiten

नव-नाग उत्तर प्रदेशके पूर्वी मागका एक स्त्रतन्त्र धामक या । उसका रत्तराधिकारी बीरसेन (१७०-२१० ई०) नवनागरे भी अधिक प्रतापी था । पजावमें यौषेयो-द्वारा मुपाणोंके विरुद्ध किये गये विद्रोहसे उत्पन्न अय्यवस्थाका लाम टठाकर बीरसेनने अपनी शक्तिका विस्तार करना प्रारमम किया । उसने बीघ्र ही कौशाम्बीसे मयुरापर्यन्त समस्त देशपर अधिकार कर लिया और कृपाणोंको उत्तर प्रदेशसे निकाल बाहर किया। उसने पदावती और मयुराको अपनी उपराजधानियाँ बनायों और उनमें अपने प्रतिनिधियों एवं उपशासकोंके रूपमें नाग उपराजवश स्थापित किये। पदावतीका यह नागवरा टाक्वरा कहलाता है और इसमें सोमनागसे गण-पित ना पर्यन्त छह-छह बासकाने सन् २१०-३४४ ६० पर्यन्त राज्य किया। मथुराका वरा सम्भवतया यदुवश भी कहलाता या। इस वराने भी प्राय इतने ही काल राज्य किया किन्तु इसके अमीतक नेवल दो राजाओं--कीतियेण और नागछेनके हो नाम प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त अम्बालेके निकट जुष्न नामक स्यानमें, बुलन्दशहर जिलेके इन्दुपूरमें और वरेली जिलेके अहिन्छनमें भी नागराज्य स्यापित हुए । सुदूर दक्षिणमें भी एक शक्तिशा ही ना। मण्डल था और राजवर्गाणीके अनुसार कश्मीरमें मी एक नाग वशका राज्य ग्हा प्रतीत होता है। मिन्तु उत्तर भारतमा इस मालका प्रमुख और प्रवान नाग राज्यवदा कान्तिपुरीका भारिदाद वदा हो या ।

वीरसेनके उपरान्त ह्यनाग, भयनाग, बहिननाग, चरजनाग और भवनागने क्रमश सन् ३९५ ई० पर्यन्त राज्य किया। इन नाग-नरेशोंने कृपाणींको अन्तत मारतवर्षको सोमाओंके बाहर खदेड मगाया और अन्हें ईरानके सासानी शाहशापुर (३री शती ई०का मन्य) की शरण लेनी पड़ी। तुपाणींका अन्त हो जानेके बाद भी मगधमें उनके महासामर अनम्परके वश्नोंका शासन चलता रहा। यही वश् सम्मवतवा मुख्य वंश मी कहलाता या। काम्बुख (हिन्दचीन) के राजाका एक दूर सन् २४५ ई० के लगमग पाटलिपुत्रके मुख्यहराजाके दरवारमें आया था।

चारी मुक्बींके बावन और यह वयरकी बीयन बाह ब लेशायका क्राफेस निकास है। यस निवेशी बंधके सन्त करनेता चेन नकारक निन्धा-बन्तिको है को जार्थियोंका एक महाबायन्त था । दक्के वपरान्त बन्तामें मी पुत: नावराञ्च स्वापित हता । क्रिक्त सववने वामीका राज्य स्वामी न रहा। जानीय विश्वविषयने नहीं बीज ही अपनी स्वतंत्र बस्त स्पानित कर को और पार्शकपुत्रको अपने क्यराज्यका रेखा बना किया ह बरदुकः इत बारॉकीः बातल-संबाधी थी बंधात्कक थी जारकित बचके मैठा में जोर करकी जन्दशस्तानें करता संबर्धे उनके प्रतिनिधि स्वरूप स्मीक नामधान्य तथा प्रशासन्य सीनास्ति है। यह नुनरे ननतन प्रचानी ही मधिक बोकप्रिय थी। वर्षी पंजाद क्यं चाजस्थानमें शेलेव अर्जनस्थ सारेप बारि, जधनायामें नाक्य जिहारमें निष्कीर बारि वाटिमीके बन्त प्रवासन्त है। किन्तु गांव शास्त्र व्यापन की और इन शन्द वर्षेकि अनुस व्यक्तियोको नारची कन्याएँ विश्वक्रमें देकर वैची सामन्य स्थापित करके बंगमन्द्रभारित बहालेमें तत्वर थी। वर्तक विपनमें भी वे गरम बचार और वहिन्तु में । क्लकी आदिनें क्षेत्र और प्रैन दोनों ही वर्जीकी बन्ति थी । निविधा पद्मानकोपुर, तमुद्दा सदिश्वाप सारि वनके अनुस केन्द्र बैनवर्षके की महिन्द्र तीय वर्ष प्रवास केन्द्र में 1 मेर अनुसूतिवींहैं नान नाजिको निविद्य स्थान आखा है, वे प्राचीन निवासर्रोष्ठ बेधक कहै मी है। स्वाप्तय कथायी नागर ग्रेडी वर्ष मानेवन्द बारते निरिष्टे मारिफारफा भेन मी कर्ने ही दिया काता है। अनेफ करर बान मी क्षमके बावकी स्मृति बनावे हुए हैं। वैनींकी बचायतीपुरबाब बादि बातिकी मी क्या मत्त्रपुरके नामधवाजीनाच सैनवर्गके अध्यक्ती सुवित करती हैं। बन्दीने सफा राज्यनिङ्क वी. वीर्ड साम्बर्शनन वहीं एका था वरन् बंबा-बक्यफे बन्तर्वेडको विदेशी शासनके मुक्त करनेके कारण करत सहरू नरिवोरो ही बाला चाराविष्क बनावा वा । सर्वे एव बारिका बोसिक

मतर्ताम इमिद्राच । एक धी

111

कैनाकान पार्शकरहरिते सम्बन्धित जनसन्तिने तो पार्टाकरूकर अस्ता-

लाष्टन था । सर्प साष्टन विशिष्ट तीर्यंकर पार्वकी परम्पराभवन नागजाति नागमण्डित यागिराज शिवकी ओर भी आकृष्ट हुई इसमें क्या आस्तर्य ।

चकारक चंश-नवनागवशका अन्तिम शासक भवनाग पुत्रहोन था, उसके मात्र एक काया थी जिसे उसने अपने सामन्त विन्ध्यदानित वकाटकने पौत्र और प्रवरसेन वनाटकके पुत्र गीतमापुत्रको विवाह दो या । गीतमी-पुत्रकी भीत्र ही मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र रुद्रसेन वालक या, कि त् वह अपने पितामहके छाटे-से राज्यका हो नहीं बस्कि अपने नानाके विशास राज्यका भा उत्तराधिकारा था। भवनागकी मृत्युके उपरान्त प्रवरसेनने अपने पोतेके सरक्षकके रूपमें भारशिष और वकाटक दोनो राज्यांको सम्मिलित करके बासन चलाया । यह वहा खिवतताली राजा था । चारा दिशाओं में उसने दिग्विजय की, विशेषकर मालवा, गुजरात और सौराष्ट्रकी विजय बरने उसने ४थी छती ६० के प्रारम्भमें उस्त देशोमें चप्टन-वडी बक्त क्षत्रपोंके बासनका प्राय अन्त कर दिया था। अब वकाटक शक्ति भारतवर्षकी सर्वोपरि राज्य-शक्ति थी । सन् २३५ ई० में प्रवरसेनकी मृत्यु हुई और उसका पोत्र एव उत्तराधिकारी रुद्रसेन प्रथम (३३५-३६० ई॰) गद्दीपर बैठा । उसके राज्यमें उत्तरप्रदेश, मध्यभारत, मालवा, गुजरात, सौराष्ट्र तथा दक्षिणके भी कुछ भाग शामिल थे। उसके अतिम दिनोमें शकक्षत्रप रुद्रदामन द्वितीयने फिरसे सौराष्ट्र एव गुजरातपर अधिकार कर लिया। रुद्रसेनक पश्चात् पृथ्वीसेन वकाटक (३६०-३८५ ई॰) राजा हुआ। इसका पुत्र रुद्रसेन द्वितीय था। इस कालमें मगुधमें गुप्त माम्राज्यका उदय हो रहा था। वकाटक रावित अब मी प्रवल थी और पश्चिमी शक क्षत्रपोका अन्त करनेमें विशेष रूपसे सहायक हो सकती थी । अत गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वितीयने अपनी कन्या प्रभावतीका वियाह रुद्रसेन दिसीयके साथ कर दिया । विवाहके पाँच वप उपरान्त ही रुद्रसेन-की मृत्यु हो गयी और प्रभावतीने राज्यकार्य सँभाला। वकाटक सेनाओको सहायतासे गुप्तसम्राट गुजरात सौराप्ट्र आदिसे भी शक सत्ताका उच्छेट बारेंदे बद्धम हुए और जनावरीकी मृत्युदे जनानत बंबारब राज्य मी

तुन सारामार हो से बह हा सा ।

के बहान सेवी मोरा भी नामकार (मृत्ये के मार्गन) भी दे पाने
सानवारमा में देवाब जान सामार हिर्मास्त्र के मार्गन के स्वाप्त मार्गन हिर्मास्त्र के मार्गन हिर्मास्त्र के स्वाप्त मार्गन हिर्मास्त्र मार्गन हिर्मास्त्र मार्गन है स्वाप्त मार्

क्लोम्बुड होता करा बता। बीच बेचर्क सारकार सारत स्वर्ध कर करा [ब्यु सारकार प्रमुख केरोको बोचकर सम्बद्ध करे विश्व रख होते स्वतः हुद चीरनियोजी भारका और सैंप की स्वीतनीर समझ्

एवं न्यारक होते समे s

अध्याय ५

प्राचीन युग—चतुर्थ पाट

उत्तर भारत (सन् ३००-१२०० ई०)

षीयी शताब्दी ६० के पूर्वार्यमें नाग-वराटय गुगनी समाजि और गुज साम्याज्यके उदयो नाय-ही-साथ भारतीय इतिहासक प्रामीय गुगवा पूर्वार्य ममान्त हो जाता है और उसके उत्तरार्थवा प्रारम्भ हा जाता है। इस उपयन्त कालमें ऐतिहास सायनाको विविधता एवं प्रचुरताके कारण इतिहामकारका वार्य भी पहलेकी अपेका अधिक गुगम हो जाता है।

शुष्त घंश--गृष्त वंश मूलत सम्मवसया प्रापीन प्रास्य जातिका सी
एक ऐसा अंश था जिसने पैश्य वृत्ति अगीकार कर लो थी। किन्तु प्राचीत
पालमें और विशेषकर स्रमण परम्पराने अनुयापी प्रास्य आदिकाँमें वर्ण
जमत नहीं वर्मत या और वर्णपरिवर्तन सहज या एयं व्यक्तिमन स्वैच्छापर निमर था। अस प्रारम्भिक गुष्तलोग राज्याधिकारी और मामत्त
आदि भी रहे प्रतीत होते हैं। चन्द्रगुष्त भीयके शासन-कालमें उसका एक
पर्मचारों जो गिरनार प्रदेशका शासक था वैदय पुष्पगुष्त था। स्यूराके
एक शक्कालीन जैन शिल्मलेखमें एक गोष्तिपुत्रका उस्तेग है जो शक्तो
और पह्नवींके लिए 'कालक्याल' सद्भ कहा गया है। उसकी जननी गुष्त
वशको कत्या रही प्रतीत होती है। इसी प्रकार भरद्वतके एक स्तम्म छेशमें
एक अत्य गोष्तिपुत्रका उस्लेग है जिसका नाम राजा विसदेव था।

ऐतिहासिक गुष्नवशका प्रथम पुरुष राजा श्रीगुष्त था जिसने नाग-वकाटकों द्वारा मगपसे राक शासनका उच्छेद कर दिये जानेके मसय मानमाहे ४ योजन पूर्वेची जीर जाना एक छोटान्सा शाम स्थापित वर विया ना । वह प्रदेशमें भोड वर्षको अनुति भूक मधिक थी यह सम् बी इसी वर्षका अनुवारी रहा जडीत होता है। मुख्यका बनके निकर दमने चीती बोद वार्षिकी निवासके किए एक विशापन निर्वाच में बराय बहाबा चाता है। क्याना बताराविकारी शटीरकवर्षय का निक्ते 'बहाराज रहरी बारम की। इतका कृत चन्द्रदात प्रकार का और बस्के 'बद्धाराजा बराव' क्यांवि कारच की । ऐतिहासिक कुछ बंदारा नहीं प्रवन बब्राद या और कन ३१९-२ ई में इसके शाम्माधिकेको ही गुण सक्तको प्रपत्ति हो। सामा कालो है । यहारी सम्पर्ध कर समय किस्ब्रहीनम र्वाश्यानी वा । पार्टान्युवयर की बक्षका बर्विकार का । कनायुक्ते बार्टक्रिक्ट क्रिक्टि वरेसकी एकस्त्र क्या क्यार्टकीक बाद स्थित करके अपनी प्रस्तिका विन्तार किया । इन कम्बन्बकै कारक पार्टानपुत्रपर थी बक्का जरिकार हो। नवा बीर किन्द्रविश्वका समान प्रदेश बसके राज्यका जंग वह बसा । परिचक्की बोर एतर ब्रहेपमें की उन्ने अपने राज्यका विस्तार दिया । विष्यविक्षीके प्रति वासाला प्रकट करते के किए क्यमें क्रिक्सियम्या गुजाधीयीकी। पृथ्वि वी बचने बान 🗗 बचनी स्टार्जी पर सांबद कराजे बीर नेन्य रामिबॅकि क्लोड क्लंड वस रास्ते इर डो क्योरे उन्दर्भ विकास-वीदिन वनुरक्तको सन्ता क्यार्शकारी क्याना । चनान्य प्रचले कानकाय का ११५-१२८ है तक राज्य किया और क्य ११९-२ हैं में बरमगत्रया क्यारे पार्ट्सपुरने बदना शास्त्रानिकेट करके स्थापी समाद श्रीविश विका था।

समुत्रमुस (१२८-१०८६) १ए वरण कामो बीर बहुन् निनेत काम् वा जन्मी विकासके कारच वह शासीय सीम्पर्ट क कारचेर नाम बाता है। आस्मते वर्ष पुरस्काहम सामा वरणा वर्षा वाचने केन्द्रमें वर्षके जन्म पार्टीमें वर्षके निपन्न निर्मेश किया है। बहुन्दुन्तन बीम हो विम्रोहण स्थान कर रिचा स्मृत्यन्त वह सिने यके लिए निकला । सर्वप्रथम उसने बहिच्छत्र-नरेदा अच्युत, पद्मावती-रेश भारशिव नागसेन और पुर्वी पजाबके कोटकूल वशी नरेशको विजय हरके अपनी आर्यावर्तकी विजय पूर्णकी। तदनन्तर उसने दक्षिणकी वनयगत्रा की और दक्षिणकोसलके राजा महेद्र, महाकान्तारके याद्यराज, कोशलके मटराज, पिष्टपुरके महेन्द्रगिरि, कोटट्रके स्वामिदत्त, रेरण्डपल्लके दमन, कांचीके विष्णुगोप पल्लव, अवमुक्तकके नीलराज, वेगिके हस्तिवर्मन, पाल्लकके उग्रसेन, देवराष्ट्रके कूवेर, वौम्यलपुरके घनजय आदि विभिन्न छोटे-बडे राजाओंको पराजित करके उनसे अपनी अधोनता स्वीकार करायी । उसकी दक्षिण यात्राका लाभ उठावर उत्तरके अनेक नाग, वकाटक तथा अग्य राजाओंने विद्रोह कर दिया था. अत लौटकर उसने उनका नमन किया और उनमें-से अनेकोंके राज्यको अपने साम्राज्यमें मिला लिया । समतट, कामरूप, नेपाल, दवाक और कर्तपर बादि प्रत्यन्त राज्योंको उसने अपना करद बनाया, आटविक राजाओंको परिचारक बनाया और मालव, अर्जुनायन, यौषेय, माद्रक, आभीर आदि गणराज्योंसे भी अपनी अवीनता स्वीकार करायी। अविश्वष्ट शक् महण्ड सादि राजाओंका भी दमन किया। इस प्रकार इस महान् विजेताने प्राय सम्पूर्ण भारतमें अपनी विजय-पताका फहरायी और पाटलिपुत्रके गुप्त साम्राज्यको अपने विस्तारको चरम सीमापर पहुँचा दिया। इस उपलक्षमें उसने नवीन सिक्के चलाये तथा अस्वमेच यज्ञ किये। किन्तु ये यज्ञ प्राचीन वैदिक धैलीके हिसा-प्रधान यज्ञ नहीं ये वरन् दान-पुण्य, दोन-दरिद्रोंकी सहायता आदि ही इन संकेतिक यज्ञोंका प्रधान अग या। इस सम्राट्के गुणों, विजयों एवं कार्यकलापोंका सुन्दर वर्णन प्रयागके मगोक स्तम्भपर उत्कीर्ण इस नरेशकी विस्तृत सस्कृत प्रशस्तिमें पाया जाता है निसमा रचियता उसका सन्धिवग्रहिक महादण्डनायक हरियेण या। सम्राट् समृद्रगृप्त विद्याव्यसनी, सगीत और कलाका प्रेमी, वीरपराक्रमी, क्राल सेनानायक, महान् योद्धा, उदार दानी और धार्मिक नररत्न था।

बह जाने दुनने वैदिक वर्तना बहुवादी था किन्तु परवर्तनीरान्तु से ना । कर्मा सम्पन्ति रागदावेदी वी विकास दुन करदुका द्वितीय या। सन्द्रमुख द्वितीय विकस्मादित्य (१ ९ ४१४ ई)—वागदुनकी मुन्ते करामा कर्मने नीत प्राप्तकानी विद्यानवाद सरिकार कर निस

विन्तु वह नियम बीर कामृद्ध वा वाह्यात्राके खनेक बाक्नाने दिशेह बिया और निवेश्वर बाल्बार-मध्यातके तुत्राओं और नरियमके सक-बारतीन निर प्रक्रमा । धा नि नाच बद्धवे रावन्त्र बन्दी हुवा बीर बन्ते इन यापार अपन जान बनाने (६ वह छक साहान) बामी राजी धनोती मर्थात कर देशा । क्ष्मू काप्रकृतिक श्रवदेशीका केत वसावर समने मरचाना इत्ता कर के और आईश एश विका । नाहने प्रवे भी मारबर बनन निवानकार व्यविकार कर किया और शुक्रेपीडी मर्कनी रानी बनाया । अपनी पहानी सरनी पृष्टे एलागाडे बत्यम करूपा प्रमापनीका रियाह बसने वंशाटक बाहेनके बाच कर दिया बीर बनाग्य प्रतिक्री बराजनाने नजरानके शक बहासकर क्षित्रेनका वस्त्रीता विचा । वस्तुकः बक्त मात्त्ववर्षे बर्गेश उच्छेर ही कर दिया और करारि क्वं दिश्या-स्टिर रिस्ट प्राप्त निवे । कार्यनीयो थी क्वने क्रश्ती गुज्याची बनाया । क्ति-शास विभिन्न वाजारणा बबहर १९के वह बास्त्रवर्षमा महत्त् प्रवासी बन्नार हुन्य । यह बाहिरक-परिक और पुलियोगा बनुस्य प्रथक थाना या । वानियान सार्थि बसनी सनाके नपरान् बोक्जबिट हैं । सबीके क्यमंद्रे इस वयने मानवन वर्मनी अमृति हुई और कुरानरेख नरवजायका परमञ्जारक परमेश्वर महाराजाविश्वम बहाराने करे । यह बचाद वर्ष-वर्षनिहानु, क्यार, शमग्रीक गीतिनितृत्व असम्बर्धास्य और नदास्त्री षा । वासामने गुक्त-शान्ति और बन्दि वी अल-विदान और कमानी मनुतपूर्व क्रमाविते क्रम मुनको जारतीय व्यवस्थान स्पर्वतृत वदा दिया । बक्रमें बक्रावेश का भी किया बहाबा बाला है। बक्रमे बक्रमें बनेन

विकारिक निवारी है। महरीकी स्तान्त केवारा प्रतारी श्राप्त वरिवारी

मुछ विद्वानोंके मतसे वही था। उसके सिक्के भी मिलने हैं। घीनी यात्री फ्राह्मान (३९९-४१४ ई०) ने इसोके समयमें भारत-यात्रा की थी।

कुमारगुप्त प्रथम महेन्द्रादित्य (४१४-४५५ ६०) पट्ट महा-देवी घ्रवदेवीसे उत्पन्त चन्नगुप्तका पृत्र था। इसके समयमें विशाल गुप्त माझाज्य असुण्य रहा, बल्खमे लेकर बंगालकी खाडी पर्यन्त उसवा अवा-चित शामन था। गुप्तावित इस समय अपने चरम शिखरपर थी, सर्वत्र मुख्य शान्ति और समृद्धि थी। सझाद् परम भागवत था किन्तु जैन, बौद्ध आदि प्रय धर्म भा स्वतायतापूर्वक फल-फूल रहें थे। इसने भी अध्वमेध यझ किया। मध्य भारतमें पुष्यिमशोने चिद्रोह किया किन्तु मुमार स्वाद-गुप्तने उनका दमन किया। बर्वर ध्वेत हूणोके आक्रमण भी इस मझाद्या अतिम दिनामें शारम्भ हुए। इसने नये सिवके भी चलाये। मालन्या विश्व-विद्यालयका उदय भी इसीके समयमें हुआ बताया जाता है।

स्कन्दगुप्त चिक्रमादित्य (४५५-४६७ ६०) का वहा भाई पृक्युप्त उसका प्रमल प्रतिद्वन्द्वो था, किन्तु पृष्यिभिष्ठा और हणोंके दमनमें अदमुत बीरता प्रदिश्ति करने के कारण स्कन्दगुप्त लोकप्रिय हो गया था और पिताको मृत्युके बाद बही साम्राज्यका अधिपति हुआ। उसने सिहासन-पर बैठते ही समस्त प्रान्तोमें घामक नियुक्त करके शासन-भ्यवस्था ठीक की। उसने पर्णदत्तको सुराष्ट्रका गवनर बनाया। पर्णदत्तके पुत्र चक्रपालितने जो जूनागढ़ (गिरनार) का नगरपाल था इतिहासप्रसिद्ध सुदर्धन वालका जीर्णोद्धार कराके वहाँ शिलालेख अकित कराया था। स्कन्दगुप्तके शासनकालमें हुणोंके आक्रमण बराबर होते रहे और उसका सारा जीवन उनके साथ युद्ध करते ही बीता। मिटारीकी विष्णुमृत्तिके लेखमे इस सम्राद्धार देशको हुणोंसे त्राण दिलानेका वर्णन है। युद्धोंके कारण देशको समृद्धि कम हो गयो, राजकोप भी खालो हो गया, उसके सिक्के भी हलके तथा मिश्रत स्वर्णके हैं, किन्तु इसमें स देह नहीं कि उसने साम्राज्यको अक्षुण्ण रसा। गुप्त बशका वह अन्तिम महान् सम्राट् था।

म्प्रकार मानुनुष्य वामानित्यका अधिकार प्राप्त वाला है। ठीरमापके नैगुष्पमें हमीने चिर जनन जाजनम दिने । बन् ५१०-११ई में फल्युपाने कोई पुरी बाद परानित भी किया, जिल्ह बालका प्रचार नवृत्ता ही क्या । मुख राज्य कर वस्त्रको नवुरा परन्त शतार भारतमें हा बीतिय रह करा वा । हुनौदे जात्रमवेले करणा विषय परिस्थितिया साथ बटायर जनेक अल्डीन बागक चालचा एवं क्यसने स्थाल हो भने में १ सम्बन्धे नाकराके

बड़ी बहाबजा की की जानके बरवान चौज्यातुम्ब दरबर हवा जिबने करवय ५ ७ ६ - इक राज्य विका । इत्तरे बुद्धने आधा वीई बाल नहीं जिया मा प्रकृष निरुद्धाने कामणी कामा बिरुक्ते बह्नी हुई निरूप्ती है । यह धारा रैप्यक्क्सी रहा बारेश होता है। इनके क्यारान्त कुछ मान्यान्त निमानिका होते कहा । क्यके परिचयी

रिम क्यापि कारण थी। यह थी बीदा का । समके बावार्व भी मुख नाग्राम्बर्भ हान बारो खा क्रजारराम क्रितीय (v ३-७३ () केंग्बर और नरसमायस मा । राजने बसान्काले मानवाको दिश्ली विश्वय कर सिवा । समाने बाद सुपार्मा राजा हवा निवने कवनव ४४५ ई। इस साम्य किया । वस कुछ नरेब किरव बार्टालपुवर्वे ही रहने क्षत्रे थे । शासाम्बक्ता दिश्हार बंदुविद हीया ना रहा था । मुख्युत्व वर्षेत्र शीद वह कोए वरसन्दा स्थितही हत्त्वे

न ह्यादे बाजनबंदे नवन हो बाली व्यक्त बहुत्ती कन कर ही की। बर्ड अह रक्तरह ही गा। जो जीवा है। इनके समार्थ मान्ये तथा क्षीत कोलन के भी कुछ मानवर अपना अधिकार अह विशेष मर्राराद्वगुरू (४ -०३ ई.) पुरमुखका पुत्र वा । १९वे 'बामा-

पुरुत्ता (४९७-३ ६)--वदश्यक्तके कोई वृत्र में बाजन बनशाबता कार्ट पुरमुख वी अब बुद्ध हो बुधा वा नकार हुवा। सा बीच वर्षश बनुवारी का और एक निर्देश सामक था । वराष्ट्रक मरिग्रेषेत- नरेश प्रमुख हैं । इन्हीं रावित्रयोंने आतर्स उपीका उच्छेद्र किया । गुप्त नरेगोंका मूर्व अस्तगत या, धराकी कई शाराएँ हो गयी थीं । ५३५ ई० में मानगप्तको मृत्यु हुई और कुमारगुप्त सुतीय गद्दीपर बैठा । तदनन्तर दामोदरगुप्त राजा हुआ और उसने लगभग ५५० ई० सक राज्य किया। इम कालमें कन्नीजमें ईशानवर्मन् मौलरिने स्थतात्र होकर सम्पूण मध्यदेशी गुप्त जासनका अन्त कर दिया । दामोदरगुष्तके उपरान्त महासेनगुष्त राजा हुआ। छठी रातीके अन्त तथ वह जीवित रहा। उसके समयमें गुप्त वंशकी शक्ति फिर कुछ मैंसली। उसके पुत्र कुमारामात्य देवगुष्तने मालगापर अधिकार कर लिया और वहाँ स्वतात्र पासककी भौति राज्य विया । यह महाराज देवगुष्त जैनचर्मानुयायी था। इसने बगालके गुप्तचंशी शासक गशांकके नाय मिलकर गृहवर्मन् मौत्ररिको गुद्धमें पराजित किया और मार हाला। इसपर गृहवर्मन्के माले, धानेदवरके राज्यवर्घनने देवगुप्तपर आफ्रमण किया और उसे पराजित किया। इस पराजयसे देवगुप्तका वित्त संसारसे विरक्त हो गया और वह अपने ही बसके जैन मुनि हरिगुप्तसे दीक्षा लेकर जैन साधू हो गया । उसके साथ ही माल्या व मध्यमारतमें सदाके लिए गुप्तवदाका अन्त हो गया। उसके पिता महासेनगुप्तने अपनी बहुनका वियाह धानेत्वरके आदित्यवधनके साथ कर दिया था और देवगुप्सका छोटा भाई माघवगुप्त अपनी बुआके पास यानेध्तरमें ही रहता था, अत राज्यवर्धन और हर्पके साथ उसकी मैत्री रही। महासेनगुष्तके बाद पाटलिपुत्रके गुप्त राज्यका माधवगुष्त ही स्वामी हुआ। उसके चपरान्त बादित्यसेन, देवगुष्त द्वितीय, त्रिष्णुगुष्न और जीवितगुष्त क्रमश गुप्तोंके सिहाममपर बैठे। ७वीं दातीके अन्तके लगमग जोवितगुष्तको मृत्युके साय-साय गुप्त वदा और उसके राज्यका अन्त हो गया।

यद्यपि गुप्त साम्राज्यमा अम्पुदय काल समुद्रगुप्तसे लेकर स्व द्युप्त पर्यन्त लगभग हेंद्र मौ वपका ही रहा तथापि ४ थी से ६ ठी शती ई० पर्यन्त सीन सौ वर्षका काल भारतीय इतिहासका गुप्तयुग कहलाता है। बद्ध स्थलना बारलका स्थम कृत वा । अपने श्वरमेण्ययः कासने युग्त समाद् 'मातनुर्वातदीय' में अश्वीय वर्ष मार्गरक बालन मुख्यप्रैयद पा न्याम-विवास प्रशास और नवम का अवत मुख्यानील और समृद्धि में । रिवित प्रदोग बन्दे न्य अवसात धेनियों और निएवोर्वे सबी प्रकार मृत्यदेश बन्द्रशा रहाने था। बन्द्रस्टीय 🗗 बडी बन्ध-का हिरिय मान्त्रि १४-परिचन एवं विकास शाहरी देशींके बाल बारशका स्थापर बरा-पदा या । रूप-मंग्राणी लावनुताई वेयले स्वतको प्रयुक्ताकी चीरणावक है । इन कालमें विविध क्यारीमी वर्ष कवित ककामानी बाहुउ-मुझ प्रप्रति हुई । जंगर मारतको कार्न नाकर वा क्यारक ग्रीमीके किकर क्षेत्र पंत्रप्रोतः तिर्वाच १पी कालमे प्राप्तय हुआ । जीन बीज एवं बैप्पय ममेंके बार्निय नुनक्षवाका हो अववृत्र विकास हुन्छ। देशमह सीर निटारीके विभागित तथा देवरत आर्थित संपर्धनार बन्धेसचीर है। विषयम एवं संदोतके की अध्यक्तीय कर्मात की नवस्थित वार्त्यतान जारित मुक्तपु, इनदो बान, विकास कृतक याहु स्टिइनेन, द्वरिनेच दरिकीति मारि बनेक श्रीकांचे माध्यीके सम्बारको बच्छा सिना बराइनिहर बार कु बबर कि, ब्रह्मपुष्ट पुरस्कार कारिने निकालको और ईस्पर हुव्य हिन्ताम बनुवन्तु, बन्हरि धावदेवरि शिव्यतेन बाहिते हर्छन क्षं भाग कारको अनुभा गाँँ अकन की । अनुक हिन्दू नुराद्ये और वर्ष-मार्ग्यको मी रचना पत्री कावमें हुई । बारखीय बसी जोर बंस्कृतिका प्रपार देवाची श्रीकामीची जोवकर नाम कृषिया एक क्या श्रीवम एवं पृथवें बर्गो, मन्त्रया स्थान दिग्यपीत, अंद्रा पूर्वीद्वीत सन्द्र जादिने मी पहुँचा बीर अनेच चारतीय क्यांनवेश वर्ष आरतीय राज्य क्या देशीने रचारित हुए । जीनी वार्तिगेतिः विकासीते श्री तत बानसी देख-बबारर सन्वर मन्त्र पाता है। वर्ग स्वत्युवर्गे वैद्यवी निवयत ही बच्चीनुवी बमति हुँ । गामिक एडिए एक मुक्ते धावपत का कैत्वक कैन और कीड भारतीय प्रतिदान्त एक प्रति 174

तीनो हो प्रधान धर्म समुन्नत स्वामें सहयोग एव सद्भावपूर्वक फले-फुले। गुप्तवदामें प्रधानतया भागवत धर्मको प्रवृत्ति थो और प्रमुख ी सम्राटोंके समय वही राज्यधर्म था किन्तु इस वशके कई, विशेषकर उत्तर-वर्ती, राजे बीद धमके अनुयायी हुए और कुछ एक जैन धर्मके भी। गाज्यवशके स्त्री-परुपोमें स्वेच्छा और स्वरुचिके अनुसार इन तीनो ही धर्मीके अनुयायी रहे पाये जाते हैं। गुप्त-नरेश सर्वधर्मसहिष्णु थे। धार्मिक अत्याचार या प्रतिब योका उस कालमें नोई चिह्न नहीं मिलता। जहाँतक जैनधमका सम्बाध है यह समुत्रत दशामें था। वर्णाटकको केन्द्र बनाकर प्राय परे दक्षिणापयपर दिगम्बर सम्प्रदाय व्याप्त था। गुजरात, सीराण्ट, पश्चिमी राजस्थान भीर मालवामें स्वेताम्बर सम्प्रदाय पमुल था। उत्तरापयमे मयुरा, हस्तिनापुर, अहिच्छत्र, भिन्नमाल या धीमाल, कोल. उच्चैनगर, कोशाम्बी, देवगढ़, विदिशा, श्रावस्ती, वैद्याली, वाराणसी, पाटलिपुत्र, राजगृही, चम्पा, पहाडपुर आदि जैनधमरे प्रसिद्ध केन्द्र थे। पजाबसे रेकर बंगाज तक जैन मुनियोका स्वच्छन्द विहार था। प्रधानत दिगम्बर दवताम्बर लगम सम्प्रदायोमें विभवत तथा अनेक गण गुच्छ शाला पुन आयमा आदिके रूपमे सुमगठित चतुर्विष जैनसप एक परिपृष्ट लाक गरिन या और जन-जीवनपर उसका पर्याप्त नैतिक प्रभाव था। गुप्तकालीन उपलब्ध जैन अवशेषीय मयुरासे प्राप्त प्रस्तरमयी जिनमृत्तियाँ, यध-यधियोगी मूर्तियो एव गई विलालेख, कहाऊँ (जिला गोरखपुर) का पंच जिने इकी प्रतिमाओंने युवत लेलांकित जैनस्तम्म, पहाइपुर (बगाल) सं प्राप्त तथा पंचस्तूपा वयी बाग्ताके दिगम्बर गुरुओं-द्वारा उम्बोध मराया हुआ तामपत्र जिसमें बटगोहालोके जैन अधिष्ठानको किसी पाह्मण रम्पतिन्द्वारा दान दिये जानेना उल्लेख है, विदिशाके निकट उदय-गिरिभे शिलाऐस गुन्त की गुरामदिर, देवगढ (जिला सीसी) के प्राचीन देनमं दिर बादि प्रमुख है। मगपके जिस लिम्छिय गणको सहायतासे तथा ल्प्छिब राज्युमारा युमारदेवीचे साथ विवाह गरनेक नारण पन्त्रगुन्त क्षत्रका क्यारेगा हमाना मीर राह रावापत्रही नीव वरी की पर क्षाचील कृष्य र्वाचारिक कृष्य बरावारक 🖸 वेक व्या मी । वसने हैं स बरंबी क्वान की वागुला रिलेप विक्रमांशिकी बमार्थ गृशीय हैरे wa mine met gier am I mielen fegre in freieri-बार मा अपने हैं कि बह को जिल्लाम बन्देय नवीन बारण है कि सह रिल्डराकार्र महारह हर्गयीतकात हे. स्थापन विद्वार क्या व । कार्यक के बरायान बांधरावे ३५६ हाला। हं बये अध्यक्त को मेवत वर्ष किए र्वालको प्रचारिक है। पुरारता के बक्काव साराध्योधे प्रवस्तालक से विश्वास्तर बार्व नरमधीय लिया बलावक चुन्त्रवयक स्थित वरवाहाची नामव विशेष बैंद दिसान 'पराण के राज्यानुन्ति दिस्सा के शायक बहराजियों र्का पूर्वांच्यो नरोष्ट्रांच क्रजराम्बर्ताः । नन्तरक्षेत्र विषयः विदानीय सुरक्षये मा राषा घण्णीतार वराता या. बहाई । ईशालाब का प्रवीद समयका है जिसमें इस मोधवी बर्धना है । इसी कामने शह (बंबान) के जुद्र मैंन मनिने स्वताने आकर जिन्हानि प्रांतीका बनारी की । पुत्रनान्याको एवं रिया बंद्रोतनम् (७७८६) परम्पानुष इतिहास्त्री जनस्यवेडी बाद शावतरम से क्रिकेटी क्लिकि बाद यह तबसे हारवरिय गीरवासकी माने बेम्ने नरता काके जब काना जना बचाया वां हाती हरिगाएके रिया राज्य वेशका में को कहा कहा है के ब्रमानकी बासराहे राज रेब मैं । पारमान दिगंपके बाननवायन बानेवाने पीनी बादी परद्वालये प्रमुद्ध बारणके विशिष रकानीये जिस बोद्धेतर शालुओं सरवारायी और वर्णी क मंत्रामारी रामा या उनकेने बनव बेन के बहु उन्त करनेने प्रानी प्रशास

कृषिण होता है। उनक सम्मार इस रिगायक्षेत्रके हुमाय भारत्नेयमें असा असून और मुनो है। पररहारको निकानही और बेचारत कुछ नहीं है। सीम चाण्डाल कहते हैं। वे नगरके वाहर रहते हैं और जब नगरमें आते हैं तो सुषनाके लिए लक्डो बजाते चलते हैं जिससे लोग जान आर्थे और वचकर चले। जनपदमें कोई भी सूबर या मुर्गी नहीं पालता, न जीवित पशुओको वेचता है। न कहीं सूनागार और मद्यकी दुकानें है। केवल चाण्डाल ही मछली मारते, मृगया करते और मास वेचते हैं।' चीनी यात्रीके वर्णनसे प्रकट इस तरहका आचार-विचार जैनधर्मके व्यापक प्रभावका ही फुल न्हा होगा । मद्य-मास, मछली, प्याज, लहसुन, मृगया आदिका सेवन न हिंदू वर्ममें विजित था और न बौद्धधर्ममें। इन वस्तुओंका ऐसा सर्वधा अभाव जैन प्रभावसे ही सम्भव हो सकता था। साराश यह कि गुप्तकालमें उदार गुप्त-नरेशोंके प्रश्रयमें जैनघमंका प्रमाव एव प्रसार देशमें पर्याप्त न्यापक या, यह घर्म उस कालमें समुप्तत दशामें या और लोक-जीवनका एक प्रमुख अग था। देशको सांस्कृतिक अभिवृद्धि, कलाकृतियो, विविध साहित्य एव विज्ञानके निर्माण विकासमें भी तत्कालीन जैनोंका योगदान कम नहीं था। क्वेताम्बर आगमोंका सकलन भी इमी युगमें (४५३६०) में देवद्भिगणि-द्वारा चन्लभीमें हुआ था।

द्वा — वित हुण मगोलियाकी निवासी एक अत्यन्त वर्वर, युद्धिय्य और खानावदोश जाति थी। इन्होंके दबावते पीडित होकर २ री शती ई० पूर्ण मृत्रों जाति स्वदेशसे खदेही जाकर सीथियापर जा टूटों थी और परिणाम स्वरूप क्षांका भारतमें प्रवेश हुआ था। एक बार फिरसे हुणोंके आक्रमणोंसे ऋत होकर १ ली शती ई० में यूचीलोग कुपाणोंके रूपमें मारतमें प्रविष्ठ हुए। मारतके कुपाण साम्राज्यकी प्रवल शक्तिके कारण हुणोंने उन्हें फिर तग नहीं किया और वे पिश्वमनी और यूरोपीय देशोपर टूट पढ़े जहाँ उनके दुर्दान्त आक्रमणोंने विशाल रोमन साम्राज्यको छिन्न-भिन्न कर दिया। पिश्वमी जगत्में हुण सरदार एटिल्लाका नाम चिरकाल तक भयका सचार करता रहा। पौचवीं शती ईसवीके द्वितीय पादमें इस सबकर जातिने फिर भारतको ओर रुख किया। गा चार आदि मारतके सोमान्त प्रदेशोंपर

कारण देवाँ कर्षा पुत्र जलेका कर्षे ताहक न हुवा । जुनारगुल प्रवस्के इन्तित बर्गने क्यूंनि वंशवपर मात्रमन किया विन्यू कुमार स्वन्यपुरनो बन्दें सदेट बाहर किया । एक्टब्युटके गायनवायमें हुपाँके कई भारतम हुए और दक्त बन्नार्का मार ननन्त्र वीवन अनके नाव हो ताते बैद्धा बारन में बारन बरावर परावित ही हुए । बताबी सुनके बाद बनके निर्वत बन्तराविद्यारिक्क नवामें हमीने सन्धर और बद्धान ही कीं तसन देशकरर बस्ताः कविकार कर क्रिया । नर्सन्त्रपुत्र काक्टीराज्ने माँ कर्त् हत्त्वा बद्धारा बाह्य है। किन्तु करका कोई स्वायी औरव्यव नहीं हुन। इन प्रका है के नवत्त्व इस बरधार छोरबाय हम राज्यका अविचेत्र बता । बनने नत्मनं बोनान्त, चंत्राव, बच्छ वर्षन्त परिचर्ती उत्तर प्रदेश बीर समझाराके बहुतने वास्तर बॉक्सर वर किया। सहस्राये हिमारेशर वरेता बामधी नवर्ग अवधी याववाची थी, ज्याबितरको बधने क्षणी, बच-एउदानी, बनाया प्रणीव हीवा है । धर्म -वर्गः वच्य एउएमी-को परवरित करने का पुष्त प्रदेशींकी बीतकर ही उनने इत्या राज्य रिश्तार किया था । पूर्ववेद मानाके बल्चार गुप्त वीवमें ही बशरब बैन मूर्ति हरिएको यह वर्षर हुनार साम्यात्मक एवं नैहिक विवार प्राप्त थी थी बीर उन्ने बन्ता नका बना किया था। बन्नदे जाराकर यह बार बनको राजकारीमें की पूछ वर्ष रहे। यह राजा परवर्तमारीच्यु बा । देख बनता है कि इसने मारदीय वर्ष और मेंस्ट्रूटिको अस्ता लिया बा । रिम्पुरा एक मन्दिर बीट वीडींके ब्रिट एक विदार की बढ़ने क्तथाय पड़ा नाजा है। वैशा प्राप्ति श्रीता है कि पत्रने वैतः बोद और बैजब डीजी ही प्रमान मारहीय बमीसी अवस्थ या एक दान बरस्यस बा । पेशको पूर्व और नव्यादेशके वृत्य नामक स्थानीन क्षत्रके विका-निव विषे हैं, कुछ तिरोह जो निके हैं। बनु ५१००११ हैं। में जानुस्तरने

क्षेत्र मुख्ये पर्यापन किया बनाया बनात है, यह नहीं पहा वा सकता कि

नार्शिय प्रतिशास एक प्रति

11

इन्होंने कीम ही करिकार कर किया लिग्यू कुछ बालागानी प्रवस परित्रके

वह विजय फिननी स्यामी रही यो । तीरमाण या तीरराय उमके उपरान्त भी जीवित और विविधानी रहा। ५१५ ई० के संगमा उगरी मृत्यू हुई और उनका पुत्र मिहिस्युष्ट हुणराज्यका अधिपति हुया। यह मी भगकर बोदा या किन्तु अपने पिताकी भौति मन्य और उदार मानक नहीं या, बन्न कर और अत्याचारी या । उसके विस्कॉर्न इसना धैव होना मुचित होता है। एरन और न्वालियरमें उसने विलालेग भी मिले हैं। अपनी अमहिष्णुता, क्रुता और अत्याचारोंके बाग्य वह सबका अप्रिय हो गया । इसने साइल या स्यालकोटको अपनी राजधानी बनाया था और बालादित्यको मी पराजित किया या, किन्तु सन् ५२०-३१ में मामवेके यशोधर्मन्ते उसे वृशे तरह हराया । फल-स्वरूप उसने मागगर वदमीरमें शरण सी और वहाँ अपने आश्रयदाताका ही छन्से मारकर कटमीरका राज्य हथिया निया। ५४२ ई० में उसकी मृत्यु हो गयी। साकतका राज्य उसके माईने पहले ही इस्तगत कर लिया या। मिहिरकुलने बौद्योपर वहत अत्याचार किया था जिसके छिए बालादित्यने जी बीद या उसे फिर परास्त किया कहा जाता है। इसके उपगन्त हुणोंका फिर कोई चन्लेख नहीं मिलता । कदमीर और परिचमी पजावमें जो हुग राज्य जम गये ये तथा उत्तर प्रदेश और मध्य भारतमें जो फुटकर हुण बस गये थे घीरे-घीरे चनका मारतीयकरण हो गया और व मारतीय समाजमें ही खिल-मिल्त हो गये । गुप्त साम्राज्यके पतनका प्रधान श्रेय हुर्गोको ही है ।

प्राचीन जैन अनुश्रुविमें भगवान् महाबीग्के निर्वाणसे एक सहस्र वर्षे वाद करिक्का अन्त कहा है जिसके अर्थ है कि ८७३ ई० में उसका अन्त हुआ। उसने ४० वर्ष पर्यन्त अत्याचार पूर्ण राज्य किया बताया जाता है और क्रूरता, बर्बरता, अनीति तथा धर्म, धर्मामाओं एव धर्मायतनोंका विस्वस, आदि उसके राज्यकी विधेषताएँ बतायी आती है। उसकी मृत्युके उपरान्त उसके पुत्र अजितंजयका धर्मराज्य स्थापित हुआ कहा गया है। अत जिस हुण सरदारने हुमारगुष्त प्रथमके समय सन् ४३३ ई० के स्थामम

भारतके नीमान्तरह हार्वे प्रथम वैद्य शाला ४५ है के अनुभव र्वजावरर बाहरू किया को सहस्यमुख्यम हरू प्रतिशृक्षी और प्रवास यम् वस रता और नो बरनवहरा नर्रोबहरूच बालाजिनके हाची बन ४०३ हैं। के अनवन मुख्ये बारा नवा, यह वर्षर झुर जारतीयवर्त-विरोधी विदेशी सत्यापारी ही सैन अनुभतिका चतुर्वन करिक रहा अतीय होता है।

क्षका पुत्र और कल्लाविकानी वर्षशाका तीरमान का कारणा ना निवर्क मर्मराज्यकी प्रयोग की नवी है। संबंध राज्यके प्रयम को बचौंदा ही क्लेन्स बर्जिनी रिक्ता है। उनके दारामा वह बीन है। संस्थापके बम्बाचाँ क्रम बाक्नोंने जो नुस्त बात होता है। बबने की पैना ही अनता है कि यह एक बृद्धिमान, पुरस्ती क्यार बृद्धिन्त और सन्ध-नावक गरेत का । जाने वर्षपत्री इस बरपार वा बरखरोंनी आंठिके नवच्च विवरोधः बीधि करणाने और बाचरन करमेडे कारच हो बनका सारव-बिलार अल्डी नुसम्बद्धी

और राज्य करिय हो तया। मासय-बरस बहोपर्ययु--धरंगचे उत्तरातकी इतत हम प्रस्तिके क्षानके कारण जिल्लाम अन्य नवकी वर्णात्व बीका हाराहोता हो रही थी नामना प्रदेशने एक अपून्त वराक्रमी वीर वरराव विना । इसका मान वर्षायमन या और यह माध्येते ही रियो वाचीन प्रतबंदावे वाचप्र हमा बडीड हाता है। बडी बडी है के दिखेन चरने बक्का बक्तमाद चनाचीन कर देनेपाना करन और जिस वैता है। अवस्तात बल्द मी हो

मना । स्तरबीर वा बयपुरला करती धानवानी बवाकर करून हुन्तेत्रहे बन्धे प्राप्तको बन्दा वृद्धि कर की । तत्काकीय चन्द्र राज क्वके प्रधारक सम्बद्ध मुख्य को और सम् ५६ ६१ ई में अपने दर्शन्त हम धामा निदिरणुक्तका जो स्थव नाक्षत्रेत्रे जन आजा था चनाच एक क्षत्रेता भीर करों भी स्वान जो पर्शनिव करके ग्राम बचाकर कस्मीर कान वार्पेरर वजपूर विशा । अन्यवीहर्ते वधीवर्जनुती विस्तृत वीरृत प्रयस्ति तमा ५१३-३४ ई. या दिलानेक बलीम दिक है। दिवर्ने बारतीय प्रतिकासः एक प्रति उसको अनेको यिजयाका तथा उसके द्वारा हुणोको बुरी तरह पराजित करने व्यादिका वर्णन है और लिखा है कि भारतके सभी नरेशोने यशोधर्मन्के नम्मुख मम्तक झुका दिया था। इस अद्भुत दीरका पूर्यापर अभीतक ज्ञात नहीं हो सका है। उसके माम्राज्यका भी उसीके साथ अत हो गया। हूणोकी घितका तो उसने अवरोध कर ही दिया किन्तु साथ गिरते हुए गुष्ट माम्राज्यको भी एक ठोकर लगा दो। अब माम्राज्यके विमान सामन्त और प्रान्तीय शासक खुने रूपसे स्वतन्त्र हो उठे।

कन्नोजका मौखरि वंश-यह एक प्राचीन मागध ध्रा था। गुप्त साम्राज्यको स्थापनाक उपरान्त गुप्तेवि करद सामातोके रूपमें गयाचे समीपवर्ती प्रदेशपर मौखरियोंका शासन था । इन माम तोंमें महावर्मा, साई-लवर्मा और अनन्तवर्माके नाम मिलते हैं। इसी वंशकी एक शाखा गप्तीके सामन्तोके रूपमें कन्नौजपर शासन करती थी। ६ठी शती ई० के प्रारम्भम राजा हरिवर्माका पुत्र आदित्यवर्मा मीग्वरि कन्नीजका शामक था। उसकी पत्नी गुप्तवशकी ही एक राजकन्या थी। इसमे मौखरियोकी प्रतिष्ठा और शक्ति वढ गयो । आदित्वधर्माके पुत्र ईश्वरवर्मा (५२४-५५० ई०) ने हणीं-के भाक्रमण और यद्योधर्मनकी विजयोंने उत्पन्न परिस्यितिका लाम उठाकर कन्नीअमें अपना स्वतन्त्र राज्य जमा लिया। यशोधर्मन्के साथ हणोंकी पराजयमें भी वसका हाथ या। वसके पुत्र ईशानवर्मा (५५०-५७६ ई०) ने अपने-आपको महाराजाधिराज घोषित कर दिया और पर्याप्त शक्त बढ़ा ली । स्वय गुप्तसम्राट् कुमारगुप्त तृतीयसे उसने युद्ध किये । उसका उत्तराधिकारी धाववर्मा अपने पिताकी ही भौति वीर और महत्त्वाकांक्षी या । गुप्तीके साथ उसने निरन्तर युद्ध किये और गुप्त-नरेश दामोदर गुप्तको पराजित करके उसकी सत्ता और शक्ति अति क्षीण कर दी। अव कन्नीजका मौखरि राज्य उत्तर भारतकी सर्वप्रधान प्रक्षित था। उसके वाद अवन्तिवर्मा और फिर गृहवर्मा कन्नौजके राजा हुए । गृहवर्माका विवाह स्थानेस्वरके वैदय राजा प्रभाकरवधनको कन्या राज्यश्रीके साथ हुआ था। देशमंद्रे बद्धांत और नामशरे देशालने निमन्द्र नपुषमंद्रि सामार ब्राप्टरम् विद्या बाँर नवमें बनवी नाम ही। नाम हिस्सी कार्य सामवर्षन और हर्पवर्षनमें इन समुत्रीते बदना निया । हाने सामापीरे नंग्लंड पूर्व प्रतिनिधिक रूपम बसीयका मानत हो। सैपाका बीर इत प्रवाद दर्व-दर्व बीर्यान्वय बनाल हुआ और कलांत्रश साम्य भी स्टालाक्स्के सामाचै हो निष क्या । स्यानस्वरका काम संश्---वनका बंद्यानक पृष्यकृति आमस वैष्ठ

(बैरद) बर्दिय वा । उनके बँधवें नरवान बीट ब्रिट वाहिन्यकान हुए । दे बुलाई रूप कारल है। बारियरनारा विवाह कुछ शक्तुमापै महानेनतृत्व है बाद हवा बीर यह बाने बारशे पहालब बहुने बसा । ध्ये प्राप्ते हैं के सम्पन्ने करवन वह स्वक्रम ही बना। इन्हा हन्तुर्धावसारी प्रमायनमध्येत का जिनके नागायाच और शुपकर्यन नामके शा पुत्र मीर

धारायों नामधी एक बन्या थी । बचन गीप ीमरियोंक प्रतिप्रानी से शिल्ह मीची पहचलीके बाव समाजीका विकास श्रीनेते देखें बक्को सेवी ही नदी । बन्दरः यदाङ बीर देशन्त्रके राचा नदस्यांची नन्त्र हो बार्नेचर वै

दोनों राज्य एक हो नते । राज्यवर्गने बहना ही जुन्द तथा महिन्दिके बारधारका बरका मेनेके निम् देशान्तार नहाई वर दी और क्षेत्र नहाँ हा माई हवेंने किया की इन पार्थ के किये पुरालांकि वास्त्रपर्वती सरकारीय वार्तिक,

हर्गबर्धन--(६ ६-६४) स्थानेतरहरू वयन बंधका वस् क्षीरात, क्षमध्यान्त मीर काम ही मान्तिम नरेब का 1 वह सपने क्षमप्त बक्षा मारतका एकच्चन नमार् का । इनकी बचानि विकासित की बी । बीची बारी हरूपमान (६२६-१४३ ई.) ने बबके बालपबाधने जारनदी साथ

बामानिक बीर राज्वेतिक नदाका तथा बजाद वर्षप्रकृषे परिवदा बाग र क पता पता है । इप बार पराध्यो और विकेश का । क्यार प्राप्तके

चलकेच प्रतिकास । सब धीर

111

हिसा, फिन्यू प्रधानने की ही बाज नार शाना । बनुका सरमा बसके

प्राय सब नरेशोको उसने अपने अधीन कर लिया था। गुप्त वशका प्राय अन्त ही हो चुका था। अपने वशशयु गौडके शशाकके साथ उसने कई युद्ध किये जिनमें उसके मित्र कामरूप नरेश भास्क रवर्मन्ने भी उसकी सहायता की किन्तु उसका पूर्णतमा दमन करनेमें वह सफल नहीं हुआ। सीराष्ट्रके मैत्रक राजा प्रवसेनको भी उसने पराजित किया और गुजरातका कुछ भाग अपने अधीन कर लिया। इस राजाके साथ उसने अपनी कन्याका सी विवाह कर दिया वताया जाता है। चालुक्य चक्रवर्ती पुलकेशी दितीयके साथ भी उसने यद किये किन्तु उनमें उसे सफलता न मिली। कॉलग-कोसलका राजा. जिमका नाम सम्भवतवा हिमलोत्तल या, उसका मित्र या, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि जैनाचार्य अकलक द्वारा उनकी सभामें बौदोंको पराजित कर देनेके कारण जब उसने वौद्धोको स्वदेश निर्वासित कर दिया और जैनवर्म-को अपनाया तो हपने उमपर आक्रमण कर दिया। युद्धमें हिमसीतलकी मृत्यु हो गयी किन्तु चालुमय यिक्रमादित्य प्रयमकी मैनाआंके आ जानेके बारण हवको वापस लीटना पडा । इस प्रकार प्रयत्न करनेपर भी उत्तर भारतो आगे हप न बढ़ सका। वह बौद्धधर्मका परम भक्त या साथ ही परवममहित्जु, उदार और दानों भी या। दभीज उसकी राजवानी थीं। गन्नीज और प्रयागमें उसने कई महती सभाएँ की । प्रयागमें तो हर पाँचवें वप यह एव प्रकारका महान् अनुष्टान धनता या जिसमें बौद्ध, जैन (निर्म्रत्य). क्षेत्र बीर वैष्णव साधुओंको निमत्रित करता और भरपूर दान देकर गवका सन्तुष्ट करना मा। इन दानोंमें यह राजकोपको खाली कर देता या और अपने तनके कपडे भी उतारकर याचकाको दे डालता था। वह गुणियों कोर विद्वानोंका आदर परता था। उसका राजविव वाण था जो हुएँ-भरित, मादम्बरी आदि रचनाओंने लिए मुत्रसिद्ध है। नीरदेव क्षप्रणक नामक एक जैन विद्वान् बाणका मित्र या और सम्भवनया हपेकी राजसभा-ना एक विद्वान् था। स्वय हुपने मी प्रियर्दिनका, रत्नावली और नागा रत् नामरे तीन नाटनाको रचना को यो। उसके कुछ शिलालेग भी मिछते हैं।



मे प्राकृतकाव्य 'गौडवहो' में यशोयर्मन्की दिग्विजयका विराद यर्णत हैं।
महावीरचरित, उत्तररामचरित, मालतीमाधव बादि प्रसिद्ध मस्कृत नाटकांके
रचिता महाक्षि सबभूति सो महाराज यशोवर्मनके हो आधित थे।
७४० ई० के लगभग कश्मीरके लिलादित्यने वपनी विजययात्रा आरम्भ की
और ७५० ई० के लगभग उनने यशोवमन्को पराजित करक कन्नोजपर
अधिकार कर लिया।

श्रायुघ चरा—७६० ई० के लगभग कन्नोज किर स्वतंत्र हुआ और यहाँ एक नवीन वशके वष्तायुघ, इन्द्रायुघ और चक्रायुघ नामक राजाओंने क्रमश राज्य किया। जिनसेनके हरिवशको रचना (मन् ७८३ ई०) के समय उत्तरापयमें कन्नोजके इन्द्रायुघका राज्य था। किन्तु अपने उत्तरमें कन्नीर नरेशो, पूर्वमें पालवशो राजाओं और दक्षिणमें राष्ट्रकूटोंके निरत्तर दवामके कारण आयुघ वश ८वो शती ई० के अततक ही समाप्त हो गया। भिन्नमालके गुजर प्रतिहारोंने इस परिस्थितिका लाभ उठाया। राजस्थानमें शवितसध्य करके उन्होंने कन्नोजपर अधिकार कर लिया और शीघ हो ममस्त उत्तरापयपर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

गुर्जेर प्रतिहार—प्राग्मुसलमान कालीन राजपूत वशाम प्रमुख थे और लपने-आपकी थीरामके प्रतिहार लक्ष्मणका थंशज कहते थे। माग्वाह- के भिन्नमाल लपरनाम थीमाल नामक स्थानको इन्होने अपना प्रथम के द्र और राजधानी बनाया। हरिश्च द्र इस वशका नस्यापक था। कि तु वास्तवमें प्रथम महान् नरेश नागमट्ट प्रथम (७४० ७५६ ई०) था। ७५६ ई० के लगभग उसने मि प्रके अरबोको हराकर वही प्रसिद्धि प्राप्त को। पिश्चमी भागतको इस प्रकार ग्या करनेसे उसवा प्रताप एव राज्य- विस्पार बढ़ा। ना बीपुरके गुजर, जोधपुरके प्रतिहार, महीचके चाहमान आदि अनेक छोटे छोटे राज्य तसके अधीन द्रुए। इसके उपरात नागमट्टके भतीजे कश्चुक और देवराज क्रमश राजा द्रुए। क्ष्मुक जैनधर्मी था और उसने एक विशाल जैनमन्दिर वनवाया था। तदन सर देवराजका

कुत बन्तरात्र रणप्रांत्य वर्ष 'परश्य मृतुन्तिबंजक वर्षेत्रर बैटा ३ दुर्वर प्रतिमार बाग्र प्राप्ता बार्स्टीटक बीन्वारक वही जरेश था। पैताराई क्रयोचन मूर्गने बरनी पुणनपशामा (अ८ ई.) में संबंध जिननेत नुपार बंदोंने हर्रावंस (७८३ ई.) वे इन नरेसका नारमुक्तके रूप्याचीन वर्ष-बरात बरेपाँचे बालेस विस्ता है। बातराजवे तथ अ५०८ है वर्गमा गाम दिया बरोत होता है। जलकी त्रकार शतकारी जिप्रमाण ही की और मक्तम वर्षी राजन्यमा जानका व बच्चतान्त्र और मुक्रपाठके वर्यान बार बनके सारक बन्ध्यन से । इसने बचायक बयायको इसना गाँउ भगी या प्रांग मानाव जानुवर्वजो बरेटाले बस्तीव छाना । राज्यपूर प्रापं मीर राज्यसा समझन क्यांट अस्य प्रतिप्रची वे १ वस्तुना स्पन्न रा प्रतक्षी परण दुर्वर प्रतिहासीका वेरालक बाली सीर र्राजनसम्बद्धः राज्युत्रीके साथः वस्त्रीयाचके बाधाउरके स्टिट् जनमे वीवर्षे चमा और अनेप बुद्ध हुए हिन्सू बन्यदानों ही क्यीज़ार सर्विधार बरके बने अन्य शासान्त्रको पात्रकानी बनाता । रूपत्रवृक्ते क्लाके बाद कमीत ही बारवर्षणी प्रचान धानवानी वन चना का बोर नुर्वेर प्रतिहारिके प्रपत्नके क्योजका साम्राज्य अस्ती क्यांतिके करण विकासी पहुँच क्या । बन्द्रस्तरको सँग साहित्य और सम्बद्धियोंने सैनवर्गेका दश वडा नक्षक बीट बहारक विदित्र किया क्या है। ब्रोहिश बीटाक सारि नवर्षेने समने आय नियास जिल-नीनरीया निर्दास हमा बद्धारा माता है। पैन की क्यार्वापुरिका यह बहुत समझब अरहा वा बीर एडीके नवस अनुराने अवस्था रवेडान्यर धर्च दिवादर अन्तिर प्रका पुषक् वर्ते और बनव सम्प्रशासीके पुषक-पुषक् केन्द्र स्वापित हुन जारीत होते हैं। इसी बरेचके राज्यों दिनव्यसमान दिनहेनने अपना नुप्रक्रित हॉरबंघपुरान वसनागपुर (कामप्रदेशमें धन्तीरक निषट अवसन्तर) में रता बढोरान्तुरिने राजस्थानके बासकिनुसर्वे बस्ती पुरस्रयसमा रेपी मीर सम्मद्द्रा विश्वीहर्ते बृष्टवित्र क्षेत्रान्यर विक्रम श्रीरम्प्र मृतिये अनेक प्राचींनी चना थी। इस नरेशने बन्नीज, मचुरा, ब्लाहिस्याए, मोपरा ब्लादि स्वानोंने बनेक जैन मन्दिर यनयाये बनाये जाते हैं। मन्नीजना मन्दिर १०० हाय कैंचा चा और उतमें भगवान् महाबीरको स्वर्णमां प्रतिमा प्रतिष्टिन की गयी थी। ग्वास्थिरमें भी इस राजाने एक २३ साय कैंची सीचन्र प्रतिमा स्वापित की थी।

यरमराजवा पत्र नागभट्ट दितीय गागावरोग आम (८००-८३३ ई॰) अपने पिताके समान ही प्रतापी और विजेता था। पाली और राष्ट्र-कृटोंके पारण क्योज फिर गुर्जर प्रिक्शारोंके प्रापसे निकल गया पा सिन् नागावलोगने अन्तत चक्रायुषका अन्त परवे मन्नीजपर ८१६ ई० के लगभग स्थायी अधिकार गर लिया और उसे ही अपनी प्रधान राजधानी वनाया। इस नरेशने आन्त्र, सैचव, विदर्भ और फल्लिमे राजाओगी अपने अधीन विया, बंगालके पाल-नरेशको पराजित किया और आनर्त. मालवा, किरात, तुद्ध्क, वरम, मत्स्य आदि राज्याके अनेक भाग छीन कर अपने साम्राज्यमें मिला लिये । राष्ट्रगृट गोवि द तुतीय (७९४-८१४ ई॰) से उसके कई युद्ध हुए और ये दोना परस्पर प्रवल प्रतिद्वन्द्वी बने रहे। नागभट्ट दिसोय गुजरेखर भी महलासा था। यह नरेश भी जैन-यमेका बढा प्रश्रयदाता था। जैन साहित्य और अनुश्रुतियोंमें उसकी प्रशसा पासी जाती है। जैनाचार्य प्रभाष द्रस्रिके प्रभावकचरित्रके अनुसार ८३३ ई० में उसकी मृत्यु गगामें समाधि लेकर हुई। वह भी जैनाचार्य बप्पमट्रस्रिका वहुत बादर करता था। मयुराके प्राचीन जैनस्तुपका जीर्णोद्वार इसीके बाध्यमें हुआ बताया जाता है। यह एक धर्मात्मा राजा था, जिनेन्द्रकी मीति विष्णु, शिव, भगवती और सूर्यका भी भवत था। उसके पुत्र रामदेव या रामभद्रने फेवल तीन वर्ष (८३३-८३६ ६०) राज्य किया और उसके अल्पकालीन शासन कालमें राज्यकी क्षति हुई।

रामभद्रका पुत्र भोज इस चंशका सर्वमहान् नरेश हुआ। प्रभास, आदिवराह, मिहिर आदि विषद प्राप्त परम भट्टारक महाराजाधिराज क्या पान पाएकुण और कलपूर्व नरेग्रीस बनके निरम्पर गुढ पन्ने रहे । परधेरके सकरवनपुर जी उनका नुद्ध हुआ । वानी विजन हुई और नवी पराज्य हिन्दू एवं बुद्धानं बचके नाशान्त्रको संदित्त और बनुविधे नोई शब्दे नहीं जानी। शानवा श्री इनके चित्रच सिना जैपाकनुति। (बुन्नेपनम्ब) के अभेषे बीर लाजियरके बन्धाबद राजे दक्के बानगर में । यह एक स्थान केमानी और बाधारक निर्माण या । मनु देपरे हैं मै धारत मानेवाचे भाग धोरावर मुकेमान्त्रे वसे सरबोदन वयने गा माप नडा है और अवको यांगा एवं सैयपती बड़ी प्रधाना की है। मह बक्राद वंश बंशर कोर नदिल्ल था। अन्तरी बुन्धेची नवस्तीना नदे क्यानंद या किन्तु बैनवर्नना वी बारी बच्चराता था। बद्दीने मातन बायन सन ८६२ है. में देवलंबके बायाय बायतेयके दिया बीटेरने देशमङ् (सुजन्मनिरि) के पुनके बीवार रिक्ट वर्गानामा गीर्मकरने प्राचील मन्दिरके सम्बन्ध मालकान्य प्रतिकारित विश्वा मा । बरमम है नि जिन बच्चपूर्व लाग्नोगर मामाध्य सूत्रे । बसावच्यपने यह विकामित्र पुत्र मान्नानम रिका है। क्ष्मण कुछ विमान हीं इसी बनाव हमा हो । देशवहरू क्तकाकीन बावक वेण महायाद प्राप्त बहानाकन्त थी क्लिक्समधी बहानताने सह बार्य करात हुना का मीर उनके निर्मापने बीडिक बाजु (का बाजु) बीर नमा (वंशा) नामके वा धानक आध्योन विकृत क्रम राव रियो

वा। देवना बानुस्को नारिक सम्ब वर्ष सुम्बद वीन सन्ति इसे प्रस्कृति है। मिन्ने वसन्ति सम्बन्धि । सिन्द मेन्सि स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति है। सिन्द मेनस्य पूर्व स्विप्तान सम्बन्ध (८८५-१.८ ई.) भी दर्ज मिन्द प्रस्का । स्वेद्रमानु साम (८८५-१.८ ई.) भी दर्ज मिन्द प्रस्का नार्मि स्वाप्ति सी। स्वाप्ति सम्बन्ध सम्बन्ध स्वाप्ति सी। स्वाप्ति सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध स्वाप्ति सी।

जारतीय इतिहास पुत्र स्थि

परबेरनर जोजरेवने मानवन ५ वर्ग (८१६–८८६ हैं) वह राज्य दिना १ दन प्रणाणे वरेखके शामध्य पामधानी नद्योज (जहोरम) बीर कसराज्यके इन पूर्वर प्रणिकार नाम्राज्यका वेजक व्यवसामधी मुर्दि वैभव अक्षुण्ण रहे। वह विद्वानोंका आध्ययदाता और साहित्यका प्रेमी था । कप्रमजरी, काव्यमीमामा, बालगमायण, बालमारत आदि ग्रम्योंके रचियना महाकवि राजाभ्यर उसके गुरु ये। उसके बाद उसका ज्वेष्ठ पत्र भोज दितीय गद्दीपर वैठा किन्तु उसकी शोघ्र ही मृत्यु हो गयो अत किनष्ठ पुत्र महीपाल (९१०--९४० ई०) राजा हुआ । यह सूर्यो-पासक था। राजशेखर इसका भी राजकवि या, चण्डकीशिक नाटकका कर्त्ता क्षेमेश्वर भी इसी राजाका आधित या। ९१५ ई० में अन्य छेखक वसमसूदीने इस गुजर नरेशको बहुत घनी और शक्तिशाली वर्णित किया है। किन्तु ९१५-१८ ई० में ही राष्ट्रकूट इन्द्र तृतीयने कन्नीजपर चढाई की और उसका बहुत विव्वस किया। कन्नडके जैन महाकवि पम्प-द्वारा रचित पम्पमारतके अनुसार इन्द्रके सामन्त नर्रासह चालुक्यने महीपालको बुरी तरह हराया और अपने घोडाँको गगाके सगममें नहलाया । वस्तुत महोपालके समयमे हो गुर्जर प्रतिहार वशको अवनित प्रारम्म हो गयी। उसका उत्तराधिकारी महेन्द्रपाल द्वितीय भी भारी विद्याप्रेमी था, जैना-चार्य सामदेव सूरिने इसी नरेशके लिए अपने राजनीतिके महान् ग्रन्य नीति-वाष्यामृत और महे द्रमातिलस जलाको रचना की थी। तदनन्तर क्रमश देवपाल (९४६-६० ई०), विनायकपाल, महीपाल हितीय, विजयपाल, राज्यपाल, त्रिलोचनपाल और यदापाल नामक राजा हुए। यदापालके समय १०२३ ई० मयुरामें एक नवीन जैन मन्दिन्का निर्माण हुआ। ११वीं रातान्दो ई० के मध्यके लगभग यशपालको मृत्युके साथ इस वंशका अन्त हा गया, इस बोचमें ९४६ ई० के लगमग माल्या स्वतात्र हुआ, ९६२ ई० में गगनरेश मार्रासहने प्रतिहारापर आफ्रमण किया और उन्हें परापित किया। धर्न शर्न खजुराहोक चन्देले, ग्वालियरके कच्छपघट, घाराके परमार, मध्य भारतके कलचुरि, गुजरातके मोलको आदि स्वतन्त्र हो गये और कन्नीजका गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य छिन्न-निम्न हो गया। कन्नीजके बन्तिम राजाऑने मुबुक्तगोन और महमूद ग्रवनवीके विरुद्ध मटिण्डेके साही भागदर राज्यकारके कारवाद देगाने प्रत्य की जोर करों जेप्या के सार्थ । समाधे और दान्धे । १३वी घटीने इस वंजके राज्यान जानुसर्व समाजिक जाति सार्थ केंद्र ज

स्त्रीयरके बाह्यसन—बन्नवेगके शिक्ष्य बीगर या याराज्योंने बागरात या जिल्लामञ्जूषेता राज्य वा । नत्त्रव ४ . ई. वें वि

बयका बरप हुआ था । बालपुर, लाबीच आबु एक्कम्मीर, बन्तारणी स्टरिने को दना समझी बानाएँ साम कर खुद की । इसलाके निरुट सम्ब तरपर चलपारवे की प्रोहासारा पारव का । जिल्लू इन प्रोहाद पावर्पीयी मारमेर (नीनर)का नदाही तम अनुस्तका (बनुदेव इन गर्मण मन्तारक था । एक परावे कर्षक राजा हुए जिसमें पुरुशीराज जबन कीर दिनाय जैनकाके करण सकत थे। प्रत्यको रक्षकाशीरके जैन मन्दिर्दे विकास स्वयंत्रमध्य नदासा का और द्वितीयम् क्य वैश्व मन्दिरके निर्द मारबुटी बाडि शाम बाल रिवे में । यह विजीविया पार्शनाथ दीनी मैंग मुस्तावा जन्त वा । बझोबके बनिहाराके शान इन नौहालीके रिपार्ट नामन्य भी में और प्रतिकारीके बानायवानमें ने इनके संबोधान राजे गर्दै में। १०वीं बकारी हैं के बलने विद्यारात दिशीय और बस्मार हुनेत गान दिशंबने मौतर राज्यत्री स्नातन कर विका और प्रमुख बाँक नाने सनी । १२वीं पारी हैं के बधाने विश्वहरात चनुत एक बनाये और सिंदी मुक्को नरेख का जनने की लाइक की शाबरहरूर अधिक बराव्ये के ह जनकी माई नीवेश्वर की बक्त बीर बीर पराज्यों बरेश का और उत्पारबंधिकर बंग्लामा व्य व्यापित बसवा भी सन्त बा, वन्त्रवापके अनेवरके निर्दे

यका रेपूटा बावक पीत सेटबे विद्या था विश्वतिका पास्त्राक्ता प्रस्ति स्टिप्स प्रतिकेत पास्त्राक्ता प्रस्ति । स्टिप्स प्रतिकेत पास्त्राक्ता श्री व्यवस्था हुआ है। वृत्रपास्त्रे प्रतिकार वेष्ट प्रस्ति क्षित्र हो। वह व्यवस्थित श्रीत्र विद्यालय विश्वतिक प्रतिक विद्यालय प्रतिकेत विद्यालय प्रतिकरी व्यवस्थालय विद्यालय प्रतिकरी व्यवस्थालय विद्यालय विद्य

रोनीका पुत्र इतिहासप्रसिद्ध पृथ्योराज तृतीय (रागिषधीरा) था। घन्दवरदाई माट उमका मित्र और राजकिष था, ऐसा प्रसिद्ध है। पृथ्योराज एक महान् योद्धा एव वोर नरेवा था। कन्नोजक जवनन्त्र और महोविके च देलोके साथ उमको प्रवल प्रतिद्वन्त्रिता थो। पृथ्वोराज द्वारा कन्नोजवी राजकन्या सयोक्ताके हरणकी घटना लगभग १२७५ ई० को है। ११८२ ई० में उसने परमाल चन्देलको पराजित किया था। मोहम्मद गोरीके हगलेको उमन कीरनापूर्वक रोक्षा और ११९१ ई० में तराइनके प्रयम युद्ध में ग्रोरीको बुरी तरह हराकर भारत्यपसे खदेड दिया। किन्तु परस्परकी कृदके वारण ११६३ ई० में तराइनके दूसरे युद्ध ग्रारीको विजय हुई। पृथ्वाराज बन्दी हुआ और मार डाला गया। फलम्बक्रव दिल्लो और अजमेरपर मुमलमानोंका अधिकार हो गया।

वाय चौहान राजाओं में घवलपूरीका चण्डमहारोन (९८२ ई०) व्यक्ति प्रसिद्ध है। अजमेर, नाडौल, दिल्ली तथा आय मभी स्थानों के तरकालीन चाहमान नरेश जैनधर्मी न होते हुए भी जैन धमके पापक थे और जैन गुरुप्रका आदर करते थे। उनमें-से अनेक राजपुर्प जैनी भी रहे। नाडौलमें चौहान राज्य ९६० से १२५२ ई० तक रहा। इम बदा-का अक्तरान चौहान जिनभकत था और उमने अपने राज्यमें पतु-हिसापर प्रतिवाध लगाया था। उसका पुत्र अहलदेव अपने पितासे भी अधिक उत्ताही जैन था। यह राजा भी महावीरका परम भक्त था, उसने १९६२ ई० में उवन तीथकरका एक विशाल मन्दिर नादरामें धनवाया था और उसके लिए कितप्य श्रावको एव साधुओंको सुरक्तामें बहुत सी सम्पत्ति दान कर दो थी। सन् १२२८ ई० के एक ताम्रकासनस इस दानका पता चलता है। यह राजा अन्तमें राज्य त्याग करके जैन साधु हो गया था। उसके पूर्वज लाखा और दादराव तथा धंतज कल्हण, गजेंसिह कृतिपाल आदि अय राजे भी जैन थे।

दिल्लीके तोमर-दिल्लीको कतिपय राजाप्रलियोंके अनुसार, जो



मो इम समय निर्मेल हो चुके थे। अतः नोयकन एक स्थतः प्र सामकको नाई राज्य किया, महाराजाधिराजकी नपाधि धारण को और अपने राज्यका धिस्तार किया। अपने पोषित पुत्र मूंजतो राज्य देकर सन् ९७४ कि के लगमग लगने एक जैनानायसे मुनि बीला ले हो और दीव भीषन एक जैन तपस्त्रीये रूपमें स्थातीत विषया बनाया जाता है।

उसका उत्तराधिकारी मृत वाक्पतिरात एवं उत्तरहरात भी कहणाया था। त्रह घटा योर, पराक्रमों, कवि और विदायेंमी था। क्रानींप चालुषय राम्राट् सैलप हितीयपर उमने छह बार आक्रमण किया और कई बार उसे पराजित किया । मातवी बारव आफ्रमणमें यह स्थय तैलपका बादी हो गया । बन्दी दशामें ही मुजना तीजपकी यहा मृगालद्वीमे त्रेम हो गया और इस प्रकार यह एक प्रसिद्ध भारतीय व्रेमणाधारा नायय हुआ। मृणालवतीकी महायताम वह बन्नीमानेस भाग नियला, किन्तु पकडा गया और उमनो परमा करवा नी गयी। यह घटना लगभग ९९५ ६० की है। मुजके गम्यायमें प्रवाधियातामिय बादि जैन ग्रायामें अनेक कयाणे मिलनी है। नवसाहमाकचिन्तक लेखक पद्मगुष्त, युक्तपद्भके लेतक घनजब, उसके भाई घनिक, जैन कवि घनपाल आदि अनेक कवियोंका वह आश्रगदाता था। जैनाचार्य महानेन और अमितगतिका यह राजा बहुत मम्मान करता या । इस जीनावार्थीन उसक प्रश्रवमें अनेक गुरुयोकी रचनाको । मुंज स्वय जैनी था या नहीं यह नहीं कहा जा सकता किन्तु वह जैन घर्मका प्रवल पापक या इसमे सन्दह नहीं है।

उनका उत्तराधिकारी और भाई सिच्चल या सिन्ध्राज कुमार नारायण नवसाहसान (९९६-१००९ ई०) भी जैनधर्मका पोपक था। प्रयुम्नधरितके कर्त्ता मुनि महासेनमा यह गुरुतत् आदर धरता था। अभिनय कालिदास कथि परिमलका नवसाहसाक घरिश्र इसी राजाको प्रशासाम लिखा गया है। हणो एवं लाट नरेशों के साथ इसके कटे युद हुए। चालुपर्योंसे भी अपने माईका बदला लेनेके लिए इसने युद्ध रिवे । किंगू बोर्नको बामुखरायने बारास्ट माक्रमण कर प्रवेश देग शाब शिक्त बरीर विम्पृत्तप्रको गराजिए किया ।

दमका पुर क्षेत्र (११ -१५३ ई.) भारतीय और-असर्वर्ति श्राचीन बीर विश्वमाधितको चौति ही समित्र है । समवे राज्यानी पाराची नुष्टर भवनोने बर्ल्डन दिया और बैनवा नहीने काटकर प्रविद्ध भीजनामर-

का निर्माण कराया था । यह बड़ा विवारकोल बराउनी और मीर मा । क्षत्रते पाया मुन्द बीर विद्या जिल्लाकी जुल्ला बदना नेनेके जिए वजरे शोगरिया और पाणस्थान अनक पुत्र किंप और कर्डे कई बार परानित रिया । मुक्रमात्र वा चे कि आध्यक्षके सबको मृत्यु हुई। जीव मी ^{ईन} बमया बरल पालव था। बनके शमयमें वान्त तमरी दिवन्तर जैन वर्तरा क्ष प्रमम् बेग्र को कोए पाका बैच विद्वार्ती एवं कृतिकाहा बडा आरर काद्य वा नागवती ब्रांशिक रावके एक विद्यान विद्यातीक्षी कार्य स्थालना को की - शतके क्षेत्र अन्तिरोचा की निर्माण करावा बदामा अस्य है स्थितकोत न्यांबरश्यन्ती नकारित प्रवासन आदि, अवैद्य प्राचीन

रम्बिमा दिन्तम वैशासातीने रामाने बाजन एवं सम्मान ब्रान्ट रिया मा । बामान मान्तिनेत्रने समरी राजनशाने समेर सर्वेत निजानीकी पारवार्वेवे वर्षा वह विकास । बीजका देशलांत वृक्ष कर भी वैदी में ह वर्गवय बन्दान वर्गिक आदि वृहत्व सैन वृहिरोने तथा जान अस्तिर

बाक्रिश्य गरिमन मही अन्य प्रविद्ध संस्था अधिकोते मी धन राज्यों माध्यमें शास्त्र-मायशा की की प्राप्ता स्वयं भी सुवश्चि एवं मुक्तेमक सी ! भीतके बनायमा बस्तिह प्रस्त (१ ५३-६) शहर हुआ । समेर्ड बत्तराविकारी निर्मत साक्षण वहे : अनवे तरकारेण (११ ४-११ 🔻) म्हाल मोजा और चैनवलका अनुशानी था । जाउँनके महावाल मा दिसी चैताबार्व रत्नदेवना वैवाचार्य विद्याद्मित्रवाहीके बाव धारताब क्लीके क्लब में हुआ । इसे राजाने बीवन्य सन्हरोज और ग्रोक्स्बनग्री का भी बानान रिधा मा । जबके पुत्र बस्तोबलीयने की सैनवर्ष और वीच- एवजोला सावर किया। जिनचन्द्र नामक एक जैनीको उसने गुजरात प्रान्तका शासक नियुक्त किया था। १२ वीं-१३ वीं शतान्दीमें धाराक परमारनरेश विन्यवमी और उसके उत्तराधिकारियो सुमटवर्मा, अजुनवर्मा, देवपाल और जैतुनिदेवने पं॰ आशाधर आदि अनेक जैन विद्वानीका आदर किया था। आशाधरने अपने विविध-विषयक लगभग चालीस ग्रन्थोंकी रचना उन्ही नरेशोंके आश्रयमें की थी। विल्हण कवीश, मदनोपाच्याय आदि अनेक सस्कृत कवि भी इनके प्रश्रयमें रहे थे। १३ वीं शती ईसवींके अन्त तक परमार राज्यका अन्त हो गया और मालवापर मुसलमानोंका धामन हो गया। किन्तु फिर भी मालवा और उसके उज्जैन, भार, माण्डू आदि प्रमुख नगर जैन एव हिन्दू वमें और उनकी सस्कृतियोंक प्रसिद्ध के द्व वने रहे।

मेवाडके गृहिलीत-मेबाह राजस्थानका स्यात् सर्व-प्राचीन राज्य है और उसकी प्राचीन राजधानी चित्तौड (चित्रकूटपर) प्राचीन कालमें भी एक प्रसिद्ध नगरी थी। ८वीं शताब्दी ई०के मध्य तक यहाँ मौर्यवशकी एक शाखाका राज्य था। उक्त शताब्दीके प्रारम्भमें जिस मोरिय राजाका यहाँ शास्त्र था उसका उपनाम सम्मवतया धवलप्पदेव या। श्रीवस्लम उसका उपाधि यो और श्वेतच्छत्र उसका राज्य-चिह्न या। उसके उत्तराधिकारी राहण्यदेवको पराभित करके राष्ट्रकूट दन्तिदुर्गने उपराक्त **चपाधि और चिह्न स्वयं ग्रहण कर किये ये। धवलप्पदवके कनिछ पुत्र** सम्भवतया वीरप्पदेव ये जो आगे चलकर प्रसिद्ध जैनाचार्य बीरसन स्वामोके नामसे प्रख्यात हुए और जिग्होंने दिगम्बर आगमोंकी विद्यालकाय टीकाओकी रचना करके उन्हें घवल नामाकित किया। इसी चित्रक्टपर (चित्तीड) में जैनगुरु एसाचार्य निवास करते थे। वेही वीरसन स्त्रामीके विद्यागुरु थे। राहप्पके राजा होनेपर ही सम्भवतया बोरसेनन दीक्षा छे छी और ७५० ई० के लगभग राष्ट्रकूटों-द्वारा राह्य्यकी पराजयके उपरान्त वे राष्ट्रकूटोकी राजघानीके निकट वाटनगरमें चेळ गये ये और वहीं अपना विद्यापीठ स्थापित करके चन्होंने घवलादि परवान् उत्तरा सन्त्रा वर्णाणक पावचीत वंतापा बीगाव पर्ता परवानिका एमा हुना और वनने नहीं दुविनोन संदर्भ रणाया थी। पुर्वेत्रीय एम्मून करने-बारणे मुर्वेधी गद्यों में बार वृद्ध माजन्यर्थ गोमीरिया गार्वते को अधिद हुना। इसी सन्दर्भ विश्वीत एस एमस्यान्ध्रिय स्प्राम्म नियान् भेजानक मार्वियाः मोतियांस्मापक्षे क्रावेधीय प्रेत्याच्या हो। स्वेत्र मान्यु दी मध्ये सीर यह हो। व्यक्ति व्येवानच्यान होत्याद्यि हिंद प्रमुद्धि मान्य प्रामुक्त प्रमुद्ध विश्वीत प्रयाद को स्वेत्र प्रमाद की। १ व्यक्ति स्वाम विश्वीत प्रयाद की। १ व्यक्ति स्वाम विल्क्ष्य की स्वाम विश्वीत स्वाम स्वाम

रिश्रम हस्य स्था नरके नरावा गा।

महान् बन्वोंकी रकता की वी । राज्यके कोई वृत्र नहीं वा करा वर्ष

था। इहिमील व्याप राज्य वस हुक-पाँ वीच वा निल्तु इस पैराडी और वैश्ववर्षि अंत वह करत बोर परित्यु थे। वह परि और राज्यवर्षि नित्यु है। विश्ववर्षि एक व्याप्त करता नित्यु करारी प्राप्त करारी वाल्यु, वास्ता है निर्देश राज्यवाल और जल परस्य राज्य-कर्यक्रापियों के मो कंक्ष नीते होते हैं। यहा बात्य हैं कि वेपाह पात्रमें आपनी कर्या हुन्ति पुंचेल विश्ववर्षि करारी नीत यादी नाजों को क्यान्य एउन्स्मी जीयों केन पात्रीय करारी का थी। वीरित्यु हिमालक बीचाल कराया हुन्ति पुनेकल करारी वीचन वाला राज्यव्यो राज्यवाला राज्यवाला विश्ववर्षि कराय के विश्ववर्षि अर्थ कीचन वाला राज्यव्योप राज्यवाला राज्यवाला हुन्ति में वैश्ववर्षि अर्थ कीचन वाला राज्यवाला कराय व्याप्त कराय हुन्ति में विश्ववर्षि अर्थ के विश्ववर्षि कीचन क्या स्वाप्त कराय प्राप्त कराय विश्ववर्षि अर्थ कराये हैं।

फिराने ही चैन मन्दिरीके किए साम बिसे . स्थाने निस्ताहके प्राचीन महामीने निकर प्राचीन चैनमन्दिर को हुए हैं है . जीर नहीं सेवाह राज्य मनने स्थान

व्यक्तीय इच्छित्यः । एक रहि

विस्तोड राजस्थानमें स्थाने सैंच और जैनवर्गरा इक प्रमुख देना पन

सन्त्य-वेम तथ स्त्रदेश-प्रवित्ते लिए इतिहासमें सवाधिक प्रसिद्ध है। उसके बीर राणाबोंने १७में प्रताब्दी पर्यन्त मुसल्यानीकी अधीनता स्तीकार नहीं की। राणाबोकी इस आनको निमानमें मैबाटका जैनसमें नया उसके जैन बीर मदैव महायक रहे। घोटमें भी मुहिलोंकी एक सानाका राज्य का।

हस्तिकृतिहका या हथ दीके राठोट्-१०वी वती ६० म राजस्थानके हथेरी नगरमें राठींड वशी राजपुनींका प्राचीन राज्य था। इत राठीडोंका सम्बन्ध सम्भवतवा दक्षिणके राष्ट्रकृट घँरासे था। क्योबके गहडवालेंसि भा इनवा काई सम्बन्ध पाया नहीं यह नहीं पहा जा सकता । सम्मव है जोधपु-मारवाटक गठौड हपूँठीके बगरी ही मुम्बन्धिम हा। हर्यृहीका राठौटवरा जैनधर्मका अनुवायी था। ९१६ ई० में हस वशका राजा विदम्बराज जैनपर्मका परम मनत था। उसने अपनी गजधानी त्युँडीमें प्रयम तायकर नायभदवका विवाल मीदर बनवाया या और एस मन्दिरके लिए बहुत-सी भूमि प्रदान की थी। उसके गुरु वासुदवसूरि या यलभद्र थे । राजाने स्वयको स्वणके साथ तुलवाकर उस मन्दिर और गुरुवा दान गर दिया था। सन् ९३९ ई० में निदरधराज्के पुत्र एव उत्तराधिकारी सम्मटने भी जवत मिदरपे लिए विपुल द्रस्य साम किया था और अपने पिताये दान-पत्रकी भी पुनरावृत्ति की थी। यह राजा भी परम जैन था। इसवा पुत्र महाराज घवल भा परम जिन-भवत था। उसने ९९७ ई० में उपरोक्त मिदरका जीणोंद्वार पराया. दान दिया और ऋषमदेवकी एक नवीन प्रतिमा स्थापित करायी। इस राजाके गुरु वास्देवसूरिके शिष्य शान्तिमद्रसूरि थे और गुराचायने वह दान प्रशस्ति लिखी थी। जैनधर्मकी प्रभावनाके लिए इस नरेदाने अनेक काय किये। १२वीं दाती ई० व उपरान्त हर्युंडी राज्य सम्मवतया जोध-पुरके ही अधीन हो गया अयवा एक छोटा मा उपराज्य रह गया।

धावस्तीके ध्वजवशी नरेश- उत्तर प्रदेशके पूर्वी भागमें जिला वहराइचके अन्तर्गत धावस्ता (वर्तमान सहेटमहेट) एक प्राचीन महानगरी थी । वसरकोत्रस वैशके सूर्ववंती शताबाँकी वह शतवात्री सी । स्थापीर एवं पुरुषे समयमें समाद गरेगांका नहीका प्रसिद्ध सम्राप्ट का । गुण्यनान-के बरनतक पद्म कोबलयानकी राजवानी वनी रही। जिन्तू नुराधानी ही रुपनी मनवति धारम्य हो वसी । क्राह्मान और हर्एन्सान मानन चीनी पानियोल प्रते बसबी हुई खबरवास गासा वा । किस् हुर्पपर्यन्ये इक गामनने नृष्टि होता है कि बसके समन्ते वह प्रदेश बहके राज्य-की एक मुलिए (प्राप्त) या । ९औं १ वीं बसी है से सावासीकी क्ली कार्या हुई और वड़ों एक बैनमसॉनुवादी बंदाना राज्य वा क्रिक्ने समस्य स्रोतसम्बे सेनुतार नुबन्धस्थः । एकरस्थः ईएसाम और गोरम्पन धार्ने रामा तमन हुए। यह वस सम्बद्धा सरक्रारको सक्त्यारको एक बान्स थी । करुपुरीचंद्रको निर्देश कालायोग सामान्यदरा वेदसर्वती अपूर्णियी। नमा सारापर्व को आवरतीके इस वीववंतका कक्क्युरिजीते ही दानान हीं निवेषकर वय कि इस काक्ये और इसी प्रवेक्ये - क्रक्युरिगीके एक बानू-पार्टनबना राज्य होनेका नता पकता है । बनरान्त बोरानाबने कारान्य मानतीका राजा मुक्तिकन्यत हवा को बड़ा बीर और बराइमी होनेके काम ही साम जैनमर्गका नी वसूनानी था । ११वीं स्वतान्तीक पूर्वार्थने राजा वाराज्यान विशिष्य होया है। क्यमें सहनूर प्रकारीये केरी विश्वहणकार सँगद बास्थर नवक्रम गामीको नक्षप्रदक्षके प्रक्रिक सूक्ष्में हुएँ। राष्ट्र रामिय किया बढावा बाता है । वृद्धिकार व वा तृहिस्सेरके स्तार् क्लका रोता इरविद्वेष जानातीका राजा हुना । छन् ११९४ ई वे पद्मानके नीवित्रकात महत्रवाकने व्यवस्थापर वाक्यान करके को छाक-महत्त कर निना । शर्रावहने आनकर बुद्रेक्या वच्ये बढी बना की और फर न्यूनि क्षत्रक नेवास नैपाधने था वरो और पाविता मुन्तान्त राजनी स्वासी वर्षे ।

वान्देशवारा--वार भारतचे पूर्वपृत्तकमान पुरका वसके शामक मन्त्रिक भीर कविराधाची मंध केंगाकपुरिताने पासेके राजपूर्यांचा वा ।

. . व्यक्तीय प्रविद्याच्या एक एकि वतमात विभयप्रदेश (बुन्देलखण्ड) गुप्तबाचन गुप्त ताम्राज्यकी एया प्रसिद्ध मुक्ति म । देवाद और यजुराही आदि उसके प्रमुख नगर थे । मन् ८: १ ६० में नानुक चादेलने इस बदाकी स्थापना या और टार्जुरवाहम या टाजु-राहोको अपनी राजधानी बनाया । चम्देन्जोंका मुरु सम्बाध चेदिस रहा प्रतीत होता है और दनका उद्गम भार एव गोष्ट जातियामे हुमा अनुमान विया जाता है। बिन्तु उनकी अपनी अनुस्तियोंके अनुसार उनका प्रयोग्रहप स्राह्मण या। वे अपने-आपको आत्रेय ऋषि और बाइकी मन्तान यगाते है। नन्तुवनं कन्नीजके प्रसिहारोपे सामन्त्रके रूपमे ही चादेल राज्यकी स्थापना की यो अतएव प्रारम्मिक चादेल राजे पतिहारोंके अधोतस्य राजाओंके स्पर्मे नो रहे। नन्तुकके परचान् वाक्पति राजा हुआ, उसक दो पुत्र जेजा (जयगिवत) और येजा (विजयशिवत) थे जिल्होने क्रमदा राज्य किया। जेजाके नामपर यह प्रदेश जेजाकमुनिन नामसे प्रसिद्ध हुआ बताया जाना है। कालान्तरमें इसी शब्दका त्रिवृत रूप जुझौती हुआ । जेजाकी पुत्री नट्टाका विवाह त्रिपुरीके कलचुनि-नरेश कोक्कल प्रथम (८४५-८८० ई०) के माप हुआ था। वेजाके बाद राहिल राजा हुआ और फिर हप चादेल गही-पर बैठा। इसने ९०० मे ९२५ ई० तक राज्य किया। इसके ममयमे च देलोका उत्कर्प प्रारम्भ हुवा। हुपँका पुत्र यशोधर्मन या लक्षत्रमैन (९२५-९५४ ई०) और अधिक प्रतापी था । बन्नीजने महीपाल प्रतिहार-से उसके मित्रवत् सम्बाय थे और उससे उसने एक प्रसिद्ध विष्णुमृति भी प्राप्त की थी। इसका पुत्र वग (९५४-१००२ ई०) वहा महत्त्वाबांक्षी था। उनके समयमें च देल राज्य एक सबधा स्वतन्त्र राज्य था और धग अपने ममयके सर्वाधिक धायितशाली नरेशोमें-से था। ९९० ई० में उसने स्वम्तगीन ग्रजनवीके विरुद्ध भटिण्डेके जयपालकी सहायता की थी और युद्धमें स्वय भाग लिया था। लजुगहोके सर्वप्रसिद्ध और सर्वधेष्ठ जैन एव वैष्णव मिदरोमें-स कई इसी उदार नरेशके समयमें और उसके प्रध्यमें निर्मित हुए थे। वहाँका भव्य पार्स्वनाय-मन्दिर इस राजाके शासनके प्रथम

करावा । समू १९४५, ११५४- ११५५, ११५८- ११६६ आदिको अनेक कैन मृतियाँ इन रामाके सासवकाणये शतिवित वर्ष निकरो है। ११५५ नी मृत्तिपर वर्तके निर्माता फिल्के कुमार्शवहका बान को अंक्टि है।

में बारार वरतरहरी एक वैक्सॉन्टरका की निवास हवा । १२वीं बर्ताके नव्यमें पर्यक्ष-गरेख नक्ष्यकों बाधे निर्मात वा । उदने अनेक शवर वरीचर तथा वैन एवं बैन्स्य-मन्दिरीका निर्मीय

धारते बन १ ६० ई. में बेस्वहरें बचीन पूर्व अनवाकर बनका नाम मीतिविरि रक्षाः राज्यवे नई वैध्यन जैन वर्क्यः सन्दर्भ वर्ते । इंग्रे राजाने बारानराजने १.६५ ई. के बक्कर क्रम्मानियने अपना उनीप फ्लोबर बाटच किया को राज-नवार्ते खेला को बना बा। १ ६६ हैं

नत् १ २३ ॥ व्यक्त्य क्षत्रमधीके त्राथ बुद्धमें विद्यापर परान्ति हमा ^{स्}र हमी बनवने पश्चांकी व्यक्तिक हाथ वारण्य हवा । ११वी भ्रतीके क्लरावंगे १ववें राजा कील्वियनम राज्य रिया। वनके नवदमे क्लोम शास्त्रको स्थिति किएव बेंबस वदो । यद समावर एक बनान्तीके निए व्हक्तवानोके बाक्तवर्णि की नारश्ववर्षको पास निमा भीर फ्लेबाने इन रिमिटने कुछ नाव बळाया । वर्शितवर्गनके मन्त्री मस्य-

भीर मुस्तियों निर्माण करायों थाँ । कनके वृक्ष मृत्रि वानक्षत्रप्रशासी मी मादर करता मा । मंगका पुत्र नग्द भी जनारी और वशिकास्थ नरेय मा। रे ८ ई में बनम अनन्याल बाही-हारा शामूप श्रवनपीये विका निरोजित संवर्ते नहरूबरूवः जान विकाशीर वसक्षरा वदा मुख्यामा विचा। सत्राहोके बान्तिगर-संस्थान बाहिनानकी विद्यास प्रशिप्तकी प्रतिष्ट इनी नरेघक वृद्य विद्यावरदेशके धाननकालके कम १ २८ वें में हुई थी।

पत्रमें हो तिमित्र हुमा था। जब् ९५४ ई. के शक्त शन्द है। सम्बन्धि शिक्षाचेक्यमें अराजान संबंधे कुचायाय बाहिल नामक प्रक्रिप्त जैन केंडि परे राजपुरवन्द्रारा सर्गेषः बाल दिवे कामेचा बन्तेस्त है । शहने वर्षे मनिर

((उप रहा। यह इस यशका अन्तिम महान् नरेश था। दिन्ही-अजमेरका एयोराज चौहान और भन्नीजका जयचाद्र गहरवाल उसके प्रवस प्रतिद्वन्ती वे। महोतेके लोकप्रिवद योदा बाल्हा और ज्वल परमार चन्दलये ही साधित एवं मेनानायक थे। जपनिषके सास्त्रनण्डन उस बालकी सन सनेक वीरगायाओको सजीव बनामे रसा जिनमें महावेके मे बीर नामक से । सन् १२०२ ई० में परमालकी मृत्यु हो गया और चन्देकोन मून्यहीन ऐश्कम पराजित होकर उसकी अघीनता स्थीकार कर शी। परमादिदेव भी निर्माता या, अनेक मन्दिर उसक कालमें बने । अहारक पान्तियाय तीर्यकरको सुदर विशाल यद्गासन मूर्तिका इगोके राज्यमें सन् ११८० ई॰ में रूपकार पापटने बनाया था। १३ वीं घत्वोके उत्तराधमें बादेलराज वीरवर्मनदेव भी अजवगढ़के तथा अनेक देव-मदिशोक निर्माणके लिए प्रसिद्ध है। उनके समयका सन् १२७४-७८ की मूर्तियाँ एवं लेख मिलते है। मन् १३१० ई० के लगभग चन्दल राज्यका अन्त हुआ और यह मुसलमानी माम्राज्यमें बलाउद्दोन खिलजो-द्वारा मिला लिया गया।

लगमग ४०० वर्षके दीर्षकालमें चंदल नरेवाते भारतीय कलाका अभूतपूर्व पीषण किया। उनका निजका धर्म जैन न होते हुए भी वे जैनममके प्रति अरवन्त सिहण्णु और उसके प्रवल पीपक रहे। देवगढ़, स्रजु-राहो, महोबा, अलगपढ़, अहार मदनपुरा, मदनसागरपुर, वानपुर, पपौरा, चंदो, ह्दाही, चन्दपुरा, छतरपुर, टोकमगढ़ आदि चंदल प्रदेशके प्राय सभी प्रमुख नगराम समृद जैनोंकी बडी-वड़ी बस्तियाँ थीं, उनके श्रीदेव, वासवच ह, मुमुदच द्र आदि अनेक निर्मन्य दिगम्बर साधुओं एवं विद्वान् आचार्योक्षा राज्य-मं उमुक्त विहार या और अनेक भव्य विद्याल जिनमन्दिरों एवं जैन कला- रृतियोंका उन म्यानोंमें निर्माण हुआ। जैनकलाके ये चन्देलकालीन उदाहरण मारतीय कलाके सर्वोत्कृष्ट नमूनोंमें-से हैं और पूर्व मध्यकालीन भारतीय कलाके सर्वोत्कृष्ट नमूनोंमें-से हैं और पूर्व मध्यकालीन भारतीय कलाके सर्वोत्कृष्ट नमूनोंमें-से हैं और पूर्व मध्यकालीन भारतीय कलाके सर्वोत्कृष्ट नमूनोंमें-से हैं। उक्त राज्यके जैनियोंने भी राज्यकी सवतोमुको उद्यादिमें पूणतया योगदान दिया। शिव और विद्युक्त



देशो राज्य उस कालमें उत्पन्न हो गये थे। उनके अतिरियत तिन्वत. नैपाल, कुमायूँ, गडवाल, आसाम आदिमें भी स्यत त्र या अर्धस्वतन्त्र राज्य थे। एक अनुभृतिके अनुसार इस कालके परिहार, परमार, सीरकी, राठीह, चौहान, नछवाहे आदि अधिकांत राजपूतवत अधिनमूछने नहे जाते हैं और वर्जन टाडवे मतानुसार उनके अध्निकृत बहलानेवा कारण यह मी हो मकना है कि वे जनधममें दोक्षित हो गये थे। कमसे कम उस कालने विभिन्न छोटे वहे राज्यवनीया जो इतिहास प्राप्त है उसम इस विषयम तो सन्दह नहीं हैं नि इन राज्यवंत्रोमें अल्पाधिय काल तक जैनधर्मको प्रवृत्ति अवस्य रही थी । इन सय ही अज्याम जैनधर्म और उमके अनुयायी मूखपूर्वक फले-फुले । राजागण जैनवर्मने यदि अनुयायी नहीं हाते ये तो उसके प्रति उदार एवं सहिष्णु अवस्य गहते ये। साध हो जैनधर्म और उसके आचार-विचारके प्रभावसे उनको धोरसा, युद्धप्रियता कौर स्वात व्य-प्रेममें कोई कमी नहीं वायो थी। उनये पतनका यान्तविक नारण उनकी परस्परकी फूट, जाति और कुलका दुरिभमान, उनमें परम्बर एकता और एकमूत्रताका अभाव और दूसरी ओर धन एरं राज्यके लोभसे प्रेन्ति धर्माच एव कर मुसलमान जातियोके अनवरत आक्रमण, छल, वल और कीयल थे, जिन्होंने सहज और धीन्न ही देशको विधर्मी विदेशियोंकी पराधीनताम जनह दिया ।

सूर्य, शिवन तथा विष्णुके विभिन्न अवतारोको लेकर अनेक सम्प्रदाय चल पढे थे। तान्त्रिक और वाममार्गी मम्प्रदाय मी उत्पन्न हो गये। वीर शैव या लिंगायत-जैसे नये नये सम्प्रदाय तथा जोगियां और साधुआ-द्वारा चलाये गये नये-नये पन्थ नित्य पैदा हो रहे थे। इन समस्त विभिन्न एवं बहुधा परस्पर-विराधी सम्प्रदायों और पन्धोको सामूहिक रूपसे, विद्येपत्या मुसलमानों द्वारा, हिन्दूधर्म कहा जाने लगा, उन सबका अन्तर्माय इस एक ही नाममें सामायत किया जाने लगा और इनमें से किसी भी सम्प्रदाय या पन्थका माननेवाला अपनेको हिन्दू कह सकता था और कहलाने लगा।

वैत्रवर्त की शाहा कारतारके अब तका तकार्यका है। प्रवर्तका वृद्ध स्थानम् नाग्रह्मय-योगां 🛅 वनः चयाः आवेशानः नाधवानाने साम्बेनिय बीर नामांत्रक पृष्टिने चेनी बीर किन्दुकोंने वास क्षेत्रई जन्तर गर्डी टेन परने तथा अब को वब बार्शन्त, विशेषक बस्तपूरी विव्यूपर्वन होन्छण्, पानुसर बाहरमान जुनारशाम बीचंदी-बंदे वर्ष बसाट, बवेच पर्ने-बरपने बाक्त-बरघर, केमलॉंड बोर शीवान वेती डोचे हैं। मार्च क्षिणु द्वया मुनलनाल कन्नाव, नीयवर्षेत्र गुज्योवस्त और नायवस्ता औ पटे रिक्ने हो देखींने कर-कामारण प्रजाब आहर और शहान वर्ष घड बादियोजे जी सैनवर्गके अनुवासी वाले बात के इस्मीर रक्त वर्जेनियर है सनुनार बन् ६ -- १९ है के नाम जैवसमें बाममारतारी करने वातियोगा प्रप्रत पत्र या । रिग्यू यूर्ग-यूर्व यद्य वर्ग आचार-सदगर-प्रयान समिक् मार्टिन हों धीनित होता पत्त बना। इससे इनकी समान एवं लोकप्रिक्ता को वरी. विष्णु काहित व्यक्ति वीष. बालादिक लिबीनी निर्देश सन्तर नहीं कामा । वर्ष एक कावरायों । एवं बादेशिक वेटी बनाव क्षेत्र क्षण पत्था मारिकोर्थे विश्वनत हो कालेपर जी जैनकर्तकी बंस्कृति बीए भौतित्ता कुमनत् अलुष्य क्यी शरी आहा आचार-विचार पृश्च-स्कर्णि, स्बोद्धार-उत्काम मानिये जिल्हा करत्रशानीके साम संबंधा बहुत कुळ बारान- ादान हुआ तथापि उसकी सैद्धान्तिक मूलभित्ति अंडिंग रहो, उसके मौलिक विश्वास औ परम्परार्ष स्थिर रहे और डनके कारण वह भारतका एक स्वतन्त्र एव प्रमुख घर्म बनारहा। उसके प्रेग्क तत्त्व मजीव वने रहे और उनवे कारण उसके अनुयाग्यियोंका धार्मिक उत्पाह सजग रहा । इ हीं कारणोने जैनधर्मकी तथाकथित हिन्दूधर्नमें आत्मसान् होनेमे रक्षा की और माय ही उसे बौद्धवर्मकी जो गति हुई उमसे भी उसे बचा लिया। मारतवर्षकी मौलिक घामिक महिष्णुताने इस देशमें षामिक विद्वेप, अत्याचार एव साम्प्रदायिक वैमनस्यपर बहुत कुछ सफल नियन्त्रण रखा। यही कारण है कि मुसलिम युगके पूर्व एवं अनेक अशोंमें उसके प्रारम्भके उपरान्त भी विभिन्न भारतीय धर्म वहन कुछ पगस्पर सहयोग एव मद्मावपूर्वक साय माय फलते-फूलते गहे। वानेवाले मध्यकालके विदेशी विधर्मी मुसलमान शासन-कालमें जैनधर्मकी प्राय वही दशा और स्थिति रही जो अय भारतीय घर्मोंकी थी। उसके शान्तिप्रिय एव धनी व्यापारी अनुयायियोंके कारण मुसलमान शासकोंने भी उसपर अत्यधिक अत्याचार नहीं किया प्रतीत होता ।



र राज्यके इष्टदेव 'कल्लिंग जिन' कहलाते थे । विद्वानोंमें इस विषयमें तमेद है कि ये कॉलग जिन' सादि या संग्रजिन प्रथम तीर्थंकर ऋषभ-व थे, या भद्दलपुर (कॉलगदेशस्य भद्राचलम् या मद्रपुरम्) में उत्पन्न सर्वे तीयकर शीतलनाथ थे अथवा २३वें तीर्थकर पार्क्नाय थे। किन्त् नहावीरके जन्मके पूर्व भी इस जनपदमें उक्त कॉलग-जिनको प्रतिष्ठा थी इसमे सन्देह नहीं ह । तीथकर पार्श्वका विहार कर्लिंग देशमें हुआ था । भगवान् महावीर भी वहाँ पघारे थे और राजधानी कल्लिंग नगरके निकट कुमारी पवतपर उनका समवसरण रूगा था। उपरोक्त घटनाओंकी म्मृतिमें उनत स्थानपर स्तूपादि स्मारक बने थे और मुनियोंक निवासक लिए गुफाएँ भी निर्मित हुई थीं जो खारवेलके समयके वहुत पहलेसे वहाँ विद्यमान थीं। इन सब वातोंसि विदित होता है, जैसा कि प्रो॰ राखालदास वनर्जीका भी मत है, कि उड़ीसा प्रारम्भसे जैनवमेका एक प्रमुख गढ था। वस्तुत इस प्रदेशम आर्यसभ्यता और सस्कृतिके प्रवेशका श्रेय जैनवमैको है।

छठी घताव्दी ई० पू० में किंठग देशपर जितशमु नामक राजाका राज्य था जो महावीरक पिता राजा सिद्धार्यका मित्र और बहनोई था। इनको कया मगोदाके माथ महाबीरके विवाहको बात चली थी किन्तु महावीरने लाजनम बह्मचारी रहनेका ही दुढ़ निश्चय कर लिया था अत यह विवाह न हो सका। जितश्रमु सम्भवतया किसी प्राचीन विद्याघर वसस सम्बन्धित था। उसके वश्रजोंने नन्दकाल-पर्यन्त इस देशपर निर्वाध धासन किया प्रतीत होता है। महाबीर निर्वाण सवत् १०३ (ई० पू० ४२४) में मगधनरेश निन्दयर्धनने किंछगपर आक्रमण किया और उस राज्यको अपने साम्राज्यका अग बनाया। सम्भवतया वह स्वय जैनी था अत किंत्रको राजधानोमें प्रतिष्ठित किंगजिनको भव्य मूर्तिको अपने साथ लिवा छाने और अपनी राजधानी पाटिलपुत्रमें प्रतिष्ठित करनेका लोम सबरण न कर सका। मगधनरेश महानन्दिनके छपरान्त ई० पू०

अध्याय ह

कार्रिय,गुजरात बंगास, शिन्य, करमीर, सिए और बद्धार भारत फर्सिग--वान्य राज्य पूर्वी सबूहत्रद्वार वासमृत्ये वंत्रत दर्जन

कैंग्स हुना था। जबको उत्तरी शोधा बंधावरीको लाई कछी थै। इतियाँ नक्त प्रजनके प्रपानन करे का फैंके हुए थे। पूर्वी जारताय नहाना^{तर क} सीर पतिचारो जीता जन्मकासाची समरपण्डम प्रमुपाना ग्रेफ पहुँचाँ। मी । विवयशोधन या महाजेलक देशः भी बहुदा प्रवर्क मीतर हो वहन था। रुक्ति (वर्तनान कहोना) शो विश्वविष देव मी कार नहीं है क्योंकि उनमें क्रकुल क्योव और गीवक (परिची मेंत्रमें) है हीन वेश श्रामानित थे । वैशिक सामित्वये ग्राम्पकः कोई सक्तेत्रः नहीं है । महाभारतमें बत्तका वर्जन एक रूपा अवेशके वर्जन हवा है। जिस्ता धना

विवासर था । अर्थकारमके अनुसार सही एक विरोध प्रकारका भूगी नार्थ बन्ता वा । पर्रमुकीर एके स्त्रेच्या देश बद्धा है और पर्रो वानेस्टिनी पारची नदा है। इन त्रकार बाहाय-मरान्यराय व्यक्तिन केच मिरताओं स्व एक अपने अवेडिक देश वता रहा - वीजान्योर्व वनिवदेश और प्रथमी राजकारी बरणपुरने जरेक शरीक है रिन्यू बीज अनुमूरिये होगई महाजनारीमें उद्यान करनेक वहीं है। इसक निरारीत बीन बादित्य मीर

समुक्तिगाँने वरित्र देशचे अनेच अनेच विश्वर्ध है चाँतनके वर्ष

शापात करूमा पुरायरवानयेच जीन है और इन देवने कराना प्राचीन कारचे ही मैन तीर्वकरींची अविद्या रही जारेल होना है। इस ^{देश} भारतीय इन्दिस्स**्ट एड** धी गमनकारके अनिम वर्षीमें करिंग फिरमें स्थताय हो गया और वर्षी एक ावीन राज्यवराचा उदय हुआ । यह नमीन वश मी जैनमर्मानृपाधी था। गाचीन राज्यवंदाने इसका कोई मम्बन्य या या नहीं यह नहीं बहा जा पुकता । सम्मायना यही है कि यह विशिषक विभी प्राचीन राज्यबदाकी ही षाचा भी । सारवेलके शिलालेखक अनुसार इस यशका नाम ऐक घा और यह चेदि या चैत्रवैतको एक शासा थो। तत्कासीन राज्यका नाम सम्बद्धनया क्षेमराज या । मुद्य विद्वानींने अनुसार क्षेमराजना पृत्र बृद्धिरात या और उसका पुत्र निस्तुराज लारबैन पा, किन्तु कुछ-लुछका मन है कि में गय ग्लार-वेल हो ही अपनी उपाधियाँ यों। जो मी हो इसम मादह नहीं है कि न्वारबेलके पितामहने ही सम्प्रतिके समयमें इन शारावताका स्यापना को वी और विजानी स्वतात्र विया था। यारवरचे पिठाची मृत्यू अपने पितावें जीवनकालमें ही हो गयी थी अवएव उवत वृद्धिरातका उत्तराधिकारी चमका पोता लाग्वेल हुआ। कालग चक्रवर्ती महामेचबाइन राजींद स्टार्येल-प्राजाम लगनग १९० ई० पू० में हुआ, १५ वर्षकी आयुर्मे (६० प्र १७५ में) उसे युवराजपद प्राप्त हुआ और २८ वर्षकी आयुर्ने ई० पृक् १६६ के लगमन उसका राज्यामियेक हुआ। उसके उपरांत कण्ये कम रैः वर्षे पर्यन्त उसने राज्य किया जिसका विशद वणन उसके स्वयंके शिनानेन्त्रमें प्राप्त है। उनके (६० प्० १५२ वे) उपगन्त वह कितने वर्ष जीवित रहा और उसने सवा-त्रमा किया इसके जाननेका वर्तमानमें नाई सावन नहीं है। मम्राट् मारवेणना यह इनिहाम-प्रिट विज्ञालेन टडोसा प्रदेशके पूरी जिल्लेमें स्थित मूबनेश्वरसे नीन मीलका दूरीपर दिखमान माण्डीगरि पर्वतके उत्तरी भागपर जा कि उदयगिरि महलाता है वने हुए हायोगुस्का नामके एक विद्याल एव प्राचीन मृत्रिम गुफासन्दिर-व मुद्र एवं छतपर अरकीर्ण है। १७ पिततयोंना यह महत्वपूर्ण रेख ८८ वर्गक्रीट धीत्रमें लिला हुमा है। रेखकी भाषा अर्द्ध-मागधी तथा र्जनप्राहत मिथित अपभ्रदा है। लेखके सायमें मुकुट, स्वस्तिक, १९४ में को राज्यकान्ति हुई जनका नाम कटाकर कॉन्स राज्य है। स्वतन्त्र हो बया प्रतिक होता है। इन समय सम्बन्धन कोई वेजनीवर्त मी हमा, जिल्हु यह नहीं बड़ा का बकता कि कह नहीं तर्मा प्रांति रामबंधपे ही सम्बन्धित या सबदा को नदीन बंध वा । एकारी नेवरी-में बारतके नम्मानने प्राचाके काम-साथ देवराइडिक माम्पना को क्रोप किया है जनव मुख निहारोंका कमुमान है कि यह राजाबीन गर्कन धारावा ही मुक्त है और सम्प्रताम क्षा वस बान वस देवचेटी राज्य का त्लिक बंधरीने कामानारमें कर्बाटको संस्थित राज्यों स्थानमा की की बीर करियन देखपर की कई श्राम्मीयों पर्वन्त धारा किस या । कारम बारि कारकीने कॉनवडी वहीं होता । पणपूर्ण कीरी यी बचरारको अस्ते सामान्यको भूकतन्त्रिक करने सौर बुवार्लको नोदा केते राज्येके कारण कॉक्स्फो बीर ब्याल क्षेत्रा वर्णनाय ^{प्}रे मिना । विजुतारों को कॉलन राजने विश्वसादी रही, किन्<u>र</u> कार्ने पुत्र मबीयने पारवर्ती बारवेकी बाकराओं व्यक्तिपार गाउनमा निया। बंब बन्म वह एक धरिलयाओं राज्य था, बंबका बाबारन वर्तन्त्रार पूर्व देशों वह कैस का नुपूर पूजि करके तरेज क्यांनिय को रहे डॉ.मं

बचा । फिन्तु नवन कात्रात्मका किलार तो। चरण सीमारर **जू**च वस्र । राम्या वर्षानके बक्तमा हर्ष स्वातन्त्राची अतील अति हो दवनै सम्ब नदी है। रीयधी बाराम्बोर्ड प् के सन्तर्के सन्तरम् समादः बार्यातं नीर्नि भारतीय इतिहास वृत्र सी

होते हैं और काम मातार थी बदा बदा था। है पू पड़ा है समाप बाने प्रभावे औं क्षेत्रें एक बारी देख केवर सर्वाक्ते रहिनार सक्रमण निया, सीचय यूत हुआ। निवास क्षत्रका जेड काम मारित द^{ारी} हुए एक बाब गारे वर्ष और बनके क^र पूरे बुदके परिवासके वर मेरे ! इस बीचन क्यांहारने सबोक्सी विचलित कर रिश्व, असरी स्थेन्सिने माधै भरिवर्तन हुमा जोर वह आवेक्षे एक वाल्यांन्य नवीत्व वर्तन त्नोंको भेंट लेकर अपने चरणीमें नमस्पार कराया । पौचये वर्षमें राजा उम नहरका राजपानी (दोरालि वा वॉनग नगर) तक लिवा लाया जिसे महायोर सबत् १०३ (६० पू० ४२४) में नन्द राजाने सर्वप्रयम खुद-वाया या । छठे वपमें उसने राज्यैश्यर्थ प्रदर्शनार्थ प्रजाजनोंके कर आदि माफ किये, दीन-दुखियोपर पृपा दिखायो, उन्हें सन्तुष्ट सुस्री किया और पीरजानपदों (जनत शात्मध संस्थाओ, नगरपालिकाओं, ग्रामपचायतो, ब्यावसायिक निगमो, श्रेणियों आदि) पर सैयडो हजारों विविध प्रकारके अनुग्रह किये । मातर्थे वर्षमें उसकी रानीने, जो यगदेशस्य वज्यवर राज्यकी राज्यकुमारी थी, एक पुत्र प्रसव किया। माठवें वपमे सारवेलने विशाल मेनाके साथ उत्तरापयकी विजय-यात्रा की, गगघपर आक्रमण क्या, गोरथिगरि (गया जिलेका बराधर पर्वत) पर भीषण युद्ध करके राजगृह नरेदायी शस्त किया और उसके भयसे यवनराज दिनित्र भी अपनी समस्त सेना, बाहनो आदिको यत्र-तत्र छोडकर मधुरासे भाग गया। यमुना तटपर (मयुरामें) पहुँचकर पुष्पित पल्लिवित कल्पमृक्ष मभी अधीनस्य राजाओ तथा अध्व-गज-रथ सैन्य सहित यह राजा सय गृहस्या द्वारा पुजित स्तूपकी पूजा करने जाता है। उसने याचकोको दान दिया, ब्राह्मणोको भरपेट भोजन करामा और अरहन्तोकी पूजा की । नर्वे वर्पमें उसने प्राचीन नदीके दोनी सटोपर अहतीस लाग्य मुद्रा व्यय करके महाविजयप्रासाद नामका मुदर एव विशाल राजमहल बनवाया । इसवें वपमें अपनी सेनाओं को विजय यात्राके लिए पून भारतवर्ष (उत्तरापय) की और मेजा और फल्स्त्ररूप उसके सब मनोरय पूण हुए। स्वारहर्वे वर्पमें उमने दक्षिण देशको विजय किया, पिथुण्ड नगर (पुयुदकदर्मपुरी) ना व्यस किया (उसमें गदहोंके हल चल्वाये) और ११३ वप पहलेमे सगठित चले आये समिल राज्योंके सघको छिन्न मिन्न किया। (अर्थान्तर—क्षा केतुमद्रकी उस १३०० वष प्राचीन निस्वकाष्ठ निर्मित प्रतिमाका जुलूम निकाला जिसकी कि स्थापना पुवधर्ती राजाओने पृथुद- धानक्षयको प्रतिकाकै प्रकारक प्रजन्त पूर्व सूच रुप्तकोवे कुत्त चार्चे विधानो (विश्व) के बाबार रचन्त्र अनेक बुनीने हिन्दित बन्तिरेसी व्यविपनि देशवर्धी (या बाय) बहारात्र बहावैषवाहर भी बारदेशकाय बद बेल रुप्धाने कराया नमा दिल्होन जरने काल प्रदानी जिल्हा कियौर यरीर-हारा पन्नह वय वयना नुवार-बोधाएँ वी । तस्तनार केवर मुडा वा चित्रकार व्यवित व्यवहार वश्च राजनीति और प्रावस-शास्त्र सार्वर समस्य विकामीये कार्यक श्रीकर की क्य तक श्रवराज-वरने कार्य निना । यहरी कानुना २४वां वस कपान होत्तरर पूरे बोदनकानने वर्ष चत्तरोचर वृद्धिमान सहात् विजेताका क्रिक्क वृत्तीय राज्यंक्रमें सामी^{क्र} के लिए न्यागरपाविके हवा। व्यानक होते ही बचने चामके प्रस् वषने वषने जांबी-तूराल आदि वेथी। अधीरोधे नष्ट हुए। राजवासी व्यक्ति नगरक नीपुर प्राकार ध्यक्षणो काविका बीवाँबार कराना, धोराज वक्षे करीयरो दर्ज सरको मार्थिक श्रीम बीक्यांने और बदालांका कुछ निर्धान क्यमा मीर मपने पैरीन काथ सराजनींको एंडायमान हिमा-स्थी निर्मा दिगीय वर्षने यात्रकॉन (शक्तिमारपडा बाद्यवाहन बजाद बाद्यवंत्रि स्पन) की परमा न करके पुरुषकार, हात्री पेपक और एकोकी निवास केंग परिचम निवाने येथी श्रेषा शुन्तवेता तथापर व्यूपकर वृत्रिकॉरी (अनिमी मी) राजमानीका निर्मात कराया । टीवरे वसमें इस सम्बर्गीवदानिरार पुपरिने गुन्य समीत गारिको प्रदर्शको तथा अनेश उरक्षमी वर्ग स्थानी (मारक बीम वार्षि) के बालीजनो-प्राप्त अपने राज्यके नागरिगीय मगोर्थम किया । पीचे वर्षने सक्तव अपने पूर्ववर्धी कवित्र सुपराजीने नियानके किए निर्वेश कत विधानर-निराधमें को इस बध्य की कन् मा (धनिक मी जीर्थ-सीम नहीं हुआ था) निवश्य करहे हुए इस र्थी ह

मीर बीनक राजामंति जिल्के राजपुरूट और राजक्य वह वर निर्दे

वास्थीय इतिहास । वह धी

क्याच्यः वयोक नृत्र वाचि चैन शास्त्रतिक वेनन प्रतीक मो वर्ने 🖔 है । नेप्य-"वन्त्री एवं वर्ष विद्योगी नगरवार करके चैक-(चैकि-) र नोंकी मेंट लेकर अपने चरणोंमें नमन्यार कराया । पाँचवे वर्षने नाता रम नहरमा नाजधानी (तोषाठि या वर्तिम नगर) तथ मिदा लावा दिन महाबोर सवत १०३ (६० पू० ४२४) में नन्द राजाते नर्वप्रयम राद-बाया था । छठे वर्षमें उसने राज्यापयं प्रदर्शनार्य प्रशाबनीक कर हाहि माफ विषे, दोन-दुनियोगर इपा दिखायो, उहें सनुष्ट मुने किया और पीरजानपदीं (जनतात्रात्मक सम्यामी, नगरपाछिणात्रीं, ग्रामपचायतों, ब्यावमायिक निगमों, श्रेणियों बादि) पर सैवडों हजारा विविध प्रभारके अनुप्रह किये । मातमें वर्षमें टसकी रानीने, को वँगदगन्त वज्रवर राज्यकी राज्यक्नारी यी, एक पुत्र प्रसव किया। आठ्यें वपके सारवेणने विशास सेनाके माय उत्तरापयकी विजय-पात्रा भी, मगमनर आक्रमण किया, गोरथिगिरि (गया जिलेका बरावर पर्वेत) पर भीपण युद्ध करके राजगृह-नरेदाको अस्त किया और उन्नरे मयसे यदनराज दि मन भी अपनी समन्त सेना, बाहनों आदिको यत्र-तत्र छोडकर ममूराम भाग गदा । यमुना तटपर (मयुरामें) पहुँचकर पुण्यित पल्यवित कन्युरुक्ष सभी अधीनस्य राजाओं तथा अध्व-गज-रय-सैय सहित वह राजा मद गृहस्यी-द्वारा पृजित स्तूपकी पूजा करने जाता है। उसने याचकाँकी दान दिया, ब्राह्मणींको भरपेट भोजन कराया जीर अन्हन्तींकी पूना की। नवें वर्षमें उसने प्राचीन नदीके दीतो तटापर अहतीम साम मुझ व्यय करहे महर्गवजयप्रामाद नामना मुदर एवं विद्याल राज्महरू बनवाया । इसुवें वपमें अपनी नेनाओंको विजय यात्राके लिए पुन भाग्तवर्षे (उत्तरापय) की ओर नेता और फल्स्वरूप उसके सब मनीरथ पूर्णे हुए। स्वारहर्दे वर्पमें उसने दक्षिण-दशको विजय भिया, पियुण्ड नगर (पृयुद्दद्रमंपुरी) मा व्यक्त किया (उसमें गदहोंके हरु चल्वाये) और ११३ वर्ष पहाने साठित चले आये तमिल राज्योंपे सधकी छिन्न-मिन्न किया। (अर्थान्तर—या नेतृगद्रकी उस १३०० दर्प प्राचीन निम्बकाष्ट निर्मित् प्रतिमाका जुलूम निकाला जिसकी कि स्थापना पूबवर्ती राजाओंने पृत्यूर्- पराम दिया अन्ते अस्त-ध्यस्त कर दिया अनवकी अनवार्वे सारी प्रदर्भ बंचार हिना अपने झानिसीरो (चार्टानपुत्रके) सामेव नामक राजनातान में ब्रॉरह दिया (का चंचा शरील पानी टिलामा) और अनवराज मुन्तन विभिन्न (पुच्चमित्रमून ?) के अपने वरणीने बचान करवाया । वृत्रकानी मन्दरामानारा अञ्चल कॉबबॉमन (या बवरिन) की प्रतिवादी एक सम-नरम राज्येके बहुकूच रत्यो वर्ष बन-बन्धीतवी विजिञ्ज बन्धीतके कर्ये माने पर राज्य शाया। क्यान्य तथा विक्रिय वनके क्ष्में प्राप्त सर्ग्याते अपने मरानी समृद्ध विजनोः विश्वासकप ऐके समेक ज्ञासर (सन्दिरानर) बाजाने जिनमें राश्योव बैक्सों बहुमूख बसावींडे बच्चीकारी की नहीं को बनी बन स्थल शुरूर बॉबबके नान्य राजांव बनुतर्म वस बलवर्गनक कर्माताने वरे हुए क्ष्मान सीवे हाचा कैनक असि-गार्गनान गुरा महीर गर मक्ता और क्षमे शाख किये। इस अकार का न्यून वरेब

क्दर्ज नवरनें की वी शवा को नवन्त कनके जिए आहारकार्ध की)। बारार्वे वर्षि जन्ने वसरावयके राजावीये जनने बारमर्गोनारा बार्ड

राजाजोंको बंदीकुंड करका हुआ और अपने निजन-गळ-हाया बाहान्यर निकार करता हुवा निचन करता था । सम्बर्धे जाने राज्यके वेप्स् वर्षमें इस राजाने भूक्तीयविजयन्त्रक (जाला) में स्थित पुत्रारोत्परवर्ष माने राजनका हमाननी-तारा पूर्व भाषेके स्थित उन व्यक्तींकी स्मृत्ये निरवराई निर्मात परानी को निर्माण काम कर चुके में । वसनी

मानो राजसनीवें निवास करता हुवा तथ शबाजमीं और वसी^ब

मुनियोपे नियान करनेके किए मुखाएँ सम्पानी । सम्बं स्वास्त (कांपक) के बन प्राप्त किये और महीनानिएक निकट प्रथमें एक मुख्य निवान क्रमाध्यम (म निग नुद्धा) वस्ताम विस्के नम्मी रा

बहुमून्व राजवित वानस्थान स्थापित विशा वया । क्षेत्र क्षत्रान्यस्य

काले क्या कमस्य दुष्टमः सुनिशित झानी क्षणानी स्वत्यो (वैन सुनियो)

का कारीलय किया को पार्श विकासीने बुर-पूर्ण करने. सर्निर्माण होने

यास्त्रीय इतिहास एक **र**वि 1 6

लिए आये थे। इस मुनि-सम्मेलनमें राजाने मगवान्की दिव्य ध्वनिमें उच्चिरित उस शान्तिदायो द्वादशाग धृतका पाठ कराया, जो कि महाबीर संवत् १६५ (ई० पू० ३६२—मद्रबाहु श्रुवकेवलीके समय) से निरन्तर हासको प्राप्त होती आ रही थी, (तथा उसके उद्धारका प्रयत्न किया) और इस प्रकार उस क्षेमराज, वृद्धिराज, मिक्षुराज (राजिप) धर्मराज नरेदाने मगवान्की उक्त कल्याणकारी वाणीके सम्बन्धमें प्रवन करते हुए, उसका श्रवण और चिन्तवन करते हुए समय विताया।

विशिष्ट गुणोंके कारण दक्ष, समस्त धर्मोका आदर करनेवाला, धर्म सस्याओंका उद्धार, सुधार एव सस्कार करनेवाला, अप्रतिहत-चक्रवाहन (जिसके रथ, ध्वजा, सेनाकी गतिको कोई नहीं रोक सका), साम्राज्यों-का सतत विजयी एव साम्राज्य-सचालक और सरक्षक, राजींपयोंके वशमें उत्पन्न महाविजयो राजचक्री ऐसा राजा खारवेल श्री था।"

वपरोक्त शिलालेखका महत्त्व सुस्पष्ट है। समयकी दृष्टिसे सम्राट् प्रियदर्शीके अभिलेखोंके पदचात् इसी घिलालेखका नम्बर आता है। ऐतिहासिक महत्त्वकी दृष्टिसे यह लेख प्राचीन भारतके समस्त उपलम्ब शिलालेखॉर्म सर्वोपरि है। उस कालका यही एक-मात्र ऐसा लेख है जिसमें वश,वप-मंख्या, तत्कालीन जनसख्या, देश और जाति, पद नाम इत्यादि . अनेक वहुमूल्य ऐतिहासिक तथ्योंका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। प्रो० राखाल-दास बनर्जिक मतसे यह छेख पौराणिक वशाविल्योंकी पुष्टि करता है और ऐतिहामिक काल-गणनाको ५वीं शती ई॰ पू॰ के मध्यक लगभग तक पहुँचा देता है। देशके लिए 'भारतवर्ष' नामका सर्वप्रथम शिलालेखीय चल्लेख इमीमें मिलता है। कॉलग देशकी तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एव घामिक दशा, राजाकी योग्यता, राजकुमारोंकी दिखा-दीक्षा और प्रजाके प्रति राजाके कर्त्तव्योंका यह सुन्दर दिग्दशन कराता है। विहार और उड़ोसाके सम्बाधकी ऐतिहासिकताको २००० वर्ष पूर्व तक ले जीवा है। इसमें तो किसोको भी कोई स देह नहीं कि इस छेलको उत्कोण



हरियमिहकी कथा थी, यह लेण निर्मित कराया थी। मचपुरी गुफारे निचले सामम स्थित पातालपुरी नामक गुफाकी महाराज एल महामेद वाहनने यराज (सम्भायतया पुत्र) कलिंगाधिपति महाराज नुद्रपश्चीन निर्मिन पराया था। यमपरी लेणके लेखके जात हाता है कि यह राज्यूमार बढुपन निर्मित कराया या, सम्भव है कि उसने स्वयं भी वहाँ पर्म नाधन किया हो। व्याद्य गुफाको नगर यायाघीच भूतिने निर्मित कराया था। इस गुफाके निकट हा सपगुफाम बम्म, हलविण और चुलवम्म नामक स्यवितयोंके लेख है जिनसे विदित होता है कि गुफाके प्रामादको प्र म टोने भीर अन्तगृहको नापर व्यक्षितन वनपारा या । जम्बेदवर गुफाम महा-वारिया गौर नाकियके नाम अकित हैं। छाटी हाथीगुफा मिसी आत्मवाद्ध-द्वारा प्रदत्त की गयी थी। तत्त्वगुका कुमुम नामके किमी राज्य-कमचारी (पादम्लिक)-द्वारा निमाण करायी गयी थी। अन तगुफाका लेख भी उस श्रमणाकी गुफा सूचित वरता है। इन विभिन्न गुफा-मन्दिरा, छेणों और शिलालेश्वास स्पष्ट है कि स्वान्यलके बाद भी कई शतादियों तक खण्ड-गिरि-उदयगिरिको गुफाएँ जैनाका पवित्र तीथ और जैन श्रमणोका व्रिय आवाम बनी रहीं तथा कॉलगके राजवशमें, राज्य-कर्मचारियोंमें और जनमाघारणमें जैनधर्मकी प्रवृत्ति बनी रही । ऐसा प्रतीत हाता ह कि कम-स कम प्रथम शताब्दी ई॰ के उत्तराध तक जसतक कि सातवाहन नरेसींने र्कानग देशक बहुभागको विजय नहीं कर लिया, वॉलग देशपर खार्ग्येलना वश शातिके साथ शामन करता रहा, किन्तु अन्तर्देशीय राजनीतिम वह नहीं चलझा।

प्रथम शताब्दी ई० पूबके पूर्वाधमें (सन् ७४ ई० पू० के लगभग) शरबेलक एक बशज, वक्रदेवके पुत्र महेन्द्रादित्य गन्धर्वसन गहिमिल्ल (या व्रराभिल्ल) ने मालवेक नवस्थापित गणराज्यका नायकत्व प्राप्त करक उन्जीनोमे गहिमिल्ल सशकी स्थापना का थो। गहिमिल्लके अत्याचारा और अनाचारोने उसे सालकाचायने प्रयत्नसे शको-द्वारा ई० पू० ६१ में राज्य

चुन एवं देखी निर्वाधिक करावा भिन्नु वं पूर्व ५६ है बारे राज्ये पूर्व और विज्ञाधिकों बारोशों बार वयाता आक्रमनको स्वाम की और वैश्वस्थातक स्वामपूर्वक राज्य विद्या। बारो पूर्वजीत वर्षि विक् रिरापी निर्देश पास्था की। एक बी यथ वर्षण उन्हेंगेर स्वित्व वीगर जरू खा। प्राचीन तामिक वाहित्यते विदेश होता है कि बारस्वारों वाहित्ये

बंधानीको से बाबारों हो वार्थी एक वर्तकपुरते और पूरारी विद्वारों के करने परारा सामाजियाओं नंबर्ध कात । वाबायाया हात्रे प्रकृत्या सां करावर एता प्रकृति का कात्राव एतीकपुर कार्याण है वहरू की सां वाचाया । वाचाया ।

हीता है तथा बनो अक्को आरोप पाना गेलके कुछ कोर स्थित (वंध) में भी या गये। १९६५ को है में बांबर केलों बार एक-वर्षेश वर्ष्य हुए ग्रामें होता है—व्यव्य पूर्व-वर्षेण मा। वर्ष्यक्रमें क्यांबर्ण में बाजों ने विकर केले क्यांत्र पान स्वेतकों वर्ष्यों राजागों नामार प्राप्त केला केले हैं केलोंकों स्थाना की भी और क्यांबर्णमंत्र (बाराव्य १९ ६) के प्रचिलत किया था। उडीसा देशके दक्षिणी भाग (सम्भवतया गजम जिले)
पर इनका अधिकार था। इस वशके इ द्रवर्म प्रथम, हस्तिवर्म, इ द्रवर्म
दिलीय, दानाणंव, इन्द्रवर्म तृतीय आदि राजाजोंके अभिलेख गग-सवत् २८
से ११४ पर्यन्त (५२५-६४१ ई० तक) के मिलते हैं। इन नरेशोंके मूल
कर्णाटकी वशका कुलघर्म जैनघर्म था अत ये भी उसीके अनुयायो अथवा
कमसे कम उसके उदार प्रश्रयदाता रहें प्रतीत होते हैं। ७वीं शतीके
प्रारम्भ तक यह वंश अवनत एव गौण दशामें रहा। किन्तु वष्यहस्तदेव
(१०३८-६८ ई०) ने इस वशका पुनरुद्धार किया, किल्पाचिपतिकी
उपाधि घारण की। उसके उत्तराधिकारियों राजराजा, चोडगग और नरमिहदेवक समयमें यह वश उन्नतिके शिखरपर था। तदुपरान्त किर अवनत
हुआ। अन्तिम राजाकी पुत्रीका विवाह एक नागवशी सरदारके साथ होनेसे यह राज्य नागवशके अधिकारमें चला गया, जो मुसलमानों और किर
मराठोंकी अधीनतामें रहता हुआ १८वीं शती तक चलता रहा।

दूसरा वश तोशिलिक भौमकरोंका था। इस वशका सस्यापक सारवेलके किसी सामन्तका वशज रहा प्रतीत होता है। मौर्यकाछीन प्राचीन
महानगरी तोशिलिकों ही इस वंशने अपना केन्द्र बनाया था। ३री शतीसे
५वीं—६ठी शती ई० पर्यन्त इम राज्यका अम्युदय रहा। उसके उपरान्त
इसका हास हुआ और सम्भवतया गौण सामन्तो-नैसी अवस्था हो गयी।
कियोंझर राज्य प्राय इसी प्रदेशमें रहा है। इसका शासक भनी वंश
उद्योशिक सर्वप्राचीन वशोंमें समझा जाता है, सम्भव है कि वर्तमान मंजी
राजे प्राचीन भौमकरोंके ही वशज हों। इस राज्यके आनम्दपुर हालुक्रेमें
उस नगरसे १० मील दूर धनमें पोखा सिगिह और बदिखया नामकी
प्राचीन वस्नियाँ हैं। उनके आस-पास वनो और पहाहियोंमें जैन तीथंकरों
एव देवी-देवताओंनी अनगिनत प्राचीन खण्डित अखण्डित मूर्तियाँ और
विशाल मन्दिर, देवायतन, स्मारकों, सरीवरों आदिके खण्डहर हालमें ही दृष्टि-

समित्रावराजेन्त्रमें दोशकि विकेसे रिक्त निमः स्वरित्रवानमा और क्लार भार दिनके पार्विक प्रात्तकाकी प्राचीन कपुष्क्रीका वर्षत्र 🛊 🗷 🕬 स्थान प्रतीय होता है और इन अवसेपोने निरित्त होता है कि बार्एन्डे बपरान्त जी बीमकरो जालिक राज्यशासमें कुराबासके जल तक इन होते. में बेशवर्त पूर्ववत् सम्बद्धा-पृत्रकता और राजगान्त क्या रहा वा । ऐसा उर्जेत होता है जि दर्शी कशामधिके बामनाम चीव और नैनका वार्की नामें 🎮 प्रवासने इम केन्द्रको बीरे-कोरे बजाद विका । तीवरा वंड कोक्स्पा वैकोञ्चन वंड ना । इवका क्यून क्लेन स्थाना बाता है और अनुवास किया बाता है कि बढ़ बोई कर्मने स्थ या । पुत्र निक्रमानि म्याचे दशका सम्मन्य र्थन-नवधे ही था । इस संस्था र्गस्थापक पुक्रिनकोतस्य कृत वैद्योद्धाय या । शतके कररान्य बारमाँनै, र्दैन्तरीत प्रवय अवस्थीत अवस क्षेत्रवीय द्वितीय, अवस्थीत साम्बराई यसाकनमञ्ज पहाणीय वर्तराज शास्त्रमध्य स्वितीय रणकोच जावालार्थः माम्बयस्य कृतीय आदि वरेसाने ५वीं वसीचे जनके ८वीं क्यों रहेंने राज्य किया । प्रारम्भवें हैं। याने नुष्यक्ति वर्षाय रहें । हुई बीर बर्धान्ते इन्हर्ने भी इन मंबने पाल किया । ये राजे लाग जैन गर्नके अनुनामी ^{है} । कीया त्रंत्र तीमर्गंत्र या इतका सम्बन्ध वर्षिय देवने कोक्स आकी

नोपर हुए हैं। कुछ पुलियोगर साही जिपने केन भी जरमेंन निर्देश

के स्वयंत्रका रहे स्वीत होते हैं। हुवारी बाबाररं वरण रहे कार्याहें हुआ बीर क्वर्ड पावलेश्वर एक्स ? वी बातारों परंत पत्रका था। मंदी रही हुएकाल (१९५००) है । ने वी चालिकारा की वी रिकार्ड करका कीरि शोक्क अंत्रक वाहित्याशीरा हैक्सी बाता रिकार्ड पर पालिक रहाला क्या तत्रकांकीर क्विन्स-रेक्स भी करों कर्मन हिना है। क्या कारा विकारित होता का रूर किसरें

या । इसको वी सामापूँ वी १७ पूर्ववर्धी और शूबरो क्यारामाँ । इसके बावामें भूषी वे ऐसे कही वर्गना छात्रा किया । इस बंबके राजे बीसकर्म विद्वानोंमें मतभेद है। किन्तु ऐसा लगता है कि हुएनसागके समय कोसल और त्रिकारिंगका अधिपति कोई वह सोमवशी राजा था जो भट्टाकलकदेद-सम्बाधी जैन अनुश्रुतिका किलग-नरेश हिमशीसल है। यह गौडके बीद विदेपी क्षणाकका प्रतिद्वाद्वी और कन्तीनके हर्पवर्धनका मित्र था तथा स्वय भी महायानो बौद्ध सम्प्रदायका अनुयायो था। उसका राजमहियी जैनधर्मको मनत धी। एक समय वह उद्योसाके होग्क तटपर स्थित अपनी छपराज्ञघानी रत्नसचयपूरमे निवास कर रहा था। कार्तिकी अधा-ह्मिकका पर्व निकट था। रानीने उम अवसम्पर जिने दके रथोत्सव-द्वारा पर्व मनानेका विचार किया किन्तु राजाके बीद्ध गुरु इसमें बाधक हुए। अन्तत राजाने निर्णय दिया कि यदि जैनाचाय बौद्ध विद्वानोंको प्राप्त्राचमे हरा देंगे तो जैन ज्य निकलनेकी अनुमति दे दी वायेगी। जानी तया अय जैनो जन वहे चिन्तित हए। उनके मौमाग्यसे उमी ममय नगरक बाहर चद्यानमें महाराष्ट्रके दिगाज जैनाचार्य अकलकदेव तभी आकर ठहरे थे। उन्होंने तुरन्त बौढोकी चुनौसी स्वीकार कर ली। ६ महोने उक विवाद हुआ। बीद्ध लाग तागदेवीका सहायतासे शास्त्रार्थ कर रहे थे। अन्तत अकलकदेवने घटमें स्थापित ताराका विस्फोट करक बौद्धोंको पराजित किया । राजा वटा प्रभावित हुआ और उसने जैनधर्म अगोकार कर लिया। अनेक बौद्धोको सम्भवतमा दशम निष्कासित होकर सुदूर पूर्वके मारतीय राज्यो एव उपनिवेशोमें चला जाना पढा । हर्ष इम समा-चारको मूनकर कुछ हुआ। वह दक्षिणके चालुक्योपर भी विजय प्राप्त करना चाहता या अव उसने कल्यिक मार्गसे मसैन्य प्रयाण किया । हिम-धीतलके साथ धार युद्ध हुआ जिसमे वह मारा गया। विन्तु उपर सकलकदेवने चाल्पय राजधानी बातापीमें जाकर अपने भपन चाल्क गम्राट् विक्रमादित्व प्रयम माहमतुग (६४३-८० ई०) को इस बादक ममाचार मुनाया। अत हर्षके आक्रमणकी सूचना पात ही यह तुन्त हिमशीतल्की सहायताका पहुँचा । हिमशीतलकी रक्षा ता वह न कर सक

कलिंग आदि और वृहत्तर मारा

किया हो ने नहिम्बा होकर माध्य मीह तथा और कीमां राज्यों की स्वा ही बते। में माध्यारी एम (१४९-१०) हैं जो है। जारावारी वोजबंध मोन्यांने देन बता बेमाना बजने महानात्री हो मारे। किया पीनोंदे रिक्टाची हमा पुरासाय जीन महानुशियों मादि साम देशिहा वाचानित का जानात्र है कि हतीं सात्री हैं कर्मणा बागूनों वहिना देशारे वेचमार्थ माध्ये सामार्थने मा। एको इस निर्मिश्व राज्यों और राज्योंबोंके अधिरित्त निर्मा

स्वार्थनको कम्यूरि और वैनिकं पूर्वी चातुम्ब माँ व्यक्तिको राज्योकि क्ष्मी कार्ड है व्यक्तियुक्ति कार्क केते कार्य व अस्मावरार्थ कोच कार्या है माँ रमित्र कर कर्ष्य वास्त्रकार्थ कार्याक्ति कार्याक्तिया वास्त्रकार्यो वास्त्रकी मेरानके बावक और प्रीक्षणके महामां गरेच यह देवतर क्षेत्रकारको कार्य पूर्व मुक्ताके वास्त्रकारकार व्यक्त पूचा क्षी वार्या वार्या रिटर्म कर्मात प्रदेश कार्या वार्याक्तिया और नावपुरके पानेची भोक्तिये वार्या

उड़ीसा गजेटियरके लेखक ढट्न्यू० एच० हण्टरके अनुमार इस दराके आदिम वामियोंका धर्म भी जैनधर्म ही या, यहाँके यवन राज्योंने भी इसी धर्मको अपनाया। १०वी ११वीं धातीके उपरान्त यहाँके जनाने द्वृत वेगसे स्वधर्म छोडा। जो फिर भो अडिंग रहे, उनके यंशज सराकेंग्ने रूपम आज भी विद्यमान हैं।

महाकोसलके कलचुरि-कॉलंग देशके परिवमी माग (जो दक्षिण कोसल कहलाता या) तथा विदर्भ और मध्य प्रदेशक कुछ भागोंसे महाकोमल राज्यका निर्माण हुआ था । मगमके नाद मौर्य आदि मझाटोंके पक्चात् कलिंगचक्रवर्ती स्वारवेलका और फिर आछ मानवाहनाका इस प्रदरापर अधिकार रहा। सदुपरान्त वकाटकोंका राज्य हुआ जो ५वीं शती ई० पर्यन्त चला। वकाटकोंके सामन्ताने रूपमें ही सम्भवतया करुचुरि वशका, जिसे चेदि या हैहय वश भी कहा गया है और जा सम्भद है चैत्रवर्शी खारवेलके वशजोको ही शासा थी, धीसरी शती ई० में उदय हुआ था। गुप्तोंने वकाटकोंको समाप्त किया अतएव उनके समयमें महाकोसलके कलचुरि गुप्नोंके करद राजाओंके रूपमें चलते रहे। डाहडमण्डलमें त्रिपुरी इनकी प्रधान राजधानी थी। दक्षिण चेदि या दक्षिण कोसलक कलचुरियोंकी राजधानी रतनपूर (विलासपुर) थी। कलचुरियोंकी एक शाखा सरयूपारी नामसे मी प्रसिद्ध हुई जिसका राज गोडा वहराइचमें था। कलचुरि वरा एक अत्यन्त प्रतिष्टिन वश था। विभिन्न राजवशोंक नरेश कलचु-रियोंके साथ विवाह सम्बन्ध करनेमें गौरव मानते थे। कलपुरि या वैकुटव संवत् २६९ ई० में प्रारम्म हुआ अत यही तिथि कलचुरि वंगकी स्यापना को मानी जाती है। किन्तु इस बदाका उत्कर्षकाल ८वीं से १२वीं धती ई० पर्यन्त रहा, और उसमें ७वीं शतीका शकरगण एक प्रमिद्ध राजा हुआ । ८वीं वासीमें लक्ष्मणराज राष्ट्रकूट गोविन्द तृतीय-का सामन्त था। उसके पुत्र कोक्जल प्रयमका विवाह चन्देल राजकुमारीके

मात हुआ कर और इसी समयने कमर्काश्वाणी शक्ति प्रविध बड़ी ह र्राटरमम हिन्दिया अभिच (८७८- 🕻) लड बनारी सीय या मानन्द प्रतिद्वपदश्य और एवर्षियद समृदे श्विर में और प्रमाने कनिय कृत्य व स्वर्शीतकात कार्राजन किया का नाने वाप बालंबन और क्रि दूपराव इ.वृहक्त राजा हुता । वर्षिः ।अधीनस्या विद्वारामधीनस माहर नर्पत्रक की नामांक बरकारमें राज्य क्या १३ ९२५-९५ हैं। सर रूप गान विका । वह बग्य नहीं निव्हें स और विकेश हा । इनमें रम्भारं नग्या निर्माण न के बने बन्धा शहरवार्थ हनामा बढ़ा इसकी नुत्री हुन सरका राज्यकर वयोगस्य न शको विस्तरी की वैज्ञातकी क्लागरिकारी सक्ताला जिल्लीय का इनका की ओनवर्गाओंने उन्ह गई। है इसकी गुण बोल्याहेडी बाळकर करेखा रीचन ग्रिडीवर्गर जो का । राष्ट्रपान्त धेरानम बरराज हिटीए जीर कारफल दिलीय हान्य राजा हुई। श्रमित शक्त इस बंधका देशको राजा था। इनके लगान गुज परागाले विश्रीपर महिरार कर निज न । रिन्तु बन्दा उत्तरांपकारी बोदेवीर विक्रमादित्व (१ १६०४१ है) शील बीट स्टरशास्त्रस या । इसस्य दुर वर्षरेष (१ ५१-० हैं) और भी अधिक स्टार्फ या रूप राज-कुमारी जानान्त्रोतीन जनने निर्मात निर्मा जनेक कुछ किने और निर्मा शाना की । व्यक्ति क्षेत्रका व्यक्तिमानो विश्वत वर्ग प्रमान विश्वति-मार्परनियो प्रसामि थी। गारण सी नी । बसरा पुत्र नय गर्थ (१ ७६० ११२५ दें) वा और फिर गरनवंदन (११३५—५५ दें) राजा gart । देशीं मनाचे जन्मी विज्याविष्येष (११९५ ई.) प्रथ पदारा व्यक्ति ब्रह्मम् नरेव था । जनक क्राराधिकाराके ननको ४४ वरवको मृतप्रकारा विकास किया और ध्रणपुरि तवका शब्द हुआ । कम्पूरि बस्तरे सामान्त्रा शैवसर्वती प्रवृत्ति की रिश्तु इस बंबके

नई नरेंस एक राज्याने अनेच रही-नुसर शास-नर्मपारी सामन

...

भो जैनधमके प्रति महिष्णु और उदार रहे और इस धर्मका धादरको दृष्टिस देखते थे। प्रारम्भिक परिगोमें महाराज धाकरगणने विव स० ६८० (६२३ ई०) में जैनतीर्थ फुल्पाक क्षेत्रकी स्थापना की थो और उसके लिए वारह ग्राम प्रधान किये थे। कलचुरि-नरेश गयकणदेव (११२५०५४ई०) भी जैनधर्मका आदर करता था। उसके महामामन्ताधिपित गोल्हणदेव राठीरने जो जैनधर्मका अनुवायी था, जवलपुरसे ४२ मील स्तरमें स्थित बहुरीयन्दके खनुयादेय नामक प्रसिद्ध जैनतीर्थको जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठा करायो थो। विजयसिहदेव कलचुरि (११९५ ई०) तो निष्यित स्तरमें परम जैन था और उसके समयमें राज्य एव प्रजाका प्रधान धर्म जैन ही था।

मम्पूर्ण महाकोमल दशमें प्राचीन जैन मिदरा, मूर्तियो एव अन्य धार्मिक कलाकृतिया अवशेष यत्र-तत्र-सवत्र इतने विखरे हुए मिलते हैं कि जिसस इम तथ्यमें मन्देह नहीं रहता कि पूर्व मुमलिम कालमे यह प्रदेश शताब्दियो पयन्त जैनधर्मका एक प्रमुख गढ रहा है। कलचुन्यिंके शासन कालमें जैनाश्रिक जिल्प स्थापत्यकलाका इस प्रदेशमें अभूतपूर्व विकास हुआ। कोई काई जैन कृतियाँ तो तत्वालीन सम्पूर्ण भारतीय कलांदी • उत्कृष्टताका प्रतिनिधित्व करनेकी क्षमता रखती हैं। अनेक जैनतीर्थ एव मास्कृतिक केन्द्र इस प्रदेशमें स्थापित हुए यथा कुल्पाक क्षेत्र, सनुवादेव. रामगिरि, अचलपुर, जोगोमारा, कुण्डलपुर, कारजा, आरग, इलौरा, घाराशिव आदि। कारुआ प्राचीन कालसे ही एक प्रमिद्ध दिगम्बर जैन केंद्र रहता आया है। अपभ्र श भाषाके सुप्रसिद्ध जैन महाकवि पुष्पदन्त रोहणखेडक निवासी थे। रामपुर जिलेक आरग स्थानमें एक प्राचीन जैन-मन्दिर है और उसके निर्माता तत्कालीन राजे राजिंप तुस्य कहे जाते थे। हों ही रालालका मत है कि ये राजी महामेघवाहन खारचेलके वशज रहे प्रतीत होते हैं। सम्भव है कालान्तरमें ये कलचुरियोंके मामन्तरूपमें रहे हो । महाकोसल विद्यमका अचलपुर नगर मी प्राचीन जैन केन्द्र हैं में स्वेतास्यापार्त मार्गित पूरिने माणी मंगिरोधानामा तृतिमें विकास हर मार्गण्य हैं पित्रमें में मार्ग्यालय के मार्ग्यालय करा भारिकार्त माण्य पारा राज्य नाता है विकोश में के मार्ग्यालय हैं तिल्ली कराती हैं। मार्ग्यालय मार्ग्यालय करायों हैं। एवा स्वरामें १८० हैं में की मार्ग्यालय मार्ग्यालय करायों मार्ग्यालय स्वराम एवंच्या है। मार्ग्यालय मार्ग्यालय मार्ग्यालय स्वराम मार्ग्यालय करायों मार्ग्यालय स्वराम हैं है दिस्तालयों कर्यालय मार्ग्यालयों मार्ग्याल

मा । क्यों बती है का एक मैन नाप्तपत बहुनि जाना हुमा है । ८५८

मूर्रफा जिम्म का क्यांस्थ क्यों स्वेष्याचा (८६८ है) में हो म्ह्रों मूर्य में बिमा है कि ब्रम्मस पायन होंगे मुक्कमंत्र क्यार क्यार (१९९०) है म्हर सो में तो रही में रिक्मर क्यों (बन्ति स क्यांस) में स्वेर रे इस्में मूर्त है होता है कि दरी-क्ये क्यों को है को क्योंप कु हाँ मूर्य क्यांस केन्द्र मा मोर्च इन्द्र क्या क्यों वीची मीर हिंदी क्यों में स्वेर मार्च स्वार में सामने का क्याने की पुरस्ती क्यों प्रमुख मार्च मार्च मार्च क्यांस मार्च है हम

क्रम क्रमीमस्य राजानी, कालन गरहारी व्यक्तिशारा ग्रीका समार्थ महा-

क्षेत्रण वरिष्के विशेष वार्गीने कारा-मृत्या साधीन कहा और वेहारी-वा संबंध करात था। मृत्यारम-नाव कोणी वायव मृत्यपु-वार्धनामाओं मृत्य वर्ष परिवर्षा कुराइसकी नामृत्ये केवा है विकाश कराये कारा सिन्दुरमानी कर्मा केवा है। पूर्व गीया नेवाल-पात्रकार और काराना कारा सीमा स्वारम्ब एवं अधिकों । मृत्यपु मा वर्षामा काराना करा साधीनी स्वारम्ब एवं अफेककों। मृत्यपु मा वर्षामा करायन कर सम्बन्ध

कारण हो विकास । मुराइ ना कोरणः नीरास्त्रक करा, वर्षा कारियमा पूर्वरेख पूत्रका नाहि नात इव देखी विवेश कारों नीर बाहे-करों पूरे देखी किए प्रमुख हुए हैं। बाहे जायीन नावते हो वर्ष देख कर बंक्ट्रीया एक जाना केल पहला माना है।

प्रयम क्रीपीकर माध्यमध्यके जनाव नगवर पुष्परीक्षमे प्रमाणकेक बर्गुबर पर्वतके मित्रीय काम विका समावा वाता है। तरकनार सन्त अनेक तीर्थंकरोंने इस प्रदेशमें विहार किया। महाभारत-कालमें श्रीकृष्णके ताज्जात मार्ड २२वें तीर्थंकर अरिष्टनेमिका तो यह प्रान्त प्रधान विहार- क्षेत्र या। न्त्रय कृष्ण, वलराम आदि हरिवशी यादकोंने शौरसेन देशके शौरीपुरका परित्याग करके सौराष्ट्रके समुद्रतटपर द्वारका-जैसी मनोरम नगरोका निर्माण किया था और उसे अपनी राजधानी बनाया था। उसीके निकट जूनागढ़के राजा उग्रसेनकी कन्या राजुलदशेके साथ नेमिकुमारका विवाह रचानेके लिए यादवोंकी बारात नदी थी। किन्तु दीन पनुआंकी पुकार सुन, मुकुट और ककणको ताहकर धर्मवार नेमिकुमार ससार, दह और भोगोंसे विरक्त हुए तथा निकटवर्ती कर्जयन्त अपरनाम गिरनार पवत- पर जाकर तपस्यामें छीन हो गये। महामतो राजुलने भी उन्हींका अनुकरण किया। इसी पर्वतपर नेमिनायको केवलज्ञान प्राप्त हुमा और अन्तमें इमी पर्वतके शिखरसे उन्होंने निर्वाण लाम किया।

सन् ई० के प्रारम्मसे लगभग एक सहस्र वर्ष पूर्व मध्य-एशियाके प्रसिद्ध प्राग्ऐतिहासिक साम्राज्य बावुलके अधिपति खिल्दियन वंशी सम्राट् नेद्वेड-नजरने इस गिरिराजको वन्दना की थी और इसके प्रमु अरिप्टनिकी सेवाम वृहत् दान समिपत किया था, जैसा कि इस स्थानसे प्राप्त सकत नरेश-की लेखाकित मुद्रासे प्रमाणित होता है। इस प्रकार तीयकर महावीरसे ही नहीं, तीर्यंकर पार्धनायसे पूर्व मी इस प्रदेशमें तीर्थंकर अरिप्टनेमिकी चपासना, गिरनार पर्वतको तीर्थं कपमें मान्यता और जैनधमका प्रमाव विद्यमान थे। बौद्ध अनुश्रुतिके सोलह महाजनपदोमें इस देशको गणना नहीं है किन्तु जैन बनुश्रुतिके प्राचीन राज्यों एव आर्य देशोंमें कच्छ नामसे इसको गणना स्पष्ट मिलती है। चन्द्रगुप्त मीयन इस प्रदेशको विजय करके उसे अपने साम्राज्यमें मिला लिया था । उसने स्वयं गिरनारकी यात्रा की थी बोर उसकी तलहटीमें अपने कर्मचारी बैदय पुष्यगुष्तकी देख-रेखमें एक विशाल एव मुन्दर मरोबरका निर्माण कराया था, जो सुदर्गन झीलके नामसे विख्यात हैं। चन्द्रगुष्तने इसी सरीवरके निकट मुनियोंके निवासके छिए एक

केच यो बरशानी यो यो जाउनुकाने नामने प्रावित हुई। बानवारः यो पूपारी काल नामाने कार्य जी प्राृणिक केचने हुए दिना निमान किया गए। पूपारी कार्य नाम नामाने कार्य कार्

मानदा देख्ये नियान बाहर निवेबानेगर अन्त्रे एक नरशास्त्रे बीराण देख बर कविकार कर किया वा बीर खहरूके बसकी स्वारका की की इस बंबनें बागय बाटक महरान उत्पादका बाहि राजि प्रतिक्र हरा निरम् इत बाव-बाह्र शामि नवस्थिक प्रविद्ध नरेच काचन (वरवाहून था नवानाहन) या जिन्दर राजन्यक १६-६६ है। याचा बादा है। इसी सबय विस्तिवरकी इनरोका कन्नकुछाने वंबक्ताको अन्तिन वेदछाना वरनेनाका निका बच्चे वे वर्धे बच्चेंने जानार्थ नगरका वर्ष मनश्रीको उन्त आरश्याका क्षम्यान कराने वने निर्माणक करनेका कारेच दिवा वर । इस समुन्नीको क्रमुचर स्वयं क्रष्टराज्यकी चलाइ ग्रहाम ही चामपा त्यार करने पैन मुर्ति हो बना वा बोर कार्यक्त बैनायार्व जुल्लाको समिश्रमा अस्राटॉके बन्दरन्य कर व्यक्तियों हो एक अन्य सामाः धारपाननेत्रो स्टापायांकि क्यमें जीरान्द्र देमशी अधिनति हुई। बस्त्रीनी विजयके बस्बस्टरें इस र्वमने ररेशांच्य स्थानका प्रकाने ही ७८ हैं. में प्रचनित्त श्रक्तनंत्राही स्थापना की भी। इस बंजबे नहेन्नीयेंने कई वस तथा पानरंपके रूपै-पुरुषों तथा सामपुरुषोंनेने बनेक बैलवर्गरः बणुरानी ना ग्रोपक स्ट्री । इन मैंग्रहा नर्मनत्रम् श्रीरवशाणी गरेश बहुआहर सारामन वा जिल्ली रूपे बसी हैं के भगने शिक्तिवरणी कारोबर सुरस्त बीलका पुन- धीचींबार कराया था तया वहाँ अपनी महस्वपूर्ण प्रशस्ति अकित करायी थी । उसके पूत्र दामजदश्रीने उपरोक्त च द्रगुफामें एक शिलालेख अंक्ति कराया घा जिससे उस नरेशके जैनी होनेमें कोई स⁻देह नहीं है। उसने यह लेख आचार्य घरसेनको मृन्युकी स्मृतिको अमर बनाये रखनेके लिए अकित कराया प्रतीत होता है। इसी वशकी एक राजमहिपीकी नार्नाकित मुद्राभी महाबीरकी जन्मभूमि सुदूर वैशालीके खण्डहरोंमें मित्री है जिससे विदिक्ष होता है कि वह रानी वहाँ सीर्थ-यात्राय गया होगी। इन प्रदेशपर शक-क्षत्रपोंका राज्य ४थी शती ई० के अन्त तक चलता रहा। ४यी शताब्दी ई० के अ'तमें गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त हितीय विक्रमादित्यने वकाटकोकी सहायतासे शकोकी राज्यपानितका उन्मूलन किया और यह देश गुप्त साम्राज्यका अग बन गया । सन् ३००-३१३ ई० में आर्य स्कदिलकी अध्यक्षतामें मयुरामें स्वेताम्यर साधुत्रोंका एक सम्मेलन हुआ था, प्राय उसी समय नागार्जुन सूरिने वल्लभीमें एक वैसा ही सम्मेलन बुलाया था और उममें आगमोंके सकछनकी चर्चा उठायी थी। इमसे विदित होता है कि इरी शतीके अन्त या ४थी के प्रारम्भके लगभग ही सीराष्ट्र और विशेषकर उसकी राजधानी वल्लमी ध्वेताम्बर सम्प्रदायका के द्र बन गयी थी। गुप्तोंके कालमें यह प्रदेश साम्राज्यकी एक भृषित था और सम्राट् स्कन्दगुष्तने पणदत्तको इस भुविजका प्रान्तीय धासक नियुक्त किया था। इस पर्णदत्तके पुत्र चक्रमालितने जो निरिनगरका कोटपाल था, सुदर्शन हीलका पुन जीर्जोद्धार कराया और वहाँ एक शिलालेख मी लेकित कराया था।

गुप्तकालमें ही गुनरातमें मैत्रक धशका उदय हुआ। वस्लमोको इस वशने अपनी राजधानी बनाया। कुमारगुप्त प्रथमके समयमें ही इस वशकी स्थापना हो गयी प्रतीत होती हैं और गुप्त सम्राटोंक करद राजाओं या सामन्तोंके रूपमें ही इस बदाका प्रारम्भ हुआ। यही कारण है कि इस बंशके नरेशोंके समस्त अभिलेख गुप्त सक्तमें ही मिलते हैं। मैत्रक

कळिंग आदि और बृहत्तर भारत १३ मुख नरेबॉको बोरते नीएकहरा शास्त्राच स्थलकंडी छैनापि बदार्य (क्लबर ४६६-७५ वें)वा। वहीं वन बंधका संस्थारक प्रतीत हीता है। बसके सरशान्त उनके तीन नुवी-सरहेन प्रवस प्रोमॉन्ड बीर मुन्देन प्रथम (५१५-५४५ 🐔) वे झनवा साथ किया । वे प्रारंभित नियम-एवं बैक्शनीनवामी तथा बाजावं देश्वितनीके जना रहे प्रदीत होते हैं। बहाबीर वं ९८ या ९९३ (४५३ है ज्यान्तरते ४६६ हैं) मैं बनको राजवानी बन्तामी अवसीमें हो वेचद्विवानी समाधमत्रको सनस-बताने रवैतास्वर बेध वायुवांता एक महत्त्व बार्मेशन हवा । यह बर्त्सनी का दूसरा जैन अमोजन था जोर इसीमें बन्तस्य स्वेतान्तर परानराने नान्य क्यं बनाडे हाथ नुर्राक्षण चैन वावन श्रूप बंकनिय क्यं निर्मयह कर क्षके करे । रिसानार परम्पाएक बायन इतके बनावन प्र पर्न पूर्व ही बंबरित हर्न निविध्य हो पुत्रे में । स्वैदान्यर आयर्गींके इस बंबर्गानी मही विकार स्वेदान्यर करवेंद्रको कराने किए पह और स्वादी कर दिया नहीं रवेतान्यर नरम्भाने कानुगीनो काविरियक कुमनके किए बनुसन्ती बेरमा वर्ष बोल्याक्ष्म विया और देनी धनवने चलुवा लेवाम्बर पुरवन सादित्वके प्रथमका प्रारम्य हुना । भीवन-गरेश शुप्रवेतके ब्राविनेवॉर्ने 🖟 क्षेत्रक अपन्नेश्व नामान्य शाक्षेत्र है। वै वर्त्वजी-नरेश जान्त्र स्रो बरबंबके गोवक और निश्नानीक जालगराया थे । वल ५९५-५१५ ई में बरमाजी-गरेज कियादित्य अवन अवना बनर्गित्य अवन कर। अद्भारी मा र गढ़ राजा नरकेन बैतीनमा पन और संतराविकारों था । ध्रो करीयें बन्धेन

राजानीने हारा बनुष्टा होनेके नारच क्ये चरचती संबनु भी कहते हैं है

के परामवे काम कराकर मैनक-गरेश स्थानन हो भये हैं और क्रारोने बनी एवं हुनीको नष्ट करनेने नकोन्य गोग क्रिया गा । व्यक्तवित्वके क्षत्रनने चन्होंने जपने आश्रयदाता दिकादित्यका भी चल्लेज किया है। यह राजा बौद्धोका भी समान रूपसे आदर करता या। चीनी यात्री हुएनसांगने भी **उसका उल्लेख किया है। बौद्धग्रंय मजुत्री**मूलकल्पमें इस राजाके राज्यका विस्तार उज्जैनीसे लेकर समुद्रतटवर्ती लाट देश पर्यन्त यताया है। शिला-दित्यका भतीजा श्रुपमट्ट या ध्रुवसेन द्वितीय या जिसे हपवर्षनने युद्धमें पराजित किया या किन्तु फिर अपनी पुत्रीका विवाह उसीके साथ करके उससे मैत्रो सम्बाध स्थापित कर लिया था। सम्मवतया हर्पका जामाता होनेके कारण ही यह राजा महायानी बौद्धधर्मका भक्त हुआ । हर्पकी मृत्यु-के उपरान्त वह स्वतन्त्र हो गया । उसका पुत्र घरसेन चतुर्थ भो महायानी बौद्ध था, उसने अपने लिए चक्रवर्ती शब्दका भी प्रयोग किया है जिससे सूचित होता है कि उसने विनयों-द्वारा अपने राज्यका विस्तार भी किया था। ६९५ ई० के लगभग भारतमें आनेवाला चीनी यात्री इत्सिंग लिखता है कि वहलमी नालन्दाको भौति ही बौद्ध धर्मका प्रमुख ज्ञान-केन्द्र थी। इस शताब्दीमें गुणमति, स्थिरमति, जयमेन आदि वस्लमीके प्रमुख बौद्धाचार्य थे। वीद्वोंके इस उत्कर्पने बल्लमीमें जैनधर्मको सौ हेउ मौ वर्पके लिए गीणता प्रदान कर दो प्रतीत होती है। ७१५-४३ ई० के योच अरय सर-दार हाशमके सेनानी जुनैदने वल्लभीपर आक्रमण करके उसे छटा था। मैत्रकवश वव अवनत हो चुका था और शिलादित्य सप्तम (७६६ ई०) सम्भवत इस वशका अन्तिम राजा था।

८वीं शतीके उत्तरार्धमें गुजरात देश सीराष्ट्रके सैयव, अडीचके गुजर, लाटके चालुक्य, सीरमण्डलके यराह, अन्हिलवाहेके चावहा (चापोत्कट) आदि अनेक छोटे-छोटे राज्योंमें वेटा हुआ था। जैनाचार्य जिनसेनके हरिवश (७८३ ई०) के अनुसार इन सबमें सीरमण्डलके वराह प्रमुख ये और बहाँ महाबराहका पुत्र या पौत्र जयबीर बराह राज्य कर रहा था। किन्तु इसी समय मिन्नमालके गुजर-प्रसिहार और दक्षिणके राष्ट्रकूट दोनों हो गुजरासको हस्तगत करनेके लिए उताबले हो रहे थे। प्रतिहार

बलागरने क्टे पित्रय भी कर जिस दिन्यु राज्यकर मोदिन्द सुनीको रुष् ८ है के बनवर उसे पूजेंगेंडे औरकर जाने राज्यमें विस विया और बाले आहे इतको मुख्यतका प्राथीन यावक नार्थ रिया । राष्ट्रकृटीको इक युज्याती कानानै प्रशत्ने करान्य वर्क गुर्चन क्ये भूव वारमा कृत्व वनाच्या भूव क्वितीय, शीतवर्तन और हुप्तरात क्रमा शता हुए। नुबन्धके व राजपूत नानके रिप्ट नाने रूपर्रश्व सामाबैटके शास्त्रपुट बजारोंके अनिनिधि वृत्रं सामात है, मन्द्रक है जान स्थाप कारण है। साहन्त्रीको विश्वती वराम्य व्यासी बीजपर्व क्षीत ही विश्वीत ही बात बीर वैश्वर्क विरहे बाहा रहातें हो यत । सम्पन्नत्वे राज्यन्त बातत् वर्ध वैश्ववंदे प्रति हो बचार में विधेयका समाह समोजका अस्य । बंदका वर्षेया बाई वर्क तुर्ववर्ष मी द्ये क्रहरी द्येरते प्रश्नातका जानीय शास्त्र का वैनवस्त्रा जला या। इक्के बनवने श्वकारिका (श्रवकारी) शतक स्थानमें एक बैन बिहारीन-क्षी स्वानना हुई थी : विकासरायार्ज परवर्शनायको द्वाराण हुए द्वारा-नेत्रके बाग्यक्ष में, बोरयन्ताओं पूर्व थे। बन् ८९१ ई के पूर्व क्षत्रपासर पन्ने विभिन्न होता है कि क्या वर्कपानी नगबारोक दब विभाग की विद्यानीको किर क्या दिशमधानारीको मून्ति बहरिका प्रमुख बाग दिस्स का । यह बन्न राज्युक्त-बन्नाद् नगीयवर्ग शररपदस्य वा । बदाः वर्कपन ही बदका गाँवमायक श्रीरक्षक मीर इच बचार विश्वत्व राष्ट्रहर शासन्त-शा नत्तवनिक ग्राप्तक गाः। इत कावने दिशम्बरः श्रीर परेशास्तर रोती ही बन्द्रसाय नुमराताने बाय-बाय बन-कृत रहे थे। १०६४ वसराविकारी मी क्षेत्रपरि प्रति क्षार और क्षिणु रहे । १०वीं ग्राही प्राहरणे इन पंक का बन्द इस्स (राष्ट्रकृतींकी पुकराय-स्थितके वर्त ही और अधिक जैनक-गरेपके

बायनकार्य ही नुस्तुन्ते एक सन्त सार्वयत्ता वस्य हो बसा था, यो नुस्त्रकात कार, वारोत्तर सा वस्ता संब बहुमता है। वह कर द

भारतीय इतिहत्सः १४ सीर

में जयशेखर चापोत्कटके पुत्र वनराजने इस वशको स्थापना की थी। अपने गुरु रवेताम्बरावार्य शोलगुणसूरिके उपदेश, आशोर्वाद और सहायतासे वनराज राज्य स्यापित करनेमें समर्थ हुआ । उसने वल्लभी और चसके मैत्रकाका अन्त किया और अन्तिलपाटन नामक नवीन नगर बसाकर चसे अपनी राजधानी बनाया। इस वशके समयमें जैनधर्म ही प्राय राजधर्म रहा यद्यपि शैव और शाक्तधर्म भी राज्यमान्य वने रहे । राज्यके अधिकाश प्रभावदाली वर्ग, घनिक महाजन, राजमन्त्री आदि जैन थे। यनराजका प्रघान मन्त्री चम्पा नामक जैन विणक् या जिसने चम्पानेर नगर वसाया । निम्नय नामक एक घनवान जैन श्रेष्ठिने, जिसे वनराज पिता तुन्य मानता था, अन्हिलवाडेमें ऋषमदेवका मन्दिर बनवाया। निम्नयका पुत्र छहोर वनराजका सेनापति था । गुरुदक्षिणाके रूपमें वनराज शीलगुण सूरिको अपना राज्य समर्थित करना चाहता था किन्तु उन्होने उसके बदलेमें उससे एक मन्दिर बनवानेके लिए कहा, अत राजाने राजधानीमें पचासर पारवनाय नामका प्रसिद्ध जिनालय बनवाया । इस जिनालयमें पार्व प्रतिमा पचासरसे लाकर स्थापित की गयी थी। वनराजने और भी कई जिन-मन्दिर वनवाये । उसके बाद योगराज, रत्नादित्य, क्षेमराज, माकडदेन और भूगडदेव या सामन्तिमह नामके राजा इस वयमें क्रमशः हए। ९७४ ई० में मूलराज घोलकीने इस वंशका अन्त किया। वर्धमान नगरमें भी चापवशकी एक शास्त्राका राज्य या जिसमें विक्रमार्क, अहक, पुलकेशी, घुवमट्ट और धरणीवराह नामके राजे हुए। ये भी जैन धर्मके पोपक थे। गिरनार-जुनागढ़के चूडासमास १०वीं से १६वीं शती तक राज्य करते रहे । सोमनायके मूल निर्माता इसी वशके प्रारम्भिक नरेश थे। ये जैन धर्मके प्रति भी सहिष्णु रहे।

गुजरात-अन्हिलपाटनका सोलकीवंश दक्षिणके प्राचीन चालुक्पवशकी ही एक शासा था। सौराष्ट्र, मत्तमयूर और लाटमें भी चालुक्योंके छोटे-छोटे वंश स्थापित थे। किन्तु गुजरातके इतिहासमें अन्हिलवाहेके चालुक्यों

कछिंग बादि और बृहत्तर मारत

अपरत्यन बोर्लोक्योक्य स्थान हो। वर्षीक्क बहुत्त्वपूर्ण है। इनके बावन राज्यों ही बहु देख कप्रतिके परण विकास स्कूषा और एक स्तित्रक श्वकित्याची क्षाप्रास्य क्यारित वस्त्रेत्रै समये हुवा । सन् ९४१-४२ ई मैं मुखरात क्षेत्रजीने इस चंत्रकी स्नारमा की और ९४४ है मैं सनस्य यह चर्न्य गुजरास देवका जानः एकानिपति हो नदा । सरिहरू नारमध्ये हो बनने अन्ती राजभागी शनमाना । भौहान-नरेस निषद्गान प्रितीयके साथ पुरुषे ९९४ के कावन कालो मृत्यु हुई। व्यक्ते पुर चानुस्तराज (९९५-१ १ में) वे बारके किन्युपत परमारमे पद्धिक किया । चानुष्वरायका पुत्र दुर्शक्यात था जिल्ला पुत्र मीमदेव प्रदेश (११-६१ है) था। इनके बनकी बहुनुर प्रदेशीने बोबनायरा निर्मेश किया। मीचने मन्दिरशे एकः वस्त्राध्या। योग परतारका सह यह था। चीचरेक्ते सक्तरें ही बीचकर्वती चीरवार विवसमाह धन्द्रिकाहेगा प्रथम नगरकेट बनाना नदा। धानुसा विस्तिस्तात कमायाव नाश्चित्रा योगार इसे विस्तासको वर् है देन हैं व विपूर्व प्रम्म मान करके निर्माण कराया गा। दिवस्तवाह मान क्षत्र वती निरूप जीर वजीत्वा सैपी पायक हो वहीं या क्षत्र पायका एक प्रमुख कभी भी या और बाप ही ऐसा प्रथम सेयलाक्क या कि क्क्ने मुक्र एक्टी बैनानी किन्तु नचीके नीरमें रीयकर ब्रावीकी मी धीनानो परपन्ति विना मा । भीनपा पुत्र परम्बराह् वर्ज (१ ६६-९६ है) या निश्चमा प्रचान करती श्रृंशांक नावक वेदी था । कर्नशा पुत्र बौर क्लराविकारी जुलीका कर्वांका विकासन (१ ९४-११४३ वे) बा। यह वहा विश्ववाभी वर्गीत्वा वर्ष दानी वरेष वा। यह कर्ममर्गेडदिन्तु च्या नहारेपका वशासक था तो बहानीरका जी बका वा । वहरे धाराक सिवाकन शक्ताना हो महत्तीर निवाकन ची मकास श्रीकारका पर प्रकाश हो सनुभव दोवनी बाध करके बद्धकि बहित्तास्त्रों भी क्याने १५ तान बेंट किने में ३ वह बन्द-

पास्त्रका भी शाला था और सिद्ध चक्रवर्ती यहमाला था। उसने वयना सवत् भी चनाया । रायविहार नामक आदिनायका सुन्दर जिनालय और गिरनार पर्वतपर नेमिनायके मुख्य मदिरको धनवानेका श्रेय भी इसी राजाको है। मुनाल, धान्तन्, खरपन, बालिम, पृथ्वीपास आदि उसके अनेक राजमात्री जैनो थे। पृथ्वीपालने आवृक एक मन्दिरमें अपने सात पूर्वजाकी हाथोनग्रीन मृतिया बनवायी थी। राजा जयसिंहने १२ वर्ष तक मालवाके परमारोंके साथ युद्ध करके उनपर विजय प्राप्त की श्रीर वह अविताय कहलाया । उसने वर्षराका दमन किया और महायेके चन्देली-को सिंघ करनेपर विवश किया। उसकी नौति प्रधानतया आक्रमणात्मक धो और उसक समयमें गुजर साम्राज्यको अभूतपूर्व उप्तति एवं विस्तार हुआ । उसके प्रसिद्धमन्त्रो उदयनन सोरठक दुईर राजा पँगारको पराजित परके निद्धराजको चक्रवर्ती पद दिलाया था और इसी उदयनने कर्णावती (अहमदाबाद) में एक जिनालयका निर्माण कराकर उसमें ७२ बहुमृत्य दव प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित करायी थी । चदयनके पुत्र आहड, बाहड, अम्बद सोल्ला आदि भी विषदाण राजमात्री और प्रचण्ड सेनानायक थे। स्ययं महाराज जयसिंह शान और फलाका वडा प्रेमी या और विद्वानोंका भारी भादर करता था। माजवी उज्जैनीकी मौति ही उसने अस्ट्रिलपाटनकी ज्ञानका अनुपम के द्र बनानेका निश्चय किया और वहाँ एक विद्याल विद्या-पीठकी म्यापना की । सुप्रसिद्ध दिश्गज जैनाचार्म हेमचन्द्रको उसने अपने काश्रयमें हानेवाली साहित्यिक प्रवृत्तियोंके नेतृत्वना भार सींपा। लगभग २० नवीन ग्रामाका निर्माण हुआ, स्वय हेमच द्रने द्वचाश्रयकाव्य और छिउहेम क्याकरणकी रचना की, उनके शिष्य रामचन्द्रने अनेक नाटक रसे, कनकरु कायस्य व्याकरणके आचार्य निमुक्त हुए, याग्मट्टने अलंकार ग्रायकी रचना की, तथा गुणच द्र, महेन्द्रसूरि, देवस द्र, उदयचन्द्र, वर्षमानगणि, यशश्चन्द्र, बालचन्त्र, आनन्दसूरि, अमरच द आदि अनेक जैन विद्वानों एव साधुओंने राजासे सम्मान प्राप्त किया। राजाको दार्शनिक शास्त्रार्थ सुननेका भी शौक या, म्याप्टार्ट्यावरके वर्षा वर्षेत्रावरावाची वेदवरिके ताव उन्हें नामें गरककार्ते ही करणावर्णिकालोको एवरिका वर्षादको सिराम्याची पुरस्तात्रका करलाहुके कर बनाया वा १ जन्दुकावकारी विद्यान स्परित्तर पानवाल कृत्रालोक विल्हानक वर्षेत्र वा १ कर्णित्रके कोई एव नामें वा वेदक एक वच्छा वांक्योरी हो में

सब्देर (बाराच्या) के बीराय-गरेब अमीरावधे विचारी की । प्रत्या पुत्र बोर्नेस्वर बरमान भागड या जिसे शार्तिगृही आली जगाने बन्दर माना रणसपुर एवं सकार्यास्थारी वीर्यन्त किया । किन्यु नासन्तिसमें शीनीरू की कारणीते कराय क्षेत्रगतके अधीव बुजाराज्यकी 👸 विकृत्यार बैद्धार और सम्बन्धा बन्ति इसी वृद्धिनारेषे हो बाद निया। कई नामन बरसर आप वें हैपरण और सक्तरेद्वित देखी भी एन्द्रान्यनके ही समर्थक में । एन्द्रार्थकों साले टीन गर्रे (११४१-११७६ र) के धारावाओं कुल्ट बालागाओं व वेचक बन्दे विभिन्न बर्ट्साएक इसे बाह्य यण्डलेंट एका की बरन् बन्दरी वर्वेडी-मनी उत्पत्ति वर्ष प्रतिनदेश मी थी। समझे नवामै सवत बालावा सन्दर्शन कै परम निकालों पहुँच क्या या अवने १८ देश बॉम्बॉड्ड के बीर बन्दरी बीजार्ष बन्दरमें असम देखा पूर्वते बन्दा क्षता विश्ववे क्रिक्सायण बाँद परिचान बनुत वर पर्यन्त भी । बनके एत्यासको केटने बन्तपूर्य बर्गाउ पर्व असले जड़िनीय पार्टना और नुस्तर बरबोस किया । बस्तीर्थ बनान प्रकृति मी नैयार प्रकल मी जूरे शामधानमें सरका या नरनकार म कोई क्ष्यान हुन्य म कोई वृत्तिकारता । अस्तरीयतान और सकारी बाहरी व्यक्तिको हुई और प्राविक्ताके प्रकारण साथा व अन्यक्ते मुचनुबन्ध निवस्त्री विका । वह राज्य निविधार माने बैनवववा बहुर बनुवाजी या और इर्ड बार्के रहिक की रानेषु शही है कि एक फरणा पक्रवर्धी जुबारयम क्षेत्रेरीके बनाने पूर्वर नामाण पारायक्षा क्योंदिक कहत, याँनाकाची, बरार दर्ग मुर्गेन्द्रत बन्डास्य का । कामके जिल्लाक सुरक्षित्र हेमबन्धानार

स्वय थे। उन्होंके पथ प्रदर्शनमें उसने राज्य संचालन किया, उसके मन्त्री. सेनानायक एव अन्य उच्च पदस्थ कर्मचारी भी अधिकाशत जैन थे और सब ही कूबल सुयीग्य एव विश्वस्त थे। थोड़े ही समयमें उसने बाह्य एव सम्यन्तर रामुओंका दमन करके अपनी स्थिति सुरक्षित एव सुदृढ कर लो और शासन-उपवस्या सुचारु कर दी। तदनन्तर शेप १५-२० वर्ष उसने कला, ज्ञान और धर्मकी सेवा-साघनामें व्यतीत किये। उसने श्रावकके वृत घारण करके परम आईत् विरुद प्राप्त किया, राज्यमें पशुहिंसा, विल, शिकार, मद्यपान, जुआ आदिका निपेध किया, मृत्यु दण्ड वन्द किया, युद्धासे विराम लिया. राज्य-भरमें समारि घोषणा करवा दी, दीन दुखियोका पालन किया, निस्त तान विघवाओं के स्वत्वकी रक्षा की, चतुर्विष सपके साथ धनुजय. गिरनार तथा अन्य तीर्थ क्षेत्रोंकी यात्रा की, और सोमनाथके मन्दिरका भी विस्मरण नहीं किया। यह राजा भारी निर्माता भी था, कहा जाता ह कि उसने १४४० नवीन मन्दिर बनवाये और १६०० का नोणोंद्वार कराया. स्वय राजधानीमें भी अनेक सुन्दर जिनालय निर्माण कराये। प्रारम्भमें वह निरक्षर था किन्त राजा होनेके उपरात सत्सगरे शीघ्र ही उसने लिखना-पढ़ना सीख लिया, विद्वानोकी सगति एव वाद विवादमें उसे आनन्द आता या, कवि, पण्डित, चारण, जैनाजैन विद्वान्, साधु तपस्वी सभी उसके राज्य बीर दरबारकी शोभा बढ़ाते थे, राजा चरित्रवान् और एकपत्नीव्रतका पालक था, ब्राह्मण विद्वानो और कवियोंने भी उसको मूरि-मूरि प्रशसा की है। वास्तवमें कुमारपाल एक आदर्श नरेश था। ११७२ ई० में हेन-च द्रकी मृत्यु हुई, गुरु वियोगसे सन्तप्त राजा कुमारपाल भी ६ मास परचात् ११७३ ई० में मर गया।

कुमारपालके कोई पुत्र नहीं था, उसका दौहित्र प्रतापमल्ल उसका उत्तराधिकारो था, किन्तु उसके मसीजे अजयपालने चालाकोसे सिहासन हस्तगत कर लिया। वह शैवधर्मका अनुयायो या और वहा असहिष्णु था, उसने पुराने मन्त्रियों और सरदारोंको अपमानित किया और उन्हें नष्ट किया।

बैर जिल्लो और बापुणीयर मी चोर अन्यापार किये. जनकी द्राना करगायी

कुमारचाकके बाद ही कोलंशी चंद्रका चपन बारवन हो नया ना । इव बारनत बालने की बुक्तरात्रके बीरव बीए बनिका सका बन-बनकी प्रत्यक एका अनके सेन पार्क्यावरहरियाने ही की । तीन हिटोबका सन्दि पर-रक्षक करवामाह सावक वैनी वा - व्यन्तिक वरेवाच वपाने वटी कर-बर्धे का । बन्दे क्लो की कल्युगल और वेजगल शामके की बैंज प्राण में । बालीरवर बालुपायने बुजरामके स्वयान्त्यी वह होतेले. बन्धनेके मिर् क्षारे बोरवरे ६३ वार वृद्ध-वृत्तिवतुर्वर बेल्प्य बचानत विद्या था। बाबू (देवनाई)के दिरम्भित सम्बन्ध कमानुम संसन्दर्भर होता दियोगसर सेतिनार्थ-सम्दर्भ दिनांत हती वानुसामने सम् १२३१ई है बदाया या । सन्दर्भ मी क्षेत्र केन मन्द्रपाता काले निर्माण कराया और सैन इन्हें बैच्यर तीरोंकि निर्दे भी बांच दिये । यत मुखरीय, बालबीय क्ये बाबरीयले अनेक बीजीय-बीची कार्य किये । १२४३ ई. में सामकात बावना शीवनरेवर्ष को इस काफे अनुसार कारोपत अवयवसायका ही बंधन का अनियम बोलीकी-मरेप निमुक्तरामको नहीते स्वारकर राज्य हारान्य किया और भागरत या वर्षमा नेपको बीच शब्दो । इक्के बनवर्षे को नरिवरस्टर

विन्त्रत याच सका (११)

तने दमन किया फिन्तुवह उनका अन्तन फर सगा। साय हो ब्राह्म गों र उनके घर्मका बोलवाला हुआ। छएक पुत्र दाहिरके समय ७१२ में सरव सेनानी मुहम्मद विन फ़ासिमने सिन्यपर सयकर आक्रमण या । दाहिर बीरतापूर्वक छडने हुए मारागया और विचयर हिन्दूराज्यका न्त तथा मुनलमानी घासनका प्रारम्भ हुआ। कुछ विद्वानीं रे मतस नि यके स पत्तनका श्रेय अरबाकी बोरताये अधित सिन्चके बौद्धा और ब्राह्मणीरे ारवासघातको है। अरबोने प्रारम्भिक अत्यासारोंक बाद बहुन कुछ महि-गुनापूर्वक शामन किया। बौद्धधम तो शर्न -शर्न तिरोहित हो गया सौर ।सके विकृत अवधिष्टाश तथा शास्त्र घमक सम्मिश्रणसे मि घर्ने वाममार्ग-हा प्रचार हुआ। शैवधम पनपता रहा, पनै -सनै वैरणवधर्म भी प्रविष्ट आ और जैनवर्ग भी ब्यापारी वगमें बना रहा। कवि श्रीत्पके नैपय-वरितसे विदित होता हु कि ८वीं छनाव्यीमें भी सिम्पर्मे जैनघम अच्छी द्यामें था। मुल्तान नगर तो मध्यकालमें भी इन प्रदेशमें जैनधमका प्रमुख केन्द्र बना रहा । गोडी पादवनायकी सुप्रसिद्ध मूनिसे सम्बचित अनुस्रितियाँ भी प्राचीन कारुमें सिच देशमें जैनयमके अस्तित्वका समर्थन करती हैं। मध्यकालमें पादर्व-जिनकी इस प्राचीन ऐतिहासिक प्रतिमाक संग्यक सिय देशान्तर्गत पीरनगर (पारकर) के मोडवशी राजपूत ाजे रहे और वे इसे अपना कूल-देवता मानते रहे ।

करमीर—यह पनाव थौर मध्य एशियाक बीच स्थित मुस्स्य पर्व तीय देश है जो हिमालय पर्वत मालाऑम ही होकर निब्बत और नेपालसे भी सम्बचित है। यह एक प्राचीन राज्य है। आर्थोने हो इसे सबप्रयम सम्यता प्रदान की। मिकन्दरके आक्रमणके नमय यह विद्यमान या और चड्रमुख मौर्यने भी उसे अपने साम्राज्यका अंग बना लिया या। सम्राट् अदोक्के पुत्र जलोकने वहाँ स्वताय राज्य किया। कल्हणकी राजसरिएणी और अवुन्कक्ष्यन्तको आहने सक्यरीके अनुसार जनोकने ही इस देशमें जैन-धर्मको प्रतिष्ठा की थी। सदुपरान्त कनिष्क आदि कुषाणींका बहाँ राज्य क्रांठे क्रांट बनराज्य ने जिल्हाने इस निवयंत्रियों। युवानी बन्नाद्की कर्नेच क्रमाना था। कुछ थाक पर्वन्तः भीनौंदा फिर युनानिमौ जीर पक्क्षेण इस प्रदेशकार व्यक्तिकार पहा । जनम प्रती हैं पू के जबन पान्ते ही बकोने बाह्यय परके बहुँ धरस्यानको स्थापना की । धरकुक्के स्र धकाँने किन्तरे फैलकर ही बचार और परिचय भारतमें अपने छन्न विश्वाने में । बक्तेक बक्दान्त हुमाँका मनिकार हुमा और कस्का-न्हरमें इस निरेश्विमीया धारतीनकरण हो जानेनर रह देखने वर्द एक क्षेत्रे-क्षेट्रे राज्य जरते. है। शाक्षणायांकी विश्वके क्ष्योंने बैक-वर्तमा प्रचार किया था बोर वसीके क्यवण बीहानार्वने अपीहेके नव बाकोलो बैनवर्गये दोस्तिय दिया या । पुरतकाकर्ने द्वरियुक्तने र्गयान शिल्पके हुनोको चैनधर्मना क्लरेच दिवाचा। जुलानियोके बनवर्ने मी इस बरेखने समेख दिसमार चैन बायु नियरण करते. और अमेर्नि निमाय करते में । कामान्तरमें चन्त्रपत्तवा पुचार्याके चनको महानामी मीजमर्ग दर्व क्षेत्र और पास्त समीका जो १व रेक्स प्रकार हो बदा पर। १व प्रकार में बंध ही विधिन्त चारतीय वर्ष इस प्रवेखने की हुए से। सैनमर्प समस्य हो अपेचाइत जीन स्थितिनै पहा १ ६६६ वसी है के जानने एक युक्तातीय व्यक्ति समूर्ण सिकार विकास करके बार्ट काना राज्य बनाना । यह बहानानी श्रीजनर्मना बनुनानी या । अबके बंधने तिहरण-एम प्रक्रिय हवा है। यह मी सबी गर्नम्य बनुशारी गा । सबके सम्मर्मे बीड मिस् दिन्य देखते बाक्स्य और ऐक्सा मीनन विवाद में और ने राज्यके कियु विध्यक्त से । यह ६४४ ई. में समस्ता और बक्षभिरदालके पानिते अरबोने जिल्लापर बाळानव निम्हा इस बीज विमुच्छे नारण शता तिवृतकत्त्रणी हार 🐩 और यह गास क्या। क्वरर पुत्र बाईबी का किन्तु ६५६ है। ये कक्की जी क्की वर्ति हुई भे वक्ते निरामी हुई मी। क्क्षे वपराम्य वक्ष्मे प्राप्ताम सभी क्रक्ते राम्न हत्त्वन्तं कर विना और अवश्व ४ वर्ष राज्य विना। गीडीका ... व्यातीय इविद्रापः एक परि

उसने दमन किया किन्तु वह उनका अन्त न कर सरा। साथ ही प्राह्मणी श्रीर उनके घर्मका बोलवाला हुआ। छष्टके पुत्र दाहिरके समय ७१२ ई॰ में बरव सेनानी मुहम्मद विन क़ासिमने सिन्यपर भयशर आफ्रनण किया । दाहिर बीरतापूर्वक स्टिते हुए मारागया और सि पपर हिन्दूराज्यका अन्त तथा मुमलमानी पामनका प्रारम्भ हुआ। कुछ विद्वानांके मतस मिन्यके इस पतनका श्रेय अरबोंकी बीरतासे अधिक सि धके बौद्धा और प्राह्मणांचे विस्वामयात हो है। अरबोंने ब्रारम्भिक अध्याचारोंने बाद बहुत कुछ सहि-प्णुनापृयक शामन किया । वीद्धधम तो शनै -शनै तिरोहित हो गया और उसके विकृत अवशिष्टांश तथा जानत धनक सम्मिथणन सिधने वामनाग का प्रचार हुआ। धैयधम पनपता रहा, पानै धन वैरणयथर्म भी प्रविष्ट हुआ और जैनवमी भी व्यापारी यगमें बता रहा । कवि श्राहयके नैपध-परितसे विदित होता है कि ८वीं शताब्दीमें भी विष्यमें जैनधम अच्छी दशामें था। मुल्तान नगर तो मध्यकालमें भी इन प्रदेशमें जैनधमका प्रमुख मे द बना रहा। गोड़ी पादवनायकी सुप्रसिद्ध मूर्निस सम्बधित अनुस्रुतियाँ भी प्राचीन कारूमें सिच्च देशमें जैनचमके अस्तित्वका समर्यन करती हैं। मध्यकालमें पादव-जिनकी इस प्राचीन ऐतिहासिक प्रतिमाय संरक्षक मिन्य देशा तर्गत पौरनगर (पारकर) के सोडवशी राजपूत राजे रहे, और वे इसे अपना कुल-देवता मानते रहे।

फरमीर—यह पजाब और मध्य एशियाके बीच स्थित सुरम्य पर्व-तीय देश है जो हिमालय पर्वत मालाओं में ही होकर निक्वत और नेपालसे भी सम्बन्धित है। यह एक प्राचीन राज्य है। आयोंने हो इसे सम्प्रयम सम्यता प्रदान की। निकन्दरके आक्रमणके नमय यह विद्यमान था और चद्रगुष्त मौर्यने भी उसे अपने साम्राज्यका अंग बना लिया था। मम्राद् अशोकके पुत्र जलोकने वहाँ स्वतत्य राज्य किया। कल्हणकी रामतरिंगणों और अबुलक्कललको आह्ने अक्करीके अनुनार जलोकने ही इस देशमें जैन-धर्मकी प्रतिष्ठा की थी। सदुपरान्त कनिष्क आदि कुपाणाका वहाँ राज्य बचरर बर्न्स्टार जिल्ला विश्व प्रश्ने लगीहे जारको शर बर्नाहे बचीन्द्र संप्रका प्रदेश हुआ औं इस संदर्भ शानवहान्त्री कालोर नामारी सबन्दर ब्रहार थी। बड़ोंग्ड गाते बुवंदरक में बेरे देंद वर्गायमारी में अन्य बानामी लग्गांकारीने गाने नाने बीदायम पत्रमान्ये तिर्गीरत ही बारा बोन बैंडपर्य बॉलन रुपेंडे लक्ष - भिन्ने बोर्लिय रह बारा ४ फिर मी टरी दक्त तर नकार बोद विद्याल केन्द्र बना रहा । बाँग्रह वार्वप्रीयन बीद शिक्ष्य पुत्रमा नेपारे जन्मित्रमें ही दिखा जाना की थी । संपीतम र्वप्रके ब्रार्गामक नेटॉर्व एनेवरान को सरवर ६६१-६६ ई है बहुत्तर हैंडा प्रतिक है । इसीय समाने वहसीरका सार्वाचन प्रतिहार बिमना तम होता है। बह राज्य रचकर्षन और हुण्यमांतवा बमरायीन था - इसका बीजा मॉन्नाबिन्ड कंप्यारीड (७३६-७६९ 🕻) बडा मंत्रीमें बीर बरलाशंत्री या उनने कर हैं. मैं क्वीरफे ब्योक्सकी हमन निवन बोर और मुधीको को रचारा । बह मुस्ता ब्राह्मक का मीर इपने प्रशिष्ठ वार्तपर-अन्तिर सन्त्रारा पर अनुवा क्रेस दिवसीय क्याचेंड था। यह बस निवसे और नामची या । दवी राजीके बनागर्वें इन्हें बजीवरे बमानुवाने हराया । १वी शार्विक स्वत्रमें इन बजीवर

रहा दुनो बचर मान्यार बीद्धवर्षवर वार्यान्त्रे प्रदेश हुआ । ६१ वर्ण के बच्चवै ब्रान्डिम्बरे हारबर ि पुत्र हुन्त्वे च श्रीरवे प्राप्तची साम्बर

र्वपार बन्त हुना भीर प्रवृद्ध स्थानमे बारश्चित्रवर्त (८५५-८३ ई.) ने बलब शंबकी रेक्सरता की । इस राजा तथा इनके बंधजीने आहित्य कीर बारिएकारोंकी समन्तर्व शंन्ताहर दिया और सीवाहितके करेब कार्य किनै क्षत्रवा पुर संबन्धर्य (८८१-५ १ ई.) जो एक प्रशास नीम च्या इन बंगमा मनिन सारा हर्ने (१ ८९ ११ १ ई.) बा । शह बारा अन्याचारी और वर्नीवरीको नाका चर । इनके नरपाल परजीरके गीर्द

जारतीय प्रतिदास एक ग्रीट

यक्तियाची राज्यक्ता व रह नदी और १६३ 🛶 🦸 है वरववातीय इन देश्यर बर्विकार हो नदा । उत्पन र्वदादे बनामी बीजावर्त बस्तीरने नामशेप हो गया और धैवधमें दुम देशका प्रधान धर्म हो गया। इन नरेशोंने सेन्छत साहित्यको मारी प्रोत्माहन दिया। मेंया, भौमक, शिव-स्वामिन, रस्ताकर, खिमनन्द, क्षेमें द्व, मोमदेव (कथासरित्मागरका लेलक, १०६३ ई०) विल्हण (१०६४ ६०), कल्हण (११०० ६०) बादि अनेक सस्यत कवियों एय विद्वानोंने इन नरेशाचे शाध्यमें भारतीने भण्डारको भरा। कल्हणको राजसरेगिणों कदमोन्के इतिहासका अपूर्व प्राय है और सम्पूर्ण सस्यत साहित्यमें इतिहास विषयको वैजोष्ट रचना है। इससे पता चलता है कि कदमोन्का तत्रास्तोन इतिहास गृह पह्यात्रा, हत्याओं और दुरावारोंसे पूरित था।

नेपाल में प्रारम्भमें बनायं लोगोंका निवास या। प्राचीनकालमें लिच्छिय द्यावियोन यही मारतीय राज्य स्वापित किया जो अवीं घती ई० के मध्य तक चलता रहा । समुद्रगुप्तके शिलालेखमें भी नेपाल राज्यका उल्लेख है । हपके समयमें नेपाल राज्य हर्पके राज्य और तिब्बतये बीच स्थित था। लिच्छवियोंने द्वारा ही इस देशमें आर्यसम्पता और बौद्ध, जन आदि धर्मी-का प्रवेश हुआ। किन्तु तान्त्रिक बौद्धधमकी ही वहाँ प्रधानता हुई। सभी हालमें हा स॰ ४९८की एक जैन प्रतिमा एव शिलालेख नेपालमें प्राप्त हुए हैं। ६४२ ई॰ में अगुवर्मनने नेपालमें ठाकुरिवश नामक एक नवीन राजवशको स्थापना को। ७२४ ई० में इस बक्षके राजा गुणकामदेवने काठमाण्डु नगरका निर्माण किया और उसे राजवानी बनाया । ८७९ ई॰ से नेपाली सवतका प्रचलन हुआ। १३२४ ई० में हीरासिहदेवके समयसे नेपालमें बौद्धधमका अन्त हुआ और शैवधमको स्थापना हुई। तबसे वही इस देशका प्रधान धर्म चला आता है। जैन धमके भा कविषय चिह्न नेपालमें भिले हैं। जैनियोका आयागमन इस देशमें प्राचोनकालमें था, इसके कई प्रमाण मिलते हैं।

फुलुकी घाटी में कुलूत लोगोंका एक छोटा सा राज्य था। इसके राजे बौद ये। चम्बामें भी कुलूतोका राज्य था किन्तु ये लोग शैव थे। तिम्मद्र राज्य नवर्ष या । बीड्यक्यर वह एक ज्ञुच वह बन स्वा वर्ष । चोन देश जाए ज्ञुच वह बन स्व । चोन देश जाए जेंक जान क्यां कर्म विचय हो हा हो मा क्यां के सामाने के सामाने के सामाने क्यां क्यां क्यां विचय नविच्या की हर । वर्षों वर्गों में क्यां विचय विचय विचय क्यां क्या

स्वाह्यस्य नगम करण कारण राज्यस्य प्रकार प्रवासी स्वपूर्णियेल में।
स्वीतां तीर करण सम्बार प्रवास प्रकार प्रवेद हर या निष्टु नाह्य साम्यान एवं प्राण्डे विद्या स्वीता प्रवास करण या ती । इस देश्वर क्ष्मप्रकार विद्या स्वीता प्रवास प्रवास करण या ती । इस देश्वर क्ष्मप्रकार साम्यान स्वास प्रवास करण करण स्वास प्रवास करण स्वास करण स्वास प्रवास करण स्वास करण स्वास

र्षपास्त-नार्येण नार्थ्ये को आवश्य शिक्षर-नंदान श्रद्धका है यह प्राथ्ये ना प्रारम वेपके नार्येक अभित्र प्रार और अन्य और प्रोप्त वर्ष्यय विद्यार प्राप्त कार्य है। बहुन्य नीर्थ्यों बेदाल पूर्व गामितान, पूर्व-विद्यार बीर विराद पद्मार्थ वेदाल या वंप वेस पर, पुत्र प्राप्त (बाड़) और एन्ट मार्थी भी पूर्वा प्रार्थित भी क्ष्मार कार्य क्षमान्त्र है। युक्त समतट भी इस्रोका एक भाग था। पुण्डूपर्यन, पुण्डूनगर या महास्यान-गढ, ताम्रनिष्त (तामलुक), कोटिवर्ष, यर्घमान (बर्दवान) आदि इसकी प्राचीन नगरियों थीं। जैन अनुष्कृतिके २५ई आर्य देशों तथा १८ राज्योमें वगरेश और उसकी रामधानी ताम्रलिप्तियी गणना है, किन्तु घोढ अनुस्रति-के सोल्ह महाजनपदोमें इनका उल्लेख नहीं है। वेदोंके आर्य मी बगदशसे मर्वेषा अविश्वित थे। उत्तर वैदिक-कालीन साहित्यमें उसे अनार्य-देश महा है, ५वीं-६ठो शतो ई० पु० के धर्ममूत्रोंमें तो इस म्लेन्छ देशमें जाने-वाला आर्य महापातको समझा जाता या । ३० मण्डारकरका मत है कि इस प्राच्य देशके लोग जैमा-द्वारा ही सर्वप्रयम सम्य बनावे गये थे। अत मध्यदेशीय सम्यता और धर्मका वग देशमें प्रवेश श्रमण सम्कृति और जैनधर्मके रूपमें ही सर्वप्रयम हुआ। प्रो० राखालदास यनर्जीके अनुसार भी प्राचीन पालमें गगाके दक्षिणी भागमें जैनधर्मका पाकी प्रवार और प्रमार या। दक्षिण बिहारके हुजारोबाग जिलमें स्थित सम्मेदिशियर पर्वत जैनियाका सवमहान् सिद्धक्षेत्र है। इस तीर्यसे ही चौयीममें-से योस तीर्यकरा-ने निर्वाण साम किया था। यह पर्वत पारसनाथ नामसे भी प्रसिद्ध है, तीर्यंकर पार्व इस स्थानसे मुक्ति लाभ करनेवाले अन्तिम तीर्यंकर थे। उन्होंने इस प्रदेशमें जैनधर्मका विरोप प्रचार किया था। आचाराग सूत्रके अनुसार बढमान महाबीर भी बज्जम्मि, सुम्हभूमि और राउदेशमें धर्मप्रचारार्थ गये थे और बर्द्धमान (वर्दवान) नगरकी प्रसिद्धि भी उ हींके नामसे हुई । अन्तिम श्रुतकेवली मद्रबाहु पुण्ड्रवधनके निवासी थे । जनस्यविरोंकी गोदासगण शासाके पौण्डवर्धनियागणका नाम भी इसी नगरके नामपर रखा गया था। जैन साधुशाको कोटिवर्प और ताम्रलिप्ति शानाएँ भी बगदेशके तन्नाम नगरींके नामसे ही प्रसिद्ध हुई । यौद्धप्रन्य बोधिसस्यावदानके अन्तर्गत सुमगधायदानमें वर्णित सनायिपण्डककी पुत्री सुमागघाकी कया प्रमाणित करती है कि ईसाके ज मसे बहुत पहले ही, स्वयं बुद्धके समयमें, पुण्ड्वर्धन जैनधमेका प्रसिद्ध के द्र या । एक अप वौद्धप्रन्य,

बजी रिल्ट् बहुत कम तिमालवालीले बतार मारुक्षीय राजनीतिमें मी हरातेर रिका विग्नु तिवयत्त्रा विवय तानाना न्होनके बाच ही रही । निध्यतमे बौद्ध नामाओर। वर्वशास्त्र स्तुकान काम शुद्ध क्षत्रता रहा । स्त्री बाता है कि निरामने बैनवबंधे भी पूछ विद्यु विने हैं ही नदता है गर्मी-बजी कोई येव स्टाल कर्न-जकारार्व वहाँ था करेंचे हो, हिल्ल बजी विधेय तकरणा वहीं बिकी उतीय हीती। भ्यासामः सन्ध समयः वानकन राज्यको छन्दानी बान्जीदेव गेरे मनीको बोर बनडे प्रजापके किश यह भारतका वर्षेत्र हार यह रिन्तु वास बाहराओंन इस हारने देवारी करेंच लाइच रखा की । इस देवारे बालयन बौद्धपत पालवाय और जोशिवीकि बाह-टीलैपा ही हचार पता। विके समय बढ़ोरा राज्य मलकरवर्जन वर्गान्य वर्गशास्त्रकी बा और हर्पम निर का । मोबड़े सर्रात्वे दिस्त बन्दे हुएँही बुहारसा की की थी। बनके बचरान्य जनके मंत्र रेश शारत गता। १९३ वाली बंगायके वाकोने क्षा देवारर अधिकार कर लिया । नवववाजीकी बंबाक दिवनी क्रपान्त १२२८ के १८२५ ई. यह जानामार यात्र वर्धाकी स्थीन धाकार। प्रमार रहा । जानीन कांग्रिलने जानान किरान केब नेडकरा

शिक्तत राज्य सनार्थे या । वीजवर्षना यह एक प्रमुख जह हम नया मा । चीन देशके मारत बानेशा त्रवान नार्व तिवत होतर हो का । दिस्पर-के राजाबादे क्षेत्रके राजकरातेके नाव विवाद-मध्यक्त बी हुई । करी-

र्वदास-धार्थन शास्त्र्यं की बाजरण विद्यार-वंशन बद्धसम्बद्धां है मह प्राची वा प्राप्त वेवके मानवे प्रतिक्र का । बीच अवस बीट मीमर्थ पर्यमान विज्ञार आरंके जान वे । कर्मून परिचामी वैद्याब्द भूमी प्राप्तिसाल कुण-विद्यार और टिपन पहाडी जंगान का बंध पैस था, तुम्ब राखा (कार) मोर मुख नागींके भी दशकी प्रतिक्रि की विकास और ब्हेरिक्सके विकास

है और इच्छे नियानी हिरात । माध्यवर्षको बद्ध वृत्ती श्रीमा वनकी

काली भी ।

युक्त समतट भी इसीका एक भाग था । पुण्डूवर्धन, पुण्डूनार या महास्यान-गढ़, ताम्रिटिप्ति (तामलुक), कोटिवर्ष, वर्षमान (वर्देवान) नादि इयको प्राचीन नगरियाँ यीं । जैन अनुश्रुतिके २५ है आर्य देशों तथा १८ राज्यों में वगदेश और उसकी राजधानी ताम्रलिप्तिकी गणना है, किन्तु बौद्ध अनुष्यृति-के सोलह महाजनपदोमें इसका उस्लेख नहीं है। वेदोंके आर्य मी वगदेशसे सर्वया अविवित्त हो। उत्तर वैदिक-कालीन साहित्यमें उसे अनार्य-देश नहा है, ५वीं-६ठी शती ई० पू॰ के धर्मसूत्रोंमें तो इस म्लेच्छ देशमें जाने-वाला आर्य महापातको समझा जाता था। डॉ॰ मण्डारकरका मत है कि इस प्राच्य देशके लोग जैनों-द्वारा ही सर्वप्रयम सम्य वनाये गये थे। अल मध्यदेशीय सम्यता और घर्मका वग देशमें प्रवेश स्रमण संस्कृति और जैनघर्मके रूपमें ही सर्वप्रयम हुआ। प्रो० राखालदास बनर्वीके अनुसार भी प्राचीन कालमें गगाके दक्षिणी मागमें जैनवर्मका काफी प्रचार और प्रसार था। दक्षिण विहारके हजारोबाग जिलेमें स्थित सम्मेदशिवर पर्वत जैनियोंका सवमहान् सिद्धक्षेत्र है। इस तीर्घसे ही चौत्रीसमें-से बोस तीर्यकरों-ने निर्वाण छाभ किया था। यह पर्वत पारसनाय नामसे भी प्रशिद्ध है, धीर्यंकर पार्व इस स्यानसे मुक्ति लाम करनेवाले अन्तिम तीर्यंकर थे। उन्होंने इस प्रदेशमें जैनधर्मका विशेष प्रचार किया था। आचाराग सूत्रके अनुसार वद्धमान महाबीर मी दक्तभूमि, सुम्हभूमि और राडदेशमें वर्मप्रचारार्थ गये थे और वर्द्धमान (वर्दवान) नारको प्रसिद्धि मी उन्हेंकि नामसे हुई। अन्तिन अतकेवली नद्रबाह पुण्ड्वर्धनके निवासी ये। जैनस्यविरोक्ती गोदाशगण धाक्षाके पौण्डुवर्धनियागणका नाम भी इसी नगरके नामपर रखा गया था । जैन सायुआको कोटिवर्ष और ताम्रलिप्त दाासाएँ भी वगदेशके तन्ताम नगरोंके नामसे हो प्रसिद्ध हुई। बौद्धप्रय बोधिसत्त्वाबदानके अन्तर्गत सुमगघाबदानमें बर्णित अनाधिपण्टकको पुत्रो सुमागवाकी कया प्रमाणित करती है कि ईसाके च मसे बहुत पहले ही, स्त्रय वृद्धके समयमे, पुण्डवर्धन जैनधर्मका प्रसिद्ध केन्द्र या । एक अप बौद्धप्रप्र स्मित्रसम्बद्धे बनुबार की अधीवने जारी बहुत के लिए जिसे हुन्या क्रांबिट कर्मा की की नरीकि कारोंने बुद्धकों विलिश विभारत विकास्मा

मैं हुमाओं करों और बीओंडे अवस्त्रे बेच समृदद बरच बामागरा क्षेत्र बन्त रार तहुररान्त निरुद्धीय कादि बान्द शांवियों वृद्धे नार्वेके केटेन क्षेत्रे राज्य वर्श काली है सामाप्त मुख्य-मोजीने विकास वर्श कर्त करें अपन मामान्यमे दिन्त दिया । बहारीएके बनवने शेकर मुखीके समय दान वाम-बिन्त ही इस देहची बचान राजवानी जन्म न्यास्तरिक नगर और नारें बना बन्दरराह्य बनी नहीं । अपूर वृष्टि बेटीकि बाब जान्छके नांगु जिन राम्नेतिक बोर्चान्त्रेणिक वर्ष स्थानीतः क्षमान्त्रीयः वसलेते स्थ बन्दरमारका प्रकृत अधार का वीवकता वादिताचे इन नवरके सम्मार्न-द्वारा निरेतींको कावेशांके कवेक वैश्वश्यासारिको एवं कार्यावक मालिएरि प्रानेश वर्र को है। इक वाक्ष्में वंबरेशके शिवा मार्गेने केरवर्षेत्री ही प्रकारता थी। वसी प्रमूप स्वरामि परी-मही बैंड बन्नियों की अन्य अवेद स्थानीयें बेच-केन्द्र विद्वार, विद्यारीय मीर जिम्मिनर में : जमीरान निर्माण वापुनींश पूर्व सिहार होता पान बा बीर इत बाबुबॅरि डाया बंगानके बेरबबुधावका बस्तर दक्षिण पूर्वे एरं परिश्न बालकांके समी बालांके बैश्वेन्टोरे कारत्य बचा हुन्य था। बनुराहे सैनानुरहे बनावेचीने बान्त कर ६६ ई के एक विका-केवचे पता पन्ता है कि यह (यदा-रंबाव) के एक बेरहरिने बनुसर्वे बाबर एक वार्चकर-मृतिकी बाँगा। करायी थी । करावानमें गर्निया श्चमश्राही जिलेके कारपुर स्थान (प्राचीम नाथ श्रीपपुर) के निकर बंद मोदानी नामध्य एक प्रविद्ध वर्ष विश्वास बेन स्ट्रिटर च्य । दिसमार बार्डोंडी पंतन्त्रात्यों बाबाहे वृति इत वर्षश्चनके बानक है। व्यानिक १५९ (बन ४७८ ई.) के एक बाह्यकारक विस्ति होता है कि इस बंदबावर्ते एक ब्राह्मण बन्दांत्रचे किन मूर्विकी स्थारण करकारी की जीर जहारीकी वृज्यके जिल्लाक दिना या। वर्ष

या व्याघतटी राज्यमें, पुण्डूवर्धन और ताम्रिजिप्तिमें तथा अन्य स्थानोंमें अनेक जैन मन्दिर और निर्प्रन्य साधु देखे थे। वस्तुन पुण्डूवर्धनसे प्राप्त प्राचीन खण्डित जैनमति, घटगाँव जिलेके सीताकुण्डके निकट चन्द्रनाथ और सम्मवनाथके प्रसिद्ध प्राचीन मन्दिर, टिपरा जिलेमें कमिल्लाके निकट स्थित मैनामती और लालमाईकी पहाडियोंमें विद्यमान प्राचीन जैन मन्दिरोके खण्डहर, बौकुड़ा जिलेमें बर्दवान और आसनसोलके मध्य प्राचीन जैनस्तूपोंके ऊपर निमित ईंटोके वन एक सुन्दर प्राचीन मन्दिर जिसमें शिवके साथ तीयकर पाव्यकी प्राचीन मूर्ति अब भी विद्यमान है, छोटा नागपुरमें दूलमो, देवली, सुइसा, पकवीरा आदि स्थानोमें और उनके आस-पास भी अनेक प्राचीन जैन मन्दिर, तीर्थंकर प्रतिमाएँ, यक्ष-यक्षिणियो-को मूर्तियाँ आदि अनेक जैन अवशेष मिले हैं। राखालदास वनर्जी, विमलचरण लाहा, अद्रीस बनर्जी आदि अनेक पुरावत्त्वज्ञों एव इतिहासज्ञों-का मत है कि वगदेशके विभिन्न मागोंमें विखरे हुए उपरोक्त जैन कलाव-घोप जो ईसवी सन्के प्रारम्भसे छेकर १०वीं-११वीं शताब्दी पर्यन्तके हैं प्राचीनकालमें इस देशमें जैनधर्मके ब्यापक प्रमाव एव प्रसारके चोतक हैं। ६ठी शताब्दी ई० के अन्तमें, सम्भवतया गुप्त वशमें ही उत्तन्न, समाचार नामका गुर्खीका एक सामन्त उनकी श्रोरसे वग देशपर शासन करता था। गुप्त वधको अवनितसे लाम चठाकर उसने अपनी शिक्त ~ ~ 4

समय प्रस्तूर शाखांके वाराणसी-निवासो आवार्य गुहनन्दोके शिष्य-प्रशिष्य उक्त विहारके अध्यक्त थे। इस शाखाका प्रसार नदसीर, मथुरा, हस्तिनापुर, चित्रकूट (चित्तीष्ठ), वाटनगर (महाराष्ट्रमें नासिककें निकट), कर्णाटक और तिमल देश पर्यन्त था। सम्भवतया हस्तिनापुरकें पंचस्त्र्योंसे इसका निकास हुआ था। वगालमें भी पचयूपी नामक स्थान अपने मूलको स्मृतिमें इस शाखा-द्वारा निमित स्मारकको याद दिलाता है। ७वों शताब्दोमें चीनी यात्री हुएनसागने वग दशके समतट बाली। बनना पूर वा वीन नुमंतिक वीहना खर्डाक ना। बह रूपें परेले नर्जनुस्तरा ज्याकारण ही जा जिन्दू बीता ही वह स्टान्त में बना और पनने करने पात्रका निकास नाजानके बहीज परंच जर क्या के स्थापकारियानकी बनावि मान्य को सामनी परं कर्मी रिने बीर प्लेम (वीवन) के धीनोप्यवहीक्तो जन्मे कर्मि रिप्ता। बचांक धीयसम्बद्ध बहुद जनुष्यति मा बीर बीजींग परंच हैं कर्मे परानी मूस बीर बीजियकारी यह जिल्दा पूर्व सीजोर्स कर्मे-करापार रिने करिंग बहारी बुनावि की बार देशों सामने पार्य बार पहुं का। इस्ते बक्के परमाना बाह हरता क्या क्या व्याव क्या वह स्टान क्या

त्या व कंपन्ता जा । त्या का निरम नायम क्षाप्त क्षाप्त

त्यों वारोने पूर्णीये बंधकारे यह तथा व्यक्त प्रवाद है। त्यों वारोने पूर्णीये बंधकारे यह वारामका पूर्वे। अस्त्वकारे हैं वै पीतान सामन एक व्यक्तियों कह तरावरणका आप तरके प्रकर्णकारे हरणकार थी। पामनेव वीत्रकार वर्णतिकार पामकेव प्रताद वीर गार्के साम वह गाँच प्रीवश्यों में, कल्के तमाने हैं। हुए वेदने पीता वीत्रकारणों सामी सम्मानकार (क्वा वीत्रकारी व्यक्तपूर्ण एक दिहार स्थापण)

नारबीच इतिहास : एक परि

इसी समय प्रजा नामक एक बौद्ध विद्वानं हुआ जो करियाम जन्मां, नालन्दामें पढ़ा, उद्दोसामें बसा और यहाँ योगाम्यास सिखाता रहा और फिर चान चला गया । यत्सराज प्रतिहारने गोपालको युद्धमें पराजित किया था। दूसरा राजा धर्मेपाल था। उसने ६४ वर्ष राज्य किया। मगध उनके साम्राज्यका लग था और उद्दीसाके भीमकर राजे उसक अधीन थे। राष्ट्रकृट ध्रव और गोविट तृतीय तथा प्रतिहार बत्सराज, नागायलोक और भाज उसक प्रतिद्वन्द्वी थे। धमपालने कप्रीज पिजय करके एक बार इन्द्रायुघको गृहोसे उतारा और चक्रायुघको उसके स्थानमें बिठाया। इसी राजाने विक्रमशील विद्यापीठकी स्थापना की यो तथा सोमपुर (पहाडपूर) के जैन अधिष्ठानको नष्ट करके उसके स्थानमें बौद विहार और मन्दिर वनवाये थे। इसने अपने सिक्कोपर भी धमचक्र आदि बौद्ध चिह्न अंकित कराये । ८२४ ई० में उसकी मृत्यु हुई और उसका पुत्र देवपाल (८२४--८७२ ६०) राजा हुआ । यह पालवशका सर्वाधिक शक्तिशाली नरेश या और कट्टर बौद्ध था । मुद्रगगिरि (मुगेर) को उसने अपनी राजधानी बनाया । बौद्धेतर जैनादि धर्मोके लगभग चालीस महे-बढे केन्द्रोंकी उसने नष्ट किया कहा जाता है। उसने अनेक बीद्धमन्दिर और विहार चन-वाये । धीमन और वोतपाल नामके जिल्पी उसके आध्यमाजन थे । उसने क्षासाम और उड़ीसको भी विजय की और श्रीविजय एव स्वर्णद्वीपके सदूरपूर्वी राज्योंसे सम्बन्ध बनाये। उसका नालन्दा साम्रशासन प्रसिद्ध है। इस वर्शका आठवी राजा राज्यपाल या किसने एक राष्ट्रकृट राज-कर्यासे विवाह किया या । १०वीं शतीके प्रारम्भसे पालवश अवनत होने लगा या । ९५० ई० क पश्चात् काम्बोजोने वंगालपर अधिकार कर लिया जिन्हें महीपाल (९७८-१०३० ई०) ने निकाल बाहर किया। किन्तु राजे द्र-चालने उसपर आक्रमण करके उसे पराजित किया। यह पाल-नरेश लोक-कयाओं और लोक गीतोमें बहुत प्रसिद्ध हुआ। उसका उत्तराधिकारी नयपाल था । इसने बौद्ध भिक्षु धमपालको और फिर अत्तिसको धर्मेन्प्रचा- पार्च निकास नेता था किस्तुर्वि बहुई बाहर विश्वय देवको विश्वयं प्रोत्य प्रियम्ब इह रिना। उन्हारका विश्वयंत्र प्रात्यावः कुनारदावः एक्यूमण्यं वर्णात करणः प्रधा हुए। ने वर्षा काला करण है । इस्तुर्वे वर्णाने पार्व्यवया मणा शुरुष्ते तो वर्ष्यः। वर्णाने करणा केरणा सम्बद्धाः। वर्णात्यके व्यक्तवित्य सम्बन्धः

वैक्ते (यो बानवराया वेक्बंबी बंबापाय बीरवेनवी आज्ञानांत्रोंनी पा) इब बंधकी स्थालना की । अवका पूर्व हैक्क्क्रेस अनुस्त्रीत जानारें नार्तीः परका बाक्क मा । ११मी बतीये शब्द तक बेब-रावे शब-गरेबोर्ड कर्मा यो । अपूररान्त केम-मरेख विज्ञानेत स्वतन्त हजा, वालीके हान्ते वेदानम पद्भार क्षेत्रकर वसने वस्त्री प्रक्रिय बदावी और ४ वर्ष राज्य निमान पर वर्राव्यक्ते सम्भावर्गन पोक्यंग्या निय ना । अवन्ते क्षतानियाणे सम्बद्ध देन (११ ८-१९ हे) में बांताओं कुबीन प्रचानों कम रिया प्रशन्तार कामच्छेल अवन राजा हुता. यह बीतनोतिनको स्वतिका स्वयोग बीर रक्तपुराहे केळक करि बीमीका बामक्साता वा) वक्की धेरी क्लाना केन क्रितीयको ११९९ है। में मुहस्तर किन गरिववार विकरीने परासूर्य करके बंबाकार अधिकार कर किया । केल-बंबके रागे कट्ट केंद हैं। क्षमें क्रमार्थे बोहावर्ग बंगाको क्री-क्रमें शिरोहित हो नदा बीर स्मी वैष् क्षे बारा वजीवी स्थानमा हो गरी। प्रवासन राज्यान स्थानी माहिता थी प्रचार पहा । यंग देखका जानी वर्ज एव बतके बरिननमंत्रे मना । बेनमर्मना अभेकाम मी ११थी-१२वीं बती तथ बना पार लिये करने बनरान्य केवल नोतेनो नश्चिम-बारहोत देशों और आखरियोंने क्यों ही बंगाकों बैनी बीमित यह नने और यहते की माने। स्टिड बंब देखके विविध बाजीमें रिकामन कराण और मान भी प्राचीन बंदाओं बारकों (मैंगों) का स्वरण विकास है ।

बृहक्तर मारतः-विवासको अपरान्त वास्त्रीय समृत्री क्षेत्रले

देशको नैसर्गिक एव प्राकृतिक सोमाओसे बहुत अधिक सकुचित हो गयो हैं। अँगरेजो शासन-कालमें भारतने अपनी वैज्ञानिक सीमाएँ प्राप्त कर ली थी किन्तु उस समय भी अफग़ानिस्तान और क्रन्दहार भारतवर्षमें सम्मिल्ति नहीं थे, जब कि मध्यकालमें मुग्रलोके शासन-कालमें वे मारतीय साम्राज्यके ही अग थे। उसके भी वहुन पूर्व यदि मौर्य युगसे लेकर गुप्तकाल पूर्यन्तके भारतीय इतिहासपर दृष्टिपात किया जाये तो उस समय भी कपिशा (अफ़ग़ानिस्तान) और गाधार (क़न्दहार तथा ईरानका पूर्वीमाग) भारतके ही अंग थे। इतना ही नहीं, प्राचीन कालमें बलुचिस्तान. चीमान्तदेश, कश्मीर, तिब्बत, नैपाल, भूटान, आसाम, अराकान तो भारत-वर्षके लग समझे ही जाते थे, वर्मा (ब्रह्मदेश या सुवर्णभूमि) और लका (सिंहरु) भी मारतके ही अग ये। इनके अतिरिक्त मध्य एशियाके विभिन्न भागामें यदा काद्यगर, खोतान, यारकन्द आदिमें भारतीय राज्य एव उपनिवेश स्यापित हुए थे। उसी प्रकार सुदूर पूर्वमें वर्गा, मलाया, स्याम, हिन्द-चीन, जावा, बाली, बोर्निओ आदि प्रदेशी एव द्वीपोंमें भारतीय राज्य एव चपनिवेश स्यापित थे। भारतीयों-द्वारा अनेक प्रदेशोंके आदिम निवासियों-का पूर्णतया भारतीयकरण हो गया था। भारतीयराज्यो और उपनिवेशोंके अतिरिक्त चीन, ईरान, अरव, मिस्र, यूनान, रोम आदि प्राचीन सम्य देशोंमें भारतीय धर्म और सस्कृतिका प्रकाश अमृतपूर्व रूपमें फैला था। समस्त ससारके लिए भारतवर्ष धर्म, सस्कृति, विद्या और ज्ञानका प्रकाश स्तम्म था। दूर-दूर देशींसे सैकडो-हजारोकी सख्यामें विद्यार्थी भारतीय विद्विषयालयोंमें विद्या-प्राप्तिके लिए आते थे। अनेक विदेशों तोर्थयात्राके मिस आते ये और स्वय भारतसे अनिगनत विणक् व्यापारी, साहसी धीर विद्वान् और धर्मोपदेशक दूर-दूर विदेशोको जल और थलके मार्गोंसे जाते थे। इस प्रकार उन्होने भारतवर्षके न्यापार, न्यवसाय, धन समृद्धि, शनित और प्रभावको बढ़ाकर बृहत्तर भारतका निर्माण किया था ।

बृहत्तर भारतका यह निर्माण प्राग्ऐतिहासिक कालमें ही हो गया था।

मैरिक आयोंका प्रकार हुना । कह तका धनेक मानार्थ नारक्षीय यातियाँ बचा दान जुला यस बादि पूर्व पूर्वके प्रदेशों एवं द्वीपीने का बारी किन्तु बारतक्षी बन्दोने बनना बन्दरूप बनावे रखा । श्रीकाल कावमें नृहत्तर बारतक निर्माणका एवं जहातीर एवं यहके काकी क्रेकर स्थानक वर्णना च्या किन्तु इस प्रकार विकित बृहत्तर नारत विवेतीये स्थापित बारतीय राज्य और क्रानिरेश अम्बकाय करता विश्वयन रहे और इनके बान बारको एउनेटिक भाषारिक एवं बास्तर्रातक समान्य बराबर वर्ते यहे। ५६१-६३) बती है। पु. के बेकर पुरस्त्यानीके बाह्यपर पर्वन्त समानन केंद्र स्क्रम वर्षके तरीर्थ काक्ये वारतवर्वते ब्रह्माच क्षेत्र और बोळ है तीय वर्ष हो प्रकार से । देवका कीई बाव जीए देवकी जनदाका कोई जी सर्व वा वर्ष देखा न वा विकर्षे इन धीनों ही वर्षोंके कनुवाबी प्रतीन्त वंश्वामें व पाने वाले हैं । बारा किन स्वापारियों, बाताची बीटों, विदानों और वार्तेनदेशकोने क्रांरोलंड बृहात्य बारवना विगीय, निवाद हर्ग बंधान निजा धर्मी क्या दीवी ही क्योंके व्यक्ति क्यांचा के । अदस्य बारानपंत्रे बहार पड़ी-वड़ों की वारतका बनाव बीर प्रधाब दिन कार्ये को महीना नहीं-नहीं इस दोगी वसी वर्ग करकी बंदक्रिकों हा ही बराइनिक करने प्रशास वर्ग जनाय गहुँचा । यही कारण है कि बाज बी क्य सुरूर वर्षके विशिवास प्रवेचीं हीती तथा स्थम क्षत्रिकार विशिवास वानोंमें बच्च गुरूकर नाधाने अवदेवोना नगुजनात किया नाता है बक्ता प्राचीन मिक्त चीन ईंछन बुनान बरत बाल्डिक ब्राहित्वमें बार तीन जवापको कोन की वाली है हो वर्ड हो क्षेत्रसहद बल्लाविक नापानें हो ब्रह्मान चैत्र कोर बीत---एन तीनो ही वर्गी और क्यांडी बंदक्रियोंके विक्र व्यक्तिकर होते हैं । व्यक्ति क्लीव नहीं कि बहत्तर, नारहके निक्रिक भारतीय इतिहास १व दरि ***

किन्युवादीको विकायर कम्बता हो बन्यवृत्तिवाका सुनैर, अस्तुर एवं बाबुकी सम्बद्धानिको समा नीवाबादीको निकी सामग्राको प्रेरक की। किन्युवादी-सम्बद्धाने कन्य होनेपर सारसमें वैविक सम्बद्धाना स्वय और मागान अत्तर बोढ प्रमार हा सुर्याधिक लिन्द होना है किन्दु इनका कारण यही है कि यद्यपि वृदत्तर मारहक प्रारम्मिक निर्माणमें समय हो बोढाको अपला जैन और ग्रेन बरणवादि गुछ आग हो थे, किन्तु पालान्तरमें धामिक वावनींका समुचित और अनुदार बना देनेके कारण जनना प्रयाध इस दिशामें शिविल हो गया । गुण्यशल्वे उपरान्त जिन छह-धात सौ दर्यों मारतीय श्रेष, पैप्णय और जैनधर्मीम धर्मशास्त्रा, पूराणों आदिक कारण उपरोक्त धामिक प्रतिवाधोंसे समाजको जक्षण जा रहा था उसी कालमें यहाँ बोढिधर्म हुनवेगस पत्तनशोल था और बौढ लीग स्वदेशको छोड छाडकर बृहत्तर मारतके उक्त प्रदर्शोंमें जा-जाकर बस रहे थे। मध्यकालकं भारतीयोंन तो अपने देशक इन बाह्य अगोका सर्वधा भूला दिया। अत बौढिधर्मको हा बहाँ सबस प्रधानता हा गया तथा चीन, जापान आदि थेड देशोंसे हो उनका सम्यव रह गया।

मध्य एणियाकी प्ररात नदीकी घाटोक क्यारी भागमें एक मारतीय उपनिवेश २र्ग दाती ई०पू० में ही विद्यमान था। छगमग ५०० वर्ष बाद पोप ग्रेगरीने भयानक आफ्रमण करके इस उपनिवेशका ध्वस किया था । एक अनुभृतिमें अनुसार खोतानमें भाग्तीय उपनिवेश स्यापित करने का श्रेष अशोकके पुत्र और सम्प्रतिके पिता राजशुमार कृणालका है। सम्मवत्या मध्य एशियामें यही सर्वप्रथम भाग्नाय उपनिद्य या। ४थी शतो ई॰ के प्रारम्म तक कारागरसे लेकर चीनकी सीमा पर्यन्त समस्त पूर्वी तुर्किस्तानका पूर्णतया भारतीयकरण हो चुका था। उसक दिनगी भागमें घैरुदेश (काशगर), चोक्कुक (यारकाद), स्त्रोतस्न (स्योतान) और चरुन्द (गानधान) नामके भारतीय राज्य ये। उसरी नागमें नरुक, युचि, अग्नि-देश और काओचग नामके राज्य थे। इन सबमें उत्तरका पुरिव और दक्षिणका खातम्न ही सवाधिक महत्त्वपूर्ण एव भारतीय मम्कृतिके सर्वमहान् प्रसारकेट ये। दक्षिणी राज्यामें भारतीयोंकी सख्या अधिक यी। इन चपनिवैद्योंको प्रारम्भ करनेमें निजन्य साधुओं और बीद मिसुनाका ही

हाब बर्चीबर वा । बारवें निवलीकर रिहार विविध होता बरा और बौद्धोंचा बाराई एवं बासायमा बडडा नया । इन राज्योंको बोकवामा माइड की भारतर्शने संस्कृतका की प्रकार का नहीं आरखीय बिरिका ही प्रकेत क्षेत्रा का शब्द कारदीय भाग, वेकनुका और साकार-विकास जारताये जाने क्षते से । कुरारामाके काराना वीजवन ही नहांचा प्रवास वर्ष हो नया सीट प्रमुख समरोक्ति विद्वारोंने करमीर कारिके बौद्ध विद्यार्थी हो धर्मानक होने क्षते । क्षत्रारबीर मानक ऐसे एक बार्वनीरिक बीज विश्वनका नाम इस काक्ष्में अन्तरण प्रविश्व हथा । क्षेत्रापका बोनती निहार कन्नका प्रमुख नैन्द्र वा । इव राज्योंके विशासी वर्ष निवानीकॉर्ने ज्यासीय सामर्वेश ज्योतिश बाहित्य बार्ड विवयोंके कुन परम-समर्थ पहुर्त थे। क्षोदासके मियट प्रसा-बद तम्ब रिकार एक बत्तका बत्तव वर्ग विवास अन्त न्य । ब्राह्मल, इरले-बार आहि बीनी वानियोंने इस विद्यार अन्य बनके रोहि-रिशामी, बत्तवरी बारिया बन्दर वर्षत किया है । में पान बीर प्रयम श्रीहवर्ग दर्शे बडी हैं तक सबसे क्याने विकासन में । एता बोच भीर एउन्हेंप्रके स्थी-नक्त मी वर्डक में, ने मिलू-फिलूमी भी हो जाते में । ने बोप भारदीय हंपीड, वित्र वर्त स्थापन वारि क्याओंके हेवी और हचनदाना ही थे। बीड वर्षकी प्रचलता और प्रमुख्या होते हुए की कीवी वर्षकरोंके बस्तानांकि बंध शासरें इन अरेडोंने निकल जैन बायुबीका बतेतार को पहा बुनिय होता है। दूस बेर मृतिशी तथा सन्द जैन सरसेद को यस-तद दाउँ करो है। कारनके मची पालगानका नगर वयर इसा प्रतीय होता है। मनेक पुरावरण्यीका गत है कि मैनकम की बाचीनकालयें इस प्रदेशीयें बरस्य गईवा वा । क्रिका वर्षिका (ब्रह्मानिस्ताव) वान्तर (ब्रह्मिका मीर क्रमकार), रेटान करन जनगणिया मानिवें मैनकांके क्रियो-य-कियी कार्ये निजी-कर्नकारी बारत रहीयतेके विश्व पाने बादी हैं। यीनरेखके बाबो बार्वि प्राचीन वर्गीनर क्षत्रा क्लारकामीच चीत्र वाहित्यवे ज्येक बैनतुष्क ब्रीय निक्ते हैं। वैशांकी क्रोधे-पीओ परितर्कों की इन देखींने भारतीय प्रविद्वासः एक दक्ति 999

मध्यकाल तक रही प्रतीत होती हैं।

सिहलद्वीप और रत्नद्वीप-सिहलद्वीप या छशामें विद्यापर-वयको अस जातिका निवास था । भरत चक्रवर्तीने इस द्वीपको विजय करके वहाँ जैनवर्म और श्रमण संस्कृतिका प्रयेश किया वताया जाता है। एक अनुष्वतिके अनुसार भारतके पूर्वी भागस वरराज नामक असुर सरदार ऋक्ष, यक्ष, नाग आदि विद्याचर जातियोंके व्यक्तियोका लेकर लका गया था और उसने उस द्वीपको वसाया था। रामायण कालमें ऋक्षवशी रावण लकाका महापराक्रमी नरेख या। जैन अनुसृतिके अनु-सार रावण और उसका बदा जैनधर्मी था। महाभारत कालमे श्रीष्ट्रण सिहल जाकर वहाँके राजा श्लक्षणरोमकी कन्या लदमणाको हर लाये थे और च होंने उसे अपनी पत्नी बनाया या। पार्खनायक तीर्थमें करकण्डू-नरेशने भी मिहलकी यात्रा की थी । महावीरपे समयमे उडीसाके सिहपुरसे विजय नामक एक राजकुमार लका पहुँचा या और वहाँ उसने एक नये राजवशकी स्थापना की थी। बौद्धग्रन्थ महावंश से पता चलता है कि ४यो धती ई० प० में इसी वंशमें उत्पान सिहल-नरेश पाण्डुकामयने अपनी राजधानी अनुराधापुरमें एक विशाल जैन विहार और भव्य जैन मन्दिर बनवाया था। सम्राट् अशोकके समयमें लगभग २३६ ई॰ पू॰ से लकामें बौद्धधर्मका प्रचार प्रारम्भ हुआ और प्रधम शती ई॰ पृ॰ से लका बौद्धार्मका एक प्रमुख गद हो गयी। इसका क्षेय लकाके राजा बट्टगामिनीको है जिसने सन् ३८ ई० पू० में उपरोक्त जैन मन्दिरों एव विहारोको, जो उसके पूचवर्ती २१ रामाओंके राज्यकालमें अक्षुण्ण बने रहे थे, नष्ट करवाकर चनके स्थानमें बोद्ध मन्दिर और विहार वनवाये । उसीके समयमें सिंहलमें बौद्ध त्रिपिटकके सकलन एव लिपिबद्ध करनेका सर्वप्रथम प्रयत्न किया गया । सिंहल द्वीपका भारतीय-करण इस प्रकार अति प्राचीन कालमें ही चुका था और बादमें भी निरन्तर भारसयासी वहाँ जा-जाकर बसते रहे। जैन पुराणो एव कथा- प्रमीते विद्या होग्लें जनके विश्ववादी प्रश्तीनिक हवा पर दिग्यों में कि कारापिकों करायां कि या मोन में कि विद्यान के विश्ववाद में कि प्रमान के कारापिकों करायां के पार्ट करायां मार्टिक मोन कर में हैं।

क्षेत्र नहीं बार्टों में मो मैन चर्न में मीरियोध्य मित्रक दिवाद्यों में या पर नाके पर कि विद्या मित्रक मित्रक मित्रक में मार्टिक मित्रक में प्राप्त में मार्टिक पर कि विद्या में कि विद्यान के सर्पार्थन परिवे कि विद्यान के स्वर्ण मार्टिक मित्रक मार्टिक मित्रक मार्टिक मित्रक मार्टिक मित्रक मार्टिक मित्रक मार्टिक मित्रक मित्र

प्रधान नगर था। स्था जानेक करायेके वाल पार्थाल में। इस देखें हैंक्सों कुने आरमके बावाब श्रीवार्तना लगार हुए। तीर रहेगान कर में बारी कड़ना इस्तान में बार था। है। लिख्न वहां क्या पार्थ्यक स्थान रिलेक्स भी सामान्यन नगा था। और बीडी-मीडी बेन विस्ता थी। वसी पढ़ी देखा होती की है। के युक्त साम-निवारण हिस्सा है था। है। इसी

यमी—वर्म वा बहारेचचा वो प्राचीन कावर्मे सुरमन्ति नदकता नी, भारतीनकाच मी बांति वाचीन कानव हो चुचा वा । शीखेन (होन)हरणी

पार्यान्त वर्षण हर वेषणे जारायाँ तिवा किया था। सुनुष्ट पूर्णिक स्वयाध (शिरानार, न्याम (शायक्ष)) द्वाच चौनके क्षमीरेवरा (व्याम्त) पर्या (क्षमा) त्या चीरिकार (नुमार्ग) वेषणे वर्ष विद्यार्था (वर्षणी मा वस्ता) तुम्पतीन, नारिकेमी, एक्षमीर, कृतियो चार्चित कोची एवं श्रीतीने वाच क्षमार्थिक सार्यान्या व्याम्यक्ष क्षमण मार्गेल है। क्षमाराज्य स्वामार्थान्य प्राम्ये विद्यार्थीने नार, मूण स्व मार्गित कोचीने कोच मार्ग्यने नेतिक व्यानित स्वाप्त कर्या भारतवाधियोसे भी उनका सम्पर्क बना रहा। कालान्तरमें व्यापारके उद्देश्यसे भारतीय वणिक् जिनमें-से अनेक जैन भी थे इन देशो एव द्वीपीके साय व्यापार करते थे और अपने जलपोतोंमें वहाँ जाते-आते थे। इस वातके अनक **चल्ठेख जैन-साहित्यमें पाये जाते हैं**। कुछ भारतीय साहसी वीर अपनी भाग्य परीक्षाके लिए भी वहाँ जा पहुँ बते थे, इनमें राजवंशी या सामन्तवशोंके क्षत्रिय ही अधिक होते थे। कभी-कभी कोई ब्राह्मण-पण्डित या बौद्धमिल् अयवा जैन ब्रह्मचारी, श्रावक बादि मो वहाँ जा पहुँचते थे और अपने-अपने वर्म और संस्कृतिका वहाँ जाने-अनजाने प्रसार करते थे। सन् ईसवीके प्रारम्भके उपरात्त हो हम इन देशा एव द्वीपोंम नये-नये सुज्यमस्यित राज्य स्थापित होते पाते हैं और उन राजवशोके नरेशोने जो अनुपम कलापुण मवन, देवमन्दिर, नगर आदि वनाये, अपनी स्वयकी तथा देवी देवताओंकी मृत्तियाँ निर्माण करायों, शिलालेख अकित कराये-उन सबके प्राप्त अवशेषांसे और इन प्रदेशोंमें प्रचलित अनुश्रुतियोसे वृहत्तर भारतके इन महत्त्वपूर्ण अगोके इतिहासका बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इस वातमें तनिक भी मन्देह नहीं है कि इन प्रदेशोंका पूर्णतया भारतीय-करण हो गया था। व्यक्तियोंके नाम व उपाधियाँ, नगरों एव पर्वो आदि-के नाम, वेष-भूषा, बाचार-विचार, भाषा, लिपि, वर्म और सस्कार सव भारतीय थे। भारतीय विद्याओं और साहित्यका वहाँ पठन पाठन होता था। भारतीय पौराणिक अनुश्रुतियाँ ही उन देशोंकी पौराणिक अनुश्रुतियाँ थीं। वहाँको कला भारतीय कलाते ही प्रभावित थो। अस्नु, भारतके साथ इन देशोका स्पष्ट राजनैतिक सम्बन्व कोई न रहते हुए भी सनका चसके साम सांस्कृतिक एवं त्र्यापारिक सम्बन्य अवाध बना रहा। इन देशों में जो घर्म और सस्कृति प्रचलित हुई वर्र शैव, चैष्णव, जैन और बौद्ध चारोंका ही एक अद्भूत मिश्रण थो । कालान्तरमें वहाँ सर्वत्र वौद-षर्मको प्रधानता हो गयी और अन्वेषकोंने इन स्थानोंके पुरातस्य एव इतिहासका जो भी अध्ययन किया है वह बौद्ध अथवा हिन्दू दृष्टियोसे हो क्यि है बैन्द्रिके मी उन्त बावनीय मध्यान हो बब्ध है इन्दर बचीतक दिनीका स्थान नहीं नहा है । दिन्तु कुछ ऐसे राष्ट्र बंदेन मिन्नी है जो बक्त देखींने जैन बंग्नु "उक्ते प्रशासके मुख्य है---वंश कान्यु व अपने बारिके बार्चारक बारतीय राज्यकाके जलमें काम-नाची कामानीका पान्य बाना, बास्त्रको अस्तीय बंहरूपिकै संस्थातक वीधार्मीका बैन-सर्दित्य इतिशाम क्षेत्र सनुवर्णने संगीके काले सारेण शामा मानव सम्बद्ध सारवर्षे बारा बची दरत वृधी देवाले लक्ष-आवदे बचारका समाप तथा रामुर्शन मारिका को महाब कावा कावा केव या बृद्धके किए दिन धाराच्य प्रचलन समेक मुलियोंका श्रीचंतर अनिकाँके साथ विचलत समुद्रम प्रतिप्त क्रिक्रमेवीवे प्रस्तान श्रम व अर्थवर्शे वर्ध परस्त्रवकारण वर्धा वैनवर्णी-का उत्केल तथा जैन आध्यारकत्र विवासी वृत्तं चलुरनिया प्रयोग, रामाययं बीर बहाबारमके बचावबाँचे क्रम देवींने प्रपत्नि वर्णाया वरामध-की बरेजा बैन-नरररराके कवानकीके काव व्यक्ति निवट बाह्यन - एक-मीतिने प्राप. नन्त्वति अधिरका प्रयाप होते हुए की रिपर्वेके विधेषा-विकार्यने बेन नीर्निका प्रयाप - वर्षात्म्य - ब्रह्मकीर - निर्वाय वर्षकी प्रांति कार्तिक नामके होता बीतानकी बलावका बनाएंग्राचक बनाया बला बारि । यन देशोंने बहुमान्य तीन बाचीन वचीने एक बीदाविश्च के दूसरे वैदानमें का नावान दिवान में और डीनरे नन्तो का अस्थित में को को निहल, व्यवहार-पुश्चन वर्ष चालमें तथा नवींपर की मालीन होते में ह बद्ध शोषध वर्ष बागावाया निर्मेश्य ही ना । इस प्रचार महत्त्वर माध्यके हिंचीन, विकास एवं सरक्षणने बाहाओं और बीहाँक बाल-बाच प्राचीन ध्यरतके वैनोने को बरबक योगका दिया प्रतीत होता है।

अध्याय ७

दिचण मारत [१]

मारतवर्ष प्राचीन कालंधे ही उत्तरापय और दक्षिणाग्य नामक दो विभागों विभयत रहता आया है। उत्तरमें विच्यपर्वतमालाको सतपुढा, महादेव एव मेकल नामक पहाछियों छया नर्मदा और महानदी नामक निर्देश एव मेकल नामक पहाछियों छया नर्मदा और महानदी नामक निर्देश डारा उत्तरापथसे विभक्त एव दक्षिणमें तीन और भारतीय महासागरसे वेष्टित प्रायद्वीपाकार पठार दक्षिणापय कहनाता है। प्राग्-ऐतिहासिक कालंभे ही मध्यकाल पर्यन्त भारतका यह विद्याल भू-भाग भौगोलिक ही नहीं, राजनैतिक एव कुछ अंशोमें सांस्कृतिक दृष्टिसे भी उत्तर मारतसे प्राय पृथक् रहता रहा। विदर्भ, महाराष्ट्र, कोंकण, आप्न, कर्णाटक, तिमल, तेलुगु और मलयालम दक्षिणापयके प्रमुख भाग रहे हैं।

वैदिक वार्यों की दृष्टिमं यह समस्त मू-माग ईमवी सन्के प्रारम्मके मी बाद तक एक अनार्य अवैदिक देश रहा है जहाँ असुर एवं राक्षस आदिकां का निवास था। किन्तु जैन अनुभुतिके अनुसार मानवी सम्यताके प्रारम्मसे ही इस प्रदेशमें सम्य विद्याधरों की नाग, ऋस, बानर, किन्नर आदि जातियों का निवास रहा है जो कि ध्रमण सस्कृतिको उपासक थीं। ब्राह्मणीय अनुश्रुतिके अनुमार अगस्त्य सवप्रथम आर्य ऋषि थे जो विष्याधलको पार करके दक्षिण मारतमें पहुँचे थे, परसुराम भी वहाँ गये कहे जाते हैं। अपने बनवास-काल्में रामचन्द्र उधर गये थे और वानरों को सहायसासे लगाने पराससराज रावणका अन्त करने में सफल हुए थे। इससे प्रतीत होता है कि रामायण-काल्के लगभग वैदिक आयों के

री-एक होटे होने क्वांश्वेश वांतवानको व्यक्ति हो नवे के वित्तु इन बार्ववे समुद्रवरीये जान्यम तथ कोई विदेश प्रवर्तन मही हुई और बाँधपारा समितार अर्थेटक क्षेत्र अगार्थ ही बना गार । पुनशे और जैन सनुवनिषे करना राजावल-पावके जी बहुत वृदेने बावदेशके बान्दों और राजान नवरे रिहासरीये जनाव शनके पहेंचे । प्रवस्त केवर जावशेषी विश्वपारंके व्हिन्दले दिवन वृक्ति विश्वति बहुदि दिहुत्वर-वरेशीने बान विशाह गर्थ | या नावान्य की निर्देश के बीच बनवें बन्तरश्चकों बावयों के बाव हो-बाब देशकाँका एकार विकास का असस बाजानीने अपनी रिनियारने र्राज्यके की सम्बन्ध रहीको विजय किया का । बरहरे छोटे गाँ बार्डिकरो शहरपुरका शास्त्र शिवा या को एक क्युपुनिके बहुबार बर्जियाँ ही भिन्न का कारणंकती विकास सर्वितीश निर्माण और कारी बच्चम्द्र बाजवाता रही जारवने परित्य जारतने प्रत्ये प्रवित्य प्रश्ने बामी है। शामानव-राजने बनोम्माके सूर्वनंती पदारच राज न्यान्य बार्वि बोलकावर्थके वस्त्रेजन अनुवान और वार्ति नृतीय क्य नीच शाहि सामार्गनी विकास तथा संयाके सामार्गनी राजन केल्यार आहि बन ही बेंग मानि क्यानक वसाने को है । वे विशायर लोग वैद्यापिक बर्धिकरारी बीकिन विदानों ६वे बचानों तथा क्य और बीकिन बर्दणार्ने ब्रह्मपुरुषे शामधी अवशा मैजक आशीत नहीं अधिक बहेन्यहे में निम्त्र बान्यारिक्य बर्मात वर्ग, राज्य और विशासमें क्यूरेने बानसीके पुष बोर्चनरोके बन्तुन अपना शराक शुद्धावा वा और काके विकादने मन्दामी बने थे । उस्त विद्यावरोंके संदर्शीके लिए ही जाननिक एति-क्षमणार प्रशिष्ठ कारका अनेल करते हैं और प्रतिष्ठ क्रोनीको अनार्य मीर क्वीदक ही नहीं जारतवर्षके झानार्व और आन्दीरक नियानी सानदी

है और इब बातची बस्थानमानो जी जीनार करते हैं कि इतिह बारि

तीर्यंतर दिएनेमिने दिलिणायमें स्वधमंका विशेष प्रवार किया या। उनके भवत हिन्तनापुरके कुठवधी पचपाण्डव अन्ततः राज्यका परित्याण करके दिलिणकी आर चले गये थे और वहाँ जैन मुनियोंके स्पर्में उन्होंने दुईर तपस्या की थो। उनी समयसे सुदूर दिलिक पाण्डय देन, पच-पाण्डवमनय, मदुरा आदि स्थान प्रसिद्ध हुए। पाद्यत्नायके तीर्भमें प्रसिद्ध जिनमक्त करकण्डु दिलिणायके ही एक प्रमुख करेन थे। तेरापुरको गुफाओं प्राप्त पुरातात्विक अवदीयोंसे करकण्डु चरित्रकी वयाका समर्थन होता है जिनके कारण करवण्डुको एक ऐतिहासिक व्यक्ति माना जाने लगा है। महावीरने भी दिलिण दिले धर्म प्रमार्थ पिहार किया या और दिलिणायके हेमांगद देशका जीव घर नरेग उनका मक्त हुआ या। इभी प्रकार यशोधर, नागकुमार आदि भी प्रसिद्ध जैनवर्म भक्त दिलिणो राजपुरुष थे। इन सत्युर्वोकी चरित्रगायाओंका तिमल, कप्तड, सन्तत, प्राष्ट्रत, अपन्नत, अपन्नत, आहत, अपन्नत आदि भाषाओंमें दिलिणायमें प्राचीन कालते ही प्रचार रहता आया है।

महावीरकी विष्य परम्त्रामें उनके प्रधान विष्य गौवम गणधरके आठवें पट्टचर, अन्तिम खुवकेंबिल भद्रवाहूं प्रयम थे। अपने समयमें वहीं जैनसके अधिपति थे। उत्तरापयमें हादनवर्षीय भीपण दुमिस पड़नेकी बात उन्होंने अपने निमित्तकानसे दुमिसके पूब हो जान ली यो। अव अपने बारह हुआर शिष्य साधुओंने साय उज्जैनी एव गिरिनगर होते हुए उन्होंने ई० पू० ३६६ में दक्षिण देशको बिहार किया और कर्णाटक देशके कटवप्र नामक पर्वसपर म० स० १६२ (ई० पू० ३६५) में उन्होंने शरीर त्याग किया था। इसके लगभग ५० वर्ष पूर्व ही मगध-नरेश नन्दिवर्षनने दक्षिणदेशके इस माग (नागरखण्ड) को विजय करके मगध साम्राज्यमें मिला लिया था। यद्रबाहुके इतने वहें मधको लेकर वहीं जानसे यह वात स्वत प्रमाणित है कि उनत प्रदेशमें जैनकमंकी प्रवृत्ति और जैनोंका निवास उसके पूर्वसे हो था। यदि ऐसा न होता तो इतने जैनमुनि एक साथ उस और

प्रसास म कार्य । इस मुविश्वे क्रीनिवरणे क्षारः क्यो बासूरिक शिव्य सारते गर्ने हैं। बारवाहुरी जुन्युके बाराल्य संपत्ते क्यो रासारणे सामा क्षारत नेत्र बार्यावश औं वर्गित धांत्रमारके क्षारा चारति केर्या स्माप्त स्पेरता निवाद किया । विद्यारमात्र मंदिक क्षार्थिक कर्या स्माप्त सारवाहुके सामानिकारी हुए। कारत्मार सर्वकारी चरावृत्त्र और्यते में मेंदरी कार्यकारा मीं पूर्तिकारी बात्सानिके वारामा औ एवं मोर्च मैदरीके कार्य कार्य कार्या स्माप्त केल क्षारिक कार्याल में मैदरीके कार्यक कार्य कार्याल केल क्षारिक कार्यक मेंद्र प्रतिक कार्यक्र में मैदरीके कार्यकार कर्याल क्षारी कार्यकार क्षार कार्यक कार्यक क्षारीक केल्य (बारवर्गित संस्तार कर्याल क्षार्थिक क्षार कार्यक क्षार्थ क्षार्थ कार्यक क्षार्थ कार्यक्र करियाल कर्युक्त कार्यक क्षार्थ क्षार्थ क्षार्थ कर्यक क्षार्थ क्षार्थ क्षार्थ कर्याल कर्युक्त क्षार्थ क्षार्थ क्षार्थ कर्याल कर्युक्त क्षार्थ क्षार्थ क्षार्थ क्षार्थ कर्याल कर्युक्त क्षार्थ क्षार्थ क्षार्थ क्षार्थ क्षार्थ क्षार्थ क्षार्थ कर्याल कर्युक्त क्षार्थ क्षार्

सारानु अपने वा नार्यात्वार कार्यात्वार कुम्मे पूर्व सार्या के अपने कार्य कार्यात्वार वार्यात्वार कुमेश कर्मन्न स्मान्य का निम्नु कमेले स्वायत्व कार्यात्वार केरिन्दा । निम्मू सार्यात्वार स्मान्य साम् सार्यात्वार स्मान्य कार्यात्वार कार्यात्वार कार्यात्वार कार्यात्वार कार्यात्वार कार्यात्वा कार्याच्या कार्यात्वा कार्या कार्यात्वा कार्यात्वा कार्यात्वा कार्यावा कार्या कार्या कार्या कार्या कार्याव्या कार्या कार्याव्या कार्या कार्

५ बारामें १८१०-५१ है. व. में हुए, जनके बनानें बधी पूर्वेश बान

एपदेश रह गया। भद्रवाहुको पश्म्यसके ये मुनि निम्नय दिगम्बर घै कोर अपने मधको मूलगंब सहसे थे। महानन्दिन, चाहमूच्य मीये, बिन्द-सार और बदान में साम्राज्यमें दिलण भारतना बहुत-सा भाग सम्मितिय या। इन नरेशोने राजनैतिक या अप कारणोंसे दक्षिण यो पात्राएँ भो यी प्रतीत होता है। चन्द्रगुष्तमे विषयमें ता यह अनुश्रुति हैं ही कि उसने अपने आम्नावगृह महवाहुके समाघि-स्थान—श्रवणवेलगालमें जाकर तपस्या को यो और साचायके रूपमें जैनसपना तितरा भी किया था। अशोक्के शिला-छेल भी कर्णाटक देशस्य मस्की खादि स्यानेमि निले हैं। क्षशास्त्र समयमें ही कुछ बौद्ध प्रचारक दक्षिण देशों में सर्व प्रयम पहेंचे और तबसे बहु बौद्धधर्मका भी धोरे-घोरे प्रचार होने लगा । इसी समयके लगभग दक्षिणमें धीषधर्मका भा उदय हुआ प्रतीत होता है। सम्राट खारबैलका दक्षिणय अनक राज्यांन राजनीतिक सम्बन्ध या। उसने दक्षिणापयमा भी दिश्वजय की यी और मूपिक, राष्ट्रिक, भोजक सादि राज्योंको अपने अधीन किया था । पैठनके सातयाहन शातकर्णीको मी उसने हराया या और पाण्डच देशका राजा उसका नित्र या । सारवेलके गमयस ही दक्षिण भारतका आधुनिक राजनैतिक इतिहास वस्तुत प्रारम्म हीता है और उसी समयसे उस दशका साहित्यक, धार्मिक एवं सास्कृतिक इतिहास भी । इस इतिहासके पारम्भमें हम यही पाते हैं कि सम्पर्ण दक्षिण भारतको प्रधान सस्पृति श्रमण संस्कृति थी। तमिल भाषाका सर्व-प्राचीन साहित्य सगम साहित्य है, जिसके प्राथमिक सुज्ज अधिकतर जैन विद्वान् थे। उसीके साथ साम, प्रथम दासी ई० पू० से ही, मधराके सरस्वती सान्दोलनसे प्रभावित होकर दक्षिणवे ही फैनाचार्यीने प्राकृत भाषामें भी आगिषक, आब्यातिमक, धार्मिक एयं नैतिक साहित्यका सुजन करना प्रारम्भ कर दिया था। सुदूर दक्षिणके विभिन्त भागोंने नित्तन-वासल (सिद्धोंका स्थान) आदि स्थानीमें २री-३री क्षती ई० पू० के ब्राह्मी लेखोंसे युक्त ब्राचीन जैन गुफाएँ जैन घमके उपरोक्त प्रसार एव प्रमासकी पूरक 🗗 🗓

समाद भारतेशके बरधन्त विकासकी दिलाई बातवाहणीय बाहरे हमा मिनका पर्रम पूर्व अध्यक्षमा विद्या का पूरा है। पूत्र से मेरी हैं है अन्त तक बातव्यान करिन कर्वोत्तरे सहै । इन बैचमें श्रीवन चान्तके विभेवतर बैन इटिहानमें को बहुत्वपूर्व बटनाई हो बारे मीं। है पू १५-१४ में बासाये जनवाड़ दिसीय शास्त्रांत्रके नर जोटीने पूर्व जाता हमा देव बंदी दर्व पूर्वीक एक वैद्याला जनवानु बहातीरकी विध्य-नरमधार्थे रक्षे पहुरर के और राजियान्य मुक्तबके बच्चिति के । बनके बनय बक करल्यी जल्पीकाके बाववृत्त कैंस बुनिवॉर्ने खाहिरा बयलाओं स्पृति शाराय नहीं हुई को बीर व कारवींका लंबकन ही हुना था। इन जानावेंदें क्षेत्रपत काने दिव्योंको बच्च बारोंके किए कुट वे थी। क्षेत्र सृत्यिम क्रोद्राचान (१४ ई. वृ=नद है.) वार्य वर्ष-बचारत में । वंतान तीर किनकी और मी बन्हींने वर्ण-क्नाएवं विद्वार किया या। बारोवर (बाइड्रें) बरायके क्कानी बहुतानीय बैच बनदा हचार करानी वर्षे क्रिये राज्यात रिमो । एसी बाधानी रार्षशरीची बाहर्मीयमी निर्माण करनेकी की अनुवरित के वी जिनके कारण कान्यानश्य बारक होनेका के काक्सपार्थ मोद्रापार्थिते ही बन्त बंदका जुक प्रयास बन्दा। इन्हेंकि बन्न कार्यन दक्षित माराके समीरक देवने कुल्हल्हावार्थ नामके बामार्थ में । स्टब्स्य क्रिप्रेनची ने सरवा पुर बान्ते ने विश्तु पट्ट परानधने इतका सामान् क्रमन्त्र नहीं था। लगुराके मानार्त पुनारतन्त्रिको थी। सितका बसरवार क्षम्बकारा स्वामी कुमार या कुल्यकुक स्वावद क्षांभर वृद्ध मानति है। सम्बद क्षेत्र इन रचानी नुनारने ही कार्तिकेयानतेका नामक बाहरा बन्यकी रचना को थे। तन् २१ है। तक इन ब्रास्तर्यका बन्तिक धावा मात्रा है। मान्यर्य कुन्यकुन्तरी कर्मुर्व बारतर्गे जनव किया और जब बनार किया क्यूंसि हो परमाध्यमके बाबारकर ८४ पाइड वर्ग्योदी स्वतन्त्र रक्ता की । इनके बन्द असूत्र माधाने हैं बोट बश्यान-सवान है। बोद मेंन व दिराकी वर्ष

प्राचीन ज्ञात लिखित कृतियोमें-से हैं । तिमिल भाषाके सगम साहित्यके भी ये प्राथमिक प्रेरकोमें-से थे। तमिल देशमें ये सम्मवतया एलावार्यके नामसे प्रसिद्ध थे और तिरुवल्लुवर-द्वारा सकलित समिल भाषाके विश्वविख्यात नैतिक प्रन्य कूरल काव्यके मूल प्रणेता थे। ये कर्णाटक देशके कोण्डक्ण्ड नामक स्थानके मूल निवासी थे। गुण्टकल रेलने स्टेशनसे ४-५ मोलकी दूरीपर स्थित इस नामका गाँव अभीतक विद्यमान है और उसके निकटकी पहाडियोपर बनी प्राचीन जैन-गुफाओंमें इन्होंने तपस्या की थी, ऐसा अनु-मान किया जाता है। नन्दी पर्वतको गुफाओमें इन आवार्यका निवास रहा प्रतीत होता है। इन आधार्यका मुनि-जीवन सन् ८६० पू० से ४४ ई० पर्यन्त ५२ वर्ष रहा । दिगम्बर आम्नायमें कुन्दकुन्दका नाम भगवान महा-वीर और गौतम गणघरके साथ-साथ लिया जाता है। रामकृष्ण गौविन्द भण्डारकर, पीटर्सन अ।दि अनेक प्राच्यविदोके मतसे ये आचार्य अत्यन्त प्राचीन एव सर्व महान् जैनाचार्योमं प्रमुख हैं। अपनी साहित्यिक कृतियो-द्वारा इन्होंने सरस्वती आन्दोलनको सफल किया। इन्होंके समकालोन आरातीय यति शिवार्यने 'भगवती-आराधना' नामक महान् प्रन्यकी रचना की, विमलसूरिने सन् ३ ई० में प्राकृत परमचरित (जैन रामायण) की रचना की, सन् २५ ई० के छगमग आचार्य गुगधरने कसायपाहड नामक आगम ग्रन्थका चढार, सकलन एवं लिपि-चढीकरण किया, इसी समय (४०-७५ ई०) में गिरिनगरकी च द्रगुफामें आचार्य घरसेन निवास करते थे जिन्हें महाकर्मप्रकृतिपाहुड नामक आगमका पूण ज्ञान था। इस समय मूनसधके विधियत् अधिपति एव पट्टघर आचार्य अर्हद्दलि अपरनाम गुप्ति-गुप्त (३८-६६ ई०) थे और शहराववशी महाराज नहपान उज्जैन एव सुराष्ट्रका अधिपति या तथा गौतमीपुत्र शातकर्णी पैठनका सातवाहन नरें था। ६५ ई० के छगमग युद्धमें गौतमीपुत्र शातकणींसे पराजित होकर नहवान जैन मुनि हो गये ये और भूतविक नामसे प्रसिद्ध हुए । सन् ६६ ई० के लगभग सघनायक अर्हद्वलिने वेण्या नदीके सटपर

शिवा महिवानवरी (वांबात कोन्द्रान्य साग्रहा महिकानवर ?) वे इक रियास मुनि-गानेकन किया और मुश्यिक किए मुनवीपनी सीन be be fer un mit unfuft femfine er feie i eit grauf-वै बाजार्व वरतवदे बायन्त्रकार जानार्व दुन्तरना और जुन्हरिको सबके बाम बिरिक्टर मेजा बदा और बर्ग्यूनि इन दिश्ह्यूवर्षी श्री जाएन आए बार्चे बाजान या प्रदान दिना और क्षेत्र निरिश्य करवेदा आहेत दिया। इस प्रशास करवार ५ ई में उच्छ दोनों बृहतीनाय पट्यास्त्रम विकालके कामें महावीर-द्वारा जावेदिक सामग्रीके वह सहस्वपूर्व बंधरा भी बद्वार हुए बंदनन हो बना । ७३ ई में बानार्थ परहेक्ते तरह मीनिशहर नामक मन्त्रधासमधी रचना की थी। हुन्यपुत्रके दिला संध-स्थापिते , प्रस्मा 🐔) बंश्वान भाषाते जुन वैशीचे तल्यानर्शियनपूर मानक महालु इस दर्शका बालारी रचना थी । बॉबाय देवाल जुनवीयरे मदबाँको इन प्रवासवाँन किन्ने वनचन्त्रे सना बालवा और नवस्तरे विराय बान प्रदेशीके निर्देश्य मुपत्रीशा ती पूर्व समर्थन और बदुधीय का बैनबंबको बराके मिए को करनवानीनै दिवतत कर दिया । इस ७९-८१ 🕇 में स्वृत्तवप्रको थियन-गरमाधके मानवी बालुबॉने को बद बर्जान दर्व क्यान्त्रें ने स्वतं ने वरेतानार क्षत्रधानका कर केपर काले आहती मुक्तीक है पुरुष्ट् कर जिन्हा और पैप लंबको बीधिटबन्छ, वर्षेक्क ब्राह्यहर का तिनवर आनाव नाम दिया । ७८ ई. में श्री गरियन आरावेर सहयहा वंबरी स्थारण हो पूरी यो और महाबचय पहरूपे अर्थापरर अविधार करके बच-बरनका प्रदर्शन कर किया था । अभी बननके अलक्षण प्रतिक्र क्तवर्रशा केलन मृत्रहान धाकिनाहन वर बालबाहन वंदावें एक प्रक्रिय मरेच हुआ। ९६ ई. में चीचनच नावक सैनावार्यने को कि बाएडीर बायार्ने विवार्वकी किञ्च-वरान्यार्जनी के बारतीय वेबकी स्थापना सी । दिवाने बारि बावार्व दिवागर लीडागर बंबवेरका निवारक करनेके किन प्रसारपीय पूरे में और सम्बक्तिके नवने में। प्रथल क्लिन होनेतर

चनके अनुयायियोने नया सम्प्रदाय स्थापित कर छिया। सन् १०० ई० के लगभग आचार्य कुन्दकोत्तिने सकलित आगमापर सर्व-प्रयम टीका लिखी। सम्भवतया दनके विद्यागुरु स्वयं आचार्य कुन्दकुन्द थे किन्तु, दोसागुरु माय-निन्दि पट्टवर जिनवन्द्र थे। इन कुन्दकोत्तिका ही अपरनाम पदानिन्द रहा प्रतीन होता है और ये ही नि दसधको पट्टाविटमें जिनचन्द्रण पदचात् चिल्लिखत हुए है। उपरोक्त विवरण तथा उसमे उल्लिखत जैनगुरुआंके इतिहामसे यह स्पष्ट है कि ई० सन् के आगे-पीछेकी दो-सीन द्यातिव्योमें किंगसे गुजरास-सुराष्ट्र पयन्त और मध्य भारतसे लंका पयन्त सर्वय जैनधम और जैनगुरुओका प्रसार या। गिरिनगर, अकुलेश्वर (भडीच), महिमानगरी, वेण्यातट, बनवास देश, द्वविड देश, कर्णाटक आदि विभिन्न भौगोलिक नाम उस सम्बच्में वार-वार आते हैं।

इन शताब्दियामें दक्षिणापयम सवमहान् शक्ति आन्त्र सातवाहनौकी थी, परिचमी मागमें चष्टनवंशी शक क्षत्रपाका अभ्युदय था और सुदूर दक्षिणमे चोल, चेर, पाण्डच, सत्यपुत्र, केरल आदि छोटे छोटे आदिम राज्य थे। तमिल-भाषाका प्रयम सगम (सघ) इसी कालमें हुआ और उसके प्रेरक द्रविडदेशके कुन्दकुन्द आदि जैनगुरु ही रहे प्रतीत होते हैं। ये तमिलराज्य समृद्ध और वान्तिपूर्ण थे, रोम आदि सुदूर देशोंने साथ भी उनका समुद्री व्यापार बढ़ा चढ़ा था। प्रथम शती ई० के उत्तरार्धमें एक पाण्डच नरेशने रोमन सम्राट् मांगस्टसके दरबारमें राजदूत मेजा था। उसी कालमें चोल-राज्यमें पाण्डुचेरीके निकट एक रोमन व्यापारी कोठी भी स्यापित हुई थी। तमिल देशोंके राज्यवशोंमें नाग प्रभाव अधिक रहा प्रतीत होता है। दूसरी शतोमें सातवाहनोकी शिवतका उत्तरोत्तर हास होता गया और दक्षिणापयके दक्षिणार्घमें सातवाहनोंके प्रतिनिधि कतिपय नागमहारथी धासक थे, एस कुछ स्वतन्त्र नाग-भत्ताएँ थी । इन नागराज्योने मिलकर एक फणिमण्डल (नागमण्डल)की स्थापना की थी। दक्षिणी नागराज्योका यह प्रावितद्याली संघ था । पेरिप्लसके समय (८० ६०) तक पूर्वोत्तरका नागराज्य अविभक्त

पुरुष् क्षा स्था । देशे वाधीके प्रारम्भवे वर्षपुर (वरसपुर-पर्तमान डिप्रविशास्त्रती) या नावपरेय क्षीतिष्ठवर्तन चील वा । यह राज्य धरिन धानी या । यदका करित पुत्र काल्यिकोन व्या दिवास क्रमा १२ हैं के स्टब्स हमा मा । पुनारास्त्रधार्वे ही वक्तकत्त्रिक बावक वैदारार्वित बीक्षा केवर वह बैदवृति ही तथा और सबनावद बानो विकास हुना। क्षम्तवारी मुखसम्बद्दे ही हीन्देरवरात बोक शामके नवस ही मुख था और सक्ताबहरू। शार्मिक वृतिश्रीयत बांधीमें ही बीटा प्रस्तित है अपने-बारको गांधीरा पण कससी पत्नी थे । वांबीके बहारबी स्थलपान श्री राज्यः <u>पुर</u>त्तकरके निराही की । अक्त पानचानकी मृत्युने नार सरवरके पुत्र विराह्मक्त्री कांचीने भारता गंधनी त्यालया थी। सनगरता इसीमा नाव डीम्प्रेयान दर्जन्दरेस्य थी गा । शायक देशके राजा इस कार्जने केन्द्रबार्डकाल और दक्षेशककालक थे । भीरतालका स्वाची वेचेवदन वा धो बद्ध ग्रस्टिकानी था। योच दैवपर शारिकत जीवका राज्य था. ध्य राजा भी युद्ध और कान्य येनॉनि ही नदान था । इह नदमर्वे संपाने प्रवस्ता प्रवस्ता प्राक्त था। कारान्त देवन्त्री करहाटक मन्त्रीय बाह्यप्रानी-के इस क्षम बायकने पराज बंधभी भीत साथी थी। प्रथम पराज बरेडका बस्तानिकारी १५ हैं के बनवन विनल्यनको या । अपकार्ग अन्यन्त है बार्मान्यर के कनुक्तिम एक दिवस्थित बढ़ी करिए गरीए होस है। मत्यक रीप ही बार्वपर पत्ती शायके विश्वास्त्रमें सामार्थने रीमफी बरक्षान्त को की मीर त्यकनुरसोतको एक्सानास कको बोरवक दर्व सम्ब अभितासः चन्यकार विश्वास या । क्यान्यका राजा जिनकेटी और क्क्षका भाई क्षिमान्त जामानींक विश्व हो क्ले और जैवकृति ही नदे । मृति विश्वकोतिनै ही अल्बार्वसूनकर राजनाका गालकी वर्वत्रकर टीका कियों थी । विषयोदिके जानाम् बसना पुत्र श्रीकन्त राजा हुना । वसन्तर विश्वकार्यन और किर १५८ हैं के नववय पनाशको अधिकेषका

मा रिन्तु रविनी (१५ ई) के शवद शोधीनक्षत्रमन् पोळाउनके

राजन् मयूरवर्मन हुआ। कदम्बोंकी अनुश्रुतिके अनुसार वे हारीतकी सन्तान मानव्य गोत्री ब्राह्मण थे। सम्भवतया नाग-ब्राह्मण मिश्रणसे उत्पन्न वे ब्रह्मक्षत्रिय थे। मयूरवमनके समयसे ही कदम्ब वशका उत्वर्ष हुआ।

इम कालमें जैनसघमें स्वामी समन्तभद्र (१२०-१८५ ई०) महान् वादी, बाग्मी, तपस्वी, योगी, धर्म-प्रचारक तथा प्रन्थ प्रणेता थे। दक्षिणी फणिमण्डलमें स्थित उरगपुरके घोलवशी नाग नरेशके वे पुत्र थे और काची-के नाग महारथी तथा प्रथम पल्लव राजे एवं करहाटकके प्रारम्भिक कदम्ब राजे उनके भवत थे। ये आधार्य द्रविड् सघके मूल प्रवर्तकों में-से थे। चन्होंने पुण्ड्वर्धन, पाटलिपुत्र, वाराणसी, ठनक, सिन्ध, मालवा, विदिशा. दशपुर, काची, करहाट आदि सम्पूर्ण मारतवर्षके तत्कालीन सभी ज्ञान-केन्द्रोंमें भ्रमण किया और अन्य धर्मीके विभिन्न विद्वानोंके साथ सैकडो सफल शास्त्रार्थं किये थे। बौद्धाचार्यं नागार्जुन उनके समकालीन एव प्रति-स्पर्धी थे। इन्हीके समकाछीन मथुरा सचके प्रसिद्ध आचार्य नागहस्ति और उनके शिष्य वह यतिवृषभाचार्य थे जिन्होंने कसायपाहुड आगमपर चूर्णिसूत्र रचे और १७६ ई० में तिलोयपण्णति नामक महत्त्वपूर्ण प्रन्यकी रचना की थी । इन्होंके जीवनमें सन् १५६ ई० में महावीरकी उस शिप्य-परम्पराका अन्त हुआ जो परम्परागभके साक्षात् ज्ञानकी मौखिक द्वारसे सरक्षक थी। समन्तमद्रके ही एक शिष्य आचार्य सिंहनन्दिको सन् १८८ ई॰ में दिहग और माचव नामक भातुद्वयके हाथों कर्णाटकके प्रसिद्ध गगवश और गगवाडि राज्यकी स्थापनाका श्रेय है।

इस प्रकार दूसरी शतान्दीके अन्त तक दक्षिण भारतमें पाण्ड्य, चोल और चेर नामक प्राचीन छोटे छोटे तीन तिमल राज्योंके अतिरिक्त पूर्वी तटपर तोण्डेयमण्डलमें काचीका पल्लब राज्य, बनवास देशमें करहाट और सदमन्तर वैनयन्तीका कदम्ब राज्य और कर्णाटकमें गंगवाहिका गग-राज्य—ये तीन प्रसिद्ध नये राजवश स्थापित हो गये थे। इनके अतिरिक्त दिसणापयमें सातवाहन शबितके पतनसे लाभ उठाकर दक्षिणफे विभिन्न

वी। वास्तिरम् (वांके का चीका वांकी) वस रामधी प्रकर्णी । वस वीच उन वांकी गोर्चकरा का वांकी देशांकर विकास का वांकी वांकी विकास के वांकी गोर्चकरा का वांकी विकास के वांकी वांकी विकास के वांकी वा

मारबीय इक्ट्रिस एक स्टि

घमका प्रमाव रहा प्रवीत होता है। प्रारम्भिक पल्लव राजाओंक, विदीप-कर शिवस्कन्दवर्मनके उत्तराधिकारी सिंहवर्मन प्रथमक प्राकृत अभिलेख भी प्राप्त हुए हैं। शिवस्कन्दवर्मन स्वय आगमेंकि टीकाकार जैनगरु वप्पदेवका शिष्य था । परलमाका राज्यिचिह्न मुपभ था इसीलिए ये वृपद्यज भी कहलाये। सिहवर्मनके उपरान्त वृद्धवर्मन और फिर कुमारविष्ण (३२५-५० ई०) राजा हुआ । सदनन्तर विष्णुगोप गद्दीपर बैठा जो समद्र-गुप्तका समकालोन या और जिसका चल्लेख उद्दर गुप्त सम्राटकी प्रयाग प्रदास्तिमें काचेयक विष्णुगाप नामसं हुआ है। विष्णुगोपके उपरान्त इस यशका प्रसिद्ध नरेश सिहवर्मन द्वितीय था जिसके राज्यके २२वें वर्षमें सक स॰ ३८० (सन् ४५८ ई॰) में वाणराष्ट्रके पाटलिक ग्रामक जिनालयमें जैनाचार्य सर्वनिन्दने साना प्राफृत लाकविभाग ग्रन्थ पूर्ण किया था । यही सर्वप्रथम सुनिश्चित विधि है जो पल्ल्चोंके इतिहासमें अवतक मिली है। यह राजा जैनवर्म और जैनगुष्ठश्रोका आश्रयदाता था। उसके उपरान्त दो-तीन राजा और हुए और सन् ५५० ई० के लगभग कुमारविष्णुसे प्रारम्भ होनेवाली पल्लव बद्यकी इस ट्रसरी बाखाका अन्त हुआ।

सिह्विष्णु पल्लव (५५० ६०० ई०) से पल्लवांकी तीसरी द्याखाका प्रारम्म हुआ और इस द्याखाके समयमें ही पल्लव राज्यका चरम उत्कर्ष हुआ। सिह्विष्णुके आध्यमें महाकवि मारविने अपने जीवनके कुछ अन्तिम वर्प विताये थे। सिह्विष्णुका उत्तराधिकारो महेन्द्रवर्मन प्रथम (६००-६३० ई०) था। वह जैनधमका अनुयायी था। कई जैनमन्दिर और सित्तनवास- लको गुफाएँ उसने धनवायी थीं। सुदूर दक्षिणमें पावतीय गुफा मन्दिरोंका निर्माण करानेवाला वही प्रथम नरेश था। इन जैन-गुफाओमें भित्तिचित्र भी मिले हैं। इन चत्यालयोंके निर्माणके कारण उस राजाको चैत्यकन्दर्य उपाध प्राप्त हुई थो। शैवस त अप्परके, जो पहले स्वयं भी जैन ही था, प्रभावमें आकर यह राजा श्रैष हो। गया था और तब इसने जैनोपर अत्यावार भी किये और कई जैन देवालयोंको भी शैषालयोंमें परिवर्तित

निया । बैलेंकि एकानमें रीकायनारोंकी कवने मोरवाइन विधा ना बाहिरवरिक जी का शीर शताबक्त प्रमुखक्ता क्षेत्रक था । क्की क्यांमें बालुम्म वृत्रदेशी दितीयने शब्दम राज्यपर आक्रमण विकास । स्पेट ममनवा उत्तरामिकारी नरसिङ्गकर्थन समय (६६०-६८ ई.) प्रवासी नरेब बा । क्याने केरण योज पान्यय पानुषय और विद्वानके वरेडींकी मुदर्ने बराजिन विका था किन्तु पासुका विकासशिक्तने कते. बुरी तरह नयाँका किया। बच्छे पात एक बताबी वेश भी मा। यह राजा की बैक्यन बारोंना रक्तक था। वधीके धालनकानमें नोनीवाची हरूआंच कोनी आया वा फिल्ट् काक्यूब वीववयकारोंके अल्यान वर्ष राज्यानको सन बनन नी रागे जैस बोर बोद दोगों ही बनोंक बाधु देशकर, यह बीर अनुवानी क्याँच वंक्तामें से । कह राजा किर्माता की या जोर वसके राज्य-में मारार कर्दात मूख बीर शासि थी। क्युके क्यार्टावराची म्हेल्यमें दिवीयका राज्य मरवादायो जोर परना-धून्य वर । एकाचार परविद्वार्थन क्रिपोन (६९०-७१५ हें) धेनधर्मका बहुत कर्माक हथा। पारामके कई बैन मन्दिर भी करने नगवाने । नरवेशवरनर्थन जनमः और दिखेन इक प्राचाने अस्तिन गरेद में । वन् ७ ५ ई. के कदार परिवर्तन समस्तराजने विकासन इस्तानत किया और ७९५ हैं। तक शाल किया । यह राज्य वस पराधनी या, पासुकों रायुक्ती गीर पंतीच प्रवन्ने जर्मक हुई हुए। क्रमें बनार्षे रंभार क्रम बकार हुआ। एवा वी बक्रम बनुधारी हुना बोर प्रेम्स्यार्थि शाम अब रेज्या बक्यर को बेन बोर बीटमर्नीके प्रसिद्धानी वने । इस्रोके ध्यासमध्यम् सन् ७८८ वे में पंतरान्यनिक प्रमारवे कांची प्रवेशके जीजींका स्टेशके वैच्या प्रवेशको निर्मात हम्स क्षांत होता है। इस राजले कांगीका विस्कृतीनर बनवारा। यह जिल्लानीय की सरक्त करता का । अबके वृत्त वन्तिवर्गनामें कर्त में ८९ र कर राज्य किया। बचको बाधा राष्ट्रकृत राजकृताचे रेचा थी. शक्तरि जलत्वी जोरते राज्युक्तरेश और प्रविवरी जीरते बाहतीय इतिहास ३ एक धरि 222

पाण्डम नरेगोंका द्याय उसे निरम्य महना पटा जिनमें उसके राज्यको पर्याप्त हाति हुई। उसका उत्तराधिकारो महियमन सुनीय (८४४-६०६०) या। पाण्टम नरेशको मार छोवल्लमकं विरुद्ध उसने गंग, पोल, राष्ट्रकूट और सिहल मरेगोंसे मनोसम्बन्ध स्थापित किये और तैन्लाको प्रसिद्ध मुद्रमें वह पाण्डम राजाको हराकर उसके राज्यमें पुन गया किन्तु मुस्बकोनमके नियट स्वय हारकर वापम छोट आया। इसकी नौनेना मो हावितहाला थो। उसके पुत्र नृग्तुंपवर्मनने, जो अमोधवर्म प्रमानो मोना मो हावितहाला थो। उसके पुत्र नृग्तुंपवर्मनने, जो अमोधवर्म प्रमानो पुत्रो शामासे उत्पन्न हुआ या पिताका बदला लेनेने लिए पाण्डम्य राजाको हराया। यह नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंका समर्यक्ष था। इस वंशका अन्तिम नरेश अपनीजत था। १०थीं छानाकोमें पील सम्राहोके अन्युर्यानने पल्लव राज्यका छन्त किया। परच्योंथी ही एक शामा नोलम्बवायोके नोलम्ब थे। नोलम्बयशमें जैन पर्मको प्रवृत्ति प्रायः निरन्तर यनो रही।

पल्कवराके प्राय समी नरेंद्र विद्याओं और कलाशों के पीएक से और विद्वानों ना आदर परते से। उनकी राजपानों एक प्रमिद्ध नान-विद्वने कपमें उत्तरापयकी काशीसे होड करती थी। इस नगरीमें विभिन्न धर्मों कि विद्वान् परस्पर धाहत्रायं करते पे जिनमें राजा और प्रजा सभी रस लेते से। प्राष्ट्रत, संस्कृत और समिल तीनों हो भाषाओं में प्रधानिक एवं लीकिक साहित्यका पल्लव नरेदाकि आश्रयमें सुमन हुआ। धर्मों शतो ई० के पूर्व पल्लव राज्यमें जैन और बीद्ध धर्मों ही प्रधानता थी, तहुपरान्त दीव और वैष्णव धर्मों का प्रसार हुआ। जैन, बौद्ध, दीव, और विष्णव, पारों ही धर्म इस राज्यमें साम ही-साय फलते-फूलते रहे और इस बशक कुछ-न-मुख नरेता इनमें से प्रत्येक धर्म कनुयायी रहे। धर्मों-८वीं शताब्दीस धीव और वैष्णवोंने जैनों और बीदोपर भीषण अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिये। फछस्वरूप बौद्धपर्म तो इस देशस शोध्र ही विरोहित हो गया किन्तु दक्षिणके विद्वान् जैनगुक्जों, उनके

राहित्यरनिक मी था और बसारपण प्रदेशकरा केळच जा । बसके बच्चमें चामुच्य पुनरेची द्वितीयने बन्नव शास्त्रवर जात्रवय किया वा । महैप यमनका उत्तरप्रविकारी वर्शवास्त्रप्रवर्धन प्रथम (६३०-६८ ई.) प्रचारी मरेब था। दमन वेरम योल वाश्वय वाश्वय और विक्रमक वरेसीडी मुख्ये पर्यादन दिना था विभू बाल्यव विक्रमाशिको वक्षे बुरी बाह् वर्णना रिया । बनरे नाम एक बडाबी देशा भी बा । बड राजा की टैन्नर-मार्रेना दवनक वा वनीक बालनकामधे बीलीकाची हरणवान कांची बारा मा दिन्तु बारवर वैदनक्यारोंके बल्यन वर्ष राम्यवर्ष वर सनव भी नहीं नैन सीर देश दोनों 🛐 क्योंके शाबु, देशकर, नह भीर अनुवादी पर्याप सल्याने से । यह राजा निर्माता की वह और बड़के संगठ-में स्थापा वर्नात नव और बान्ति थे। उदके बल्चाविकारी ब्युत्तवर्तन विक्रेयका राज्य जन्मकारी और बहना-तृत्व वा । शहक्तार वर्रोतहंपान दिनीम (६९०-३१५ है) वैषयर्थना बारा वयर्थक हुआ पाणानके लई मेन-मन्दिर मी जनने बक्ताये । परनेश्यरवर्तन शबार और द्विश्रीय इन बान्याके बॉन्डन गरेस में । जन ७०५ ईं के धनका गरीवर्गन रास्टरगानी विद्वारत इस्तम्त्र किया बीर ७९५ ई. तक राज्य किया । यह राजा नहीं पराक्रमी ना पालुकरों, राष्ट्रकृती बीट बंदोंने बतने बतेब दुद हुए ! पक्षके बकार्ने नैपन्त बन्त अक्षार हका नामा सी बढारा महसूती हुना और बंगनगरोंके काव जब रैप्पन जक्तर को संग और बोदनगरि प्रक्तियो वने । इश्रीके साक्ष्यकारणे वस् कटट है में सकरानार्वके जनावदे काची जरेकने बीजाका कंत्रके केंच्या जरेकको निर्मादन हुना मधीत होता है। इस शामने कॉलीका लिप्यूक्टिया बनवादा। मह निकारीका भी बाहर करता था। इसके पुर व्यवस्थित अपूर् के ८४५ ई. तम राज्य किया। वसकी गांधा राज्यपुर राजपुराधे रैसा भी तसारि बतारती जोसी शाबापरीया जोर प्रविवासी बोरबे

क्या । जैनेकि स्थानमें धीयनम्पारीको सबने प्रोत्तादय दिशा ।

की और मदुराको उक्त मधका केन्द्र बनाया। अस्तु ५वीं से ७वीं शती पर्यन्त पाण्डच देशमें जैनचर्मका अत्युत्कर्ष हुआ। वज्यनिद और उनके सहयोगी गणनिन्द, वक्तप्रीय, पात्रकेसरि, सुमतिदेय, धोवधदेव आदि जैना-चार्योने उनत द्रविष्ठ या द्रमिल सचको एक सजीव शक्ति वना दिया। इन विद्वानींने अनेक ग्रन्थोका संस्कृत, प्राकृत और तिमल मापाओंमें प्रणयन किया तथा अपने भवतो और शिष्योसे कराया। तमिल साहित्यके कई महत्त्वपूर्ण कावप ग्रन्थ इसी कालमें लिखे गये। प्रवृत्तियोंके फलस्बरूप ही ६ठीं शतीके अन्तके लगभग कडुंग नामक राजाने पाण्डघ देशकी राज्य शनितका पुनश्त्यान किया, वह अपने पूर्वजीकी मौति ही जैनधर्मका अनुयायी था, उसके क्रमश चार वशज भी जैनी थे। इनमें-से अन्तिम नरेश नेन्दुमारन (कुन अथवा सुन्दर पाण्डच) के समय (६५०-६८० ई०) म गुणसम्बन्दर नामक व्यक्तिने जो स्वय जैन था, जैनधमका परित्याग करके शैव घर्मको अपनाया और राजाको भी शैव वना लिया। सम्बन्दरके प्रभावसे उस राजाने पाण्डध देशके जैनियोपर अमानुपिक अत्याचार किये वताये जाते हैं जिनके दृश्य मदुराके प्रसिद्ध मोनाक्षी मन्दिरकी दीवारोंके प्रस्तरांकनोंमें आज भी विद्यमान है। कडुगसे छेकर नेन्द्रमारनके समय तक पुनरत्यापित पाण्डच राज्यकी शक्ति और प्रभाव बढ़ता आ रहा था किन्तु इन घार्मिक अत्याचारोंके कारण किर छगमग एक शताब्दीके लिए उसकी उन्नति पिछह गयी।

्वीं शताब्दीमें श्रीमारन श्रीषल्लम (८३०-६२ ई०) इस देशका प्रसिद्ध राजा हुआ। महावशमें भी उसका उल्लेख है और सिहलपर भी उसने आक्रमण किया था। पल्लय नरेश दिल्यमंन और नित्दियमंन दोनोको उसने हराया और अपना राज्य वढ़ाया था। कि तु उसके अन्तिम वर्षोमें सिहलके छेन दितीयने तथा काचोके नृपतुगयमंनने उसपर आक्रमण करके उसे दुरी तरह पराजित किया और मदुराको लूटा। श्रीमारनकी भी उसी समय आहत अषस्थामें मृत्यु हुई। उसके पुत्र वरगुणवर्मन दितीयको

. . .

बाल्य बारि फारभेति यैथवर्त पत्थम राज्यमें शता दक दना रहा और इस्त प्रदेशमें की नम्पन्यक्षके जन्त कर बना का । इएन्डॉन कारिके विकरणों चैन पुराशास्त्रिक सम्प्रीतों समा चैनी-प्राप्त निक्ति सीन्त कारिताके बाबारपर प्राप्तः सभी विक्रमीता यह बन है कि दश्तापीते राज्यमें बैन बहुर्यकरक में और सह धर्म सम्बद्ध संबक्त्यमें मा । पांच्छम राज्य-वैश कि शवन विश्वा का चुना है शासम देव और गरर तथा उनकी राज्याची स्तुरा (अवृरा वा व्यक्त बनुषा) जन्मन्त प्राचीन है। ईसवी कन्द्रे बहुद पूर्वते इनकी जगरियाँय थी। दैनसी बन्दे प्रारम्बके जनवन नान्यय राज्य बालुवन अवस्थाने या । रोजके बसाटी तक्ये उबके पारनीतिक शतन्त्र में । हैं पू १५ वें स्टबारीय बाराय गरेराने एक केंग व्यवस्थानाको पुरूष रोक्के बझाद शांसरमने बरतारवें बरशा राजपूर बसावर वेंद्रा था । वडीवडे बन्दरवाहरे बन्यरेट-हारा यह विदेश बाबा प्राप्टन 🐩 थी । क्रमा बुलिये करना सन्त निपट बालकर रोम नगरमें बल्लेकवानान्छ में त्याव दी यो जोर नहीं बनमें बनार्थि बन्धे की । शामपानी जनुगाने हैं। वर्षश्रंतक दनित्व भारताके वेचम बार्रिकाका प्रचास हुता । एकामार्थ (दुल्लकुम्स) साहिः बैतनुत बेर्मन

मंत्रीके संबद्धन वालेक पक्षेत्री सामाओं तथा नामन्त्र करवारोंकी क्षेत्रकरी

जैन महाकवि धनपालके तिल्यमनरी नामक काव्यमें समरकेतुरी समुद्रयात्रा-का वर्णन अनेक बिढानोंके मतानुभार राजराजा चोलके ही सुद्रस्थके किसी द्वीप या देशपर शिवे गये समृती बाक्रमणकी धैयारीका सबीव यर्णन है। कवि घनपाल इसो कालमें हुए थे, मालवेके परमारों, यन्नीयके प्रतिहारों और मत्याणीके चालुक्योंने उन्होंने सम्मान प्राप्त किया था, बया बादनयें है कि वे राजगंजा चोल-द्वारा भी सम्मानित हुए हीं। राजगंजा सामा यत गैवधमें सा अनुवायी या किन्तु यह एक बहुत चदार और सिहिण्य नरेश था । उसके राज्यमें जैनोंने उत्तर कोई अत्याचार नहीं हुआ यन्न बिद्धानों-का तो यह मत है कि तसके समयमें जैनियोंको शैकोंके समान ही राज्यात्रय प्राप्त या और उसके माम्राज्यमें जैनवर्ग उपन अयस्यामें या । उसका पुत्र राजे द्र घोल (१०१६-४२ ई०) सुयोग्य निताना मुयोग्य पुत्र या। उसने वपनी विजयवाहिनीको उत्तरमें गगातट तक पहुँचा दिया और समुद्रपारके देशोको भी विजय किया । किन्तु वह जैनपर्मश विद्वेपो था, मैसूर प्रान्तके अनेक जिन मन्दिरोंको उसने जलवा दिया था। उनका उत्तराधिकारी राजाधिराज (१०४५-५४ ई०) या । तदन तर विधराजेन्द्र राजा हुआ वह भी धैव था। मन् १०७४ ई० में उसके भानजे कोलुत्तुग चालुक्यने उसे मारकर चोछ और पूर्वी चालुक्य राज्योंको सम्मिलित कर लिया। उसने ११२३ ई० तक राज्य किया। यह राजा भी बड़ा पराक्रमी या और उसने विजय देशको पुन विजय किया । इन विजय यात्राका सजीव वर्णन तमिल-के प्रसिद्ध महाकाव्य कलिंगट्ट्वरिनमें मिलता है। इस काव्यके लेखक कोलुतुग चौलके प्रधान राजकवि जयगोदम ये जो जैनो ये। यह सम्राट जैनवमका अनुयायी या और उसके आश्रयम अनेक घानिक एवं साहित्यिक कार्य हुए । उसने राजे द्र-द्वारा नष्ट किये गये जिन मिदराँका भी जीणी-द्वार कराया । कोलुत्तुगके भवते भागकर ही रामानुजाधायने होयसल नरेश विद्विश्चिनकी दारण की घो। कोलुत्तुगके आश्वयमें अनेक जैन विद्वानोंने अतेक ग्रायोकी रचना की थी। इस नरेशने अपने राज्यमें समस्त निपिद्ध विद्योगे राज्यतिये वाहीपर विद्याला । यह लेका-मित्र बाँद सम्बन्धी, योगी ही सामित्र हरा । स्वाने स्वाप्त पुत्र बाँद स्वानी हैं मी सामित्र हरा । स्वाने स्वाप्त पुत्र बाँद स्वानी हैं भी स्वाप्त स्वाप्त हरा है सामित्र स्वाप्त स्वाप्त हैं सामित्र स्वाप्त स्वाप्त हैं स्वाप्त स्वाप्त

रियम्बन वे) सारवाको १९८४ ई में लंदाओं सो दिवस की की । १११ हैं में मनावहीन बनाओं के साध्यक्त में मुद्राके पायक रामार्थ सन्द कर दिना । भोसराज्य—विको सन्दर्भ आधीनक कामीनार्थि व एक्ट्रावा में न राम्य एक काम राम्य था । वार्षि कक्षा कमान वर्ष और वैदर्शनी

कर राज्ये हुन्हों को । किन्तु भी बची है है हो समझिंड करवारें रास्त्र को स्थानका हुन्हें को स्थानियों तक बल रहा और यह कर सारून योगध्यमंत्रे कर्म कानावार जाता प्रदा । शी बची है वीद कर्म देवाचार नवारी विनावार पीतारे चीवाराम्का पुरस्कर बीट कर्म देवाचे स्थाना की । वका करवादिवारों स्वीतर पीता वीद बीट क्या राज्यक बील (९ ७-४६ है) यहा हुन्हा । इस्ते पान्य देव-री विदय कर्म याम विलाग किया । वस्त्रे कोलवानवारिकारों स्वार्य-पूर्व नहीं है । किन्तु व्याप्त्रम्य यामाना कोल (१८९-१-१६६ है) के प्रवास क्रम्यका एका महासारिकीय या बीट वर्ग्य की विलोध स्वर्य-प्रमान क्रम्यका रहावियति हुस्थ । क्रम्यक (विट्र) और क्रम्यक स्थान

न्यात जन्मका व्यापका हुआ। कार्यक ए पहुर हुआ। कर्यक स्थापका स्

-

तो दीशा लेकर जैनमुनि हो गया या-रामिल भाषाके मुप्रसिद्ध प्राचीन महाकाव्य शिल्प्यदिकरमुको रचना इसी राजपिने की थी। १री-४यो शती ई० से चेरोंका अवनित होन छगी और चेरराज्य एक छोटा-आ गोण राज्य रह गया । इस प्राचीन चैरवंशका सस्वायक चेरमान पैरमल था। ८वीं रातीने अन्तमें इस यंशका अन्त ही गया। ९वीं रातीमें वैष्णव अल्वर मतके अनुपायी कुल्दोखरने अपना यंश स्पापित किया और उद्योक साथ साथ चेर प्रदेशमें जैनयमके स्थानमें वैष्णय मतकी प्रधानता हो गयी। इस प्रदेशके मलाबार तटपर धरणाधी यहदियों कीर नवागत ईसाइयोंकी बस्तियाँ भी बहुत प्राचीन कालमें ही न्यापित हो गयो थीं। प्राचीन कालमें फेरल भी चेर राज्यका ही अग था। सन् १३१० ६० में मदुरापर मुसलमानोंके प्रथम आक्रमणके उपरान्त कुछ कालके लिए केरल राज्य एक स्वतन्त्र और शिवतदाली राज्य हो गया था। चेर, मेरल एव सत्यपुत्र प्रदेशोमें अनेक प्राचीन जैन पुगतस्वाद्यीप पाये जाते हैं। चैरोंकी राजधानी कावेरीपट्टन थी। पाण्ड्य, चील, चेर नामक प्राचीन अधवा आदिम तमिल राज्यो एवं परलव नामक नवस्थापित राज्यके साथ सुदूर दक्षिणके तिमल प्रदेशका इतिहास समाध्य हो जाता है। छपरोषत विवरणसे यह भी विदित होता है कि ३री से ६ठी राती ई० पर्यन्त सम्पूर्ण तमिल देशका इतिहास अधिकाराच्छन्न रहा। इस वीचमें वहाँ कलम्र (कलिसरसन=मम्बताके बाबु) नामक जातिका प्रमुत्य रहा प्रतीत होता है। अच्युत विकास कल्प्न इस क्याका प्रसिद्ध राजा था और बौद्धधर्मका समर्थक था। किन्तु ६ठी शतीके अन्तमें पाण्डघो और पहलवीने कलभ्रोंका अन्त कर दिया था। १०वीं शतीके जैनाचार्य अमितसागरने भी अपने तमिल व्याकरणमें उक्त कलभ्र नरेशके अध्याचारोंसे सम्बन्धित कुछ प्राचीन गीताको उद्धृत किया है।

कत्रस्य घरा का सस्यापक कदम्य आछा सातवाहनोंका सामन्त या जिसन कदम्य नामक वृक्ष विशेषके नामपर अपने वश और राज्यकी पदार्थोका बाराज्य वन्त्र तंत्र विका या । प्राचीन बाराज्ये बरिवरान् नरेडॉर्ने बस्ती नवता को बस्ती है। बसके बाव बनका नमुखं हुत अकर्तक (रिक्रम वा विश्ववाहर) विद्वालनपर वैद्धा । यस्त्री भी अपने निराम्स ही अपने तरब रिया और बढ़की राजनमां मी विद्वार्गी एवं नुविधीने मापूर च्यो । इस संस्था सन्तिन बहुलू गरेखा राजराजा स्थीत (१९१६-४८ हैं) था । बसके कररान्य चोळ करिएको जनवरि होने समी । गुर-तुसी रिर्वय प्राप्तको जोर नगोरिक्य वाध्यम गरेयोके बाजनवीके कारण १३वी प्रतीरे क्यारे वह बोलवासाम्य विक्रनिता हो नवा । बोच रामाग्रसी

पाइन-सरकार बडी मुन्दर वी क्वली शाम वैशानतीं और अनके स्वाबत

माननके को निकरण मान्य हुए हैं में कहाँ बमाजना प्रकृतियों बावर्य बेरनाई विक्र गरते हैं। देवमांगर और विदार संक्षेत्र अंत्याई में विका और कोओररारने करता कार्न कव्हेंकि हावने में । जीव बाग्रस्कर मेन बेस्हरी अन्ते बद्धत क्याँ की और क्षिणुकांकि बात विर्वित्तेत व्यवस्तुतक क्षेत्र-क्रम्यानमें एक थी । इस नाकने वीडपर्यता वहीं तीई विक्र नहीं निक्या है चेर राज्य--विक देवरा वीवच बाबीन एक नेवेंना या। प्रथम बद्राच्यों हैं. में चेर गरेख अपन प्रथमके ब्रामके इस राजना व्यक्ती हवा । क्षत्रा क्षत्राविकाधे जवन विद्यान था को नमियों और विद्यानीय बड़ा भारत राखा ना । जायीजन बंदन वाहित्सरो इन रामाने नार्य प्रोत्साम्य विचा । एछे वसी हैं के बच्चनवर्ते वें कुरवरन इन बंबरा वर्ते प्रक्रित एवं वर्षभद्दाण् चात्रक द्वता । काचे थेर राजायो बामाना स्थ दिशा श्रीक-विकासनपर करने सबसे वजेरे बार्डको स्थानित विनया सम्पूर्ण क्षमित्रनारपर कक्षण वाणियाच था, समुद्री वार्यन्त्रारा क्रमी रश्मी-पर मात्रमन किया और कई प्रथमित किया। काने क्तारमें दिसानर

पर्कत बाली विजयमहिलीको शहुँचामा बीर वहाँ एक विकास माने मनुर्मा बन्नी अस्ति सराचा । इब बंधनें नरावर जैननर्नेत्री ही उन्हर्ति च्यी । के आक्रमणका निवारण किया । उसने महपट्टिदेवके छिए एक दान भी दिया या। उसके पुत्र भगीरयके कुछ सिक्के मिले हैं। भगीरयका पुत्र रघु भारी योद्धा था । उसने पल्लयोको पराजित करके अपने राज्यको निष्कण्टक किया । युवावस्थामें हो युद्धमें उसकी मृत्यु हो गयी और उसका उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई काकुत्स्यवर्मन् भी छोटी अवस्थामें ही राजा हो गया, किन्तू वह एक महान नरेश, योग्य घासक, वडा नीति-निपुण और दीर्घजीवी था। उसने गग, गुप्त और वकाटक नरेशोंका अपनी कन्वाओंके साथ विवाह करके तत्कालीन भारतके प्रसिद्ध राजवंशोंसे मैत्री सम्बन्ध स्थापित किये। इस नरेशके हुत्सी ताम्रवासनमें वर्षसंख्या ८० दी हुई है जो इस राजांकी ८०वीं वर्षगाँठका सूचक प्रतीत होती है। इस अभिलेखकी तिथि सन्४०० ई॰ निहिचत की जाती है और लेखसे स्पष्ट है कि यह राजा जैनधर्मका भारी पोषक था। जैनपण्डित श्रुतकोर्त्ति मोजकको इस ताम्रशासन-द्वारा राज-घानीके जैनमन्दिरके लिए दान दिया गया था। काकुत्स्पवर्मन् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यका समकालीन या और सम्भवतया राजकुमार क्रमारगुप्तके साय भी एक कदम्ब राजकूमारीका विवाह हुआ था। स्वय कवि काछिदास इस विवाह सम्बन्धको स्थिर करनेके लिए उज्जैनसे वैजयन्ती आये बताये जाते हैं। काकुत्स्यकी दूसरी कन्या गगनरेश तदगल माधवकी विवाही थी और इस प्रकार गग अदिनीत इस कदम्ब नरेशका दौहित्र था। काकुरस्यवर्मन्के पश्चात् उसका ज्येष्ठ पुत्र शान्तिवर्मन् राजा हुआ । उसने कदम्ब राज्यके सन-वासी, त्रिपर्वत और उच्छगी नामुक तीनीं भागींकी सगठित करके केन्द्रीय शासनके भीतर है लिया। शान्तिवर्मन् भी जैनधर्म और जैनगुरुओंका समादर करता था । उसका पुत्र मुगेशवर्भन् (४५०-४७८ ई०) जैनवर्मका अनुवागी था। उसके कई उपलब्ध ताम्रशासनींमें इस नरेश-द्वारा जैन मन्दिरोका निर्माण कराने, निर्मन्य जैनगुरुओं, स्वेतपट जैन साधुओं और जैनोंके कूर्चक नामक एक अन्य सम्प्रदायके साधुआको दान देनके उल्लेख हैं। स्वय राजधानी पलाशिकामें उसने अपने पिता भान्तिवर्मनकी

रिवर्षे दरशान देवरें एते वती हैं के अध्यक्त समान स्थापन की में भीर काहारक (श्रेनांच करहर) मनग्डी अल्पी शाववानी दतास वा र नाम भीन करते-बागी हरियर बंबब बनागोरी बाह्य वहीं के मनुरेश्तरको अवना कुमरेवना जानने वै और स्वामी बहानेतको पुन्तपूर । राजरतना परार्थ के मुन्यों भी शहरण धार्मक वृत्रं बान रराका नियम था। इस बंबका दूसरा पाना जिल्लामा अवशा विवर्गेटि काले जाई जिल्लाके साथ संगापार्थ समन्त्रत्रप्र द्वारा सैनवर्वनै सीतित ही बचा था । सबी सम्पन्ते इन बेंगरे बैनवनको प्रपृति सवश बबके अति । बातरवाच रहना मान्य । बनका पुत्र भी बच्छ का और बीप विचानमध्यमेंनू जिसके बछरानिकारी स्पूरकान् (३१) शतीना क्रमशर्व) के बचन तक बचन राज्य दन धीरा-मा राज्य का जी पार्ट सावधानके ही मिल् वहीं एक मीर माने मारशे बलाहि अबीन भारता का बीर कुमरी और कांग्रीके परन्तीते दश्ता वा । जाररवेंत् कृत्तरस्थाने विशानान्तिके विद वांचीने पर या । नहीं शासतीये जन्ना अपनाम किया था । इनसे बरो नेत होतर बबने जाने शामको जान्तको बहाने और शन्तनीके बरमा नेनेसी दृष्ट इतिहा की। पालकार सेवाक्ते ही बचने वैश्वन्ती (बनयारी) की भारती पात्रवाली वधावा और वडाविका (इस्ती) को वरपानवाणी बनाना बाक्त-न्यवस्था और की बीट वर्गप्रकार अपनी सर्वन नामेंबें र्वक्रम हो क्या । इसे पारन परान्य राज्यका वाल्यविक वेल्यापक पहुर वर्तनको ही बद्धा बाला है । बाला, बालशाहबीके जिल प्रदेशपर करानी-का अधिकार था क्षत्रों और नक्षिक जिल्हा अरके बढ़ कर एक स्टान्य वरेय का क्या । वह कार्क बातवीहरका काबी या । शक्क्योंको परान्य करके बनमें बन्ते अस्त्रालका अवका किया और बनका अपन अस्तिनी हीं नदा । बहने बृहद्दान तेवृद, आसीर, नारियान क्षत्रस्थन केन्द्रण, पुबार और गोवरि रामाबोंको जो बुडोंने बस्तीका दिना नटाया पाटा है। बचके पुत्र क्षेत्रकाराविकारी वंत्रवर्तन्ते वकारकारीय निव्यवस्थि विवीतः भारतीय इतिहास । एक धीर

के आक्रमणका निवारण किया । उसने महपद्रिदेवके लिए एक दान भी दिया या । उसके पुत्र मगीरयके कुछ सिक्के मिले हैं । भगीरयका पुत्र रघु भारी योद्धा था । तसने पल्लवाको पराजित करके अपने राज्यको निष्कण्टक किया । युवावस्थामें हो युद्धमें उसकी मृत्यु हो गयी और उसका उत्तराधिकारी उसका छोटा माई नावुत्स्यवर्षन् भी छोटा अवस्थामें ही राजा हो गया. किन्त वह एक महान नरेश, योग्य शासक, यहा नीति-निपुण और दीर्घशीयो या । उसने गग, गुप्त और वकाटक नरेशींका अपनी कन्यामींके साथ विवाह करके तत्वालीन भारतके प्रसिद्ध राजवंशींसे मैत्री सम्बन्ध स्यापित किये। इस नरेराके हत्थी ताझशासनमें वर्षसंख्या ८० दी हुई है जो इस राजाकी ८०वीं वर्षगाँठका सुचक प्रतीत होती है। इस अभिलेखकी तिथि सन्४०० ई॰ निरिचत की जाती है और छेखसे स्पष्ट है फियह राजा जैनधर्मका भारी पीयक या । जैनपण्डित श्रुतकीत्ति भीजककी इस ताम्रधासन-द्वारा राज-धानीके बैनमन्दिरके छिए दान दिया गया था। काकूत्स्पवर्मन चन्द्रगप्त विक्रमादित्वना समकालीन था और सम्भवतया राजकुमार यूमारगप्नके साय भी एक कदम्ब राजकुमारीका विवाह हुआ था। स्वय कवि कालिदास इस विवाह सम्बन्धको स्थिर करनेथे लिए उज्जैनसे वैभयन्ती साथै बताये जाते हैं। काकुल्स्यको दूसरी काया गगनरेश तदगल मायवको विवाही थी और इस प्रकार गग अविनीत इस शदम्ब नरेशका दीहित या । काकृत्स्यवर्मनके परवात् उसका ज्येष्ठ पुत्र शान्तिवर्मन् राजा हुआ । उसने कदम्ब राज्यके बत-वासी, त्रिपर्वत और उच्छगी नामक तीनों भागोंको सगठित करके केन्द्रीय शासनके मीठर ले लिया। शान्तिवर्मन् भी जैनपर्म और जैनगुरुओका समादर करता था। उसका पुत्र मुगेशवर्मन् (४५०-४७८ ई०) जैनधर्मका अन्यायी या । उसके कई उपलब्ध ताम्रशासनींमें इस नरेश-द्वारा क्षेत्र मन्दिराका निर्माण कराने, निर्मन्य जैनगुरुओं, श्वेषपट जैन सामुओं और जैनोंके क्चंक नामक एक अन्य सम्प्रदायके सायुआको दान देनेके सस्तेख हैं। स्वय राजवानी पलाधिकामें उसने अपने पिता शान्तिवर्मनकी स्मृतिये एक प्रका विशासन काराया था। विशेषको शह है कि कुटरर कंप्युस्तेमा हो नहीं वरण वनके निर्माण मुग्नित बंधों और कार्य्यप्रस्म राम्पर्धे निरम्ब का। वस बारण करणेयां वैत्युस्त्रास्त्री त्राष्ट्र वार स्मे भीति मोक्या है को मुन्तिर्धित मोक्यके कार्यास्त्राम् है। ऐसे प्रतेष्ठ होता है कि पुल्कीत और कार्य कार्यास्त्राम् प्रदूष्णायों वर्धेये से और न्याम नरिप्तिः एक्युस्त्रोके क्यार स्त्रोका हो। इस फाम्म इस्तरित विशेषक सम्मा अपनेक कार्यास्त्रोक न्यास्त्राम वर्धिकारी

पृथेवरमंत्रके शावनकावनं कको भाषा प्रमानकी प्रकले स्थिवे निया का और किर्मित अदेखार वरिकार करके अवसा स्थान राज्य स्ताच्यि विन्य या पद्मी करके. पंचनीने रीजनगीपाची *मून बाचाने सा*प-बाब सराज्य एका किया । आ इन्यवर्गन बालो जानसे अस्तिय गाँची बहुद रचेह करता का अतः चेरतरेड क्लडे बहानक रहे । बज्जे वार्यों में भी परास्ति किया था। क्रमके बाद बक्का पुत्र विवादर्शन प्रयम याग हवा, नुकावर मनेक्का ही बावन एक प्या था। इब बावने राजनी, रीयकों बार कालीने परस्पर कुटोने कारण बळारित रही । किन्तुपर्वत्त्री बहानदार्ग बाने वंगी बोर प्रक्रमाँको पुनेश्वने परावित हिना अस्ते मसूर्गी-को को बाहरे कहीर किया । क्वाफी राखे अवस्थि केवलकारी राज-कार्य मी । शासनीय काम इक पुरुष यह राजीका बाई क्रियमनियानी र्वेक्स करा पना ना । फिर की पत्तन विश्वपर्यमुक्ती ब्रह्मनाले ही निर्मा वर्षन वर्षी राज्यकी तीनर एक बका । जुरेक्के संबाद क्याना दुव रहिः वर्षत् भी वैकन राज्यकामा प्रभावतीचे करवन हवा वा राष्ट्रा हवा । ४७८ है ५२ ई एक बतने राज्य किया । यह पर बैसनेके समय करकी बाह क्षत्र की सराहत करती जाना मानवादवर्गनने बंदमाइके क्याँ पान्य कार्य कमारका । वर्तने वेन अमिनीतके वरिन कर की बीट कक्षके कराराणिकारी र्होरतीयको बरस्य दिन एवं सहयोगी नवा किया । क्षमाकोपर रहिरदर्गने

राज्यकी बातकीर अपने हाचाँ को । अवस्थीकी विवर्शत बाला है दिन्त-

त्रमंन्, सिंहवर्मन् और कृष्णवर्मन् द्विसीयका क्रमश धासन इनके समयमे रहा। रिवयमन् अपने इन सम्यन्धियाको उभरने नहीं दिया और उष्ण-वर्मन् दितीय तथा उसके सहायक चण्डदण्ड परुठवको बुगे सरह पराजित किया। रिवयमन् अपने माई मानुवर्मन्को हर्सीमें अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। दुर्विनीत गग परुठवोंके विकद्ध रिवयमन्का नित्र था। इस प्रकार रिवयमन्ने अपने पिताके समय हुए राज्य और वंशके रिभाजनका अन्त करके पुन एक कर लिया। कृष्ण दितीयके यदाज अजयवर्मन्, मीनि और विष्णुत्रमंन् कुछ काल तक और विद्रोही मने रहे किन्तु उनका मी अन्त चालुत्य पुरुकेशि प्रथमके पुत्र कोत्तिवर्मन्ने कर दिया। रिववर्मन् एक महान् प्रतापी एव सुयोग्य नरेश था। वह जैनयर्मका भी परम मक्त था। हरको, कोरमग आदि स्थानोंसे उसके कई ताझगासन मिले हैं जो उसकी उसकट जिनधम मिलत, धार्मिक आवरण, जिनमिदराका निर्माण, जैनगुकओं और विद्रानोंका सम्मान, वर्गितको अष्टाह्निका आदि जैनपर्वो और उरसवीको मनाने, विविध दान देने आदिका सणन करते है।

रियवर्मन्के धमगुरु जैनमृति कुमारक्त तथा हरिस्त ये और राजगुरु एव प्रमुख दानपात्र व धुमेन भोजक थे जो दामकीत्ति मोजकके उत्तरा-धिकारी थे। महाराजके माई भानुवर्मन्ने जो हल्सीका धासक था, प्रत्येक पूणिमाको जिनेन्द्र भगवान्का अभियेक करनेके लिए पण्डर मोजकको दान दिया था। पण्डर सम्भवत्या सन्धुसेन भोजकका उत्तराधिकारी था। इसमें सन्देह नहीं कि कदम्त्र नरेश रिवयर्मन् एक प्रतापी, धर्मात्मा एव शक्तिशाली राजा था।

इसके उपरान्त इसका पुत्र हरियर्मन् (५२०-५४० ई०) राजा हुआ। यह कदम्बवशका अन्तिम महान् नरेश और अपने पूर्वजोकी हो भौति जैनधर्मका भवत था। उसके राज्यके चौथे और पाँचवें वपोंमें लिखे गये ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं जिनमें इस राजाके द्वारा जैनमन्दिरों और गुरुआंको दान देने तथा जैनधर्ममें उपदेशित अन्य प्रामिक कार्योंके करानेको न्यस्ता करवे व व्यक्ति हैं। सूर्यंत संस्ते वीत्रावर्त सारिवेस्टर का पत्र बाठ सार रुप्ता था। इस संस्तेष साविवेस्ट्री सद वी स्त्रा देखा देखा है है जबका बात्रा विस्पार को एक्सिन्स्ट्रिय हुक्य वार्ष मा ज्या हुएँ सावाचे कुम्म द्वितीयों एक भाई सीर सकते पूर पाजुनार देखाई स्त्री करमा रावड्डिक का मानेक स्त्रीय सो क्रिक्टि अनुसारी नी मीर स्त्री कि करमारीका निम्म तैनक नरीस मानुस्त्रिय भी वैश था। इरिप्लेंड्र रुप्ता हुए विस्पा सात्र ही स्त्रा । ५६६ हैं अक इस्त्रा द्वितीयों वेस स्त्रावर पर विस्पा सात्र ही स्त्रा । ५६६ हैं अक इस्त्रा द्वितीयों के स्त्रावर एवं विस्पा

बच्चन बन्धियमे क्यांचा करके बक्के प्रोक्का निरुप्तर निरुप्त । स्ति क्षं प्रेराम मिल्ला पीन प्राम्ब क्यांचीक कर्म (प्रति-पूर्णी कार्ड (क्ष् प्रमा माम्बा है, मिल्लाइ होकके क्यान एन्टे (१वी १२ वी क्योंचे नर्के विशेषकार्यों में । क्षानोंने स्टाम्ब बुधान एवं कुम्बालिक या । बच्ची सेवी मीर लग्ने-पेरि-पाट वर्षे निरुप्त कुम एकं पी बीच साव-पाटके नाम क्यांची

यो सम्बन्धे पहणा पढ़ा क्यांने वर्णने पामचे वाज्योत वान्ति-कहीं गोर महत्त्वा की पहें। व्यापार-मन्त्राय मिन्दोन्तार बुदेवीय में। मन्त्रीकी सर्वाद्या व्यापार-मन्त्रीय में। मन्त्रीय स्वाद्या व्यापार-मन्त्रीय स्वाद्या स्वाद्या में। व्यापार-मन्त्रीय स्वाद्या स्वाद्य स्वाद्या स्

वर्षके बनुसारी हैं। एंग्यंदी—एंग्रे क्वी हैं श्रीवान जाताई स्वांतित होनेवाके क्वीन प्रांत्यंदी तीरण पंत्रांक या। श्रीवाचे बनुत्वं पंद्येते व्या क्योंतित्व स्वारी एदा वीर सम्बद्ध करून चाकुंत्र प्रान्त्युद्ध बाति दणके बात एवं करत होनेवाडी बची कर्याय प्राव्यक्तियोग्धा त्रक्ता नीवाडी करा पूर्वं। कर्यमान बहुर अर्थक व्योचना बनुत्व कर्याय हुने प्राप्तांत्र हुने व्याप्तांत्र हुने स्वार्थन हुने प्राप्तांत्र

व्यासीय प्रतिप्रायः एक प्रति

व्याप्त गगवाडि राज्य पश्चिमी गंगवशके नामसे प्रसिद्ध हुआ ।

इम वशके नरेशोंके शिलालेगों व साझपत्रों, साहित्यक आधारो सपा अनुश्रुतियोसे ज्ञात होता है कि अयोध्यामें तीर्थंकर ऋषमके इक्ष्वाकृवदामें रात्रा हरिस्चन्द्र हुए जिनके पुत्र भरतकी परनी विजयमहादेशीसे गगदत्त या गरीयका जम हुआ। उसीके नामसे यह वश गगवश कहलाया। गगेयका एक वशज विष्णुगुष्त अहिच्छत्रका राजा या और तीर्यंकर अरिष्ट-नेमिका भक्त था। उसका वदाज श्रोदत्त तीर्थंकर पादर्वनायका उपासकथा। श्रीदत्तके वश्में अहिच्छत्रका राजा कम्प हुआ जिसका पुत्र पद्मनाभ था। इसके ऊपर उठकीनीके राजाने आक्रमण किया अतएव पदानामने सुरक्षाके लिए अपने दहिग और माघव नामक दोनों चालक-पुत्रोको राजचिह्नों-सहित दूर विदेश में भेज दिया। प्रवासमें ये राजकुमार घीरे घीरे बडे हुए और घुमते घुमते दक्षिण भारतके कर्णाटक देशस्य पेरूर नामक स्यानमें पहुँचे। नगरके बाहर स्थित चैत्यालयमें दोनो राजकुमार अपने कुलदेव जिने द्रका दर्शन पूजन करनेके लिए गये। यहाँ आचार्य सिंहनन्दि अपने शिष्य-समृद-सहित विराजमान थे, यह उस काल और प्रदेशके एक प्रमुख जैनाचार्य थे। दोनों राजकूमारोंने जब उन्हें नमस्कार किया तो उन्होंने प्रसन्न होकर उहें आशीर्वाद दिया, उन्हें अपने पास रखकर समस्त राज्योचित विद्याओं में पारंगत किया, अन्तमें कर्णिकार-पूष्पोका मुकूट पहनाकर उन राजकुमारोंका राज्याभिषेक किया, अपनी मयुरिविच्छका उन्हें राजध्यजमे रूपमें प्रदान की और मत्तगयन्द उनका राजचिह्न निश्चित किया । उस समय उन्हें आवार्यने यह चेतावनी दो कि 'यदि तुम लोग कसी अपना वचन भग करोगे, कभी जिन-शासनसे विमुख होगे, पर स्त्रोके ऊपर कृदष्टि डालोगे, मद्य-मासका सेवन करोगे, नीच व्यक्तियोंको सगति करोगे. याचक-जर्नीको दान देनेसे मुँह मोद्योगे और रणमूनिसे पीठ दिखाकर भागोगे तो तुम्हारे कुलका नाम हो जायेगा।' राजकुमारोने गुम्बचनोंको शिरोधार्य किया और गुरुको मन्त्रणानुसार अद्भुत उस्साहके साथ राज्य निर्माणमें मन्दिरिदिको अपना वृत्वं कृषकाळ (कोसार) को समनी पामन्दरी 55 वंत्रक देवको अरला चाल प्रमानिमें विजयको अरली विश्वनिकी जिलेल-वी भरता इष्टरेव जिनवहरो जन्मा वर्ग और आवार्य स्थितन्त्रिको अपन बुद बनाकर इक्ष मुच्छीका बसारमें साम्ब्रोत पूर्वना पूजने शोक्येत्रसम्बर्ग तक ब्रिक्टि बॉबु देश तक और परिकार नेट देखकी तिवान ब्रह्मांतर पर्यक्त चीन किया । ऐसा बरोज होका है कि बहिक्को कृत्यु राज्यविक्रीकके जनतके कर हैं ही नवी भी क्षत्र परिवर्ष इक्ष परिवर्ध बंधवंत्रता प्रवन सामानिक मरेच और नंबद्धीं। राज्यका प्रथम स्थानी ब्रह्मा और। धार्म कार्म कॉर्नुक्तिवर्ष शबद (१८९--१५ 🐒) या । शह वरेख वहा पराक्रमी स्र् मनीत्या था । बार्चनि बाव वक्के मिरनार युव पकते यहे । मेर मारि केकोमें बच्चे 'कानकरी नगके रिप्ट बागार्रिन' कहा है। बक्को सम्बन्धि नामन स्थानमें एक बाज जिलावन एवं बैनगोड नववाया जी विक्री और वंस्कृतियां केल और विक्रेंग्य मुक्कोशा व्यावाध-स्थाल था। बद्ध मन्दिर गाउँगा बनवाना तथा बटाना व्याता है । वक्के बनरान्त बवता पूर विरिक्ताना क्षितीय द्वारा हुआ । एक्ने बन्ने विश्वका परानुदश्य विधा । नह गीरी-

र्धनम्म हो करे । सम्बन्धे वास-स्थातनी निजय करने र्वतनार्धि ६६ - की नीन सम्बन्धे । एक विकासकर्षक समुसार दश्च जनार वर्षित और नानकी

त्र स्कन्दवर्मन् पेरूरके गगोंके सहायम रहे और उन्हें उन्होने फिरमे अपने ाज्यमें स्थापित पर दिया । मुलवंशमें हरियमेन् अपनी धनुविद्याफे लिए सिद्ध था। युद्धमें चसने हावियाका प्रयोग किया और राज्यको समृद्ध ानाया । उनका पुत्र विष्णुगोप नारायणका विशेष मक्त या और जैन-ार्मकी ओरसे उदासीन था। उसका पुत्र पृथ्वीगग फीझ ही मर गया। ष्टिकीगगका पुत्र तदगत्र माध्य या भाषत्र तृतीय एक महान् शासक या। उसका विवाह कदम्बनरेश कामुत्स्ययमन्की पुत्रीके साथ हुआ या। वह ध्यम्बक और जिनेन्द्रका समान रूपसे भक्त या । मतूर तालुकेके नीनमगरू स्यानमें एक प्राचीन जैन बमदिके भग्नावदीयों में प्राप्त इस नरेशके १३वें वपमें लिखाये गये ताम्रशायनसे प्रकट है कि उसने परवर्शालन ग्रामके अहत् मन्दिरके लिए दिगम्बराचार्य वारदेवको कुमारपुर ग्राम तथा पहत-सी अय मूमि प्रदान की थी। लुइस राइसने इस वान-पत्रकी तिथि ३७० ई॰ निध्चित भी है। सम्भवतया इन्हीं वीरदयने विहारके राजगिरियर स्यित सोनमण्डार गुफामें भी जिनमृत्तियाँ प्रतिष्टित करायी यों जैसा कि चनत गुफामें प्राय उसी कालके एक शिलालेखरे सूचित होता है। इस राजाका एक दानपत्र ३५७ ई० का तथा दूसरा ३७९ ई० का प्राप्त हुआ है। अत इसका शासनकाल छगमग ३५५ ई० से लेकर ४०० ई० तक चळा ।

३री ४यो घताच्दीमें गंगनरेशोंक शासनकालमें कई प्रशिद्ध जैनाचार्य हुए। उच्चारणाचार्यने कसायपाहुरुके यतिवृपम-इत चूर्णासूत्रोंपर वृत्ति लिखी, शामकुण्ड और बप्पदेवने मी आगमोंपर टीकाएँ लिखीं। कृचि-मट्टारक और नित्दमुनिने पुराणग्रन्य लिखे। ये नित्द मट्टारक पेहर त्रिपयके गगराज आगवर्मन् आदिके गुष्य थे। इसो कालमें जैन विद्वान् शिवधर्मने कम्मपयि और सत्तक नामक कमीग्रन्योंकी रचना की। यशोमद्र, प्रभाचन्द्र और श्रीयत (जल्पनिर्णयका कर्ता) आदि विद्वान् मी इसी कालमें हुए। ४०० ई० के लगमग ही कविपरमेंष्ठि या किय

परमेरनर स्प्रमंत्रे मैनापार्व हुए थो. क्षत्रत जावाक जनम कवि. माने कवे है बीर दिन्होंने संस्कृत-कत्तव निधित बानार्वे वानर्ववंदा गामना मन बात पैन यहापुराम (शिमहिबक्तकापुरुपम्पित) किया । तरंबक मानस्का पुत्र अस्तितित कॉप्यि नहाराकाविराज को निर्दे संबंधित अवस्था थोडिय बीट यान्तिवर्सन् वर्ध क्रम्बर्धम् अथवता जि वाक्तित वर वापने शिवाकी मृत्युके श्रवच नावाकी बीवर्षे क्रीरा^{-हर} कियू नाथ था । विभागिओं ने वह बतनीनी शहा नदा है और वहरी

शास्त्र शहर रीर्वकातीय वृधित किया क्या है। स्तरूप Y ** YCR है वर्षण उक्के राज्य किया। बहु गरेंच बड़ा पराक्रयी और पर्नारका था । कक्षेत्र पुत्र सैनापार्थ विजयकोत्ति वे जिल्ली देश-देशी इन नरेक्की दिला-बीमा हुई थी। कन् प्रश् हैं में कर्ण नहीं मोलमंबक तामबादल-हारा इत विवयमीतिको पुत्रवंपके पत्रकरि बारि पुरुषोन्तास स्थापित वरपुरके व्यक्ति वर्गिय बीर निवारके लि राम दिया था। ४४२ ई. में करने इक्कोर शामधानकताय एक अन बहुँद्यायत्त्वको साम विका का । इस अधिकेशमें शरकराविदान व्यापनीती माराता थी क्लोक है। यह शास्त्र-शोक कैरापार्थ कर्यमिती क्रीय-निवास (४९८ ई.) मैं वरिवाक्ति विद्रमंत् हैं। प्रदेश होगी है। इन ४६६ हैं में विशित्त्वे धारवानी ताकरकनशरकी प्रतिने बैन बबरिये निष् यान निष्य या जिल्ली क्षूपता वर्णय दामरापरे पानी वाती है । नुपतिक विवासपायार्थ देशसको कुक्तपार (४९४-५९४ है) को वर्ग माले पुत्र कृषराम क्षतिशाह विश्वय निवृत्त विश्वय श्रामिक्षाँने अपिगीतको 'विश्वन्त्रतानि अवृत्त मुख्यस्त्य राली वीर क्षीरमाध्यमें बारि-न्यवस्था वृत्तं धर्मसंस्थानीता स्थान संस्कृत विश्वी है। एक स्थानमें किया है कि इस गरेशके हरवर्षे बदल विनेशके पर श्रमण मेरके चमल लियर में ।" नेकरके दिशासन जुजारको मेन नर्वारको

प्रतिस्पर्घाके बीच भी उसने अपने राज्यकी प्रतिस और समृद्धिको अक्षुण्य रसा। उसका शासन प्रकट भी उत्तम था।

उसका पुत्र दुर्विनीत कोगुणी (४८२-५२२ ई०) गगवदावा एक महान मरेषा था। यह वडा प्रतापी, महत्त्वाकांक्षी, बोर, विद्वान्, साहित्यरिक कोर गुणियोंका आदर करनेवाला था । स्त्रगुरु आचार्य पुज्यपादका पदानुसरण करनेमें वह अपने-आपको धन्य मानता था। महाक्यि भारिव भी कुछ समय तक उसके दरबारमें रहे और उसने उनके किरातार्जुनीयके १५वें सर्गपर एक टीका भी लिखी । गुरु-द्वारा रचित पाणिनि व्याकरणकी घट्यावधार टोकाका कानड अनुवाद और प्राकृत वृहत्कपाका सम्कृत अनुवाद भी उसने किये बताये जाते हैं। कोगलि नामक स्थानमें उसने चैन्नपारवंनाथ वसदिका निर्माण कराया था। उसवे कई ताम्रपत्र मिले है, गुम्मरेडिपुर ताम्रवासन उनके राज्यके ४०वें और सम्भवतया अन्तिम वर्षका है। कन्नड मापाके प्रारम्भिक छेलको और यवियोंमें भी द्विनीतकी गणना है। चालुक्यकीर विजयादित्यके साथ दुविनीतने अपनी बन्या विवाह दी यी किंतु चण्डदण्ड त्रिलोचन पस्लवके माथ युद्धमें विजयादित्यकी मृत्य हो जानेपर दुर्विनीतने उनन पल्लव-नरेशको बूरो सरह पराजित करके बदला लिया और अपने दौहित्र जयसिंह रणराग विष्णुवर्धनको उसके पिताके सिहासनपर स्यापित किया । भूजग पुग्नाटकी पीत्री और स्कन्द पुष्ताटकी पुत्रोके साथ अपना विवाह करके दुविनीतने पुष्ताट प्रदेशको दहेजमें प्राप्त किया था। अपने पराक्रम और निजयोंके द्वारा उसने पूर्व पश्चिम दोनों दिशाओंमें राज्यका विस्तार करके साम्राज्यकी स्थापना की। वस्सुत अपने समयमें दूर्विनीत गंग दक्षिणाप्यका सर्वोधिक श्रविनशासी सम्राट्या। पुन्नाट देश जो उसके राज्यका अग हो गया था, जैनवर्मका प्राचीन कालसे ही एक प्रमुख केन्द्र था। जैनाचार्योका एक प्रसिद्ध सघ-जिसमें हरिवदाकार जिनसेन हुए हैं, पुनाट सचके नामसे ही प्रसिद्ध था। दुर्विनीसके प्रधान धर्म एव विद्यागुरु पूज्यपाद देवनन्दि जैनसमके सर्वमहान बारपारिके हैं। वेवेज्यास्य स्थापनार स्थापनार स्थापनार स्थिति है। स्थापनार स्यापनार स्थापनार स्थापनार स्थापन स्थापनार स्थापन स्य

मुख बनव वक रोजबीरवे शस्त्र दिला ब्रहीत हीता है। तरुपान्य तुम्बर (शोरकर) राजा हुआ। इसमें ५५ वें के समयन वैद्यारिक निष्ट कुष्पर वर्शन नामक जिलाकाच्या निर्माण कराया था। मुख्यरका पूर्व मीनिक्स सा । इनके सम्बन्धी चामुन्योंकै वृद्धिपतः अञ्चलके सम्बन्ध करान नेपका प्रान: बन्द्र हुआ और बेक्ट्रेंग की हुक इंद्रेशन ही नेवा । प्रत धराधी दो प्रतिनों वी कुछ पोक धरहूवारी क्रिके वरधन पुनिजन बरुन्न हवा या और इनग्रे निन्तरायको कमार ग्रिक्सर नवश्यको बाध भी । जीविजनके समाग्री नंगीको देजर और - वंशार व्यानार्मीका सन्य हुनी बीर बोबाक्यर किरके रामणाव याचाचा अधिकार हुन्छ । एसे दनम बोबाब्दे दृष्ट र्यन शर्मिय पति समें सीए सम्बंधि वर्तिनके संपर्देशी स्थानन को तथा नहीं बचना नंदर्शनत शास किया । बोलिस नदे प्रापत क्षत्रभा गरेह पुत्र भूतिकन ना मृत्रस्थान गोर्विग्रहण राजा हुवा। क्षत्रने शस्त्रन मरेवानी परामित्र करके क्यते एक बहुनुन्य द्वार बीना जिसमें बहोनर मानवा प्रतिक्षः राण बच्छा या । अब ६३५ वे के क्यूचे वैरतूर बलायों बतना निगमना होन्य सुनिय होता है और बढ़ भी बाद होगा है 🏁 बक्का बाल्ट वानवंडी राधा विक्रम दिए बोलिन वानील भी जिनमंत्र मा । यह राज्य सरसंदर्शयके क्षत्रमाँ पुरुष्केत भूतिका यो यक्त रहा प्रतीय होता है। जुरिसमार सत्त्वतिकारी बतका होता बाई विश्वार अवन

नवकाम शिष्टप्रिय पृथ्वीकोंगुणि हुआ। इसे वृद्धावस्थामें राज्य मिला था। यह राजा परम जैन था, सन् ६७० ई० में इसने जैनमन्दिरोंका निर्माण कराया था और जैनगुरु चन्द्रसेनाचार्यको दान दिया था। ये आचार्य सम्मवतया पचस्तूपान्वय शाखाके ये और स्थामो बोरसेनके दादागुरु थे। सन् ७०० ई० का शिवमारका होरेमय ताम्रशासन मिला है जिससे गगोंके पूर्व इतिहामपर प्रकाश पहता है और जिसमें गग दुविनोत्त और उसके गुरु देवनन्दी पूज्यपादका भी उल्लेख है। ७१३ ई० का उसका एक अप अभिलेख मिलता है। उसके उपरान्त उसके पुत्र राचमल्ल एरे गगका अस्पकालोन शासन रहा प्रतीत होता है, तदनन्तर शिवमारका पीत्र थोपूर्व (७२६–७७६ ई०) राजा हुआ।

द्विनीतके उत्तराधिकारी और श्रोपुरुपके उपरोक्त पूर्वज गुगनरेश चालूत्रय नरेशोंके प्राय अधीन रहे, किन्तु उनके 'राज्यविस्तार एव राज्यकी शक्त और समृद्धिको विशेष क्षति नहीं पहुँची । चालुश्य नरेश गंग राजाओं-का बहुत आदर करते थे । यह युग चान्तिपूर्ण रहा, अनेक विद्वान जैनाचार्यो-ने ६ठों-७वीं शतान्दीमें जैनधर्मकी प्रभावना की और महत्त्वपूर्ण साहित्यका सूजन किया। गगराज्यमें निवास करनेवाले अथवा गगनरेशोंसे सम्मान और प्रश्रय पानेवाले इस कालके जैनगुरुओमें निम्नलिखित उल्लेखनीय है-पुज्यपादके शिष्य गुणनन्दि शाबन्द्रह्म जिन्होने जैनाद्र प्रक्रियाकी रचना की (ল০ ५५० ई०) नवशब्दवास्यके कर्त्ता वक्रग्रीव (ल० ५७५ ई०), त्रिलक्षण कदधनके कर्ता पात्रकेसरि (५७५-६२५ ई०), नवस्तीयके रचिवता और मदुरामें द्रमिलसंघके संस्थापक वज्जनन्दि (५८२-६०४ ई०), समितिसूत्रके टीकाकार सुमिति देव (छ० ६०० ई०), विव दण्डो द्वारा प्रश्मित तथा चुडामणि शास्त्रके कर्त्ता श्रोवधदेव (६००-६२५ ई०), ज्योतिपाचाय गर्गाचार्य और ऋषिपुत्र (६५० ई०), पचस्तूपान्वयके गुरु वृषमनन्दि (६५० ई०) तथा चन्द्रसेनाचार्य (६७० ई०) सादि । परमात्मप्रकारा आदिके कत्ती अपञ्चशके महाकवि जोइन्द्र, सुलोचनाकपाके कत्तां नहाकेन वरांक्वरियके रवस्ति। ब्रह्मीबालिंक क्याराप्टकार रविदेत, सम्बद्धीरप्रजन्तिके क्स्ती क्यानीयः विजनीयम् शैकाके क्सी जरगानिकार्तिः बारमानके वर्ती पुतारतन्ति वर्धवानपुरावकार विकोन अपन पुता-टर्नेसी नामशाक्षके क्ष्मी वृद्धि बन्दन्तव श्वा वीरवेनके तुद्ध आर्वर्तन प्राचारि विद्वाल मी दली कालने हुए । इनके हैं प्रश्न कराए मा अन्य बारार्ज की नहीं मतीब होते हैं । वंदररेख श्रं कृत्व वृत्तरच सन्तर्वकर वृत्तीवीमूनि वरम्यानी

(७१९-७६ 🐔) के बोबवाचीय बाह्यवरातमें वंगारण क्रमी। हर्जुन की चरन कीवाफो पहुँच कथा। इन क्षमव वर्गमित राष्ट्रपूर गरेच क्षमी स्रांता वहानेमें नक्षण में बीर पामुक्त बसाद सक्के अहारोजे बंगल में कारून मंगोंको साधिके बाद अक्टी वृद्धि और तमुद्धिके बहारेका अक्टर निम बरा । भीपूरम योग्य शीक्षिपरामण दर्व धर्मारना बावद वा । शताओं और राष्ट्रकृति को कई युद्ध भी करने पहें । स्वामानि यो क्ली बुधी तथा पर्यावक लिया, बुक्षमें प्रस्तव-गरेख माध्य बना और बहरी रामका शतुक्तके हान करा। राजुनुर्शेषे प्रदारीका वी मोनुना बीरता बीर बुबिमलाने बाच निवारण करता यहा। वेन्द्र विके गुढ़ने महानती बावराको क्वते वरावित क्या वस्त्रजनातुका स्थित वार भी बक्के अपीन हुआ। विकासि बुद्धवें करर विश्वे अनुवार पाकर-गरेके की बराबिक्य करवेगर करते बराबादि क्यांचि बाच्य की। बीपाकर, कोरफूर्व और धारनेकरी कक्षके सन्य विकार में और बतना राज्य मीराना क्ष्माना । नारप्रकारेय राजविक्षेत्र पुत्रके वाच अपनी जानाचा विश्वह करके बीयुक्त मान्त्रपति वैशी सम्बन्ध समाना सीए फ्राइसक्य गायाम सम्ब में वैचीपर की जरवाचार रिक्के प्रवर्गीत ही पड़े में करना अन्य हुना, और

क्रमें काम ही मैंगोंनी शांतक क्षांतिहिका अनुशिर्मीया पुनक्तान हुंगा !

सादि कई स्थानोंके भग्न जैनमन्दिराका जीर्णीद्वार हुआ। गंगोंके सधीनस्य वाण नरेश भी जैनधर्मके भारी भवत थे। ७५० ई० के लगभग बल्लमलई-में जैनमुनि अञ्जनन्दिने आचार्य भानुनन्दिके विष्य और वाणनरेशके गुरु देवसेनको मृत्ति स्यापित की थी । इस समयके लगभग व्यवणनेलगोल प्रशस्ति-के आचाय प्रभाचन्द्र एक महान् धर्मप्रभावक एवं राजमान्य गुरु घे। विमलचन्द्र, बद्धकुमार सेन, परवादिमल्ल, सोरणाचार्य, पूज्पसेन, अनन्त-कोत्ति प्रथम, बृहद् अनन्तमोर्य, महान् नैयायिक स्वामी विद्यानन्दि आदि इस कालमें कर्णाटक देशके प्रसिद्ध जैनगुरु थे। नर्रामहपुरा ताम्रशासनके द्वारा इस राजाने तोल्ल विषयके जिनमन्दिरको वान दिया या। ७७६ ई० में उसने श्रोपुरके पादवं जिनालयके लिए दान दिया, सम्भवतया इसी अव-सरपर उक्त जिनालयमें राजाके समक्ष हो स्थामी विद्यानन्दिने अपने प्रसिद्ध श्रीपुरपार्श्वनायस्तोत्रकी रचना की थी। इसी वर्ष इस नरेशने निगुण्ड प्रदेश-में स्थित पोष्णिलस्थानके लोकतिलक-जिनालयको कई ग्राम प्रदान किये। इस जिनमन्दिरका निर्माण कदिचव नामक राजमहिलाने कराया था जो पल्लवाधिराजको पुत्रो थी और निर्गुण्डराज परमगुलको रानी थी। इस निगुण्डराजक पिताके गुरु विमलच द्वाचार्य ये जिन्हाने इसी गगनरेश श्रीपुरुप 'शत्रुमयंकर' की राजसमाके द्वारपर परवादियोंके प्रति शास्त्रायंका खुना चैलेंन लिखकर लगाया था। इन्होंके किसी विष्य-प्रशिष्यकी उपरोक्त दान दिया गया प्रतीत होता है। महान् तार्किक स्वामी विद्यानन्दिका साहित्यिक जीवन और आचार्य-काल मी इसी वर्षसे प्रारम्म होता है। श्रीपुरको ही उन्होंने अपना निवास स्थान बनाया या क्योंकि इसी समयके छगमग उस स्पानके निकट शृगेरीमें शंकराचार्य और उनके शिष्य सुरेदवर अपने वैदान्त दर्ग न एवं नवीन घामिक आम्दोलनकी प्रधान पीठ स्थापित कर रहे थे। विद्यानन्दिके प्रमाव, प्रतिमा, सिहण्णुता एव सीजन्यके कारण ही शंकरा-चार्य और उनके सगठनका सारा कोप वौद्धोंको सहन करना पडा, जैनोंके - भाष उनका सीहार्द बना रहा।

चारका परित्यान शरके जीर पुत्र विचनार दिलीय वैनोजकी विहास देशर सैननुदर्जीक निश्च क्याबीन जावकरे अन्ते वर्गतावरमें बैद मील निजाना । सम्बर्गामा ७८८ ई. के सन्तर्भ वसकी मृत्यु हुई । थोपुराहे बीन पुत्र में, बिदमार दिवीन बैनीत मुख्यार युवरण बीट विकासित । रियारे बरराना विश्वार दितीय वेशीत (wat-८१५ ई.) राज [वा] बह इन बनव बुझ हो पका वा निवाके शामकालमें करें हैं हैं नद रूपुन्दरका बालीय धावक था । बक्के जिहाननपर मैठी ही एन्ट्री कृति पुर-पुत्र हुवा । प्राथने साथे वाई गोलिन विद्यालये बारहर धार (स्तरू दिया। विकार वीरिवास वहारू वा वर मुले मेंगरान्तरर बाहतव किया और ७८४ हैं में दिश्यारणी हराबर वादे कर किया । उत्तवा अधिकांत्र औरच राज्यकोंके अचीत्रार्वे ही बीटी । शास्त्रमें १८४-८८ है में अनुबना कुछ बन्ध बंदराविका बलार पर वद्वारान्य विषयात्का पुत्र कृष्याव वार्यन्द्व वस्त्रे शिवाकी बोरवे याग करता रहा । बद्धका पाना दुव्यगार दूपरूप बद्धका सहायक मा । कर्प र्वे में पाना प्राप्त करनेपर राष्ट्रकृत बील्ला कुरीबने व्यवसारको मुना कर दिशा और इब पराक्रमी नंको बस्तमेता राज्युकर जानूसर बीर हैर्सीके रिज-बंबको क्यांत्रित किया। वेरिके विका क्येक्नियो बहावता को ध्येर पत्कर्गीको सामद निम बनाता हिन्तु पत्कुकृतीने बडे फिरवे गण्डे क्या क्रिया। ८१ है के बनवर बहु फिर मुख्य हो क्या। क्या भीका-अभने वर्क पुत्र गुत्रराज वार्तिह और बाई दुरस्वारणी कृत्र ही नवी मधीय होती है। और वस्तिन क्योंने चनका होतारा माई दिवस-मेल रमरिकन प्रकार सहारक रहा । अक्षा ८१% हैं में निवसारमें कुनुसर वस्ता कई विवसाहित राजा हवा किनु बुस्त काली तृत् हो नदी बीर कहना पुत्र राजनहरू सरकात्व जनन (८१५-८५३ ई.) मूच मंदराज्यका त्यांनी हुआ । वसके बाय-ही-बाय विषयारका द्वितीय *** वास्तीय इक्सिन्त । एक भी

बन् ७३० ई. में ५. वर्तने अतर राज्य वन्तेके बनरान्य मीतुराने

पुत्र और मार्रीतहका छोटा माई पूर्यापित प्रयम अनराजित मी राज्यके कुछ भागपर अधिकृत हुआ और गंगवत फिर एक बार दो शाखाआमें विमक्त हुआ।

इसमें सन्देह नहीं कि शिवमार मारी योदा और पराक्रमी था, जैन-धर्मका भी वह महान् संरक्षक एवं मन्त या। वह स्वामी विद्यानन्दिका क्षात्रयदाता या, उसका पुत्र मारसिंह और मतीजा सत्यवाक्य भी उनके भक्त थे। इन गगनरेशोंके नाम-सकेत विद्यानिन्दके विभिन्न ग्रन्योंमें पाये जाते हैं। शिवमारने श्रवणवेलगोलके छोटे पर्वतपर एक सुन्दर जिनालय भी बनवाया या तिसे शिवमारन वसदि कहते हैं। ७९७ ई० में युवराज मारसिंह होकत्रिनेत्रके सेनानायक श्रोविजयने श्रीविजय नामक सुन्दर जिनालय राजधानी मा यपुरमें बनवाया या, उसके लिए युवराजने विपुल दान दिया था और कुन्दकुन्दान्वयके गुरु प्रमाचन्द्रका सम्मान किया था। ८०० ई० में युवराज मार्रांसह और उसके चाचा दुग्गमारने अजनेय नामक मुन्दर मन्दिर बनवाया था । गजम दान पत्रके द्वारा इसी समयके छगमग इस शासकने जैनगुरुशको और भी बहुत-सा दान दिया या तथा तन्दि पर्वतपर आचाय कुन्दकुन्दका स्मारक मी वनवाया या। शिवमारके प्रातीय शासक विद्रिप्स और विजयस्वित्यसेन भी उसी कालमें जैनमन्दिरींका निर्माण कराया और उनके लिए दान दिया था। ८०१ ई० में वसवट्टिके ईरवर जिनालयका निर्माण हुआ। ८०२ ई० में राष्ट्रकूट सम्राट् गोविन्दं तृतीयने गंगराज्यमें मा यपुरकी उपरोक्त श्रोविजय बसदिके लिए मन्ने दान-पत्र-द्वारा दान दिया और उदारगणके जैनगुरुओंका सम्मान किया। ८०७ ई० में राष्ट्रकृट गोविन्दके माई कम्बने चामराजनगर दानपत्र-हारा अपने पुत्र राकरगणकी प्रार्थनापर सालवननगरकी योविजयबसदिके लिए फुन्दकुन्दान्त्रपके कुमारनन्दिके प्रशिष्य और एमाचार्यके शिष्य वर्षमान गुरुको दान दिया था। गोविन्दके कदव दानपत्र (८१२ ई०) से विदित होता है कि उस समय गगराज्यमें राष्ट्रकूरोंका प्रतिनिधि चाकिराज या निष्ठको आर्थनापर सामाने बीक्शामके बैन-मन्दिके न्य स्प^{र्दी} धंपके पुर वर्षपीतिको राम दिया या । विवयान गारी विज्ञा और प्री मी का कह एउक्जीको कानिमुख्यत अकरमका वरिवास और बडाउ रम्बरा बर्ची सी वा ।

मूच याणाने धिनवारका कत्तर्शानकारी राजनक शतकार व विवर्षे माध्यस्य माध्यस्य विद्यालनियां महरवपूर्ण बल्पीकी रचना की लाने पूर्वेगोडी पार्ट गई थी जैनमर्नदा अन्त गा । इत्यो कामार्ट उद्देवे संस्थानार राज्य करनेवामा कृष्णीर्थात प्रथम सहग्राधित जी वहा स्राहरी मा । बन्ने बापोंने वैदो को चायुक्तीं निरम्तर तुत्र पान् रच[ा] हारे तिस्त्र से बान राज्युवारोंको करन से और सक्तांकि अपूर्वनके सामान मरेब नरमुख दिखीकरी कराये हार थाँ । पुत्रमें ही बनवी मृत्यु हरें । रहे राजाने तुप जैनानार्थ अरिक्टीन में १ बनके क्यानिमरमपूर्वण देहरात्राने क्षम पुन्नीर्रात और क्षकी सनी क्षरित्या अवदर्शकोंको प्रश्नी प्रवास स्वयं काल्या हुए थे। वसके तुम वार्याद्वने ८९३ हैं ^ह विन्दुर वाजाननाय कन दिना या । क्वरा पुर कुमीर्पा विशेष देनि गण्ड क्ष्या रोज नामिकांच भी जैमसकी बन्त में । में राष्ट्रकूट हाना बारमध्य हो नवे में । इसके बचरान्त वह ब्याबा बसान्य हो नदी ।

मुख्याचार्ने राजवाण बालवालकी समझे संस्थेती सनित्र और बर्मुद्रिया किरते ज्लाव शास्त्र हुया । ब्राईड वर्शवर: बैडनेडे बर्गन में पानकी विश्वति वद्ये श्रीवादीक की-क्य और श्रादकारीको स्थान करिके मीर बुलरी ओर बालकरमार क्ष्रें गीवान बावन्त्र क्षत्र रहे है। बक्ते वार्ते वरेक्की नर्रााज्य करके क्षत्रका स्थल किया, नीकव्यानिशासकी बहुनके क्षा^त अपना और बारची पुत्रीके साम सबका निवास करके वस्त्रव सोबन्गोंकी निर् बनाया । चतुनुबन्धि काण स्थाना निरुत्तर नुब बनाना रहा । किन्तु सम्बन समझे रहतेके कारण राजाकुर सकाद अजीवनर्ग जंदीके तिरह कृती साँठा क्यों में बचा बका। रावण्याने बचारी बढ़ाँगर्फ वितार राजाने के बरणानी

पर्वतपर गुकाएँ निर्माण करायों और उनमें जिन-प्रतिमाएँ प्रतिष्टिन करायों । उसके गुरु बालचन्द्रके शिष्प आयैनन्दि ये । सम्भयतया यही पत्रालमालिनी-कल्पके रचिवता थे। राचमल्लके बाद ऐरगंग नीतिमार्ग प्रथम राजा हुआ। उसकी बहुन जयहने पललब नोलम्बराजसे विवाही थी । अपने पुत्र गुत्रराज बूटुन (मृतुन) का विवाह राष्ट्रकृट अमोधवर्षको काया चाद्रवेलकाके साय करके उसने राष्ट्रकृटोको भी मित्र बना लिया, यह मैत्री स्वायी हुई। बूड-सर जिलालेम्बमें इस नरेशको 'परमपूज्य अर्ह्युमट्टारकके चरणकमलोंका भ्रमर निता है, उसी शिलालेखर्मे पुबराज मृतुगेन्द्र बुत्तरस गुणतुरंगको भी परम जैन लिसा है। उसी विलालेखके निकट राजन् मीविमार्गको जैन सस्लेखना-का प्रस्तरांकन भी मिलता है जिसमें उनका विस्वासपात्र सेयक अगरय्य उन्हें सम्हाले हुए बैठा है और सम्मुख धोकमग्न युवराज खड़ा है। इस राजाने अनेक युद्धामें बीरताके साथ विजय भी प्राप्त की बतायी जाती है, सम्भवतया वे युद्ध इसने राष्ट्रक्टोकी सहायताके लिए किये थे। नीतिमार्गन ८५३-८७० ई० तक राज्य किया । युवराज भूनुगेन्द्र सम्भवतया विताके समाधिमरणको देखकर विरन्त हो गया था, अत नोतिमार्गके परवात् चसका दूसरा पुत्र राचमल्ल सरमत्रावय द्वितीय (८७०-९०७ ई०) राजा हुआ । यह भी सम्भव है कि भूतुगेन्द्र राजमल्लका छोटा भाई हो और वयों कि वह स्वय निस्सन्तान पा अत उसके समयमें ही वह पुवरात्र कहलाया हो । राचमल्लके धासन-कालमें भूतुम कोगुनाह और पुन्नाहका बासक रहा प्रतीत होता है। इस राचमल्ल सत्यवास्य द्वितीयने सन् ८८७ ई० में बैलर ताम्र शासन-द्वारा पेस्नेकडगके स्विमित सत्यवाषय जिनालयके लिए शिय-मन्दि विद्यान्त भट्टारकके शिष्य सर्वनन्दिको बारह ग्राम प्रदान किये थे। इन दोना ही भाइयोंने वेंगिके चालुक्यों, पाण्डघों, पल्लवों आदिके साथ अनेक युद्ध किये और प्रवासनीय विजय प्राप्त की । राचमल्लके जीवनमें ही भूतगको मृत्य हो गयो अव भुतुगका पुत्र एयरप्य ऐरेयगव नीतिमार्ग द्वितीय सत्यवाम्य महेन्द्रान्तक युवराज हुआ और ताऊकी मृत्युके बाद (९०७ ई० में) राजा हुना । बनुषा विषाह चानुषक-राज्युवारी सकनाने वान हुर्य था। भरमार्थित निषक्ष मुख करने जनमें जर्मक वर्ग बोर्ट में। इन राह्में मुदद्दरिक और बोरमकुक निय-वानिरोंको दान दिवे ने । प्रवदा दूर हो कत्तराधिकारी दरिववेर्डेन नर्रावह बादवापन वा दक्के बीहे कमर है राज्य शिया, ६२ हं के समावत इत्तरी मृत्यु ही वती। इनके पुन प्राथित संबो दिनवचन्त्रायामें से । इत रामाके थी पूर थे, प्रयमान बलकार क्रुप्ति और सुनुसर्वत वर्गत । राजनात बावसास्य क्रुप्तित ६२ के ६१८ई क्क राजा रहा । इक्के वॅरिके वाध्यवर्गियो वृत्रने वस्तित क्रिया । एवं समय चापुर्द हान्य कुछेरने शन्तम व्यक्तिको हमक साह्य और मेर सम्बन्ध पर थी माध्यम दिला । बुधवे राजगल वास वचा । तर्परान्य राजपूरी की ब्रह्मकारे बढ़ना नाई बुचून दिवीय यंत्र वेंसेन शास हुआ। ६६८-५६६ हैं। एक कारी राज्य दिया । मुनुषरा निवाह राज्युन्द्र बसीवर्श इतिसी कुरी और इच्य कुरीवकी गारी गहन देशके बाव हुआ का अबका दुवस रिशाह सक्त्यरको नासक 'चनपुत्राधिक हुना था । छन्तपुर चारपुत्राधिक बाद बढ़ने कृषिपेरे, वेक्सोबा, विजुक्त वर्षे गारि विचर खेली हार्थ कि में । यह राजा को बहुत नराक्रयों का जानेक मुद्दार्थि एक्से विकार प्राप्त की भी । बहु कुछ प्रमानकाती कावक का और वैकार्यका परम प्रका का बैनवर्गस्त्ये और दुवर्गोको करने समेश क्षम रिवे वे । वैनक्षित्रास्त्रम वी बहु परिवास ना और परशायिनीके प्रक्रमार्थ परनेता जो क्ले. यात या । कृत की प्रतिमुक्ति कान करके. यासवार्थके कालेक विकार है। वर्ष १३४ के बच्छे पुत्री राजापके पता पकता है कि बनकी एक सन्दे रागी रिवकनिवराने ऐसी क्षत् वीनवार्तिकाओंके किए को बराबार्वे कीच वी बा

इस लेखसे यह भी प्रतीत होता है कि सम्भय है अपने भाई रायमन्छ तृतीय-की मृत्युमें उसका भी हाय रहा हो । उसके कुछलुर साम्रपत्रसे प्रकट है कि उसके परिवारके खाय व्यक्ति भी जैनधमके भवत में। राजाकी बढी यहन पमन्त्रेने, जो वहो विदुषो थो एव पोदियर दोरपय्यको रानी थी और गुणवन्द्र भट्टारक तथा आधिका नाणव्येकन्तिको शिष्या थो. तीस वर्ष पर्य त जैन आधिकाक रूपमें तपस्या को यो और अन्तमें समाधिमरण-द्वारा उसकी मृत्यु हुई थी। राजाके हृदयपर इस घटनाका प्रभाव पढा। बुदगके स्वयके तथा उनसे सम्बन्धित अन्य भी कई अभिलेख मिलते हैं। बुत्ग द्वितीयके पहचात राष्ट्रकृट-राजकूमारी रेवांसे उत्तन्न उसका पुत्र महलदेव (९५३ म ९६१) राजा हुआ । उसके अभिलेखोमें उसे 'जिनपदभ्रमर' लिखा है। इनका विवाह अपनी ममेरी बहन, राष्ट्रकृट कृष्ण तृतीयकी बन्या बीजन्त्रे-के साथ हुआ था और उसके उपलक्ष्यमें मुख्लका एक राजच्छात्र भी प्राप्त हुआ था। उसकी बहन सीमिदेवीका विवाह राष्ट्रकूट कृष्ण तुतीयके पुत्रसे हुआ या जिससे इन्द्र चतुथका जाम हुना। राष्ट्रकृटोंके साथ कई पीढ़ियोंस चले आते इन विवाह-सम्बाधींकी शृहसलाने गगवंशको शक्ति काफ़ी बढ़ा दी थी और इसोस गगनरेश वैंगिके चालुवर्गोंकी बार-बार छका सके, पल्लवोको दवाये रख नके और चोलाकी बढ़ता हुई धवितका निवारण कर सके।

महलके पहचात् उसका सौतेला भाई मारसिंह पल्यवमल्ल नोलम्य-कुलान्तक गृत्तियगग (९६१-९७४ ई०) राजा हुआ। उसका राज्य-विस्तार बहुत बहा था। यह इस बहाका अन्तिम महान् नरेश था। राष्ट्रकूट गगोको अपना अधीनस्य सामन्त समझते थे किन्तु वास्त्वमें इस कालमें गगनरेश ही राष्ट्रकूट-साम्राज्यके सरक्षक हो रहे थे। मारसिंहके गगकन्दर्प, गगविद्याघर आदि और भी अनेक विरुद्ध थे। उसने मालवापर आक्रमण करके सियक परमारको पराजित किया। अवणवेलगोलके कूगे प्रह्मदेवस्तम्भपर उस्कीणं इस नरेशको प्रशस्तिसे पता चलता है कि उसने इप्य शुरीवके किए बुजर वैश्ववी विजय किया हव्यके वधी **ध**र्म स^{म्हा} une fent femantigt feredfelt fum-fam fent umfell नक्रमधीने नप्रमधी एका की - विस्ताहार विरक्षती कुछ किया - बनशाधीने रासमोको नराज्यि किया, नानुर्रोका दलन दिना कच्चेत्रके सुद्ध प्रदेशे इंस्टम्य निया अपर राज्युमार गरवना बाय विज्ञा चैर क्षेत्र समाब और सरकारीका राज्य विकास वास्तुवन विकासितका अन्त क्रिया प्रत्यारे । इन विजयोग्य बाकेस असी हुए केसरें किया है कि गार्राहरूने सेंजपर्वत अनुरव बचीय किया था और वह स्वानोंमें वर्धकीय जिल्लामिर वर्ष मार्न स्टन्त तियाँच करावे थे । इस प्रकार परितर्शक बर्वजार्य करते हर दृष्टी देश क्यें पूर्व अक्ने राज्यका परिशाय कर विद्या और क्यादीन अजने कार्षे देश बीवन किराया । बनावे तीथ दिशको बानेकना इयन्ताय बैडी पुरने बक्त जल्ले पुर बरिवर्णन बहुररकके परवॉर्वे बन्धविवरण किया। हुउक्त शामनाके अन्य है कि "बहायन वार्याख्य वरदिय-वावालें सामन केटा वा नरभर नरस्त्रीमा स्थानी वा खरवर्गीसी किन्दा सुनवेर्वे वर्वेदर वर्वे, सामुको और प्रश्लामीको दान क्षता चरनाक्लोको श्रवन देनेने वर्षेत्र क्षता रहता या i¹⁷ वह शार्व एक क्रम्पप्रीतिका विद्वाल या भाग वर्ष और केर्बिन धार-वेदे करिनोंने कक्को अदिमानो पुरतकको प्रकटा को है। पुरर्गोंकी बद्ध बद्धा स्निद करता या । बसके यूनपुर ब्राह्मय जीवर सहके हुन केरी-बार्वे मुंतार्व वारियंक्य वह में। यह शायार्थ लेखाना पर्वप न्यान बराक्टच राजनीति वाणि निर्मेश निर्मेश बहुरशीका बोर मेड क्टि दे। यह मरश्रवराज कृष्य-वैदे लरेखीं एवं चनके शुर्व्यक्रियों और व्यक्तीं हारा बम्मानित हुए में । भारतिहने राजुनुहोशी क्रायतमय तम बहा^{क्रा}र की। इक्षा है में काले राजरशाय तिया का बीट इक्ष है में दर्प श्चार्य वैनक्षी नृत्व वानी जी । मार्थेडर्फे क्षत्रान्त वंतराज्यमें बहुबही क्षेत्र वसी। एक और बतररतीं पापुन्नोंकी और बुक्ती और पोन-बत्रामीली मात्री हैं।

१ भारतीय इतिहास । एक दर्षि

त्यत शक्तियाँ घी, राष्ट्रकृट साम्राज्यने दम तोड दिया था और र्वे कोई योग्य व्यक्ति दिखाई नहीं पड रहा था। गग पवलदेवने, नारसिंहके अधीन सेब्सी विषयका शासक या और सम्भवतया वशसे ही सम्बद्धित था, गगराज्यके बहुभागपर अधिकार कर लिया, कि उसके ९७५ ई० के मूलगुष्ट शिलालेखसे विदित होता है, रू २३ वपके मीतर ही चालुक्य तैलके सेनापित नागदेवने उसे जित करके युद्धमें मार डाला। पचरुदेव मारसिंहका न्याय्य राधिकारी नहीं या वरन् राज्य-अपहत्ती था। मारसिंहका वास्तविक राधिकारी उसका छोटा माई राचमल्ल सत्यवावय चतुर्थ था. पवल ने उसे आच्छादित कर लिया या किन्तु पैक्लको मृत्यु (९७६--। ई०) के बाद राचमल्ल ही वस्तुत गगराज्यका अधिपति हुआ । सन् 9७ ई० के उसके दो अभिलेख न जनगढ़ और मन्दयसे प्राप्त हुए हैं। १२२ ई० के सिद्धेश्वर शिलालेखमें इस राचमल्लको मारसिहका पत्र न्सा है। राचमल्लके राजत्वका **बात ९८४ ई० में हुआ। ग**ग इतिहासके न्ध्याकालमें अध्यवस्या एव विपत्तियोंसे मरा यह युग राचमल्लके अद्वितीय न्त्री चामुण्डरायके कारण अमर हो गया। चामुण्डराय सम्भवतया गगदश-ही उत्पन्न हुआ था। वह एक महान् राजनोतिझ, सुदक्ष सेनानी, धीर ोढा, परम स्वामिभक्त, कन्नड, सस्कृत और प्राकृतका महान् विद्वान्, कवि गैर लेखक, विद्वानों और कलाकारोंका प्रश्रयदाता, अद्भुत निर्माणकर्त्ता वीर जैनधमके सर्वमहान् प्रभावकोंमें-से या किन्तु गगोकों ऐसे व्यक्ति हा लाभ उस समय हुआ जव कि उनका सूर्य अस्ताचलगामी था। ऐसी विरुद्ध विषम परिस्थितियोंमें भी इस द्रुत वेगसे पतनशील वशको रक्षा एव अभिभावकता च।मृण्डरायने सफलतापूर्वक की और साथ ही दक्षिण भारतमें जैनधमकी स्थिति भी सुदृढ़ कर दो । **चामुण्डराय राचमल्ल चतुर्यका** हो नहीं बल्कि उसके पूर्वेज मार्रीसह और उत्तराधिकारी रायकस गंगका भी राजमन्त्री और सेनापित रहा प्रतीत होता है। अनेक युद्धोंमें सराहनीय दिनव प्राप्त करके क्षमें नीरवार्त्त्रण कारहेकारी गीव्यन्त्रभ्यक्षण को स्वेतन किया प्राप्त प्रति का शिव कि ने वह बड़ा क्याहिए और वर्त्त्रण के क्षां क्याह्मण पूर्ण विरादात के हिंद्य क्याह्मण क्याह्मण क्याह्मण हार्य हार्य की विरादा के विरादा के विरादा के विरादा के विरादा के व्यवस्था प्रति कि विरादा के व्यवस्था क्याह्मण के व्यवस्था क्याह्मण के व्यवस्था क्याह्मण के व्यवस्था क्याह्मण क्याह्मण

पेप राजा हुआ। किन्यु ज्यां भी विश्वणान या और व्यक्त निर्मा के वार्यों के वार्यों को स्थान करने के कार पानकों निवस प्रकार करने पर किया था। वार्यों के मन्त्रे में कार पानकों निवस प्रकार अपनास्त्र करना किया था। वार्यों के मन्त्रे में कार पानकों निवस प्रकार अपनास्त्र कर पानकों निवस के मन्त्रे कर के प्रकार के पानकों के पानकों कर के प्रकार कर के प्रकार के प्र

भी एक छोटे से उपराज्यके रूपमें चलता रहा प्रतीत होता है । अकमके गद नीतिमार्ग तृतीय राचमल्ल राजा रहा प्रतीत होता है। १०४० ६० के एक घिलालेखते ज्ञात होता है कि इस रामाके गुरु मुलसघ द्रविद्यान्त्रय के वच्यपाणि पण्डित थे । १०२२ ६० के एक शिलालेससे उस समय एक गग परमानदिका राजा होना पाया जाता है जो सम्भवतया नीतिमार्गका पयवर्ती चक्त राक्षसगग ही होगा। एक गंग राजकुमारी चालुक्य सम्राट सोमेरवर प्रथमको रानी और सुप्रसिद्ध विक्रमाकरेष (१०७६-११२६ ई०) को जननी थो । उपत राचमल्ल नीतिमागके बाद रायकसगग द्वितीय राजा हुआ। उसकी पुत्री ही चालुक्य सोमेश्वरसे विवाही प्रतीत होतो है। इस रायकसर्गंगके गृह जैनाचार्य अनन्तवीर्य सिद्धान्तदेव थे। उसका उत्तरा-घिकारो एव छोटा भाई निलग्ग भी परम जैन या। सम्भवतया इसी गंगनरेशने सन् १११६ ई० में मैसूर प्रदेशसे चोलोको निकाल बाहर करके अपने स्वामी होयसल नरेवा विष्णुवर्धनका साम्राज्य स्थापित किया था। इस कलिगाके ही शासनकालमें उसका प्रधान सामन्त भुजबल गंगपरमादि षम्मदेव या जो जैनाचार्य मुनिच द्रका शिष्य था जैसा कि सन् १११५ ई॰ के उसके एक अभिलेखसे ज्ञात होता है। मुनबलका पुत्र निप्तयगंग आचार्य प्रमाचन्द्र सिद्धान्तका विष्य या । निप्तयगगके सन् ११२२ ई० के शिमोगा-तालुक्केके सिद्धेरवर मसदि धिलालेखसे गगोके पूर्व इतिहासके सम्बन्धम अनेक रोचक तथ्य प्राप्त होते हैं। शिलानेखसे यह भी शात होता है कि इस राजाने मण्डलि विषयके एहेदोर तालुकाके अन्तर्गत मण्डलि पर्वतपर स्यित उस प्राचीन जिनालयका कीर्णोद्धार कराया था जिसे गवधंश-सस्यापक दिष्टिंग और माधवने बनवाया था, जिसके छिए सभी गग-नरेश दान देते रहे और सरक्षण करते रहे थे, जिसे कालान्तरमें काएसे निमित्त किया गया था और जिसे मुजवलके पिताने पुन निर्मित कराया या तथा जिसे मुज-बलने पट्रदइ बसदि (राज्यमौलि मन्दिर) नाम देकर उसे राज्यके समस्त मन्दिरोंमें प्रधान पद दिया था, और यह कि उसी बसदिको अब भुजबलके पुर नश्चित्रपंतने पाराय-निर्वित कराकर वितृत राज रिया । वर्तेत्रपंतरे चेन्स्वेती प्रवास्ताके निए प्रशीशः शब्दः विकर्णसामा भी वनसर्वे हे ! प्रवक्ते भाई बाजबंदने पूरानी गोध्यर जंब-बिलातम दिशीय क्यामात्रीर

भाने पुत्र बायरपात्र देवको वात्र दिया । दम प्रकार बोलों बीर होएवबीके काराजीके कार्व बंबरीय प्रक

बार बेरवामा नरहार विवतनहर यात क्षत्र अन्ते ग्रहे। इस बेडवा सन्तिम प्रतिनिरं वस्मपूरका लंग गावा रहा प्रतीस होता है विक्ने कारें। के जुरानेके निवाद विवयत्त्रम् बालक राजुले अपनी स्थिति वर्णाय हुति कर जो की बीर जिवका क्षत्र अल्लुक रिजन्तवर-वरेश कुलकेर स्थ

महान्त्रे क्य १५११ ई. वे किया वा व बंग्यंक्यो पूर्वी कामा ५६० वक्तमधीन ही वाजिन देखार समा कर रही थी । इस मरेरोंने नकर्नत कराबि कारण बी.बी. नंतर्वरी

प्रयानिक निया था। अनेक शानत्त्व निसाये और बनेक क्रेय-ग्रीय देनते 🎁 विकासिको एक प्रकृत पार्ट्यको अपने बङ्ग वंदा ११वीं गार्टी तक काली रहा । इत पूर्वी बाबाफे राजराजा शासक अन्तित र्यश्रदेशने बोक-गरेब रावेन्द्र चोल देवरी पुत्रीके विकास किया । अवके पुत्र जलनावर्ष्ट्र चौर्कार (१ ०८-११४२ १) में पूर्वने बारकके बराकून राजाओं कुन स्वासि

रिया और नरेपनमें पैनिके जानीन्तुच राजापी बहारा दिया। हम पोर्ट मंत्रका बंध १९वीं बळीके लाग तथ जात्या रहा और शासका मुक्तमार्थीने क्षमका क्षम्य किया । मंगीकी यह नुवीं श्राप्ता की बेशवर्गके प्राप्त क्षम मीर वरिष्णु परी । परिपती शासापी शांति वह वर्ष पूर्वी बाधापी ध्यमर्ग और पुष्टमा बीनहीं प्राक्ति भी अमैक धने इब मनेने

अनुसारी रहे और वतके तथि करार वर्ष वदिक्य तो प्रायः वनी रहे। मेंगोंची पाविध्य पावांक संस्थात शासका आदि कामन भी सैन से ?

इस मकार परिचा बारतका बंदबंध एक क्वॉबिक दोनंत्रीची चार्यब मा शीप-पीयमें वक्ष्में बाजाया-बांस्तरा क्या की बारण किया थिए

406

पाल तक एक महत्वपूर्ण एव वलवानु राज्यशन्ति तो यह बना ही रहा। उसकी पैरवि, फैरवि, पासिण्डि, पूर्वी या कॉलगी आदि अनेक शालाएँ-प्रशासाएँ हइ, गगर्वशमें उत्पन्न अनेक व्यक्ति स्वय गगराज्यके तथा अप दक्षिणो राज्यवंशोंके सामन्त सरदार भी रहे और इस वशका कुलधर्म एयं वहचा राजधर्म भी जैनधर्म ही रहा निसके धरधण और प्रभावनाफे लिए गगवशके पुरुषों, स्त्रियो सामन्त सरदारा, राज्यकर्मचारियों और जनताने निरन्तर यथाशयय उद्योग किया । फलस्वरूप जैनाचार्योने कप्रष्ट, तमिल, सस्कृत, प्राकृत-विभिन्न भाषाओंमें विविधविषयक विपूल साहित्यका सजन किया, लोक शिक्षामें प्रधान योग दिया और राजाओंका पय-प्रदर्शन किया, जनताके नैतिक स्तरको चन्नत बनाये रखा और अनेक लोकोपकारी काय किये। साथ ही देशमें रूप एव शिल्प-म्यापत्यकी अनेक गुन्दर कला-कृतियाँ निर्मित हुई । लक्ष्मेश्वरकी रायराचमस्ल बमवि, गगपरमादि चैत्यालय, गगकन्दर्प चैत्यालय, तलकाह और मायपुरकी धौविजय वसदि, सत्यवाषय जिनालय, श्रवणवेलगोलकी शिवमारन यसदि आदि अनेक भव्य मन्दिर इस तथ्यके प्रमाण हैं।

अध्याय ८

हासिय सारत [२] पूर्व सम्मानने इन रेख पुके हैं कि शरी शती हैं के सम्मातक सीवर मारतने व रेजक आग्नम सरावारतीके अञ्चलका सन्त हो जुड़ा का वर्ण

केनके नाम प्रशास्त्र वाही कामानुस्त कराहर कामानेकी तथा वी कार्य ही मुख्ये भी। तमिता देखके पाण्या और बीर बीच सम्ब वी सम्ब मेरे एक मननकारीन पाण दिखांकर पुत्र हुतकब हो पुत्रे में। बाद ही रूपे

वास्तीय इतिवास वस गी

अनुमार चाल्यवोदा मूलपुरुष अयोध्याते दक्षिण भारतमें आया मा। चालुस्य लोग अपने-आपको सोमवदी दात्रिय, मानव्यगोत्री सौर हारीसके पुत्र बतलाते थे । बराहको इ होने अपना राज्य-चिल्ल बनाया था । ५थीं शताब्दी ई॰ के उत्तरार्धमें विजयादित्य चालुक्य नामका एक साहसी सैनिक रहा प्रतीत होता है जो तलवारके द्वारा अपने भाग्यका निर्माण करना चाहता था। कद्रण्या जिलेके मुहिवेनि नामक ग्रामको जी उस समय पल्लवोंके राज्यके अन्तर्गत या, उसने अपना मेन्द्र बनाया और अपनी धरित बढ़ानी प्रारम्भ की । कि तु पल्लवोंके हायों युद्धमें उनकी मृत्यु हो गयी। उसका पुत्र जयसिंह विवाकी मृत्युके पश्चात् उत्पन्न हुना था । विष्णुभद्र नामक एक ब्राह्मणने उसका पालत पोपण किया इसलिए जयसिंहने विष्ण-वर्द्धन उपाधि ग्रहण की । वह भारी योद्धा या और सम्मनतया राजिसह और रणपराक्रमाक भी कहलाता था । युवावस्थामे महाकवि भारविशा मह मित्र और साथी रहा था। दुविनीत गगने जी उस समय युवराज ही या, जयसिंहकी वीरता और पराक्रमसे प्रसन्न होकर उसके साथ अपनी पुत्रीका विवाह कर दिया था। जयसिंह पल्लवेसि अपने पैतृक राज्यको जीवनेका प्रयत्न करता रहा, साथ ही महाराष्ट्रके राष्ट्रिकोंका कुछ प्रदेश छोनकर उसने वातापी (बदामी) की अपनी राजधानी बनाया। ऐहील और अलगतकनगर (अस्तम) उनके छोटे-से राज्यके प्रमुख नगर थे। पत्लव चण्डदण्ड त्रिलोचनके साथ युद्धमें जयसिंहकी मृत्यु हो गयी । इसपर द्धिनीत गगने अपने दौहित रणराग एर्रेयप्प सरयाध्यवको, जो जयसिहका एकमात्र पुत्र या और अभी नवयुवक हो था, प्रथय दिया और उसकी कोरसे पल्लव-नरेशपर भोषण आक्रमण किया। चण्डदण्ड युद्धमें मारा गया और दुविनीतने अपने नातो रणरागको उसके पिताके खिहासनपर विठाया भीर उसके राज्य एव स्थितिको सुदृढ़ किया। इस एर्रेयप्य सत्याश्रय रणरागके भुजगसेन्द्रकवशी सामन्त कुन्दशक्तिके पुत्र दुर्गशक्तिने पुलिगेरे (लक्ष्मेरवर) के शखतीर्थ जिनालयके लिए भूमिदान दिये थे। रणरामका पुत्र एवं बताराज्यिकारी कुनरेखी जबन बड़ा जार-अनाची बीर बोटा बलंड वा और वर्षाय प्रथ वातुवार्वसका कृत्वुस्य विज्ञानिक वा त्यानि ल नंपना प्रथम बाग्तरिक गरेव और साम्ब-स्त्यान्य पुनावी बर्गा (मुत्राप्त) प्रचम ही था । उक्की राज्यमें मैनवर्गता वर्णीय अधार ग्र कैन-पुरसौरा निरमार विहार होता का और वसके समेक सामन बराई बीर कर्नेशरी बेंग में । बाध सं अदेश (समृद्धर हैं) है बाउरार्म साने रागके ११वें पहने बसने बाने बैट्यमनंत्री बालान वर्तनकारें बद्दयोको सन्तरप्रकार (आस्त्र) में एक विशासका विश्वीत कार्ल मा और क्लेंड निए पाय-पान विका या और विकासिक अस्ति पटार

या जिनमें नमधोतन काशांके सैनानार्थ निक्रमन्ति, विकासार्थ जाती

मीर जिन्मानिक गानेल्वेख हैं। पानवानी गावानीनें सी वर्षके ब्यारी एक जिलानम तथा प्रचीय बीचा है। बायरदी और समस्यवस्तर व्यक्तिका देशील भी जुल्लेखी अध्यक्ते बतार्थे 🕷 पर प्रमुख क्षेत्र देश देन देश का । पूर्णनेत्री प्रधानत सामन ५६२ हे ५६५ हैं के सम्बन्ध कर पर मदीय होता है । इन राजाने अस्त्रनेष नव मी फिया नवामा बादा है। वक्ता व्यवशास्त्र बोचन कर्णा (त्यांतरो नुदृह वनामें, असी समारी बुरबित रसर्ग और का अध्वर तिथा राष्ट्रिकों करानों और सम्बर्धि प्रदेशों ने वरा-वर्गकर जन्मै राज्यका विस्तार करतेने ही मेता । इसके करान्य कारा और पुत्र कीरियर्जन् अस्य धना हुना मीर मी ५६५ के ५९७ ई. एक वक्षी राज्य दिया । इक राज्यों समेन हैं किने और पासूनवं राज्यका विस्तार किया । विशेषकर सल्याबीके करानी कींत्रको जीती, नक्तवाहीके नवीं शता वंशी और क्लूबीको परान्ति वर्षे क्लफे प्रदेश बीटी र नह शामा थी। सैनवर्यका अनुसानी था । वन् ५६४

है के जनमा करने संकलनियारि जिलेखा सार्विक राज मध्य 💯

भारतीय इतिहास वस सी

ज्यकालमें सन् ५८५ ई० में जनाचार्य रिवकोत्तिने ऐही जेके निकट गुतीमें एक जिन-मन्दिर वनवाया था और एक विशाल जैन विद्यापीठकी पापनाको था। ऐहोल (ऐबिल्ल या आर्यपुर) में स्वय एक वडा जैन हामन्दिर था जिसमें सहस्र फगयुम्न पार्श्व प्रतिमा स्यापित थी । ५९७ ई० कीत्तिवर्मन् प्रथमकी मृत्यु हुई । उस समय उनके पुत्रकेशिन्, विष्णुवर्यन गैर जयसिंह आदि पुत्र बालक थे अतएव उनके चाचा मगलीशने राज्य-. सहासन हस्तगत कर लिया और ५९७-६०८ ई० तक राज्य किया। गालीशने कलवरी-नरेश शकरगणके पुत्र राजकुमार बुद्धको पराजित किया श्रीर रेवती द्वीपपर अधिकार किया । सम्भवतया इसी राजाके शासनकालमें महाराष्ट् देशके अळक्तकनगर (अल्तेम) में चालुक्योंके लघुरूव नामक एक उपराजाको पत्नीने सुप्रसिद्ध जैनाचार्य भट्टाकलंक देवको जन्म दिया या । वदामोकी प्रसिद्ध गुकाओका निर्माण भो इस्रोके समयमें प्रारम्म हुआ । मगलीशके उपरान्त उसका मतीजा और कीर्विवर्मन् प्रथमका ज्येष्ट पुत्र पुरुकेशिन् द्वितीय सत्याश्रय (६०८-६४२ ई०) चालुक्य राज्यका स्वामी हुआ। अपने चाचा मगलोश-द्वारा राज्यापहरण कर लिये जानेके कारण उसे वयस्क होनेके बाद कुछ वर्ष राज्यसे निर्वासित रहकर विताने पढे थे । सन् ६०८ ई० के लगभग कुछ शक्ति सग्रह करके उसने मगलीश-को गद्दोसे उतार दिया और उसे तथा उसके पुत्रको राज्यस निकाल दिया। सम्भवतया इसी समयके लगभग मगलीयकी मृत्यू भी हो गयो। राज्यको गृह-राष्ट्रभाषि निष्कण्टक करके और अपनी स्पितिको सुदृढ़ एवं सुरक्षित करके उसने अपना विधिवत् राज्याभियेक कराया । तदुपरान्त उसने बाह्य शत्रुओ तया राज्य-विस्तारकी ओर ध्यान दिया। पूर्वेमें महेन्द्रवर्मन पल्लव कर्णाटककी ओर वढ रहा था और उत्तरकी औरसे हुए शिलादित्य आक्रमण कर रहा था। पुलकेशीने गर्गी और अलूबोंकी अपना मित्र और सहकारी बनाया, उसने बनवासीके अध्यायिक और गोविन्द नामक कदम्य नरेशोको पराजित करके कदम्योंको स्यतः य सत्ताका अन्त किया.

कॉकन एएं पुरेके बीचीं सचा लाड सुर्वर और बानसके शहारीय समम किया : ६१% वें में ही तिहतूर वर्ष श्रीनाम झोनती हराता करें मर्गुर्व मान्त्रदेशपर प्रथमे अविष्तर कर निवासीर मान्त्रदी राज्यमे वैतिमें बार्क क्षार्ट आई पुष्वविष्णुवर्णनको तालाँव यालक निकृत किये। बटी रानित वैनिते पूर्वी चामुरावयका, बी काणान्यामें बाजारि ही बंबने स्तरण हा नवा नानाक हुआ । पृत्रीयोने वांबोडे ब्यूंगार्सी प्रथम पानवका कुछ छाड पत्रम करके प्रावस चील, केरकके डील राज्यों के पन्तरोंके बावने बुन्त दिया बार अधीन प्रदान ही । ६२५ हैं में बचने देरानके बाह लुनसे दियोगके परवारमें जरने समाह देरें। वृष्टेगोडा नमकाबीव कतरारवडा स्थानी वालैस्वर--वालीजना पुटीन हर्गरवन शिनारित्य का । ५वनेसी कनका वचने अवल प्रतिस्थी का बनके तरके हो हमने राजादीके बैंगक पातके बाच अन्ती प्रदेश रिमी करके बन्ने काला निष बनाया चाव ही कॉल्स कीनलके करनार्थन देव मरेवरों मी अरधा नियं नमन्ता । चुनगार बीर वर्तन्त सेमी है सार्ति इक्ने रहिम आरावें अनेत करवेश कई बार बरल देना कि पुनवेबीको वर्तित सूर्व नराजनके नारम बसकन ही पर । हाने कर रिवय जाना करकेते वरवानु कुन्केधीनै वरनेस्वर, बचावि बारम की, वर्र मह एक नहानु बसाद था। नह नकता परित है कि हुई और पुण्लेकी मीन अवित्र नद्दान् वा । फिन्तु दश्में क्लेड व्हीं कि दारावितहार, वरित समुद्रित, तकार और तमान आदिने चानुन्त समाद नुस्केको समाम् हर्न वर्षको कम नहीं वा । पूर्ववर्षन गरि बीजवर्षका वारी अमर्वज वा ही कुल्ले की बीनवर्तना महान् चोचन था । विन्तु इन दोनों ही बन्नावींत होने इक बनानता थी. में बीजों ही बन्त धर्मवर्गक ग्रांत करनात बचार और वर्दिन्तु में । इक वर्तवर्ग-वनरविद्यानें की नुन्तेको इन्हें कुछ सार्व ही था। वन् ६६४ ई. में बसाद पुत्रतेशीने तस्त्री मिनानके कारान राजवानी नातादेवें वरेश किया। कतरवें काफे विकास सामाजनी

सीमा रेवा नदीकी स्वर्श करती थी और दक्षिणमें समुद्रते समुद्र पर्यन्त उसपा विस्तार था, समूद्र पारके अनेक दीयापर भी उपका अधिकार और प्रभाव था । सन् ६३४ ई० में राजधानीमें प्रदेश करनेरे उपरान्त ससाह पुरुवेशी द्वितोयका मर्थव्रयम कार्य अपने गुरु जैनायार्थ रविशीतिको उनके द्वारा निर्मित ऐहालके जिनमन्दिर एवं अधिष्ठानके लिए उदार यात देशन सम्मानित करनेवा था। इस समय मम्मयतया यहाँ गियो प्रयोन जिनालयका भी निर्माण हुआ था। रविमीत्ति नारी विद्वान् एय महाकवि ये। उनकी काव्य-प्रतिभावी तुला। गहावयि कालिदारा और भारियके गाथ की जाती थी। इस दानके उपलक्ष्यमें स्वय रिवकीत्तिने ही ऐहालके जिनमन्दिरमें उस्कीण सम्राट् पुरुकेशीयी यह विस्तृत, भाष एवं कलावण सस्कृत प्रवास्ति रची थी जो उपत सम्राद्के परित्र और कार्यकलापोंक लिए हमारा संबद्रपान ऐतिहा आधार है। इस कालके सबमहान् जैनाचार्य अकलंकदेव हैं जो स्वम रिवकीत्ति अपर नाम रिवभद्रके ही शिष्म रहे प्रतीत होते हैं। सम्राट पुलचे भोके बादरपूर्ण प्रथममें ही उनको प्रतिमा विद्वत्ता, वाग्मिता इस समय चमकनी प्रारम्भ हुई थी। इसी फालमें बदासी और अजन्ताके उन प्रसिद्ध गुहामिन्दरीका निर्माण हुआ जिनमें सम्राटके प्रथम जैन एव बौद्ध फलाकारोंने उन विस्वविश्रुत भितिचित्राका निर्माण किया जो अपने कलापूर्ण सौन्दर्यके लिए अहितीय हैं। इन चित्रामें कतिएय ऐतिहासिक दूरम भी हैं। इसी वर्ष अदूर (घारवाड) में नगरसेठ-द्वारा निर्मित जैनमन्दिरको समाट्ने दान दिया । सन् ६३८-४० ई० के लगमग चीनी यात्री हुएन सागर्न पुलक्षीके राज्य और राजधानीकी यात्रा की थी। जमके विवरणोंसे भी पुलकेशीकी शक्ति और महत्ता, राज्यका वैभव, समृद्धि और पान्ति, राजा प्रजा दीनोंमें ही निचाओं और कलाओंकी साधना खादि-का पर्याप्त पक्षा चल जाता है। इस घोनी यात्रीके ही विवरणोंसे इस वातमें भी स देह नहीं रहसा कि चालुक्य-साम्राज्यमें बौद्धोकी अपेक्षा जैनमन्दिरो. उनके निर्धय साधुओं और गृहस्य अनुपायियोकी सस्या कहीं अधिक थी।

s 3

बस्तुत: बासूबर सक्षाद वृक्षवैधीकी संबन्ध बाब स्टीविक्ट नहीं सम्बूध मान्त्रपे वर्षमञ्ज प्रजारों वर्ष गरेपीनें थी। बाही है। बल ६४० रै है क्षणपत क्षेत्र किर पुत्रोंने लंकान होता पता । पाक्षण नर्रावेड्चर्वन् स्पन्न बातकर अरेपके हार्वे कर्ज रिलाकी बच्च स्थर्न अपनी वय बयानपेंके भारत क्रफ्ट सुम्बदा । इतने पृत्ति-पृत्ति स्तित संबद्ध भी । यह सरहरू नी ताक्ष्में था । इयर पुक्रवेची पुरुषि निरान केवर कानियुर्व कार्येंद्रे रह वा और अन्तरवान हो वया । अल्. बम ६४१-४२ है में राजर मर्गीप्रदर्शने पासूनरीहर जीवन बाह्मन विमा । चरित्रक मनिर्वरक

बीर मुख्यर नामक स्थलांने कर्यकर भुद्र हुए । अन्तर्ने नुक्तेग्री स्टर्न मुक्रमें बारा गया और बुक्रम पाना नकर गरा। सन्तम केयापी विरुटॉट बान्पर राजवानी वाजारी तक वह शीम और उसने की सूध

पुष्केमीकं पुर पापूरतः विकासीतन्तं अपन कार्युशकः अपना वाहरू-र्देश (६४१-६८ हैं) को बाजे निवासी शृष्ट्र-दाराजिक बनन राग्यस बचयरिकार जन्म हवा, शहको निर्मय प्रधे बांधशेख को । यतवानीकी भी बहुद कुछ बादि हो पूछी वी । नवति सरकर और दूरान रास्त्र परे को में किन्तु जनके बाज्यमाँ, नुजी, दिवस व्यय-बाद, बनादकी नृत् बादि अंक्ट्रीने पाकुरर आक्राम्पकी मस्त-अस्य कर दिवा था, वर्षद अरा-बक्ता को । स्वर्थ विक्रमानिशयके नाई चन्द्रादिस्य वृत्ते वाहित्ववर्तन् सामाने विभिन्न बहुबोंकी बना मैंडे में और स्वर्णको बनाव जीविश कर रहे में । किन्तु विक्रमानित वटा वीर, वृद्धिनान एवं ब्राह्मी च्या वय कोरबे स्टांकी बनेना बोर निरवाल पानर भी जनने काहत व कोड़ा । बोड़ा हो बचने मानी निवधिको बँदाना और गाइनी तथा क्रम बालारिक बुधुओंका बसन करके निद्रापन मुरक्षिण विश्वतः। पानको, थेरो, चीची, पानको, कसाओ मादि गाझ धमनीते की शक्ते अने के ही बुद्ध करने पूर्व । अपने पराक्ष्म है रथ बादनी नीएने की ही क्लीने जरूरे प्रजापी विशाने बाहरून और

एवं विष्यंत्र किया ।

प्रतिष्ठना पुनस्त्वार कर लिया और सभी (सन् ६५३ ई० के लगभग) क्षपना विधिवत राज्याभिगेक बरावा । तदन तर भी उसे प्राय परे जीवन-भर यद्वीमें रत रहा। पटा थीर शायद इसीलिए यह रणगीसक भी कहलाना था । पन्छय ही उसके सबसे यह शत्रु थे । जाके विरुद्ध इसने पाण्डपनरेवा पराकृदा मारवर्मन्को मित्र बनाया, गग पालुक्योंके पुराने मैत्रो सम्बाधको हुद विभा । फलस्वरून उसने पहलयोको एकवे बाद एक युदामें पराजित निया । गगोकी सहायतासे हो उसने पत्छव नरसिहवर्मन प्रयमको चाल्वय राज्यमे निवाल बाहर किया और उसके पुत्र महेन्द्र-वर्मन् हितीयको मी बुरी सरह पराजित किया। महे द्रवधन् हितीयके उत्तराधिकारी परमेश्वरवमनका विलिडके युद्धमें चालुक्य सम्राद्की जोरसे भृषिक्रम गगने बरी तरह पराजित किया और उसमे उप्रोदम नामक प्रसिद्ध रत्नहार छोना । दक्षिणकी ओरसे पाण्डपाने पल्लबोपर घावा किया भीर स्वयं विक्रमादित्य परलय-नरेदाका पीछा करते हुए कापेरी सटपर उरैपूर तय जा पहुँचा और यहां अपनी छायनी राल दी। विक्रमादित्यने अपने आज्ञाकारी भाई जयसिंहको लाट देशका सासक बनाया । विक्रमा-दित्यको युद्धोंसे इतना विराम नहीं मिला जो वह विरोप चाित्रसे कार्य कर सकता। किन्तु वह भी अपने पूर्वजोंकी भौति जैनधर्मका पोपक था भीर पुज्यपाद अकलंब देवको अपना गुरु मानता था।

महाराष्ट्र देश कोर चालुक्य राज्यके आतर्गत खलमतकनगरमें सम्म-वतया चालुक्य वशको ही एक शाम्त्राके नृपति लपुहु व्यक्ते पुत्र अकलंकदेपने ८ वर्षकी आयुमें ही ब्रह्मवर्ष यत ल लिया था, सदनन्तर रिवकीतिक ऐहील विद्यापीठमें और कन्हेरीके बौद्ध विद्यारमें क्रमरा जैन एव बौद्ध दर्शनोका गम्भीर अध्ययन किया। लगभग बीस वर्षकी आयुमें उन्होंने मुनि दीक्षा ले ली। सम्राट् पुलवेशी और विक्रमादित्य प्रथमके आदरपूर्ण ज्यार प्रश्नयमें उन्होंने अपने विद्याल अध्ययन, अद्वितीय प्रतिभा एव उद्भट विद्वता-द्वारा भारतीय विद्वत्समानमें शीप स्थान प्राप्त कर लिया था। जैन निकृत्य रधन न्यावकारन स्वासरण निविध मारतीय रवीरों साथि निविध निपनीमें ने निकाल से । सैन अवन्ति को से दतने नारी अस्पियन ने हैं। बद्द 'जनसंग्र न्यान'के नामके जलिक क्षमा । तत्त्वार्थराज्यातिक अवकरी, भावतिनिक्षम विद्वितिनिक्षम समीक्षमण प्रमाधारेष्ठ वादि समेन प्रक्रित स्थान वन्त्रीके में अनेवा में १ मीताचार्य वर्तनीति जारपानीनरार

कर्नुहरि बोर मोमाछा बर्बनके पुरस्करते कुमारिकास्ट्र बनके बनकानीन व्य प्रतिक्रको सं । सक्षक वेश्वक्रके सामार्थ से और बहुवा 'देव' शाली भी क्यापा सम्बंध किया बाता था । विक्रमानित्व वाहबर्त्य वर्षे अपना मुख मानदा मा और करने कर्न्द्रे पृथ्वनाथ करावि ज्ञान भी थी। कट निकासरिकाके अंका पासुका-गरेकोके वसिकेकोरी बारवंका करेव पुरवरार बामते हुआ है। सम्बद्धशा १४१ ४२ हैं में बर पुर्वन्ते राजनोके साथ बुद्धाने बच्चा द्वारा वर और चन्त्रमें अधानित की बन्ध संबर्धेर सन्त महाति निहानीके बाल बारमार्थ करने और बैनवर्केस बचीय भारतेके बहेकांचे निर्देशका भागम कर रहे में । वह ६४३ में में में महिनारेक्के होरक द्वापर निका कर देवकी चारवानी रामर्थकनपुरके कामाने ह्यूरे हुए ने । तत्त्राकील विकत्तिवादियाँव दिवसीयको गीव बुदमोली चुनीती स्तीकार करके ६ माध-पर्वचा बोळ स्तिलाँके बाव नहीं अपकारी बारवार्थ किया और पार्च नराविध किया। कनारमन दिन-बोत्तक मेंनी हो बना और चूँकि इसी प्रश्न पुरुषेत्रीके नदानवरा बनाचार भी क्षेत्र क्षेत्र महाँ या इत्ते कॉलमपर माळगण कर रिमा । हिमकीतम मुद्रमें गाया नवा जिल्हा विक्रमावित्वकी सरारता और बसके बानीची वैभिन्ने चाकुमोने पार्ज वह पश्चिमदे किर प्रवेश न कर वशा मीर वारष

श्रीत क्या । क्यारीका नाप-पिकाको क्यालको अक्टबंबजी 'बहु' क्यापि ज्ञाना हुई र कुछ वर्ष क्षत्रराना कर में आवलके रनरेख कोटे तो बानो किया कामून्य बकार, विकासीत्य अवन बाहबर्गनकी पानवानार्वे कहींने अपनी महान् जैनाचार्य थे।

६७८ या ६८० ई० में विक्रमादित्यकी मृत्युके पदचात् उसका पुत्र विनयादित्य (६८०-६९६ ई०) गहीपर वैठा । उसके राजगुरु देवगणके चवरोक्त आचाय पुज्यपाद अकरुकके गृही शिष्य निरवद्य पण्डित ये जो मारी बिद्वान् थे । रविकीत्तिके उपरान्त ऐहीलके विद्यापीठकी अध्यक्षता अकलकभो प्राप्त हुई थी, उनके परचात् उनमा शिष्य-समुदाय उनत ज्ञान-केन्द्रका सफलतापुवक सचालन करता रहा । विनयादित्यने पल्लव नरेश नरसिंहवमन द्वितीयको युद्धमें पराजित किया, कावेर, पारगीक और पिहल-नरेशोंसे गाउप-कर वसूल किया और उत्तरापयके प्रमु, सम्भवतया क्सीजके यशोवमन्को भी पराजित किया। अन्तिम विजयका प्रधान श्रेय युवराज विजयादित्यको है। गग और अलूप राजे चालूबय-सम्राट्के सहायक थे और उसे अपना अधिपति स्त्रीकार करते थे। तत्परचात् विजयादित्य द्वितीय (६९७-७३३ ई०) राजा हुआ । पल्लवोंके विरुद्ध किये गय युदोंमें उसने अपने पितामह और पिताकी ओरसे सराहनीय भाग लिया था । एक युद्धमें पाण्डघ-नरेशने उसे बन्दी भी बना लिया था किन्तु वह निकल मागा और उसने अपने शत्रुऑका दमन किया । पूज्यपाद अकलककी परम्पराके उदयदेव पण्डित इस सम्राट्के राजगुरु थे। सन् ७०० ई० में इस नरेशने उनत गुरुको शखजिने द्र मन्दिरके लिए दान दिया था। इसी समयके लगभग राजघानी वातापीमें भी एक दानसूचक कन्नडी जन दिलालेख अफित कराया गया । इस नरेशके हलगिरि शिला-लेलमें जैनतीर्यक्षेत्र कोप्पणका उल्लेख है। अकलंकके समर्मा पूज्यसेन भीर उनके दिाप्य विमलचन्द्र तथा कुमारनन्दि और अकलकके प्रथम टीकाकार वृहत् बनन्तवीर्य भी इसी कालमें भीर सम्मवतया इसी मरेशके प्रश्रयमें हुए ये। ७२९ ई॰ में उत्कीर्ण लक्ष्मेक्वरके शिलालेखसे विदित होता है कि विजयादित्यने पुण्यपाद अकलककी जिप्स-परम्पराके गुण्योंको पुलिगेरेके जिनमन्दिरके लिए ग्रामदान दिया था। उसीके शासनकालमें **४२१ दें में निवार्यक शामक क्या राज्यनाम्य व्यक्तिये पुल्लिरेके प्रेण** जिलाक्यको पुरश्का दान दिना । समादको छोटो बाह्य बुद्धा नहारेचीने मी एक गुन्दर जिलाकर निर्वाण करावा या । वती अवकर्षे वृषदान निक्रमारिती में काचीक पत्कन परमेश्वरूपमन् हितांगपर बाह्यका किया और वसी कर समुख किया । विशासी मृत्यूपर वही चानुस्य-राज्यका प्रविपति हुन्छ । विक्रमाधित दिशीय (७३३-७४) वं) जी अपने वर्षजीकी वॉर्जि मैंन पर्वका मध्य का बीर अवजंकनी। वरत्वपत्तके विजय वर्गिका क्कने पामपुर में । ये मारी शारी और स्थित्त् में । राजने श्रंपतिवासन शारि मन्दिरी-का बीचोंद्रार करावा बीर बैनकुर्जाकों राम दिवा। इसके स्टरमें दिनको बरबोले बॉक्स बारतपर बाक्सन करतेया प्रकल किया किन्द पाकुमा पुरस्तेपीते जो एवं नेदची कार बाधारा। तरकातीय वायम प बीर फिलामिसरा अध्यक्त का कर्ने क्वकरायुक्त रोजे करा देवा । इसपर बजादने क्ये 'सवनिवनाचव' बचावि दी । क्सने क्सन मन्तिपेट-वर्तनको को पराजित किया स्वर्ण कांचीयें प्रवेश किया और नहींने मनिर्देशी राज दिया । इस स्थाननमें काफै पुत्र श्रीर्द्धमांतुने मी नामी नीय यान किया था । जीतियर्गन् क्रिपीय (४४४-४५७ ई.) इत संबद्ध

 ो हुए भी घौव वैष्णवादि घर्मोके अति उदार और सहिष्णु थे । बौद्धवर्म कालमें पतनोन्मुख था।

वेंगिके पूर्वी चालुक्य—आध्र देशपर पहले इस्त्राकुओं फिर लकायनों और अन्तमें विष्णुकुण्डिनोंका ग्रासन रहा था। सन् ६१५ ई० चालुनय-सम्राट् पुलकेशी द्वितीयने आम्त्र देशकी विजय करके अपने जि कृटजविष्णुवर्धनको उसका प्रान्तीय शासक नियुक्त किया था । वैंगि । देशको राजधानी यो । पुलकेशीके अन्तिम वर्षीमें ही वेंगिके चालुक्य हशासासे प्राय स्वतन्त्र हो गये थे। नाममात्रके लिए वे उसके उत्तरा-कारियोंके अधीन रहे किन्तु ८वीं धतीके प्रारम्भसे वे सर्वया स्त्रतन्त्र हो वे । फुटनविष्णुवर्धनसे प्रारम्म होनेवाले इस वशमें छगभग २७ राजे हुए रि उन्होंने लगभग ५०० वर्ष तक आन्न देशपर राज्य किया। कुन्न-ज्णावर्धन स्त्रय बहुन योग्य और चतुर शासक या, उसने ही अपने वशकी वि मली प्रकार मुद्दुढ कर दी थी। चालुक्योंकी इस पूर्वी शान्तामें भी लवराकी भौति ही जैनयमंकी प्रवृत्ति थी। कुञ्जविष्णुवर्धनकी रानी पने पितसे भी अधिक जैनवर्मकी मक्त थी, इस धर्मकी प्रमादनाके लिए सने कई ग्राम मेंट करवाये थे । कुञ्जविष्णुवर्धनके पश्चात् जयसिह प्रयम. वप्णुवर्धन द्वितीय, जयसिंह द्वितीय और विष्णुवर्धन तृतीय क्रमश राजा ए। अन्तिम नरेशने जैनाबार्य कलिमद्रका सम्मान किया और उन्हें तन दिया था। उसके पुत्र विनयादित्य प्रयमकी महारानी अध्यन महा-वीने ७६२ ई॰ में उसन दानपत्रको पुनरावृत्ति की थी। तदुपरा त विणा-ार्धन चतुर्व (७६४-७९९ ई०) विंग राज्यका स्वामी हुता । राष्ट्रकटॉ-हे साप भी उसके युद्ध हुए बिन्तु वह उनके अधीन नहीं हुआ। उसके वेरुद्ध आक्रमणमें सहायता करनेके छिए ही राष्ट्रकूट गोविन्द तुनीयने ाग शिवमार द्वितीयको बन्दीगृह्से मुक्त किया था। विष्णुवर्षन चतुर्थ जैनपर्मका वडा भन्त था। इस कालमें विज्ञगापट्टम (विद्याखापत्तनम्) जिलेकी रामतीर्थ या रामकोंड नामक पहाडियोपर एक भारी जैन

बारहरीत केन्द्र निवसान वा । जिल्लिय (बाला) देवके देवि प्रदेवती बंगाल मुमिने ल्या यह राजविति वर्षेत्र बनेक वैनपुद्दावनिर्दे, दिनापर्ये ६वं बन्त प्राप्तिक पृष्टिनीये मुद्योगित का । अनेक निप्रान् केनमूनि वही निवास गरते ने । विशेष विद्याक्षा एवं विवर्तनी क्रम्य विद्यापे किए गर शरकार एक महानु निधानीठ वा । विविक्त वासूचा-गरेघोंके तरबन पर्व प्रपारं नेड बेरमान कन-पुत्र रहा था । इस कालमें कैनायाव बीमन्ति इस विवारिक प्रधानायार्थ थे। यह मानुबंद शादि विविध दिश्योने निरवात में अपन नदाराज विष्णुवयन काफे वरवॉकी गुटा करते में । पर बापानके प्रकार विरूप प्रशासिकायार्थ के थी बाजुबार एवं विकित्सामार्थ-के बर्बर विक्रम् से । क्या ७९९ हं के ब्रुष्ट वृर्व हो उन्होंने जरने सुप्रक्रिय नेप्रप्रतम् मन्त्रावदारश्यो एवद्य शे वी । इन्द्र-प्रवृतिको शह है वि मुख प्रापको बाजोने वेशिनारेश किञ्चूचर्यनके ही बाह्मगश्रम और स्वस्त्रें THE RY P तपुररामा निजयातिक क्रियोध पुरुष (७९६~८४० ई.), वर्षिक विष्णुवर्षन पंत्रव विजयातिस्य तृतीय (८४८-८९२ ई.) हम्बा राम हुए । राष्ट्रपुर नांजिल शुरीन और वसरे पूर बसाद समीयवर्गने बार-बार वेंतियर मामनव करके वृत्ती कानुवर्गको वर्गानक किया और वर्षे शास माने भगेन कर शिक्ष या । तपुरस्ता जानुस्य पीय अपन (४९४-९४९ ई) चना हमा । यह राजुन्ह शून्य हिरोदका प्रविद्वाही च्या नीत्रके कतराविकारी विश्ववादित्व चनुवादी गुन्तु ६ वहीलेने ही ही बडी अगरन मध्य प्रथम (५१२-२५ हैं) राज्य हवा र तरनतर भीन दिगीन और र्द्धर बन्न देतीय राजा हुए। जन्म श्रेतीय वहा प्रदानी और पद्मीचा

भीच या। बन् ९४५-९४ हैं तक शमने पान्य किया। माने पुण्योगी द्वी मोति पढ़ को जैनवापा नोपक और तीसक बा व्यीक इस स्थिती वह मार्च मुर्ग पानुस्कारीयोह दुख आहे ही जहा द्वारा वह करी प्राप्तपार्ग के टीन अस्तिक प्राप्त हुए हैं भी बहु अस्तिमा दर्श हैं कि

व्यातीय इतिहास । युव परि

१०वीं जती ई० में जैनवर्म आघ देशमें अत्यविक लोकप्रिय एवं उन्नत दशामें था। राजा स्वय शिव और जिनेन्द्रका समान रूपसे भक्त था। एक छेखके अनुसार इस नरेशने पट्टवर्धक घरानेकी राजमहिला माचकाम्बेके निवेदनपुर जैनगरु सफलच द्र सिद्धान्तके प्रशिष्य और जयप्योटिके शिष्य अर्हनन्दीको 'सर्वलोकाश्रय जिनमधन' के लिए दान दिया था। अम्मका प्रधान सेनापति दुर्गराज था जा कटकाियपति विजयादित्यका पुत्र था। बालम्य-लक्ष्मीकी सुरक्षाके लिए उसकी तलवार सदैव म्यानसे बाहर रहती थी। वह पर्वी चालवय राज्यका शनित-स्तम्म कहा जाता था। उसके वंशने महादेश वेंगिके सरक्षणमें सदैव भारी योग दिया था। यह वश जैनवर्मका अनुवायी था । स्वयं दुर्गराजने धर्मपुरीके निकट 'कटकाभरण' नामका भव्य जिनालय बनवाया या और उसे यापनीय सघके जैनगर जिन-निन्दिके प्रशिष्य एव दिवाकरके शिष्य श्रीमन्दिरदेवको शौप दिया था। स्वय महाराज अम्म द्वितीयने मिलयापुण्डि दान पत्र-द्वारा इस मन्दिरके लिए ग्राम भेंट किये थे। अम्मके पश्चात दानार्णव, जटाचोडभीम और शक्ति-वर्मन् क्रमश वेंगिके राजा हुए। तदनन्तर १०२२ ई० के लगभग विमला-दित्यका राज्य हुआ। यह राजा भी जैनधमका भारी भक्त था। देशीय-गणके आचार्य त्रिकालयोगी सिद्धान्तदेव उसके गुरु थे। अनेक जैनमन्दिरींको इस राजाने दान दिये। उपरोक्त रामतीर्थ (रामगिरि) भी ११थीं शताब्दीके मध्य तक प्रसिद्ध एव उन्नत जैन सास्कृतिक-वेन्द्र बना रहा. जैसा कि वहाँके एक दिलालेखसे प्रमाणित होता है। विमलादित्यके भी एक कन्नडी शिलालेखमे ज्ञात होता है कि उसके गुरु विकालयोगी सिद्धान्तदेव तथा सम्भवतया स्वय राजा भी जैन तीथके रूपमें रामगिरिकी बन्दना करने गये थे।

विमलादित्यके उत्तराधिकारी राजराजनरेन्द्रके समयसे आ झदेशमें जैनघर्मका हास होने लगा । वस्तुत ११वीं घतीके अन्त सक वेंगिके पूर्वी चालुक्योकी सत्ताका भी अन्त हो गया । इस प्रकार लगुमा ५०० वर्ष पर्रत्य प्रक्ष्मेगांवे सह पूर्वी बाकुल शंबारे बारानांचे आमारेवारे वेदरालें पर्याप्त कम्मि को । काशि में गरिक सप्ते-बाराको खुना पारस्योदेवर विकास से एवारिय में मान पन हो वीच्यांके मारे काशि काश्य को स्वीत्त्री रहे बीट बीनांकों भी स्वीत्त्रकारिया आपर बार्ट में माने काशि की वेदराकी हो सम्बन्धानी से आहा हो प्रक्रकारिय स्वाप्त की स्वीत्त्रीय अपने बाराक स्वाप्त काश्यक्त सर्वाप्त प्राप्त केंद्र माने स्वीत्रीय में स्वाप्त की स्वप्त की स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त की स्वप्त की स्वप्

निरम-वेरो प्रत्नम् वैश्व एवं सम्बद्धारको चरक्य विज्ञा । ११वी काम्पेने मान्यरेवार्वे वैनमर्थके चरक्या सेच नियत्यरको परिच्छरि गमुन्ति सम्बन्धीः

एक प्रकार बहुएयाँ स्थापित थी। वृष्य हैं से क्यावय बहुपूर्व स्थाप्त्र स्थाप जोवने दीक्युणी वा वही। महित प्रकार स्थापित जापूर्व सारण हुए। इस प्रकार जम्म जाए पात विश्ववद्यं मा क्यांत्र कर प्रतिकारी क्ष्मा 'प्रकार कोशिया जम्म बीए कर्त्र के। वे स्व कार्याप्ते करित्र क्ष्मा 'प्रकार कीशिया जम्म बीए कर्त्र के। वे स्व कार्यप्ते कार्युणी क्ष्मा 'प्रकार कीशिया जम्म बीए कर्त्र के। वे स्व कार्युणी कार्युणी के बाव हुमा था। इस ब्यूप्शकांत्री या और बायुणीकी निर्ध्यो प्रवासी १९११

पाक्की क्ली मान्यकेरी वी एक पाव्यकूट कुमा हो भी । इस पाव्यकूरीकी

रकर इमने दावितमबय करना सारम्म निया। उसका पुत्र दन्तिदुर्ग ण्डावसोक वैरमेघ ८यों बातीके प्रथम पादके छगगग अपने पिताका त्तराधिकारी हुआ। यह बत्यात चतुर, साहसी और महस्त्राणांनी था। ४२ ई० के लगभग उसने एलोरा (एलउर मा ऐसपूर) पर अधिकार कया और उमे अपनी राजधानी बनाया। एनारा जैन, दीव, वैद्याब और दि चारो ही धर्मी और सस्कृतियोंका सन्यिस्थल था। उक्त धर्मीछ म्बिचित इस स्थानके पापाणसनित गुहा-मन्दिर भारतीय वनाके अदितीय उदाहरण है। सन् ८५८ ई॰ में रचित पर्नोपरेशमालामें एक और अधिक पुरानो घटनाका उल्लेख है कि एक समय समयश नामक मुनि भूगुकच्छने वस्तर एलंडर नगर आये थे और यहाँकी प्रसिद्ध दिगम्बर वसही (यसदि) में ठहरे थे । इससे विदित होता है कि राष्ट्रपूटींके दासनके बारम्मसे ही एलोरा दिगम्बर जैनधर्मका प्रसिद्ध पेन्द्र या। और इसका कारण यही है कि राष्ट्रवृट-नरेश प्रारम्भसे ही सर्वधर्मसमदर्शी थे और चनका व्यक्तिगत या कुलधर्म धीय वैष्णवादि होते हुए भी वे जैनधर्मके विशेष पद्मपाती और सरक्षक रहे थे। दन्तिदुर्गने एलोराको राजधानी धनाकर नासिक विषयके मयुरखण्डी दुर्गको अपनी प्रधान छायनी बनाया ! ७५२ ई० में उसने चालुक्य-नरेश कीतिवर्मन्को पूर्णतया पराजित करके महाराजाधिराज परमेश्वर परममद्वारक पृथ्वीयल्लम खण्डायलोक वैरमेप सादि उपाधियाँ घारण कीं और अपने-आपको सम्राट् घोषित किया। भपनी मृत्युस पूर्व, ७५७ ई० तक उसने वातापीकी पाल्वय सत्ताका प्राय अन्त कर दिया था और अब वही दक्षिणापयका समाट् था। इसके अतिरिक्त उसने सिन्पुमूप, श्रीचैलके चोड, परलय नन्दिवर्मन्, पाण्डच नेद्रजलियन, परान्तक, श्रीहप, तथा परमार, बच्चार, कोसल, मालया, लाट, टक आदि देशोंके राजाजाको पराजित किया था। इसने पल्लवमल्ल-के साथ अपनी पुत्री रेबाका विवाह करके उसे मित्र बना लिया था। चित्रकृटपुरके श्रीवस्लभ राहप्पदेवको पराजित करके उसकी उपाधि और दक्षिण भारत शि. .

रवेजण्डाच स्वर्ग बद्दान दिया । इसी नमन सम्बन्धता इसी ध्याप्तके बद्दान बीरप्रदेश का बेंबबूनि ही अबेंचे और स्थानी बीरतेयके नायने प्रस्ति हुए राज्यण राज्यानीके निकट हों। बाटपमध्ये का बसे और नडींके पराज्य विभागय एक भागरमेगाचे वृत्रामांगरोने क्रातीने आना विद्याचेत्र स्थापित विचा । सैनायाम विवयमधान (७१५-७५) की शिवृत्त नुप्रधान बाध्यम हरापको पावनेतिन्त्र में बीर वहे आगे वार्थ में पार पूर बन्तिपूर्वने तथा स्वयरंग्य ग्रीपुर्व मुख्यस्त्र ग्राम्यस्ति सम्यान ग्राप्त

इन प्रकार बोर्डन ही जनाही राम्पूट समितुर्वने दिन्तिका गरी बंदबा राजारंप नर्वारंभ कर निज्ञ । एक्टव्ह बंधको नीव मुद्द कर थे बीर ग्राम्म-गरक्तमा क्षेत्र करके चामणी स्थिति गुर्रावय कर ये । साथ ही निज्ञानों बीट कृष्णियोगा आवट करमें बीट क्षण्य सामित्रूमी मार्थीय शियु की अपनुर शिक्सण विकास के कई में अनन्त्री शिक्सण्यान सुण होनेपर समया नावा कृत्य प्रथम अस्तकार्य मृतनुष विद्यावनार ^{ह्}रा भीर ७ ३ वें तक वचने राज्य दिया । धालुका तलाशे नियोप हरने क्ली शक्रियो बॉक्सने अक्त विलाहार बारखोंको निवृत्त किया ! **७९३ दें के अवस्थ काने नव गरिनाद शिवीच-हाटा वेलिके पालुगर** रिजवादिक प्रकारो गरमित्र वस मनीय करावा । १८ ई. में मनगरिप क्षेत्रप मुलरक्षणे वराजित कारके समीच किया । ७१५-७० है वे क्लमें एमीरानें मुत्रवित्र 'वैशाध जीनर' अनुवर्गने कारकर नक्यामा क्रमें रिक्ट ही इन्त्रक्षमा और वनन्यकृत्वा जाति मुस्कान कैरनुहा-मन्दिर भी हमी क्रमाने समान वन्ते मारत्य हुए । पुत्र स्थित् निर्धाहरू

मोर्नगरेस राज्ञाको विजयका जेन शब्दको केते हैं। पूर्वोच्य सैनपुर रिकारनाचे स्थितः गरगरिकाम वे जिल्लीने श्रीत विश्वनायके नामानियु-क्ट बर्नेटर-शरा किसे को डिप्यूक्टर सहस्य किया का s से वरवादिकार

क्षित्र वा ।

कृष्णराज प्रयम-द्वारा सम्मानित हुए थे। कृष्णके उपरान्त उसका ज्येष्ठ पुत्र गोविन्द द्वितीय प्रमृतवर्ष विक्रमावलोक (७७३-७७९) राजा हुआ। वह दुराचारी और अयोग्य था। जमने गग शिवमारको उसके भाई द्रगमार एयरपके विकद्व राज्य प्राप्त करनेमें महायता दो थी अत शिवमार उसका मित्र या किन्तु गोविन्दक भाई ध्रुपने, जा अत्यन्त महत्त्वाकाक्षी या, गोविन्द-का उच्छेद करके राज्य हस्तगत करनेका पर्मन्त्र किया। पल्लव, गग. पूर्वी चार्विय भीर मालवनरेश गोवियके सहायक थे कि तु श्रुवने अपने पुत्राको सहायतासे युद्धमें इन सबको परास्त किया। सम्भवतया गोविन्दकी भी युद्धमें ही मृत्यु हो गयी । इस प्रकार ७७९ ई॰ में घारावर्ष, निरुषम, किष्ठवस्लम, बावन्लभ, घोर, धवलइय, बोह्णराम (वल्लहराम) आदि चपाधियोंसे युक्त झुत्र राष्ट्रकूट राज्यका स्वामी हुआ। ७९३ ई० तक उसने राज्य किया । यह महापराक्रमी और बीर योद्धा था । राज्य प्राप्त करते हो उसने गोविन्द दिलोयके सहायकाँका दमन करना प्रारम्म किया। गग शिवमार द्वितीयको बन्दी बनवाया, नन्दिवमन् पल्लवको पराजित करके उससे हायियोंके रूपसे कर वसूछ किया, वेंगिके विष्णुवर्धन चतुयको हराया और उससे मुख प्रदेश तथा उसका पूत्री शोलमहारिकाको पत्नीरूपमें प्राप्त किया। तदनन्तर विष्याचलको पार करके वह गगा यमुनाके मध्यदेश तक जा पहुँचा। वहाँ गूर्जर प्रतिहार वत्सराजको पराजित करके उसे महदेशकी क्षोर भगाया और गौडके धर्मपालको पराजित करके उसे बगाल वापस पटाया । कन्नीजमें इन्द्रायुधको उमत दोनों रात्रुओंसे कुछ समयके छिए सुरक्षित करके वह बापस दक्षिण लौट आया । श्रुवने इस प्रकार राष्ट्रक्ट शक्तिको सम्पूर्ण भारतवषम सर्वोपरि बना दिया । यह विद्वानोका भी बडा सम्मान करता था । उसकी रानी चाउुक्य राजकुमारी घोलमझारिका जैन धर्मकी भक्त थी और एक प्रसिद्ध एवं श्रेष्ठ कविषत्री थी । उत्तराप्यकी विजय-यात्रामें ध्रुत सम्मवतया कन्नीजसे अपश्रश भाषाके जैन महाकवि स्वयम्भूको अपने साय सपरिवार लिवा साया था। स्वयम्भूने अपनी

रामायभ इरिवंक नावपुतार वरिता श्वकाम् स्वय साथि व्यान् सर्वीती रचना हवी नरेखके भाजपंत्र राज्यकृत राज्यालीने को और मुक्तन करकार नामके अपने इक्ष जानानपाताना कालेका किया । स्वयम्पूरी गरी बानिकमा जी वही विकुती थी और बजादने जरूनी राजपुनिर्वाची क्रिका रेपेके किया पत्रे निकृत्वा किया गा । जिल्हेल पुत्राप्तर्वचीने कर्दर हैं जै माने हरिरेवपुराचको समान्य करते हुए इस वरेशका क्लीब फ्रिन्सुरान नुष भीतरणन को वर्तिचालकार स्तानी वा' इस करने किया है। प्रश्निद् धानवाली निकट ही बाहनगर (बारबाजपुर) वे चंबातुरान्तवी स्थानी

बीरवेषका पुर्मादक काल्केल का । वहाँ रहते हुए हो इत व्हान् सैना-गार्वने प्राप्त राजके बावनशायने वर्त् कर है में अपने महत्त्व कर

मीत्रकाको पूर किया या और उपस्थर वयस्त्रकात एव विक्रकि समान मंत्र तथा नहारवक्की क्याँका संशाद को थी। विक्रमुख्यी वाहि सम् चन्त्र की कहाने रहे से 10 इस दिवान विद्वार्ग क्रिके क्याचा एवं कर स्तीत प्रवास क्ष्म एवता की थी । विस्थार ग्रापन क्ष्मोंनी वर्नेस्टर्स एनं क्योंकिक अक्टबर्ड्स डोकर्स, बीरकेशायांकी क्यारेका राज है हैं। करके विकारीकर्ते एक विकास पुस्तक बंदाह या-बदला गरा चैन पूर्ण माजन कर नासर्वे पारतकार्ति कल वही था। समझ किन-समुद्रार से निवास था। बर् ९ ई. के अनवन स्तायी बीरहेक्सी कुछ हुई। इसी सांवरित्त स्थानी विकासीय, परमासिकास और पुष्तुन्यारीमा क्या सम्पर्ने राष्ट्रकृद राम्पचे प्रक्रिय चैनानार्ग से । भूक्का क्याराविकाधे क्षका क्षेत्र तुत्र बोर्चन्य शृहोत स्वर्तुत नर्हें

111

वर्ष बीनरमय फनररकव कीर्तिवारायम विञ्चन वचक (७९३-८१४ है) था । शुक्ते करण स्तरण बोर एस बाल्के सीच बोर पूर्व में कियू उन बच्छे व्यक्ति गोल्ड गोणिन्त हो था । शुक्ते रहता होनेके पूर्व हो बच्ने सहायक था। अत राज्य-सिंहासनपर वैठते ही ध्रुवने गोविन्दको युवराज घोषित कर दिया था और फलस्यरूप मयुरखण्डोकी प्रधान छावनीका अध्यक्ष तथा उसके अन्तर्गत प्रदेश (नासिकदेश) का प्रान्तीय शासक नियुक्त कर दिया था। वाटनगर विषय उसीके शासनमें था अत स्वामी वीरसेन-ने घवलाकी प्रशस्तिमें बस्लहराय (घुव) नरेन्द्रचूडामणिके साथ राजन जगत्तुगदेवका भी उल्लेख किया । गोविन्द तृतीयने गद्दीपर बैठनेके उपरान्त गग शिवमारको मुक्त कर दिया क्योकि अपने शत्रुओंके दमनमें वह उस वीर योद्धाकी सहायता चाहता था किन्तु शिवमारने फिर विद्रोह किया और ७९९ ई० में फिरसे बन्दो बनाया गया। गोविन्दने अपने माई कम्मदेव-को गगवास्कि। राज्यपाल नियुक्त किया । वस्तुत कम्मने ही शिवमार तथा अन्य दस-दारह राजाओंकी सहायतासे गोविन्दके विरुद्ध विद्रोह किया या मर्योकि वह स्वय ध्रुवका ज्येष्ठ पुत्र था। परन्तु गोविन्दका राज्याभिषेक भो घ्रुवने अपने ही जीवन-कालमें कर दिया पा अत उसका अधिकार न्याय्य था। उसने अकेले ही बारह नरेशोंके उक्त शत्रू-सचका दमन किया, गग राजको बन्दी करके भाई कम्भको सन्तुष्ट करमेके छिए गंगदेशका शासन उसे सौंप दिया। सदनन्तर उसने लाटकी विजय करके अपने आज्ञाकारी छोटे भाई इन्द्रको गुनरातका शासक बनाया और मालवाकी विजय करके उसे भी गुर्जर राज्यमें सम्मिलित कर दिया। परलव दिन्तवर्मन्को पराजित करके उसने उससे कर लिया । विन्न्याचलके निकटवर्ती प्रदेशके राजा मार-धर्यको अपना करद बनाया । वैंगिनरेश उसका आज्ञाकारी बना रहा और उसीने राष्ट्रक्टोंकी नव-स्थापित राजधानी मान्यखेट (मलखेट) की बाहरी प्राचीरका निर्माण कराया वताया जाता है। गोविन्दने हो प्राचीन राज-धानीको एलोरा और मयूरखण्डीसे हटाकर नवीन राजधानी मान्यसेटका एक विशाल सुन्दर एय सुदृढ़ महानगरीके रूपमें निर्माण किया। उसने गुजरप्रतिहार नागमट्ट द्वितीयको पराजित किया तथा कन्नीजके चकायुध और बगालके धर्मपालसे अधीनता स्वीकार करायो । सिंहल नरेशने भी

दक्षिण भारत [२]

क्रारात्त्रके एक वश्चित्राच्ये बॉस्टे हुए सब ८ ३०४ ई. में ग्रीवेन्ट सर्वेष राहरती बीजनन भागक स्थानमें खानगी शांके पहा था। बचके पुत्र संबीत वर्षण कम हुआ । निर्मु नत्त्रन वन्तिवसमुक्ते बाधमके बारम पुत्र-क्यी-न्त्रम मन्त्रमेशा भी क्षेत्र मनकर व मित्रा और सक्ष्ये गुरुत शक्षर कर्त्रम बनन क्रिया । ८ ८ वें में बहीरर बैडनेवाके विजयांतिय वरेण नुवस्तरी मी भी एक बारी मोदा था. किर कालेका जबल निमा किन्तु वह मी परस्य द्वा । क्तु ८१३-१४ वं में बीवित्व तृतीवधी मृत्यु ही मनी । यह दर्ग र्वयके सम्मान् नरेगोले हे था। भारतकांडी समार्थ राज-प्रतिप्रती स्वता बोहा बल्ली वी. जन्मे नक्तवा का निवच ही वर्षपहलू गरेंच था। बाब ही निर्माण वानी थया विद्यानों और पुनिर्दीका बावर करनेपाना या । बैश्वति इति वो यह शतका वर्दिक्त और वचार था । सनै यन-पर-रास्त ८ १ ई. वे बचने वेशस्त्रपानी साम्पन्ती सोहिश्य गानक चैन बनरि (सम्बर) के निए बद्यारक्तक चैक-बुदर्शीनी शत दिस मा । ८ ५ ई. में बामध्यमण्य राज्यान सारा बच्छे बाई वर्ग प्रदेशिय वस्त-देशने डाक्क्समगरको सँग नवसिके किए शामी पुत्र संकरकाओ अर्लगारार

चनके बरचारमें राजपून मेंजा जोर हमें क्ष्मा व्यक्तिशरीकार दिना या I

2 3 ई में मार्टिनम्म कारणकारित वहां पर सार्ट्यम अन्यत्तर इस्ते द्वाराम्बन्धे कृतारामिके क्षेत्र करिएकासकी विकाद स्वीवार कुरो इस्त्र करित है। 212 ई में कराव सार्ट्यमें हारा सो स्वृत्यां की संदे हैं। इस्त्री है। 212 ई में कराव सार्ट्यमें हारा सो स्वृत्यां की स्वेत्यारित हैंया पूर्विकासकों स्वीवार सीर स्वरूपीति के विवाद सीरित सार्ट्यमें सार्ट्यमें सीरित सार्ट्यमें सार्ट्यमार स्वृत्य कर्म दिया स्व सीरित सार्ट्यमें सार्ट्यमें सार्ट्यमार स्वाद्य सार्ट्यमार स्वाद्य कर्म दिया स्व सीरित सार्ट्यमें सार्ट्यमार सिता सार्ट्यमार स्वाद्य स्व सीरित सार्ट्यमें सार्ट्यमें ही जीवार सार्ट्यमार स्वाद सार्ट्यमार सीर्ट्यमार स्वाद सार्ट्यमार सीर्ट्यमार सीर्ट्यमार स्वाद सार्ट्यमार स्वाद सार्ट्यमार सीर्ट्यमार सीर्यमार सीर्ट्यमार सीर्ट्यमार सीर्ट्यमार सीर्ट्यमार सीर्ट्यमार सीर्यमार सीर्ट्यमार सीर्यम सीर्ट्यमार सीर्ट्य

नारवीय प्रविद्याल क्षत्र स्थि

...

गये कार्यकी पूर्तिके लिए प्रयत्नकोल थे। उनके समर्ग दशरथ गुरु, विनयसेन, पद्मसेन और वृद्धकुमारसेन तथा स्वामी विद्यानन्दि, अनन्सकीत्ति, रिवमद्र शिष्य अनन्तवीर्य, परवादिमल्ल आदि अनेक जैनगुरु राष्ट्रकूट राज्यको सुशोभित कर रहेथे। महाकवि स्वयम्भू भी मुित हो गये थे और सम्भवतया श्रीपाल नामसे प्रसिद्ध हुए। वे आचार्य जिनसेन-द्वारा जयघवलाकी पूर्तिमें उनके परम सहायक सिद्ध हुए। उनके पुत्र त्रिभुवन-स्वयम्भू भी महाकवि थे। पिताके मुित हो कानेपर उनके रामायण आदि महायन्योंका सम्पादन, संशोधन, परिवर्धन आदि इन्होने हो किया। सम्राट गोविद तृतीयके ये विशेष कृपापात्र थे। उपरोक्त समस्त गुरु सम्राट्से आश्रय एव सरक्षण प्राप्त कर रहेथे। जैनधमं उसके शासनमें सूद्ध फल-फूल रहाथा।

सम्राट् अमोघवर्ष नृपतुग महाराजशण्ड वीरनारायण अतिशयघवल भवंबमी बल्लभराय (८१४-८७८ ६०) जिस समय सिहासनपर वैठा ९-१० वर्षका वालक मात्र था। अत उसके चाचा इंद्रका पुत्र कर्कराज. जो गुर्जर देशका शासक था, अमोधवर्षका अभिभावक एव सरक्षक बना । अमोघकी वाल्यावस्याका लाम उठाकर साम्राज्यमें जगह-जगह विद्रोह हो गये। गंग, पल्लव, पाण्डच, पूर्वी चालुक्य आदि अघीन राजे भी विरुद्ध चठ खंडे हुए। ८१७ ई० में वेंगिके विजयादित्य दितीय और गगवाहिके राचमल्ल प्रयमके प्रोत्साहनसे साम्राज्यके दक्षिणी भागके अनेक सामन्तोंने भयकर विद्रोह कर दिया। किन्तु कर्ककी स्वामिमनित, वीरता, वृद्धिमत्ता एव तत्परताके कारण इन सब विद्रोहोका दमन हुआ और ८२१ ई० तक स्थिति काव्में मा गयी तथा शान्ति स्थापित हो गयी। नवीन राजधानी मान्यखेटका निर्माण गोविन्द तृतीयने ही प्रारम्भ कर दिया या किन्तु उसे राजधानीको पूरी तरह स्थानान्तर करनेका समय नहीं मिला या। अव बमोघवर्ष वयस्क हो गया था, उसकी स्थिति भी अपेक्षाकृत सुरक्षित हो गयी थी अतएव ८२१ ई० में गुर्जराधिप कर्कराजने नवीन राजधानी सामकेरते ही कार्यकर्तका चितिकम् पारम्मियोक विका । वर्षेणहे स्वाम बारम्म प्रकारम् और पोर नेमार्गात वेक्स्सके सामारम्भ स्वास्त एतं प्रकार राज्योवि मुर्गात प्राम्भित वर्षेण्या प्रकार क्रिया स्वार कर्त कार्यने प्रमान्त्रीतो नुपार कार्याम् वर्षेण्या वर्षात्री कर्त्या कर्त्या कार्या क्रिया वर्षेण्या कर्त्या कर्त्य कर्त्या कर्त्य कर्त्या कर्त्य कर्त्या कर्त्य कर्त्या कर्त्य कर्त्य कर्त्या कर्त्य कर्त्या कर्त्य कर्त्य कर्त्य कराव्य कर्त्य कर्त्य

निए नामाने देवे बनवाधी हैरें अबेड बार्मीएवँ दिया और गाँ बनने बनाए नाम बनाम अँग बन वर्ष परिष्म करन कर रात मा नहीं प्रकारने मुनार करन बोर मुझ्येटिंग्स करने पुर कुन्ते निर्मार बहुएन दिया। बीनवें मुग्न अम्मदे बावर वन प्रिमेश्वर में करार्टे के तम करन दिया। बार नुवारी बाता करा । बार्क क्रम्योद्धार में करार्टे कार्या करना दुन दिया कार्योद्धार विद्यावधि कार्या ने कर वै बारोपारी वर्षो क्यांत्रिक्त करें के विद्यावधि कार्योद्धार ने कर वै बारोपारी वर्षो क्यांत्रिक्त करें के विद्यावधि कार्योद्धार के कर वै और कार्योद्धार व्यावयों कार्योद्धार विद्यावधि कार्योद्धार के कर विद्यावधि कार्योद्धार करें में दिर बाया व्यावयों कार्योद्धार विद्यावधि कार्योद्धार क्यांत्रिक क्य

बीर मुख बारते पट दिल्लू वर्तन तो। सबके बबेरे बाई बबेरे बारव बीर

भारतीय इतिहास एक प्री

त्रवन्तर सेनापित वरेवके पराक्रमसे समस्त मधुक्षोका सत्परताके साप दमन होता रहा और मामाज्यकी ममृद्धि एव द्यातिमें कोई उल्लेखनीय विन्न नहीं हुआ। यस्तुत स्वयं अमोषयर्ष एक घान्तिप्रय एयं पर्मात्मा नरेश था। युद्ध-कार्य उनके स्वामिभवन सेनापित और सामन्त मरदार हो सफलता-पूर्वक स्वालित करते रहें। फन-स्वास्य उनकी शिवत, वैभय एव प्रतापम उत्तरोत्तर यृद्धि ही हुई।

८५१ ई० में अरब सीजागर सुलेमान भारत आया या उगने 'दीर्पायु वलहरा (वल्लमराय)' नामसे अमोधवर्षका वर्णन विया है और लिखा है कि उस समय ससार-भरमें जो सर्यमहान् चार सम्राट् ये ये गारतका वल्लमराय (अमोधवर्ष), चीनका सम्राट्, बगदादका व्यल्लिका और कम (हुस्पुन्तुनिया) का सम्राट् ये। अलहिंद्रिसि, मसूदी, इन्नहोकल आदि अय अरब सौदागरोंने भी अमोधवर्षके प्रताप और वैभय सथा माम्राज्यको शिवत एव समृद्धिको भरपूर प्रकासा को है। उमका शासन भी सुचाह क्यसे सुव्यवस्थित था। इसके अविरिक्त यह नरेश विद्वाना और गुणियोका प्रेमी, स्वय भी भारी विद्वान् और किय था। संस्कृत, प्राकृत, कन्नको एव समिलके विविधविषयक साहित्यके सुजनमें उसने भारी प्रोत्साहन दिया था। उसकी राजसभा विद्वानोंसे भरी रहती थी।

सम्राद् वमोघवर्ष जैनधर्मका अनुयायी और एक आदर्श जैन-श्रावक था, इस विषयमें प्राय कोई मतभेद नहीं है। बोरसेन स्वामीके पट्ट शिष्य सेनसधी आचार्य जिनसेन स्वामी उसके राजगुरु और धर्मगुरु थे। ये विभिन्न भाषािषञ्च एवं विधिध विषयपटु दिग्गज विद्वान् थे। लडकपनसे ही उनके साथ अमोधवर्षका मध्यके रहा था और वह उनकी वही विनय करता था। जिनसेनके सम्मुख सर्वप्रथम कार्य अपने गुरु-द्वारा अधूरे छोडे गये अयधवल महाग्र यको पूर्वि करना था। सन् ८३७ ई० में अमोधवर्षके आश्रयमें सथा उसके प्रधानामात्य गुजराधिप कर्कगळके सरक्षणमें गुरु-द्वारा स्थापित वाटनगरके ही अधिष्ठानमें उन्होंने ६०००० इलोक प्रमाण उयत

बन्दरी बनाय विका । भीताय गुरने कह बन्दरा क्रमारन क्रिया ^{का} बारम्पा शहार्थे बाहरूपर बिन्तेश श्यामी राजपानी जानानीते ही माकर रहते अने और यहाँ क्षाहोने शास्त्रीप्रदेश नामक मुर्शना ह्या बामको रचना को बका जहानुस्तको रचना प्रायम हो । किनु बरा मांगीय पुरान-बच्चरो से पूरा म बार करें और बलू ८५ हैं के अरबर बनपी मृत्यु हो यती । अन्ये नार्गदान्य आवास सुवतंत्र से जिल्हा जमीप कर्त नका यसका कुछ पुरस्त दिल्लीय बोली ही अध्यास बारने से 1 करें समीपवर्षने साथे पुषका निवास निवृत्ता क्या बात प्राप्ति पुषकाछ शाराम रिवे मरे मरानुगाको मसेरवे वृद्ध रिवा-द्वके हारा निर्मा पेरा मान उपारकृतम् *वानामा 🛊 व*नके अपिरिका कान्यमुद्देसाई निवरणपरित्र आर्थि बन्ध भी उपनि तमे । सामार्थ बस्तरित्तने माने बन्यारकारर नावर वैदन क्लानी रचना ८ है के पूर्व ही का की भी रिन्यू अभीरवर्षेत आहरतर चन्द्राने धनरी राजनमार्वे आहर अनेह वैद्यों एवं रिहालीके समझ मधानांच निवेचका वैद्यानित विवेचन हिन्छ मीर दन ऐतिहारिक भारतको गृहसाहित सम्बादक नामके परिचित्र कर्मी मक्ते वालमें सन्तिन्ति दिया । प्रतिप्र सैन वरिवाचार्य महासीधानाने माना पुनिश्ति 'प्रांत्वकार-लंडब्' हती काराएके जानवर्षे विकास्य प्रवीपे आक्रमें मान्तीय-बंबडे जापानं वाराटान्य पानकीरिने अपने तुष्तिरसाव 'प्रधानुपालन' ज्याकरण एवं वसकी जयोरपृतिरी रचना गी स्तरं अधीनरस्ति वंरमुनमें 'ज्ञानोत्तर' राजवावित्रम्' राजस मीरि-क्य मीर पंत्रवीमें 'पविचाय-मार्ग मात्रवा मार्ग्यवर्थ धन्य वृत्रे सम्बंधीर प्रसंब रचा ।

कररोगा (उज्योगकार क्लो क्लोंचे वो वर्षो गुपनावीने बक्रवरे पर्य-पार करायरण वर बोब प्रशिष्ठ कावालों बात पुत्र कात ही करा है। यह पीय-पीयने बहुता प्रश्लामी बवकाब केवर पुत्रवरणीने कन्यायणी सरदात्रणे करने वांत्रिय होन्दर वर्गनेका रिम्या क्यार यह, वस्तारी ह्याका रिसक था और अपने जीवनके अन्तिम वर्षीमें तो पुत्रको राज्यकार्य पंकर एक आदर्श त्यागी जैन श्रावकके रूपमें उसने जीवन व्यतीत किया । सन् ८२१ ई० में ही अमोधवर्षका राज्यामिपेक करके और उसकी त्यति सुरक्षित करके उसके प्रधान सामन्त, अभिभावक एव चचेरे भाई जिराधिप कर्कराजने जो स्वय जिनमवत था सूरत दानपत्रके-द्वारा जैना-ग्रायं परवादिमल्चके प्रशिष्यको नवसारी (नवसारिका) के जैन विद्यापीठके लेए मूमि प्रदान की थी। ८५९ ई० के एक शिलालेखमें राज्य-द्वारा एक नैन वमदिके लिए सिहबरगणके आचार्य नागनिन्दको दान देनेका उल्लेख है। ८६० ई० में स्वय सम्राट् अमोधवपने सेनापित वकेयरसकी प्रार्यनापर मान्यखेट राजधानीमें त्रैकालयोगीके शिष्य देवेन्द्र मुनीश्वरको दान दिया था। अय भी अनेक दान उसने दिये।

उसके सामन्त सरदारोंमें लाट (गुजरात) के राष्ट्रकूट, नोलम्ब वाही-के नोलम्ब, सौन्दत्तिके रट्ट, हुम्मचके सान्तार राजे, गगनरेश, पुत्री चालुक्य आदि अनेक जैनधर्मावलम्बी थे। उसका प्रवान सेनापति एव राज्यका वास्तविक रक्षक चेल्लकेतन वीर वक्षेय (वंक्षेत्र या वंकेयरस) महान् वीर. भीपण योदा. कुशल सेनाघ्यक्ष और परम स्वामिभक्त था, साथ ही परम जैन भी था। उसके प्रपितामह बीर मुकुल राष्ट्रकूट कृष्ण प्रथमके, पितामह एरकोरि घ्रवधारा वर्षके और पिता धोर सम्राट् गोविन्द तृतीय जगत्त्गके राजमिवव एव सेनानायक रहे ये। प्रारम्भसे ही वकेयका वस जैनधर्मका अनुयायी या । उनकी माता विजयाम्या मी वही धर्मातमा ची । वंकेय सम्राट् अमीववर्षका अत्यन्त कृपापात्र एव प्रिय अनुचर या। उसकी चेवाऑंसे प्रसन्न होकर सम्राट्ने उसे निशाल वनवासी प्रान्तका एकाधिपति सामन्त बना दिया था और वहाँ वकेयने बकापुर नगरका निर्माण करके उसे अपनी राजधानी बनाया था । अमोधनर्पका कोसूर शिलालेख (८६० ई०) चेनापति वकेयकी प्रार्थनापर ही लिखा गया या और उसीके द्वारा निर्मिन जिनमदिश्के लिए राष्ट्रपति जयात्वके तत्वावधानमें

विस्तर्क बर्गस्त्रम् वर्गस्त्रोतं वरिश्तरिक वाग्राद् वर्गः व्यूटक्प-वर्गः है के कामार ६ वर्गाण्य वर्गस्त्रे वराण्य वर्गस्त्रभ्योत्तर्भयोत्तर्भयोत्तर्भयोत्तरभ्योत्तरभ्या वर्गस्त्रभ्या वर्गस्तर्भयोत्तरभ्या वर्गस्त्रभ्या वर्गस्ति

हुँ । बस्तु दण्डा पृष्ठ क्रमा क्रियोल बुक्तून बायावर्स (८६८-६)ए हैं । पाल्या पर्युक्त स्थारी क्री ८०५ हैं हैं हैं हैं वासा मा ८०६ हैं हैं सकत प्रमानिकेत हुआ। सार्थ सालय कारण प्रमुद्द मेंगी द्वारियारी बकते मीत्रारिद्वारिक माक्रमण्डा स्थितावर क्रिया स्थार सेन्स्य क्रम्य पुक्र पर्य पर बकते मीत्रे अधिकाति पाल्यार व्यवस्था निम्मा । क्रम्य सामान नर्योद्ध पाल्यानी जो सीत्री था भागति सार्थ भीत्रे सुप्त में अधिकाति पालिक क्रिया। स्थान कर बुद्ध देशास्त्र सामित्य भी **पासनमें छे लिया । कृष्णकी पट्टरानी चेदिनरेश कोक्कल प्रथमकी** कन्या घो और उमने अपनी पुत्रीका विवाह आदित्य घोलके साथ किया था। कृष्णने वेंगिके गुणग विजयादित्यपर आक्रमण किया किन्तु अमफल रहा। उसके बाद चालुक्य भीमके विरुद्ध भी वह उसी प्रकार असफल रहा। अपने पिताकी भौति कृत्ण भी बैनधर्मका भक्त था। जिनसेनके पट्टशिप्य गुणभद्राचार्य उसके गुरु थे। ८९८ ई० में गुणभद्रके शिष्य लोकसेन-ने उनकी उत्तरपुराणकी प्रशस्तिका सवर्धन करके बीर बकेयके पत्र बीर वकापुरके स्थामी लोकादित्यकी राजसभामें उक्त महापुराणका पुजोत्सव एव वाचन किया था। लोनादित्य अपने पूर्वजोंकी भांति ही राष्ट्रकूट-मन्नाट्का स्वामिभक्त सामन्त एव उक्वपदाधिकारी था । ८७५ ई॰ में पृष्णके सामन्त सौन्दत्तिके पृथ्वीरामने जैनमन्दिरॉके लिए भूमि प्रदान की थी। एक अन्य प्रमुख सामन्त तोलपृष्ट विक्रम सान्तारने हमन्त-में पिलयक्ता नामक वसदि तथा कुन्दकुन्दान्ययके भीनी सिद्धान्त मद्रारकके लिए एक अन्य वसदि (८९७ ई० में) निर्माण करायी थी। सम्भवस्या इसी राजाने हुमच्चमें गुडह नामक वसदि बनवाकर उसमें मगवान वाह-बिलको मूर्ति प्रतिष्टित की थी। विक्रमवरगुण नामक एक अन्य सामन्तने पेरियकुडीके अरिष्टनेमि भट्टारकके शिष्यको दान दिया था। कृष्णके ही राज्यकालमें कोप्पण तीर्थपर (८८१ ई० में) एक चटु-गदुमट्टारकके शिष्य आचार्य सवनन्दिका समाविमरण हुआ था । उस कारुमें कोप्पण एक उन्नत तीर्थ एवं जैन-सेन्द्र था। स्वयं कृष्ण द्वितीयने मूलगुण्ड, घदनिके आदि स्थानोंके जैनमन्दिरोंकी दान दिये थे। उसका सन् ९१४ ई० का वेगुमारा साम्रवासन एक जैन दान-पत्र ही है। इसी नरेशके आश्रयमें कन्नडी सापाके जैन महाकवि गुणवर्मने अपने हरिवशपुराणकी रचना की थी। एक अ य जैन महाकवि हरिश्च द्र कायम्यने भी अपने धर्मशर्माम्युदय काव्यकी रचना सम्भवतया इसी कालमें की थी। ९०० ई० के चिपकहनसीगे जैन वसर्दिके शिलालेखसे ज्ञात होता है कि क्रुग्णकी जविकयद्वे नामक एफ वेरपन्थका बावन्त महिला क्षत्रका बुखक सामक थी । कृष्ण विशोषको प्राथः गुवासस्यानै ही पान्य प्राप्त हुना था और स्वके पुत्र करातुन की क्लफे बीवनमें ही जूरपू हो नवी थी। जन्म कराया कराय-

विकास बतरा बीता बाढ तुनीब नितंबर्च शुक्रमर्थ (११४-११ है) हुमा । रतने जलवाके जरेनाको पराजित करके अपने वार्थन किया, वॅनिक पानुवर्गको जो व्यक्ती व्यक्तिका व्यक्तिक अरलेकर विवर्क विका बन्मीयके नदीपाचके विश्वत बुवीयें भी यह विश्वती हुना बळाचा साछ है। कबरे दुईंग मेशार्गन मानिक और मीरियब बीची ही बैनाकी गर्दै बानी में । नेनार्रात कीशियक किरीयनकीय और मनुष्य दक्ति मी

बारमाखा था । बार पारथ सीर पालम केली ही विश्वासीने स्रीडिकेन थीं ! मीरनके शांत्रिय सामने अचारका स्वाय करके वह - वैतन्ति हो क्या वी र न्द्र राजा (इन्द्र गृगीय) प्रशा आये वाची था कि ६१५ हैं. मैं हराबंध नामक स्थानने क्षत्र बनवा बहुदान्तीतक क्याना कता थी क्याने वर्महुस्मी, मर्गान्यली बोर बायक वर्णाली ४ । बाय दाल दिये थे । बाले पूर्वजीवी मॉर्नि नई मी जिनेत्रका क्रम्य ना । क्रम्मी समीहरी अधिकी स्मार्टी क्यने वर्द्य धारितनावता पानाक-विकित कुन्दर वाश्मीत तननामा या रे मण्यामुके मेनक विविध्ययम् तथा वसके दिता वैदारितामा मी की इंच्याच्या वा ।

चक्के बनरान्त प्रक्रमा नून अमोचमर्च द्वितीन (९२१-२५ हैं)

पारा हुआ लिला वह अपने बोडे बार्ड बोक्सिक वहसन्तरा विधार हुआ अगित होता है। वीवित्य चतुर्थ कुरुर्ववर्त (९१५ ३६ ई.) को बानवी हरा माले नई कारिरे हत्या करके राजा नमा वा एक दुराचारी और बारीओ बारफ किस हुआ। इसके क्षत्रवर्षे १३३ हैं। में देवकेकी वर्धनवार नी रचना की वी ३ कामना करतारीकी अर्थकानर श्रवका नावा समीरी वर्ष द्यीन गरित (९४६ ३९ ई.) शीकिनको नहींचे क्यारकर सर्प राजा हुना । मह एक बान्विक्तिः शरेख वा । बळवर पुत्र कुवरान हरन गगनरेश राचमल्ल सत्यवाक्ष्य द्वितीयके विरुद्ध उसके भाई भूतुग द्वितीय-का पक्षपानी और सहायक था, अत अमोधवर्षने भूतुगके साथ अपनी पुत्री रेवाका विवाह कर दिया ।

कृष्णराज तृतीय अकालवर्ष (९३९-६७ ई०) राष्ट्रकृट वशके अन्तिम नरेशोमें सर्वमहान् था । अपने वहनोई भूतुग गगको सहायतासे स्रल्जेयको पराजित करके वह पिनाके सिहासनपर वैठा। वदलेमें चसने भूतुगको अपने भाई राचमल्लका अ**त करके सिहासन प्राप्त** करनेमें सहायता दी, भूतुगको गगवाडि और वनवासीका राजा घोषित किया, उमके पुत्र तथा अपने भानजे महलदेवके माथ अपनी पुत्रो विजन्ता-का विवाह किया और उसकी पुत्रीके साथ अपने पुत्रका। इन विवाह-सम्बन्नों एव मैत्री-व्यवहारोंके कारण गगनरेश भूतुग द्वितीय, मक्लदेव, मार्राप्तह आदि कृष्ण और उसके उत्तराधिकारियोंके सबसे वहे हिंदू और सहायक वन गये। उसे अपना अधिपति स्वीकार करनेमें उन्होंने अपना सम्मान ही समझा । कृष्णके लिए इन गगोने अनेक युद्ध किये । भृतुगने उत्तरमें चित्रकृट और कालिजर तक विजय की, दक्षिणमें कृष्णके साथ चोलों-पर आक्रमण किया और परान्तक चोलके पुत्र राजादित्यको हायोपर वैठे-वैठे ही वागसे वेघ दिया । गगनरेशकी सहायसासे कृष्णने चोल, पाण्डघ, केरल, कलञ्ज, औच एव सिहलके राजाओंको पराजित किया तथा रामेश्वरममें क्षपना विजय स्तम्भ स्यापित किया । उसकी ओरसे गग मारसिंह और उसके बीर सेनापित चामुण्डरायने बनवासी देशको विजय किया, नोलम्बीं. गुर्जरों और किरातोंको पराजित किया, चच्छगी-जैसे सुदृढ़ दुर्गोको हस्तगत किया, अल्लण, वज्जवल, मृहुराचय्य आदि सामन्तों एव उपराजाआका दमन किया । उसने मालवापर आक्रमण किया और परमार हर्पमियक्ने उसकी अधीनता स्त्रीकार को । कृष्ण एक बीर योद्धा, दक्ष सेनानो, मित्रोंके प्रति अति उदार, घर्मात्मा और पराक्रमी नरेश था। उसने राष्ट्रकृट साम्राज्यकी प्रतिष्ठाको गिरते-गिरते बचाया । किन्तु दो-एक राजनैतिक मूर्वे क्लमे की करवारोंको करावित हो विमा किन्तु करका कृत्या रतम नहीं किया बुनारे एक पाणुरा अरुदार सैनाफो सामागाडे केनीर मानने एक व्यास्त्रार्थ वाक्षर गैतिक-नेनाकोके क्या प्रशास कर थे। तकारि क्षण्य सूतीय एक सहस्य बरेश या और अपने वृत्रेजीको जोति हैंन-मर्नका नोपक और विद्वालीया आमयबाद्धा था । वैद्यावार्य वाहियोगान्यू का क्यू वहा क्षम्मान करता का बीर उन्हें माना मुख मानता का । इन्हेंक क्षांयक्षे बनने निरम्तर तक्ष निषे और वर रियाने निया शास की।

बारतस्य यति बाद वैता न करता तो शक्तियाँ कोचीया बाती हुई ग्रील मीर क्रमरमें परमार्थेको क्षमा सिस्ट ही कीनके पानुसर्वे इस टेमानीने बन्त राह्यों राजवंदि असर राजवृद संस्थानक सूच यूचे ही की

हालाहे क्यारी कामके सेन बहातांच चोत्रकी सकाराराजकारीकी क्षापि देकर नुम्पासित किया का । वीवदेशने वयस्तिमक एवं वीडिनार-स-नुष्ठमी रचना इस्त्रके जानुस्य सामग्रके बालवर्गे १५९ वें वें बंदशार नगरमें की थी। कुम्बके जवान बन्यों बच्च में । मैं की बैतवर्गक बदुवानी में बीर संप्रशंबक स्थानति वृत्तात्ताके आवश्यता में । क्यूनिये प्रेरचार नरिने बन्ते प्रक्रिय स्थानुसारको एपसा वी वी । न्यानास वस्त्रे रूप

नत्र की प्रजनकों में । बीप बार्मपुक्तको और पुरस्कादि विदासी की गरियोचे बाकासका से । हान गुरीवारी मृत्युके बार सबसा बीटा बाहै बोट्टिय जिलाह (१६७-०३ हं) राजा हुआ । जिल्लाका सक्ते जनान सहरूत वेप मार्थित और रुपके केवार्यन पाकुरक्यम सम्बन पुरुषि बस्सी हर में मामांदे निवात वर्ष परमारते सरदशावि का पहुनादिवर बाजमन कर दिया और ६.२ ई. में स्वरं नामकोड राजवारीको कुछ और परन पिना ! क्रमण्डम क्यी पुढारें योगून भी जारा नक्ष । शास्त्रीरकी सुरके दनर महाकरि पुध्यस्य वहीं में और क्लूमि क्षत्र सुन्धर नवधिक विराधका ना नारतीय इविदाल एक स्टी

बरतेमें सकत हो जले ।

करण वित्रण किया है। समाचार सुनकर गंग मार्रीसह राष्ट्रकृटोकी सहायताको पहुँचा, परमार सेना तुरन्त वापस छोट गयी और सोट्टिगका पुत्र कर्क द्वितीय (९७२-७३ ई०) राजा हुआ। यह भारी योद्धा था और घोडे ही समयमें इसने पल्लवो, गुर्जरो, हुणी और पाण्डघोको युद्धमें पराजित किया। इन युद्धोंके कारण राजधानी फिर अरक्षित हो गयी कौर ९७३ ई० में चालुक्य सरदार तैलपने उसपर अधिकार करके कर्ककी राज्यच्युत किया और सम्भवतया युद्धमें मार भी दिया। राष्ट्रक्ट वंशका अतिम राजा इद्र चतुर्थ था जो कृष्ण तृतीयका पोता तया गग मार्रासहका मानजा था। वह भारी वीर और योदा या तथा चौगान (पोछो) के खेलमें निपण था। मार्रासहने उसे अपने पूर्वजोका राज्य प्राप्त करनेमें भरसक सहायता दी। एक वारको मान्यखेटमें उसका राज्या-मिपेक भी कर दिया । दोनोंने वीरतापूर्वक अनेक युद्ध किये किन्तु स्थायी सफलता न मिली। ९७४ ई० में मारसिंहकी स्वगुरुचरणोंमें सल्लेखनापुर्वक मृत्यु हो गयी। अव निस्सहाय इन्द्रराज मी कुछ वर्षी तक प्रयत्न करनेके बाद संसारसे विरक्त हो गया और श्रवणवेलगोल चला गया। हेमावतीके तथा श्रवणवेलगोलकी चन्द्रगिरिके शिलालेखेंसि ज्ञात होता है कि अन्तमें वह जैनमुनि हो गया था और ९८२ ई० में इस 'विश्वविख्यात इन्द्रराजने शान्त-चित्तसे सल्लेखना व्रत घारण करके देवराज इन्द्रके पदको प्राप्त किया। इस प्रकार इन्द्र चतुर्थकी मृत्युके साथ दक्षिण भारतके महान् राष्ट्रकृट वश और साम्राज्यका अन्त हुआ।

... लगभग २५० वपके उपरोक्त राष्ट्रकृट युगमें जैनधमं और विशेषकर उसका दिगम्बर सम्प्रदाय सम्पूर्ण दक्षिणापयमें सर्व-प्रधान धर्म था। ढाँ० अस्तेकरके अनुसार साम्राज्यको लगभग दो तिहाई जनता तथा राष्ट्रकूट नरेशों एव उनके परिवारोके विभिन्न स्त्री-पुरुषो, अधीनस्य राजाओ. उपराजाओं, सामन्त-सरवारों, उच्च-पदाधिकारियों, राज्यकर्मचारियो.

₹0 ₹

महाजनों और श्रेष्ठियो सभीमें अधिकतर लोग इसी घमके अनुयायी थे। दक्षिण भारत [२]

जास्तीय प्रविद्वासः यक ग्री

ही हवा । वैन दिहालाने नारबीका नागार करा बीर सैव क्साकार्यने महितीय इतिहास देवको वर्षहरू निया । अस्ते इक वास्तव राज्ये वैक बंदर विने शास्त्रीय बंदर विका सर्वतीन नी विकास किया । करपानीके उत्तरकर्ती कालक---! भी बती है होने सारके मन्त्रिय वर्ष पारतीय शरिकाशमें कार्यावक महत्रापूर्व से । लगेड राजरीयें बस्तर-केर हुई, कई गरेवॉकी कृत्यू, वर्गानीके राज्याविकेत, वर्ष स्थानोनै राज्य एवं वय-वरिवान हुए। बस्तून बैक-रात्मराके बनुवार मह बुध कुपरे क्यांनिको सम्बन्धा तुपन का। जानी वस प्रीवन पारतर्थे इस कारणे एक महत्त् च प्रशासनित हुई । ९६७ ई में चायुक्त बनाए हुन्स वृत्तीय नर्नदाके विश्वचनती वनत्त जुन्धानका पूजकार त्याची पी

मर्नदाने केवर सदरा पर्वता बनेक बैच निवासीक जब-बाबारदशी ही नहीं राजपुतारों एवं अन्यः कथ्य वसीके आव और आवाजीयों ती वानिक एवं सीविक विका प्रशास करते थे । क्षतेल जैनावार्य शक्तार्य और न्ही-राजाजीके राजपुर और वस्त्रपर्यंक ने 🖟 बाह्यर अनन, जीवनि और रियाधन-राध नृति मानिका बावक बार्डिका कर वर्षावर सब बीकीक कारके वार्थोंने रम का । बाब ही क्षातिर्कात स्वक्रातासक वर्ष विदेशी बैनवर्ग अन्य बर्मोदे बाव बसारता । ब्रह्माच बीट बहुगोरपूर्वक कारी कर प्या था । रीव-रीव्यवादि-शाय वाक वियोगों और अनेय-वियोगी सेमाँगर चीक्य बार्चाचार किने जानेकर की और एक्स वैनोक्षे इन नुवर्त रहन सर्विक प्रतिजनगरम होते हुए वी क्वके हारा वर्ववीरर वार्तिक सच्चावार किये बानेका कोई प्रशास नहीं जिल्ला । पाप ही बेनकर्न करने बहुएं-क्यिके मोदिक वर्ताओं वीरता-पूर्वक वृद्ध श्रीवाचन सब्देव हैन स्वयंत्र रबा वर्ष निलार जानकश्राक्षण वर्णाने शायक हो हवा ही नहीं बायक

मोर-धिका थी वैत-पुर्वी और वन्तिओ-हारा क्षेत्रांकित होती 🖷 🖰 बर्जनामाना द्वाराम बैनमना 'धे-शम: निक्रेम्न' के होता का मी म्या-राजने भार तथ बना बाता है । पुत्रसाने केनर बानारेस पर्ना और िकन्तु दिसम्बर ९७३ ई० में इसका सम्पूर्ण राज्य उसके भतीजे कर्क दितीयके हाथोंसे अकस्मात् छिन गया और २५० वपसे चला आया विज्ञाल एव द्यवितशाली राष्ट्रकूट साम्राज्य एक स्मृतिमात्र रह गया। उसके स्यानमें वातापीके प्राचीन परिचमी चालुम्य वशका चमत्कारी पुनदृश्यान हुआ और इसका श्रेय चालुग्य भीर तैलपको है।

तैलके पर्वज कहाँ रहते थे या राज्य करते थे इसका कुछ पता नही चलता । पीछके चाल्यय अभिलेखामें उसका सम्य व वातापीके पश्चिमी चालुक्य सम्राट् विजयादित्य द्वितीयके साथ जुड़ा मिलता है जिसका पौत्र कीत्तिवर्मन् द्वितीय ७५७ ई० में इस वशका अन्तिम नरेश था। उसके चाचा भीमपराक्रमकी सन्ततिमें कीत्तिवर्मन् तृतीय, तैल प्रथम, विक्रमादित्य त्तीय, अय्यन प्रथम और विक्रमादित्य चतुर्थ क्रमण हुए। अन्तिमका पुत्र यह तैल दितीय था। कुछ विद्वान इस वशक्रममें सन्देह करते हैं। ९५७ ई० में यह तैल या तैलप राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीयके अधीन तरहवादी १००० प्रान्तका एक साधारण श्रेणीका अज्ञात कुल एवं निरुपाधि धासक था। किन्तु ९६५ ई० में वही उसी प्रान्तको एक अणुगजीवि (जागीरदार सामन्त एवं सेनानायक) के रूपमें भोगता हुआ सत्याश्रय वशी महा-सामन्तात्रिपति चालुक्यराम आह्ममल्ल तैलपरस बना मिलता है । मन्मवत्या अपनी महत्त्वपूण युद्ध सेवाओं के कारण कृष्ण वृतीयका कृपापात्र वनकर मात्र ८ वर्षमें ही उमने ऐसी अद्भुत उन्नित कर ली थी। उसकी मी वोषादेवी चेदिनरेश लक्ष्मणकी पुत्री थी। उसने स्वय अपना विवाह रास्ट्र-कृट सरदार वम्महाटुको कन्या जक्व्ये अपर नाम रूदमीके साथ किया था। चेदियोंको कृष्णने अपने विरुद्ध कर लिया था। इस प्रकार अपने मामा चेदिनरेश युवराज द्वितीय, अपने श्वसुर वम्महाट्ट, वैंगिके पूर्वी चालुक्य विद्या द्वितीय, सुयेनदेशके यादवराज मिल्लम द्वितीय आदिकी मियता एव सहायतासे तैलपने अपनी शक्ति बढ़ानी प्रारम्भ की । राष्ट्रकूटॉका सामन्त और सेनानायक बनकर उसने उनको आन्तरिक दुर्वलताओको लक्ष्य किया भीर बरदारणे वावमें रहा। याक नातक क्ष्म वाहान बारगर हम्मरे मिन्द्र हो नया या अद्यो में नगरिवहते बढ़शा दमन दिया था। यद गर् भी वैचाने ना रिका। नारीनेयरा नह बाहान याक एक नहान नीजा एवं क्लिमर एउन

नीवित या। वैकाने को सानों नहामें साकता समास निमृत्य निया और 'स्ट्रान्स सकरपटस स्वीमार्टि नह रिया। सक्को नापपीटि दिसे दुर्ग्यां, विभीयत सानि कार्यस्था द्वारा कार्य हूं। सन्द्रान सम् ति केवला संस्थायत्व हूं पता या, पाल-स्वरस्था हुएं पाल-स्वर कके पुरोग्य हुपनि स्थोदका वैकार सार्व व्यापनीक स्वरूप और पाल-सिन्दार्ट केवल हुना। अन्तवार पुर सहस्वकारक सारोह से सहन् निन्दार्ट निकार हुना। अन्तवार पुर सहस्वकारक सारोह से सहन्

र्देणाचा रेतारति ज्लान वी बल्लास बीबा एवं पार्त-मुख्ये या।

कोमारा र नमाराण आहे एक्ट्र होंगे कई बच्च काण्या हरायों दरें र स्वार्यायोगोर को किमाने बीत किया था। वसके गोधाना रे १ दें है हिस्त परायोग सम्बोदाध निष्यं था। वसके त्यार्थे हुए प्राप्ता पर पर्यु-पूर्व व्यक्तिस नर्वर का शिव्र था। वसकार वह बहुत्य प्राप्ता परित्र पुरावका दिवार हुँ। देवी निर्मार्थ १ १ दें है केवारे सम्बोदार वेदन सारा सेमा। यहनूद कई दिवार तो चार्य नेता था, अनेतर वह हुव किसे बार्व या बार बीत किस्ते एउट्टून प्रवासीत विवर बीत किसा बीर दम वर्षकी परपूर्व विवासता दिवार सम्बोद निर्मं बीत किसा बीर दम वर्षकी परपूर्व विवासता करतीय किसा किस्ते हिस्से

प्रकार भीतृत (१०१-का दे) तेतव राजस्य समा प्रकार स्थित संपत्तर भीतृत (१०१-का दे) तेतव राजस्य प्रकार सर्व या । संपत्तर स्थेतृत्व (१०१-का दे) तार्गद्व और स्वयं नेपार्थ भागुन्यस्वयं प्रकार स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान राष्ट्रकट राज्यका अपहरण भी सहन नहीं कर सक्ते थे। अतः परस्पर युद्ध चलते रहे। मारसिंहने तो निरमत होकर समाधिमरण कर लिया। वैलपने पचलदेव, गोविन्द, मदराचम्य आदि गग सरदारोंका दमन करनेमें चामण्ड-रायकी सहायता की और गग सिहासनपर राचमल्ल चतुर्थकी तथा तदनन्तर राक्कसगगको दैठानेमें साधक हुआ, अतएव ये दोनों गग नरेश और उनके महामन्त्री चामुण्डरायसे उसकी मैत्री हुई और वह उनकी ओरसे निश्धक हुआ। तदनन्तर तैलपको सेनाओंने करहाट, बॉकण, पिल्लकोट, भट्रक कादि प्रदेशोपर काक्रमण किया और राष्ट्रकृट साम्राज्यके अन्तर्गत जितना प्रदेश था उस सबपर प्रमुत्व स्थापित कर लिया। उसने गुर्जरदेशको भी विजय किया और मालवा नरेशसे युद्ध किये। मुज परमारने छह बार तैलपके राज्यमें आक्रमण किया और प्रत्येक बार पेछि हटा, अन्तिम धावेमें स्वय बन्दी हुआ। कहा जाता है कि तैलपकी बहन मृणा-लवतीसे उसका प्रेम हो गया था और फलस्वरूप वह माग निकला किन्त् तैलपने उसे युद्धमें फिर पराजित किया और उसी युद्धमें मुजकी मृत्यु हुई। तैलपने शिलाहार, रट्ट और नोलम्ब नरेशोका दमन करके उन्हें अपने अधीन किया। गग भी अब उसके अधीन राजे ही थे। केवल चोल सम्राट् उसके प्रवल प्रतिद्वन्द्वी थे, उनका ध्यान बटानेके लिए उसने वेंगिपर वाक्रमण किये, उसे पराजित किया और उसकी राजनीतिमें हस्तक्षेप करता रहा। ९९७ ई०में तैलप दिवीयकी मृत्यु हुई। मा मखेटका त्याग करके कल्याणीको उसने अपनी राजधानी बनाया था।

वस्तुत, जैसा कि उसके वराजोंके अभिछेक्षोमें कथन किया गया है। तैलपने प्राचीन चालुक्योंके राज्यका अपहरण करनेवाले राज्यकूटोंको परा-जित एवं निष्कासित करके चालुक्य बशकी साम्राज्य-न्द्रस्मीको पुन प्राप्त किया और प्रतिष्ठिन किया। निस्सन्देह वह एक महान् पराक्रमो और योग्य नरेश था। बिहान् और गुणो पुरुषोंका वह आदर करता था। सेनापति मल्लप्त, मन्त्री बल्ल, सण्डनायक नागदेव, बीर सेनानायक पोत्रस्य पूरेपोर बोर पुरंप तैन-वि पान-पाणियों एवं हुरीस पुरस्त नारमस्य सारि पहाणीर बोदारी, एकारिश्यू सम्प्रती, पुरस् पारमार्थरारियों कर लाविक्स के प्रशेषी के स्वार्थें स्त स्व के जान इसा पारमें पानियों कर लाविक्स के प्रशेष के स्वार्थ स्व इस्त है। प्रश् इसा । देशों भाषानिक परणायों से कार्य माणा पर पूर्व प्रस्त है। प्रश् स्वार्थ प्रश्न के स्व के स्व सार्थ के प्रमुख्य पर्व प्रस्त के प्रश्न के प्रश्न के प्रश्न के प्रश्न के प्रस्त के प्रश्न के प्

साइव वीवाईन रावारावा वार्य वार्य वार्य वर्षेत्र वेर्षेत्र है । वार्य करीं संस्वपृत्र (वार्यावेश्वरा) क्रेम्स्स्व क्रिया वार्या वार्या त्यिक क्रिया कार्य क्रिया क्रिया क्रिया वार्या वार्या त्यिक क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया वार्या वार्या वार्याची वार्य केमार्य क्रिया क्रिया वार्या व्यवस्था वार्या वार्यावेश क्रेम क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया वार्या वार्यावेश क्रिया वार्यावेश क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया वार्यावेश क्रिया वार्यावेश कर्या क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया व्यवस्था क्रिया वार्यावेश कर्या क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया वार्यावेश क्रिया व्यवस्था क्रिया व्यवस्था क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया वार्यावेश क्रिया व्यवस्था क्रिया व्यवस्था क्रिया क्र मन्दिरों में स्थापित को थीं, अनेक मन्दिरोंका निर्माण एवं जोणींदार कराया था और आहार, औषध, अभय एव विद्याष्ट्रप चार प्रकारके अनवरत दानद्वारा वह दानचिन्नामणि कहलायो । ऐसा प्रसिद्ध है कि उसके सतीत्वके
प्रमावसे गोदावरीका प्रवाह रुक गया था । उसका पित नागदेव गुवराजका अनन्य मित्र और सम्राद्का अतिमाय अनुचर था । अत इस देवोंके
धमकार्योमें सम्राद्की अनुमित, सहायता एवं प्रसन्नता थी इसमें कोई सन्देह
नहीं । किसी भी धर्मवीर महिलाके लिए आदश नागे रत्न अतिमन्त्रेसे
तुलना किया जाना परम सौमाय माना जाता था ।

तैलप हिनोयका उत्तराधिकारी ससका पुत्र सत्याश्रय इित्य वेदेंग (१९७-१००९ ई०) था। उमने अपने पिताकी आक्रमणकारी नीति चालू रखी। उसका प्रधान धात्रु राजराजा चोल था। राजराजा चोलने चालून्य राज्यपर आक्रमण किया, मत्याश्रयने उसका मुकावला इटकर किया, साथ ही वेगिपर आक्रमण कर दिया और भीमको पराजित करके धितवर्मनको राजा बनाया। चोलोकी धिवत इम समय द्रुत वेगसे वढ रही भी अत सत्याश्रयने उनमे सिच्ध कर ली। यह नरेश भी जैनधर्मका मक्त था। उसके गुरु सम्भवतया कुन्दकुन्दान्यय पुस्तकगच्छके द्रिमिलसधी मट्टारक कनकसेन बादिराज और श्रीविजय ओडेयदेव थे। सत्याश्रयने एक जैनगुदकी स्मृतिमें अगदि नामक म्दानमें एक भव्य निपद्या निर्माण करायी थी। उसका प्रधान राजकर्मचारी उसके मित्र नागदेव और अतिमध्येको पुत्र पटुवेल तैल था, वह भी जैनधर्मका परमभक्त और क्षि रक्षका आश्रयदाता था।

सत्याश्रयके पहचात् उसका पुत्र कुन्यमरस राजा न हो सका, उसके भाई दशवर्माका पुत्र विक्रमादित्य पचम (१००९-१३ ई०) राजा हुसा। सटुपरान्त इसके भाई अय्यन द्वितीयने लगभग एक वर्ष राज्य किया और फिर तीसरा भाई जयमिंह द्वितीय जगदेकमल्ल चालुक्यचक्रो (१०१४-१०४२ ई०) राजा हुआ। इसके समय भोज परमारने अपने चाचा मुजका वरण केंग्ने किए क्सावीवर बाह्यव किया। वर्षीयूने घोडण गुर्म-वर्षा स्थ्या और रोगोरे तथिय हो नहीं। वैदिक वाय में बच्चा पूर्व और एनेल केंग्ने में मुद्द हुए विश्व केंग्न हो दिवसी हो बोर किन में प्रो। वर्षास्त्र दिवास वैत्यवर्षण विश्व क्षाय कोंग्न केंग्न स्थिती हो पूर्वा का करने हानाव किया तथा चाहिल-निवायको मोलाहर विश्व में स्थान करने हानाव किया तथा चाहिल-निवायको हो स्थान करने राज्यां नार्षण वर्षण हुए करने एका व्या । करने प्रवचनों राज्यां नार्षण कर्मने वरण कारणा विश्व है। करने निवास

क्रम्पन्ती राजान कर्षे स्वन्ता कृत्य करूक तथा तथा जनतेलक्ष्मपारी

कार्यात प्रतास को सी । १ २ १ ई में बुद्धी बाराओं के जाना नीहर संक्ष्म 'पालंबारित रुपा का । कार्यावरणीय इस्तेमक स्तिम दया कार्यक्रिये हुए। इंग्लिक कार्योक प्रतास । (कार्या) बार्यि क्षम इस्त्र मी रुपी है दरें। स्तिम कार्योक प्रतास । (कार्या) वार्यक्रम कार्यावरण मी रुपी हों। स्तिम कार्योक प्रतास में आहण वा। । कार्यक कार्यक्रम मान्यक प्रतास केर्या रुपाया इस्त्र । कार्यक्रम कार्यक्रम स्तिम कार्यक्रम मान्यक प्रतास कार्यक्रम स्तिम कार्यक्रम स्तिम कार्यक्रम स्तिम कार्यक्रम स्तिम कार्यक्रम स्तिम कार्यक्रम साथ रुपाया इस्त्र । कार्यक्रम इस्तिम कार्यक कार्यक्रम (१ ४९-६८ हैं) प्रतास इस्तिम कार्यक्रम साथ कार्यक्रम कार्यक का

बराहर इस्तमेर करता रहा । वह एक तिहासम् केत था । कोमिक विका-केवने इस स्पनाने स्वाहासम्बद्ध (कैनवर्ष) का बनवानी किया है । क्यों विद्यापीठ वनी हुई थां। सोमेक्टर प्रथमने जैनाचार्य अजितसेनका सम्मान किया और उन्हें शब्दचतुर्मुख उपाधि प्रदान की। इस नरेशका माहामात्य लक्ष्म 'राय दण्डगोपाल' जो उसका दाहिना हाथ था तथा बीर सेनापित (दण्डनाथ) ज्ञान्तिनाथ भी परम जैन थे। इन्होंने कई जैनमन्दिर वनवाये और उनके लिए दान दिये। सोमेक्टरकी पट्टरानी केतलदेवीने भी अपने सचिव चाकिराज-द्वारा सेनगण पोगरिगच्छके गुरु ब्रह्मसेनके प्रशिष्य और आर्यसेनके शिष्य महासेनको १०५४ ई० में दान दिया था। इस राजाने राजधानी कल्याणोकी विस्तृत एव अलंकृत किया। अभीतक मान्यसेट भी कल्याणोके साथ साथ राजधानी वनी हुई थी, किन्तु अबसे कल्याणी ही चालुक्योकी पूणत्या राजधानी हो गयी। १०६८ ई० में एक भयानक रोगसे पीढित होनेके कारण इस राजाने तुगभद्रामें जल समाधि ले ली। यह राजा इस वशके सर्वमहान् नरेशोमें से था। वह जितना योद्धा था उससे अधिक कूटनीतिज्ञ था।

उसका पुत्र सोमेंदनर हितीय भुवनैकमत्ल (१०६८-७६ ई०) भी चीलोंके साथ युद्ध करता रहा। अपने भाइयोंके साथ भी उसका हन्द्र चला और राज्यके दो टुकडे होते होते वचे। सोमेंदवरने कदम्बोका दमन किया और चोलोंपर भी विजय प्राप्त की। अपने पूर्वणोकी भाँति वह भी जैन रहा प्रतीत होता है। उसने मूलसघके आचार्य कुलच द्रदेवको णातिनाथ बसदिके लिए नागरखण्ड प्रदेशमें भूमि प्रदान की थी और उक्त मन्दिरमें एक नधीन मूर्ति प्रतिष्ठित करायी थी तथा श्रीनिद पण्डितको भी दान दिया था।

१०७६ ई० में उसका छोटा माई विक्रम उसे यन्दी करके स्वय राजा वना। यह विक्रमादित्य पछ त्रिमुवनमल्ल साहस-सुग (१०७६ ११२८ ई०) इस वशके अन्तिम नरेशोंमें सर्वमहान् था। उसके दीर्घकालीन राज्यकालमें चोलो, मालवाके परमारों और वेंगिके पूर्वी चालुक्योंके साथ उसके निरन्तर युद्ध चलते रहे। गोड, कामल्प, केरल, लाट, चेदि तथा अपने साम्राज्यके मन्दर्गर बोर्ड-को बारलांबि जो मुख बलते रहे । वह काफ विकेत करने माकूमो और शोबोले बीच नुवाँ एवं कुटबीडिक सम-वैवेषि मरपुर या ! पीकोको पराजिस करके जाएनमें ही कहते बीख राजकुमारी के साम विवाह कर किया था किन्यु संबर्ध किर श्री कलता रहा। इसी सवाके किए गद्दानान विकासने "विकासनेन परिता" की एपना की भी। इस राजानी नियारविक्याची क्यांत लूनकर ही वह क्षेत्र कस्पीरवे नर्मांत्रक मान्य मा । जिनामार न्यामका पुरस्काती विकाशित्वर की प्रवीके स्वयमें हुता । इस गरेकने अपने राज्याविषेत्रको शिक्ति पाल्या विकास मानका जरमा अंक्यु भी अच्छित किया। इस्त्री बैनायार्ने बाहरकरमा बन्मान करके प्रन्ते वाक्तरस्वती वपावि प्रवास की की। राज्य मान्य करनेके पूर्व ही कर वह एक जान्तीय जानक बाव का करने सम्मानी मान्त्रके वरिकारचे अवरमे चालुक्य-वेग-परमाववि जिल्लाकर नानका कुन्दर मन्दिर दमबादा था । विश्वासम् तान्य करनेके क्रायाना अपने दस्त्रधारण मन्त्रे देवती. प्रार्थनापर राजाने बाढी मन्द्रिएके किए सैक्युव राज्येनकी ^{सन्} दिया था । गुक्रको क्रिकेस स्थित वसायती-पार्व्यक्त सिन्द्रकारी क्रिकेन केवचे बड़ी गरेक करत अन्तिरका को निर्माता क्षेत्र होता है। शर्पी स्वारस्य विश्वको प्रवित्व जासूका खैलीके विकासका क्षेत्र इसी गरेकको मनान्त्रमा है : क्ष्ममानीको सम्बन्धने वर्गमन्त्र श्रीकानने क्रम क्षममे हिन्दू बान-रेन्द्र थे। शक्ती निविद्य स्थाविधी वर्ग ध्योति विक्रित चारहेद वर्णी एवं वर्षगोत्री विका साथ-साथ वी बासी वी । इस राजाके समस्ये सारतेन बरेन्द्रतिका बहुनुकी बांचर्तन हुआ : गह गरेख वर्तवरी-बहिल्लु का और क्य ही मनीका प्रशिपालय करता था। नवानि वसका निजी एरं कुल्पर्य वैनवध था । वैनापार्य वर्तनिय वो अपने जिल्लानंत्रम वर्ग सफरपानी क्य प्रविद्ध में विक्रमानित्वके वर्तवव से । धकरी मृत्युरे प्राथात् शक्या पुत्र श्रीवेश्वर शृतीन मुसीफालस ११२८-१९ ई.) पात्रा हवा । वर्तेश कवना विवय का अधिकार्त

चिन्तामणि अपरताम राजमानसोल्लास नामक ग्रन्थका यह रचियता था। इसका शासनकाल धान्तिपूर्ण रहा, यह स्वय युद्धिप्रय नहीं था वरन् साहित्य-रिसक था। फलस्वरूप उसके होयसल आदि सामन्त स्वतन्त्र होने लगे। उसके पुत्र जयसिंह तृतीय जगदेकमल्ल (११३९-११५१ ई०) के समयमें होयसलोंने चालुक्य राज्यका बहुभाग दवा लिया और उसके छोटे माई एव उत्तराधिकारी तैल तृतीय (११५१-११६३ ई०) के समयमें स्वय राजधानी कल्याणीपर बिज्जल कलचुरिने अधिकार कर लिया। कल्चिर, होयसल और ककातियोंके बीच चालुक्य-साम्राज्यके तीन टुकडे हो गये। और तैल तृतीयका पुत्र सोमेश्वर चतुर्थ (११६३-८४ ई०) नाम-मायका हो राजा रह गया।

कल्याणीके कलचुरि कलचुरि मारतका एक प्राचीन राजवश्या। इसका सम्बन्ध मूलत चेदि (बुन्देलखण्ड) प्रान्तसे था अत यह चेदि वहा भी कहलाता है। चेदि सवत्के प्रवर्तनकाल सन् २४९ ई० से इस वंधका उदय माना जाता है। मध्यभारत, विदर्भ महाकोसल तथ सरयू पार बादिके कलचुरि वशोंका वर्णन पिछले एक अध्यायमें किया जा चुका है। १२शों हातान्दीमें इस वशकी एक शामाका उदय दक्षिण भारतके कर्णाटक प्रदेशमें हुआ। ११२८ ई० में कल्याणीके चालुक्य-समाद सोमेदवर सूतीयने कृष्णके वहाम परम्मदि कलचुरिको बोजापुर विषयका शासक नियुक्त किया था। उसका पुत्र विज्ञल कलचुरि उसी पदपर उसका उत्तराधिकारी हुआ।

बिज्जल वडा वीर और महत्त्वाकाक्षी था। चालुक्य जयसिंह तृतीयने उसे महामण्डलेक्वर बना दिया और अपना सेनाध्यक्ष नियुक्त किया। चालुक्य पैल तृतीयको अयोग्यतामे लाभ उठाकर साम्राज्यके सामन्त सरदार स्वतन्त्र होने लगे। विज्जलने इस विद्रोही सामन्तोका सघ बनाया और उसका स्वय नेतृत्व किया। ११५१ ई० में उसने इस प्रकार सहज हो राज्यक्षित अपने हाथमें कर लो। अन्य सामन्त लोग उसकी वढती हुई प्रस्तिने प्रतम नहीं हुए। बता करने कनके नहाराय वैक गुरीवरी क्ती कर किया और विशेषी बावलीका बन्न जरके ११५६ हैं हैं काने बारनी राज्याणीका राज्याद वोचित कर दिवा और बदवा तेरह की चनाना । वदी वर्षके एक धिनानेवामें वसका सक्केच 'कक्रपुरि मुदर्गन चत्रप रें विशुवनस्थान निवरके नाथ हुता है। ११६७ ई. वर्षान क्रायन हर कर बबने राज्य विकाशीर प्राप्ते बनवर्ते ही बबने प्रवाधित कर रिया क्रियह एक गीर बोक्स जारी रिजेन्स और महानु गरेस स्टे कारी कुकरी प्रदानिके समुवार वह जैक्क्पेटर बनुवारी था। सारत्याचि एवं बरमभने विज्ञानमा स्थाप बहायक क्याना बहायाच एवं प्रतास मैनारिन रेविकास वा । वनुवैक्शालक क्वला विकर वा और वह नहीं हवार दशक्तारक नहताता या । कर कन्य नवाविनारी वक्के स्वीर नार्व करते है। वह मन एवं वीतिपूचन, वीर बोद्धा रह देखी चरित्रपान् और महान् क्षामी च्य, क्याप्तार्थं करण्युमये बहाती गुक्ता सी मानी नी । महाराज मिजनको हत्त्व होफर क्ले नामरकथ प्रान्त वानीर-में प्रदान निजा था । रेपियमंत्र नरम कैंग का और चैमवर्मकी अधारणार्के क्रिए वयने बनेक सार्व किने । विज्ञासका कुछ सम्प सैन शस्त्री सत्त्राच स्वयोग गा, इत्तरा सामाधा

marana एक ज्या का नामा वाहुस क्यावर पा, पार्थ कराय मान मी तैन था। वाकोरणी मुक्की करायु यह मार्थ्य कर्मी कर्म मिनुस्क हुई। यह खोड़ी कराये समुश्ति करायों कर मार्थ या। किनु पार्य क्या प्यारमाधी गा। कर्म कुम्मार्थी क्ये करी मीर्थिक व्यर्केशी मुंगारव निवारी नहीं हो। वीरान्देनियन बीर सम्पर्णि क्षेत्र मुंगा क्या कर्मी एक ज्योग व्यवस्था कर्मा क्ष्मिक मिन्दर्भ क्ष्मा क्ये केलाईक स्वतीव्य क्यांत्रणी क्ष्मा व्यवस्था कर्मा क्ष्मा मार्थ्यभीते क्या क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मा मार्थ्यभीते क्या क्ष्मा लिए उसने राजाका घ्यान अपनी अतीय सुन्दरी भिगनी पद्मावतीकी ओर वाकृष्ट किया और राजाकी इच्छाका आभास पाते ही उसके माप राजाका विवाह कर दिया। पद्मावती अपने माईकी इच्छानुमार विज्जलको अपने धर्मसे विमुख और वामवके मतका पोपक तो न वना सकी किन्तु उसके मोहपाशमें वैधा राजा राज्यकार्यकी ओरसे असावधान हो गया। इमका छाभ उठाकर वासवने अपने मतके प्रचारमें सम्पूर्ण राजकोप खाली कर दिया और राज्यके विभिन्न पदाँसे जैन राज्य कर्मचारियों और पदाधिकारियों को ललग करके अपने माथी और सहायकोको नियुक्त करना आरम्भ कर दिया। अत्तत राजाकी मोहनिद्रा दूटी और वासवकी कुचैष्टाओंपर उसका ध्यान गया, वह बहुत क्रोधित हुआ। अत्तव बासवकी राजाको विपानत आम खिलाकर छलसे उसकी हत्या कर दी। एक मतके अनुसार विज्जलने राज्य अपने पुत्रको सौंपकर धेप जीवन धर्म-साधनमें वितामा था।

विज्जलके पुत्र सोमेदवर (११६७-७५ ई०)ने, जो वासवके कुकुत्योंके कारण उससे अत्यन्त घष्ट था, गद्दीपर बैठते ही उसे धर्म और राज्यका धात्रु घोषित कर दिया। बासव माग निकला, किन्तु सोमेदवरके सिपाहियोंने उसका पोछा न छोडा, अन्तत थककर वासवने एक कूँएँमें डूबकर आत्म-इत्या कर ली। उसके अनुयायियोंने उसे बाहोद घोषित किया और उसके अन्तके सम्ब घर्म अनेक चमत्कार एव किवदितयाँ प्रचलित कर दीं। विज्जल और उसके उत्तराधिकारियोंने बासवसे चिढ़कर जिगायतोंका क्रूरताके साथ दमन किया बताया जाता है। वीरर्षं व लोग ब्राह्मणोंके भी चिरोधी थे, वे जाति-व्यवस्था, यज्ञोपवीत, बेद और वाल-विवाहको धमा य करते ये तथा विधवा विवाहके पक्षपाती थे। गुफ, लिग और जगम (साधर्मी) इन तीन पदार्थोंको सर्वोपिर श्रद्धाका पात्र मानते थे। वासव-पुराण और चेन्न वासवपुराण उनके प्रसिद्ध धर्मग्रन्य है। वासवके एक शिष्प पान्नुपतिने इस धर्मको खूब फैलाया। १३वीं से १७घीं शती तक

पंत्रिक साराके निर्माण सर्वाध्या एक पर्वत्या अपूर्ण अपार पूर्व और प्रि परियोंनी या जिलाकारिक वर्षाधिक बीधा रिकेण कीए वैश्वीर कर यह बढ़े राष्ट्री परिवार प्राप्त हुई वैश्वीर एक्टीने जीवन अस्पार निर्मा दिसाने से आगोग पीर नावारों और देखन सालवारिक यो गाने वह की न क्यूनर परिवारण कर्म कुछा से देखने हुआ और अस्पिक अस्पीक अस्पीक परिवार वेच जिलाकरो-वार्य किसे क्षेत्र वाजिक स्वत्यापारीकों है। विभावत स्वयों स्वर्णी करीं। एक्टाबीन प्रतिवारण है है से एक की पिकालें क्यांनी करीं। एक्टाबीन प्रतिवारण है में

तिराज्यके काराज्य वहके तीम पूर्व वोतेकार वा राजपुरारी वीलिय (११६०-१० हैं) तीमा वा उक्कप (११७५-४० हैं) कीर वास्त्र-स्मा (११४-८० हैं) में कारण राज्य स्मार किया है वास्त्रीके इक सम्प वार्ण्य पूर्व कार राज्य पेक्सर करिया राज्य रहा गतीन हींगा है। इन करियेक वास्त्रपालक स्थापित कारायों और हारणपूर्व होन्यांकी साक्त्रपाले कम्मूर्वि-पर्वाच्छा हुए होईन प्रदान ११८ हैं में सहस्त्र गौनेकार प्रमुख्ति कम्म्याचित्र विकोश सरिकार कर क्रिया सीर १२१ हैं इस कोरोजे उन्हेंस्ट इस्त्र एक स्थाप्त भी राज्य क्रियों हों हम्म्याची स्थाप नाम्योची प्रकास है साम्य कर विकाश

अध्याय ९

दिचण भारत [३]

दक्षिण भारतके इतिहासमें चोलो और कत्याणीके चालुवय-सम्राटोंके चपरात्त देविगिरिके यादव, वारगलके ककातीय और द्वारसमुद्रके होयसल प्रसिद्ध है। ११वीं शताब्दीमें इन वशोका उदय हुआ और १२वीं, १३वीं शताब्दीमें इन वशोका उदय हुआ और १२वीं, १३वीं शताब्दिमोंन सम्पूण दक्षिण देश उन्हों तीन राज्यकाक्तियोंके वीच वैटा हुआ था, इन्होंसे मुसलमानोने उसे अन्तत छीना। होयसलोंके अन्तके थोड़े समय उपरान्त ही विजयनगर राज्यकी स्थापना हुई जो १६वीं शतीके अन्त तक चला। उपरोक्त प्रमुख राज्यवशोके साथ-हो-साथ कुछ छोटे-छोटे राज्यवंश प्रमुख सामन्तो और उपराजाओंके रूपमें चलते रहे। इन सभीने देशके सांस्कृतिक इतिहासके निर्माणमें भाग लिया। अत प्रमुख राज्यवंशोक्ता विवरण देनेके पूर्व पूर्वमध्यकालके उपराजवंशोंके विषयमें सस्नेपसे जान लेना विवरण होने ग्रा।

पूर्वमध्यकालके प्रमुख उपराजवश—(१) पोम्बच्चपुर (हुमच्च) के सान्तर उप्रवंशी कात्रिय ये और सान्तिलंगे १००० प्रदेशके शासक थे। ७०० ई० ये लगभग पश्चिमी चालुवय विनयादित्यके शामकालमें इस बक्तकी स्थापना हुई थी। इस बक्तके अम्युद्धयका श्रेय इसके वास्तिविक सम्यापक जिनदत्तराय (लगभग ८०० ई०) को है। यह जैनधर्मका परम भगत था, हुमच्चको जैन यक्षो पद्मावती उसकी इष्टदेयो एवं फुलदेवो थी। इस देवोको साधनास जिनदत्तको अद्मुत मन्त्रसिद्धि हुई थी। वह और उसके वराज राष्ट्रमुटाँके और तदनन्तर चालुवयोंके प्रमुख सामन्तोमें-से थे।

विनवसंबद्ध कुल का बीच सीम्प्यूबन विकास सामार (८४४-९ टि) राष्ट्रपूट समाववर्ष एवं शुक्त द्वितीयका एक प्रकार सामन्त या । ८९७ हैं के बपने बन्दर दिवसनेक्से प्रमन्त्र परम बीन होना प्रदानिय है। ८७८ ै में बसने हुगप्पत्रे गानियलक बनाविका निर्माण करावा। ८९७ हैं है बनमें अपने नुक कुरवकुन्यालयके जीनी विश्वास्त जहारतके बिद वक संदेत बनारि बनवारी और बनके किए मुनिया ग्राम विशेष ८९८ ई. में बनने हरकार्ते नृहुद नवारि नववारी और उत्तम सक्तान् सञ्चयक्ति नृति মণিচিন বা । তদপুত্ৰীৰা খাল হুলীবং বাল্ডটোই কাৰামীট আনুবানীট मधीनता स्वीतार वर को १ दे ६२ हैं में इस बंधके रामा तैन कराते पुत्र वर्ग क्याराविकारी और स्वयनमंत्रके व्यवक्य ग्रीरदेश कन्यरने

रशमुद दिवासरगालिके शिव्य चल्चन्यन्त्री जनमे पट्टबसामि (सम्बर्गेन्दि) नोक्स व्यक्ते जिनालयके कियु चान किया का और उत्तकी राज्ये कामकरेरीने कुनतेशी पर्यातनीके मन्त्रिका बक्रफोरम बक्सस मा । वनशे कुनी नानी चंत्रपटेरी (ता वोरक वहादेवी) के क्क्के चुमरक (तैन) मॉल (वोरि), विक्रम (बोर्ड्ड) ओर वर्म्म गामके चार वृत्र हुए वे जिन्हां पाचन-प्रेयम बनको नोडी बहुक्तरेवीचे किया था १ १ १६ हैं में मुक्तक नान्तर पानुस्य भोनेकार श्वा वैतीकासन्त्रमा हुपानाम या। वयौ बन्ती राज्यांनी चीन्त्रभावें बुजवल कान्द्रर जिलासम्बद्ध निर्माण वर्णन भीर बनके किए अपने वृद्द वनस्वनिक्षेत्रको एक द्वार संसद विका

प्रदेश मार्ड दर्व वश्वराधिकारी गर्जन बक्तार जालूना विक्रमादिल ग्रहण कुराताम था। इस गरियारके सभी स्वतित सैन वर्गके बरण अन्त में। मुजयम और गरिन शास्त्ररको गीती सम्बद्ध शहाराची चट्टमदेवी. स्रो रामस्य मंबको पुत्री की अपनी सहन सालाह राजी बीरसरेबीको स्थानको संस्कृत

मी । बनने हुमण्यमें हो लुप्रसिक्ष पंचनूत बनति ताम वरोवर, पूर्य-नारी मादि निर्माण कराने जीर की कई किवनलिए (१ ४७ र में)

जारतीय इविदाय क्या रहि

राज-महिलाओं में पम्पादेवी, वाछलदेवी आदि भी अपनी धार्मिकता और दानसीलताके लिए प्रसिद्ध हैं। १०८१ ई० के एक लेखके अनुसार वीर सान्तरका मन्त्री नगुलरस जैनधर्मका भारी सरक्षक था। ११०३ ई० में त्रिमुबनमल्ल सान्तरने राजधानीमें पचकूट बसदिके सामने ही एक नवीन बमदि बनवायी। ११७३ ई० में एक अन्य बीर सान्तरका विरुद 'जिनपाद अमर' था। इसके उपरान्त सान्तरींपर लिंगायत मतका प्रभाव हुआ। १३वीं धतीमें उन्होने अपनी राजधानीको हुमच्चसे बदलकर कलश नामक स्थानमें बनाया। तदनन्तर वे तुलुबदेधस्थ कार्कलमे जाकर राज्य करने लगे प्रतीत होते हैं। ये उसारवर्धी सान्तर यद्यपि बहुधा लिंगायत मतके अनुयायी हुए तथापि जैनधमें और जैन-गुरुओंके प्रति पूर्ववत् उदार वने रहे।

(२) सीन्दिचिक रह राष्ट्रकूटोके प्रमुख सामन्त ये और सम्भवतया राष्ट्रकृट वशको हो किसी धासासे सम्बन्धित थे। इस वशमें भी प्रारम्भसे लेकर अन्त तक जैन धमको प्रवृश्ति रही । रट्वाहीके ये शासक थे और सोन्दिश इनकी राजधानी थो, ये महामण्डलेक्बर कहलाते थे। ८७५ ई० में राष्ट्रकूट अमोघवर्षके सामन्त मेरद्रके पुत्र पृथ्वीराम रद्रने सौन्दल्तिमें जिन-मन्दिर निर्माण कराके उसके लिए दान दिया था। उसके गुरु इन्द्रकीिला थे। यह राजा सम्राट् कृष्ण दितीयका दाहिना हाय था-। उसके पुत्र शान्तिवर्मी की रानी चन्दकच्ये वडी धर्मात्मायी, अपने पतिसे उसने एक सुन्दर जिनालय निर्माण कराया था । तदुपरान्त कलसेन, बन्नकेर, तीन कार्रावीर्य, कलसेन द्वितीय आदि राजा हुए। ११६५ ई० में इसी वशका रट्ट महासामन्त महाराज कार्रीवीर्य चतुर्थ दिलाहार-नरेशके राज्यमें स्थित एकसाम्बीके नेमोध्वर जिनालयको प्रसिद्धि सुनकर दशनार्थ वहाँ गया और महामण्डला-चार्य गृह विजयकोत्तिको उक्त मन्दिरको पूजा, सगोतवाद्य, साध्ये भोजन, भवनके सरक्षण आदिके लिए उदार दान दिया। ये गुरु यापनीय सद्यके पुन्नागवृक्ष-मूलगणके साधु थे। इस सुदर जिनालयका निर्माण

विचारत केमान्त बावनके बाने एक पुतारवर्गन व दयके क्लेपके कराता का । बार्गरीर्व चतुर्गते करता वर्ष बार वेवायाच्य वृषिगत मेर र्मा पदार्थन भी च म जैव में १ मु नशमते बैनागार्थ रूप्यंत्रायर बन्ध्य मा ब्री जो बकान के पुत्र कर्यासको जीनानिक अपने स्थिती स्मृति म[ा] परापुत-विनामस सम्प्राचा वा । सनि चन्नदेश दन पट्ट ग्रामाचे पर्वरूप बीर पूनवे व रावने विशव हो। ही में मानू ग्रामांक लंबर-नारने काराने बचान मन्त्रीका पर करण जिला और रापचीके बजाय निर्दे जान जी बराज विके अंबरका निर्मातकै बाद में बिट बाम ही मरे। वे बाजुर-सम्बद्ध केन करने थे । मार्थे अन्य अन्ती केनावीर वर्ष बाजभाग की जैन के जिनक गार्थनपाय जानोह बर्धाद बाक बन्देसरीय है। पार्ण

को चपुन दे बाद नारचे देव दिनीय राजा हुआ। १३५ दें **के बनवर**

(के) क्रोंक्सक्टे शिलाहार विशायत्वमा शरिए में है जाते-मापको तमानुर महेस जीवनशाहनका बंधावबादते में और इसे निरु सक्ते लिए समापुराधीरथर वत्रता प्रयोग काले में १ वनसाव बन्दी प्रदेशक देवरान मीर बाल्यापुर विसीयर कवना कानय का । बनवी आरम्बिन राजवारी करार थे जोर कार्ने शुन्तकपुर (बंजरूनर) थे अनीने शक्तानी बनामा राज्यस कृत्य प्रचाने सम्बद्ध विशासर बरवे पहने प्रतिक्रि प्राप्त हुए । प्रतिन्दी क्षेत्रियकी दिश्रम करके प्रत्यने चनका मावण आर्थे क्ष विकासर मामन ने बनावा का । वीरे-वीरे विकासर नामन यांनाबाली ही वर्षे और बहाबलके।पर बहुमाने वर्षे । राजुर्देशि काराम्य करूपाचीके चामुक्तांके अपीतन्त्र शासकोंके साथें भी विकासीर कोंद्रमपर बादन करते. है।

है अन्हें देवी में रहुतान विकास वंत्र अवित राजा और परम र्वन ना : ११शी बनीवें नगरतील्य (१११०-११४ र्) एतः रोबस प्रविक्र नरेख हुना । यह मान नामश्री ही चानुवरीके संबोध या । चनने जालीय इतिहास : शुक्र सर्वि

इन इ बद्दश अम इस

प्रयागमें उसने एक महस्र श्राह्मणोको भोजन कराया और उसके निकट ही अजरेना नामक स्यानमें एक सुन्दर जिनालय धनवाया। उसने एक विद्याल सरोवरके मध्य एक ऐसा देवालय भी बनवाया था जिसमें जिनेन्द्र, शिव और बुद्ध तोनों देवताआकी मूर्तियाँ साथ-साथ स्यापित को थीं। इस प्रकारके धार्मिक समन्वयके प्रयत्नका यह पहला ही अयवा अकेला ही उदाहरण नहीं है, पूर्वमध्यकालमें अन्य कई देव मिंदर इस प्रकार जैन, श्रेव, वैद्याव, बौद्ध देवी-देवताओकी साथ-साथ मूर्तियोंसे युक्त वने थे। ये उस कालके भारतीयोकी उदाराशयता और विवेकके प्रतीक हैं। गण्डरादिस्यका प्रधान सामन्त और सेनापित वीर निम्बदेव था।

सनेक युद्ध किये, विजय प्राप्त की श्रीर प्रश्नुआसे अपने राज्यको सुरक्षित रहा। यह भारो दानी और सर्व-धर्म समदर्शी था। कोल्हापुरके निकट

गण्डरादित्यके उत्तराधिकारी विजयादित्यके राज्यकालमें भी वह उस पदपर आरूढ़ रहा विकि शिलाहार-नरेशका दाहिना हाथ वन गया था। शिलालेखोमें निम्बदेवकी बढी प्रशसा पायी जाती है। उसे 'विजयसुन्दरी-वल्लम', 'सामन्त्रशिरोमणि', शत्रुसामन्तोंके सहारमें प्रचण्ड पवनके समान, मज्जनोंके लिए चिन्तामणि, गण्डरादित्य-महायक्ष-दक्षिण भुजदण्ड आदि कहा गया है। राजाने उसकी सेवाओं मे प्रमान होकर उसके नामपर निम्बसिरगाँव नामका नगर वसाया था। यह वीर इतना प्रसिद्ध हुआ कि उपके कई सी वर्ष बाद कन्नड किन पार्क्टरेयने निम्बदेयचरित्र बनाकः . उसकी यद्योगाया गायी। साथ ही वह बढा घर्मात्मा या और उसकी जिनेन्द्र-मित असीम थी, जिसके कारण सम्यक्त्वरत्नाकर और जिनचरण सरसिहहमधुकर-जैसे विशेषण उसने प्राप्त किये थे। वह मन्त्रशास्त्रक भी जाता था और शासनदेवी पषावसीका उसे इप्ट या। वह धर्मशाश्रक मी ज्ञाता था और श्रावकोंको धर्मानुकूल आघरण करनेके लिए सर्देव प्रेरि एव उत्साहित करता रहसा था। कोल्हापुरके आस-पास कोई वस ऐसी न थो निसने निम्बदेषकी दानशोलतासे लाम न उठाया हो रूपं फोररापुर्वे गृहिनिक सहास्त्रस्त्री-सिराई निवाह हो वार्ण वेत्रस्त्र मुक्ता एक कमार्थे वीतिस्तालक वनदाशा वा । इव विषये पिकारणे मिकारण गीर्वकारिकी कर सहास्त्रका गृहिन्दी बहिन्द है। वर्णनार्थे का स्तिस्त वेत्रस्तिके हुन्तर्वे हु और वैतिकारणे मुस्लि स्थापने त्यास्त्र कर श्री वहीं है।

वस्तराशिक्षकं बवरान्य बक्का पुत्र विकासिक श्रिक्तहार (tty-११६५ 🕻) राजा हुआ । वसने चालुरचीची वरायोजनामा चुना बदार चेंद्रा और यह विश्वक वक्षपृत्कि पासुओवा बच्च करवे. और वस्ताची-ना राजा बच्चेने प्रमाण सारावक हुआ । फिलू बार विश्वसने जिल्हार गरेंचको जी जबीन करना पक्षा को बोबोर्ने फरकर कुछ हवा । विकास दें भी मोरबे बीर बेमार्थात निर्माण बुक्का वंशाचन कर रहा वा । वसी बुबने वह बारा नवा शिन्तु वरहे-करहे थी क्षक्रियोको स्टना ध्यानिय कर बना कि है मैकल क्षेत्र बाब को र विकासित सर्व वहां वरतनी या । अपने समुजीके किए यह स्वराज बहा पना है । व कियान निर्मा रितर बनका मिक्ट था। जनमें वार्तिक करकाहके कारण वह वर्ति हुन्हें से क्ट्रबाटा का । यह पालको क्वींका शाक्त करवा या और बक्ते केंग पुत्र नाणिक्समन्ति वरिकारेक्को नहीं दिनव करवा या । जीलापुर राय सन्य स्थानीक क्षेत्रशिक्तीको बातनै बलेक शत दिने है । क्या प्रस्थि वैन वेगापति बोल्यको बागानामें विवारपुर विकासको सिका है हैं म्यू निवसाधितके किए वैद्या हो या बीवा कि श्रुप्ति किए सक्त धार्क क्यि गामी और काल्के किए वस्ता । वृज्ञपूर्विय अनुवींचा वंदार ^{करवेरी} बह महिरीन था। रामाके सिंह एक विश्वास विनासन विवर्ति करमानेका कार्य क्षत्रने बाजर्मे किया था किन्तु करे पूरा करनेके दुर्व हैं क्यारी मृत्यु ही शर्मी । विस्तराक्षितका एक अन्य अनुस सैक-सारी हर्ग क्षेत्रमानक कल्पीवर या कल्पीरेव था। यह वर्त्तरीय दुवे विशेषकरे पुर्वरति भीरर्थकका पुत्र और क्रम्य क्याविकारी शोक्यका भागता या।

था। वह साहित्यरिमक और धर्मात्मा भी था और सम्यक्त्वभण्डार कहलाता था। नेमिनाथपुराणके कर्त्ता क्रम्नडके जैनकि व क्णप्पायका वह आश्रयदाता था और उसक घमगुरु नेमिचन्द्र मुनि थे। विजयादित्यके समयमें ही उसके एक अन्य घर्मात्मा सामन्त कालनने एक मम्बीनगरमें सन् ११६५ ई० में नेमीदवर वसदि नामना सुन्दर एवं विद्याल जिनाल्य निर्माण कराया और उसके लिए प्रमूत दान दिया था। उनके गुरु यापनीय सघके पुन्नागवृक्ष-मूलगणके कुमारकीर्तिके शिष्य महामण्डलाचार्य विजयकीर्ति थे। रहु नरेश कार्त्तवीर्यने भी चनन मन्दिरके दर्शनाथ वहीं आकर उसके लिए उसत गुरुको दान दिया था। यह घटना रहु और शिलाहारोंकी मैत्रीकी भी सूचक है। इस वसदिमे चारो दानोंकी नियमित व्यवस्था थी। उसका निर्माता सामन्त कालन धर्मात्मा और दानी ही नहीं था वरन् शास्त्रक्ष, त्रिद्वान् और कलाममन्न निर्माता भी था।

लक्ष्मीदेव राज्य प्रवन्धमें भूशल और युद्धभूमिमें निपुण मैन्यसचालक

विजयदित्यके उपरान्त भोज द्वितीय (११६५-१२०५ ई०) शिलाहार राजा हुआ। विज्जल कलचुरि और उसके उत्तराधिकारियोंने भोजको अपने अधीन करनेका भरसक प्रयत्न किया किन्तु असफल रहे। अन्तत दोनोंवे बीच सिंघ हो गयी। भोजके जीवनमें हो कलचुरियोंका अन्त भी हे गया। यह राजा भो अपने पूर्वजोंकी भौति जैनधमका परम भक्त था विशालकीर्ति पण्डितदेव उसके गुरु थे। इसी बीर भोजदेवके शासनकालमें १२०५ ई० में आचार्य सोमदेवने जैने द्व-ज्याकरणकी राज्याणंत्रचिद्वस्त्र नामक प्रसिद्ध टीका रची थी। यह टीका गण्डरादित्यके बनवाये हु अर्जुरिका ग्रामके त्रिभुवनितलक नेमिनाथ जिनालयमें उक्त विशालकीर्ति सहयोगचे लिखी गयी थी। राजधानी सुल्लकपुर (योल्हापुर) ह मी इस राजाने अनेक सुदर जिनालयोंसे अलकुत किया। भीज उपरान्त इस वशका कोई इतिहास प्राप्त नहीं होता। शिलाहारों

स्वयं कोररापूर्वं मूर्यक्रम स्वयंभारती-स्वितरो निवस हैं उसमें बारण गुण्यर एक वण्यपूर्व वेशिनियासक स्वयंत्रा मा र स्व स्वितरे ध्वासरणे कवित्रारा तीर्वसरीकी कह सहस्वस्य मृतियां स्वीतर है। कणानकने यह मन्दिर कैन्योंके हुएसी है और सैनियासकी मृतिके स्वास्त्रे दिख्यानिक स्वास्त्र कर दी स्वती है।

मग्दरानिसम्ब कपरान्त कक्षणः पुत्र चित्रवादिस्य विकाहार (१९४० ११६५ हैं) रामा हुमा । उद्यो पालुक्तीची वरापीक्याचा बुमा क्यार चेंत्रा भीर गढ़ जिम्लक बक्रजुरिके चालुकांका कात करने और वस्थारी-का राज्य बनलेके बचान नशाक्त हुआ। दिन्तु कर दिल्लाको विकास वरेंगको को क्वीन करना चळा हो दोनॉर्ज व्यवस कुछ हुआ । विन्धरारी-मी ओरबे ही. केगरवीर विवर्षण बुद्धशा बंधायन कर पर वा वा । उसी मुखने वह बाध नवा विन्तु बच्छे-बच्छे औ बच्च्यरियोंको एक्य बास्टिय कर क्या कि में र्रुपान क्षोर कान की । निक्रमाजिला रचने पता नराजनी मा । अपन प्रमुजीके लिए वह बनधात कहा बचा है । क्रिकाक विकर्ण रिन्त प्रथमा निवय था। अन्ते वानिक व्यवाहकै जारण वह मर्वेक्ट्रींड में महाबाद्य या । यह भारतकी क्योचा पालन परशा वा और असी मैंने पुत्र नामिक्तमनित श्रीकावेशकी वही जिल्ला करता का । केला<u>न्द्र त</u>र्मा सन्द स्थानीक सैनार्गन्दर्शेषों सकते अनेव दाल दिने में । दानो अधिर वैग नेगाप्ति बोज्यमके सम्मानम् विचारपुर विमानेसमे पिया है वि बह रिक्मारितको किए बैबा हो था सेवा कि श्रांके किए पता राजे निए नार्था और कार्ल (क्रम् वक्षण । वृज्ञमुनिष्ठ समसीपा संदार करवेरी बद्द बर्द्धिरोप था। रामाके किए एक विकास विभागन विमीत करमानेशा गार्ने बचने हात्वरें विशा गा निन्तु वसे पूरा करनेके पूर्व ही क्षणी पृष्ट् हो वसी । विश्वसदिक्षणा एक सम्ब प्रमुख वैष-समी पर्वे केपारालक कालीकर या कालीकेव था। यह पार्वतीय हुई विकेत्रके पूर्वरति बोरपनका पुत्र और क्रम्य प्रश्निकारी बोरपका बाबादा का

प्रभाच द्रदेवको एक गाँव दान दिया था। १११५ ई० के लगमग वीर कोगाल्वदव देशीगण-पुस्तकगच्छके माघचन्द्र त्रैयिश्चके छित्य प्रभाच द्र सिद्धान्तदेवका शिष्य था। इस राजाने सत्ययाक्य नामक जिनालय निर्माण करारे उपके लिए अपने गुरुको एक ग्राम दान दिया था। इसके उपराच कागाल्वोंका कुछ इतिहास नहीं मिलता।

(४) चगारूच चश्र—इस यक्षणे राजे मैमूर कुर्ग प्रदेशके अन्तर्गत चगनादके ग्रासक ये और कोगाल्योंका भाँति ही चीलोंके और फिर होयसलोंके साम तथे। इस बशर्म कुछ राजे जैन रहे और शेप धैस रहे प्रतीत होते हैं। १०९१ ई० में चगाल्य राज मन्यिपेरगगढे पिल्डुब्दयने पित्हु ईददरदेवको मुनिआहारदानके लिए क्षेत्र प्रदान किया था । इनके प्रदेशमें हनसोगे प्रसिद्ध जैन वेद या। लगमग ११०० ई० के एक घिलालेखसे प्रकट होता है कि उस समय इस नगरमें ६४ प्राचीन जिन-मन्दिर ये जो इस्त्राकुवशी दाशरयी-भीतापित राम-द्वारा निर्मित कराये गये वताये जाते थे। इन्होमें-से वन्दतीर्थ नामक वसदिको गंगनरेशोने दान दिये थे और उसी मन्दिरके लिए राजेंद्र चोल निम्न चगास्वने पूर्वोक्त दानोंकी पुनरावृत्ति को । इन वसदियोंका प्रयाध मूलसप-देशीगण-पुस्त-का वय-होत्तगगच्छके गुरुऑके हाधमें या। इस राजाने उक्त शाखाके तत्कालीन गुरु अयकीत्तिकी उपरोक्त दान दिया था। ये गुरु व्रत-उपवासीं, विजेपकर चान्द्रायण ग्रतके लिए विस्पात थे । इसी होत्तगगच्छके गुरुओंके अधिकारमें तलकावेरीको वसदियाँ और पनसोगेकी ४ वसदियाँ भी थीं। चपरोक्त चगाल्य नरेक्षने स्वय भी १०२५ ई० और १०६० ई० के मध्य कई जिनमन्दिर निर्माण कराये थे।

(६) श्रलुप या श्रलुच चंश मी इम कालका एक प्रसिद्ध सामन्त वंश या। ये तुलुबनाडुके शासक थे। १०वीं शतीमें इस वशका उदय हुआ, किन्तु उनके आगमनके बहुत पहेलेसे ही यह प्रदेश जैनवर्मका गढ़ रहता आया था। मूहविद्री, गेरुसप्पे, भट्टकल, कार्यस, विलिग, सोदे, सानाने वरहर कोन्हानुर, एकतावी साहि अधित वैवदेश है। (४) क्रोमास्य क्या—रह बंदके सामग्रामी मुन्दे साहर कोर स्थान

िक्षेत्रे राज्याने विका बोधवागार 2 अव्यक्ति साम्रण में 1 ८८ रैं के समस्य पैन राज्याने व्यक्ताना दें अपने क्षेत्र में प्रकार पैन राज्याने स्वत्र अन्योत्त्र विका प्राण्या के स्वत्र मानिक व्यक्ताना कि स्वत्र मानिक व्यक्ताना कि स्वत्र प्रकार प्रकार के प्रकार के स्वत्र प्रकार स्वत्र स्वत्र प्रकार स्वत्र स्वत्र प्रकार स्वत्र स्वत्र प्रकार स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्

हरेब दिशा बीर कामा हनुव बाक्त बनावा । कॅशान्य-गेर्स, कार्ड नामल बीर राज्यप्रशिवारी अविवृद्धित बैर वे और वनके राज्या नहीं जगल वर्ष था । सिमान्योंने गता ५७३१ है कि १ ५ है के ब्यावन कॅस्स्मीर्ट

एक वरस्य न्यूर्वभावकं स्थावी और विर्माणकं वास्त्वे साम् रिपर्व नामेंबराइनपूर्व वंश्वास वार्वार्थ वर्गाविक्य निया स्थावीं है। तरह वर्गे आक्रमारें सा आक्रमारें का व्यवस्था निया स्थाव १ ५८ में स्थावें क्षेत्रकं मेंबरण वास्त्रप्रत्य कुमारें नामें निया स्थाव वित्त नार्वर्भक व्यवस्थित हैं त्या मेंबरित पूर्व के स्थाविक्य है। कम्मे वर्गे नामर कार्यार्थाल वंश्यास्त्र स्थाविक्य है। कम्मे वर्गे नामर कार्यार्थाल वंश्यास्त्र स्थाविक्य वर्गे नामर वर्गे स्थावस वर्गात क्ष्में किए वर्ग्याद्वीव्यास्त्रमात्र स्थाविक्य वृत्ति नामर वर्गे क्ष्में क्ष्में कुमारें कुमारें कुमारें नामें प्रतिकार स्थाविक्य प्रतिकार क्ष्में कुमारें कुमारें कुमारें कुमारें कुमारें कुमारें प्रतिकार वर्गे कुमारें कुमारें कुमारें कुमारें कुमारें व्यवस्था कुमारें कुमारें प्रतिकार कुमारें कुमारें कुमारें कुमारें कुमारें कुमारें कुमारें कुमारें प्रतिकार कुमारें प्रतिकार कुमारें कुमारें

३३ वारतीय इतिहास **एक रनि**

गोन्नदेशका जासक त्त्रमधिन्छ। नरेश था जिनका नाम सम्मदाया भूषाल था। विभो कारणमे संसारगे धिरवत शोकर गष्ट राजा जैत मुनि हो यत्रा था और गोल्लाचार्यके लागम प्रसिद्ध हुआ। प्रशिद्ध भूषालवगुर्विद्यति स्तोतका रचितना सम्भयसया यही था।

- (९) प्रामीन बदम्बॉमी एक उत्तरवाकीत बाला इन मारुमें कर्णाटक्के कुछ भागपर भागन करती रही थी। उत्तकं मीविदक आदि राजे जैनसमके अनुसासी थे। तासरमण्ड उनके प्रदेशका प्रसान नाम था और वह जैनममेका के द्र था। यदम्बराज की सिदेवकी पट्टगारी मानल देवीने १०७७ ई० में मृष्पटूरमें पारवेंदेव चैग्यालय सनवाया, शानाये पधनन्दि सिद्धान्तको तमका अध्यक्ष यनाया, राजासे दान टिलाया और वर्षेने अग्रहार ब्राह्मणामे मा व बराकर जमका ग्रह्मजिनालय नाम रखा । इस प्रदेशके अनेक मामन्त जैनघमन्त्रियायी ये। इत सबमें उल्लेश्तमीय तेंबरतेष्पका नाष्ट्रप्रमु कोकगाबुष्ट था। ११७१ ई० में उसने अपने स्वामी वदम्बनरेज सोविदेवक राज्यवालमें एक मुन्दर जिलालयका निर्माण कराया और उसमें 'रतनवय' की मूर्ति प्रतिष्ठित की और उसन मिदरने साथ ही एक सुरोवर और एक कूप वनवाया तथा प्याक और सपकी व्यवस्था की। मिदरमें तित्य अष्टद्रव्य पूजनके लिए भूमि प्रदान की। उसके गुरु मूलमध-क्राण्रगण-तित्रिणीगच्छके जैनाचार्य मुनि च द्रदेवके शिव्य मानुकीलि सिद्धा तदेव थे।
 - (१०) समधाराका चालुक्य धरा—यह प्राचीन चालुक्य बंदाकी एक रुषु घाखा थी, गंगधारा इसका राजधानी थी। खार० नरिविहाचार्यके मतानुसार इस धंशकी राजधानी पुलिगेरे ((लटमेक्बर) थी, सम्मव है इमीका अपरनाम गगधारा भी हो। यह एक प्राचीन जैनतोर्थ भी था। इस बदाके राजे राष्ट्रफूटोंके महामण्डलेक्बर थे, और प्राय वे मच ही जैनधर्मानुपायी थे। ९६६ ई० में इस धंशके राजा अरिकेसरी तृतीयने अपने गुरु सोमदेवको अपने पिता-द्वारा बनवाये हुए राजधानी लेंबुगटक फे

एपुर्ट्सिक होपायर साथि एक अध्यक्षे प्रक्रिय नगर में बो यह ही बैरान-के पुर पर में 1 देशी पात्रीमें मुजयक साम्रोक (१९१४-१९ र) कि स्वाम प्रविद्ध राज्य था 1 १९९१ में ने पानपुत्रात दुवारायर केरिये मानक स्वामने को बीचमांका केल था, एक निमानियक स्वामने पाह्यमा थे थी पुरुष्टीया साम्रोजनेश साम्या (क्रमान ११४-११)

है) के कामनी पूर्ण्याव जिलामाओ पारुगीय बहुएका बांच भी। हा प्रज्ञा सम्मारिक जायनकण जामाध्य आहि कैन्युकांना कामने दिया या । पारुग्याव जापूरेकों हुए हर्ड हैं जे सम्बादी केन कामि जिए एम दिया था। पुराचीया जापूरेका दुर्गाम (१६८९ हैं) मा वैनयामाँ पारा का यह प्लाह्माक्याय जिला था। वह प्रदा की भी या और दूरिपीयों नामनाप्लेकण जाया था। वाले भी मीड्डिपीय (१८८९ हैं) के प्रचान हुए संख्ये क्रायमाने हुए और स्वास्त्री

(॥) एवं पात्रके तिन वर्गराय क्या वाल्या एएं प्रधानस्यानी वर्ग वित्योक्ष्मित नाम प्रधान है क्या पह हुक्तिश्वास जानक सेनोर वर्ग व वर्गों, प्रधानक करती करता तीर करता थीं है वर्ग हैंने हुए के यह जिस्सा तार्के अधिरिक्त व्यक्तिपालय बहुरेजार्गाक्क की सीधारम व्यक्ति कृत्या कर कैपन एवं बीक्यपीर्य की प्रधान करी स्थाप प्रधान करी थीं। वाले पून देवोपन्ये बेशायों क्या करते हैं। ११६ वें बार प्रमाणि वाल्या स्थापने वर्षायां क्यापियों पून हुं के गांधी प्रभावते हैंनीये चेशायां वर्षायां क्याप्ता करायां की सार्वित हुम्मान पन साहास्त्यकों व्यक्ति प्रधान करायां की प्रधानस्था हुन वह वाल विद्या । प्रशान प्रमुख मार्गायों की प्र स्थापने हुम्मा कर वाला विद्या । प्रशान प्रमुख मार्गायों की प्र

(८) १११५ (ं के वृद्ध विकासिको क्या पत्रता है दि अब अध्ये स्थानीय समित्राल । एक सी गोल्लदेशका शासक नृतनचित्रळवशी नरेश था जिसका नाम सम्मातयाँ भूपाळ था। किसी कारणसे मंगारसे विरमत होकर यह राजा जैन मुनि हो गया था और गोल्लाचार्यके नामसे प्रसिद्ध हुआ। प्रसिद्ध भूपालचतुर्विशिन स्तोत्रका रचिता सम्भवतया यही था।

(९) प्राचीन कदम्बोंकी एक उत्तरकालीन शाखा इस माना कर्णाटकरे कुछ भागपर शासन करती रही थी। उसक मोविदेव आ राजे जैनधर्मके अनुयायी थे। नागरसण्ड उनके प्रदेशका प्रवान भाग ध और वह जैनवर्मका केन्द्र या। कदम्बराज कीत्तिदेवकी पट्टरानी माल देवोने १०७७ ई० में मुप्पटूरमें पादवंदेव चैत्यालय घनवाया, आचा पधनन्दि सिद्धान्तको उपका अध्यक्ष बनाया, राजासे दान दिलाया औ वहींके अग्रहार ब्राह्मणोंने मान्य कराकर उसका ब्रह्मजिनारूय नाम रखा इस प्रदेशके अनेक सामन्त जैनधर्मानुयायी थे। इन सबमें उल्लेखर्न तेवरतेप्पका नाहप्रमु लोकगावुण्ड था । ११७१ ई० में उसने अपने स्वा नदम्बनरेश सोविदेवके राज्यकालमें एक सुन्दर जिनालयका निर्माण करा और उसमें 'रत्नवय' को मृति प्रतिष्ठिन की और उक्न मन्दिरके साथ एक सरोवर ओर एक कृप बनवाया तथा प्याक और समकी व्यवस्था कं मन्दिरमें नित्य अष्टद्रश्य पूजनके लिए मूमि प्रदान की। उसके गृह मूलर क्राणुरगण-र्तित्रणीगच्छके जैनाचार्य मुनि च द्रदेवके शिष्य मानुकी मिटान्तदेव थे।

(१०) गंगधाराका चालुक्य वश्य—यह प्राचीन चालुक्य वर एक त्यु द्याखा थी, गंगधारा इसकी राजधानी थी। आर० नर्गसहाच मतानुसार इस बंशकी राजधानी पुल्लिगेरे ((लक्ष्मेरवर) थी, सम्म इसीका अपरनाम गगधारा नी हो। यह एक प्राचीन जैनतीर्थ भी। इस बशके राजे राष्ट्रकूटोंके महामण्डलेश्वर थे, और प्राय थे सः जैनधर्मानुवाशी थे। ९६६ ई० में इस बशके राजा अरिकेसरी तृत अपने गुरु सोमदेवको अपने पिता-हारा बनवाये हुए राजधानी लेंबुपा

पूर्वेष बाता है। अरिकेबरी पुरीक्के प्रापाद वह बंक्या कुछ क्या की

पाया । कारत है क्रवामीको स्वीविक प्रियोग चायुल्यां कर्ये व वाडा सारवार हो। वर्षो हो। (११) प्रत्योग । (११) प्रत्योग क्षायां क्षित्र क्षायां क्षायां

१९४४ तक राज्य किया । अह नहीं अनीत्वा और बूबील बाविका के बार्स पर वर्ष कराराविकारी अर्थादास्य गीरवर्गाला संपन्ते १२७५ ई० लगमग) को इगने समुचित दिक्षा दो था। गामिराय यहा विचारितक था। लाचार्य क्रजितसेन उसके गुरु ये। इसो राजाके लिए उन्हाने भूगारमंत्ररी और अलंबार-विकासणि नामक संस्कृत प्रायोंकी रचना को थी। उसीके लिए विजयवर्णीन भूगागणवनिष्टका रची थी। १६वीं दातीके अन्तमें विचाह-सम्बायोंके द्वारा यह बंध कार्यलके नैरस्स यहामे मयुवन हो गया। उसके उपसात भी सम्भवनया इसका मुख्य अस्तित्व १८वीं पाती तक बना रहा।

(१२) वेजवाटाके परिच्छिद पाशुपित राजे और धायकटकके कोत राजे आध्य देशक प्रमुख मामन्त यश थे। ये लोग श्रैव भे और जैनयमीने भारी विदेश रखते थे। आध्य देशम जैनयमीक पतनका अधिक श्रेय इन्हीं सामन्त बदाकों है।

चारगलके फकातीय-११वीं धताब्दीके मध्यके लगभग तेलगानेमें ककातीय वशका उदय हुआ। वारगलको राजधानी बनाकर इन्होंने शीघ्र ही अपनी चिक्त बढ़ायो और एक अच्छा स्थत त्र राज्य स्थापित कर लिया। १३वीं शवाब्दीमें इस राज्यका अम्पुदय गहा । स्ट्रका उत्तराधिकारी राजा गणपितदेव (११९९-१२६० ई०) इस वशका प्रसिद्ध और शिक्तिशाली नरेश या। उसके समयमें तैलेगू महामारतके रचयिवा टियकन सोमव्य नामक हिन्द्र विद्वान्ने धास्त्रार्थमें जैनियोंको पराजित किया वताया जाता है। उसी समयसे इम राज्यमें जैनधर्मका पतन प्रारम्भ हुआ प्रतीत हाता है। राजा कट्टर शैव वन गया और जैनियोपर चमने भारी अत्याचार निये । उसके उपरान्त बारगलमें रानो इहम्मा (१२६१-१२९१ ईo) का राज्य हुआ। यह इस वंशकी अन्तिम शक्तिगाली एव महान् शासक थो, उसका उत्तराधिकारी कद्रदेव (१२९१-१३२१ ई०) था। १३२१ ६० में मुहम्मद तुरालुङ्कने वारंगलके अन्तिम कवातीय-नरेशको पराजिन करके तेलगानेके इस हिन्दू राज्यका अन्त किया । यारगलका प्राचीन नाम एकदौलनगर था। इस प्रान्तमे सम्बन्धित कैफ़ियतोंके आधारपर प्रो० वान यह वीवनानियारों यह । आधीनक बंबनीय ने बंदमारें वंदमारें वंदमार

आस्तीय इतिहास वृक्त रहि

सस्यापन तैलप दिशीयना निष्ठ और मुहायक या और जिमने सैन समा

जसने पुत्र मरवायय चाणुन्यको बोरसे घारके परमारों (मुन और नीज)

फें साय युद्ध किये थे। मृत्यकी मृत्यु इसी जिल्लममें हायसे हुई बतायी
जाती है। जमका पौत्र मिल्लम नृतीय चालुक्य-समाह सीमेद्दर प्रयमका

महासामन्त था और उसका विनाह भी सोमेद्दरकी बहनके साथ हुआ

या। इसी समयसे इन सुप्न यादकोंको जिक्त बढ़नी प्रारम्भ हुई। जिल्लम

तृतीयको कीयी पोदोमें सुपन दितीय विक्रम पर्यक्षा जमके मार्टके विषद्ध

सिंहासन प्राप्तिमें सहायक हुआ था। चालुक्याको लयनतिसे लाभ

उठाकर यादव प्राक्तिमालो हो गये।

सुपन दितीयका प्रयोग मिल्लम पचम (११८७-९१ ई०) देविगिर-

के स्वत त्र यादव राज्यका त्रास्तियिक कस्थापक था। उसने पन्याणीपर भी अधिकार कर लिया था किन्तु देविगिरको ही अपनी राज्यानी बनाया। १९९० ई० में होयमल-नरेटा धीरवल्लाल द्वितीयने सोरतूरके युद्धमें मिल्लमको पराजित किया और उमे उप्णाके पार मगा दिया। मिल्लमके पूत्र जैतुगि (११९१-१२१० ई०) ने बारगलके कक्षातीय राजा उद्दक्षी युद्धमें मारकर गणपति देवको कक्षातीयोंके सिहासनपर बैठाया। जैतुगिका पूत्र मिहन (१२१०-४७ ई०) इस बद्यका सर्वमहान् और अपने समयक्ता सर्वाधिक शिवासालो नरेटा था। उसने होयमल बन्मालको भी पराजित किया और १२२२ ई० तक बनवासी प्रान्तको अपने अधिकारमें रखा। उसने गुजरातपर भी आक्रमण किया, फलस्वरूप गुजरातको राज लावण्यप्रमादने १२३१ ई० में उसके साय सिंच कर छी। मिहनने अजुन लदमोचर, मम्मागिरिके सिंह तथा जज्जल, कक्कल, हम्मीर आदि राजाले और सामन्तीको भी पराजित करके अपने अधीन किया बताया जाता है उसका पुत्र जैतुगि उसके जीवनमें ही भर गया था अत उसके याद उसके

पौत्र कृष्ण (१२४७-६० ई०) राजा हुआ। उसने भी मालया, गुजरात कोंकण और चोल देशोंकी विजय की थी। कृष्णका छोटा माई महादेवरा गैपावित्तार प्रवादित दिया का कि बादित यह बक्त बैतारी एक प्रसम् केल रहा था । प्रम अल्पेचे द्विया दिमाणाहरम् देखि वान-मरीदे सबस्ये जेन्स्वेतः नह या और वस्ते जलांत रास्तेवेश हैन रावात हु नूर इस बनिय बा इसी विषेत्र बीमपुर बरावे दूरी रेड कोस कालावान्य सामार्थ शामार्थीं। वागम नामार्थ राजधार बिनामा बालक क्यांट्रिका दिल्लीच कराया या और १९८७ हैं. में कर्य मैगूनमे प्रका विकेष स्थानस्थानुकोन इस मन्दिरमे निष्ट् बास दिया गा। ११९८ है में अनान्यु दिनमें कारणीयनरके नियानी बीनीर और बंबनादेशके कुर प्राणांकाओं जैनवांकर बोर कुरबाँको दान दिया वर देगी बालमें इसी दिलेश केल्पीश बक्ती सूर्वनाड पार्टिगंब संबंधि रियमान वी जिनके शत्कानीय अध्यक्त विकारण जहारक है। हेवारी दिनेमें ता नई जैतनेत्व में जिनमें जोतीन प्रयक्त मा । इसकी मैंबर में वर्गाको गरिवकी पानुन्ती और वश्यन्तर होवक्तीने की बंदक्त ह^{ाड} हुमा ना । शोर् बोहुर सारि बाय रेख में । बांधव शहा रहरे हैं मनव बैन वृति सम्बार्वने क्रिकेट कम्बानाव्यक्तरको एका की ही। माराजिति संध्य हमके अस्तान्त्र मी चन्ने रहे और शीम-बीचने प्रति मकाने और उरक्तम ब्रोनेका आसन की बरते हो। अन्ताह देवरेत हैं मैं बार्यक्रके देनंत राजके बारके ताथ जनवारणे-दारा रह देवरा वर्षध सम्म हता ।

 सर्धांपक तैलप दितीयका मित्र और सहायक था और जिसने तैल तथा उसके पुत्र सत्याथ्य चालुक्यकी ओरसे धारके परमारों (मुज और मोज) के साथ युद्ध किये थे। मुजकी मृत्यु इसी मिल्लमके हाथसे हुई बतायी जानी है। उसका पौत्र मिल्लम तृतीय चालुक्य-सम्राट् सोमेश्वर प्रथमका महासामन्त था और उसका विश्वाह मी सोमेश्वरकी बहनके साथ हुआ था। इसी समयसे इन सुएन यादवोकी कित बढ़नी प्रारम्भ हुई। भिल्लम तृतीयको चौथी पीढीम सुएन दिसीय विक्रम पण्ठका उसके माईके विदद्ध सिहासन प्राप्तिमें सहायक हुआ था। चालुक्योकी अवनतिसे लाभ उठकर यादव शिव्हासन प्राप्तिमें सहायक हुआ था। चालुक्योकी अवनतिसे लाभ उठकर यादव शिक्तशाली हो गये।

स्एन द्वितीयका प्रपौत्र मिल्लम पचम (११८७-९१ ६०) देविगिरि-

के स्वतात्र यादव राज्यका बास्तविक सस्यापक था। उसने मन्याणीपर भी अधिकार कर लिया था किन्तु देवगिरिको ही अपनी राजधानी बनाया। ११९० ६० में होयसल-नरेश बीरवल्लाल दितीयने सोरतूरके युद्धमें मिल्लमको पराजित किया और उसे कृष्णाकै पार मगा दिया। मिल्लमके पुत्र जैतुगि (११९१-१२१० ई०) ने वार्रगलके ककातीय राजा रुद्रको युद्धमें मारकर गणपति देवको ककातीयोंके सिहासनपर बैठाया । जैतुतिका पुत्र निहन (१२१०-४७ ई०) इस बशका सर्वमहान् और अपने समय-का सर्वाधिक शक्तिशाली नरेश था। उसने होयसल वल्लालको भी पराजित किया और १२२२ ई० तक बनवासी प्रान्तको अपने अधिकारमें रसा। उसने गुजरातपर भी आक्रमण किया, फलस्वरूप गुजरातके राजा लावण्यप्रसादने १२३१ ई० में उसके साथ मन्धि कर की । सिहनने अर्जुन ल्ह्मीघर, मम्मागिरिके सिंह तथा जज्जल, कक्कल, हम्मीर बादि राजाले और सामन्तोंको भी पराजित करके अपने अधीन किया बताया जाता है उसका पुत्र जैतुगि उसके जीवनमें ही मर गया था अत उसके बाद उसक पोत्र कृष्ण (१२४७-६० ई०) राजा हुआ। उसने भी मालवा, गुजरात

कॉकण और चोल देशोकी विजय की थी। कृष्णका छोटा भाई महादेवरा

वर्ष देवारों ही राजकार्य ब्यावन करने बचा या जा इच्या मृद्धे परान्त वर्णा दून राजवाकों स्त्री में बेदर यह दूनर्री एउट वर या बीर वर्षा १२६०-७ हैं में एउट क्या १९८८ हैं से द्वारण डेज्य व परिवर्ष के बुद्ध में पर्वाच्या क्या । स्वृत्येष सामे पूर प्रारम् सी नामा रागारिकारी काला पाहण या स्तितु बड़ने नामे राजकार में बारकारों काला कर शिशाबीर व्यक्तिकों मृत्यु में सामा सी हरी

धानपाराव (१२००१६ ९६ १ ई) के बावाई उन बेक्स पाने शरून हुआ। १२ ६ ई में हीनाव नास्त्रिये बारवीये दिए पार्टर दिया दिन्नु बावे हो वर्ष धानपार्ट होस्कारोश पार्टीन कर्त कारी प्रवासी हारानुवार आतंत्रब वर दिया। वरस्यका देशोंने वितर्थ है वर्षे । १९९६ है में बारवादीय वास्त्रीय देशाया केरोसियर साध्य

वर्षे । १२१६ ६ में बाजानीय वास्त्रीने वंशापक विशेषितर सावण्य कर दिया। एमका वर्षामें ब्राह्म वर्षे वर्षाक्षीय महिनार रहेगा वी मीर वर वेदेवा वरण रिया। हिन्दा पूर्व कर ब्राह्म के देवा कर कर दिया समृद्ध १३ व ६ में ब्राह्म कर्युष्ट प्रवक्ताओं करमार क्यों कर रिया सीर व सम्ब कर वर्ष्टीन्यूय प्रवक्ताओं करमार पेटर (११ - १५१६ १) में सी सिंधी मुक्तान्यों कर देवे रूपाया करां बर्दा बर्दा सीयक वायरते वर्षे मुख्ये बार समा। पंचाने कर्या करां बर्दा बर्दा सीयक वायरते वर्षे मुख्ये बार समा। पंचाने कर्या मुक्तानोत्री सामे प्रवक्ती शास्त्र वायर साहर क्या वर्षे मुक्तानोत्री सामे

स्वाधीने देशविराद्य स्वयंत्र आप्रत्य किया और द्वारावर्थी वाण विषयी मी । द्वा अपार देशियिके सावस्थात्रस्था तथा द्वारा । परिवारी पार्थाचेति स्वयंत्रे आत्र आत्र व्यारा द प्रेत्यात्वर वे प्यारी प्राव्ये ११६ी पार्थ ६ में बारविर्ति क्षित्रस्था व्यारा क्ष्यात्वर्थी स्वयंत्र्य स्वयंत्र अपार्थ स्वयंत्र स्वयंत्य स्वयंत्र स्वय

आरुपीय हरिकाम । एक पर्डि

अयवा उसके पोपक रहे प्रतीत होते हैं किन्तु उनके वंशज देवगिरिके गादव नरेश प्राय सब ही हिन्दुधर्मके अनुयायी थे। किन्तु साथ ही वे जैनधर्मके प्रति भी सहिष्णु थे और साहित्य एवं कलाके भी रसिक थे। सिहन यादवके आश्रवमें ही ज्योतिपाचार्य भास्करभट्टने अवने प्रसिद्ध ग्रन्य विद्धान्त-शिरोमणिको रचना की थी। इस आचार्यकी ज्योतिपविद्याके शिक्षणके लिए उस नरेशने एक विद्यालय भी स्थापित किया था। यह राजा सगीत विद्याका भी ममंत्र था और उसने सारंगघर नामक सगीताधार्यसे सगीत-रत्नाकर नामक ग्राथकी रचना करायो थी । कर्णाटकीय सगीतके सैदाितक पक्षपर यह सर्वप्रयम ग्रांच माना जाता है। इसी समयके लगभग जैनाचार्य पाक्वदेवने भी सम्भवतया इसी नरेशके आश्रवमें अपना सगीत-समयसार नामक महत्त्वपूर्ण ग्राय रचा था। पाश्वदेव श्रीकान्तजातीय आदिदेव और गौरीके पुत्र तथा महादेवार्यके शिष्य थे और श्रुतिज्ञानचक्रवर्ती एवं संगीता-कर उनको उपाधियाँ घों । आधुनिक विद्वान् उन्हें सगीतशास्त्रका प्रकाण्ड विद्वान और उनके ग्रन्थको सगीत विषयको एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति मानते हैं। यादव नरेश महादेवराय एव रामधन्द्ररायका एक प्रमुख सामन्त क्चिराज या, इसे पाण्डमदेशके मध्यमें बेसूर प्रदेशका शासक नियुवत किया गया था। कृविरामके गृरु मूलसध-सेनगण-पोगलिगच्छके पद्मसेन भट्टारक थे। उनके उपवेदासे कृचिराजने वेतुरमें रुक्षी-जिनालयका निर्माण कराया या और उसके सरक्षणके लिए कुछ मूमि, एक दूकान और कई दद्यानोंकी भाव दान की थी। अपने उत्कर्षकालमें उत्तरमें गुजरातसे लेकर दक्षिणमें तुग-मद्रा तक यादव-राज्यका विस्तार था।

द्वारसमुद्रका होयसल वश--पूर्वमध्यकालमें दक्षिण भारता।
यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं दानितशाली राज्यवश था। पूर्व दक्षिणमें
मैसूरसे लेकर कत्तरमें तुगमद्वा नदी पर्यन्त सम्पूर्ण प्रदेशपर होयसल-नरेशोका अधिकार था। द्वारावती (द्वारसमुद्र या दोरसमुद्र) इनकी राजधानी
थी और ये द्वारावतीपुरवराधीश्वर कह्लाते थे। ये लोग अपने-आपकी

भीतपुत्रके बहुर्वजी आध्य बनाते थे। प्रोपवर्णिंग तूम हैप्यवर्णेंग परिवर्णास्तर मृत्यें तालकों दिवा अंधी कर मन बनाइ की बा। यर काम क्ष्मेंने ही वैकाकीय एक बुक्त केन छात्र सक्त के वि वैकाकोंक पूर्व सीमन साम्भूती (व्हे बारावर्षी वाह्मोंदे सामार वैकाके साम्भूत सामा के बार मानवालाय स्वीति ही बाराव के। दिवा को है क बारावर्ष यह वीवार मुल्लिय वस बात्र दूस की

तरद्वक था। यह जहरावाची और वस्तारी वा लिंगू हैन्यान पूर्व प्राथमनियोग वा १९२४ है के स्वयन्त्र संपीति है दुर्गकुर्यान्त्र प्रीय प्रमान्त्रपुरश्यकों को भी जुरुपके किया दिवस्त्रण में सीमीरिय सीमातरात विद्या या और इस व्यवस्थानी बातरीय होत्यनेत्री वहीं सार्ग पुरारा सम्पाद कारीमा दिवा था। वस्त्रपुर्धा वाली दिवस्त्रपूरी किया दिवस्त्रपार के पूर्ण दुर्गकी सार्गकी कर कुमर विकास हुए हैं। सारक्षित्रपुर पुर्वाचित्रप्र विद्यालयों कर कुमर विकासीयों में निर्मी सार्गक पुरु पुर्वाचित्रप्र विद्यालयों कर कुमर विकासीयों में निर्मी सार्गक प्रतिकास और वालीक विद्यालय वृत्यालय व्यवस्थान विद्यालयों की स्थानियालया वृत्यालय व्यवस्थान विद्यालया होती स्थानियालया वृत्यालय व्यवस्थान विद्यालया वृत्यालय व्यवस्थान विद्यालया हम्यालया वृत्यालय व्यवस्थान विद्यालया हम्यालया हम्यालया वृत्यालय व्यवस्थान विद्यालया वृत्यालय व्यवस्थान विद्यालया हम्यालया हम्यालया हम्यालया हम्यालया विद्यालया हम्यालया हम्यालया

एक तैन करनुष्ट तम वात्राविष्टेषि वांत्रां के क्रिय करें हैं पूर्णि करें हैं किया विश्वका कराया गए गाँ था। ठाउँ में स्थान है एक एक एक प्राप्त प्राप्त कर गाँ था। ठाउँ में स्थान है एक एक प्राप्त कर प्राप्त कर कर प्राप्त कर प्राप्त कर प्राप्त कर प्राप्त कर है है सार 1 केंद्र कर कर प्राप्त कर कर है है सार 1 केंद्र कर कर है किया वा कर है कि पूर्ण कर प्राप्त कर प्राप्त है। विभाग कर प्राप्त कर है किया कर कर है है किया कर कर है किया है किय

कराते हैं।

विजय-चिह्न निश्चित किया । इस घटनासे सल, पोयसल कहलाने लगा को कालान्तरमें होयसल घट्यमें पिन्वितित हो गया और सल-द्वारा स्थापित राज्यवशका नाम हुआ । उपरोक्त घटना लगभग १००६ ई० की है ।

पोयसल (१००७-१०२२ ई०) ने गुरु सुगतके उपदेश और पय-प्रदर्शनमें अपनी राज्यदानितको नींत हालनी प्रारम्भ की। पोयसल

कर्णाटकको एक पार्वतीय जातिसे सम्बन्धित या और उमको जननी सम्मवतया एक गग राजकूमारी थी। इम कालमें चीली-द्वारा गगवाडि राज्यका अन्त कर दिये जानेमे कर्णाटक देशकी स्थिति सक्टापश्न यी अत पोयसल अपनी बीरता एव योग्यतासे चालुक्योंका एक महत्त्वपूर्ण सामन्त हो गया और घोलों तथा उनके कोगाल्वधंशी सामन्तसि युद्धो-द्वारा शनै -शनै प्रदेश छीनकर वह अपनी धिनत बढ़ाने लगा। उसके पुत्र विनयादित्य प्रयम (१०२२-१०४७ ई०) और पौत्र नृपकाम होयसस (१०४७-१०६० ई०) ने पोयसल-द्वारा प्रारम्भ किये कार्यको चार रखा भीर वे अपनी शक्ति बढ़ाते रहे। गुरु सुगत वर्धमान ही उनके भी धर्मगुद एव शजगृद ये और शासन-प्रबाध एव राज्य-स धालनमें उनक

नपकामके उत्तराधिकारी विनयादित्य द्वितीय (१०६०-११०१ ई० के गुरु शातिदेव थे। श्रवणवेलगोलकी पादर्वनाय वसदि ११२९ ई० शिलालेलसे प्रकट है कि 'गुरु शान्तिदेवकी पादपुजाके प्रमादसे पीयसह नरेश विनयादित्यने अपने राज्यको श्रीसम्पन्न किया या।' १०६२ ई० अगदिमें ही शान्तिदेवने समाधिमरण किया और उस उपलक्ष्यमें रार तया उसके समस्त नागरिक जनोंने वहाँ उनका स्मारक स्थापित किया य 'इस राज-गुरुके उपदेशसे महाराज विनयादित्यने प्रसन्नतापूर्वक अने

जिनमन्दिर, देवालय, सरोवर, ग्राम और नगर निर्माण किये।' ' निर्माण नायमें वह बलीन्द्रसे भी आगे बढ़ गया।' उत्तरायण सक्रमप

अवसरपर १०६२ ई० में ही इस नरेशने मेघचाद्रके शिष्य मेलमेंके जैन

सक्रिय माग-दर्शन करते थे।

रियोग कारत विशेष

सम्परप्तका यो पूनियन देवर कथ्यन किया। इत राजने काले राजने प्रवान बारवीय नाम्यर-ववरणी कियादि किए युव न्यूर कृष्यामें में १ १९ दें के बार पूर्व जिलार वह त्यारी अवशा निरोधन काले विश्व पता और कर्यक विश्व प्रशासित हिंद्य क्लिकों पर्यो विश्व पता और क्लिकों क्लिकों स्थापित के हिंद्य क्लिकों के स्थापित कर्मिय स्थापित कर्मिय स्थापित कर्मिय स्थापित कर्मिय स्थापित क्ष्योपीत स्थापित क्ष्योपीत स्थापित क्ष्योपीत स्थापित क्ष्योपीत स्थापित स्यापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्याप स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थाप

जुनोने बहुराने महरा थे कि यह क्षत्र करा है। एक उपने वह यह के एक मुक्त किया करवारा प्रतिक के हैं। क्षत्र कुंकिनी वह उपने किए कर करवारा प्रतिक के हैं। क्षत्र कुंकिनी वह उपने किए कर करवारा प्रतिक के हैं। क्षत्र कुंकिनी वह वह उपने किए करवारा प्रतिक के उपने किए करवारा कर किया करवारा प्रतिक के उपने किए करवारा करवार करवारा करवार करवारा करवारा करवारा करवारा करवारा करवारा करवारा करवारा

प्रमाने मिरोप्त) और पालपोक्तर व्याच्ये है। १९६ में में राज पोर्स नुर्गेक्ट प्रार्थण व्याच्य के सिम्मू पोर्मिन बा समान दिया और वेनवेल वीतीओं अविदेशी प्राप्तकों दिया में भी बता मिर्ट ने पेनविक्त कराम्य स्वसूत्त व्याच्या प्राप्त सिप्त मिरान रह पार्म नुव हा साम्य विकासित विजीत को उसके पुत्र कुरान सरोपी

ज्या की है। काजी कालते हुई का तरफार एवंपमा की है। बावत काज (११ १-१९ ६६) पांच हुआ एकं प्रत्ये बावती की तरफार के 1 के बातहाल कुमारिक की तरफार काम विश्वेत्रसायांका में बाहते कालता अला दिसाल की दें काम विश्वेत्रसायांका में बाहते कालता अला हिसाल की दें बाहता की तरफार के 1 हिंदा काल पांच कालता हुए पाहते में की पांचे का अला की तरफार कालता है। वाल की तरफार की तरफार की पांचे का में की तरफार कालता है। वाल की तरफार की तरफार की पांचे की तरफार की तरफार की तरफार की तरफार कर रही थो, वह स्वयं एक जसाच्य रोगसे पोटिस हो गया । चस अवसर-पर गुरु चारकीतिने उसे अपने अद्भुत औषिष प्रयोगसे बीझ ही नीरोग एवं स्वस्य कर दिया या । ११०३ ई० में वहन्जाल प्रयमने मरपन्ने दण्ड-नायकको तोन सुन्दरी व याओंका विवाह सुयोग्य वरींने माथ स्वय गराया या । ११०४ ई० में उसने चंगान्य राजाओंको पराजित गरके अपने अधीन किया । जगदय मान्तरन स्वय वहलालको राजधानीपर लाक्रमण किया सो उनने उसे बुरी तरह पराजित करके भगा दिया और साथ ही उसके कोष और प्रनिद्ध रत्नहारको मी हस्तगस पर लिया । इस राजाने वेलूको अपनी राजधानी बनाया था ।

उसका उत्तराधिकारी उनका अनुज सुप्रसिद्ध बिट्टिदेव (विष्णवर्धन) हीयसल (११०६-११४१ ई०) या । यह इन वसका सव-प्रसिद्ध नरेश. भारी योदा महान् विजेता और अस्यत विविद्याली राजा था। द्वार-समुद्रकी उमने अवनी राजधानी बनाया । उसने चालुययोकी अधीनतामे अपने आपको प्राय मुक्त कर लिया और चोष्टोको देशसे निकाल भगाया। स्वतन्त्र होपछल-राज्यका वह बास्तविक सस्यापक या और होयसल-मासाज्यको नींव डालनेवाला था । उत्तरकालीन वैष्णव ग्रन्थों एव अन-श्रुतियोंके आधारपर आधुनिक इतिहास पुस्तकोमें प्राय यह लिखा पाया जाता है कि इस राजाके समयमें वैष्णवाचार्य रामानुक्रने जैनियोंको धास्त्रायमें पराजित किया फलस्वरूप राजाने जैनधमका परित्याग कर दिया. वैग्णवद्यम अगीकार कर लिया, अपना नाम बदलकर निष्णुवर्धन रखा. जैनियोपर अत्याचार किये, यहाँतक कि जैनगुरुआको घानीमें पिल्वा दिया. श्रवणवेलगोरके बाहुबलिकी मूर्ति और अन्य जैन मन्दिर तुहवाये. बैटणव मन्दिर बनवाये और बैटणवधमके प्रवारका अपना प्रधान सहय वनाया। किन्तु वास्तवमें ये कथन मिथ्या और ऋमपूर्ण हैं। रामानु-जाचार्य सिरुचिरापल्लीके निकट धारगम्के निवासी ये, काचीमें उन्होंने शिक्षा पायी यो, शकराचार्यके अर्डत वेदान्तके विरोधमें वे विशिष्टाईस वर्धन और भारिष्य सकते पुरस्का थे। वीर्यन्य वह वास्त्रे नीएकों में प्रोक्षके वास्त्रों था। यह राजा जन्द वीय वा और जैन कहा मेन्स भौगी वकान को विश्वी था। वेषुद्र कोडले केले के केलीन्द करों नव करता दिने व और वर्षा राजानुकते काले वालायार्थ कील केले एक प्राप्त बनावर नावीर्थन वेष्या की वा वक्ता वालाविगयी वीत्रमुख भी राजानुकत बावानुक था। अंद वस्त्रम्यन्द पूर्व-ताले १९६६ के मनवन काल्योन वेष्यकलन्दीक विश्वीर्यन दिश्व के विष्युप्तरामी राज्यानी हारवहाले वायर इस राजाना आवा विश्व सर्वाद दीना है।

द्ध तरब बाक्क विद्युच और प्रवश्नी था। बाने दाम्यूची बान बीर वच्छ दिया। जनव है क्ष्मी प्रवश्नी में कि प्रति बार धानुमार्थक प्राथक है क्ष्मी प्रवश्नी में में कि प्रति बंग्वाराक्षी (प्रशिक्ष को कार्यक बुद्ध हो तथा बनते हुई कर्मे का मारा बन्दे एस्स्में कार्यक बुद्ध हो तथा बनते हुई कर्मे का मारा बन्दे एस्से कार्यक हो हो। प्रवाहन के एस प्रवाहन क्ष्मी विन्तेष कर बार्विक ब्राह्मा हो को और द्वार वस्में करा वर्षि विन्तेष कर बार्विक ब्राह्मा हो को और द्वार वस्में क्ष्मा वर्षि कि प्रति के क्ष्मिन्त कार्य (१ क्ष्मा १९८६ है) एस कर दर्ष या। एसमूत्र (स्मूचन के कार्यन १९५६ है ने वारो । एस्से अपित हैं हाई कि एक्से कुम्पेट्स में बनन पूर्विकी सीठि हो प्रस्तुत की बाके वस्त्र बन्दु का और होक्स-गरेक कार्यकी विराह्मी कार्यक वस्त्र वस्त्र वस्त्र कार्यक प्रवाहन कार्यक वस्त्र वस्त्र वस्त्र हो एस्से कर्मिक

क्षिणु राध्यमुक्तमे विश्वसाने प्रधानित होने और क्या बारर गरेरेर वी नियमुर्थको न तो वैत्यस्ति प्रशाना हो किया व क्यो कार्ति प्रणया घटका और अध्य क्या तार व वैत्यन वर्षने कुर्तिया समाना हो। बक्के तार सिलमुर्थक्या में होई बन्धन वर्षके वर्त परिवर्तनसे नहीं है, यह नाम उसका पहलेसे ही था, अत्यथा स्वय जैन शिलालेखोमें इस नामसे उसका उल्लेख न होता । यस्तृत कर्णाटकके राजा लोग बहुधा अपने मूल कन्नडिंग नाम (यथा बिट्टिंग या बिट्टिंदेव)के साय-साय विनयादित्य, विष्णुवर्धन आदि जैमे सस्कृत उपनाम भी रख छेते थे। प्राचीन चालुक्यों, राष्ट्रकृटो आदिमें बरावर ऐसा होता था, स्वय होयसङ वशम दोनों प्रकारके नाम पाये जाते हैं। इनके अतिरियत ११२१ ई॰ में महाराज विष्णवधनने अपने प्रधान सेनापति गगराजके अनुज सोवणके हितार्थ हादिरवागिलु जैन वमदिको दान दिया । ११२५ ई० में इस नरेशने जैनगुरु श्रीपाल त्रैविराद्रतीका सम्मान किया । चामराजपट्टन तालुई के बाह्य नामक स्थानसे प्राप्त उसी वर्षके शिलालेखके अनुसार सदियम, पल्लव नरसिंहवर्म, कोग, कल्पाल, अगर आदि राजाओंके विजेता इस होयसल-मरेशने मन्तिपुवक शस्यनगरमें एक जैन विहार बनवाया और उस वसदि-के लिए तथा उसमें जैन ऋषियोंके सरक्षणके लिए बादीमसिंह, बादि-कोलाहल, तार्किकचक्रवर्ती बादि विरुदप्राप्त स्वगणनायक विद्वान जैनगरु भोपालदेवको वही ग्राम तथा अन्य समुचित दानादि प्रदान किये। ११२९ ई॰ में इस राजाने मेलूरके मल्लि जिनालयके लिए दान दिया। ११३० ई॰ में इसके सेनापित गगराजके पुत्र बोप्पने रूवारि द्रोहघरट्टाचारि कसे-द्वारा राज्यात्रयमें जान्तीस्वर बसदिका निर्माण कराया । इस कालमें दण्डनायक मरियाने और भरत नामक मन्योंने पाँच वसदियाँ वनवायीं, जिनमें-से चार देशीगणके लिए और एक काण्रगणके लिए यीं, तथा काण्रगण तित्रिणी-गच्छके गुरु मुनिमद्रके शिष्य मेघयन्द्र सिद्धान्तीको दान दिया । राजधानी द्वारसमुद्र (हर्शेविष्ठ) के निकट वस्तिहल्लिकी प्रसिद्ध पास्वनाय वसदिका सन् ११३३ ६० का शिलालेख मी इस राजाको परम घामिक मध्य सुचित करता है। इस लेखमें यह भी उल्लेख है कि स्वयं राजधानी द्वारसमूद्रमें महाराजके एक महान् जैन दण्डाधिपने विजयपास्वेदेव नामका सुप्रसिद्ध जिनालय बनवाया था और महाराज विष्णुबर्वनने उक्त जिनालयके मूल वती गमरी बीर वंगीता गरी-रल बी । वक्के प्रिट्म संग्रेड मून गर इपं धीनपर्वती कर्रात कुर कुर थी। इक्का विद्या रेरमारेगार्टनकर्म कटूर चैन का और माध्य गणिकाने क्यों वरार गरम केंग थी। रानीके पुर प्रवासना विद्याल वैद्यालय-पुरतकारको सेपाना वेरिकोरे फिल ने । नहारानी बान्तनदेशीले खैनवर्यकी प्रशासनाके क्लि स्थारी वर्ण किने । वक्ते क्यून्तम्य (स्थितं वारिकायतं वारकपर्वं हर्व करिया-वर्त) का करकर किया जार बराएक बल देवे और अध्यस्तुलानि पुरामधीरम तुमनेने बने बड़ा जानन्य बाद्या या । ११२३ हैं है हमें मत्त्रमेननील दीर्बन्द सान्ति क्लिप्ताची सूदि अदिक्षित की नार्वे क्रिके क्रक्यारम नामग्री एक जन्म नुसर जनति निर्माण कराये न्याराजनी मनुमतिपूर्वक बनके नियं राजुबको एक बान मेंट शिया, करतनार हुन सन्द अपि प्रदान की । काले अनुष बहुत्वहारेगांक राजनाल दर्ज अ^{स्त} काम बीए-मॉनाम्य-विभाषमके सिन् जनान किया । जनने बर्वेडक शब्दी कारण यह एवनक्रियो बानक्षत्रपुत्रायनि और विनवनस्थान वहस्त्री l ११३१ दें में जनने नियमंत्रान्तीर्नेपर समुदनी क्यारिवर्टिने बमादिवर्टिन फिता । इतरर समस्ये जनती वानिसम्बद्धेते त्री अवस्त्रेत्रनीय स्वक्र रहे मानवी अम्बेखनापूर्वक संन्यानगरम शिवा । अस समय नहीं नृति शासा^{वर्ष} पर्वशासीय और नियम पर्शतका में और बन्दोंने इस बाली^{हे की} बंबरको मुस्तिमुद्दि प्रचंबा को वो । विध्युवर्तनको क्लेफ नुवे राज्युवर्ति

ाव्यरित मी, जो सिंह सामन्तसे विवाही थी, वही धर्मात्मा थी। ह गुरु गण्डविमुक्त-सिद्धान्तदेव थे। ११२९ ई० में हन्तियूरमें इस्त कुमारीने गोपुर आदिसे मण्डित एक उत्तृग सुन्दर जिनालय बनवाया और उमके लिए अपने पिता महाराजसे नि शुक्क भूमि प्राप्त करके हको दान दी थी। महाराज विष्णुवर्धनके मन्त्रिया, सेनानायकी, न्त सरदारो एव राज्य-कमचारियोमें-से भी अधिकांद्य जनधर्मानुयाथी वस्तुत विष्णुवर्धन होयसलकी महत्ता, धवित, समृद्धि और विजयोका क श्रेय उसके प्रचण्डवीर जैन सेनापितयोंको है। उन्होंने ही होयसलों- क्षिण, दक्षिणपूर्व, पूर्व और परिचम्बर्ती समस्त दुर्दर धानुओंका सहार । या और द्वारसमुद्रक नरेशोको एक शक्तिशाली साम्राज्यका अधिपति

इन जैन-वीरोमें मर्वप्रमुख महाराज विष्णुवधनका प्रवान सेनापति राज था। यह कौण्डियगोत्री द्विज था। इसका वश पहलेसे ही जैनधर्मका न अनुयायी रहता आया था । गगराजका पिता एचिगक या बुद्धिनित्र ।सल नुपकामका मन्त्री और सेनानायक था और मल्लूरके कनकनिन्द का शिष्प था। उसकी माता पोविकव्ये भी वडी धर्मात्मा थी, २० ई० में श्रवणवेलगोलमें इस साध्यीने सन्यासमरण किया था। नी वीरता, पराक्रम, राज्य-सेवालों एव धर्मभिषतके कारण गगराजने ासामन्तािघपति, महाप्रयान महाप्रचण्ड, द्रोहघरट्ट, दण्डनायक, होय-नरेशको राज्याभिषिक्त करनेके लिए पूर्णकुम्म चार दानमें तत्पर, . स्तम्म आदि अनेक विषद प्राप्त किये थे। शिलालेखोंसे प्रतीत होता है अपने बड़े भाई बल्लाल प्रथमको मृत्युके उपरान्त एक अन्य भाई यादित्यके विरोध और पाण्डग एवं सा तगकी शत्रुताके कारण यिष्णुवर्धन-स्यिति बड़ी डॉबाडोल थी और यह गंगराजका ही पराक्रम था कि ाने चन सब षमुझोंका दमन करके त्रिष्णुवचनके लिए मिहासन निष्कण्टक या और उसका राज्याभिषेक कर दिया। यह महाराज विष्णुवर्धनका

बाहिना हार ही ज्ञा वा । महाराजकै सन्तृत वर्णजनन स्ट्रान् समय तक्कावर्त योक्रोची विकास बाहर करतेथी मी और वह नार्ने क्यों वंतराजको साँचा को १११७ में में प्रवर्त वर्ण सक्रम हवा। करो क्षमांत्रकर्मे त्याच गातेला चोक्कं शीवाँ सामग्री-सरिवत कामीदर बीर सर्रातह्वमंका पूर्वतमा समय कर दिया और संसम्मीको राजक्यी श्चनराइवर श्रविकार कर किया । व्याराय विस्मूपर्यमने प्रमा होकर श्वरते पुरस्कार जोवनेके थिए कहा तो वक्तने वंतराति देखको जोगा नाहीं बंब प्रान्ति सनेक प्राचीय वैश्वीर्य और क्वरियों की क्लिकें-हें अदेरीलें राजेन्द्र और विवरणेन्द्र पोक्ष्मे यह करना क्या या । संबध्यको करक भीमीद्वार और अंश्वय कशना या को कार्य गरी कराधार्त्वय निमा। नगरायने कांनुरेस ओर सैंगरिया विकय को और वर्ड राम द्वार हान्मी-का रमन फिरा । होक्सकोने पाक्षर फिक्न पड़ीर समार डाला विमुक्तमस्य पान्यवको परावित करने क्लामीका प्रविद्य हर्ग स्रोप क्लिम था। इक्का वक्ता अनेके किए बालूका-बकार्ड सर्व गाय प्रदे शामनीं-वर्षिय क्षेत्रसक-राज्यस्य साक्ष्यस्य कर दिया । विव्युवर्षसी

दुरन्य नगरामको वक्षित्रसै बुक्कार जाक्स्मीके विकास करानि सेना से^{ट्} इव बीर देनानीचे जानुक्य-बामाद् और क्वके बामकीको १११८ है में बुरी तथा नयांका निमा । नंतरायको इस नामालारिक निकालन महत्त्व असीम था स्थाने होनस्कोको लक्त्य हो वहीं अस्त्य कीन बाली मी. क्या विवा, हवी कारण विकासेचीमें वर्षः "विव्यूपर्यन वीतरण मक्कायनमा राज्योत्वर्णकर्ता नहा नमा है। वेधीनम प्रताननाजी कुरपुरातन सम्बद्धारियके किन्य वर्षप्रकृतिये वृत्रकारेन संवताने चुन में । १११८ हैं. में इन मुक्ता पंतराजमें एक वान बेंट दिला और धान वाली हारणमूक्की पार्क्ताय-वर्तावेते सकते समैश दिल-परिवार्षे विक्रीता करानी चनवामि १६ शालाओं को बुस्स्कारमें आज हुना वा

-

वमदियोंके जीर्णोद्धार एवं मरदाण, मवीनांके निर्माण और विविध मनोमें जिनवर्मको प्रभावनाके हिंस व्यय की । शिलालेम्पामें उनकी मूलना गीमद्रप्रतिष्ठापक गग-सेनापति चामुण्डरायसे की गयी है। किन्तु ऐसा धर्मात्मा एव जिनमनत होते हुए भी गगराजके सम्मुख राजनीति पहले नीर धर्म पीछे था, उसका धर्म उसकी राजनीतिमें सहायक एव साधक या, बायक नहीं। यह अनन्य स्वामिभक्त था। गंगराजका पुत्र और पत्नी भो परम जिनमस्त थे। उसके पुत्र बोध्य और गरोजे एचिराज उसके जीवनमें ही प्रसिद्ध दण्डनायक थे। ११३३ ई० में गुगराजकी मृत्यु हो जानेपर एचिराजने राजधानी द्वारममुद्रमें ही क्षपने पिताकी स्मृतिमें द्रोहघरट्ट-जिनालयका निर्माण कराया जो अत्यन्त विद्याल, सुन्दर भीर कलापूर्ण था। यही जिनालय विजय-पारवदेवके नामसे प्रसिद्ध हुआ। इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा होनेपर जब पुजारी जिनेग्द्रके अमिपेकका पृथित ग घोदक लेकर राजाके सम्मुख पहुँचा तो विष्णुवर्धन उस समय वंकापुरसे छावनी डाले पड़ा था और यह मसण कदम्ब नामक एक दुईर शब सामन्तका सहार वरके निवृत्त हुआ या और तमी उसकी रानी छक्ष्मी महादेवीने पुत्र प्रसव किया था। राजाने अस्यन्त आनि दत होकर पुजारी-का स्वागत किया, खड़े हीकर करबढ उसे नमस्कार किया और ग बोदक-को भनितपूर्वक मस्त्रकपर चढ़ाया तथा कहा कि 'भगवान् विजय-पारवदेवकी प्रतिष्ठाके पुण्य फलसे ही मैंने झाज यह विजय और पुत्र प्राप्त किये हैं। तदनुसार ही उसने नवजात शिशुका नामकरण किया और मन्दिर-को ग्राम भेंट किया। सेनापति बोप्प अपने पिता गगराजकी भौति उदार और वीर था। उसने शान्तोश्त्रर वसदि और त्रलोक्यरजन अपर नाम बोप्पन चैत्यालयका मिर्माण कराया । वह मारी विद्वान् भी था । उसके गुरु नयकीति सिद्धान्तचक्रवर्सी थे। बोप्पको माता और गगराजको पत्नी लक्कले या रुक्मोमती दण्डनायकिति गुरु गुमचन्द्रकी शिष्या थी, सह अपने पितके मुद्ध एवं राज्य-कार्योमें भी उसकी सिक्रय सहायक रही थी. तान हो बडी रामधीका और वर्गात्या थी। १११८ हैं वें वरनरेज्येक में बंबने एक जिलाकर नगराना जा और ११२१ वें में नहीं बली चराविगरभ किया था। यसकी विक्राणी सकतको वी को स्वयंक्ती माई रण्डशास्त्र वस्मको क्लो को कही वर्षात्मा की । ११६ ई॰वें क्कों

एक रिकाळ जिनवृत्ति और एक सरीवरणा निर्मीण कराया था ।

नित्पृत्रवेशका पूर्णा प्रमुख वीपानी प्रवसाय पृथितप्रव वा । व् धराना बन्तिसम्बद्धिः या । वडके वृर्धतः वी सामन्त्री घी है, स्त्री क्लके विदायक सक्तमधारमधाचन-पद्मवर्धी पुनिवस्तव सम्बाधित ने बीर तिया नामराज्यमून थे । यसमाय नुवित्तको निजय जी स्ट्रानपूर्व के

नीवर्वितिक मुद्दोंन चाक-गरेवके नई वाक्चोंको पर्दान्त करके वन्ते माने ररामारो प्रमित्रको पुंची ही अत्तन कर दी की और सुर दर्जिन

नी पिनपोके किए उक्का कार्च जानत कर विद्याच्या क्या बताब और कैरकंपर बक्का अविकार करा विना था। पुणिक वका वर्गानुसनी मीर वरारनेता था । कई विनवनियर क्यारे निर्माण कराने और वर्नेक निरन्दर्भ म्मन्तिर्गानी बहापता को। क्षत्रो परीएकारपुरिका बाम बैक-सर्वन क्यमे बनानं करक होटा ना । अक्सी गरनी वस्त्रनाननिर्देश बक्रवामें मो गर्ने मर्गान्या थो । श्रीता जॉर वरिनवीते क्याची तुक्ता की वादी में । १११४ र्दै में बचने नाराक-शिक्त एक जिल-तन्तिर बनराना ना । बचीके क्टार्पे क्लके पांत पुल्लिके मुख्यमाय-वस्तरि सम्पानी । यह समारि निरमुपर्वतः

वीरक्क-विनाजनके राज्य थी। महाञ्चान व्यवसायक पुनिवस्ताने वृष् माजितकेन परिकारीय थे । बच्चनाजक बस्तरेनच्य नदाराज विरुत्तक तीवरत वेनार्यीत था । 🕰 रावा बाहित्य वा जरकाशित्व और कन्त्री क्ली आवास्त्रिकेका गुरीन

नुम मा और राजाक जवाल सन्तिवर्तिनी जा क्या बढ़ा और केलारी का, वह जिलेक्षण जी परम जक्त था । इसके श्रम्म दी बाई मन्तराज और इंस्टिंग तना मर्वाजे गरिवरात माँ जिल्लाका तका धामके बीर केवाची वे ।

...

वालीय इविदास । यह इनि

मारद्वाजगोत्री मरियाने प्रयमक पौत्र और दावरसके पुत्र आतृद्वय मरियाने और भरतेरवर भी महाराज विष्णुवर्धनके दण्डनायक थे। मरि-याने दण्डनायकको सोन पुत्रियाका विवाह राजा बल्लाल प्रयमने स्वय कराया था और यह स्वय गगराजके जामाता थे। ये दोनों भाई महाराज विष्णुके समयमें सर्वाधिकारी, माणिकभण्डारी और प्राणाधिकारी पदापर आस्त्र रहे। इनका सम्पूर्ण परिवार जिनमक्त था, अनेक जिनमन्दिरीका इन्होने निर्माण कराया। इनके गुरु माधनदिये विष्य गण्डविमुनतदेव थे।

गगराजका भतीजा और दण्डनाया बम्मका पुत्र एव भी विष्णुवर्धनके समयमें ही दण्डाघीज हो गया था। यह भी वटा धार्मिक और बीर धा किन्तु उनकी मृत्यू घोडी ही आयुर्में हो गयी प्रतीत होनी है।

होयगल एयरगके राजमन्त्री चित्रराज दण्डायीशका पुत्र हम्महि दण्ह-नायन बिद्रिमय्य महाराज विष्णुवा एक अय जैन बीर सेनानी था। बाल्यावस्थामें ही इसके माला-पिताकी मृत्यु ही गयी थी अत स्थय महा-राजी उन्नया पालन-योषण भिया था। यह गालफ इतना न्युलान था रि पोडी ही आयुमें अन्त्र धन्त्र तथा अ य विविध-विद्याओं में पार्गत हो गया। एक राध्यात्रीकी पुत्रीके साथ राजाने उसका विवाह कर दिया। युवा शिनेवे पूर्वे ही यह बालकीर महाप्रमण्ड दण्डनायन, सर्वाधिकारी, महन-अनीपनारी आदि पदिवयांग विभूषित ही गया था। एक पन्तरे भीतर ही देग बाल-गुपायिन सीपुदेशपर भीषा बाबसा करके बाबसी मुरी नश्त पराजित करते अपीन किया था, अपनी प्रभाशी विजयोदि पारण चारी हो आयुमें यह बोर मरारासका दादिना सुख हा गदा चा। मान ही यह परम पानिक भी गा । श्रीपार वैविद्यदेग उनके गुर से और रदव राज्याची हारमभूटमे बचने विष्णुवपन दिवालयका तिर्माच कराया रा. और वा प्राव दम गत्राम पुरस्कार-राज्य निम वे ची दमने दक्त मन्दिरव निष् सथा मुल्तिरे आशार-दानवे लिए गर्मीत गर दिया या ।

इस प्रकार ज्यान अब प्रचान देन राजमियों और धार सेनापतियांके

वारामुर्ग एवं पुरोक्त हार्यक्रहे नगराज विक्तुवर्गन होराक्रहे व होरा बाने यह बीर साम आंगे प्रेक गृहु कर दो जानू हिरान्ताकरकी होन्यन तैयोड़े निकारको सामय का विकार किया कार्यक क्या अन्य बॉरोरानारक वर्ष गोर्थानायक कार्योद्ध गो प्रीकाद्यन विता, सामक-व्यास्य पुनार को भीर तैयारकंत्र को बॉरोड्ड्रावी क्या दिना, सामक-रामा पुनार को भीर तैयारकंत्र को साम है कि प्राच्या कार्यकार्य-गाय एवं नरिकड़े कार्याराज्ये की विद्यालयात करनेत्री वाल हरेता सामुख है। कार्यो मुक्के वारान्त्र सामीवाहोकीके बरास कन्या उप दिवस

गर्रीसूरेर त्रांस (११४१-११७३ हैं) राजा हुआ। सन्य-समार्थे ही बनवा राज्यांत्रपेड वर दिया बना वा । क्लिकी कुलुके दनव मई केरक ८ वर्षका झामक था । यह जान करवेकर थी वह आजीर-अमीहर्ने सरिक कार सूचा वा । वक्के नकार्षे होत्रवक्ष-रामानको म्हर्स मीर प्रतिकारी रजा क्याने जनने मुख-बीवन, चित्रवीत्वाद का प्रविदेश पनुष्ठति नहीं हुई परम् बनने बक्षणे निहाके बालके प्रवास और बनके रशामित्रका पुर्याच्य वर्ष तार तेन सम्बद्धी और तैमानदिशीके नारण हैं। ही बड़ी : नरियले, जाळ बारि पुत्र वसरियाचे को बड़के नियले बनपत्रे हो में ह बोनानके वेश्यान हुएत, वान्तिवन्त्र बोर रेश्यर नास्के चार बन्द रगामिक्टा पूचन एवं बीर क्षेत्रक को स्वयं प्राप्त हो स्वे। देवरात गाँधिकशोतीय व्या काली युद्ध वीकानार्थ मुनियन्त्र महारश में। दिश-वास्ति में देशप्रवरी शुक्रमा जाम्बरश्चम और बंगराज्ये बार की बाती थी । राजाने इके 'कुरमहरिक' बाव पुरस्कारमें दिया, जिसे मानी बहुर्ग कुर बीरवासक समझाकर अपने मुद्देश सारकार प्रत्यार्थ कर किया । राजा वर्तकारी बीत्राक्यके बक्तम करके क्षत्र प्राप्तका मान पर्वपूर म रिशा । बहाराज नरविक्रणे जैनान्द्रीओर्थे समझीत्व रचे वर्षमञ्जन झान चा। यह प्रातिकृषने करण हमा वा। अपने निराता शत स्थापन

माताका लोकाम्बिके और पत्नीका पद्मावतीया। लदमण और अमर नामके उसके दो माई थे। यह पूरा परिवार जैनधर्मका परम भवत या। म्वयं हुल्ल न केश्र उदारचेता, दानशोल, मन्दिरोका निर्माता और धर्मात्मा जैन या वरन् वह व्यवहारकुवाल, राजनीतिज्ञ, योग्य प्रशासक क्षीर अपने समयका सर्वमहान् सैय-सचालक एवं बीर योद्धा भी था। राज्यको सेवामॅ यह महाराज विष्णुवर्धनके समयसे ही चला आ रहा घा क्षोर अब नरसिंहके समयमें महाप्रधान, प्रधान कोपाध्यक्ष, सर्वाधिकारी एवं महाप्रचण्ड दण्डनायक आदि पदोंपर आलढ या । अपने युद्धों, विजयों क्षोर सुशासनसे उसने मरसिंहदेवके साम्राज्यको अक्षुण्ण एव सुरक्षित रक्षा। उसकी तुलना चामुण्डराय और गगराजसे की जाती थी। हुल्लके दत्तगुर कुषकुटासन मलघारीदेव थे। देवकीति मण्डलाचार्यका भी वह मक्त या और उसके स्वगुरु नमकीत्ति सिद्धातदेय थे। हुस्लने श्रवणबेल-गोलपर चतुर्विशति-बसदि नामका अस्यन्त सुन्दर एव क्छापूर्ण जिनालय निर्माण कराया था। ११५९ ई० में स्वय महाराज नरसिंहदेव जब दिग्वि-जयके लिए निकले तो इस जिनालयका दर्शन करनेके लिए गये और प्रसन्न होक हुस्लकी उपाधि 'सम्यक्तवचूडामणि' के कारण इस यसदिका नाम ^{'मठ्यचू}हार्माण' रक्षा शया उसके लिए एक ग्राम दान दिया। राजाने जन्त स्यानकी ससदियोंकी निनेन्द्र प्रतिमाओं, गोम्मटेरवर और पार्श्वनाय-की मिक्तिपूरक वन्दना एव पृजा की । धेनापित हुल्छने केल्छगेरे वंकापुर कौर कोप्पण तीर्थके अनेक जिन-मन्दिरोंका जीर्णोद्धार कराया, नवीन मन्तिर निर्माण कराये, मन्दिरोंने संरक्षणके लिए दान दिये और कई दान-पालाएँ स्थापित को । नरसिंहका तीसरा प्रसिद्ध सेनापित शान्तियण्ण या । उसका पिता पारियण्ण भी एक पराक्रमी योद्धा और राज्य कोपाध्यक्ष या। आहवमल्लको उसने पराजित किया या और उसी युद्धमें उसकी मृत्यु हुई थी । शान्तियण्णकी माता बम्मलदेशी मरियाने दण्डनायकको पश्ची थी और वही धर्मातमा थी । उसके पिताकी मृत्युके वाद नरविहने द्यान्ति-

a com

मन्दर्भ ररम्याक स्थाप और कुछ प्राप अधन किया । स्थापन यान्ता लड़े पुर पातुरूम निकायते दिया बनैकोर राजा है। यार्जित नामने कामने कार्यात करियुक्तमें एक अन्य जिल्लाका बनवाओं जिल्ले न्तिर बनने स्वयं तथा तथनी क्ष्मेन्द्र प्रमाने प्रमुख बान दिया । वर्षनिवृत्ती भीना तेपार्धंत क्रवर चनुपति का र पह कार्यिकारी एवं वितासी वर्ज मा क एरेटनवना पुत्र का । जनने मन्दार्शनरिके जिस्मानिरका बीमीदार कराज १६ ई व क्वको रच्छी माधितस्वेती यो साहियो विद्वित्रमें पुत्री और पार्टाकक्षकेकार दिल्ला थी, एक विस्तानिक निर्दात कराहर बान किया दा - नर्राव्यक्तिको को अन्य पातकनी जिल्लान और क्षेत्रेक में जिन्होंने ११६५ ई. में बार्जिककोत्सको होतकजनीरशास्त्रको सुनि बागरच पिर कल विद्या गर. पर्रोडग्डेक्डे एक बच्च मन्त्री सामुन्यम् चारिकारची रानो बकावेने हेरवृत्ते चेनासर्वश्चाच-वत्तरि वसमावर सार्था की समुप्तिये नक्तन सरदारोंने बनवा आसे तत बक्तीर्थ विद्वासीयरी धान डिया का । उन्हों काफने नर्राज्यके धाकता नोपको पत्थे विरिकारीयी देव जैक-प्रतिवादा आँतहा कराके तकत्व चलारपदेवती दान दियां था। इन प्रकार होरायक शर्मवर्षक की जान पुत्रवीको गाँव विकल्पनका नगी भीर अवस्थान क और कारे कंत-सीवारे, केस्सीवर्ध एरं वस्ति-नगरियोंने सम्बाद कुर्व ग्रीमातापूर्वत बाबारंगवर बंशवान क्ये सरकर किया। मर्राह्मका पुत्र मुत्रविक बच्चाच का बीरमाच्याच विक्रीम (११७१-

है देने हैं। अपने विकास विश्वास्थ्यणं भागि हो जाये स्थानी में नाति विकास विका

वेठगोलपर निर्मापित चतुर्निंशति बसिंदके छिए दो गाँव दान दिये थे । ११७६ ई० में राजघानीके देवीसेट्टी नामक घनी सेठने वहाँ यीर वल्लाल-जिनालय नामका सुदर मन्दिर राज्याश्रयसे निर्माण कराया और इसके लिए स्वगुरु बालचन्द्र मुनिको दान दिया था। स्वय राजाने भी कई गाँव चसके लिए प्रदान किये थे। ११९२ ई० में राजधानीके अन्य चार प्रमुख सेठोंने समस्त नागरिका एव अत्य नगरोके व्यापारियोके सहयोगसे वहाँ नगर-जिनालय नामका विशाल एव सुद्दर मन्दिर निर्माण कराया था। इस मन्दिरका नाम अभिनय शान्तिदेव भी था। राज्यश्रेष्टिके साथ महाराज 'प्रतापचक्रवर्ती वीरदस्लालदेव' स्वय मन्दिरमें दर्शनार्थगया और उसने चसके लिए गुरु वक्तनिद सिद्धान्तको कई ग्राम दान दिये । सदैवकी भौति इस समय भी होयसल राजघानी द्वारसमुद्र जैन धर्मका गढ़ और भव्यों (जैनों) का प्रधान के द्र थी। जैनाचार्य श्रीपाल देव और उनके शिष्य इस कालमें होयसलोंके राजगुरु थे। बल्लाल द्वितीयके समयमें भी होय-सर्लोके शौर्य और पराक्रमकी प्रतिष्ठाके जावार उसके जैन सेनापति और मन्त्री ही थे। वृद्ध सेनापति हुल्ल्के अतिरिक्त वसुधैकवा घव रेचिमय्य वल्लालका सन्य प्रसिद्ध सेनानो था। इसके पूर्व वह विष्जल कलचुरिका प्रधान सेनापति था, कलचुरियोंके पत्तनके परचात् वह धल्लालको सेवामें भाषा। वह दुईर योद्धा और क्षाल सेनानी था, बल्लालकी अनेक विजयो। षा श्रेय उसे ही है। साय ही वह वडा जिनमक्त था। उसने भागुदिके रलत्रय जिनालयके लिए मृनि भानुकीत्तिको दान दिया, नागरसण्ड देशको अपनी राजधानीमें एक अति सुन्दर सहस्रकृट चैत्यालयका निर्माण कराया, १२०० ई० में इस मन्दरके लिए अपने गुरु सागरनन्दिको दान दिया और महाराज वल्लालने भी उस अवसरपर उन्हें एक ग्राम दान दिया। उसी वर्षे श्रवणबेलगोलमें भी उसने एक शान्तिनाथ वसदि बनवायी। मरियाने दण्डनायकके पुत्र भरत और वाहुविलि भी बल्लालके स्वामिभक्त जैन सेनानायक थे। बुल्लालका एक अन्य सेनानायक वृचिराज था, वह राजाका

वन्तिवर्श्यक का जान ही जीतरत वर्ष करती वाले जालीमा लिए भीर करि मी बा र ११७३ ई. में बस्ताको शामाविको बासाय मारिप्रक्रिमें विशृहनीयांनय नवराकर बनने स्लूब बल्लुस्सी स्रो किए बाम बाम दिने में १ बस्थानका एक सब्ब । शामानी बानेता ही चन्द्रमीय वा बो बनेक विद्यालीने चारेका आहे दिएन वा बेर वर्ष मैंव दोने हुए को बैनववंदे वर्ति वर्ति वसार का वहारी सर्वे धाराने थी परम जिल्लाका वर्ष जुलि क्यमीतिकी विभागों है। ११८९ है माचक्रोरोने वरक्रीक्योतने शर्मगानका कृषर जिल्लाम (क्रांत क्रांत मा निवर्ष किए श्रवके प्रीप क्लामोलिके पामचे वार्वत करके महानि रित्य बालपारको एक शाम कार्य विकास था । बातारेकीय व्यावीरी पूर्व नगर और बार्के अविभिन्निति थी। इस विभारके निम्न सन् हिर्ने के सार प्रशान बालो धोरके एक अन्य क्षान वी तान दिया था। इस हर्न मैंनानारी क्षणको जाती श्रीयमध्येत्री १९ क ई हे इस दाति निर्देश कराकर राज विकास । सम्बन्धिनार्थ यो १९ ५ ई में एक पुनर क्रियम्य निर्माण करावा था। इसी राज्यकारमें वान्तके स मरहाने नहीं दशास्त्र कर्माना कर्माना वर्षेत्रात्री वर्षरार्थे ग्रोट हरानिहाँ वित्रे में १ अस्त्राक्ता एक सैनकती शर्मण या वो तथी अन्तरेण हैं मीर नक्सीरिका विकास । यह जिल्लीनार्जाकाम बर्**ना**ज के मक्तकेकोलके वार्वकोदाने ११९५ हैं में क्की सरावका क्यान पेपा गर्ही क्यर-क्रियाक्का अगर शाम जीविकार नावण अवित क्रांस्प मीनर मनदास का । एक तक ज़ब्दी स्पूर्वण अन्तराव मा । वर्ड क्टी पानपाविकारियोके करिवित कुळ्ये कारण हुआ था । यह और उपयो पानी मोपानदेवी दोनों वह अवस्थित के और प्रश्नवृत्तको क्रिय बंदानवर्ष बहुरफेंड जिल्ल के इंट्रवर में के शाहीर ब्राय-जिलाका नागरी सरमा पांच विश्वपनिया सामाना या शिक्षक क्षित सहस्राचीनार एरवारको प्रथम क्लीने धार विकाश । पान्तीत सुभरतारी, अन्य रेको, तैलव्यापारियो और स्वयं महामण्डलेख्यरने भी इस मन्दिरके दान दिये। १२०० ई.० में राज्यके एक अन्य सर्वाधिकारी मस्मट य्यने अपने स्वसुर बल्लय्यके साथ परवादिमल्ल-जिनालयके लिए एक को समस्त तैलमिलोका कर प्रदान किया था। राजाका एक दूसरा विकारो 'महापायसम–विग्द-नामोत्तदिष्टायकम' आदि पदारूढ नायक अमृत मी नयकीत्तिका शिष्य था और वल्लालकी उपराजधानी क्टुंढोका निवासी था तथा जाति एव क्रुल्से शूद्र था। अपने तीन त्योंके साथ १२०३ ई० में उस स्थानमें उसने एक्कोटि-जिनालयका िण कराया या और समस्त नगर-निवासियो एव कृपकोंके नायकोंके भ भगवान् शान्तिनाथको पुजा और मुनियोके आहारके लिए भूमिदान ाथा। सेनापति अमृत इतना उदारचेताया कि उसने ब्राह्मणेंके १ एक अबहार मो स्थापित किया था एवं एक शिवालय भी बनवाया । बल्लालके राज्याभिषेकके अवसरपर उसके एक अन्य पदाधिकारी चराजने ११७३ ई० में बोगवदिक श्रोकरण-जिनालयके पास्वदेवके ए गुरु अकलंकसिंहासन पद्मप्रमस्वामीको एक गाँव दान दिया था।

बल्लाल द्वितीयने विद्वानोंका भी आदर किया और साहित्यको साहन दिया। उसके पूर्वजोंके प्रश्नयमें श्रीधरने जातकतिलक और चन्द्र।परित (१०४९ ई०) की, नागवर्म प्रथमने चन्द्रचूहामणिशतक १०७० ई०) की, नागवर्म (११०५ ई०) ने मिल्लिनाथ रेत एव रामचन्द्रचरित नामक चम्पुओकी, ब्रह्मशिवने समयपरीक्षाकी, जित्रमेंने गोवैद्यकी और नागवर्म दितीयने कान्यालोकन, कर्णाटकभाषारण तथा वस्तुकोपनी रचना को थी। स्यय वल्लाल द्वितीयके राजकिव मच्द्र ये जिन्होंने लीलावती नामक प्रेमगाथा लिखी थी, राजादित्य १६९० ई०) ने न्यवहारगणित, क्षेत्रगणित और लीलावती नामक गणित य रचे, महाकवि जन्न (१२०९ ई०) ने यशोधरचरित, जगदल्लोमनाथ-कत्तड-कत्याणक्षारक नामक वैद्यक ग्राय, वाधुवर्म वैद्यने हरितैशास्त्र-कत्तड-कर्मणक्षारक नामक वैद्यक ग्राय, वाधुवर्म वैद्यने हरितैशास्त्र-

स्य बोर बीवहम्बीका शितुमारको बेन्सापरित बोर रिपुप्पर समस्यों नक्तिया बोर बाको मार्च ब्रिक्सपूर्ण है प्रिपुप्पर (१९६५ दें) को प्रचा की यो । बारोस्त शित्रम् त्या स्था के वेश कीर वाद मारिकाने पुरस्तापरि ११ साले कारके किरानेत होना कार्यत सिक्स सी मुस्तिकारि के बाले कारके हिन्दा स्थापरित कार्या कार्यक्रमप्रारक्यों किसार-पृति की हुई विशेषकर बारोसिकी १९८५ दें में बेसीपित कार्योपर विवा कार्य कार्य कर्य के स्थे

बीर सम्मानको मृत्युक्ते करधन्ता इन श्रेवती अवनदि आर^{ात} हैं समी । १२१ वें में क्लावा पुत्र नरसिंह हैकीय ग्रमां हुना, बानवारी भोडे बसर नरमानु हो जबको मृत्यु ही क्यो । शतकार साम्पन्न दिशीनमें चीन सीमेरबर राजा हुता । क्लबी मृत्यु १२४५ हं में हुई । बोनेस्राची वी सानियों की क्षत्रता बात विश्ववस्थानी का और क्षत्रीका देख्याँकी बक्तमरा पूर्व वर्रावद्व शृतीय का और श्वाधिका राजवाय । विसारहे चीरम-नामने ही उत्तराविकामके प्रकारों सेवर बस्छ हारमा ही नहीं थे जिनके बारच राज्यमें बरासाना-की करूप ही वर्ध में कियू उसके पुराने न्यापितका नेपवित कारण पिथेव वर्तन वर्ती हों । उक्ती में बीचके न गाँउ जिल्लीच निक्ते हैं और व रिवी प्रसिद्ध क्रमधारे बन्देश । सार्वरर वीर निर्वाण कार्यके ताकशी-नाम स्वरूपपूर्व पूर्वी और विश्ववीर को बार बाल बात कुछ हो बा बोबेरपटको सम्बद्ध सारान्य १९४५ में १९५४ में जब बबके दीनों नुवंकि नवस्थानीको तीन अरम चनार रहा शरीत होता है । सनारा पास्कारिक समझौति हाचेन कर्या-इक नामान्त्रका बेच्छा जाव और राजवानी शारववृत वर्रावड तुनीर र १९९४-११९१ हैं) की बारत हुए और समित देश क्रो कांतर बाना राम्नान (१९५४-१९९७ ई.) को निमे । बनने क्श्रमुद का निहन

बारवीय इतिहास एक श्री

पुरको अपनी राजधानी बनाया ।

में दोनों ही राजे जिनधर्ममनत रहे प्रतीत होते है। १२५४ ई० में नरसिंह राजधानीके प्रसिद्ध विजय-पाश्व-जिनालयमें दर्धानार्थ गया, देव-पजन किया, मन्दिरके पूर्ववर्ती शासनों (फ़र्मानों) को देखा, उन्हें स्वीवृत विया और कुछ और मुमिदान दिया। १२५५ ई० में अपने उपनयन सस्कारके अवसरपर भी इस पचंदशवर्षीय राजाने भगवान विजय पाइवंकी पुजाके लिए दान दिये । इस राजाके गुरु बलात्कारगणके कुमदे दू योगोक शिष्य और कुमदच द्र पण्डितके गुरु माघनन्दि सिद्धान्त थे जो मारचतुष्ट्यके रचियता और भागे विद्वान थे। १२६५ ई० में राजाने राजधानीके किल होयसल-जिनालयमें उपस्थित होकर अपने महाप्रधान सोमेय दण्ड-नायककी सहायतासे त्रिकृट-रत्नत्रय-शान्तिनाय जिनालयके सरक्षणके लिए स्वगुरको १५ ग्राम दान दिये थे । इसी उपल्दयमें वह जिनालय नरिंडिन जिनालयके नामसे भी प्रसिद्ध हुआ। १२५७ ई० में राजधानीके जैन नागरिकोंने भी द्रव्य एकत्रित करके धान्तिनायका एक नवीन मन्दिर यनवाया या और राजान उसके लिए दान दिया था। १२७१ ई० 🛱 नर्शिहके उसी सोमस्य दण्डनायकने राजधानीके निकट एक प्राचीन वमदिका पुनवद्वार किया। १२८२ ई० के एक शिलालेखमें उपरोक्त मण्डलाचार्य माधनन्दिको स्पष्टतया होयसलनरेशका राजगुर वहा है। उम वर्ष भी राजाने गुरुको दान दिया था। १२८३ ई० मे नरसिंहके माध्य नामक एक अप दण्डनायकने कोव्पण तीर्थकी चनुविशति-तीथकर-चसदिमें एक नवीन जिन-प्रतिमा प्रतिष्ठित की और अपने गुरु उन्हीं माधनन्दिको दान दिया । इसी राजाके प्रश्रयमें मिल्ल्कार्जुनके पुत्र वेशिराज (१२६० ई०) ने भव्यमणिदपण नामका प्रामाणिक कन्नड व्याकरण लिखा और कुम्देन्द (१२७५ ई०) ने कन्नष्ट जैन-रामायणकी रचना को ।

नरमिंह तृतीयका प्रतिद्वन्द्वी रामनाम होयमल भी जित्तभवत था। उसने कोगिलमें चेन्न-पार्श्व-रामनाथ-वसदिका १२७६ ई० में निर्माण कराया वर नियमें निर्मा कर्याः सामेहः नवत्यु देतिनूनि मुस्ताः सिं या । वी तिर्वादित्य विवासेक्या कर्या नियासकी सिंग सर्व रास प्रत्येन्द्र हाराः रवस्थानकं रियो कर्यमा वालेक्य करते हैं है अपिले बेद्दा कर्यास्त्येत्यं जो कर्या क्यान्य नियास्ता और रोप्प्राप्ति क्याने विवासनारों की वर्षी वालां स्थान दिवास कर्या है जिल्हा पर कर्या प्रत्येत्र स्थान हो कर्यों के बीत कारणी की तुम्बासन्ति कारान्य कर्या कर्य हारा देशीयों के कर्यों के स्थानकंत्राच्या स्थान होने क्यान देशान स्थानित सुनिवस्य पुत्र क्यार क्यानिकारी सीरसम्बात होने

(१२९१-१६६२ हैं) एवं वंग्रहा अन्ति वालेक्सीन राजा वार व्याले

मैनवर्गके प्रति कथानीय रहा क्यान होता है। बनवा महारथन क्रिक्सेप रेंदेव रामाध्यक अववर ही मैन या । १९३९ हैं में इस अभीने ब्हेसर्ट की क्रोलुक्य-कर्षि गानक विचालको तिल् को कार्नोडा सन्दर्भ ^{इस्ट्री} क्याचा १३ ई में धानकार्य हारवकार्य न्यापुरि स्थित क्रकाधेरेके बंधाविकत्व विमा वा । इस क्वरंपर संस्थाने नहां वर्ण क्तिया और मूर्तिको मूर्तिको सक्ताकर स्थानित को वी । इसी वर्षे से निश्चन् ग्रहणीरने प्रश्नविदिकालगर रहुकूथ वा शृहणका आवश्च कृष्ण किल् था । किन्दु एन पानमें होवसमन्यान्त्रको शरित विवित्त होती वा पर्दे भो । १६१ ई. में समावद्वील सम्मनीके देशानीत मानिक बाबूर मीर क्रामा हानीने होयनकनान्त्रपर तीवच बावनन जिला और धनकी हारवपुत्रको कृता एव नश-अन्य विका । राजानै निवस होकर सरीना स्वीचार कर भी और कर देने क्या कियु ओर्ड डी बन्न स्वयम् स्वर रिया । १६९६-ए हैं में नुरागर पुरस्कर श्रीकाल राज्यार प्रारंत बाक्रमण किया और एक राज्यका अलाक्ष्य ही कर दिया। अस्तुका इस भीर बस्तायका व वेथे गाँवस शीवश स्वराज्यकी स्वार्थ नुक्रकमानी अक्टो-कार्ये ही जीवा और वती जनतार्थे क्याचा १६१३ है के ब्यानर

उसकी मृत्यु हो गयी। किन्तु मरनेसे पूर्व वह ऐसी व्यवस्या कर गया और राज्य एव स्यदेशको सीमारक्षाका भार बुछ ऐसे व्यक्तियोको सींप गया कि जिन्होंने उसके स्वप्नको उसकी आशाओंसे यहीं श्रपिक चिन्तार्ध पर दिखाया । अपने राज्य एवं यदाको रक्षा अन्तिम होयसल मोरबल्लाल मले ही न कर सका किन्तु भाषी विजयनगर साम्राज्यके बीज वह ही यो गया था, इस तथ्यमें विशेष सन्देह नहीं है।



अधिक हो उठता है। उनके प्रतिद्वन्द्वी उनके स्वदेशवासी, सजातीय, साधर्मी पहोसी राजे-महाराजे नहीं ये वरन् वे विदेशी विधर्मी क्रूर आक्रान्ता ये जो न केवल तत्कालीन भारतकी स्वतन्त्रता और धनका एक अपहरण करनेवाले राजनैतिक राजु ये बल्कि भारतीयोंके धर्म, सस्कृति, साचार-विचार और जीवनके भी भयानक शत्रु बने हुए ये।

इस भारत-गौरव साम्राज्यके मूल सम्यापक सगम नामक एक छोटे-से सरदारके पाँच बीर पुत्र थे। १३८५ ई० के एक जैन शिलालेलमें इन्हें यादवराजवशोद्भूत कहा है अत देशगिरिके सुएन और द्वारसमुद्रके होयसुलाँकी मौति सगमके पुत्र भी यदुवशी सनिय थे। सगम औ उसके पुत्र बद्यपि होयसलोंके अति साघारण श्रेणीके छोटे-से मामन्त और उसकी सीमान्त चौकियोंके रक्षक थे, किन्तु साथ ही वे स्वदेश भयत, स्वतन्त्रना-प्रेमी, बीर, साहसी और महत्त्वाकाक्षी भी ये। मुमलमानीके आक्रमण न होते तो स्यात ये गुण सूपुप्त ही रह जाते या वे कोई होयसल आदि जैसा राज्य स्थापित भी कर लेते। किन्तु देखते-देखते ही एक दशकके भीतर दक्षिण मारतकी तीनों महान् राज्य-शक्तियोंका अत ही गया। इन वीरोंका रक्त चवल चठा, ये सचिए हो गये और पाँचों भाई मुसलमानोंके आक्रमणकी मोपण बाढको स्तम्भित करनेके लिए जूट पडे। इसमें सन्देह नहीं कि जनका यह जपक्रम विशेष रूपसे द्वारसमुद्र और सम्भवतया वारगलके भी मुमलमानो-द्वारा पतन किये नानेको प्रतिक्रिया था । इन पाँचा भाइयोंने दिशिण देशके विभिन्न सामन्त सरदारोंका, जो उत्तर दिशामे आनेवाला इस सवमहारक ववण्डरसे खुट्ध थे, अपने नेतृत्वमें सगठन किया और देशसे मुसलमानोंको निकाल बाहर करनेमें जुट गये। इस प्रयत्नमें मह मुसलमानोंके हाथो वन्दी हुए, मुसलमान भी बना लिये गये, बिन्तू छट निकले, और फिर स्वधर्ममें दोक्षित होकर हुतूने उत्माहसे वार्य सिद्धिमें जुट गये। किन्तु कार्य सरल न था, दिल्लीक सुलतान राष्ट्रिशास्त्रे कोर स्थान-स्थानमें उनके मुसलमान सूत्रेदार अर्धस्त्रतंत्र साव

विजयनगर-माम्राज्य

अध्याग 7 🛚

विजयनगर-साम्राज्य

रियमी विवेशी मुसक्कानोने प्रयंकर बाहनमाँ और निर्देशानुर्व मामापारी-बाध चनात बताराज्यकर वाविकार कर क्रिके क्रांपत हरू रायके वर्षको देशविरिक्षे बादवी - वार्रकाके कवादीयी बाँद अन्तर्वे झर बसुरके होन्तकोकी राज्य-करिएका मी बन्त कर दिया दा किन्तु है दर्जिक पत्र विश्वेषकर कर्णात्रक के निमासिक्षींकी वैद्यवस्थि और क्याराज्य से गा मारा नहीं कर करे । श्रीनक्क-राज्यको सनान्ति शीमें नी नहीं नानी की कि विकारतर राज्यके कार्य वह स्वाहत्त्वानीय नदीन श्रम और कार्यके बाव मरपूर्वित हो कहा । जन्मकातका विश्वनकार-बामाक बारहीय धन मीरिको चरमुक्ता वर्ष अनुपन सृष्टि थी । पर्यादको आयोग कार्यानी ताल पंच करम्य पत्रिकारी पालूनेच राज्युष्ट, बतारपार्वे पायून्य सोर होनसम्ब प्रमृति राज्यकोत्ती सनिन्तितः बीची परत्यसमें करानां विजन नवरके राज्यको अपने-आपको एक परम्पराध्य व्योग कतर्रात्नारी विक्र किया । राजगीति श्रावन-स्वरूचा श्रीवन और लक्ष्यारमें क्योंकी थीरिकी बुदिकवित करने अपनाना राज्यमें प्रचक्ति निर्माण वर्गोंके डॉर्स वैद्यों ही बामर्वोद्यता सहित्सुता इसे करावस्ताका चरित्रन दिया और ब्रीकृतिके बाहित्व कथा शोकशीवय आदि विशित्त्व अंध्येका विना धैके भारके बरारता वर्ग अवस्थानुर्वक गोयक वर्ग विकास निम्म । निव रिपर वरिरियतिमेकि बीच विवयनपर-बाझालवरी स्थानमा विश्राम और विकर्ण द्वारा बनारर म्थल वेलेने क्षत्रके वरेनांके कार्य और बच्चव्याका महत्त्र और प्रजामें अधिकांश भाग जैन, उनके पहेंचात् श्रीवैष्णव और फिर लिगायत या चौरशैंव और फुछ सद्शैव थे। किन्तु विजयनगर-नरेश प्रारम्मसे ही सिद्धान्तत सभी धर्मोंके प्रति सिह्ब्णु, समदर्शी और उदार थे। स्वय राजधानी विजयनगर (हम्पी या प्राचीन पम्पा) के वर्तमान खण्डहरोंमें वहाँके जैन-मन्दिर ही सर्वप्राचीन हैं, वे नगरके सर्व-श्रेष्ठ के द्रीय स्थानमें स्थित हैं और अनेक विज्ञ विद्वानोंके मतसे उनमें से अनेक ऐसे हैं जो वहाँ विजयनगरकी स्यापनाके पूर्व ही विद्यमान ये । इससे स्पष्ट है कि यह स्थान बहुत पहलेसे ही एक प्रसिद्ध जैन केन्द्र था। हरिहरके शासनकालमें ही १३५५ ई० में भोगराज नामक एक प्रतिष्टित राजपुरुपने रायद्गीमें अनन्त जिनाच्यकी स्यापना करके अपने गुरु नन्दिसघ बलात्कारगण-सरम्वती-गच्छके अमर-कीर्तिके शिष्य माधनन्द सिद्धान्तको समपित किया था। इस राजाके अन्तिम वर्ष १३६५ ईं० में कम्पाके जैन-गुरु मल्लिनाथको दान दिया गया था । हरिहरका पुत्र राजकूमार विरूपाक्ष कोडेयर १३६३ ई० में मालेराज प्रान्तका शासक था। उस समय उसकी राजधानी अरगमें पार्वनाय वसदि नामक एक प्राचीन जिनमन्दिरसे सम्बन्धित भूमिकी सोमाके प्रश्तपर जैनो और वैष्णवोमें विवाद हुआ। राज्यकी ओरसे प्रान्तीय सभाभवनमें महाप्रधान नागन्न तथा प्रान्तके प्रमुख सामन्त सरदारों, जननेताओं और जैन एवं बैष्णव मुखियाओंके समझ राजकुमारने सर्व-सम्मितिमे जैनोंके पक्षको न्यायपूर्ण घोषित किया, प्राचीन शासनोंमें जो सोमाएँ निर्धारित थीं वे ही स्थिर रनी गयी और एक शिलालेखमें अकित फरवा दी गयीं। इस कालके प्रमुख जैन विद्वान् महान् वादा सिंहकीर्ति, धर्मनाथपुराणके कत्ती उभयमापाचक्रवर्ती बाहुबिल पण्डित, गोमटुसार वृत्ति-के कर्ता केरायवर्णी और धर्मभूषण भट्टारक थे। सुप्रसिद्ध ग्रन्थ खगेन्द्रमणि-दर्पणके प्रणेता मगरस प्रथम भी इसी राज्यकालमें हुए हैं।

हरिहर प्रथमके बाद उसका छोटा माई बुनकाराय प्रथम (१३६५-१३७७ ई॰ राजा हुना। इसके समयमें भी यहमनी सुल्तान मुहम्मद और

निरंपुच द्यानन करने सने थे । एक केन्द्रिय सारक्ष्मारिका निर्माण करना प्रयम आरापरका थी । जन सीकान्या संसाम और यक्ति-जेंग्स कर केनके बतरामा १६३६ वं. में शूंबनात नाति बनाये सारार आपीत हुई बातेपुर के बाक्ते दानी नावक स्थानको इस आहाति बारहा केन्द्र क्याच और विकासकारी तीन साती । १३४३ है के समाम का नियान मुद्द एव बुन्दर नवशे (विजयनगर विद्यालयर का विद्यालयरों) बन्दर तैया हुई और १३४% हैं में बारान्य विकासकर शामको बड़ी स्थान्य हरें इन बीचमें तीन बाहरोड़ी चारतस्थानाके निष्ट क्ये वर्ते वर्षे मृत्यू ही पूरी प्रशेष दान्ते हैं थेप को इरिट्ट और नुकारक, केलि? वै वन रामको राज्यक्तिक स्थानगर वक्त स्थेत जाग ग्रीदराज gun (१६८६-१६६५ ई.) femmer visces unn maler नरेय हुना। रिकाम्परको स्थालाने हेरित होकर बर्गा ही गर्ने (१३४७ (में) रिप्पोर्क नुकारको हमा नामक एवं तुनी बरधारी, सी जाराजाने वर्ष नामके किया सञ्चानका केवच पहा नामसा जाता है। बीमन देवके वर्णये धानमें योनवाचार (देवनिर्देश) गर अधिकार करके और कुलरोधे शावतानी वतातर बहुत्ती राज्यमें मेर समी। सं बचार शारमध्ये हो विजननाथा ब्रीक्टची और विश्व वन गर बुरप्रस्ते धन्य हवा बीर शामाचे से बच्चीवर्धे तक प्राप्त स्थाप बन्नेशना युद्ध नंबर्व ही। राज्यानीय रक्षिण मारदावा चार्नाटिक स्मिन् है। हरिहर प्रकाश प्रतिकृति नव्यवस्था प्रकार का दोनीके की व वर्षेक कुछ हुए जिनमें नुसम्बन्धियों नुसंस्ताके कारण आयो व्यक्तियोंचा क्षेत्रर द्वरा । महाराज वृद्धिरण जनसम्बन्धे एवं रामार्किन (जवान केपार्टी) जैन जीए सेव का संकार का की जवाद, अस्पत और कन इन तीनों श्रांत्रजाति शुक्त का और एमझेवर्षे धाना इधिहरण होतरा शब्द या र

हिंद्दर गीर कक्ते नंधर्मेश राज्यन्तं कामान्यः दिन्तुपर्व पाः

11

गा वह राजद्रोहो, सपद्रोहो और समुदायद्रोही समझा जायेगा। जैन
र वैष्णव दोनो सम्प्रदायोने मिलकर जैन सेठ बुमुविसेट्टोको अपना
मूहिक संघनायक बनाया और उपरोक्त राजाजाको राज्यको समस्त
सिदयोमें अकित करा दिया। बुक्कारायका यह महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक
ार्णय उसके यद्यांको धार्मिक नीतिका आधार बना। दोनो ही घर्मोके
नुयायियोंको धर्म-स्वानन्त्र्य और राज्यसरक्षण समान रूपसे प्राप्त हुआ,
ाय ही उनमें परस्पर सद्भाव उर्षम्न किया गया।

बुवकाराय प्रयमका पुत्र और उत्तराधिकारी हरिहर द्वितीय (१३७७-(४०४ ई०) एक प्रतापो सम्राट्या । उसका प्रतिद्वन्द्वी बहमनी सुलतान **गी शान्तिप्रिय या अत मुसलमानोको ओरसे उसे निश्चिन्तता रही और** उसने इससे लाभ उठाकर सुदूर दक्षिणके सम्पूर्ण समिल देशपर, त्रिचना-पत्ती और काचीपर भी अधिकार कर लिया । घासन-अयवस्था और अधिक सुचार करके उसने अपने साम्राज्यका सगठन किया और विविध उपा-िपयों विभूपित सम्राट् पद घारण किया। इसके प्रमुख मन्त्रियो और सेनापितयोंमें उसके पूर्वजोंके महाप्रधान धैचका पुत्र दण्डेश इहग, जी क्षितीय भीर घरणीदा भी कहलाता था, और उसके भाई मगप्प एव युवकन थे। दण्हेश इकाने जो भारो धनुर्धर भी था, १३८५ ई० में विजय-नगरमें कृत्युनाय जिनेन्द्रका सुन्दर पापाण-निर्मित मन्दिर बनवाया था। मन्दिरके सम्मुख दीपस्तम्मपर इस अभिप्रायका छेख उत्कीर्ण है। कालान्तर-में यह मन्दिर गाणिगित्ति-वसदि (तेलिनका मन्दिर) नामसे प्रसिद्ध हुता, सम्भव है पीछे किसी समय किसी वेलिनने इसका जीणों बार कराया हो। इरुगके गुरु आचार्य सिंहनन्दि थे। १३६७ ई० में भी इरुगने एक मन्दिर चेलुमल्लूरमें यनवाया था। उसका वड़ा भाई मगप्प भी जैनागमका परम भक्त और जिन-धर्मका स्तम्म कहलाता था। इस्पका नामधारी और मतीना तथा मगप्पका पुत्र दण्डाधिनायकेश इरुगप्प अपने पूर्वजीसे मीर परचीय प्रथम प्रशासिको थी । जुर्वी और व्यक्तियो पार्टीके मन्तरार्थे मानुनं प्रशास मुख्यासारका क्यावितान था । १३ ४ ई में इन ग्रामी चीनके निवरणी बचाए नाइन्तुके बरवारके बावना राजपूत जेजा था। इन राजाचा नारा बोचन बहर्जनसाढे जाब श्रीषम वृद्ध बस्ते बीग । ही ga'n bet neine da die confenne de get das die ge रारेग ररन, रणानारक वंत और त्यानायक बुरवन 🗗 अस्मी में । मेंप बारने बाहब कोरना बचारता विद्वारा बीट बर्शनुनीहित बीटिके बिट श्रीनंड या : श्रवते पुत्र इरक्षे पृत्र है से एक जिल्लान्ट वयराष्ट्र यान दिशा का १३६८ हैं में नहाराज बुल्हारावके बस्तून एक बहिन बान नाप्त्रसारक सम्पन्न क्राप्तित हो । धारके क्राप्त नापूर्वी (विक्री) के बारों (बंशा) ने बनके श्रांत अन्ती (वांनेत्वर्ती)-ग्रांस किये वर्षे मनावीरा प्रांतफार कराने हे लिए शतारी देवार्ग एक बारेशनाव बैस्स चनारे अभावतं नार्वाने जन्ती, उनके बान्यनी पुरुषी, प्रेरीहर्ती पूर्विन बाजोंको बचा सरने प्रमुख कामन्तीको स्वय करने बीतवींका हाथ बैप्यांकि द्वापने दिया और केलका को कि हमारे छान्दने सैनरर्छन और बैक्सपर्यन के बीच रिसी प्रचारका सेट वार्ट है । बैनवर्धन वृत्रेक्त बंदब्दायान बीट मनवना अधिकारी है। अपने-हारा सैनरर्वक्की दुर्जन सा वृद्धि परण रैफारमा माने ही परची हारि वा पृत्रि क्याँ । वेद बीर रैमार एक है करके बीच कोई अलार करना ही ही पहिला । अन्यवेतनीय टीके भी रतार्थ केवनमात्र अपनी ओरबे १ |वेरवन-पान निवृत्त परिते । राज्यके बैदी वक द्वार प्रांत शरके दिशावके इस बार्वके जिए प्रवास वर्षे । रवशोके वैजनके वार्तात्वर प्रवाहा करवीन जिनवन्तिराँकी विचार-पुराई-सरम्बद्ध साहिते जिला आवशा । बाह्यस्य सम्बद्ध कृत मुखियाओ इद प्रवादे ब्यायित करने और जाब करवेगा चार कोंचा बार और रामा-

वास्त्रीय इतिहस्य एक गरि

क्यके बन्नराविकारीः स्वाहितके जान कृत हुन्द् । जुलकारामका मी स्थान प्रथम कृत नामकामान क्षेत्रण क्षत्राविकालक ही का वार्त्रण, जिल्लीम मो इसी कालमें हुए।

हरितर दिवीयने परनात् उसमा ज्येष्ठ पुत्र युषशाराय दितीय (१४०४-६ ६०) और तदन तर दितीय पुत्र दवराय प्रयम (१४०६-१० ६०) और फिर देवरायका पुत्र विजय या वीरविजय (१४१०-१९ ६०) राजा हुए। इन राजाओं के समयम बहमनी मुलतानों याप बरायर युद्ध चलते रहे। १४०६ ६० में सो बहमनी फिरोजने विजयमागर ही आक्रमण किया। चार मास तथ वर राजधानीया पेरा हाले पढ़ा रहा और एक बार नगरमें भी पुत्त आया, किन्तु निषाल बाहर विया गया। अन्तत मन्चि हो गयी और वह बापस लौट गया। यहा जाता है कि देवराय प्रथमने अपनी बायका विवाह उसके माथ करनेवा वचन दे दिया था, किन्तु मुमलमान बादणाहका देवरायने मम्मान नहीं किया, इसीसे शत्रुताका अन्त न हुआ।

कुछ इतिहासकारोने इन कालमें विजयनगर राज्यमें दिलणमुजा और वाममुजा नामक दो जातियोंका उल्लेख किया है और उन्हें राज्यके दो प्रधान वर्ग वताये हैं। धस्तुतः ये जातियों या वर्ग 'मन्य' और 'मन्त' धन्दोंसे मूचित जैन और वैण्णव ही थे जिहें विजयनगर दे राजागण अपनी दिल्ल और वाम मुजाएँ समझते और मानते थे। राज्यको अधिकांश जनता एवं सम्प्रान्त जन इन्हों दो समक्रम और प्राय समसस्यक वर्गोंमें बेंटे हुए थे। हरिहर और बुक्काको आदर्श नीतिका प्रभाव उनके वदाजों- पर भी हुआ, फलम्बरूप इस वराके राजे, रानियों, राजयुमार और अय व्यक्तित तथा मामन्त नरदार राजकर्मचारों और प्रजाजन सभीने जिनधर्मको उम्मुक्त प्रथ्य दिया। राजा लोग व्यक्तिगत रूपसे अधिकतर धिविविरुपालके उपामक थे किन्तु राज्यधर्म जैन और वैद्याय दोनो हो धर्म थे, और साथ ही विभिन्न धर्मोमें परस्पर सद्भाव और सहयोग था। १२९७ ई० के एक शिलालेखमें सेनापित इक्पफे साथो गुण्ड दण्डनायने लिखाया था कि 'जिसकी स्पासना श्रेष लोग शिवके रूपमें, बेदान्ती सह्योके, बौद बुदके,

बी भागे बढ़ राम । वरिक्ट दियोगते समस्ये ही वह सामनेपारे रिपूर्ण Munter: theb f. ft un er treit efeit und mit शबदुमान कृत्यामा विज्ञेषया दश्यमाय का प्रवर्ष विश्वमूत्र वित्रेष् केंग्रेस्प्यास कर्षाट करवाची की । १३८७ ई से बच्चे कार्य पुत्र पुत्रमें वर्षि कारेसचे प्रकृत वर्णाके कावत है। जुन्तर जारा वराणा। वर ब्द पुरम बाँदरून (दानी वर) की था १९५४ है है पररे क्य विशास सरीव ा वालुष्ट बॉच तपनारा चा । व्यापुरुषा भी सई गाउँ स्थित का और क्रम्म 'मामानेराज्यका' नातक क्षेत्र कानकी एवटी वी की र १ है था हा बाराया हो हर हिंदीक्षर मनाव्यार मधी प्रशासिका पा को बच्चा ३ लाख कामकी का की वर्ती वर्णामां की दमका जाई केंचर को जाकको राजनाकर बा, बान ही अमादको और granest efer mobiler unt mit at a tun f # greiffe बर्दोनी बाह्यम कानी -कृषियात भी परंत कैन वा, यह चाहरी विकास ब्रिया का बोर बेन्नाव लेखते जिए क्षेत्रमें साथ दिसा का । राज्यते अर्थन क्षेत्रतीयोरे करणते होत्र क्षत्र साल की वर्वत्रकार का असीवार वाणी इम तीर्वेदी सामाधी बानी में। १६९८ ई में यस प्राणके सामाय राज्यते वैक-मानक से जो काकि जन्म पारणीति परिवर्णने किन में १ १८ - ६ में इब मीनेश कर आरी समय बाजशाय कीने-है।परना महायानुकानिक हुना का विश्वी पुरुत्रुके अर्थन बाधी सीमांतर हर है। १४ ४ ई है नवा हांदारची मृत्युन्यामा मी वरी

वृष्ट (च्यानेसर्वे प्राणीयं हुई। ६व शायां में गुरुश्यों व्यारं स्वापीयं स्वीतः वीन-वर्गरंतीनो अर्थ पुण्तिना हिर्दे वेह ११ के शायान्यं स्वीतन्त्र अनुत्रीते व्यालिक्युतः अस्त्रात्विक्तास्थायं प्रस्ता देशा दिनों और स्वुत्ये वर्गनावृत्ताः और वीनशास्त्र विकेश वाद वैकारी वर्षे शेरद रितावेद राज्यां स्वीतं के और सुकारमाध्यम्बाधियं दशस्यों वेश स्वात शायान्यं कर्णा स्वालाम्बं वित्त एकारमाध्यम् स्वात्र वेशा २ ई० में देवशयके एक उपराजे कार्कल नरेश भैरवरायके पुत्र एवं उत्तराधिकारी वीरपाण्डघने कार्कलमें जो लोकविद्युत बाहुविलकी वत्ता मृति प्रतिष्टित करायी थो उसके समारोहमें महाराज देवराय स्त्रय सिम्मलित हुए थे। जैनाचार्य नेमिचन्द्रने राजसभामें अन्य विद्वानोंके साथ शास्त्रार्ध करके इस राजासे विजय-पत्र प्राप्त किया था । .इस राजाके जैन होनेमें प्राय कोई सन्देह नहीं है, अपने राज्यके प्रथम वर्ष (१४२० ई०) में ही इसने बेछगोछके गोमट्टस्वामीको पूजाके छिए एक गाँव दिया था और क्षपने जैन महाप्रधान वैचप दण्डनायकको, जो सेनापति इरुगपका बडा भाई था, उसका उत्तरदायित्व सींपा था । ये दोनों माई राजा हरिहर द्वितीयके समयसे ही राज्यके महत्त्वपूर्ण स्तम्म रहते आये थे। १४२२ ई० में महा-सेना शत इरुगपने भी बेलगोलके गोम्मटेशको पूजाके लिए गुरु श्रुतमनिके उपदेशसे एक गौव प्रदान किया था। १४४२ ई० में इहगप गोजा प्रान्त-का शासक बना दिया गया था। इस प्रकार इस नीर, विद्वान्, विविध विषय पट् क्यल प्रशासक एव प्रसिद्ध सेनानीने लगभग ६० वर्ष पर्यन्त राज्यकी सेवा की । राज्यका एक अन्य तत्कालीन सेवक महाप्रधान गीप चम्प या गोप महाप्रभू भी परम जैन था। १४०८ ई० के पूर्वसे ही वह राज्यका एक उच्च पदाधिकारी था। उसके पूर्वज भी राज्यमें उच्च पदी-पर रहे थे। गोपने स्वगुरुके उपदेशस कई मन्दिर वनवामे, दान दिये और अत समयमें घर-वार छोड त्यागी बनकर धर्मसाधन किया था। उसके अभिलेखोमें उसका चत्कट देश प्रेम भी स्पष्ट श्रन्तकता है। मसनहिल्लका कम्पन गौड एक अन्य तत्कालीन उल्लेखनीय जैन सामन्त या । १४२४ ई० में उसने स्यगुर पण्डितदेवको गोम्मट पूजाके लिए दान दिया था। इस राज्यकालके अन्य अनेक अभिलेख उस कालमें जैनधर्मकी प्रभावना, राज्यात्रम एवं प्रतिष्ठित पुरुष स्त्रियों तथा जनताकी जिनसमित और जैनगुरुशोंके लोकोपकारी कार्योंके उल्लेखोंसे मरे पढे हैं। जैन विदानोम

तलक आदि कई अन्य जैन वसिंदयोको भी भूमिदान दिये थे। १४३१-

नैपारिक नार्याद्र दिन दायबंद्रे सनुवारी सहित्रे और जीप्येष्ठ वाहें गाने का से हैं है दे देववंद्रेज गुजराती स्वीत्त्रावस्य पूर्वी कहें। रिप्र दें में रीविंद काई देव्या दिव्या द्वाराण कुरमा-बाव्येव्या में दिर्विद्य दानारी स्थान क वर्षायोगों दीववंद्रे सामन्त्रत्व वैद्या में त्राव्य वाहरी स्वाया या। १९पी वालेकों यो सहेस सिक्सिमें विव्या वाहरी स्वाया में विश्वा दिवा दिवाहों यह बाद लाहिंद्र स्व वाहरी वाहरी वाहरी स्वाया परिवाहक हैं भाग और बहुत क्यांत्रा मुंदर्ग स्वया प्राप्त प्रदेश

सरमाप्त कहनानेवे बोरव बावत थे। क्या बहाराज देवरान हमारी

महारानी पीफरेरी से रहर्स है । इस्त बना थी। ध्यून्त मार्थिक आधीर पीधाराप्त बन्द दूस थे। इस्त है में इस मार्थिक हो स्वर्धन वर्धाद (निमोन्दाल १३३५६) में सामित्याच्या आहेत क्रांतिक वर्षाये भी मीर तथा दिया था। वर्षा याणित्यास वर्षायेत्वर देशहास स्वर्ध केन्द्र क्ष्मा या। वर्षे राज्याचीय जिल्लामेनी दूस बीचनाया जैन्दर्स मेंद्र प्रमास था। वर्षे राज्याचीय जिल्लामें मार्थिक प्रमास क्ष्मा स्वर्धन मेंद्र प्रमा या। वर्षे राज्याचीय जिल्लामेनी दूस बीचनाया जैन्दर्स मेंद्र प्रमा या। वर्षे राज्याची स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन है। इस्त १ इस्त प्रमास वर्षे मेंद्र मेंद्र प्रमास प्रमास क्ष्मा स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन मेंद्र स्वर्धन स्वर्या स्वर्धन स्वर्धन स्वर्यन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स

वार सम्बन्ध पूर्ण मार क्यानिकारि वेरस्य दिक्रेय (१४%)
१८९६ में मान्य पूर्णोंने ब्यार वेडिया मृत्युपान विचा ।
१८९६ में नार्य हुन्य वेनात नार्य नाम वहांगी साम-दीनान-विद्यालयोगि नार्याम दिवस्तर है साम्यान विद्यालयोगि का विद्यालयोगि का मुत्राल सामार्थ मिल-विद्यालयोगि का मृत्युपान सामार्थ मार्थि मार्थि मार्थ मार्थ प्रमाण सामार्थ मार्थिय मार्थ मार्थिय सामार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थिय सामार्थ मार्थ मार्थ

तिलक आदि कई अन्य जैन वसदियोको भी भूमिदान दिये थे। १४३१-३२ ई० में देवशायके एक उपराजे कार्कल नरेश मैरवरायके पुत्र एव चत्तराधिकारी बीरपाण्डघने कार्कलमें जो लोकविश्रुत वाहुविलकी चत्त्र मृति प्रतिष्टित करायी थी उसके समारोहमें महाराज देवराय स्त्रय सम्मिलित हुए थे। जैनाचार्य नेमिचन्द्रने राजसभामें अन्य विद्वानोंके साय शास्त्रार्थ करके इस रानासे विजय-पत्र प्राप्त किया था। इस राजाके जैन होनेमें प्राय कोई सन्देह नहीं है, अपने राज्यके प्रयम वर्ष (१४२० ई०) में ही इसने बेस्मीलके गोमट्रस्वामीको प्जाके लिए एक गाँव दिया या और अपने जैन महाप्रधान वैश्वप दण्डनायकको, जो सेनापति इरुगपका वटा माई था, उसका उत्तरदायित्व सोंपा था । ये दोनों माई राजा हरिहर दिसीयके समयसे ही राज्यके महत्त्वपूर्ण स्तम्म रहते आये थे। १४२२ ई० में महा-सेना रित इहगपने भी वेलगोलके गोम्मटेशकी पूजाके लिए गुरु श्रुतमृनिके उपदेशसे एक गाँव प्रदान किया था । १४४२ ई० में इरुगप गोला प्रान्त-का शासक वना दिया गया था। इस प्रकार इस वीर, बिद्वान्, विदिघ विषय पट् कृशक प्रशासक एव प्रसिद्ध सेनानीने लामग ६० वर्ष पर्यन्त राज्यकी सेशा की । राज्यका एक अन्य तत्कालीन सेवक महाप्रधान गीप चमूप या गोप महाप्रमु भी परम जैन था। १४०८ ई० के पूर्वसे ही वह राज्यका एक उच्च पदाधिकारी था। उसके पूर्वज भी राज्यमें उच्च पदीं-पर रहे थे। गोपने स्वगुरुके उपदेशस कई मन्दिर वनवाये, दान दिये और अन्त समयमें घर-वार छोड त्यागी वनकर घर्मछाघन किया था। उसके अभिलेखोंमें उसका उत्कट देश प्रेम भी स्पष्ट झलकता है। मसनहत्त्विका कम्पन गौड एक अप्य तत्कालीन उल्लेखनीय जैन सामन्त था। १४२४ ई० में उसने स्त्रगुरु पण्डितदेवको गोम्मट पुजाके लिए दान दिया था। इस राज्यकालके अय अनेक अभिलेख उस कालमें जैनधर्मकी प्रभावना. राज्याश्रय एव प्रतिष्ठित पुरुष-स्त्रियों तथा जनताको जिनमसित और जैनगुरुओंके लोकोपकारी कार्यीक उल्लेखोंसे भरे पढे हैं। जैन विद्वानोंमें

प्रीसम्बद्धारिके क्यों आस्कर (१४४४ ई.) ब्रालक्ष्मान्तुरं रास्त्रे वर्षे अनुत्रके जिल्लुकि और ब्राल्येसाइके क्यों क्यावरीयि (१४६९ ई.) भैनिक्चरिकके वर्षाः निर्माण (१४४४ ई.) डास्त्रनुरेके

वर्गा दिनय बारामुक्ती विधासमीति आदि स्मेनगाँव हैं। एवं स्ति-रित्त मनस्मार्थन सम्बद्धारी सीम्बर्वीद्ध मीरिनाम्पूर्ण कीम्बर्ग में स्वाप्ति प्रतिस्थान मादि अपने बहुत्व निविद्य सिनाम्पूर्ण कीम्बर्ग सिन्दि स्ति प्रतिस्थान है वर्षी नामा नीपायान ग्रीह-नेपायके साधिन है। एतके सम्बर्ध काहोंने विधानपुर्व मात्राल एक सहान् स्वन्ती वर्षा कींग्लिक स्ति मा। मीरिनाम पृष्ठ मात्रालि वा स्वाप्ताल प्रतिस्थान सिन्दि साम्बर्ग के मात्रिक स्वाप्ताल मात्राला स्वाप्त कांग्लिक स्ति साम्बर्ग के मात्रिक साध्याल स्वाप्त है। १५४५ वै में देशन विधीन ही मुक्ता सामित्र सी सीन्दिक्ती साध्याल स्वाप्त है। १५४५ वै में देशन विधीन ही मुक्ता सामित्र सी साम्बर्ग सी कांग्लिक सी साम्बर्गनी

निक्या है। देशस

देशान दीगोलना जीवानी जिसेल बहुवर्गी व्यावस्था रहे मुं इंग्रेड क्षेत्र प्राथम । जिस हिम अध्यक्षित स्वादाण स्वयानि १ जिन्दु इस्त और सामाजीक यह कम अगर किए ग्रीन दिए एक स्वयन स्वादा । १८९९ दैं में वार्रपालक सिंह्य प्रस्था पूर्व वच्छा करीने दिया । कमने विका स्वयान के देशान के प्रस्था प्रश्न किए जिस किए मुग्न करानी क्षा सामाजी देशा और अपूर्व र यह अधिक स्वित्य हुँ । स्वाट कम्बे अम्मी स्वयानी एम पूर्व मोर्ग क्षा अध्यक्ष स्वयानि क्षा मुख्यमाजीले यो केन्द्र में माणी किया और अपूर्व र यह अधिक सिंह यूपाओं एक ग्रीन कमने में माणी किया और अपूर्व र यह अध्यक्ष स्वयानी क्षा केन्द्र प्रसाद सुष्ट कमाजी । एक्स्के कन्यनकों अस्तिमा प्रोक्ष स्वर प्रसाद सुष्ट कमाजी क्षा क्षा कन्यनकों अस्तिमा विकास स्वर्थ क्षा स्वर्ध क्षा स्वर्थ क्षा स्वर्थ क्षा स्वर्ध क्षा स्वर्ध क्षा स्वर्ध क्षा स्वर्थ क्षा स्वर्ध क्षा स्वर्थ क्षा स्वर्ध क्या स्वर्ध क्षा स्वर्य क्ष विस्तार या। इटलोवासी पूर्यटक निकालो कोण्टी और ईरानी राजदूत नन्दुरेजाक इसीके सासन-कालमें विजयनगर आये और उन्होंने राज्य एयं राजधानीने प्रताप, सी दर्य एवं वैभवयो पूरि-मूरि प्रशंसा की है।

देवरायके उपगन्त सगमवशकी अवनति होने छगी। उग्रे पुत्र एव उत्तराधिकारी मिल्लिकार्जुन इम्मब्दिवराय (१८४७-६७ ६०) के ममपमें १४५५ ई० से सालुव नर्रामह राज्यका प्रधानमन्त्री हो गया । इम्मिड-देवरायके स्परान्त विरूपाक्षराय (१४६७-७८ ई०) और फिर परियाराय (१४७९-८६ ई०) गजा हुए। ये शासक निर्वेक ये और वे बाहरसे बहमनियोंके आक्रमणों तथा भीतर गृहक्लह एव पर्यन्योंसे ग्रस्त रहे। अतएव १४८६ ई॰ में मन्त्री नर्राग्नह साल्बन जो अत्यन्त श्रविनशाली हो गया या और उस समय धन्द्रगिरिका प्राय स्वतन्त्र द्यासक भी था. अन्तिम नरेश पदियारायको गद्दोसे उतार दिया और स्वयं विजयनगरका राना वन वैठा । नरसिंह सालुव (१४८६-९२ ई०) ने योडेसे समयमें हो दक्षिणके सम्पूर्ण तिमल देशको फिर विजय करके राज्यको प्रतिप्राका चढार किया और अपने सुशासनसे साम्राज्यकी जनताके हृदयपर ऐसी छाप वैठा दी कि युरोपवासियोंने बहुचा विजयनगर राज्यका 'नरसिहका राज्य' बहकर उल्लेख किया। मुसलमानोंके साथ भी उसके निरन्तर युद्ध चलते रहे। इस कालमें बहमनी राज्यका मन्त्री महमूदगर्वा अत्यन्त योग्य था किन्तु १४८२ ई० में पड्यन्त्र-द्वारा उसका वस हुआ और उसके मरनेके घोडे वर्ष बाद ही धहमनी राज्य पाँच टुकड़ों संविभक्त हो गया । इनमें से बीआपुरके सुलतान ही विजयनगर राज्यके निकट पटोसी और आगेसे उमके प्रधान शत्रु हुए। शत्रु राज्यको इस क्रान्तिके कारण नरसिंहको अपनी स्थिति मुदुढ़ करने और शक्ति बढ़ानेका अच्छा अवसर मिल गया । उसके पुत्र और उत्तराधिकारी इम्मिट नरसिंह (१४९२--१५०५ ई०) ने भी प्राय शाति-पृत्रीक राज्य किया, किन्तु उसके समयमें अरसनायक नामक एक मुलुव सामन्त शक्तिशाली हो उटा और मान्यत्र केरणारे स्वयं प्रथा । १ । हैं तो स्वयंत्र कर्रार्ट्सी कार्यत्र उपने रिकारकार एवं पूर्व सर्थात् कार्यत् वेद्यवद को कार्य सं हिता को तत्र राज्या कर हैंस

dayor of their days bed here Hade fig bet an en it democrate an one divise the Land & gar to toke before in the first & it about the answer density after 6,500 the state of January en beste nation and a since some \$ 40 st Appearance of the same of the party below the party ent and of morrest on artist till # the prime or prop. and the prime front forth बार्ग के वा वा है है का करत करता है जा कर्य water at a second and demonstrate to the manufacture expensed bearies 1615 served it. It finding feet er i f & et beges ummeretfafte gefet un abriff death subject the and the substitute of a standard enter that is a first a the thinkes sectored. ment to an easing the seaso tests म्पान र वरम इस मानवी विक तर . व नवी प्रशासनामा efreien fie geraf empirer einem utet ? "Et and the bank and grant garant fet. Jame if etifet का है शामके ब्राप्तक शाम्य वेत्रक का । शामके तथ प्रथम बावना आरके mus tru grantell ererarb if an Mararite & refet Cr manufag nereite gan anfen galen, je ap mitt age fann and अ की को विकासित विकास करणुक्त परित्र एवं क्षेत्रपरि बांक्षे बर्ल बन्ताव (१४८५ है) अवया अवराधि वर्ण और

सगीतपुर नरेश सगमके आश्रित कोटीक्वर (१५०० ई०), धर्मशर्मा-म्युदय-टीकाके कर्त्ता यश कीर्त्ति, नरपिंगलीके कर्त्ता धुभचन्द्र आदि इस कालके अन्य जैन विद्वान् और ग्रन्थकार थे।

१५०५ ई० में क्षपने स्वामीकी हत्या करके अरसनायक राजा हुआ था कित् उसके इस कृत्यसे राज्यमे एक व्यापक विद्रोह भडक उठा और एक वर्षके भीतर ही वीर नरसिंह भुजवल (१५०६-९ ई०) राजा हुआ। तदुपरान्त कृष्ण देवराय (१५०९-३० ई०) विजयनगरके सिहासनपर आरूढ़ हुआ। विजयनगरके नरेशोंमें यह सर्वाधिक प्रसिद्ध, प्रतापी, शक्ति-शाली और महान् था। इसके राज्यकालमें विजयनगर साम्राज्य अपने चरमोत्कर्षको प्राप्त हुत्रा। राज्यामिषेकके उपरान्त लगमग डेढ वर्ष तक राजाने राजघ।नोमें हो रहकर अपनी स्थिति सुदृढ की, अपने कर्त्तव्यों, उत्तरदायित्व और समस्याओंका सूक्ष्म अव्ययन किया तथा राज्यको अभिवृद्धिको योजनाएँ बनायों। तदनन्तर निश्चित कार्य-क्रमके अनुसार उसने कौशालसे अपनी विजय-यात्रा प्रारम्म को और योडे हो समयमें नेल्लोर जिलेके सुदृढ़ चदयगिरि दुर्गको हस्तगत कर लिया और फिन अय अनेक दुर्ग विजय किये। उसका सर्द-प्रसिद्ध युद्ध १५२० ई० का रायपूरका युद्ध या जिसमें उसने बीजापुरके सुलतान इस्माइल बादिलशाहके कार बढ़ी शानदार बिजय प्राप्त की। उसने वह दुर्ग तो छीना ही, स्वय वीजापुरपर भी अधिकार कर लिया। इस युद्धमें उसके सोलह हजार सैनिक काम आये। उसने बहमनियोंको प्राचीन राजधानी कुल्बर्गाको भी भूमिसात् कर दिया । उसके सैनिकोंने बीजापुरको ल्टा बोर क्षत विक्षत किया । किन्तु सम्राट् कृष्णराय एक उदार चेता दारवीर नरेश या। उसने अपनी विजयका भी मानवता एय दयाके साय उपयोग किया। उसने शत्रुकी प्रजाको नहीं सताया, निहत्त्यो और आत्म समर्पण करनेवाले शत्रु सैनिकोको भी अभय दिया, मुसलमानो-जैसी ऋग्ता और वर्वरताका उसने किसी अशमें भो प्रदर्शन नहीं किया। पुत्रगाली इतिहास-

बार कृतिहते कुण्योगके एक यह विवय और अवस्थानक असि देशा बजीय पर्यत्र विद्या है

र २२ दे व पुत्रवर्णा प्राप्तिको पादवने इच शामधी समित मना बीर वर्ष पत्री जूर जूर प्रशंका है। अपने किया है विनन दे निर्मा को गारतात्राकः अवत्रावाधिनात्रः आदि प्रशासको केवल इवीचि गरी है कि यह जारतक सथा नरेकाने अधिक श्रावितानों और वैदर-वार्य है बनवी नेश अपूर्व है अवदर राज्य शिलार अपूर्ण अन्य वर्गन वर्गादक (रहाक है। वर्गा वरेस अने जाना अविगरि मानों है और बढ़ पर नवने अधिक बक्दानी है वरम् एक कारण औ है कि रहे रासे बाप-इ सूर-बार, बसारकार और बयपूब-बाला है एक बहान् बारा है बनी रूप प्रवर्षे हैं . (ien mile बेरेचड प्रश्निकारोने की दब गुरहे र्पारपत्त बराह्या वं) है । एक बाब प्रीत्रावनारके क्लीले-नेपन पार्य-को वर्तनक एवं अवर्तनक भी वचनाविष्ठ थी। वचना नारित्रक मुदाप बैप्पर पश्ची बोट होते हुए की बा बर शासीय पधींचा पत्सी करने बाहर करना का । वाँतज क्यूओं और रिश्वित प्रदेशीकी अनगरे पान बसापून करार अवहार जोर स्वर्गीत बुक्त पराक्रमने क्रमें अंगूर निर्म रणामा बोर बारणा जरशायी बनावर दिय बना दिया था र निरेशी राजपुत्री त्र १६१०)के । इसका-सम्बद्धा वृत्तं शहरा प्रमाण्याच्ये स्टब्स्टिन् प्रमुख बरण दिनक बायन और बहुशस्थार बक्के गाँवर वर्ष बन्दह बीवनके प्रदेशायक थे । अहिल्यानीय विद्यार्थीके आहर वर्षमाणि मीर प्रमानात्मानमे वह बहितीय वह । देशकर्ते नुभवें और शासनींको हर दालगारने जगार थन बालने दिशा था । इस प्रचार इतिहासके गुर्वाकी कनुरस्ता करवेरावा सह ब्रह्मा व्हिन भारतके वरेगीयै वर्षयाम् व ।

अनुस्तान करणसम्बद्ध बाहार वाक्य सारवंद वर्षणा वास्तुर्य सर्व सैनावन मी इच मरेकडी बाहरता वर्ष वातिकताके हात्तवे वैश्वि नहीं रह कत्रज मा बतारे वृद्धि ग्रामके वर्ष वर्ष क्यान में १ १९६६ है में कम्मे विस्ताहर विकेश स्थित सैनोतकताल-नहरिकी में वाल में किये थे। १५१९ ई० में फिर उसी मन्दिरको और दान दिया था। १५२८ ई० में वेलारी जिलेको एक अन्य वसदिको प्रभूत दान दिया था और शिलालेख अंकित कराया था, उसने मूडिबिद्रीकी गृह-वसदिको मी स्थायो वृत्ति दो धी। १५३० ई० के एक जैन-शिला-लेखमें स्याद्वादमत और जिनेन्द्रके साथ-साथ आदि वराह और शम्मुको नमस्कार करना इस नरेश-द्वारा राज्यकी परम्परा नीतिके अनुसरणका परिचायक है। १५०९ ई० में उसके सामन्त चगाल्व नरेशके राजमन्त्रो चेन्न-योम्मरसने बेलगोलपर एक सुन्दर मण्डप बनवाया था। इसो कारुमें चगाल्य-नरेशका सुप्रसिद्ध सेनापति मंगरस था। वह बडा दोर और पराक्रमो यातया अपने पिता महाप्रमु विजय-पालको हो माँति परम जैन था, साथ ही विद्वान् और कवि मी था। चमने सम्राद्के कई युद्धोमें घोरता दिखायी थी, कई जिनमिदर बीर सरोवर निर्माण कराये थे सथा जयनृपकाव्य, प्रमजन-चरित, नेमिजिनेशमगति, सम्यवस्त्रकौमुदी (१५०९ ई०), सूपशास्त्र आदि प्रयोको कन्नडोमें रचना करके कन्नड साहित्यमें अपना नाम अमर किया था। कृष्णदेवके सामन्त संगोतपुरके सालुव-नरेश भी वहे जिनभक्त थे, इसी प्रकार काकलके भैररस-नरेश थे। एक अन्य महिला सामन्त एव प्रान्तीय शासक काललदेवी (१५३० ई०) भी वटी जिनममत था। १५१७ ई० में चामराज नगरके शासक वीरय्य नायकने वहाँ एक जिनमन्दिर बनवाकर दान दिया था। गैरुसप्पेके ओडेयर शासक भी परम जैन घे, १५२३ ई० में इन्होंने कई मन्दिर बनवाये और दान दिये। जैनगुरु वादी विद्यानाद इस कालमें सर्वे प्रसिद्ध थे। महाराज कृष्णदेवकी राजसमामें विभिन्न दर्शनो एव मसोक विद्वानोंके साथ कई बार शास्त्रार्थ करके वे सम्रार-प्रसिद्ध हो गये थे। महाराज स्वय जनका वटा आदर करते थे। अनेक राज-समाओमें इस गुरुने बाद विजय की थी। इसं राज्यकालचे प्रमिद्ध कन्नडो जैन ग्राथकारोंमें भारत, शारदाविलास,

र्कमस्तरपात और वैद्यानापण्ये कहा बाला ज्यानुपातिके का योग्य सर्ववर्ष कहा वादरत बाहि क्लोक्सेट हैं निर्देश राज्य मान्ते बाहित्व किया । इन विद्यानायी बहान स्थान क्ष्यान क्ष्यान मान्त्रे नारहार्यात वान्त्रीय वेल्ल्लीकी वर्षेत्रीची क्ली हों। हर्व्यान्त्री वृत्युके कारण बन्धा आहे व्यानुपात (१६१०-४९

प्रया है के दानों की। प्राप्त प्रमुख्य वृद्ध की प्राप्त प्रमुख्य कुरों के प्राप्त कर विकास कर कि प्रमुख्य कुरों के प्राप्त कर कि प्रमुख्य कुरों के प्रमुख्य कि प्रमुख्य के प्रमुख्य कि प्रमुख्य के प्रमुख्य कि प्रमुख्य कि प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य कि प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य कि प्रमुख्य कि प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य कि प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य कि प्रमुख्य के प्रमुख्य कि प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य कि प्रमुख्य के प्रमुख्य कि प्रमुख्य के प्

राज्याको हटप जायेंगे। १५६४ ई० में यह समझौता पनका हुआ। पेवल बरारका सुलतान इसमें सम्मिलित नहीं हुआ। उसी वर्षके बन्तमें बहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा और बीदरके मुलतान अपनी सेनाओं के साथ विजयनगरको और चल पहे, और जनवरो १५६५ ई० में कृष्णा नदीके उत्तरमें बीजापुरकी हदमें हो स्थित तालिकोटा नगरमे से सब एकत्रित हुए । विजयनगरवाले आत्म-विस्वस्त और अमावघान ये । वे समझते ये कि मसलमान उनका कभी कुछ न विगाड सके. अब भी कुछ न कर मकेंगे। राजघानी और राज्यमें सब कार्य पूर्ववत् शान्तिसे चल रहे थे। विजयनगरकी सैन्य शांचत भी सर्वोपिर थी। जहाँ मसल-मानींके लिए यद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था, हिन्दू इसे खेल समझ रहे थे। किन्तु विश्वासघात, जासुसी और पड्यात्र मोसर ही-मीतर उनकी शक्तिको सीवला कर रहे थे। रामराजा विशाल सेनाके साथ रणक्षेत्रमें उतरा. कृष्णाके दक्षिण और तालिकोटासे २५-३० मीलकी दूरीपर सग्राम छिटा। रामराजा वीरताके साथ लड़ा, एक बार तो मुसलमानोंके पैर उसड गये किन्तु वे सैमले और प्राण हथेलीपर लेकर पिल पडे। रामराजा पक्डा गया । बहमदनगरके सुलतानने अपने हायसे तुरन्त उसका वध कर दिया। विजयनगरकी सेनाके पैर उखड गये। मुसलमानोकी दन आयी और वे राजधानीके ऊपर दौह चले। विजयनगरके एक लाख मैनिक खेत रहे और राजधानी विजयनगरको मुसलमानोंने इस वूगी तरह लूटा और विध्वस किया कि जिसका अन्य उदाहरण नहीं है। देव-प्रतिमाओकी पवित्रता. शिल्पकृतियोंकी कलात्मकता, स्त्रियोंके सतीत्व, बच्चोकी मासूमियत, बुद्धोंकी असहायता. ग्रन्थ-मण्डारोंके महत्त्व, किसीकी भी ग्ला न हुई। उनकी धर्मा धवर्वरता, नृशंसता और अरूरता पैद्याचिक थी। प्रत्येक मुसलमान सिपाही इस खुली लूटसे मालदार होकर छोटा। पाँच महीने तक विजय-नगरकी यह छूट-मार जारी रही । अलकापुरी-सदृश इस नगरीके धन-जन-भवन और प्रत्येक बस्तुका सर्वया नाश करके ही दम छेनेपर आततायी

पुरे हुए के अंबरेड विद्यान् निकेश्वे प्राप्ताने "स्वित्त वे वानूब रिजानों सेने ताल एप्ये अनुष्ट स्वार्ट्ड एक ब्रह्माईक लग्नेवानों आसीत्वत सीर स्वयंत्र (व्यावसा मुक्ता प्राप्तान्य नहीं निकार।" व्यावसार अस्त्राम्य सुन्ते ही प्रमासावत आहे निकार राज्य वर्ग-रिवार ना राज्यानीको बोर्डिंग मान्य व्यावसा की एक पीती नेतृत्वीया से ब्राइंग्ड पान्य को मो। १९० ही में लिएका व्यावसा कर में हैं। विद्यान्त पान्य को मो। १९० ही में लिएका व्यावसा कर में

रेचा वा ओपवरास ववल (१५७४-१५८५ ई.) राज्य हुआ। बरलंडर रचाना बारे पेनट ववल (१५८५-१५१७ ई०) वह पीचे वंडास वर्षे-त्रतिक गांता वा) क्लामिरियों क्यम क्यां नाजवानी मनावां चास

स्थान बंदुष्कि श शे कृत या किन्नु यह पुष्पारंभी सीर्य सेरें हिरोप सरका हैं या। वाएन वर्ष वार्डिमें एक्स दिवा वर्गे स्थापने तैरिकुन्ताय और सेष्य-सीत्राची स्थाप सेस्त्रम्य किया। वर्गे स्थापने वैद्याम क्रियोग (१६९०-१६५६ हैं) एक हाता वर्गे पर स्थापन १६६५ हैं है वे समय बेर्गेय स्थापनेशे दुव स्थाप रिवास वर्ग सेस्त्रम्य सामा अपने प्रदेश हिंदि १९६५-१६८५ हैं) या, वर्ग्य सेरोपनीर गर्मा स्थापन स्थापन हैं सार केसीर्थ सामा प्रदेश हैं। सिक्स्प्यरेश स्थापनेश मा कर्सि हैं होनेश्वीर एक सुद्ध स्थापन पने हैं। ऐसा रिवास स्थापन स्थापन स्थापन सुद्ध स्थापन स्थापन पने हैं। ऐसा रिवास स्थापन स्थापन स्थापन सुद्ध स्थापन स्थापन

हान्तरावे करामा वाक्तिया तुव ग्रंतमाध १५ परेडा रावे बातावांचे वरित्व गण्डनात्त्रणा माः धारते वर्षेन्द्रणी पत्यपाता ताय काम मुख्यान गुळ्याती वाच यानुवाके हुम्पेडीत डांक्सेन काम बाँद कामी केन्द्रचेतारी लागेची और थाः इत राव्ये वर्षे जनसीय क्षत्रियान वर्षे की गानेक उस्लेख मिलते हैं। १५६० ६० में गेरधपेके जैन राजा साह्य इम्महिद्दरायके बाध्ययमें नमये राजसेठ तथा आय धनी व्यापारियोनि उस नगरमें कई सुन्दर जिनालयोका निर्माण कराया या और आप धार्मिक कार्य किये थे। इस कालमें धवणवेलगोल तीर्थका प्रबन्ध भी गेर्यपेके जैनमेठोंके ही हायमें रहा प्रतीत होता है, बीर उमना प्रारम्भ उपरोक्त सालवराज-द्वारा १५३९ ई० के लगभग गोम्मटेस्वरका महामन्तकाभिये महीस्तव मनाये जानेसे हुआ प्रतीत हीता है। इस कालमें मुर्शबद्री औ श्रुगेरीको जैन-बसदियोको भी दान दिये जानेके कुछ उल्लेख मिलते हैं इमी युगमें अने राजाओं से सम्मानित महान् वाद-विजेना, बादो-विद्या नन्दिने यत्र-तम जैन-शासनका उत्वर्ष किया। श्रोशंगपट्टनमें ईसा पादिग्योंको भी मास्त्रार्थमें इन्होंने पराजित विया था। ये प्यकाल प्रमिद्ध बादी विशालकीर्तिके शिष्य थे। काव्यसार नामक ग्राथ इन्हींव कृति वतायी जाती है। १५५७ ई० में रस्नाकरमन्द्रिने मिलाक्यातक नाम का दस हजार रहोक प्रमाण ग्राय ९ मासमें रचकर तैयार किया स भरतेश्वरचरित और पदजाति इनकी अप रचनाएँ हैं। १५५९ ई० मेमप्रने ज्ञानभास्करचरित्र और वाहुबलिने १५६० ई० में नागकुमाः चरित्रकी रचना की थी। इस कालमें भी जैनोने अपनी सहिष्णुता श्री सहन गोलताक कारण धैवो और वैष्णवींके माथ सद्माव चनाये रखा विजयनगर-साम्राज्य

चाहित्व, कला बादिकी और त्यान देनका राजाओं और उनके माम अको कोई अवसाय न या । जत उस कालके जैनयमक इतिहासमें कतियय उन छोटे मोटे सामन्तों या उपराजाओं और मेठ-व्यापारी आदि प्रमाजनावे ही कविषय यामिक कार्योका उन्नेय मिनता है। इस योगके शिलारिय एव साहित्यिक रचनाएँ भी विरल ही है। महाराज अच्युतरायके समयमें १५३१ ई० में मदिगिरिको जैन वसदिका और १५३३-२४ ई० में तिमल देशकी कुछ अप बमदिवाको दान दिवे गये थे। मदाशिवशायके शामना-रम्मम् १५४२-४३ ६० में, सुलुव देशकी बुछ यसदियोंका दान दिये उनेपाल विकरणके शरह ही है कि साहित्य और कवारों क्षेत्रवे रण राणके चैन पुक्र विवर नहीं कर गांधे ।

रंपपंप में के निवादकारी मुंबई कामस्त्रण राजवानीर कर-वाम गामान्य में विकर्णमा हो ब्या । विजयस्य प्राथमान्य मुक्तानीर्थे रिताद कर नहां स्थापना वर्णमा में हो की परशाप क्रिक्ट हमा किया। रिताद कर नहां स्थापना वर्णमा में हो के परशाप क्रिक्ट हमा किया। रिताद कर में स्थापना वर्णमां में प्राथमान्य स्थापना किया में स्थापना में प्राथमान्य स्थापना निवादकार निवादकार राजवे ताथ कोए कामने प्राथमान्य कामने पूर्व । करानी सुध्य कामन् स्थापना कामने के प्राथमान्य कामने कर परस्पारी मुख्य कामन् स्थापना प्राथमान्य के प्राथमान्य कामन्य कर परस्पारी मुख्य कामन्य स्थापना प्राथमान्य क्षापना करान करान कामने क्षापना मान्य के स्थापना प्राप्त कामने केरी स्थापना स्थापना कामने प्राप्त कामने कामने करियो कामने स्थापना स्

भगवान् आदीरवर, शान्तिनाथ और चन्द्रनाथकी प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित करायो थीं । विजयनगर-नरेश वेंकटराय प्रथम (१५८६-१६१७ ई०) की राजसभामें जैनगुरु भट्टाकलकने सारशय और अलकार-त्रयका व्याख्यान करके कीर्ति समाजित की थी। कर्णाटक शब्दानुशासन नामक प्रसिद यग्नहो व्याकरण भी इन्हींकी कृति है। १५८६ ई० में कार्कल नरेश इम्मिंड भैरवेन्द्र बोहेयरने कार्कलमें सुप्रसिद्ध चतुर्मुख वसदिक निर्माण कराया था और १५९८ ई० में उसी तथा अन्य बसदियोंको दार दिये थे। इसी वर्षका एक अन्य शिलालेख जिन शासनकी प्रशसा औ वीतरागदेवके साथ-साय शम्भुको नमस्कार करनेसे तत्कालीन जैनोंकं सिंहण्ताका परिचायक है। १६०४ ई० में पाण्डच-नरेशके भाई तिम्मरा जने वेणुरमें वेलगोलके मठाघीषा चारकीर्ति पण्डितदेशके उपदेशसे गीम्मटे बाहुबलिकी उत्तुग विशालकाय प्रतिमा निर्मित करायी थी। यह मूर् दक्षिणको सुप्रसिद्ध विशालकाय गोम्मट मूर्तियोंमें तीसरी है। मूर्ति-प्रतिष्ठ पक तिम्मराज गंगकालीन प्रसिद्ध चामुण्डरायका वंशज या। १६१० ई में महाराज वेंकटरायके प्रान्तीय शासक एव राज प्रतिनिधि वोस्मन हेग्हे मेलिगेमें अनन्त-जिनास्यकी स्थापना की थी। १६१२ ई० में श्रवण वेलगोलके गोम्मटेशका महामस्तकाभिषेक हुआ था। १६३८ ई० के प रेखसे ज्ञात होता है कि इस कालमें प्रसिद्ध जैन-केन्द्रोंमें भी लिगा। कादि अजैन मतावलम्बी जैनमन्दिरोंमें अपनी मूर्तियाँ या चिह्न आ स्यापित करके चनपर अधिकार कर छेनेका प्रयत्न यदा-कदा करते रा थे. किन्तु उनके मुखिया और उत्तरदायी नेता ऐसी प्रवृत्तियोंका अनुमो नहीं करते थे, यहाँतक कि उन्होंने सर्वसम्मतिसे यह विज्ञप्ति प्रचारित । दा यो कि 'जो कोई जिनवर्मका विरोघ या अनादर करेगा वह महानह (वीरशैवधर्मके सबसे वहे अध्यक्ष) के चरणोंसे बहिष्कृत कर दि . जायेगा, शिव और जंगमका ब्रोही माना जायेगा और विभूति, रुद्र एया काशी एवं रामेदधर तीर्थोंके लिंगके प्रति अमस्त समझा जायेगा निरामित् मा निर्मय त्यावधारी वीर्ति शामोवाके कामकर निर्मा परा या तमिति तमानेक सीर की मात्रवाहिति तिरंड और सम्मानंता गोपायक मो है ही। १९४६ में नै कामको बीरानेक्या मानामानं निरेष कराव हात्र था। निरामय शामी नेतृति को सामानंत्र निर्माण करावन्त्र में गोमित्र कराव हात्र था। मित्रवास शामी नेतृति को स्वत्य करावन्त्र में गोमित्र कराव को स्वत्य केत्र था। मोक्स कुमर को नामानंत्र में परिवार को सामानित महार्थ मात्रवाह मात्रवाह मात्रवाह मात्रवाह स्वत्य करावृत्य मात्रवाह स्वत्य करावृत्य मात्रवाह मात्रवाह मात्रवाह मात्रवाह स्वत्य करावृत्य मात्रवाह स्वत्य स्

कुपर रियोप्परचा किनीय हवा था । में बेलान तम भी *मो सासीय*

में भीर जर्मक राजाबंधि सम्माणित इक से ।

रम बानके केर स्थिएको और वाक्षितकारीमें इनकेशकी है-विवयपुर्वारपरिको कर्ता वृतकीर्त (१५७५ ई.) कारतुमर्गरीने कर्ता थेन्ड (१५७८ ई.) जुंबारवर्तके कर्ता वयरब (१९९९ ई.) मी क्यारबंकने किया में और जो सरिक्ष मन्त्रियानकी मानि ही देने महान्यद्वतिक में कि करकापुरके पञ्चापनीमात्रकों रचे में बाने क्यरोक्त क्रमके आएकों। अंबल क्यमें इच्छी दिय-वर्तवी और क्येंडरी मी स्पृति की है। प्रशिव स्थापराय यार्थायक-सम्भानुकारणके नहीं यूर्ट-कर्मक स्वातक्यारिकारक कृते वर्ष विकारिकांकि एकतिया स्वापानिक की विनिय-नियमपु वर्षक्रम सामानीतास्त्रप्त सामा सीलो नर्ता नेपीयन (१६ ई.) राजकार्यास्थरके कर्ता इंबराय (१६ ई.) क्योरक बंधीनके क्यां श्रीकारकी (१६ ई.) वानक्यकीगुरीके वर्धा चनवर्षी (१६ र्), वस्तुवारपतिके वर्धा प्रस्ति (१६ फे) क्ल्यूपारपांतक क्ली प्रमानूनि (१६ ६ है)-मुज्यनियासिक कर्ता चंत्रसम् (१५१४ ई.) रीतृरवरेस पानराजके बारेबरर इनकरकपुरूबर शासक सराबारको कर्ता प्राप्त पनित (१९२७ ई०) पुरस्तानारेक्षे कर्ता तेलक (१६५ ई.) शायार ।

बीरर्वेच-वादित्य और वीव-वैकात समितरोंगा थी इस कामने सिमीन हुना र

लागीय प्रविद्यान दर्ज परि

विजयनगरके इतिहासके प्रधान आधार इटलीवासी पर्यटक निकोलो कोण्टी (१४२० ई०), हिरातके सुलतान धाहरुखके विद्वान् राबदूत लव्दुर्रजाक (१४४३ ई०), पूर्तगालो लेखक डोमिगो पाइध (१५२२ ई०) और मूनिज (१५३५ ई०) आदि कई विदेशी यात्रियो-दारा लिखे गये आँखो देखे वर्णन, फरिस्ता आदि मध्यकालीन मुसलमान इतिहासकारा-हारा दिये गये विवरण, तत्कालीन धिलालेख जिनमें जैन विलालेखोंकी हो अधिकता है, तत्कालीन साहित्य प्रन्थ—इनमें भी कद्मधी भाषाकी जैन धामिक एव लीकिक उचनाओंको ही बहुलता है, स्वय राजधानी विजयनगर और उसके आस-पास दूर-दूर तक फैले हुए मग्ना- वशेष, मुसलमानोक प्रकोपसे बच रहनेवाले कन्नड, सुलुव, तिमल प्रदेशोंक जैन, धव, वैल्यव तीय एवं मन्दिर आदि और इनके आधारपर वर्तमान धातीके प्रारम्भमें लिखे गये रावर्ट निवेलकी पुस्तक तथा एव० कृष्णा धाम्त्रोक लेख हैं। तदुपरान्त मो अध्ययन और अनुसन्धान चलता रहा है और अनेक विद्वानोने इस सम्बन्धमें कार्य किया है।

उपरोक्त साधनोंसे पता चलता है कि राजधानी विद्यानगरी (विजयनगर) अपने समयके सम्पूण विदवमें अदितीय नगरी थी। ६० मीलके
घेरेंमें फैली हुई, एकके भीतर एक मात परकोटोंसे घिरो हुई, अनेक
सरोवरो, वापी, कूप, तड़ाग एवं कलप्रणालियो, उपवनों, उद्यानों, उत्त्त्ता
कलापूर्ण जैन, क्षेत्र, वैष्णव-देवालयों, अत्यन्त दर्धनीय राजप्रासादो (एक
मवन निरे हाथी दाँतका ही बना हुआ था), सामन्त सरदारो एव घनी
नागरिकोंक सुन्दर भवनों, पचासो हाट-वाजारों और वीथियो आदिसे
समलंकृत एक लाख घरो और लगभग दस लाखको जन-सल्यावालो इस
अलकापुरी-सद्वा महानगरीमें मिंध मुक्ता और सोने-चाँदोंसे छेकर छोटीसे
छोटी प्रत्येक वस्तुका खुला ध्यापार होता था। लोग ईमानदार थे, चोरीडाकेका भय नहीं था, प्रजा प्रसन्न, सम्पन्न, सुखी और घोँकोन थी।
घर्म, कला और साहित्यमें विद्यानगरी अपने नामको चरितार्थ करती

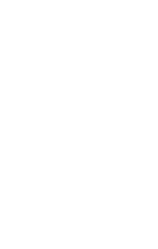
नी । बनार् और वसके परवारती यान निराजी वी राज्योग स्वर्क स्वत वर्ण भूकाचे वृत्रे था । वैश्वकृता रोति-रिवास शाचार-विचार नुषार एवं तुर्वस्त्रय में । तागदके वास वसाविकों अस्माविद्यो मीर र्रावान हावियोची क्षमान वन कांच्र वैना वर्गन वैनार रहती थी। बसरा बाग्राच्य सरवन हो-तो प्रान्तीये विकला वा विकार बन्नाद्धी बीरहे इंदर्फ गीर शासन्त्रमण सासन परते है। बालाञ्च-सरमें नदी समारी की जान तुम्रत पंचाने वो और वक्त-वन मानीवे नेत्री-विवेधी न्यानार अस्ति वदान्त्राः था । विशेष प्रधारके वयोग-वाने का<u>र</u>्य स्त्रे हैं। प्रवासी समुद्रिके सारम राज्य-भए जानिक होते हुए जो बरक्ताके तस्य ही नार्य है। उपयोग्यान बायुनिक युवको बनेवा कहा वा निन्तु बान ही राज्यमे अवालक सपराचीको विरक्ता थी। जानती जनहींका निर्देश शांत इन्यानुद्वके भी किया काटा था । शवरमें वर्डनियों और मैनवायोंकी प्रमुख्य को । १६वीं क्रशानीचे एक न्याननधीये पद्मीवा करियन विश्व वन्तिरोते प्रश्नकि वकाले सांख्यार वीर वक्ष्यल क्रारिका की ग्री प्रभार क्य पना पा । निजन्तवर्षः सम्बद्धाने संस्कृतः सम्बद्धः सीर सैन्द्र र्शनी हो। मानानोने बाह्यसम्बंध शेरकारून दिया। वैक-मान्यकार बानच बीर प्रचना बाई बावन कुल्मा और इरिक्टर ईशीनके सची गई में। नप्रसिद्ध बालुरने रीकेन् करिलीको बहुतः शेलबद्धन दिया । इत्यादेन रूपर्य

शासीय प्रित्य एक ग्री

एवं बच्छा नहि और केवन वा तथा विद्यानीका सम्बद्ध करवा था।

रामस्वामी मन्दिर (१५१३ ई॰) अपने प्रस्तराकर्नोके लिए प्रसिद्ध है। सत्कालीन विदेशी यात्रियोने विजयनगरके शिल्पियों, रूपकारो, चित्र-कारों तथा अन्य कलाकारोकी भूरि-भूरि प्रश्नसा की है। इस सबके अतिरिक्त ये सम्राट् स्वदेशमक्त, सर्वधर्म सहिष्णु, उदाराशय और प्रजा-वत्सल भी थ, अत प्रजाके सभी वर्गोने साम्राज्यके बहुमुखी उत्कर्षमें योग दिया।

मध्यकालोन भारतीय राजनीतिकी यह अद्वितीय सृष्टि विजयनगर और उनका साम्राज्य तालिकोटाके युद्धमें मस्मसात् हो गये। लगभग सौ-सवासौ वर्ष तक चन्द्रगिरिके महाराजाओंने उसकी स्मृतिको संजीर बनाये रवा। १७वीं शतीके अन्तमें वह स्मृति भी निर्जीव हो गयी। किन्त निर्जीव होनेमे पूर्व हो वह मराठा बीर शिवाजीको राष्ट्रोद्धारकी प्रेरण देनेमें सफल हो चुको थी। महाराष्ट्रमें जब शिवाजी दक्षिण और उत्तरह मसलमान नरेशोके विरुद्ध विद्रोह एवं सचय करके स्वदेशी स्वधर्मी राज्यव स्यापनाका उपक्रम कर रहे थे तो चन्द्रगिरिका छोटा-सा अवशिष्ट विजय मगर-साम्राज्य भी विखरकर तिमल, तैलेगु और दक्षिणी कश्च प्रान्त अनेक छोटे-छोटे स्वतन्त्र राज्योमे परिणत हा गया था। इस काल राजनैतिक पतनके फलस्वरूप नैतिक पतन भी हुआ जो इन सामन सरदारोके व्यवहारमें चरितार्थ हुआ। इन छोटे-छोटे राजाओंमें अधिव तर बीर शैव, सद्शैव या श्रीवैष्णव ये और तत्कालीन शैव वैष्ण ग्रायोंसे ही पता बलता है कि इन्होने जैनधर्म और उसके अनुपायियोग भमानिषक अत्याचार किये, बारुकुरु, मारुढिंगे, कल्याण आदि नगरो एक एक दिनमें सैकड़ा जैन-मन्दिरों, मूर्तियो, ग्रन्य-मण्डारो, विद्यालयं दानशालाओ आदिमे युक्त जैन-धमदियोका ध्यस कर दिया गया, जैनो बरवस धर्मत्याग कराया गया, उनका वध कर दिया गया, बास्कृ जैसे अनेक सुन्दर जैन-केन्द्र उजाड हो गये। समर्थ आश्रयदाता केन्द्र राज्य-राक्तिका अभाव ही गया था और जैन गुरुओंमें युगान्तरका



राजवंशोंमें प्रमुख ये-

- (१) सगीतपुरके सालुव या कटम्बराजे—भट्टकल इनको राजधानी थो, मोतियोंके व्यापारके कारण यह मोतीभट्टकल भी कहलाता था। सगीतपुर, भट्टकल, गेरुमप्पे जिसे उत्तरकाशी भी कहते थे, मूटिविद्री जिसे दक्षिणकाशी भी कहते थे और जहाँ १७वीं-१८वीं शतीमें भी सात-सी चैत्यालय और सात सी सतहत्तर घर जैनियोंके थे, और मगलूर प्रसिद्ध जैन-केन्द्र थे। इम वशमें पुत्रियाको भी राज्यका उत्तराधिकार मिलता था। १६वीं शतीमें तत्कालीन कदम्ब-नरेशकी मृत्युपर यह राज्य उसकी सात कुमारी कायाओंके बीच सात भागोमें वेंट गया था और १७वीं शतीके प्रारम्भमें उन सातोंने योग्यतापूर्वक शासन किया।
 - (२) कार्फलके सेरस्य राजे—मयुराके राजकुमार जिनदत्त रायकी सन्ततिमें-से ये और वहे धर्मभक्त थे।
 - (३) वेणूरका अजिलवश इसीकी एक पाखा वगवाहिपर वग वशके नामसे राज्य वरती थी और एक नन्दावरमें राज्य करती थी। यह वंश विजयनगर नरेशोंसे भी सम्बन्धित था, और अवतक वर्तमान रहा है।
 - (४) उल्लालका चौटवश—१२वीं कातीके मध्यसे लेकर १८वीं शतीके अन्त तक चलता रहा।
 - (४) विक्तिकेरेका अरसुवश —१९वीं शताब्दीके अन्त तक चलता रहा। इस वशके राजा देवराज (मृत्यु १८२७ ई०) वडे वीर योद्धा और आरमकस्वपरीक्षण नामक ग्रन्यके कर्सा थे तथा मैसूर-नरेशके प्रधान अंगरक्षक थे।
 - (६) वारुकुरुके पाण्ड्य राजि—इस वशके कई राजे प्रसिद्ध ग्रय-कार भी हुए हैं। इनकी राजधानी वारुकुर वही समृद्धिशाली सुन्दर नगरी थी। इक्केरि वशी वेंकप नायकने, जो शैव था, इस नगर और वहाँके जैनोंका १६१९ ई० में विष्वस किया था।

(७) मैम्ट्रफे ओडेवर राजि-अवनक्षेत्रगांत शक्के प्रवान बंदबन ने ही गई। १८वीं क्योंने ईपराबकी और होए नक्कानने इन्हें वस किना पर । बोबरेबेलि इस बोब को राज्यका बजार फिना और वह वर्तनान सन WEST TET (a) नगरीके बानुवंशी राजे।

(९) स्वतपर (विश्विते) के जैव राते । (१०) चेवंनविके सुद्धाः

(११) मुस्किके सार्वन प्रत्यापे ।

इत एक एकंतके करवार वीव-धानाने व्योधीय शीधी एवं नेत्रीता नंदबन दिना वसदिवीका बीचींकार निर्माय और रहत की बादितकी रमना क्याची निज्ञानी और मुख्यीला बाबर क्रिया और गर्माक्स

बीनवर्षणी क्षम देखते बोकिन पत्रा ।

खराड २

विदेशी-शासनमे भारत

[मुसलमान ऋौर अंगरेज़ी-शासन



अध्याय १

इस्लामका भारत-प्रवेश और दिल्लीके सुलतान

१३वी शतीके प्रारम्भसे लेकर १८वीं शतीके अन्त पर्यन्त, लगभग ५०० वपके, इस मध्यकालकी सबसे वडी ऐतिहासिक विशेषता इस देशमें उत्तर-पिद्वमी सीमान्तको पार करके मध्य एशियाई मुसलमानोंके आक्रमण, यहाँ उनके राज्योंका प्रारम्भ और विकास और फलस्वरूप स्वदेशी राज्य-सत्ताओका घीरे-घोरे अन्त अथवा पराधीनसाकी बेडियोमें जकड जाना है। मारतीय राजनीति, अर्यव्यवस्था, संस्कृति और समाजमें एक प्रवल, नवीन, अपरिचित, विरोधो अथवा प्रतिकृत तस्व प्रवेशने विविध प्रकारकी उथल-पुथल, क्रान्तियों और आन्वासनोंको जन्म दिया। देशका स्वरूप ही बहुत कुछ बदल गया।

गुप्तकालके अन्त तक मध्य-एशियाके बहुमागपर भारतीय सस्कृतिका प्रभाव था, वहाँ हि दू, जैन, बौद्ध आदि भारतीय धर्मोका प्रसार था और उसके कई भाग वृहत्तर भारतके अंग थे। किन्तु पिछली दो-एक शता- व्हियोंसे भारतकी ओरसे उक्त भारतीय प्रभावका पोपण होना रक गया था। आर्यजनोको म्लेच्छ देशो और नातियोंसे सम्पर्क रस्तना पाप है, ऐसी भावना हिन्दुओ और जैनोंमें बल पकड़ती जा रही थी। परिणामस्वरूप वृहत्तर भारतके मध्य एशियाई भागकी सम्पूर्ण भारतीयता शनै शते थे। देश की स्थानीय तथा अवशिष्ट हिन्दू जैन आदि प्रभावोंक अत्यधिक मिश्रणके कारण वौद्ध सस्कृतिके भी अत्यन्त

परिवर्तित क्यें रिकृत अपने ही बारत ही रही थी। ६टी बनी हैं में नव्य-श्वितक नव देवीये बरव 🖼 ही अधिक पिछार हुआ ना । यहाँके जीव चनिष्ठ नरिश्वमी नुज-निष और वर्ण-स्वतानी हो में रिन्तु बाय ही। बहुत प्रशेष में अनेत हमीकॉर्ने मेरे हुए में और परस्यर शहते पार्वेष हो। तकता थे। सर्वेक अल्ब-विश्वयोदि ने बाब में। ऐने नश्यमें ५३ ई. में बश्यके जरूरा नावक स्थानमें मुहानर बाहरफा कम हुना । होता संबंधनेतर अपने रेखा और वासिकी बचाने बनवा दिल दु बो हवा में स्वर्ग बुक्त क्रमीनिक रेता हुए और देक्यो दक्षा नुवारमेक्षे किए उन्होंने प्रचरित्व काचार-निवारीर्वे में के वरवींको कुमकर और बक्तर करनी बुद्धिका प्रतीन करके काने बनना रेक-पाइरोंको बन्दाने बाने जारक एवं बरब वीक्य उत्तीन पर्नेश प्रचार फिया। 'इन कमूर्व सम्बद्ध (विश्व) बीर वस्त्रमूह (प्रानिमी) ध्य बनानेपाल, बक्ती रक्षा बरवेदाना और बन्हें बारमेशान्त गुरा एक है और नुसमक बारव ही बनते एकबाब बन्ने रहत वा नामार है। इन रीमा-सन्दर्भ गांव कुरबर रंगान कामी जिस पीप पता नमांड नहीं परवानके नहीनेने रोश (चल्लन) एवं। अस्ती कामरा एक बंध रोच-पृथ्विक्षेत्रे किए बक्रत (शत्) की जनावस्था स्तरी वरीनेको हुन (बारा) करो । शुशने नुसम्बद्धे हारा वी हुरान वानक पर्यक्रम प्रस्त दिना है को ईश्वरशाल बच्ची । बढ़ी प्रस्तान वर्त है रकार पुत्र विस्ताप रक्षवेशके मुख्यमान "मुख्यम देशम है जिल्हा हैं में कर बुधाने करते हैं। एक हैं। अपने लोई दिन्हीं अभारता मेहनाय नहीं है और में बरनेके बाद बक्का (दर्श) अन्य नरीरे । भी देश नहीं करते में काफ़िर हैं बीजब (नरक) ही मानमें साम हीने क्लार किसी प्रकारकी भी एक करनेती जालकरकता नहीं । इस प्रचार, सनेको स्रोडे-बोटे अन्य-निरशासीका सन्त करके सक्के स्थानमें अपने नगुना-विरोत्तर गाँउ को इस कुछ को विरशासकी विशिधार वेडकार कुल्यारी राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक, तीनों सत्ताओंको एकत्र (समुक्त) नरके अपने धर्म-राज्यको स्यापना की, व स्थय उपके पूर्णतया स्वेच्छाचारी और सवशक्ति एव सत्ताधारी नेता बने और उन्होंने अपने अनुयायियोको एक हाबमें कुरान और दूसरेमें तलवार छेकर इन धर्मके प्रचारार्थ निकल पडने की आज्ञा दी। इस मतमें विवेक और तर्ककी विदीप गुजायश नहीं थी, पैग्रम्बरको आज्ञा हो प्रमाण थी । जैमा प्राय होता है, मुहम्मदका विरोध मो वहत हुआ और फलस्वरूप ६०९ ई० में उन्हें मनका छोडकर मदीनेको पलायन कर जाना पढा। तमीसे हिमरी सन्की प्रवृत्ति हुई। अन्तत इस्लाम जोरोंके साथ फैलने लगा । मुहम्मद (मृत्यु ६२२ ई०) के उत्तरा-विकारी खलीका बहलाये । अरवॉमॅ नवीन जीवन और उत्साहका सचार हुआ । नवीन धर्मीन्मादसे मत्त होकर वे देश-देशान्तरके काफ़िरोको बरवस मुमलमान बनानेपर तुरू पहे। खलीकाओंकी शक्ति, धन, राज्य-विस्तार और अनुपायियोंको मह्या दिन दूनो रात चौगुनी बढने लगी। घोडे-से समयमें ही इस्लाम विदवकी एक प्रवल शक्ति बन गया। अलमभूर, हास्त्रे अलरफीद आदि कुछ खलीका नेक, उदार और विद्याप्रेमी भी हुए और विभिन्न देशोंके ज्ञान-विज्ञानका लाम उठाकर अरब संस्कृति एव साहित्यका मा अच्छा विकास हुआ। किन्तु उनके धर्मकी नीरम एकागी कठोरता और उनकी घमी व कट्टरता दशन, न्याय, तत्त्वचिन्तन तथा स्थापत्य, मृति, चित्र. सगीत, काव्य आदि ललित-कलाओंके क्षेत्रमें अनिवार्य एकावट बनी रही।

हजरत मृहम्मदकी मृह्युके कुछ ही वर्ष बाद, ६४४ ई० में, मकरान और बिलोचिस्तानके मार्गसे अरवोने भारसके सिन्धु देशपर सर्व-प्रयम आक्रमण किया। तत्कालोन सि घु-नरेश सिहरसराय युद्धमें मारा गया। ६४६ ई० में फिर आक्रमण हुआ उसमें सिहरसरायके पुत्रकी भी वहीं गित हुई। दोनों बार मुसलमान लाये और चले गये। ७१२ ई० में जुन्नैहके सेनानी मृहम्मद बिन क़ासिमने एक प्रवल आक्रमण किया। सिन्यका प्राह्मण राजा दाहिर बीरता-पूर्वक लहा किन्तु मारा गया और

पन नार करके उपलब्ध बारोने बहिलार कर क्रिया। किन्दा स्व एनन स्वर्धि कराओन बाहान और गीड़ी शारार कुर विस्तावकों और रिकिन्नवार्थ परस्य हुवा नामा नामा हूं। बारोंके करने मुक्त-नामोंने कर केरणे ज्या बागा करणा राज्य वार्ग (क्या) आरोक्त स्वत्य-स्मोंने बार राज्य करोंके बहुत्वमुख बहराता वूर्ण नामोंने बार राज्य क्या। किया बाहित्योंके बामालका एक बाता क्या नामा है। बहित्या स्वर्थिक बहुत्वमुख्य हुन्ति क्या हुन्ति क्या हुन्ति क्या हुन्ति क्या हुन्त्या हुन्ति क्या हुन्ति क्या हुन्ति क्या हुन्ति क्या हुन्ति क्या हुन्ति हुन्ति क्या हुन्ति हुन्ति हुन्ति क्या हुन्ति हुन्ति हुन्त्य हुन्ति हुन्ति क्या हुन्ति हु

रुप्तारीने युवने में युवी पर प्रशांक हुए। बसके मर्थ क्यार्टी क्यार्टी केंद्र राज्यार की हात्यान केंद्रा लिखा कुएएका के काफ गई। रिज्यों है कपूर गई। कार्यवाद्योग्या कार्य मिलेंड कर विनाने साम बावन कीर्ने बार्टी करोगी के जनने कार्योग्या कर पत्ती है। येन पारालें प्राप्त में प्रशांक केंद्रा कार्यारिक वार्यान पहा। राज्युद्ध कार्योग्यानिक राज्यों मुक्तिया कार्यारिक कार्याक पहा। राज्युद्ध कार्यान्तिक सामा पारा है। कार्या क्यार्टी कार्युप्त कार्यान की मार्च पर प्रशांक कार्या सामा पारा वार्या है। कार्यान क्यार्टी कार्यान कार्यान और अस्ति पर क्षेत्रान्तिक

111

पालीन इविदास एक प्री

दुर्ग बीर मुछ हाथी अमीरको देकर उसने सन्यिकर हो और तुरन एमे त्तीढ भी दिया । फल-स्वरूप मुमलमानोनि मोमान्त देशके जलालाबाद विलेको तहम-नहुस कर दिया। ९९१ ई० में जबपालने राज्यपास प्रतिहार और घग चन्देल शादि नरेगोंका गर मुगुलिमिनिमेची सुध बनाकर ग्रजनीयालांके माथ पुर्रम घाटोमें भयंकर गुढ किया और मुसल-मानोको पेशायरसे आगे न वक्ते दिया । ९९७ ई० में मुतुबनगीनका वेटा महमूद ग्रजनीका सुलतान हुआ। मध्य-एशियामें अपने राज्य विस्तारसे उसने बहुत प्रक्रिन बद्धा ली यो और बहु अपने समयका महाधिक शक्ति-धार्लो मुमलमान नुलतान समझा जाता था। भारतके धन-वैभवकी कहानियोंने उस अत्यन्त लालची यना दिया था। बिन्तु यीर-योदाओं से इस महान् देशमें पुसने और लूट-मार करनेके लिए अपने नैनिकोमें पर्याप्त साहम पैदा करनेके लिए केयल अतुल लूटका स्रोध दिल्लाना पर्याप्त न धा, वत उमने उनवे धर्मी मादको भटकाया, युतपरम्तिथि पुतीको सीहकर, उनके कल्पनातीत दौळतसे भरे मन्दिरोको छूटकर और वाफिरोंको मुसल-मान बनाकर या तलवारवे घाट उतारकर गांजी वन इस जीवनमें घन, विजय और समें भवित सद्या सन्नेके बाद जम्रत मिलनेकी सहज आदा। दिलायो । ९९९ से १०२७ ई० के बोच महमूदने भारतपर लगभग १७ आक्रमण किये । भटिण्डेके बीर साही राजे प्राणपणसे उसका प्रतिरोध करते रहे और इसी प्रयत्नमें होम हो गये। १००१ ई० में जयपाल पेवावरके निकट युद्धमें पराजित होकर बन्दी हुआ, महमूदने उसे मुक्त भी कर दिया कित् उस अपमानधुः व नरेशने चितामें प्रवेश करके जीवनका अन्त कर लिया । उसके पुत्र लानन्दपालने महमूदका प्रतिरोध करनेके लिए अजमेरके बीमलदेव चौहानके नेतृत्वमें मालवा, खजराहो, कन्नीज, शाकस्भरी बादिये भारतीय नरेशोका एक प्रवल सघ सगठित किया। पेदावरके निकट ४० दिन तक दोनों सेनाएँ आमने-सामने पही रहीं। पजावके लोमरोंने भी भारतीय सधको सहयोग दिया। सुलतानकी सुदृद मुरक्षित

वारेने बारहीय केवार्ने बक्बार अंच वती और मुख्यमान निक्ती पर्दे फिर मी बारत सीट व्यनिते ही बन्होंने रक्षा बन्हीं। १. ९ वे वें न्द्रमुक्ते कारोपे वृत्तेर बातान किया और नहीं युप्रवित्र रस्य-मन्दिरको दोशा कीर कुटा। ३५ वर्ष तक उब पूर्वपर मुक्कमायोका मन्तिर मी च्या निवने कपरान्य नास्तीनीन पने क्ली किर सैन निमा 🥫 १८ ई. में (बच चटियोर्ड वाहीबंब और शमना मन हो मबा था) नद्रमुक्ते बरनके राजा इरक्छको नराक्ति करने अपने समीन किया तथा वयुराने अस्टिशेको युद्धा और विश्लंद किया । नवरके सम्पर्ने क्षण्यक्ता हुम्म सम्बान्ता कावना विकास क्रमपूर्व एवं स्ट्रीकीय सन्दर मा विके मार्थायोगे मध्यकर जान कर शका । मगर मन-कमाणि विविद्या कार विवासी पांच विवासकाय स्वर्क-विरामीको हो स्व धार में नवा (्राप्त बराह्मभागी कपुराने चौराची नामक स्थानगर निम्ब एका क्की नुस वर्ष हो दिनिह बनवीयर बीर वस्तियों न बाने वेडे बुर्यन्त ध्र क्यों । तस्तर है कि सन्य सम्पर्धनी वृदया कर हो। पत्तरे बैगाने न रोंपका और ५व सैनअन्दिरीको बहु पूर्व दशा। व्यूपके शह पर्वन क्ष्मीकार बावनक विन्त्र और क्ष्में कुछ । राजा राज्याल तगर क्षेत्रकर मार नेशा था । क्यांनी एक कामराव्यके किए निमानर मानेक मार्नि गरेवनि वर्षः क्या दिया । यहः अन्ते वर्षः व्यानुतने पन्देवींतर साधानय किया । अलीव गरेककी कूर्वशांके सङ्ग्रह क्षत्रक हुआ और सूर-कार अरहे मना क्या । बनके बाककार्ते हो कर देशर वसने को बीटा दिया । रे ९४ दे में महतूको नुवधानो प्रविक्ष कोक्सच-वन्दिरको सूरा गौर रिकार निया। जीन पोर्क्सी नहीं गीरतांते करा निम्ह पराज्ञित होनर माना । एको पैनकनी विकासक्षति । यहनी अब कुम्यानका नीका विना और बच्ची देवली बाल कुछ हादि की । १ व हैं में बहुन्द नर बना ।

...

शासीय इतिहास : एक धीव

क्षरगोपर पहले वालेके कुछ निर्मितीयें ही बारतीय ग्रेटेने व्यक्ती नुबक्तराजित कुनुके बाद क्लार दिया। किन्तु बन्दर्वे द्वावियोजे नियर भारतके इन आक्रमणों अपार घन उसके हाय छगा था जिसके कारण मारत-वाह्य समस्त ससारमें वह सर्वाधिक धनशित-सम्पन्न नरेश हो गया था। भारतके छिए उसके आक्रमण प्रलयकर किन्तु अस्यायी ववण्डर थे। देशके असस्य जन-घन, मन्दिर, मूर्त्तियों एव अनुपम कला-कृतियोका विष्वंस इस नृशंस छुटेरेके हाथो हुआ, किन्तु देशके साधन ऐसे असीम थे कि थोडे समय पश्चात् ही उसकी दशा पूर्ववत् हो गयी और इन भयंकर आक्रमणो एव छूट-मारका चिह्न भी न रहा। इसमें भी सन्देह नहीं कि तत्कालीन राजपूत राजाओंका दूरिभमान और उनमें परस्पर सहयोग, सगठन और एकताका अभाव तथा अश्वारोही सेनाकी अपेक्षा गजदनपर अधिक भरोसा रखना ऐसे सथ्य थे जो मुस्छमानोकी सफलताके उस समय भी और आगे भी प्रधाम कारण हुए।

व्यक्तिगत रूपसे महमूदमें राजनैतिक और धार्मिक उदारता भी थी।

तिलक नामक एक हिन्दू के नायकत्वमें उसकी सेनामें एक हिन्दू सैनिक दल भी था और उन्हें मुसलमान छावनी तथा ग्रजनीमें भी अपने धर्म-पालनकी स्वतन्त्रता थी। महमूदने साहित्य और कलाको भी प्रश्रय दिया, ग्रजनीमें सुन्दर महल और मसिविद वनवार्यों और फ़ारसीके फ़िरदौसी आदि कविद्योंको प्रश्रय दिया। उसके एक महान् विद्वान् अनुचर अल्बेरलीने, जो उसके साथ कई बार भारत आया और कुछ समय यहाँ रहा भी, भारतीय धर्म, दर्धन, साहित्य, इतिहास, ज्ञान-विज्ञान आदिका प्रशंसापूर्ण विवरण दिया है। इस विद्वान्ने सस्कृत-भाषा भी सीखी और भारतीय धर्मशास्त्रोंका भी अध्ययन किया था। फिर भी भारतीय इतिहासकी दृष्टिसे तो महमूद गुजनवी एक धर्मान्य विद्यंसक एव वर्षर छुटेरा हो था। पजाबके कुछ भागपर उसका अधिकार भी स्थायी हो गया।

इस भारतीय प्रान्तके सरक्षणके लिए उसके पुत्र और उत्तराधिकारी मसूदके समयमें भी भारतपर कई आक्रमण हुए। किन्तु जब पजाबसे आगे बढकर पूर्वी-उत्तर प्रदेशमें उसकी सेना पुसी तो बहराइचके युद्धमें धारप्रतिक वैश-नरेच जुद्दिकरेन्द्रार पर्धांग्य हुई और वहचा विश्व-सामा कहते गांव करा । यह विष्युकायर है सक्तान्य है रह क्षान्य मुद्दे करान्य मुद्दे करान्य स्पूर्ण दार्थि नर्था ग्रिज्य हूँ । ८ द के सन्दर्भ स्पूरे करार्थ-विषयी हर्ध्योग्ने माध्यार बाध्यम्य निवाद एक्टे सम्बद्ध १ पर्य-वार कर परिचरेण्य बाध्यम्य सुवद्यास्थ्ये अपन्य वाप्य है आहे विश् वर्षाणे प्रधा । १५मी वर्णके पूर्वार्थे होणां प्रधान वाप्य है आहे विश्व-वेयान ब्रयपने यो तरिच क्षायास्थ्ये हम्या प्रधान विषय, प्रदे प्रधान प्रधान करान्य क्षाय क्षाय क्षाय क्षायम्य प्रधान विषय, परे पूर्व उद्यान क्षाय क्षाय हम्या व्यवक्रमा क्षायम्य प्रधान विषय, परे पूर्व उद्यान क्षाय क्षाय क्षाय क्षाय क्षायम्य क्षायम्य प्रधान विषय व्यवक्रमा विषय, परे पूर्व उद्यान क्षाय क्षाय क्षाय क्षाय क्षायम्य क्षायम्य प्रधान विषय विषय क्षाय

नुष्पण करंपनुर्वेश शब्दाविष्ठावा जाय वैद्या ही यरिकामी नीया में वैद्या कि बान्ने क्षान्त व्याव इत्तरते या । क्षाने या नियं पूर्ण कर्म पूर्ण कर्म विद्या करते या । क्षाने पूर्ण कर्म वृद्धा करते व्याव वृद्धा कर्म व्याव क्षाने वृद्धा कर्म वृद्धा क्षाने क्षा

भारतीय शरिवास एक हाँ

लिए गुजरातको मुसलमानो आक्रमणोसे प्राय सुरक्षित कर दिया। ११८७ ई० में मुहम्मद गोरीने खुशरूशाह गुजनवीको, जो उस वशका अन्तिम प्रतिनिधि था, पदच्युत करके पजावपर अधिकार किया। पंजाब और सिन्वपर अपना शासन सुदृढ़ कर छेनेके उपरान्त ११९१ ई० में उसने एफ भारी सेनाके साथ उत्तर-भारतके मध्य भागमें प्रवेश किया। शपुको उसकी इस घृष्टताके लिए दिण्डत करनेके लिए दिल्ली और अजमेरके सयुक्त नरेश बोर पृथ्वीराज चौहानके नेतृत्वमें उत्तर-मारतके विभिन्न राजे आपसी वैर-भाव भुलाकर एक हो गये और मुसलमानींको देशसे निकाल बाहर करनेके लिए यह मयुक्त सैम्यदल दूत वेगसे चल पडा। कर्नाल और बानेश्वरके मध्य तराइन या तलावडीके मैदानमें दोनो दर्लोंकी मुठमेड एवं भयकर युद्ध हुआ। पृथ्वीराजके वीर भाईने स्वय मुहम्मद ग्रोरीको इन्द्र युद्धमें उलझाया । ग्रोरी सुलतान वुरी तरह जख्मी होकर रण-क्षेत्रको छोड प्राण बचाकर भाग निकला, उसके सैनिक भी पराभूत एवं तितर-वितर होकर भाग निकले। मारतीय श्रोने भागते हुए शबुओका पीछा भी न किया और उन्हें सुरक्षित वापस लौटने और नवीन आक्रमणके लिए शक्ति मग्रह करनेके लिए छोड दिया । अगले वर्ष (११९२ ई॰ में) ही और अधिक सेना, वल एव उत्साहके साथ ग़ोरीने फिर आक्रमण किया। पृथ्वीराजने इस बार भी पूर्ण उत्साहके साथ तलावडीके मैदानमें उसका मुकावला किया। किन्तु जहाँ इस बार मुसलमानोंका वल और सकल्प द्विगुणित था, कन्नीज-नरेश जयचन्दके असहयोगके कारण पृथ्वीराजको बाचु नरेशोकी पिछले वर्ष जितनो और जैभी सहायता प्राप्त न हुई। फिर भी वह बीर और उसके सूरमा अत्यन्त बीरताके साथ लडे। पुरुवीराज आहत होकर वन्दी हुआ और मार डाला गया। भारतीय सेनाके पैर उज्जन्न गये और विजय मुमलमानीके हाथ रहो। तलावडीके इस युद्धने भारतके भाग्यका निर्णय कर दिया।

पंजाबको पार करते ही दिल्लीके उत्तर-पिरवमकी ओर फैलो हुई

तक बा ग्रोक्ता है। जारतील वन वी चरि वही करत वर्षी वृश्नी^{त्}र ही रोज में सुदे हो होए बनों पंतासभी नहीं बहिबोर्क नहीं कर्रीके रका करना क्रमन्दर-का हो क्षमा है जना यनुषा बतिरोप करनेके मिड् म्बर इती स्थापनर समसी अनीवा करना है। बुद्ध-निक्रमणी सुन्ति म्बर रुपान है. भी बर्पचा बचपुरत . बोरी बड़े बुड़के किन पर्याप्त निरुत्त सर्पे मन्त्रम बैद्यन जिल्हे कतार्थ क्तूप द्विपादम परेड एका धीनार्थे मीराप अरव्यक्ति कारण वाले वक्ते का रीखे लोटरेंके असिरिया वाल पनि करों । अपनानक जीन नक्षणित होता है हो वर्ष प्राप्त क्यांकर मीके हो जानना पहला है और बनमें जो बार्स इसने बसनी गरामें हैं। बीर वॉर बड लिक्सी हमा दी जारणका पंतरवस विश्वान करायाच क्रमें नदम ही इत्त्वला ही। बाता है। बड़ी इप बार हमा। बर्तन भी प्रथम सपस्य या श्रम मारा दम सेवर्षे सम्बन्ध प्रतिरोध करनेते अनदम हुआ और चरियान-स्वतंत्र काले अस्ते-आराधे क्यानिस्पर्ने निम् विशेषणी वृत्तं निप्तिनीची व्यतीयक पराचीनवाके सूपूर्व वर रिया - एक पराक्ष्यका कारण भी वह नहीं था कि पास्त्रीय वैतिक ना प्रमुद्ध वेताली विश्वीवता, वीरमा, धीर्म काइन तुब-धीवत ^{कीर} कारों मुख्यमानोंके युक्त कर में । यह वर्गकान क्रम है कि इन पुनीरी में करने बहुमोंने करी जांचर नेष्ठ थे। फिल्ट बमसा मैन्य-पेमी नेताबोंडे स्वीताला पूर्णाताल, रंग्यों वालारनात बारिके कारण जिल्ले मा । प्रभूते एकपूर्वमा वर्ष एक्नीपुन्तका अक्षाव का । वृद्ध-वर्णावि करोने बनशानुकत एवं विशेषीके अनुकर मुखर वाना बडी गीया

व्यतीय इतिहास एक वर्षि

न्द्र रिप्पृत्र ऐतिहासिक बनार गृषि चत्त्री शहाचार्य पृद्रका दुस्कर इत आतिक नुष्करात मुद्रोति स्तानात्री बोर बास्त्रात्ते कर की न्यामुद्रोत्त्र पार्मप्त्र करिनक हैं बारावात्री वान्तरिक पूर्वी और समी साम्बन्धरात्त्री पार्म्य बार्गि हैं। विस्तरीत्तर क्षेत्रात्मक राज्ञेत्र पार्म्य स्तान्त्री सार्म्य प्रद्रात्त्री पार्म्य स्तान्त्री स्तान्त्री सार्म्य स्तान्त्री सार्म्य स्तान्त्री सार्म्य स्तान्त्री हैं इन स्तान या। ये राजा छोग अपने या अपने राज्यके लिए स्टिस थे, समग्न देशके लिए स्टिनकी भावना उनमें न घी। बौद्धधर्मके प्राय मर्यथा अभाव और जैन प्रभावने अपेष्माकृत मन्द पट जानेने मारण ब्राह्मण-पण्टिकोकी कृपाने इस कालमें जाति-पौतिका भेद कुछ ऐसा पृष्ट हो चला या कि राजपूत जातिक अस्पवा अन्य कोई व्यक्ति मैनिक ही नहीं हो पाता था जिससे देशके सैन्य साधन एकागी और सीमित हो गये, और अन्तन देश पराधीन हुआ।

शीघ्र ही गोरीकी सेनाने अयच दको भी पराजित किया जो स्वयं मुसलमानोकी क्रान्तिकारी विजयका एक प्रधान यदापि परोक्ष साधक धन चुका था। ११९३ ई० में ही मुहम्मद ग़ीरीके सेनानी कुतुबुद्दीनने मेग्ठ और दिल्लीपर अधिकार किया तदनन्तर कन्नीन, वाराणमी और ग्वालियरपर अधिकार किया, अजमेर भी दिल्लीके साथ-ही साथ मुमल-मानोंके अधिकारमें आ गया । ११९७ ई० में कुतुबुद्दीनने अन्तिसवाहेपर फिर आक्रमण किया किन्तु भीम दितीय-द्वारा नाममात्रकी अधीनता स्वीकार कर लेनेपर वापस लौट आया। उसी वर्ष उसके उपनेनानो मुहम्मद बिन बिल्तियार खलजीने बिहार प्रदेशकी राजधानी बिहार दर्गवर अधिकार कर लिया। यह स्थान उस समय वीदींका प्रधान केंद्र रह गया या और यहाँका बौद्धधम इस कालमें अपने अति अवनत एव विष्टुन रूपमें था। थोडे से ही परिश्रमसे मुसलमानोका बिहार प्रदेशपर अधिकार हो गया, अनेक बौढ-विहार, पुस्तकालय, मन्दिर और मृतियौ नष्ट कर दी गर्यी, बौद्ध मिल्लुओको तलवारके बाट उतार दिया गया, जो किसी प्रकार वचकर भाग निकले उन्होंने नेपाल, तिब्बत आदि देशोमें आ॰ कर घरण ली। ११९९ ई० में इस खलकी सेनानीने यंगालकी राजधानी नदियाको भी मात्र १८ अस्वारोहियोंके साथ छल-कौदालसे हस्तगत कर लिया कहा जाता है। वूढ़ा म्नाह्मण राजा स्टमणसेन बिचा रुप्टे ही महरू भौर राजधानी छोह भाग गया । निदयाको तहस-नहस करके खलजीने कुर्दिन प्राण करेक बन्यावको बस्तित बन्याकर वार्तिकरका नुप्ति पूर्व हारतन दिया । जनी वर्ग वयानुहीन ब्रोहीची मृत्यु होनेचे नामा बोरी रुपने भी शामका रहानी हुआ और इस अपार नेर प्रद समयहा नर्रोष्टिक शांन्त्रवासी सरेख हुम्या चमका व्यवसान्त्र मी नर्वोदिक क्लिपूर्व का । इसी वर्ष यह साराने बाल बीटा : यहा बाता है कि वर्ष नहत्ता बोरी मारनम इपर काने नेपानिनीहाश वैश्वत विविध मानीनी निजय करा हावा तो क्षमने बननो स्थितको बातहरर एक दिसावर जैन नानुको । रिप्टे प्रथमे एक्किएके अनुकार बहुबक्कार्य प्राप्त मा। अर्थने दरः शारने बुलाकर नामानिय किया था। धरमप है क्या मानुके अभावनी मुनगर अवश नेयक विकासके शिक् प्रथमें वैना विचा हो। वो सरामर बीधे और बनके नेपानियोंने को क्रियनिय शरवपानियों क्यारें, हुवी मारिक्ट सर्विकार किया कर्ने नक्षणक किन्न और तदा । सन्दिर्ध और नृतियोंको दोहना और सूरता है शूनकक्षन करूद वर्ष अन्तरी है । आर मधी प्रमुख रमानोर्व (हर्जू जोद बैन-मन्दिर्श) अर्थावरीके कर्पने परिपर्निर्श रिना नवा । अन्तरी पृक्षि प्राधान गरिवा या संगानी। वैत नागु मीर बोड मिलू बसन करते. कांकर में और क्यू व्यरण सगय गा र विर भी मुशम्बर वीरीका प्रयास क्षेत्रक सुर-भार और अस्टिर-मृति बीवना नहीं चा नरम् राज्य-वाक्ता करना या, जता अनके देने स्वय-नार्व बॉर्मना ही पहें। दी वर्ष बाद ही की नेतावणी लोबार व्यक्तिया प्रकार परवेंचे किए मापन सामा परा किन्तु शापनीमें बन् १५ ६ हैं में जीनन जिमेके पनि नाव मान्य रमानी एक रेस अर्थ और सार्ग-नाम गोरने अर्थन से

बनमोडी वा गोरची जल्तीय राज्यानी बनाया ह ११ दे हैं होति

कारपीते पुरुष्य कृत्यन्य क्षेत्रीया तम कर क्षित्र । वनशे मृत्यूके तात्र हो भारतारे मृत्यन्यती राज्यत्री स्वकृत नक्षा स्वकृति हुई । पुलामर्थ्यत् (१२ ६—१५९ हं) ब्राइत कारती गुक्तवार कुन-नक्षत्र क्षेत्रपत्र वेस याः वह स्वतिका विविध विधान गा. कि.स्व

जाल्यीय इनिराम १व रहि

महादेशको सर्वप्रथम गुलामीको वेडियोंमें नकडनेवाले स्वय गुलाम ये । मह-मद ग्रोरोमी मृत्युके जपरान्त उसका व्रिय क्रोतदास (जरखरीद गुलाम)और प्रधान सेनानायक कुनुबुद्दीन ऐसक (१२०६-१० ई०) गोरी द्वारा विजित भारतमें उसोके द्वारा स्थापित मुमलमानी राज्यका सर्वप्रथम स्थतात्र द्यासक हुआ। ग्रोरीके उत्तराधिकारीने स्वय उसकी स्वतन्त्रता स्वीनार कर ली बौर उसे सुलतानको पदशी दो। खलीफाने मी स्त्रीयारामिन दे दी। वास्तवमें भारतमें मुसलमानी राज्यका प्रथम सम्यापक ऐवक ही था, उसी-ने स्वय तथा अपने उपसेनानायका द्वारा, जिनमें से अधिकतर उसीकी माति गोरीके गुलाम ये, पिछले १५ वर्षीमें उत्तरी भारतक विभिन्न देशी राजाओ को एक एक करके पराजित किया या और इस दशमें दिल्लीको वेन्द्र एव राजधानी बनाकर मुसलमानी राज्यका विस्तार किया था तथा गोरीके वाइसरायक रूपमें शासन किया था । विहार, वगाल-विजेता खळजीका आसामकी चढ़ाईमें १२०६ ई० में ही अन्त हो गया था। दल्द्जको लडकी-के साथ अपना, क्वाचाके साथ अपनी वहनका और हत्तुतिमशके साथ अपनी पुत्रोका विवाह करके ऐवकने प्रधान मुइपित्र गुन्नाम सरदारोंको अपना सहयोगी और सहायक बना लिया था और इस प्रकार अपनी स्थिति सुदढ कर ली थी।

ऐवन और उसके सामी तथा उनके उत्तराधिकारी ये प्रारम्भिक
मुसलमान सुलतान और मग्दार धर्माम, क्रूर, निर्देयो एव वर्षर मध्यपृश्चिमाई योद्धा थे। जो मुल्ला मौलवी अनिवार्यत इनके परामर्य-दाता
और इतिहास-लेखक रहते थे वे उनके धर्मोन्मादका और अधिक प्रज्वलित
करते रहते थे। प्रत्येक मुलतान या सरदारके महत्त्वपूर्ण और प्रशंसनीय
कारनामे यही होते थे कि उसने कितने सशस्त्र या निहत्ये काफिरोंको मय
उनके निस्सहाय स्त्रा-यण्चोंके दोजख पठाया, कितनोंको जनरदस्ती
मुसलमान बनाया, कितने मन्दिरो और मूर्तियोको सोझ और लूटा आदि।
उनकी हुत सफलताका कारण भी उनके निर्देय अमानृषिक व्यवहारसे

मरवाचारो तथा करके निरोक्त विवरण भारतीय वृश्यिकोची निर्मी तरकाबील या बचारवर्ती भारतीवने कियो हो नहीं । राजस्थानकी करियम कार्ती और विकासकियों आदिने ही वह प्रकार बोहर-वा बच्छ हार होता है। एक मुक्कमान सुनतानीन कुछ करने वर्तने किय और दुन्न अस्ते मान बीर नालके रिल्ए शाररकको हो। वहाँ क्यकियें और सकतरे बस्ताने पूरु निर्मे । इस काली किए क्योंके हाए बास्त बनलिक हिन्दू एर्न वैक मन्दिरोत्र प्रचुर कामको प्रस्तुत की । एकर्व दैक्कने काव-निवासी प्रदुवकाई क्रमीरको ल्युंत्में विक्लोने बुदुध्मयनिष, बुदुसयोगार साथि रमाप्ते नगनानी शुरू की । अनेकी कुतुबक्ताविवने तत्तारीय स्थानीय दिग्द्र बीर कैनगोपरोसी बानदो क्यों है। पूर्वपरिवार व बन्द इसार्टीनें सी स्तेत मिन्द्र और शैन-शन्तिराणि प्रमानकोर काम वाले १ अवनेरामे स्मी नवनिष हो। व्यक्ति कुछ निवास जीन-सन्दिरको 🗗 तर्म परिपर्तित नपने भी कार्चवर कार्य जन स्वालीक थी बवेको दुन्दर वैक-परियोगे मधारवेदांचे ब्रावस्थीन बनेच नुस्ताना इपारते दती । स्तानेपार्व कारोनर मी बाचा चारतीय ही वे किन्तु बनायरके कीविन किशान मुक्कमानी में । मता प्रथ प्रकार नवान समझानीके समस्ये हो भारतीय नुक्कमान कमाना की निकास गण ही गया । प्रमुद्दीनकी मृत्युक्ते शांत जवका पुत आधानकाइ (१९११ है) पुरुषम् हुवा । यह वयोज्य या कता पुरु ही ज्योगीय वर्ष भवन्तुर करके ऐस्त्रका युवान और शक्तव अवसूर्तन इस्कुलिब (१२११-१९१६ है) को कब क्ष्मन क्यानुंका तुक्तार ना गुक्तान वन की। क्यु व पुराचा साथि मुद्दिश और पुत्रशे नृज्यन श्वरतार वी वसके प्रयम

भारतीय इस्थितः पुत्र पति

* 4

नारतीय बनता बीर राजाबीके कुकार्य शरफा होनेवाका योजन सार्यक हैं जो। अस्त्रीनता स्वीकार कर क्रेनेटर यो तुल जर्बकर सराध्यारीके राज पाना करेंच सम्बन्ध व का नाता सारतीय बीर जानीकी नाती जनकर करते जीर कर कितने थे। पुत्रतिको सुनक्तवानिय सार्यकारी और प्रतिद्वन्द्वी थे उनका उसने दमन किया और उत्तरी भारतके बहुमागको सपने अधीन किया। यह एक योग्य 'यायी एवं कुशल शासक था। इसके समयमें भयकर मगोल सरदार चगेजखीने मारतपर सर्व-प्रयम बाक्रमण किया विन्तु इल्तुतिमधको चतुराईसे यह सिन्यसे ही नापस छीट गया । इस सुलतानने ऐवक-द्वारा प्रारम्भ की हुई गुतुबमीनार आदि इमारतोका परा किया, अजमेरकी विदास मसजिद जैन मन्दिरोकी तोडकर धनवायी और दिल्छोमें अपना मक्तबरा बनवाया। इल्ल्लिमशका पुत्र रहनुद्दोन अयोग्य और दुराचारी या अनएव कुछ ही महीने राज्य करनेके वाद सरदारोंने वसे मारकर उनकी वहन सुलताना रिजया देगम (१२३६-३९ ६०) को गद्दोपर बैठाया । वह योग्य और बुद्धिमती थी. पुरुष-वेपमें ही रहती थी, युद्धोमें भाग लेती थी, किन्तु मुख सरदारोंके प्रेमपाशमें पडकर उसने अन्य सरदारोंको अपना विद्रोही वना लिया और जीवनसे हाय घोया । तत्कालीन मुसलमान इतिहासकारोने उसकी वही प्रशसा की है और उसके पतनका कारण उसका स्त्री होना लिखा है। उसके बाद उसके माई बहरामने और फिर एक भवीजेने थोडे-घोड़े समय तुक राज्य किया। ये दोनों हो निकम्मे शासक रहे। तदनन्तर इल्लुतमिशका ही एक अन्य छोटा लडका नासिक्ह्ोन (१९४६-६६ ई०) सुलतान हुआ । उसके एक मुस्ला राजकर्मचारी मिनहाज सिराजने 'तबकाते नािधरी' नामका प्रथम भारतीय मुसलमानी इतिहास-प्रनय फ़ारसी भाषामें लिखा। मुलतान नासिरुद्दीन एक बहुत सीघा नेक और धर्मात्मा व्यक्ति कहा जाता है। समस्त शासनकार्य उसके श्वसुर एव प्रधान मन्त्री उलुगुलां बलवनके हायमें था। उसीको सुलतानने अपना उत्तराधिकारी भी बनाया। नासिरुद्दीनकी ओरसे बलवनने भी हिन्दुओंके विरुद्ध अनेक जहाद किये. असल्य काफ़िरोंको मारा, कितनों ही की मुसलमान बनाया, उनके मन्दिरों और मृत्तियोंको तोड़ा, उनका धन छूटा और राज्यकोप भरा। मल्ला इतिहासकार इन जहादोका वर्णन करते अधाता नहीं। इस कालमें भी संप्रोतिक कई बाह्यमा हुए १ आहीर एक क्षेत्रीने सूर-पार की । वर्षावर समस्पने बीजान्त्रदेशकी व्हाली जीर व्यविक स्थान विद्या है

पहिरा नैतिक बाद क्यावनं (१९६५-८६ र्व.) में हर्यक्रम कर न नार्वेण स्वामी स्वाम कराराहित क्यान मन क्यान कि स्मृतिको नेतिक किया या और का दश क्या नामका मौत्रान मोत्रानी तथा हुएँ ना । क्यान बहु कहीर क्यावाल का, निर्माहितीकों कमा पात्र केत ना और क्यान मोत्रा नाम कर हैया था। व्यवकात निर्मोह कुरेगा

गतान रूप थे। अंश्रेप्ति यो गरेक व्याप्तम हुए जिन्हे जाए वा पान्त-रित्यापी वीर स्थान हो न है बना। वक्षां में देग्या अस्पत्ते क्षान्यों पुत्ता जाता की लाल कुंचके तारों है। नवार्तिक की त्यारक्षा की नदी। कहा। क्यापिकारी वक्षा दीन ईन्यार (१९८८-१) पुत्तानका सन्तित हुन्यान वा। वा नदा हुएपार्थ और निक्ता प्रस्त का। वा, १९९१ हैं के नक्षां मुख्य नदी कार्य हुप्ता मान हुपा। एन कुन्यानीका प्राम हत्नाव और कुन्यानीकि नदी स्थान स्थान की प्रसाननका व्याप वो कार्तिक निष्टा का पार्च कर्या आखेट क्षेत्र और भारतीय जनता आखेट मात्र थी।

खलजीवंश (१२९०-१३२० ई०)-कैन्बादका वध करके सरदारो-ने समानाके हाकिम वृद्ध खलजी सरदार जलालुद्दीन फिरोज (१२९०–९६ 🕏) को सुलतान बनाया। अगले ही वर्ष दिल्लीके आस-पास भीषण बकाल पडा निसमें अनेक भारतीयोने यमुनामें डूबकर प्राण दे दिये। फिर मगोर्लोका आक्रमण हुना। उन्हें सुलनानने घुम देकर वापस स्रौटा दिया किन्तु उनमें-से कुछ मुसलमान बनकर यही बस गये और नव-मुसलिम कहलाये। इस सुलतानने मिदिमीला नामक एक मुल्लाकी भरवा डाला, इससे मुल्ला मौलवी सडक चठे। वैसे वह नम्र प्रकृतिका था। हिन्दु आपर उसने अधिक अत्याचार नहीं किये प्रतीत होते। सुलतानकी नरमीके कारण राज्यमें ठगोंका जोर वह गया था। १२९४ ई० में उसका मतीजा एव दामाद अलाउद्दीन सुलतानको अनुमितसे मालवा विजय करनेके लिए गया किन्तु तदुपरान्त दक्षिणमें घुसकर उसने देवगिरिके बादव राजा रामच द्ररायको भी पराजित किया और लूटका विपुल धन लेकर वापस लौटा । कड़ामें प्रेमविह्मल वृद्ध सुलतान यशस्वी उत्तराधिकारीका स्थागत करने गया तो उसीके हाथों छ नसे मारा गया।

अलाटहीन खलजी (१२९६-१३१६ ६०) ने लूटके घनको सर-दारोमें बाँटकर उन्हें अपनी आर मिलाया और अपनी स्वित सुदृढ एव सुर्शित करके अपने विद्रोहियो एव निरोधियोंका गर्न को कुचल ढाला। १२९७-१३०५ ई० के बीच मंगोलोक कई आक्रमण हुए, एक बार तो वे दिल्लीपर ही आ धमके, किन्तु छल-बल, चतुराई और घूस आदिके प्रयोगसे सुलतानने उनसे त्राण पाया। १२९८ ई० में नव-मुसलिम मगोलोंक विद्रोह करनेपर उसने सहस्राकी सख्यामें उन्हें मरवा डाला। उसने स्वय तथा अपने मिलक काफ़्रूर, उल्गासा, अलपखा, जफरखा, नसरतखां आदि सेना-नायकोंके द्वारा राजपूतानके रणधम्मोर (१३०१ ई०) और विक्तीड (१३०३ ई०) जैसे प्रसिद्ध सुर्गोको अधिकृत किया। राज- त्रव बन्तीको विद्यालिको स्थल कर वृक्तक काके कह मरे । १९९४ र्द में तथ वरेनेको पर्यातन वरके मुत्रशाको प्रयोग विद्या गरा. तर्रगाल बलारहीको वाववादी अधीव शिवा तथा देशीन के बार्ग भौ द्वारमन्द्रके क्षोत्रमन्त्रीको पश्चित्र वस्त्रे कार्ने अपीय विद्याः कानोमप्रका शहका गीएने हुए अपून्य तक खनकी मैनाई बहुँची । इन बहार बारे मार्फ ही बिए हती. जिलावको नेकर कुंबारी बलरीय पर्रेल करेंग्री देशार वसकी विकास्ताका करगानी और यह धारतमें जनसमाति नवपरके नवर्षिक विस्तान बाह्याकाका अधिवर्धन करणावा । उनको विकास बारम । इ.भी था कि इसके हारा विकास देखी गाउँ नरोपने तथ नवः अपनी वचननिको वन्तिय अभगाने में। इत विजय-समाजीने हैं बची लड़के बमने बनकी बाँका और तर्नुच की बन्तरिक वह नहीं और वह बचने-बारकी कुमरा निवमर मन्त्री मरा । कृष्ण-मैत्राविधीया वारावारीते हलावेर वी वह नहत्र ^{हरी} करना का बन वे जी जनने बहुत चितुने नमें के। इसी वार्य विवाद में बर्ग्स कर्मा क्षांत मन्त्रा विभाग ने व्यक्ति वन्त्री वर्ग्स वर्गी

रत बीर- बरस्ता वीरताने एके बीर-बलावा बीहर-बारा-बाली रिवरी

है जब कि सम्मान्तने वहें आपनाथां एक समेह वहाँ जान हुए जों समात है। दुनाने करेगी कीए मध्यानिक भी जम्मे हमा किया नहें कर से दें कर में दें कर मात्र आपने कर जम्मे मिल्ला के साम कर मात्र कर में दें कर में दे कर में दें कर में दे

मा । मारन्तमें नह गार निरंतर का दिल्लु शानरने द्वक विरण मार्ज

बार्लीय इनिहल एक स्टि

कर लो घो और विद्वानोका आदर करता था। सुप्रसिद्ध अमीर खुउरो उसका राजकवि था। राघो और चेतन नामव दो ब्राह्मण पण्डिनोंका मो मुलतानके ऊपर पर्याप्त प्रभाव रहा, उसका एक हिन्दू मंत्री माधव घा। जिनप्रभमूरिके विविधतीथङ्गल्पके अनुसार मःत्रो साधवकी प्रेरणापर ही मुलतानने अपने भाई उत्रुगर्यांको गुजरातकी विजय करनेके लिए में गथा। विन्लीका नगरसेठ उस समय पूर्णचन्द्र नामक अग्रवाल जैनी था कौर सुलतान भी उसे काफो मानता था। इसी मेठसे वहकर सुलतानने दिगम्बराचार्य माधवमेनको तिल्ला वृल्याया या, सुत्रतानने अपन दरवारमे चनकाब्यानपान मुना और सम्मानकिया। राघाऔर चेनन नामक विद्वानींक माथ शास्त्राधमे जैनाचायन विजय प्राप्त का बतायी जाती है। दिल्लोमे काष्टामधकी गहोके मम्यारक भी यही आचार्य थे। इस सुलतानमे इन्होने कई फ़रमान भी प्राप्त विये बसाये जात है। नन्दिमधी आचार्य प्रभावन्द्रने भा इसी समयक लगभग दिल्लीम अपना पट्ट स्थापित किया थ।। गुजरातके अपने पहले आक्रमणम भडींचके दिगम्बर जैन साबू श्रुत-वार स्वामीम भी इम मुलतानका साक्षात्कार हुना बताया जा ॥ है। द्वेताम्बराचात्र रामचाद्रमूरि और जिनचाद्रमूरिका भी उसने सम्मान किया था, ऐसी अनुभुत्ति है। उसीके जासन-वालमे सठ पूणवाद्र सुवतानके फरमात एव महायताको प्राप्त परम जैनाका एक वडा तथ गिरनार तीथ-की सावाय लिए के गया था। उसी समय पथडबाहके नाह्त्यमे वहाँ गुजरातका सब भा आया या और दाना सघान सद्भावपूनक साय साय तीय दादना को या । गुजरातक सूबेदार अलपखाँन भी पाटनो सेठ समण्-घाहको शत्रुगम तीयका जीर्णाद्वार करन एव यात्रामध ले जानेके लिए महर्प सैनिक महायता भी दी थी। इन तथ्योंस विदित हाता है कि विजवाय या बिद्रोह दमनाध किये गये युद्ध अयमरोको छाडकर सामा यत इन कालमें भारतीयाका स्वधर्म पालनकी सीमित स्वन प्रता दा जाने लगी थी, और भारतीयोकी राज्यमे यदा-कदा पदादि भी दिये जाने लगे थे।

रिकार पारी प्रक्रिय सरने द्वापन कर जी और राज्यांको मनेन व्यक्तिकारा नव करा दिशा । किन्तु बनामय वृद्ध शासः व्यक्तात् ही क्वाकी शीर उन्नक्षे राज्ञीयोधी हत्या कर ही नहीं । जब अध्यवहीनमा एक अन्य दुर्ग हुनुबुरीन मुचारकबाह श्रवनी (१३१६-१११ ह) बुक्तम हुना निन्द सह थी बस दुरावारी - बालाचारे एवं निकास व्य । देशनिरिक विशेषी एका दूरपाल देवली कहते खाल जिल्ला की वी और गारंप राज्यका सन्त कर दिशा था। जिल्हु वह शिलुकोश एक वी रुप्ता ना नात्रने हेठ बनरबातुको रिक्टी बुनरकर क्वे ब्रह्मे एक बच्च पदार निर्देश विश्व था। पुत्र एक है एक गीव परवारी काविके हिन्दुको करने करना सरिक गुँर-पद्म बना किया था । यह व्यक्ति खुत्र-रेखकि नारवे अस्टि हुआ बीर अनी स्थानीका तब करके एक्वे सुक्यांत नत केंद्र । बस्ते सरमारोको बदमानित किया और वपने जारि-कार्योको राज्यीय न्यार भर किया । दूराचार अभाषार और जल्याचारका दौर और वनिक बदा मन्द्रत परवारोने बसना वय कर विधा : हुप्रमुक्तम्य (११९१–१४१४ है)--शृतरोश्वीनी प्रथमनित विश्व क्रोंचे सुरूप होशर प्रकार सन्त करणंत्रके सरवारीका वेदा विरामपुरण हाकिन तानी नॉक्क या । यह एक तुर्क बरवार या । सननी नवये करें पुका की विकास माना है। यह जात कर करकारी की सम्मतिके सक्षित्र कारी ही नवानुहोन तुबकुणवाह (१६२१-१६२५ ई.) के बासत तुकरान जारतीय इतिहास एक द[ा]र

13

मध्यप्रदेशमें कई बनविषे वचन साथि भी सनगमे और धीरी गावक स्थातमं तथी विक्लीके निर्मोणका कार्य भी बादस्य किया था । तुनवानने कडीर बाएनके परिवासलकत चोरी। इसी बादि वी बहुत कर हो नके मी और लाख परायोंके पूल्य तो सबने धूडने एक निर्वारित रिवे में पि

बतमा बस्ता बनन अलो फिर सानद कतो लहीं बाना । बक्के बन्तिन इत्रमने दनके मन्त्री वक्षिक काक्ष्यकी वक्षित सहस्र वह वधी भी । नुकालको मृत्युके बाद नाजूरने बसके वृक्त दिख् पुनरो वहाँगर

करनेत्रे उपाय भी कर लिये। कतिपय भारतीयोंकी भी उसने उच्च पदीं-पर नियुक्त किया था। पाटनके मेठ समग्शाहको वह पुत्रवत् मानता या और उमे उमने तेलिंगाने भेजा था। सोमचरित्रगणिकृत गृहगुण-रत्नाकर प्राय (१४८५ ई०) के अनुसार सूर और नानक नामके प्राप्ताट जातीय दो जैन भ्राता भो जनके प्रतिष्ठित सन्दार थे। अपने पुत्र जना। साँको उनने दक्षिण-विजयके लिए मेजा। वारगलके प्रयम युद्धमें तो जूनाखौ बुरी तगह पराजित हुआ कि तु दूसरे आक्रमणमें उमने ककातीय राज्यका अन्त करके वारगल और वीदरपर अधिकार कर लिया। इस समय मुलतान स्वय वंगालके उत्तराधिकारकी समस्या सुलझानेक लिए गया हुआ था। उसके लौटनेके पूर्व हो जूनार्खी दिल्ली लौट आया। मुल्तानके स्वागतके लिए राजधानीसे बाहर उसने अपने विश्वासी अनवर ध्वाजाजहाँ-द्वारा एक अस्थायी काष्ठमण्डप वनवाया । मुलतान जद अपने छोटे पुत्र महमूदके साथ उस भवनमें गयन कर रहा था तो जूनाखिक पट्य मसे वह मण्डप गिरवा दिया गया और मुलनान व उसका पुत्र उमीमें दवकर मर गये। मुमलमान फक़ीर निजामुद्दीन झौलियाका भी इम पन्यात्रमें हाथ रहा बनाया जाता है। ग्रयासुदीनने दिल्लोके निकट ही तुगलकावाद नामक एक सुदृढ दुर्ग वनवाया या और उसमें अपार घन सम्रह किया था। वहाँ उसने अपना मक्कदरा भी पहरेने ही वनवा लिया था। अस जूनाखी, मुहम्मद विन तुग्रजुक (१३२५-५१ ई०) के नामसे मुलतान बना । इन बनका यह सर्वमहान पासक था । उसका व्यक्तित्व प्राप्त कार्य कोता और दिस्क्रीके सकतान

यता । वस्तुत उसका वाप वलवनका एक तुर्क गुलाम था और माँ एक जाटनी थी, भारतमें ही इमका जन्म हुआ था, अत वह अप प्रारम्भिक मुल्ताना जैमा निर्देश क्रूर और घर्माच नही था, साथ ही एक योग्य शासक भी था। थोडे में समयमें ही उसने आन्तरिक शासन व्यवस्थित कर लिया और मगोलोंके निरन्तर होनेवाले आक्रमणोंसे राज्यकी रक्षा



चावमे सुनत। या और उनत विद्वानोंसे स्वय भी बाद करता या।

विविधतोधकल्पके कर्त्ता जिनप्रमसूरिका सुलतानने सम्मान किया बौर चन्हें कई फरमान त्ये जिसमे चन्होंने हस्तिनापुर, मयुरा बादि तीची-की समघ यात्राएँ की और अनेक धर्मोत्सव किये। राजा-मनामें उन्होंने वाद विवाद भी किये। उनके शिष्य जिनदेवसूरि बहुत समय तक सुल्तानके साथ रहे और सम्मानित हुए। इनके कहनसे सुछतानने कन्नान नगरकी महावीर प्रतिमाको दिल्लीमें स्थापित करवाया। यह प्रतिमा कृछ दिन तुगल्काबादके दाही खजानमें भी रही। एक पोपघशाला भी उस समय सुलतानकी आज्ञा और महायतासे दिल्लोमें बना । मुलतानकी माता मलदूमे जहाँ वेगम भा इन जैन-गुरुआका आदर करती थी। जैन यति महेन्द्रमूरिका भी मुलतानने सम्मान किया था। पाटनके शाह सगरसिंहकी मुलतान भाई-जैसा मानता था और उमे उसने तेलिंगानेका शामक नियुक्त किया था। ज्योतियी घराघर भी सुलतानका कृपापात्र था। १३३४ ई० की एक जैन-प्रन्य प्रशस्तिमे दिल्लीका नाम योगिनीपुर मिलता है। राज-घानी तुग्रलकाबादके घाटी किलेमें ही 'दग्वार चैत्यालय' नामका एक जैनमन्दिर विद्यमान था जिसमें १३४२ ई० में उस चैत्यालयके निकट रहनेवाले पाटन निवामी अग्रवाल जैन साह सागियाके वशजोन एक महान् पुजीत्मव किया था । इन लीगाके गुरु काष्टामधी जयमेनके दिाव्य भट्टार्क षुर्लभमेन थे। मुलतान भी उनका आदर करता था। इस अवसरपर अनेक ग्रायोंकी प्रतिलिपियाँ करायी गर्यी जिनका लेखक गन्धर्वका पुत्र पण्डित बाह्ह था। इस मुलतान के समयमें दिल्लीमें निन्दसंघके पट्टाघीश प्रसिद्ध मट्टारक प्रभाचाद्र थे जिनसे सुलतान बहुत प्रसन्न था।

अपने शामनके प्रथम वपमें ही इस सुलतानने अपने राज्यके जैनियो (सयुरगान = सराओगान, श्रावकों) के हितार्थ एक फर्मान भी जारी किया था। १३२७ ई० में ही सुलतानने दक्षिण देशस्य दौलताबाद (देवगिरि) को राजधानी स्थानातरित करनेका निश्चय किया और रिश्वीको माली करनेका हुनव है दिवा । सम्बद सब-बनकी हुन्नि हुई रिन्दु प्रजीम बादला नहीं हुना। 🔣 १६९० ई. में ही जनने हारमनुष्टे बोदनमारा मध्य करके बांबन भारतका संबंधित बहुमान भी पुत्रमंत्री मानगढे अन्तरूप चरिमान्त एर निम्हा । अमेकके आज्ञानके नारम मून्याननो गुरना बत्तर आला पता जीर पुत्र देशर ही बतने अंगेक्टी पीका संप्राचा । इंगाम और जीवनर मानमन करनेकी बोजवाएँ थी दर्व नुकालने नवाची विन्तु दोनोने ही अनकन रहा । १३४ ई 🛊 धर-बर किर प्रका विकास को बंदर पीजवादायको राज्यानी धनानैस प्रयत्त तिया और दव बार मी रिक्स हुमा । इनके बावन-राक्ष्में क्याप-प्रवर्ते जीवन पुरशान पदा समस्य प्राची मून्यो कर वर्षे । संबोधिने भारतको नुक्यानको सरप्रत कोशनाको अनुस्दर्श समग्रीक्या और राजवानी-परिवनम कारिके रास्य राजकीय खाली हो नवा था कार्य क्यने मोने-मारीके स्थापके धांचे बीर पीछमपी प्रधीक नुप्रा नक्ती पार्टि । यह बोजना जी: विकास हुई । कबर आवम-जनस्था जी नगी न्यस्य हो गरो । स्थित शंधाल विश्वण साथि वास्त्रक्लके निविध्य स्वर्गेलें निर्देश होने लगे. जिनके बजन वरनेके जन्मनमें बनका श्रीवम बीठा बीर किर भी धनके बन्दानः स्थलन हीले और वासामन्तेः किना-बिन्य होनेशे स्य न रोज बरा। इब अकार विक्रत् गुनोन्न बरावन सोर बहुरेन होते हुए भी नुहम्मन पुणकुमके क्यूओं, बष्टरित पुणीय-वाने विश्वकर देशी कियम परिश्लिति कल्लाम कर वी कि वक्के तब बोर विजिल्ल क्ष्मेलें क्दने बयुनी-बयु रीक पहने समें नह पिकिन्त-मैका हो पता क्यनी प्रतिदिशा पानक बक्ते और नक्ते खतुवाँ एवं विरोधियाके निवर्तकोचे रकारातमं वह कुर नवा । क्लाओन गुक्तवान इतिहासकार विवासीन बरनी निकार है कि कोच तो बक्के विकार निरोध करने नहीं नगरे ने भीर मुक्ताल कर्नुं कडीरवें कडीर वस्त्र वेते नहीं जबता या । इब अभार क्य क्रिक्क निर्माहका दाल करतेके अवस्तर्में का शिल्क्सके क्रिकी

छायनी टाले पढा था तो बोमार पड गया और वहीं १३५१ ई० में उसको मृत्यु हो गयी।

यह निम्सन्तान था अत उसका चचेरा नाई फ़ोरोजशाह तुगलुक (१३५१-१३८८ ई०), जो उस समय छावनीमें ही उपस्थित था तथा वडा मुवेदार था, मभी उपस्थित हिन्दू एव मुमलमान सरदारोके आग्रहमे गद्दोपर बैठा और सेनाके साथ दिल्ली छीटा । वहाँ वृद्ध नगरपाल ख्वाजा-जहींने एक शिशुको सिहासनपर विठा दिया था, अत विद्रोहके अपराधर्में उन दोनोका वध करा दिया गया । १३५४ ई० में फ़ोरोजन वंगालपर आक्रमण किया और एक साल तक युद्ध चलता रहा, लाखो व्यक्ति मारे गये कितु वह सूबा प्राय स्वतः न हो यना रहा और सुल्तान दिल्ली लीट आया। १३६० ई० में उसने वहीं फिर आफ्रमण किया, विन्तू घीघ ही सिघ हो गयी और वगालका मुवा पूर्णनया साम्राज्यसे जलग हो गया। दक्षिणको फिन्से अघीन करनेका उसने प्रयत्न ही नहीं किया, विक्त यहमनी भूलतान और माबरकं सुलतानकी स्वाधीनताकी ही प्राय स्वीकार कर लिया। १३६१ ई० में उसने सि घपर आक्रमण किया। भयम बार तो अपनी भारी हानि करके उसे गुजरातकी ओर हट जाना पढा किन्सु दूसरे आक्रमणमें सिव्यका शासक पराजित हुआ और स्लतान उसे बादी नरके दिल्ली ले आया, फिर भी सिंघका सूबा उसके अधीन न हुआ। इसके उपरान्त फीरोजने युद्ध एव आक्रमणोको तिलांजिल दे दी और अपने सकुचित साम्राज्यपर शान्तिसे शामन करने लगा। वह अपने मजहवका वहा प्यका था, मुल्ला मीलवियोका बढा आदर करता या तथा उन्होंके परामधासे क्रुरान घारीफ और घारीयतके अनुसार राज्य-काय करता था। आत्तरिक शासन प्रजन्ध सब उसक मुयोग्य मात्री खौजहौंके हाधमें था जिसकी मृत्युके बाद उसीके पुत्रने वह कार्य सम्हाला। सुलतान स्वयं भी नरमदिल था। अपराधियोको भीपण दण्ड और नाना प्रकारकी यात्रणाएँ देनेकी प्रधा उसने बन्द कर दी। वनने क्रिमुक्षोचर शक्तिया गर मनाशा को मुसक्रमान बनवा स्वीरा कर हैते में चन्द्र वह एस करने मुक्त कर देखा जा । इन हवार सहस्ता भौर सन्धानात्के स्वानमें जुन और जनका कीन देकर बनने मुत्तनातीरी नक्या-वृद्धि को । वालीर बचा और गलामोकी प्रवाकी भी अपने प्रोतानहरू विमा । बागने जुनसमान वनीमी और वेदाओर निए वृत्तियाँ हीं सी सर्गम्यामात्र स्थित् प्रकाणः जानगार्वे तथा सहस्रतान अन्तरार्व । वह वहूर मुझी मनकतान का और विधा कार्ति कच्च मुनकवानी बन्नश्रशीके प्रेरे वी दैना ही क्रमीरुण्यु वा सेना कि हिन्दुमीरे प्रति । एक ब्रह्मानकी कर्ण जिला समरा दिश हुक वन्तियों दव वृत्तिवींना थी दुरशाना तन नवीन सन्तिरोके निर्माणार प्रतिसम्ब क्या स्था । कुना-वीर्धनर्वी निग बड़ एक बाइफ मुजनबाद मुक्कान वा १ क्रेमर्ने वी मान्य पी प्रभा जी क्लेक्सकृत सूच्यों की । नवर्गी और दमारतीक विमायका भी की बीच या. बीतपुर दिलार प्रीरोक्तसार कारि समरोता करने निर्मार किया बनुताको नक्षर निकल्याची कई बांच बनवाने जनेक बननिर्मे क्रिके वास्कान्त्रक (निवासका) आदि बनवारे । वेराह और होराने क्योग-नाम्मोली कनक्यकर यह रिक्ती के नगर । वंग ननिर्शनके नहारक प्रभावन्त्रको को विकास सुनि मैं। उसमैं भान्ते बहलमें मुख्याया का । परा माता है। कि मुनियों इस अवनरपर परम परस्य करने पत्रे में सीट ठाउँने बनर बारतमे सम्बद्धारी बहुएक बनाया बलुवाँन हुवा। दिन्दीने

सहारकीय महिनों खुके ही। व्यापित हीं चुकी थीं। मुक्काल बीर बक्की बैक्सीमें मुनिके वर्णत किसे बीर तमाना किया। मुक्किर स्वाप्तेवपार्टिया भी इस मुक्कालने तमाना किया ब्यापता था है। करणित माना कारणे किया। प्राप्तेकि किस विकास हिन्दा विद्यालित स्वाप्त का स्वाप्त बक्राल परिकारिक स्वीतित्व देश (मुक्काल) विद्याल में भी में। इस मुक्काली नामक इतिहास प्राय भी उसीके बाध्ययमें लिखे गये।

१३८८ ई० में ८० वप की अवस्थामें फीरोजशाहकी मृत्यु हुई और उसके मरते ही राज्यमें अव्यवस्था एव अराजकता उत्पन्न हो गयी। सव सूवेदार स्वनात्र वन वैठे। मित्रयोंके पड्यात्रीस एकके बाद एक कई नाममात्रके सुलतान हुए। एक माथ कई-कई दावेदार भी चलते रहे। अन्तत फीरोजका पोता महमूद तुगलुक नाममात्रका सुलतान बना रहा। उसके समयमें १३९८ ई० में मध्यएशियाके मवगिषतशाली एव रवन-पिपामु अमीर तैमूरलगने भारतपर आक्रमण किया। पजाब, दिल्ली, मेरठ, हरदार बादिको लूटता-पाटना, असख्य नर-नारियोको तलवारके घाट उता-रता, यह भयानक नर-महारक देशको रही-सही दुदशा कर गया। अब सर्वत्र अराजकता, दुदकाल, भुत्वमरो और त्राहि-वाहि मच रही थी। तुगलुकोके नाममात्रके राजटवर्मे १४१४ ई० तक प्राय यहा हालत चलती रही।

सैयद्वश् (१४१४-१४५० ई०)—१४१४ ई० में पजाबके सूबेदार खिळाखीने, जो अपने-आपको सँयदवशमें उत्पन्न हुआ कहता था और तैमूरलगका प्रतिनिधि घोषित करता था, दिल्लीपर अधिकार कर लिया। दिल्लीके आस-पासके थोडे से प्रदेशपर उसका राज्य था। उसने और उसके तीन उत्तराधिकारियोने न अपने आपका सुलतान घोषिन किया और न अपने नामके सिक्के ही चलाये। नैयद मुवारकशाहका एक मनी हिसार-निवासी अग्रवाल जैनी हेमराज था जो मट्टारक यश कीर्तिका दिष्य था। इस वशका अन्तिम शामक अलाउद्दीन १४५० ई० में पदच्युत कर दिया गया और वह दिल्लीका परित्याग करके बदायूँमें जाकर एक साधारण जागीरहारकी तरह रहन लगा।

लोदीवश (१४५०-१५२६ ई०)—अफ्गान सरटार बहलोलखी छोडीने, जो मैयदोंके धासनकालमें पजाबका स्वतन्त्र सुबेदार बन वैठा था, १४५० ई० में दिल्लोपर अधिकार कर लिया और अपने आपको सुलतान घोषित कर दिया। उसने दिल्लोका जो छोटा सा राज्य बचा था उसमें

प्यानमा कराम भी जीर सीमृत्ये वार्षी मानक्याना क्या नरहे जा है प्र मायदायाको प्रमान मुनेसार मिहूल हिया। उन मारार नेमाने साराव्यो रचना भी बाग हियादी हैयाक्याने त्यापीले केट कुलेम्पार भी भीता क्यान प्रदेशाय करने करना सर्विद्वार स्कृत पुत्र का किस या। बहानीय मोर्थाशाय करने करना सर्विद्वार स्कृत प्रमान का किस्ते हुँ गाया बतायी। रेमप्टर १ १५९ १) माने वायके स्विद्ध केंद्र नुसाय हुए, एकोन मृत्यिक स्वत्य करना करना करना करना मारा करीर, पुत्र पत्रमें स्वत्य करना करना करना स्वत्य करना करना स्वत्य करना स्वत्य करना स्वत्य स्वत्य करना स्वत्य स्वत्य

नदमोगके क्वान्त्र क्वारा पुत्र निवासको सूच्यान निरादर गाउँ। (रे४ ९ १५ है) दिल्लीके निरायगार वंदर । बर बन बचरा तरवे अविक बोस्य और यश्चिकानी यावक था । दिन्तु बनकी ती गर्मन मिना नगण नाम्या पुत्रशन बहुननी जारि नृत्यवारी राज्यें और मेवाड न्यांस्टर, विकासकर आदि किया राज्योंके के विभीने जी नक, फ्लियर वा चनुविचे क्रियेच कविक वहीं थी । क्रम्बे जीनपुरने काले नार्ने-मी निमानकर क्ये निक्की सामने निका किया और विहारने तुनेती. मी बपने बचीन किया । बैरावना राज्य कुन्त । श्रीसन्दरशा नार्गीस्ट तानप माक्यारा नानिवरीय जीर युवरानशा जडमूर वेमरा चनके प्रवस प्रकारणी र्षे । क्वके बाव बनके बोध-नेंच और बुद्ध चन्छे रहे। किर वो निकटारने रिल्मो राज्यश्री प्रक्रिया गुरू बना वी । क्ष्मचे बायरा कि के बनाय तथ मानराका निपटकर्ती स्थान निपन्दरा बनीके बाज्ये प्रतित हवा । सर् र्द में उनीके नमनमें एक अबंधर देख-स्थापी बुरश्य बामा मां मत मुन्दराम अपने अवका बहुद एकाली वा जिल्ह्यांके प्रति बातानकी मध्यिम् वा और मुस्कानी कानुस्ता अनुसरम करता दा । इस बार

नपुरानरं बाळनम् वरके वहाँके वन्तिराँनी वी उपने तीदा और बनके स्थानके महाज्ञित्र बननावीं विवित्त्वा-बारवार्थे की बहुत रिमानरथी वी । कर्णाटकके मुछ तत्कालीन शिलालेखोंने पता चलता है कि वहाँके महान् बादो एव वनता प्रसिद्ध जैनाचार्य विशालकोत्ति मुलतान सिकन्दर लोदोको राजसभाम आये थे और उसके द्वारा सम्मानित हुए थे। सिकन्दरके राज्य काल्यमे अत्यधिक सुकाल था, सभी पदार्थ अत्यत्त सम्ते थे और अस्प साधनवाले व्यक्ति भी सुखने रह सकते थे, ऐमा उस कालके इतिहास-ग्रन्थेमि पता चलता है।

उसना पुत्र इप्राहीम लोवी (१५१७-२६ ई०) निदयो और अयोग्य शागक था। उसके नमयम भी वस्नुएँ अत्यधिक सस्ती थी किन्तु उसन अपनी उद्घडताम अपने अफग़ान अमीरोंका कर कर दिया और उनस निगन्तर लड़ता-झगडता रहा। जब कभी उनका अपने हाथमें कर पाता तो उनपर बड़े निदा अत्याचार करता। क्षुन्य अफग़ान सरदारान पजावक सूबदार दौलता लौ लादाको अपना नेता बनाया और उसने काबुल्के वादकाह बाबरको भारतपर आक्रमण करनेवा निम प्रण दिया। बाबर आया और १५२६ ई० मे पानीपतकी प्रसिद्ध रण मूमिम इद्राहीमको विवाल बनावो उसने पराजित किया। इब्राहीम मारा गया और उसके माप हा लादोबंशका अन्त हुआ। दिल्लीम मुगल्यशको स्थापना हुई किन्तु अस्यायो रही। १३ १४ वप बाद ही बाबरके जतराधिकारी हुमायूँ-को एक अन्य अफग़ान सरदार पेखरीन निकाल बाहर किया।

स्रियंग — (१५४०-१५५५ ६०) — लोदी सुल्तानीं गामनवालमें पूर्वी भारतम अनव अधस्यतात्र छाटे-छाटे अफगान अमीर उत्पन्न हा गये थे। उन्हींम बिहार प्राप्तस्य महसरामका जागीरदार हमन था। उपका नेटा परील अपनी सीतली मीने दुस्यवहारम निद्वर घर छोडकर जीनपुर सला आगा। वहाँ उम तानहार गुनकने थोछ हो समयमे गामन एय राजनीति-सम्बग्धी विविध जान और अनुभव प्राप्त निया। शीटकर उपन अपन बापका जागारका बड़ा निपुणताक साम प्रवास किया और सम प्राप्त विवा और सम

तमा बढके उपरान्त इवार्युंनी दुर्वसताबीने उत्तन पूरा नाम बटाया मुनार और भारताबक बुरुद दुवीतो अधिकृत बरके असी मर्ग-पर्य मन्दर्भ विद्या पर सदना संविधान क्या किया और बडके मेन्डी दन्ध रिर रीन्यादमूर्व (५३९- ५४५ दै) के शावन जाने-नाररी मुनवात मापित किया । शत में धैरमांडवी । इन समस्विते जैसे नक्ष्म वर नक्ताचा चनन किरास्त (१ ३८ ई. में) अल्लामच विकासका कुमार्के पूर्वशेषान थि। नवनागर एउन्या समुख्य शवत बनावशी राज्याची भीडम राम संस्त दिशा - फनावमन १ वर् ई - मैं चॉनाफ गुड़में सैस्पान में हुन र्युका बुरो न पर्शावन दिया जनकी केना लिए दिनर ही मेरी ी र गांदर प्रश्न आप अपायर भागा अवने पर कन्नीयरे सुनी क्या कि प्रशासन किया विकास नक्षा हुनायेंशे बारहायन बाहर मान बाना पण जो थे शाह रिण्योचा पामपाना बनावर एउट करने कता पंजाबप काञ्चनका समित्रारंडी यहा सदत्व राजनुसन्ध म्बन्या बीर युन्दनारश्चक दननमे नारण हथा - गाँव पपढ बीतर बनन सरीय गुड तर । अवस्थीरके पुरुष दल सु वानल नवीर प्रतिस वैष बैकराज रेपा परिकारण बाजात विका बा । सम्बन्धमा इन बैक्ने मुक्तातका इत्ताव भी विया था । अध्यत्नात्वये रायमानक पूर्वता हराया करनेमें बनन विव (नुवान करक वर्षणा धानुर्व छैनरका प्रस्तेशाय करे। रिया । १५४५ है न नार्यजनके दुर्वपर जावनाय करने क्षा यह स्पर्व Brief Breif 4

पिराप्त एक भागे श्रीवा और पुलेश के-बर्गका हो भी वा धानत-करने भी निकृत को करती धारतारको बोटी-नी वास्तरी करते को उदले किये के बुद्ध का धानतार्की उन्हार्ग तिया करते पिरार टेप्टरच्या ब्यूक्ताने कहते पुलिशे ताथ मेन करतने एवं धो-नीटेंग्टर वस्त्रीकाल दिवार विकास विकास वास्त्र करता है

अध्याय र

पूर्व-मुगलकालके प्रादेशिक राज्य

जैसा कि वर्णन किया जा चुका है मुहम्मद सुग्रनुक समयमे ही दिल्ली-साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा या और अनेक नयोन एव स्वतन्य मुसलमानी राज्य यत्र-तत्र अस्तिस्वमें आ गर्मे थे, जिनमें बगाल, जीनपूर, गुजरात, मालवा एव क्यमीरके राज्य और दक्षिणका बहमनी राज्य

वंगाल (१३४०-१५७६ ई०) — पृष्टम्मद सुग्रलुङ के समयमे वगाल-के मृबेदार फ़ख़बहीनने १३४० ई० में विद्रोह बरके अपने प्रान्तको साम्राज्यम प्राय पृथक् कर लिया था। १३५३-५४ ई० में फ़ीरोज़शाहने बगालके सूबेदारका अधीन बरनेवा विफल प्रयत्न किया था, १३६० ई० में फिर उनने एक प्रयत्न किया और अन्तत उनकी स्वतात्रता स्वीकार कर ली। तमीसे लेकर अकबरकी विजय प्यात सूबेदार फ्ख़रहीनने बंधज सिकन्दरशाह (१३६८ ई०) आदि जो अरबद्यीय सैयद जातिक के स्वतात्र सुलतानिक क्ष्मों उस प्रात्तपर राज्य करते रहे। देशके अर्थ राज्योंके साथ उनके प्राय कोई युद्ध नहीं हुए कि तु तत्कालीन सर्म

मुसलमानी राज्योकी भौति गुष्त हत्याएँ, गृह-कलह, उत्तराधिकार सघर्ष पड्यन्य, विश्वासघात आदिसे इस वंगका इतिहास भी ओत प्रोत है धासन व्यवस्था भी प्राय दिल्छी-सस्तनत एव अन्य सभी भारतीः मुसलमानी राज्योंके प्रतिकष्प ही थी। उसमें मुसलमानी एवं इस्लामक हित प्रधान था और धासन प्राय नागरिक ही था। असस्य ग्रामीए

रल्रेमनीय हैं।

क्रानि नारण करके रसर्वराती दिल्लीमा समार मीनिव कर दिन्ही किन्तु १५५६ हैं में वाबीवतक युवके सकतर और बैरमची-हास बरानित होतर दर मारा जानर जगना और उन्नर बाव ही आफ्रिकाइ वृत्ति रिल्मी राज्यपन व्यक्तिकारका अन्त हो नया र धैरकाहका एक बच्च ज्छीजा निवन्तरसाह कृति की प्रायस्थते 🕅 कृतस्थर व्यक्तिकसाहका अस्तिकी स स्रोर राज्यके परिचनी जन्म (चंत्राव) पर अविकृत का । हमानूँ कोर कहके बार सरकरके चाप प्रशासने वह सहना राग । बाल्पीयत मुक्के करपाल जनव साल्य-नवपंच कर दिया और संवयसे क्षेत्र सर्वा वर

रिया । इन जनार सुरीवंशका कमका १५ वसके शाराके बाद मध्य हुना ।

अध्याय १

पूर्व-मुगलकालके प्रादेशिक राज्य

जैसा कि वर्णन किया जा चुका है मुहस्मद तुग्रलुङके समयसे ही दिल्ली-साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा था और अनेक नवीन एवं स्वतन्त्र मुमलमानी राज्य यत्र तत्र अस्तित्यमें आ गये थे, जिनमें बगाल, जीनपुर, गुजरात, मालवा एव कश्मीरके राज्य और दक्षिणका बहमना राज्य उल्लेखनीय है।

वगाल (१३४०-१५७६ ६०)---मृहम्मद तुग्रलुङ्गके समयमें वंगाल-के सूवेदार फखरुद्दीनने १३४० ई० में विद्रोह करके अपने प्रान्तको साम्राज्यमे प्राय पृथक् कर लिया था । १३५३-५४ ई० में फ़ोरोजुशाहने बगालके सूबेदारका अधीन करनका विफल प्रयत्न किया था, १३६० ई० में फिर उसने एक प्रयत्न किया और अतत उसकी स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली । तभीसे लेकर अकवरकी विजय पयन्त सूवेदार फ़खरहीनके वंदाज सिकन्दरशाह (१३६८ ई०) बादि जो अग्वदशीय सैयद जातिवे ये स्वतन्त्र सुलतानाके रूपमें उस प्राप्तपर राज्य करते रहे। दशके अप्य राज्याके साथ उनके प्राय कोई युद्ध नहीं हुए कि तु सत्कालीन सभी मुसलमानी राज्योकी भौति गुप्त हत्याएँ, गृह-कलह, उत्तराधिकार संघर्ष, पढ्यन्त्र, विक्वासघात खादिसे इस वंशका इतिहास मी ओत-प्रोत है। धासन व्यवस्था भी प्राय दिल्ली सल्तनत एवं अन्य सभी भारतीय मुसलमानी राज्योंके प्रतिकष ही थी। उसमें मुसलमानो एवं इस्लामका हित प्रधान था और शासन प्राय नागरिक ही था। असस्य ग्रामीण

त्रमानो मुस्कित वैतेक स्तितिहरू साहानते अन्य कोई विदेश सर्गिन काम नहीं वा । किन्तु इस सुवा साम्बोके मुख्यान विस्कोके सुकरानोंके कोमा बाव्यन्यका सन्तिक सहित्य होते थे ।

संवासने नुकारफोर्ने वर्ध-वरिद्ध श्री-स्थाइ (१५९३-१५१६६) वा । यह पूर्वर्श मुख्यान प्रशासना वर्धन वर्धन स्थापन स्थापन वर्धन वर्धन स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन

हारा पणिक हुवा और दुवर्ष वारा पता । विकास इन पुलानीय वारावास्त्री विकासपदार्श्वार वालुकर्में विकासपदा इनका पूर्व जुलर स्वीका कार्यकर, वीर्थ हुनेवास्त्रम्य कारा इन केरी पुरावो नवकिंद, नवराव्याय्वी वसी पुरावो स्वीकेत वीर इस्टाप्ट्रक का ध्यासानी वीरू एवं कार्यक्ष रहार्थ स्वीकेत इन्द्रियाय्व वेताल ध्यासीय है। इन्द्रिया स्वास्त्रम्य इन्द्रे स्वीकेत इन्द्रियाय्व वेताल ध्यासान क्लिक्त कार्यक्ष स्वास्त्रम्य इन्द्रे स्वास्त्रम्य विकास प्रमाण कार्यक्ष व्यास्त्रम्य स्वास्त्रम्य स्वास्त्रम्य स्वास्त्रम्य वेताल प्रमाण कार्यक्ष व्यास्त्रम्य विकासीय स्वास्त्रम्य स्वास्त्रम्य विकास प्रमाण कार्यक्षिय व्यास्त्रम्य विकासीय स्वास्त्रम्य स्वास्त्रम्य विकास प्रमाण कार्यक्षम्य व्यास्त्रम्य विकासीय स्वास्त्रम्य स्वास्त्रम्य स्वास्त्रम्य स्वास्त्रम्य स्वास्त्रम्य

जौनपुर (१३९९-१४७६ ६०)--फ़ीरोजवाह तुग्रलुक्कने अपने भाई जुनखांकी स्मृतिमें जौनपुर नगर बसाया था। १३९४ ई० में उमके उत्तराधिकारी महमूद तुगलुकने अपने कृपापात्र खोजे सरदार ख्वाजाजहाँको मिलकुरुशर्कको उपाधि देकर जीनपुरका मुखेदार नियुक्त किया। तैमरके आक्रमणसे लाम उठाकर १३९९ ई० में ख्वाजाजहाँका दत्तक पुत्र और उत्तराधिकारी मुवारकशाह शर्की स्वतन्त्र हो गया। इसके उपरान्त उसके भाई इयाहीमशाह शकीं (१४००-४० ई०) ने शान्तिपर्वक राज्य किया। वह पक्का मुसलमान था, रक्तपात तो उसने अधिक नहीं किया किन्तु हिन्दुऑपर अन्य सुलतानोंकी भौति जोर-जुल्म किये ही। उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी महमृदयाह शकीं भी सफल शासक रहा । सम्भव-तया इसी सुलतानके दरबारमें कर्णाटकके जैनाचार्य वादी सिंहफीर्तिने बाकर शास्त्रार्थ किया था और जयपत्र प्राप्त किया था। सिंहकीत्तिका समय १४५० ई० के लगभग है । 'अश्वपतेव्तिनतनय-वगाल्यदेशावत-दिल्लीपुरेड महम्मुद सूरीत्राण'-वर्णन उस कालके सुलतानींमें सबसे अधिक इसीपर लागू होता है। तदुपरान्त हुसैनशाह शकीं मुलतान बना। १४७६ ई० में दिल्लीके सुलतान बहलोल लोदीने उसे पराजित करके जौनपुरसे निकाल दिया और उसने जाकर वगालके सुलतानको शरण ली। वहलोलने जौनपुरका सूबा अपने बेटे बारवकशाहको दे दिया, किन्तू सिकन्दर लोदीने बारवकशाहको भी मारकर जौनपुरको दिल्लो राज्यमें ही मिला लिया। जीनपुरके शर्की सुलतान अरबी और फारसी साहित्यके मारी प्रश्रयदाता थे। उन्होने जीनपुरमें अनेक सुन्दर एव विशाल मसजिदें भी वनवायों जिनमें अटालादेवो मसजिद अति प्रसिद्ध है। इनकी निर्माण-कलामें भारतीय प्रमाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

मालवा (१३८७-१५६४ ई०)-मध्य भारतका वह वहुभाग जो उत्तरमें चम्बल, दक्षिणमें नर्मदा, पूचमें वुन्देललण्ड और पश्चिममें गुजरात-

क्रपनि बार्यसी अयपूर बार्रिके उपरान्त परवार्रीके राज्यसानमें बारा नवरीका कन्तर्व हुना । इन्तुप्ततिश्चनै १६वी बाग्रीके नुपर्विते अस्यप्तर मामन्त्र रिया वा और तरशासीन नरमार-नरेवशी वर्णकता स्वीकार करनेपर बाज्य किया था . १६१ में में सम्बद्धीन सम्बदीने मानगरी क्षिपूर(म्पर) बन्त करके वसे बालाज्यका एक शस्त तथा निमा सीर गर्से एक बुनसमान सुवेशार शिवुषत कर विशा । झीरोप पुत्रसूत हे सन्ति बनवर्षे रिफारस्था (११८७-१४ र) शाक्सांश होतार य । य नामनापरी ही दिल्लोके संबीत का बीट रीव्टके आक्रमणी कारान्य मुजकान विद्यानुरीत बोरी (१४ १–१४०५ हैं) के शक्ते बनने बनने बारणे नावराता रचतत्व नुस्तान योगित कर दिया तथा गरास्म नरिरमान करके जान्यु (अन्वरंपूर्व) को अश्ली राजवानी बनाया । वसके पुत्र बातपन्ती वा 'कान्याक्षि' वचनाव गुक्तान हीर्यायबाह होती (१४०५-१५६२ ई.) ने जिलाको निव देकर शान्य आन्य किया और मान्य प्रम वानीको सुन्दर-भूत्रार जनलेखे सर्वपूत्र किया । वृत्रदारावे सुन्दान कार्ये ब्रमान क्षम में १ १४ ८ ई. में नुजरतको बुक्ताम भूतकारों पर गए दिन करके बन्दी यह किसा किन्दु एक वर्ष शहर कुछ कर दिया । मान्सी श्रीर पुजराठके बीच नावने की विस्तार बुद्ध चलते रहे, कवी एक स्वामें बोत होती क्यो हकरेके : होरांच गोरीका पुत गुरम्बर गोरी (१४३६० १४२५ ई.) जगान गुलामधी और नशनायी था। अबके समी म्ह्रमुद्र बाक्सी (१४१६-१४८२ ही) में सिए नेवर क्ष्में प्यार साम मीर स्वयं गुल्यान वन वैश्रा । जासकोड बुक्तानीनें वह बच्चीका बीम्न न्वन्ति बा। पुरुपार्य पुल्यान बहुक्ती गुल्यान और शबरनाली पनपूर्ण

राने बढक प्रचान यानु में और बनके बान बढके विरस्तर मुद्र पर्छ । इतिहासकार क्रीरकारी बढके लाग बावन और वरिक्की वडी प्रचंका में

*1=

वास्तीय इतिहास । एवं परि

वे वेदिन हैं सामधा पहचाता है। वह वर्षर व्यवस्त में नुरान गरेव विश्वास तक मारी शांस्त्रतिक वेन्द्र भी पहर । आचीन राजपार्टिंगे

है। उसकी हिंदू और मुसलमान प्रजा समान रूपसे सुखी और सम्पन्न भो। चित्तीड़के राणा कुम्भके साथ उसके जो युद्ध हुए उनकी स्मृतिमें राणाने चित्तीहर्मे कीत्तिम्तम्भ वनवाया और महमूदने माण्ड्में । उसका पुत्र सुल्तान ग्रयासुद्दीन (१४८३-१५०१ ई०) विन्लीके सिकन्दर लोदी, गुजरातके महमूद वेगडा, खालियरके मानसिंह तामर और चित्तीडके राणा रायमल्यका प्रतिद्वन्त्री था। उसका पुत्र नासिक्होन (१५०१-१५१२ ई०) भी अपने पिताको विप द्वारा मारकर सुलतान बना, वह बहुत दूराचारी और निर्देगी था। उसका पुत्र महमूद द्वितीय (१५१२-३१ ई०) इस वशका अन्तिम मूलतान या जिसे १५३१ ई० में गुजरातके वहादुरसाहने पराजित करके मार दिया और मालवाकी अपने राज्यमें मिला लिया। १५३५ ई० में हुमायूँन मालवाको गुजरातसे छोनकर अपने अधीन किया और मालवाके राज्यवदाके ही एक व्यक्तिको जो उसके आश्रयमें चला गया था अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। मिन्तु हुमायुका अधिकार अल्पम्यामी ही रहा। अन्तत मालवाके बाजग्रहादुरको १५६४ ई० में अकबरने समाप्त करके इस प्रदेशको अपने राज्यमें मिलाया । वाजुबहाहर और व्यवनतीको प्रेम-गाया सुप्रसिद्ध है।

मालवाके इन सुलतानोंने माण्डूका विशाल सुदृढ़ दुर्ग एव नगर, दिहाला महल, जहाज महल, बाजबहादुर और ख्यमतीका महल आदि सुन्दर राजप्रासाद, भव्य जामामसजिद, होशा गोरीका सुन्दर मक्रवरा आदि अनेक कलापूण दशनीय कृतियोंका निर्माण किया जिनमें माण्डूके प्राचीन जैन एव हिन्दू मन्दिरोंकी सामग्री भी प्रयुक्त हुई। वे धर्म-महिल्णु भी ये और हिन्दुओंपर उन्होंने धर्मके नामपर विशेष अत्याचार नहीं किये। सुलतान होशा गोरी अलपखांके समयमें, १४२४ ई० में दिल्लीके मूल-मधी मट्टारक शुभवन्द्रके उपदेशसे इस सुलतानके राज्यके सघपित होलीचन्द्र आदि अनेक धनी धावकोंने देवगढ़में सीषकरों और गुरुऑंकी कई प्रतिमाएँ निर्माण कराकर भारी प्रविद्योत्सव किया था। शिलालेक्समें

पुणनामको यो बहुत प्रशंका है। साक्षमाने इस नावमें दिसम्बर मान्यानेके नरिर नाडा बीर सेन्संबंधि नई ग्यु विश्ववान में । समेक दिला बीर चैन माध्य राज्यमें कथ्य राजधीन वरोपर जी निमुक्त में जिनमें ने एवं बैनबंध बहुत प्रसिद्ध हुआ--नांचर्यात शत्मन तुवैद्यार विस्तरपाणि पुत्रजोके लगउने राजनानी मा । क्याका पुत्र नाहर त्यर्थ विकासको बंपनाम विद्यानुद्दोल श्रोरीचर बल्धी का बीट बचना बाई रख बी । बाहर का पुत्र नच्यन भूकतान होर्घव होरीका बहाप्रवान का प्रवान कनी वा ह मा बडा मादन पुरुष और शाम हो नहार्ग रिश्चम् एवं साहित्सकार को । कान्यवस्था सा कीरव-याग्यनीसक्ष्यका गर्यवारकपान संबोधननान राध्यन्तरस्या वर्तन निरिवरियक्त महत्त्वपूर्ण बल्लोकी उडने रचना नी वो बोर वह प्रविद्यारिकास बहुवात वा । शक्तके वचेरे वार्र र्वपरित वनस्थानो यो ४४३४ ई. वे स्वरूपकारी रचना की वी। रान्तराध्य बच्चतके ही बोक्या सेव राजक अधीरा सुस्ताम ज्यानुहीत बामनीयां क्यी वा और क्षेत्र 'क्यूब्स-ब्रोक्ट वी प्रचार अंच मी । इतरा वर्तामा पुंचरात जो क्षम्य परसर साम्रीम ना वर्ष दिन्द्रमा धन वजीर कहलाका का और आधी निवाल था। १५ चै वे बंबरे बाररनदर्शास्त्र्य नामक अवकरणकी दीवाओं एक्स की बी. बीर क्कमें हेरचार इंतरबूरिने अधितानशीरतयो रचया की यो। वसा<u>य</u>ांनके समझे हो १४९७ हैं ॥ जुलशोधिके हरियंसपुरामको एक अस्तिविधि बैद्धर नगर्वे करानी करी थी । जा रश्च है कि मुख्यनार पूरेवारी बीर गुक्तालॉफे राक (अवसर १६ ०--१५५ 💲) में साम्नाने मिन्द बीर मैंन बच्ची सरस्वानें में । इब शास्त्री समग्र मैंन-प्रीपर मी मान् प क्षण स्थानीमें पाने वादे हैं। कुलाखेंती वार्तिक क्षात्रका समस्य है इसमें बावक की । धुत्रकार (११९१-१५७१ ई.) वा पूर्वाचेक क्रिके दुरान की नहां कारा का कीर निकर्ने काहिमाबाह बरिमांकत है. माकवाकी कीरी

भारतीय इतिहास (दक् घरि

हो समृद्ध. सूरम्य और चवर प्रदेश रहा है। समृद्रतटके निकट होनेके कारण विदेशोंके साथ समुदी व्यापारका भी वह प्रमुख द्वार रहा है। १२९७ ई० में अलाउद्दीन खलजीके सेनापति चलुगर्खी और नसरतर्खा ने कर्ण बचेलेका बन्त करके इस देशको दिल्ली-साम्राज्यमें मिला लिया था. और सभीसे दिल्लीके सुलतानोंके सूवेदार यहाँ शासन करते थे। १३९१ ई० में जफ़रखीं गुजरातका सूवेदार नियुक्त हुआ। वह नाम मात्रको हो दिल्लोके अधीन था। १४०१ ई० में उसने अपने पुत्र तातार-खौको सुलतान नासिरुद्दीन मुहम्मदशाहकै नामसे गुजरातका स्वतन्त्र वादशाह वना दिया। किन्तु १४०७ ई० में स्वय ही उसे विष देकर मार डाला भीर मुजपक्तरशाहके नामसे स्वयं ही सुलतान वन गया। १४११ ई० में उसके पोते अलपर्खांने उसे भी विप देकर मार डाला और अहमदशाह (१४११-१४४१ ई०) के नाममे सुलतान बना । कर्णावतीको अहमदा-बाद नाम देकर उसने अपनी राजधानी बनाया और उसे इतना सुन्दर बना लिया कि विदेशी यात्री इस नगरीकी भूरि-भूरि प्रशसा करते थे। वहमनी सूलतान फीरोज उसका मित्र था तथा मालवाक सुलतान, चित्तीह-के राणा और असोरगढ़के राजा उसके प्रधान पशु थे। वह निरन्तर मुद्धींमें संलग्न रहा और प्राप सदैव सफल रहा, फलस्वरूप अपने राज्यका उसने काफ़ी विस्तार कर लिया। हिन्दुओं के मन्दिरों को तोडना, उनपर **अत्याचार करना और इस्लामका प्रचार एवं मुसलमानोंकी सस्या बढाना** सभी सुलतानोंका ख्व्य था, उसका भी था। किन्तु ये कार्य युद्ध और विद्रोहदमन आदि अवसरोंपर, सो भी प्राय दिखावेके लिए ही अधिक किये जाते थे। सामा यत अपनी हिन्दू, जैन प्रजाके साथ उदारता और सहि-ब्ल्ताका ही बर्ताव होता था। उसका उत्तराधिकारी सामान्य श्रेणीका व्यक्ति था, किन्तु पोता सुळतान महमूद वेगझा (१४५९-१५११ ई०) अपने दोर्घ-कालीन शासन, विवाल काय, दानवों-जैसे भोजन, चारित्रिक विशेवताओं बौर कार्य-कलापोंके लिए दूर-दूर प्रसिद्ध हो गया। राज्यकी भी उसके क्षमाने सर्वादिक काहि 🚰 । यह वहर नुस्तित का और पुर्दीने शतः बरेंद बक्त मी दहा है कामूनेट, बहोसा और जुसासके दुनौंसे बक्ते इस्तन्त किया । तुर्वीची बक्षामधाते वक्ष्मे पूर्वगाविक्तेको त्री इरामा किन्द्र बारवर्षे क्यूँ बाहुर क्विकानेमें बसमय था। वश्यापे ही विदश्य करतेकी मारहके कारण बसका विवासन खरीर विश्वतर जल्मी वी बैस्टे ही भर माती थी। निरमका बच-मारह केर होच बोहम, कमर तम करण्यी बाढ़ी बीर हिरके पीके क्येटकर वॉवनेवाको मुंकीने क्ये अंबारका नार्या क्या दिवा का । बहुका स्वयूक्ति सर्वाद्यमीदका कर्ता बहुक्य व । इंड पुंच्यालस्य करायविकारी विकास्ता का किन्तु नीवा बहादुएकम् (१५२६-३ 💰) बन्तिय तुक्तालॉनें दर्वीतिक वहत्तपूर्व ग्राः । वस्ते माकाले असूर बक्रमीको परामित करके ६-४ वर्ष सक्ताको अपने राजनें क्लिने रहा। १५३४ ई. में वचने विशोह नियम किया और नहाँके गोरोने बोहर करके बरुगा बन्त निव्याः किन्द्र १५६५ हैं. में हमाने वरे नुधे राख् नधानत मिना बीट वनने वावकर समयाने धरण मी । हुनाबुँके सोट जानेपर वह फिर क्ली पान्नपर अपिकृत हो वन्न । १५६७ ई. में २१ वर्षको बाजुनै पूर्वपारिकाणि जिलके बाग कको बैधी हरिय कर हरे थें।, विश्वशतकारा वहायुरवाहका वय कर शिका। वर्षे निस्तरपान या । प्रथमे बाद देखने बराज्यका और कम्पशन्य हो। प्रथमें प्यो कई पूर्वत बारक हुए, हत्यानी और कर्यन्तीका बोक्सम्ब प्रा क्फार १५७३ में बचनाने पुत्रपत्तको विका करके अपने बावाजाने Best Best a

पुत्र पान के कुथानोंने शासानी शहकात्मको यह नामने स्परिष्ठ कुप्तर स्वात्मधी बता दिशा हो। अनुनि शहकात्मसः कामत दाप सन्द रामानी नोक सरण्य प्रकीत एवं कातुम दायाँ जगाती तिनर्द दिष्टु मीर सैन-कामा सरका अस्तर है। भूषणार्वे स्वर्तन्त्र स्वार्थने स्व जीरपानेस स्वाता और हेंड से सिस्केल सहितांस वह सम्बन्धे गद बादिके प्रसिद्ध मिंदर उस कालमें भी अधिकांशत सुरक्षित रहे और हुछ नवीन भी बने । इस कालमें दिगम्बर आम्नायके लाटवागट सपका नी इम प्रदेशमें काफी प्रभाव था। १५वीं दासाय्दी तक सूरत, सीजित्रा, मटोच, ईडर आदि कई स्वानॉमें दिगम्बरी भट्टारवोकी गहियाँ स्वापित हो चुकी थीं और उनमे-से बाचार्य सवलकीत्ति, ब्रह्म श्रुप्तसागर, ब्रह्म नेमिदत्त, ज्ञानभूषण, गुभवन्द्र आदि अनेश विद्वानोने विविध्यिषयक विपुल सस्कृत-साहित्यनी रचनाकी यी। इनके अतिरिक्त जिनेश्वर और मद्रे-व्दरको कथाविलियौ (लगमग १२०० ई०), प्रभाच द्रका प्रभायकचरित्र (१२७७ ई०), मेरुतुगको प्रवन्य चिन्तार्माण (१३०५ ई०), जिनप्रभ-सूरिका विविधतीर्थकल्प (१३३२ ई०), राजदोखरका प्रयाधकोष (१३४८ ई०) आदि महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्राय भी मुसलमानी कालमें ही लिसे गये। उपरान्त कालमें भी जैन मुनियों, यतियों श्रीर विद्वानी-द्वारा साहित्य-सुजन होता रहा । १५वीं शतीमें अहमदावादमें जैन-ग्रं योंकी प्रतिलिपियाँ करनेका कार्य कई सस्याओं में घडे पैमानेपर होता था । इमी कालमें बहमदावादके लींकाशाह (१४२०-१४७६ ई०) नामके एक जैन सुघारकने मुनलमानी शासनकालको मन्दिर और मूर्त्तियोंके प्रतिकृल समझ-कर मन्दिर और मूर्तियोका विरोध किया। उसके द्वारा प्रचलित लुकामत-में, जो कालान्तरमें जैनोका श्वेताम्बर-स्थानकवासी सम्प्रदाय कहलाया, मूर्त्तिपूजा निपिद्ध मानो जाती है। नारायणके पुत्र मण्डनिमद्र (१४३० ईo) अहमदशाहके राजवैद्य ये और चनके पुत्र अनग्तने १४५७ ईo में काम-समृहकी रचना की थी। क्तयमीर (१३००-१५८६ ई०) — कडमीरमें १३यों वाती ई० के अन्त तक उत्पलवशी हिन्दू राजाओका स्वतन्त्र राज्य धना रहा। १४वीं पासी-के प्रारम्ममें स्वातके शाह मिर्जाया मोर नामक मुखलमानने जो अन्तिम पूर्व-सुगलकालके प्रादेशिक राज्य

४३३

पे। जैनियोंके देलवाडा, आन्, रात्रुषण, गिरनार, अहिलवाडा, अहमदा-

राजाका कली वन गरा या राजाकी भारतर विद्वालय इंडाका कर क्रिया बोर परमीरका गुणवान वन बैठा । इब वंदरा करा मुख्यानं बिरान्टर (१६८६ १४१ में) वक्ष कर, जानाचारी जीर वसीन वा व र्दम्पके बाजनकर जीवाराये करवीरकी एका ही क्यी फिल् सिनक्सके क्रम्याचारीय विकास दिश्व जनतायो वृत्रक्रमान वन्त्रेयर विकास कर दिशे । त्रवेड दिग्दु देश क्षोतकर चने तम । जो रत वर्ग बन्धर वर्षिया स्था बोर वर्डो दुरपायें करवा -वीवव बीठा । यत्वरी बीर वृत्तिवींश हो पह

हैना धनु वा कि बक्का बाब ही वॉल-बंडफ वट बना। किन्तु वहके क्यरान्त नाठनी नुक्ताल वैनुवजानकील (१४१७-१४५७ ई.) कार्य विवर्तन निगराठ या । यह यहा वर्षाच्यु और क्यार या । वक्ने दिनुसी-बर-४ श्रीवया कर क्या दिशा जिलांकित दिल्यांको किर देवने वास बुक्त क्रिया बीर उन्हें क्लीन बॉनराफे निर्वाचकी वो बहुई अनुसीत है हो । क्याने राज्यमें भोजन बन्द करा निवा, बद्ध रचने भी जान में बाया ना एक्सनीवडी और वड़ा क्याचारी या । क्वमें बंख्या और अस्से क्षणीके बनुवार करावे और काशिएन चंचीत एवं विवस्त्रकाची गाणी

प्रोत्त्रसूत्र दिया । यह बारी प्रमाना प्रक्रमानन हो पना और दल कुन मान्य जाने क्या जान की क्रमंत्री 'युक्ताव्' क्रमंत्राकृ' धानते को नार

करते हैं। बढ़के बात कई बाबारन वर्ग सर्वान्य प्राप्तक हर। हकारी कायोरकी दिवय करके जाने एक बन्दनती दिवाँ हैंदर (१९४१-५२ हैं) गी कस्मीरमा सामक निमुत्ता किया । स्तूपरामा एवं देवमें चावश्वका राज कम निवका १५८५ ई. ये वस्त्राती तथ करके क्रमीएको असी बाधानमें निका निवा । बद्धमनीराज्य (१२४७-१५१६ हं)--इतन शतक दर्ज दुर्जे य हैं तथी जिलाही बीमाताबावके भेतु नामात बाह्याच्या केवल मा । एवं बाह्याच्या शो क्रुपाने इकाश करवर्ग हामा कार नह अल्लेन्सरशो इकार्गपु लक्षी भा । चक्ररशां क्यांन वारम करने वह व्यक्तिवंत्रन करने बना और

भारतीय इतिहास एवं सी

१२४७ ई० में जब मुहम्मद तुप्रजुक सामाज्यमें सर्वत्र विष्लव एव विद्रात् हो रहे चे जकरखीन दौलताबादपर करका पर लिया। वह अपने-आपनो ईरानमें बहमनशाह-अरदशीर-दराजरस्तका वंदाज कहता था बत. अलाउद्दीन बहमनशाहमें नाममें दिन्गापत्रका स्वतत्र्य सुलतान वन वैठा। उमने हो बहमनी-राज्य और बदाकी स्थापना की और कुन्यर्ग (गुन्यग) को अहसानावाद नाममें अपनी राजधानी बनाया। १२४७-१२५८ ई० सक उसने राज्य किया।

दक्षिणमें १३३६ एँ० में मगमके पुत्रा-द्वारा विजयनगरके हिन्दू-राज्यकी स्यापना बहमनी राज्यको स्थापनामें प्रधान प्रेरक थी। उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पिइचममें प्रदेश विजय करके उनने अपना पर्याप्त राज्यविस्तार कर लिया। अय सुलगनोंकी भौति वहमनी-सुलतान भी कहूर मुसलमान थे, हिन्दुमा और उनके घमवे विदेषों शत्रु ये तथा निर्देषों एवं रमसिपामु थे। उनके प्रधान राजनैतिक धत्रु विजयनगरके हिन्दू सम्राट् थे, जिनके साथ प्रारम्भसे अन्त तक उनके निरन्तर युद्ध चलते रहे। उत्तर और पिष्वममें मालवा एव गुजरातके मुलतानोंके साथ उनके राजनैतिक मम्बन्ध कमी मित्र रूपमें और कमी शत्रु रूपमें चलते रहे।

जमका उत्तराधिकारी मुहम्मद्याह प्रथम (१३५८-१३७३ ई०) अस्यन्त नृशा हत्यारा था, नरसहार करनेमें उसे आनन्द आता था। विजयनगरके साथ उसके भीषण युद्ध निरन्तर चले जिनमें लाखों ध्यवित मारे गये। इस नरपशु मुलतानको पौंच लाख हिन्दुओं को हत्याका श्रेय दिया जाता है, देशको जनसंख्या अत्यधिक कम हो गयो अन्तत दाना पक्षोंन यह निर्णय किया कि मुद्ध-वन्दियो एवं युद्धमें भाग न लेनेवालों को हत्या न की जायेगो। राज्यका सुयाग्य मन्त्रो सैकुद्दोन गोरी प्रथम मुलतानके समय हा चला आ रहा था और छठे सुलतानके समय तक उसी पद्यपर चलता रहा। उसके कारण आन्तरिक शासन बहुत कुछ सुल्य वहियत रहा।

१२४१ ई. मे १३९७ ई. के बोच २४ वर्गीनें बीच मुख्यान नहींगर बैठे । इब बाक्ने विजयमनरका नजार हरिहर शिक्षेत्र वा बा मी म्पानितिष ता. बार. रोनों राज्योंके बीच प्रायः बार्टन स्त्री । बारपी मुनगर क्रीरोड (१३९३—१४९९ ई.) वा को मुझ्यासम्बद्धद्वरसम् ही एक मनीमा का - बनके शामके आराज्यमें ही महाराष्ट्रमें देरे वर्षश मीरण मदान पता । यह नुपताल मी वहा वृद्धंह वर्ष हिन्तु-स्त्रियी. मां । वंड पित्रकारणे नाथ रिल्यार वृद्ध करणा रहा । एवं बाद दी वह स्मी नाम श्रम विकासमान्या चेता काले बड़ा रहा और पुत्र सम्बंधि निए नवर्षी प्रवेद अपनेत्रे को शक्तव हुवा जनने ही हिन्दु-करहारोंने की विकार निया या जिसमें ने एक विश्वमानरणी राजपुतारी बद्धारी बाडी है। गर र्रताहर्वेकी बार्रातम को चारने कहना था, शराबका बडा निवस्कर की. वरीवारा को मारो त्रेकी या। चनके हरवाँ शिवात देवोंकी तैरारी रिपर्स में। और नहते हैं कि यह क्य करने क्योंनी नामानॉर्ने कर्याकी गर नशक्त का । जूरेंगणी नारिजी इसे अल्य कर्तुमीको का नीमा कीर पंत्रीतके शार्ति प्राप्त करता ना । बीलाके किनारे झीरीबानार नगर बनने बनाया और बड़ी एक हुथ और बहुक जनवादा । हुन्दर्वेते वस्त्री मनेव बुन्दर प्रस्त जनगरे जिल्ली वास्त्रस्थित वर्षेतीन है. मीर बागुर्व भारतमें फिन्हों संबंधिं वर्ततीय बनहीं चरती है। वर्षके बनसें बहुमी चान अपने परमीत्कावपर था । विशवनवरके बान अपने अस्तिन पूर्व (१४२ वें) के बह मुक्ते तच्छ बस्तीक हमा निकार बस्तीये मह भीम ही यर गया।

कानुगा एवं मुख्यानको सबसे नाई स्वास्थ्याई (१४९६-१५ ई) ने बद्दाना-प्रारं अध्यान करके बाद शस्त्र वा बीद नह नार्थ मुख्यान कर किए। हिन्दु-पोर्डेच यह स्वरंत्र पुरिस्ति को सार्थ वर कथा। होचित्र की प्रधानका शस्त्रा केले किए तकते दिवसकार प्रान्य पर मीन्य नामान्य किया और मित्रकार प्रस्तुके को अपनी मुझे निसे केस कर्यना लासाको सन्यामें वध किया, खेती उजाही, जननाको सूटा और इस सम्बाधमें पिछली सन्धियोंको भी अवहेलना को । उसने १४२४-२५ ई० वारमलके हिन्दू राज्यका भी जात कर दिया। इसके राज्यकान्त्रे प्रारम्भ-में भी नयकर अकाल पड़ा। गुजरात और मालवाक सुल्ताना तथा कॉरणके हिन्दू राजाओंके साथ भी उनन युद्ध किये। तदनन्तर गुजरातके साथ मैत्रो-सिंध कर लो। उसने राजधानी कुलकर्मका स्थाग करने बीदरका स्थाना-निति का दो। यह नगर अधिक स्वास्थ्यप्रदे था और इस उसने सुदर बनानेका भा प्रयत्न किया।

उसर पुत्र अलावहान दिवीय (१४३५-५७ ६०) ने विजयनारक साय फिर युद्ध छेट दिया जिन्तु दोना राज्योमें आसत सिंध हो गया। सुलतान मद्यपान और विययमोगम फैंग गया। दरबारम दिलाणे अमीरों, जा अधिकांसत सुन्नी थे, और विदेशी अमीरों, जो अधिकांसत दिया थे, के बीच बटा समर्प और कलह चलन लगी। दिलाणे दलने हलारा विद्यो मैयदो और मुगलोका विद्याममानपर्वक वम्र कर हाला जिनमें अत्मद्याहका सहायक और मत्रो खलप्रहमन भी मारा गया।

थलाउद्दीनका पुत्र हमायूँ (१४५७-६१ ६०) भारी हत्यारा धा और अपने उमुक्त जुल्मामे मारण यह जालिम कहलाता था, म्प्रो-पृष्य आवाल वृद्ध सभोको जिसपर तितर भी विद्रोहका सन्देह होता वह भीपण यात्रणा देवर मरवा डालता। अत्तत उसके सेवकोंने इस मद्यपायो नर-पृशुका वय कर दिया जिससे सारी प्रवान आनन्द मनाया। किन्तु उसका प्रया त्वाजा महसूदगर्यों अन्यन्त योग्य व्यक्ति या और उसके उत्तराधिकारियोंके समयमें भी कुदालतापूर्वक धासन-भवालन करता रहा।

हुमायूँका उत्तराधिकारी घोट समय ही राज्य कर पाया, तदनन्तर मुह-म्मदशाह तृतीय (१४६३-८२ ई०) सुलतान हुआ और उसका सफलता एव उन्नतिका प्रधान कारण उसका राजनीतिनिषुण, कुशल सेनानी, सुयोग्य शासक एव विचलण मात्रा महमूदगर्वी था। १४७३ ई० में उसने वेलगाँव- या पुरूष को निवय किया जोमानद स्विकार किया सबसे को बाते करें कर समय सबसाया सामगा दिया १४८६ में में निकल्पित समय सामगा द्वारा १४८६ में में निकल्पित सामगा को कुमान के मान में मान में मान में निकल्पित की सामगा मान सामगा सामगा मान सामगा मान सामगा मान सामगा सामगा मान सामगा स

राज चौन-विकासने हो नस्य रहता ।

हुर्ग, ममजिर्दे, महल आदि उन्होंने अवस्य वनवाये, मुमलमानी विद्याको भी प्रोत्साहन दिया तथापि घान्तिपूर्ण सास्कृतिक कार्योके लिए नृशस सुलतान उपयुक्त ही न थे।

बहमनी-साम्राज्य विखरकर जिन विभिन्न स्वतन्त्र मुमलमानी राज्यों में परिवर्तित हुआ उनमें सर्वप्रयम वरारकी इमादशाही (१४८४-१५७४ ई०) यो। बरार (प्राचीन विदर्भ) वहमनी-साम्राज्यका पुर उत्तरी मूबा था। १४८४ या १४९० ई० में फतहुल्ला इमाटुल्मुल्कने, जो पहले हिन्दू या, अपनी स्वत त्रता घोषित की। उसके वशमें चार सुलतान हुए और १५७४ ई० में इस राज्यका अन्त होकर यह अहमदनगर राज्यमें ही मिल गया जिसने इस सूवेको १५९६ ई० में अकवरके पुत्र मुरादको है दिया।

वीदरकी वरीदशाहो (१५२६-१६०९ ई०) — अन्तिम बहमनीसुलतान महमूदका मन्त्री कासिम वरीद १४९२ ई० से ही सर्वेसर्वा हो
गया था, १५२६ ई० में उसके पुत्र अमीर वरीदने बहमनी राज्य और
वराका नामके लिए मी अन्त कर दिया और अपने-आपको हो नुलतान
धोपित कर दिया। १६०९ ई० के लगभग इस वशका अन्त करके उमके
राज्यको बीजापुरने अपनेमें मिला दिया। बीदरमें अमीर अरीदकी दरगाह
तथा एकाध अय इमारतोंको छोडकर इस छोटी-सी सल्तनतके सम्बन्धमें
कुछ उल्लेखनीय नहीं है।

गोलकुण्डाकी छुतुवशाही (१५१८-१६८७ ई०) वारगलके प्राचीन ककालीय शज्यके प्रदेशपर स्थापित हुई। मन्त्री महमूदगर्वा-द्वारा नियुषत इस प्रदेशका सुवेदार एक तुर्की सरदार सुलतान कुलो-कुतुवशाह इस वश और राज्यका सस्थापक था। १५१८ ई०में वह स्वतन्त्र हो गया और ९० वर्षकी आयुमें अपने पुत्र जमशेद (१५४३-५०ई०) द्वारा मार ढाला गया। जमशेदका माई इब्राहीय (१५५०-८०ई०) इस वशका सर्वमहान् शासक था। गोलकुण्डाके सुलतान विजयनगर, वोजापुर और अहमदनगरके

संबर्ध एवं युव्जेनि प्रायः बसन ही नहते ने किन्तु १५६५ है के विवन नगर विरोधी चेवने दशाहीन भी तम्बन्धिय था। इतका पानन वर्णा ग्रा दिनुशेंवर क्यिंग अत्याचार नहीं हुआ वरण वे ग्राम-वेपारें मी बहुनंदवानें निज़्या होतें में और क्रांग्रे-क्रांग्रे क्रेंदें क्रांची माध्य कर केंद्रे में। तनर पुत्र मुक्तवर पुत्री (१५८०-१६११ ई.) के बपाल्य इन गरन को सरशीत होने करी। और यह जुल्ल सम्राटीनी जाम क्वीक्तान ही चन्ता रहा । १६८७ वें ये बोरंक्डेबने क्लबा कर्म्या बल कर दिसा। जनमं पूर्वमातले हो पारंकारण स्वाब करण ओक्ट्रस्टाणी राज्याची बनामा का जुक्तान इक्क्शानक नवसमें इन वसरणी बहुन बनति हों। हुनुषयाही जुलगानाके जुलार बक्रवाचे श्रीअनुस्तार और गुरूर क्रिकेट सिद्द तथा अपनी होरेजी सामके (बद्द बोस्कूनसा प्रतिज्ञ है। बार्स सीमन रिजारे बाता-विवरमके अनुवार इस बदरमें क्ष्म नाव्यी नहीं दुनर बेममन्तर को थे। १५८९ वें में काफे अस्तात्कार होनेके धारण मानगवर (हैदरानाय) को शानवादी बचावा वक्ष की नामान्तरमें वरिवार দ্বী নিৰাপ বহাৰলৈই ছবিত্ৰ অনকাৰী ধৰা

महारावणारकी निवासकारी (१४६०-१६६ हैं)—तैया में स्वापने स्टार्ग की विवासकार कि बात निवासकार के स्वापना के स्वापना के स्वापना के स्वापना हैं की जाने भी नवते और उसके प्रध्या की स्वापना के स्वापना के उसके प्रध्या की अपने के स्वापना के उसके प्रध्या की प्रवाद की स्वापना करने के स्वापना करने के स्वापना करने प्रध्या करने का अपने का अपने

राज्योंके साथ बराबर छहता रहा और १५५० ई० में उसने विजय-नगरके साथ सन्धि करके घीजापुरके विरुद्ध उसका साथ दिया। उसके उत्तराधिकारी हुसैनशाहने १४६५ ई० में विजयनगर विरोधी मधमें सिक्रय भाग लिया और उम महानगरीको लूट तथा हिन्दू-राज्यके प्रदेशों-में अपना हिस्सा प्राप्त किया । १५७४ ई० में उसने बरार राज्यको विजय करके अपने राज्यमें मिला लिया। तद्परान्त निजामशाहीकी अवनित होने लगी। सम्राट् अकवरके पुत्र मुरादके आक्रमणीमें अहमदनगरकी राजकुमारी और तत्कालीन वालक सुलतानकी वुजा चौंदबीवीने, जा कि वीजापुरके सूलतानके साथ विवाही थी, अहमदनगर आकर अपने भतीजे-के राज्यकी बोरतापूर्वक रक्षा की थी। अन्तत १५९६ ई० में बरारका सूवा लेकर तथा चौदसुलत।नके साथ सन्वि करके मुराद लीट गया। १६०० ई॰ में मगुलोने फिर आक्रमण किया और इस बार चाँद सुलताना युद्धमें मारी गयी। किन्तु पूरे राज्यपर मुग्नलोंका फिर भी अधिकार नहीं हुआ। १६३७ ई० में शाहजहाँने इस राज्यका सर्वधा अन्त किया।

वीजापुरकी श्राविलशाही (१४८९-१६८६ ई०) इन समस्त सस्तनतों सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसका मस्थापक वीजापुरका बहमनो स्वेदार मूसुफ आदिलखाँ था जो १४८९ ई० में स्वतन्त्र हुआ और यूसुफ आदिलखाँ था जो १४८९ ई० में स्वतन्त्र हुआ और यूसुफ आदिलखाँ (१४९०-१५१० ई०) के नामसे बीजापुरका प्रथम सुलतान हुआ। वह शिया मुसलमान था और १५०२ ई० में उसने इसी धर्मको अपना राजधर्म बनाया। विजयनगर तथा दक्षिणको उपरोक्त मुसलमानी सस्तनतोंके साथ उसके निरन्तर युद्ध चलते रहे। सुन्नी होनेके कारण उन्होंने उसका और भी विरोध किया। गोआको उसने अपना प्रिय आवास बना रखा था, जिसके लिए पूर्तगालियोंके साथ इसके युद्ध हुए, अन्तत उन्होंने १५१० ई० में उस नगरको अधिकृत कर लिया और यहाँके मुसलमानोंका बुरी तरह सहार किया। इस सुलतानने मराठा

नारार कुन्नराधोगी वहिंको बान निर्मा देशा उस राधी थे। सन्द हिनुसीर पार्मी क्यान स्वीर मी हिनुस्त हिना । कर्क पार्मी स्वीर स्वार्णिय कार्यी मालका के स्वीर होता वा वर्ष स्वारम्वस्थान कार्य प्रदेशमा, जाती जुनार, मुध्यिक, विचार्यिक कीर मैंनू स्वीर स्वार्णिय स्वार हो कार सीर वहिंग्यू भी वा । वीरानुस्त दुर्केश स्वीर वृत्त निर्माण क्याय वा ।

वन्ता पून क्रमाच्याय (१९१०—११ ई.) को नगार छोटी द्वार या बानी रिनारी बंगि हो गुरोबा था। मुक्तम बाने वर्ग वर्ष यात्रव या स्था काले बंगब्ध और बानी कालकार्स नर्ग गर्म इन्तरक करना नाहा रिनार्ड केर कुछ कथा सीर वहां गर्ध कथा। इन्तर्य मी कोगी पार्ट्यों बान क्षत्रम स्थाग ग्रा अधि रिजन्मपारे गार्ड्य वर्ग देशा क्षत्र केर्म केर्न कर्म क्षत्रम ग्रा हिम्म वर्ग क्षत्र क्

ण्यका पुत्र मधी मारिसमाझ (१५५७-८ ई.) स्मृर किया व बीर कुवियोंका निरोती था। १५५८ ई. में रामधानाने बार वनि फरके उसको सहायनामे उसने छहमदनगरपर आक्रमण विया और वहीं निर्देयताके माथ लूट मार को । इस अवसरपर रामराजाने मुसलमानापर जो अन्याचार किये बोर उनके प्रति जैसो घृणा प्रदिश्ति को उसस मभो सुलतान आपसो सगराको मुलाकर उनका अन्त करनेपर किरबद्ध हो गये। इसी उद्देश्यमे आपसो सम्बन्धोका और अधिक पुष्ट करनेके लिए उसने छहमदनगरके हुसैन निजामजाहको बहिन चौरवीकोके साथ अपना और उसको पुत्रोके साथ अपन पुत्रका विवाह कर लिया।

१५६४ ई० क दिमम्बर मासमें बोजापुर, अहमदनगर, बोदर और गोलकुण्डावे स्वतान अपनी-अपनी सेनाओ-सहित सालिकोटामें एकपित हुए और १५६५ ई० के प्रारम्भमें मंगलवार २३ जनवरीके दिन क्षालि-कोटासे २५ मील दूर उनका विजयनगरको सेनाक माथ भीषण युद्ध हुआ। वृद्ध रामराजा और उसके थीर मैनिक अत्यात वीरताके साथ लडे और उन्होंने मुसलमानोंके पैर उसाह दिये । किन्तु विजयनगरके दुर्भाग्यसे मूछ हापा भडक गये, गडबडमें रामराजा बन्दी हुआ और तुरन्त उसका सिर काट दिया गया, हिन्दुकोमें भगदंड मच गयी, मुमलमानीने बड़ी निर्दयताके साथ हिन्दुऑका सहार किया और लूट-मार करते हुए विजयनगरपर चढ दौड़े तथा कई सप्ताह पर्यत उम महानगरीया ऐसा भयकर विध्यंस किया जिसका बन्य उदाहरण नहीं। सभी मुसलमान सुलतान घनी वन गये और विदोपकर अली आदिलदाह अपार धन लेकर बीजापुर लौटा। १५७० ई॰ में सुलतानने अहमदनगरके साथ मिलकर पुतगालियाकी बस्तियोंपर अधिकार करनेका विफल प्रयत्न किया । १५७९ ई० में एक खोजेके हाथो अली-वादिलसाहको मृत्यु हुई ।

उसका पुत्र इवाहोम आदिलज्ञाह द्वितोय (१५८०-१६२६ ई०) राज्य प्राप्त करनेक समय यालक ही था और १५८४ ई० तक उसकी मी चौदबीबी ही सब राज्यकार्य करती रही। तुस्तुपरात्त वह अपने मायके अहमदनगर चलो गयी और उस राज्यकी रक्षामें हो उसका अन्त हुआ।

१५९५ हैं में बीजापुर मीर सहबर्धनरके बीच मनित पुत्र हुन। वर्षणान्य वीजापुर ही अनेश्य श्रीकाशास्त्री राज्य रह वस और कृतक नजार्डी वर्तके जवान कर्षे । यह मुख्यान बहुत जीन बलक में बरवर्मश्रद्भिष्णु भी था जनेए सन्दान और मराजे सनके राज्यने बच्च नरींपर निमृत्य में अवने मुनिया प्रसन्त बन्धीवस्त दिया बीर पूर्वताकिरोते यो नैती क्षात्राच रखे। विचनकाकी सी अवते बच्चय दिया । इनके सनवर्ते वीजानुर-पान्य बर्णीनिक निरंपून व्या और

बडरे पात बाली इजार नेना और बरा-पूछ राजकीय या । वहने वर्ष मुख्य प्रभारते भी बनवामी । जबने पुत्र मुक्तमार मानिककार् (१६२६-१६५६ ई.) के १६९६ है में बाइन्होंनी जर्मनता स्वीपार कर थी। इसीके सम्बन्धे नीर विवासीके र्युत्ताने वराठा-वरिताश करण हुवा थी सी-सपुरके शर्मा प्रपाल कारण बनी । जन्मे पुत्र अब्दे आविकसाह विद्यान (१६९६-

७३ हैं) के बान कियानीके सकेब कुड़ हुए। असारा दिमानीके नगरिया मराधान्यान्यको स्वतन्त्र तथा गीकानुरुद्धे स्वीकार करमी पही । बन्धिन मुच्छान विशन्तर नारिक्नाझ् (१९ ३-८६ ई.) को नोरंक्वेडने वर्णी बनाकर बीबानुर-धानका बन्च कर दिया । बोमानुर्देत मुख्यानीने गीमानुर सचर, क्यांक शक्त गर्दकरी हु^{न्द्र} मन्त्र नहरें, बनेच ल्यांनी बीर नहबरे करराने । बीमार्टरने एक वहुतून

विधाक पुरवसमान का निवक्त कई अपूक्त क्रमा कार्यके विधित्र स्पृतिः मर्को है। प्रविक्ष प्रतिप्राक्तभर क्रारिस्तानी भएने ज्यूरकर्ष बन्तकी रचन इत्रक्षीय दिवीको जानवने क्याची जाताने ही की वी । क्याचे शाकाना बैचे तर्जाने पर नुकराओंने सकत्वें हो हिन्दू बनकारें कर्नते कराई भी भी ।

कान्देशका प्रतकारिकेश (११८८-१९ १ र)—श्रीरोन पुत्रकृष्टको मृत्युके समय कार्यायका श्रुवा स्थानमा हुना । नई जीवा वी भारतीय इतिहास एक ग्री मुसल्मानी राज्य अपने मुदृढ असीरगढ़-दुगके लिए प्रसिद्ध या जिसे १६०१ ई० में अक्षवरने विजय करके इस राज्यका अन्त किया। फ़ाम्ब्की मुलतानोंकी राज्यानी बुरहानपुर थी। साप्तीकी घाटीमें स्थित यह छोटा-सा मुसलमानी राज्य भी पडोमी राज्योंके माय युद्धोंमें सलग्न रहा और कुछ काल तक गुनरातके सुलतानोंके अधीन भी रहा।

राजपुत राज्य-उपरोक्त मुसलमानी राज्योंके खितिरिक्त इस कालमें कुछ शक्तिशाली हिन्दू राज्य भी ये जिनमें सर्वाधिक शक्तिशाली एव महत्त्वपूर्ण दक्षिणका विजयनगर-साम्राज्य था जिमका वर्णन पिछले खण्डमें किया जा चुका है। उसके अतिरिक्त कोकण, कर्णाटक, तुलुव और सुदूर दक्षिणमें कुछ छोटे-छाटे हिंदू और जैन राज्य थे। गोआकी पूर्वगाली शक्ति भी अपने ममुद्री बळके कारण महत्त्वपूर्ण थी । उत्तरापयमें राजस्थानमें कई प्रसिद्ध राज्य ये यथा बीकानेर, जीवपुर, जयपुर (अम्बर), हाहाबूँदी, रणधम्भीर, चित्तीह आदि । इन सबमें चित्तीड राजधानीस राज्य करनेवाले मेवाडके गुहिलीत या सीसोदियावशी राणा सबसे अधिक शक्तिशालो एव महत्त्वपूर्ण थे। वास्तवमें ये ही सम्पर्ण राजम्यानके नेता ये और मुसलमान सुलतानोंके प्रवल प्रतिद्वन्द्वी ये। दिल्लीके तथा गुजरात और माछबाके सुलतानोंके साथ उनके निरन्तर यह होते रहे । महमूद गजनवोके लुटेरे बाक्रमणो, मुहस्मद ग्रोरी और उसके सिपहसालारोंके देश विजयके लिए किये गये हमलों सवा गुलामवदाके दासकोंके घावाँसे भी अवभेर और रणयम्भीरको छोडकर प्राय सम्पर्ण राजस्थान सुरक्षित रहा।

१०वीं शतीमें मेवाहका राजा शिविकुमार था। उसकी दसवीं पीड़ोमें विजयसिंह (११०८-१६ ई०) प्रतिद्ध राजा हुआ। इसका पुत्र अरिर्सिह था जिसके प्रपीत्र रणिंहह (कर्ण) के पुत्र क्षेमिंग्हके वराज रावल कहलाये और मूल राजधानी नागहद (नाादा) से ही राज्य करते रहे। रणिंसहके एक पुत्र राहपके बराब राणा कहलाये और वे मिसोदमें एमजीके प्रमाणीक कार्नी एक्स करते रहें। १२वीं कर्या है के कार्यके में सेक्येड के पूर्व पाक प्राावणिक्ष सामाणिक्ष करते किया की हिर्मा को परिवार कर प्रावणिक्ष कार्यकार कृत्योव कर हिर्मा को परिवार के स्वाप्त करते हुआ । क्यांने क्यांन कार्यक हुआ । १९६६ में भी किया कार्यक हुआ के स्वाप्त करते कर एक्सावनों कराया । १९६ है के कार्यक प्रकार पूर्व कैयों क्यांन कर एक्साव कार्यक हुआ कार्यक कार्यक हुआ किया कार्यक हुआ किया कार्यक हुआ कार्यक कार्यक

समर्गवह जन्मी ग्रेरताके किए इविहास-नदिक है।

राजातानेके बाराजादेको हरेक करनेशाचा सर्वत्रका मुक्काबन मुख्यान बावाहीन बावनी या निवारे १३ हैं से स्वयंगीतार भीवन बाजमन क्षिमा किन्तु चान्यूतीकी बीच्छाके कारम बंध नार औ निक्रम होकर ब्रोटशा नदा । जबके नर्रो पक्ष्ये और व्यक्ति जीवन बाजना विज्ञा और कई ताह तक वेश जाने **प्यूवेन क्**रशन्त कर शन्त्व प्रत्यू भीहर-दाय श्रद्ध वरे तव नह वुर्ववर विविद्यार कर क्या । इत वस्त रच-बन्बीरक स्थानी कुलीराज चीक्रांच्या बंधन बीर विदेवनि धना हम्पीर देश (१२८६-१३ १ हैं) वा भी ब्रामीरमहामान्य, हामीरपर्य बादि काल्य सम्बोधा गावल है । शुक्र बंचके बहुएक गर्देशक्या पह स्ट्रा का : स्वराज्यकी बावार्थे अवसे-बावते ही काले वीरवर्ति प्रस्ता की है क्ष्यान्तर बनजीने निर्माहण्ड शास्त्रमा किया । **अथ बस्य राज्य वीर्मीयो** का बायन था । चडा थाता है कि चनकी नहारांनी परिलोक्ते क्यून ^{कर्म} श्रीन्यर्गमे प्रपादि सुनदानको विस्तोतको और बाहर किया था । राजकी की बीरताफे शारण करें बार क्याके असल शिक्रक हुए, बन्द्रदा १३-१ री ने बहाराची परिनी शक्को रिनरीके साथ दुर्गके वर्ज-बृहर्गे विद्याने बस्त

गया बार वार राजपून कसारया थाना पहन छड़ते छहते जूस मरे ।
भयकर जोहरमें चित्तोढके समस्त स्त्री-पुष्पोका अन्त हो जानेपर ही
लमान किलेपर अधिकार कर मके । चित्तोडपर कुछ वर्ष सक अलाउद्दीनपुत्र प्रिजरप्तौ सूबेदार रहा और उसपर मुसलपानोका अधिकार रहा ।
नन्तर राजपूर्तीने उन्हें निकाल बाहर किया । १३२५ ई० के ल्यभग
सीदिया शास्त्राके राणा हम्मोरके समयसे चित्तीड राज्यका उरकर्ष वेगके
प हुआ । और फिर कई धताब्दियों तक मुसलमानोको उसकी और

१४थीं घतो ई० के उत्तराधमें मेबाइके विषेण्याल जी। माहजीजाने तौडमें प्राचीन चन्द्रप्रमु चैत्यालयके निकट एक सतराना उत्तृत एय यन्त कलापूर्ण कौतिम्नम्म (मानस्तम्म) बनवाया या पुरातन अपूर्ण म्मका जीणोद्धार कराके उसे पूर्ण किया था। यहा जाता है कि इस र्गातमा सेठने १०८ प्राचीन मन्दिरोका जीणोद्धार, उतने ही नथीन न्दरोंका निर्माण एव प्रतिष्ठा करायी थी, अठारह स्थानोंमें अठारह शाल श्रुन मण्डार स्थापित किये थे और सवालाम्ब बन्दियोको मुक्त राया था। उसके गुठ दिगम्बराचार्य सोमसेन मट्टारक थे।

१५वीं शतीके प्रारम्भमें राणा छाखाके समयसे मेवाड-राज्यकी शक्ति र अधिक बढ़ने लगी। रायदेव नामक जैन भी इनका एक मन्त्री था, खाका उत्तराधिकारी राणा मोक्ल भी योग्य शामक था। तदन तर हाराणा कुम्म दिल्ली, मालवा और गुजरातके मुसलमान सुलतानींका वल प्रतिद्वन्द्वी हुआ। मालवाके मुलतानपर विजय पानेके उपलक्षमें इस गाने वित्तीहमें एक नौ-मिजला उत्तर्ग कीत्तिस्तम्म या जयस्तम्म नवाया था। इसीके आश्रयमें उसके एक ओसवाल महाजन गुणराजने ४३८ ई० में जैन-कोतिस्तम्मके निकट स्थित महायोर स्वामीके प्राचीन न्दिरका जोणोंद्वार कराया था। स्थयं महाराणा कुम्मने मचींद दुगींमें क सुन्दर चैरयालय बनवाया था। महाराणा कुम्मके प्रतापक आगे

परोत्री मुख्यान वर-वर पश्चित्रेचे । १४४४ ई है एक्टिकोडिंग (क्षेत्राच्यतः) बंकालने, बी बाह केरहाका पुत्र वा राजनहरूके निकर ही एक ब्रोटान्यः कारमुक निक्तमधिर वशवाना व्य । सान्तिमनके स्व वन्तिसम्बे श्रीवार-वेंबरी बढाते हैं । इनकी प्रतिक्रा चरतावच्छके जानार्थ विगत्नेनमूरित की की । कुल्बका कत्तराधिकारी राजा राक्तक वहनीय और निकल्ट लोडीका प्रशिवनी या । बड़ीलो मुलनानीके साव इंचके त्री क्षत्रेय मुद्र हुए । इतके शत्त्वमें विश्लीत पुर्वक वीमुक्ताप्रेयके लिख १४८६ ई में एक वेक-पॉलरका निर्माण हजा का जिसमें कीयारे क्षत्रीहरू देवने लाकर जिल्लामि स्वाप्ति सी वर्ग में ह रास्त्रकम् उत्तराविकारीः न्याराचा वंदानवित या रामा सम्म दुर्ग-मुक्तनाको राजानीमै वस्तिक अस्ति है। यह नैकल्पर होरी प्रासीन बीरी वावर बुक्क बीर पुत्रशको न्यून्य वेगाः वर्ष बहारूरबाद स्था माववाके अपलुद्दील आविकांति बाँद सुहत्त्वार दिवीनका व्यक्तिकी को । माजिनार्थं वन कान नार्थीव्य बोनारा धान वा। वये तरार्वेत हिन्दू एवं नुबरनाम नरेवीने बहारान्य बांगावी अलग्त क्षरेका है।

वाने बीरकों एक बोने लोक मुस्कि एवं वीर पायारे पार जिन के एकते प्रतिप्तर बालार बीर नाके जाते वालीक स्वायति करि मिन्न में नुकीं करकी एक तील एक हम और एक देवां बाती रही थीं। करके जाति जावल एक वो तील क्रेटेनी एक मान्या और वारार से बीर बाली कार्यत पाया हो तील क्रेटेनी एक बोटीतना ८ सामाधीत तथा है वाली में ना मिन्न में हम सिम्पोर्थी कार्यत मुक्काम केन्द्रार वालीक्स प्रतास नुकीं है वह सिम्पोर्थी कार्यत मुक्काम केन्द्रार वालीक्स प्रतास प्रतास उसके राज्यको स्पर्ध करनेका उसे फिर मी साहस न हुआ। इस युद्धके परिणामसे राणाको वडा सदमा पहुँचा और १५२९ ई० में उस वीरकी मृत्यु हो गयी । इस महाराणा सागाके राज्यकालमें ही दिल्लीके मुलसघी पदाचार्य जिनचन्द्रसूरिके शिष्य अभिनवप्रभाच द (१५१४-१५२४ ई०) ने चित्तीहमें स्वतन्त्र पट्ट स्यापित किया था। मण्डलाचार्य धर्मचद्र (१५२४-१५४६ ई०) उनके उत्तराधिकारी थे। इनके प्रशिष्यके समय चित्तौडका पतन होनेपर यह पट्ट आमेरको स्थानान्तरित हो गया था। चित्तीटके इस पट्टके आश्रयमें अनेक ग्रायोंकी रचना हुई। आचार्य नेमि-चन्द्रन गोमट्टसारको सस्कृत टीका १५१५ ई० में चित्तौडमें हो जिनदास-शाहके पार्विजनालयमें की यी। लाला वर्णीकी प्रेरणापर नेमिचन्द्र दक्षिणसे यहाँ आये थे। राणाने जैनाचार्य धर्मरत्नसूरिका भी हाथी. घोडे. सेना और वाजे-गाजेक साथ स्वागत-सत्कार किया था तथा उनके उपदेशसे प्रभावित होकर शिकार आदिका त्याग कर दिया था, ऐसा कहा जाता है। इन जैनाचायका बाह्मण विद्वान् पुरुपोत्तमके साथ सात दिन तक राजसमामें घास्त्रार्थ भी हुआ था। राणा सांगाके पुत्र मोजराजकी पत्नी ही कृष्ण भगवान्की परम भक्त सुप्रसिद्ध मीरावाई थीं जिनके कारण राजस्यानमें कृष्ण-मनितकी अपर्व छहर दौह गयी थी।

सांगांक उपरान्त उसका पुत्र रत्निसह राणा हुआ। उसके समयमें उसके भन्त्री कर्माशाहने १५३० ई० में समुजय तीर्यंका जीर्णोद्धार कराया और इस कायमें गुजरातके सुलतान बहादुरशाहने मी उसकी सहायता की यी। कर्माशाहके लिए सत्कालीन शिलालेखों में लिखा है कि वह 'श्रीरत्निसहराज्ये राज्यव्यापार-भारघीरेय' या। इसका पिता तीलाशाह राणा सागाका मित्र और मन्त्री था। राणा रत्निसहको मृत्युके कुछ ही समय परचात् १५३४ ६० में गुजरातके बहादुरशाहने चित्तीहपर भीषण आक्रमण किया। इस विपत्तिमें राणा सांगाकी त्रियदा महारानी कर्णयतीन मुगल-बादशाह हुमायूँक पास राखी भेजकर सहायता मौंगी। हमायुँ उस

परियो पुरुतान पर-पर परियो थे। १४४८ ई में रापके प्रेस्टर (गोरास्था) वेगानने, यो तालू वेन्द्रापर तृष्य पा राज्यकर्त निव्ह हि एक होटना अलापुर्व विकरतीन व्यवस्था क्या राज्यकर्त कर स्वीपराचे प्रेराए-पेश्टर नहाँ हैं। इसमें प्रविद्धा साध्यस्त्रकर्त व्यवस्था जिनकार्युरित को थी। हुम्मपर करायविकार्य पास छवनाने क्या प्रारं

मी मनेच पूर हुए। वस्त्रे वस्त्रमें विश्वीत दुविक वीमुक्ताविके निवर १४८६ हैं में एक बेल-संबद्धार निवर्शन हुवा का निवर्श प्रियमें वर्षाद्य केच्ये सावद क्रिक-पुरित कार्यित की बारी थी। एक्सकार अवद्याविकारी कार्याचा बीमार्विक वा उपयो कार्य हुए

मुक्तमानके रामानामें क्योंकित अस्ति है। यह विकास जीवी सामीय कोरी शावर नुबक और पुत्रकार्ण कानूब नेवड़ा वर्ष बहापुरकार तथ बारकाके वसलुद्दीन वाविषद्दीन बीर वृहत्त्वर विवीवका प्रतिस्त्री ^{ब्हा} । माजियरमें उन एका नमाबिक शोपरका राज्य या। बनी क्रमानीन दिन्तु एवं मुक्तमान महेकाँमें महाराजा बांगाओं सरवन्त प्रतिक्रा थे। बाने बोरनमें एक बोबे बांबक बुवॉर्ने इब गीर रामाने जान किया गा. क्षके प्रदोरसर क्रमार और करके आर्थ करनीके ध्याराके करनी निश्च में पुत्रोंने काली एक सीच एक द्वान और एक डॉन मी मानी रही थी। बचके समीन समान एक वी बीव क्रेमें-वह धन्म, मानन्त और करधार में और प्रक्रमी केवाने समीमध्य मध्यय बेरिमीने अधिरिका ८ अवयारोही तथा ५ समी वे । १५२७ हैं में कर रिस्कीको सर्वकर मुख्यमाल केरावर पानीतको अपन सुवर्गे विजय पार्तपाने वाण्यकार्थ मुख्य-मारसाहः नामरस्य सम्बद्धिः स्थापिते इन प्रचल राज्युत मुक्त-वीरते शालना हुआ तो प्रवच्य दिल रहत नर्य । क्की बाजन चरावशे व क्लीकी जीवता की राजनार मुखरी स्थार को बीर संबोधके ही यह यह मुख्ये दिवयी हवा । दिस्स रामा बीर

व्वेताम्बर जैन साबुक्षींका सम्पूर्ण राजस्थानमें उप्तुक्त विहार या। अनेक स्यानोंमें उनके तीर्थ, सास्कृतिक के द्र और भट्टारकीय गहियाँ यो। राज्य-वंशों एवं सामन्तवशोंके अनेक स्त्री-पुरुप और कभी-कभी कोई-मोई नरेश भी जैनधर्मके अनुवायी या भक्त होते रहे। उस कालमें वहाँ जैनोकी सरमा अवकी अपेक्षा कमसे कम दुगुनी थी, और वर्षोकि उस कालमें जैनी प्राय क्षत्रिय और वैष्य जातियो एव मध्यम वर्गमें से ही थे, अतएव उस वगमें आधेसे अधिक उन्हीकी सख्या थी और इन जैनोंने मैवाड तथा व्यय राजपत राज्योंके सरक्षण, उन्नति, शासन-प्रवाय, धर्म, साहित्य एव कलाके क्षेत्रमें और सास्कृतिक विकासमें स्तुत्य योगदान दिया। स्वय मेवाह गज्यमें हो जब-जब किलेकी नींव रही जाती तब-ही-तब राज्य-की ओरसे एक नवीन जनमन्दिर बनवाये जानेकी रोति थी। राज्य-भरमें राजाज्ञासे रात्रि-भोजनका निपेष था। कोई भी जैनसायु राजधानीमें पघारता तो महारानियाँ उस राजमहलमें आदर-पुयक आमन्त्रित करके उसके आहार आदिका प्रबाध करती थीं। राज-समाओं में जैनसाधुओं के भाषण और शास्त्रार्थ होते और उनका सम्मान किया जाता था। उनके तीर्घौका सरक्षण राज्यकी ओरमं होता था। प्राय यही व्यवहार अन्य राजपूत राज्योका भी था। इसी कालमें सन् १४९१ ई० में राजस्थानके एक घनकुवेर साह जीवराज पापडीवालने दिल्लीके भट्टारक जिनचन्द्रके उपदेशसे धातु और पापाणकी असस्य जिन-मृतियोका निर्माण और प्रतिष्ठा करायो थी और भारतके विभिन्न भागोंमें वहुसंख्यामें इन मूर्तियोको भेजा था। आज भी उत्तर और मध्यभारतके अनिगनत स्थानोमें इन मृतियोंमें-से अनेक पायी जाती है।

राजपूतानके अतिरिक्त क्वालियरमें तोमरवशी राजपूतीका राजप भी इस कालका पानितशाली राज्य था। क्वालियर (गोपाचल या गोपिगिर) का प्रसिद्ध सुदृढ़ दुर्ग कमसे कम गुप्तकाल-जितना प्राचीन है। गुर्जर प्रतिहारोंके वाद चन्देलोका और कच्छपघट राजपूतोंका इस प्रदेश धनव परेपाइके विश्व विद्वारणें जेंडा हुना गई, किन्तु क्य प्रीक्ष स्वाहेत स्वित्ते । क्षमान स्वकेत किए युक्त विधीनकी प्रवाहे विद्या कर्षा रहा। किर प्री विकास हो के बना। वीर सहामाती लीड व्यक्ति कीर राज्यूनी बौदर करके करना करा किया केनक स्वत है बहुद्रवाह दुर्फी मेंचिक कर करा। किन्तु क्यारी विकास समायों दहा। हुगाई वा पूर्वीन कीर रहे पर्वाह किन्तु क्यारी स्वताह करी होता हुगाई वा पूर्वीन कीर

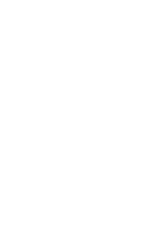
दिस्तक्या बरखा किया। उपलब्ध विधीवृत्त्र एक्या ख्यास्त एक क्या पूत्र फिलानोल बुक्त कियु वार्धिन्य क्लांग्ले क्याचे हाता कर से बीर एक्य पास्त कर किया करें कामणे कर्यांच्य पुर सावक करने विद्वारी द्वारा करनेका थी। अन्तर्ग किया क्लियु स्थानिकक ज्ञानाक्यों क्याच्या की कोच्या करायोंक पुनशी क्या भी। प्राप्त प्राप्ति कीचर की बीर बात्रण्योंने कोच्या क्याच्या क्याच क्याच्या क्याच क्य

थी । पद और शामोनी परशा व नाके चक्का तरमण किया बंधा नाम

होनेतर बडाओ विस्तिक विद्यालगर वार्तान वराना। बारण कार्यालगो एका वस्तिवृत्ति कराना उत्तर वराना । एका बारण क्षेत्र वार्तान हैं कारणों है क्यार कुरान स्थान एका बारण की क्षेत्र कारणों के कारणों है क्यार है कुरान का प्रकार कारणों की किया की पुरूप्त करान का कारणों कारण का एक होनेंद्र कारण का एक होनेंद्र का वार्ता के बारण का एक होनेंद्र का वार्ता करान का एक होने का प्रकार कारण का एक होनेंद्र का वार्ता का वार्ता का वार्त का वार्त

ही पानी थी। रामारा मैनसर्वके प्रति प्रायः क्षत्री धाना और सम्प्रधानै नेपा क्षत्रमान-परकार मुख्याचा क्षत्रार और राहिष्यु में र रिनामर और श्वेताम्बर् जैन साध्योका सम्पूर्ण राजस्थानमें उन्मुक्त विहार या। अनेक स्यानोंमें उनके सीर्थ, सास्कृतिक केन्द्र और भट्टारकीय गहियाँ थीं। राज्य-वशो एव सामन्तवशोंके अनेक स्त्री-पुरुष और कभी-कभी कोई-कोई नरेश भी जैनधर्मके अनुयायी या भक्त होते रहे। उस कालमें वहाँ जैनोकी सल्या अवकी अपेक्षा कमसे कम दुगुनी थी, और वयोंकि उस कालमें जैनी प्राय क्षत्रिय और वैश्य जातियो एव मध्यम वगमें से ही थे, असएव उस वर्गमें आधेसे अधिक उन्हींकी सख्या थी और इन जैनोंने मेवाड तथा अन्य राजपुत राज्योंके सरक्षण, उन्नति, शासन-प्रवन्ध, धर्म, साहित्य एव कलाके क्षेत्रमें और सास्कृतिक विकासमें स्तुत्य योगदान दिया। स्वय मेयाह राज्यमें ही जब-जब किलेकी नींव रक्षी जाती तब-ही-तब राज्य-की ओरसे एक नवीन जैनमन्दिर वनवाये जानेकी रीति थी। राज्य-भरमें राजाझासे रात्रि-भोजनका निपेष या। कोई भी जैनसाध राजधानीमें पघारता तो महारानियाँ उसे राजमहलमें आदर-पुरक आमन्त्रित करके उसके आहार आदिका प्रबाध करती थीं। राज-समाओं में जैनसाधओं के मापण और शास्त्राथ होते और उनका सम्मान किया जाता था। उनके तीर्थोंका सरक्षण राज्यकी ओरसे होता था। प्राय यही अयवहार अन्य राजपुत राज्योंका भी था। इसी कालमें सन् १४९१ ई० में राजस्थानके एक धनक्रवेर साह जीवराज पापडीवालने दिल्लीके भट्टारक जिनचन्द्रके चपदेशसे घातु और पापाणकी असस्य जिन-मृत्तियोका निर्माण और प्रतिष्ठा करायी थी और भारतके विभिन्न भागोमें बहुसंख्यामें इन मूर्तियोंको भेजा था। आज भी उत्तर और मध्यभारतके अनिगनत स्थानोमें इन मृतियों में-से अनेक पायी जाती है।

राजपूतानेके अतिरिक्त ग्वालियरमें तीमरवशी राजपूतोका राज्य भी इस कालका शक्तिशाली राज्य था। ग्वालियर (गापाचल या गोपिगिर) का प्रसिद्ध सुदृढ़ दुर्ग कमसे कम गुप्तकाल-जितना प्राचीन है। गुर्जर प्रतिहारोंके बाद चन्देलोंका और कच्छपघट राजपूताका इस प्रदेश



ग्रजनवीका इन भार-राजाओंने इटावाके निकट मुजके दुर्गसे भीपण विरोध किया था, सदनन्तर असाई दुर्गसे भीपण युद्ध किया, अतत महमूदने उन्हें पराजित किया, दुग और मन्दिरोंको कृटा और विध्वस किया। उस ममय राजपूत न्त्री-पुरुपोंने जौहर करके अपना अन्त किया था। तदनन्तर फ़तह-पुर, इलाहाबाद, अलीगढ आदि जिलोंमें भारोंने अपने छोटे-छोटे राज्य स्थापित कर लिये। महमूद ग्रजनधीके समयमें मेरठ, हापुष्ट, बुलन्दराहर (बरन) का दोर राजा हरदत्तराय प्रसिद्ध था, उसीने मेरठका वह सुदृह दुग बनवाया था जिसे सरमेशरीनकों भी नहीं जीत सका था और जिसे सर करनेमें तैमूर लंगको काफ़ा कठिनाई हुई थी। इसी राजाने हापुष्ट नगर भी बसामा था।

स्वय असाईखेडामें भारोंका अन्त होनेके बाद उसके निकट चन्दबाड (चन्द्रपाठ) में, जिसे रपरो-चन्दवाड भी कहते थे, च द्रसेनके पुत्र चन्द्रपाल नामक चौहान राजपूतने अपना राज्य स्यापित किया, और चन्दवाह दुर्ग एवं नगरका निर्माण करके उसे अपनी राजधानी बनाया। राजा चन्द्रपाछ जैनी या और उसका दीवान रामितह हारुल भी जैनी था। १ नेवों - १५वीं शतियों में यह नगर बढ़ा सुन्दर समृद्ध और प्रसिद्ध था। इस राज्यमें चन्दबाडके अतिरिक्त ५-६ अय महत्त्वपूर्ण दुर्ग एव नगर थे जिनमें रायवद्दीय, रपरी, हथिकन्त, शीरीपुर (बटेंब्वर) आगरा आदि प्रमुख थे। अटेर हियकन्त, (हस्तिकान्त) और गौगीपुरमें जैन मद्रार-कोंकी गहियाँ स्थापित यों जा महत्त्वपूर्ण सास्कृतिक येन्द्रोंका काय करती थीं। वहाँने मट्टारकॉने उत्तर मध्यकालमें साहित्यरचनानी भी मारी प्रारसाहन दिया । भौरीपुरको गद्दी गत शतान्दी तक विद्यमान थी । अत चन्दवाड राज्यमें जैनधर्म और जैनोंकी पर्याप्त मान्यता एवं प्रतिष्टा घी। राजागण प्राय सब स्वय जैन ये और प्रधान मन्त्रो आदि भी प्राय जैन ही होते थे। राज्य-सस्यापक चन्द्रपालके उत्तराधिकारी भरसपालका नगरसेठ हल्लण था। उसके उत्तराधिकारी अभयपालका मन्त्री हल्लणका

वह रण बाजेय प्राचारे ५ थे बहे हैं। ज्याप्तरि व्यवस्त्र है रिवारी पर प्रोप्यांचे जावशा भी व्याने बाजर क्रिया बार इसे अना साम् विर राष्ट्री रण्डा है तथा के जार है उन्ह जानीयों जायां के स्वारी क्या की व्याने क्या क्या की व्याने की व्याने की व्याने की व्याने की व्याने क्या की व्याने क्या की व्याने क्या की व्यानिकार की व्याने की व्यानिकार की व्याने की व्यानिकार की व्याने की व्यानिकार की व्यानिकार की व्याने की व्यानिकार की व्याने की व्या

प्रांतम् निर्माप करात्रे और हमको प्रतिष्ठा करात्रे । तद गोर्तिके सिर्मा सम्बन्धेर्यतः और उनके क्षित्रः भुक्तात्रे स्था समेव कर्मात्री रच्या सी । स्थानियस्थे तन्त्रित्रको चनारकारी सी एक बही था । राज्य नर्माण्य

वक्त रिवान्त्रस्य और मन्त्रवस्त्रशित इत्तरी सन्य रवधार्षे 🐉 स्तरे

माने मुज्योगरक बोर वानगरिकारे निर्माणके नियं प्रसिद्ध है। बंदीनी-पार्व केंद्र प्राप्तक बोर तानगेगरे थी इन एनिक गरेवारे जावाने ही जावार्य प्राप्त का वा प्राप्तनी प्राप्त थी बोर बोडवालारे बोड राजनूरीका दिल्लानी बोरे-मीरे क्रांस्ट करू हा था। बंद्य नहीं कारों वाहेरा दिलालारी

वार्यन में वर्ड करे-करें र्राज़ एउन है। बारपा नरपरे वृद्धीलाण और गानिकार पानवंड वारपे नक्ष्मी और जनकों करकारी प्रदेशना को वर्डकारी दिया बारपारे दरेकारें व प्रीपेशायर दमा क्या नेन्द्रीय दराया जार्र क्रिमी शूनिया होगा है। एक कार-मा स्विनामांस्री हिन्दु-गाम क्या । व्या पहने मोर जा नार की पान्तुरीया नक्ष्म या में हुआ की माणिक कामें मार्च है। वर्षार नेग्रा कम्मी राज्यानी थी। है पाने केनकों क्ष्मिया होगी है। वर्षार्यने में संपर्धनीय करने वर्षारों हुए सहित्य होगार किन्यों करिये (एसी-वर्षी क्रामिट) किया था, तदन तर असाई दुर्गसे भीषण युद्ध किया, अतत महमूदने उन्हें पराजित किया, दुग और मन्दिरोंको लूटा और विध्वंस किया। उन ममय राजपूत स्त्री-पुरुषोने जौहर करके अपना अन्त किया था। तदनन्तर फ़तह-पुर, इलाहाबाद, अलोगढ आदि जिलोंमें भारोने अपने छोटे-छोटे राज्य स्थापित कर लिये। महमूद ग्रजनवीके समयमें मेरठ, हापुड, बुलन्दशहर (वरन) का दोर राजा हरदत्तराय प्रसिद्ध था, उसोने मेरठका वह सुदृढ़ दुर्ग बनवाया था जिसे तरमेशरोनक्षा भी नहीं जोत सका था और जिसे मर करनेमें तैमूर लंगको काक़ा कठिनाई हुई थी। इसी राजाने हापुड़ नगर भी बसाया था।

स्वय असाईखेडामें भारोषा अन्त होनेके बाद उसके निकट चन्दवाड (चन्द्रपाठ) में, जिस रपरी-चन्दवाड भी कहते थे, चन्द्रसेनके पुत्र च द्रपाल नामक चीहान राजपुतने अपना राज्य म्थापित किया, और चन्दवाह दुर्ग एव नगरका निर्माण करके उसे अपनी राजवानी बनाया। राजा चन्द्रपाल जैनी या और उसका दीवान रामसिंह हाक्ल भी जैनी था। १ ३ वों - १५ वों चितवों में यह नगर बड़ा सुन्दर समृद्ध और प्रसिद्ध था। इस राज्यमें चन्दवाहके अतिरिक्त ५-६ अय महत्त्रपूर्ण दुग एवं नगर से जिनमें रायवद्दीय, रपरी, हथिबन्त, शीरीपुर (वटेदवर) आगरा आदि प्रमुख थे। अटेर हथिकन्त, (हस्तिकान्त) और शौरीपुरमें जैन भट्टार-कोंको गहियाँ स्थापित थी जो महत्त्वपूर्ण सास्कृतिक केन्द्रोका काय करती थीं। वहाँके भट्टारकोंने उत्तर मध्यकालमें साहित्यरचनाको भी भारी प्रोत्साहन दिया । कौरीपुरकी गद्दी गत क्षताब्दी तक विद्यमान थी । अत चन्दबाढ राज्यमें जैनवर्म और जैनोंकी पर्याप्त मान्यता एव प्रतिष्ठा थी। राजागण प्राय सब स्वय जैन ये और प्रधान मन्त्री आदि भी प्राय जैन ही होते थे। राज्य-सस्थापक चन्द्रपालके उत्तराधिकारी भग्तपालका नगरसेठ हल्लण था। उसके उत्तराधिकारी अभयपालका मन्त्री हल्लणका पुर सनुस्तान जा। जिसने प्रशासने एक गुनर जिलाकारा में निर्देश कराता था। बढ़के वरायविकालियों नाइट और नीकामाने एक गांधों में सुन्ताना पूर्व थोटू एकसमानी था। वस्तानके उपार्थनार वार्थाक्ष्म (१८६) है के कमाने बीटू क्षांप्रदान (१९६६) है के कमाने बीटू को मुंदर क्षांप्रदान (१९६६) को देवार प्रशासन करते के या और बोटा पृत्र इस्तानकि एक्सा क्षांप्रदान करते के प्रशासन करते के प्रशासन करते के प्रशासन करते हैं कि प्रशासन करते के प्रशासन करते

पारका माना मानी वा। इस्ते बात पूच वी तुरोव्य से बीर राजिसी निवृत्त से। क्यों जुडीजी वार्डि वासारर वी वड़ा करिया वा वेटि जिल-विचित्ता करने वीजीवार कपना एक स्पीप सुन्दर जिलावर में प्रवासीय क्यारा वीर नृपरात्ते कर्य प्रचानके मो बीपेट्र दीनिये स्वाके बस्कार्य क्याराजे वा रहा वा वालीय प्रांतर्म महानि

चरित्र क्रियामा । क्रिकोक सुरुवार्थ स्थानिक सो वादास्त्रको तेत्रार्थः स्थानमात्रकारकार रामा था । स्थानको के क्रियुक्तने का सम्बद्धः यही क्रियोक पुरापार्थः विद्या दिवाई वर की और व्यक्ति रहेवाल कार्य क्षात्रे की एक सुकतार्थः स्थान परवे हों बनित कारके व्यक्तिमात्र स्थानका स्थानकार कर की । क्रीटेर प्राप्तको रागोर्थं काला एक मुख्यामात्र क्षात्रीरकार यो निवृत्त कर कि या क्लिका वर्षेत्र पात्रकार्थेक क्षित्रकार कर की पहणाना क्षात्रे

वासीय हरिहास । एवं घी

इम्राहोम लांदीने अपने भाई अलमखाँको चादबाढका सूवेदार बनाया किन्तु यह बादरसे मिल गया। चन्दबाढके हिन्दू राज्यकी रसाके लिए राणा सामा भी आये थे किन्तु हुमायूँके साथ चन्दबाढके युद्धमें पराजित होकर उनकी सेना छीट गयी। मुगलवालमें इस राज्य और नगरका अन्त हो गया। आगरे जिलेके ह्यिकात नगरमें इन्ही चौहानोंको एक शान्या भदो- रिया राजपूनोंका राज्य था जिसका संस्थापक राजुलरावत (१२वीं दाती) था। सीकरीमें मीकरबार राजपूतीका राज्य था। क्टेहर (रहेनसण्ड) में कटेइरिया राजपृत सर्वेमवां थे।

इस प्रकारके और भी कई छाटे-छोटे हिन्दू-राज्य यत्र तत्र उस कालमें रहे प्रतीत होते हैं जिन्हाने दिल्लीके सुलतानोंका नाका दम किये रखा। प्रत्येक सुलतानको मृत्यु, दुवलता या अभावधानोका लाभ उठाकर ये स्वत-न्त्रताका छण्डा खडा कर देते ये।

लगमग ३५० वर्षके इस मुमलमानी शासनकालके प्रारम्मिक हेंद्र-सी वय (लगमग ११९०-१३४० ई०) तक ता इम्लाम क्षीर उसके राजनीतिक प्रमुखका द्वृत वेगसे प्रसार हुआ यहांतफ कि सम्पूण देशको, अटकम करक और हिमालयसे कन्याकुमारा ययन्त उमने आण्डादित कर लिया। ये नवागस मुसलमान वर्बर विदेशो थे, धन और राज्यके लोभ तथा इस्लामके प्रचार और कुफके विनाशको भावासे उन्मल थ। उनके रोभावकारी करयाचार और उनको अमानृधिक क्रूरता भारतवयके लिए सबया नवीन वस्तुएँ धीं। धर्म एव न्याय्य युद्धाके आदी भारतीय बीर इन नृशंम धर्मा ध वर्वरांको उस पैशाचिकनाको समझ हो न पाये जिसमे आत्म-समयण करने-वाले या युद्धमें वन्दी हो जानेवाले योद्धाओंकी भयानक यन्यणा दे-देकर अनिवायत हत्या कर दी जाती थी, भागते हुए शत्रुओंका पोछा करके उनका मंहार कर दिया जाता था, निहत्यो प्रजापर लूट-मार आदि भोपण अत्याचार किये जाते थे, स्त्रियोंकी लाज लूटना और असहाय वच्ची, स्त्रियों एव वृद्धोंका प्राणान्त कर देना एक खेल था, खेलोको उलाइ देना,

प्रकरम स्त्रीभाव हो बना । यसके राजनीतक बार्विक क्षे क्रेस्ट्रॉलिं प्रतिकारीत पुरुष कामा हो क्षे और नैतिक दुर्वक्या वह स्वरूपे क्षेट्री इन्हीं कर आरमोके क्ष्मान देने क्षेट्र निकल्या आरखी हस्त्रम क्सरीयर

बल पंचत्रता गळा 1

पूर्वेदारी बोर सरदाराको भी अपनी विद्वता एवं पारिम-वलमे प्रमावित करके उनको ह्नूर धर्मा धराको हरूका किया और इस देशको अथना ही समझकर इसरो सस्कृति और जन साधारणका झाटर करनेकी प्रेरणा दो। बलावहीन खलजीवे समप्रेगे ही मुन्जा-भीलवियाँका प्रमान राज्य-सार्धा में घटने लगा था। फलम्बरूप भारतीय जीवा फिर बल पराइने लगा। मु॰म्मद तुग्रकुपके प्रमयम हो दिस्छीया मुगलमानी सामाज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। यस्मुत परे दशपर यह पठिनाईसे तास चालीस वर्ष हो रह पाया था । अनेक नवीन एव स्वतात्र हिन्दू और मुसत्रमान राज्य स्यापित हो गये और पुनने हिन्दूराज्याने भी बल पवडा। दक्षिणमें विजयनगर-षा विनिवाली हिन्साम्राज्य मुगलमानीको उम दिलाम प्रगतिका लगभग सवा दो सौ-वर्ष पयन्त सफल अवरोपक रहा । उत्तरमें मेवाडके बीर राणाओंके नेतृत्वमें राज्स्यानके अनेक विभिन्न राजे, गुजरात, मालवा और दिल्लीके मुसलमानोंपर मवल एवं सफल निवन्त्रक रहे। ग्वालियर, चन्दबाट, बरन, फटेहर आविके अनेक छोटे-बढे हिन्दूराज्योंने मुक्तानामा सुलको नींद न मोने दिया । दिल्ली, वंगाल, गुनरान, माल्या खानदेशको तथा यहमनी-राज्य एय उसके पतनमे उत्पान दक्षिणको पाँच मुखलमानी सस्तान्त जो प्राय मय ही समान बोटिको और स्वतात्र थीं, अपने अ।चरण और ब्यवहारमें दिल्लीके प्रारम्भिक सुल्तानोंसे यहुत कुछ मिन थी। इनके शासक नाम और दिपायेक छिए हो मुसलमान थे, इस्लामने नियमोंके विगद्ध मदापान, व्यभिचार, सगीत, चित्र, मूर्ति आाद फलाश्राकी रसिक्ता, हिन्दुश्रो और जैनोको बहुलताक मास शासनके विभिन विभागामें नियुक्त करना, उनके धर्म और जातीयताक प्रति उदार बोर सहिन्त्रु रहना, उनके गुरुऑका सम्मान व रना, प्रादेशिक भाषाओंको प्रोत्साहन देना, प्राचीन मारतीय ग्रापोंके अनुवादादि कराना, मारतीय आयुर्वेद, ज्योतिप आदिमें विश्वास करना, इत्यादि कार्योस वित्यय अपवादोंको छोडकर वे आधे भारतीय ही वन गये थे। युदा और विद्रोह-

पूर्व-सुगलकालके प्राटेशिक राज्य

सामानदय प्रशापे दिवस्य स्थान रक्ष्ये ही थे ३ वंश्यामें मुख्यमा स राजमें बारतके प्राय किसी वो प्रदेशमें पूरी बनवाके वसप्रायके वर्तित गर्दी वे । साथ ही स्थापन हिन्दु-बसाटी एवं स्ताओंके विशेषित प्रावेश नुमन्त्राची राज्यव जी अवेक वर्त-पूराने दिन्दू कारता-सरसार, बनसारे सीर मानीरशार ने हं एक प्रकार नुस्मान सुक्कुकी बानके केवर नुषक बनाई सम्बद तक्का सरका थी-की वर्षका बास बारतकाँमें सम्बन्ध मीर मुक्तमानी राज्ञेतिक स्तितक तत्त्व एवं हिन्द्र-राज्ञातिक इपं जाराति वर्षी और बन्कृतिकै एतस्थलका वय वा । रिल्क्षेत्रे नुष्ठाल्यो नृष्यम नुष्ठालींशी बातीयता बनिविध्य है नवरि में मर्वपायक लुई रहे अरोड होते हैं, बचनी मी तुने में दुरहर्न एक तुर्क मीर द्विष्यु जातनीकी चनावि वै वैसर जनमे आपरी अपरी वैनरीमा मबब कहते हैं। बोधी बीर लूची पठल वे । जासीम सुबदानानें विकास वार्तानोके बीर बहुना बारतीय एक-किवनते वरसम स्वस्ति में र इन वह गरेपांने अविकास्य कुनी और रशिवस्त्रकार्ने कुछ जिया है। मंत्र पूर बुक्क कार्कके जुक्कानीको पूर्वद्वमा प्रस्त का पूर्वतका द्वार ^{वृह्}व

क्तनके तमब ही में अपनी मर्मान्य मर्मरताना प्रपर्वन करते ने अन्य

भीर सम्पूर्व हैं। गुरूवारोमी तथा बोटो प्रेवेड, हैंगुर-बेदे सामायार्ट्सी स्वर सम्मिन्दा को सामायार्ट्स के पार्टि क्रिक्टियार्ट्स सामायार्ट्स दें। में के राप्ट-विद्या के सार्टिक क्रिक्टियार्ट्स के सेटा-विद्या वह सम्बद्धों भी कि दुष्ट पुष्टामा सार्टी प्रदार्थी स्वर्ति क्रिक्टियां का सामायार्ट्स के सामाय्ट्स के सामायार्ट्स के सामायार्ट्स के सामायार्ट्स के सामायार्ट

विमा । इत मुख्यानीने अनेक नशॉवर नहारो, नक्क और किंचे कें

वार्त्ताच श्रीधाच : एक ^{र्हाड}

वैद्या कि प्रविद्याल-पुरवकारी जाना बहुए बाह्या है, दोनों बार्से ही बराना

वनवाये जिनमें अवस्य हो हिन्दू एव जैन-मन्दिरोंके विघ्वससे प्राप्त अनुल सामग्रीका ही बहुचा उपयोग किया, तथापि एक नयोन भारतीय मुसलिम स्यापत्य-कलाको भी जन्म दिया और उसका विकास किया। प्रान्तीय भेदोंसे प्रान्तीय सुलतानोने उसमें और भी विचित्रताएँ उत्पन्न कीं। भारतीय भाषाओका भी प्रोत्साहन मिला और विशेषकर जन-भाषाके रूपमें अप-भ्रशासे विकसित दिल्लोके बास पामको जन-भाषा (सही वोली हिन्दी) में अरबी फारसी तुर्की शब्दा और लहजोंके समावेशसे एक नवीन जन भाषाके विकासको प्रात्माहन दिया जो उस समय जबान हिन्दवो कहलातो थी।

मुसलमान-सुलतानोका शासन चाहे जितने घडे या छोटे प्रदेशपर

रहा वह मुख्यतया नागरिक ही था। राजधानियो, प्रमुख दुर्गों और नगरोपर अपनी-अपनी सेनाओं के बलपर मुल्तान और उनके सुबेदार या सरदार
निरकुता धासन करते थे। सामान्य नागरिक धासन पूर्ववत् ही देहातो
एवं नगरामे हिन्दू अधिकारो करते थे। जो हिन्दू-राजे, उपराजे या
सामन्त-मरदार पहलेसे चले आते थे वे उसी प्रकार चलते रहे और प्रजासे
भूमिकर आदि पूववत् बसूल करते रहे। उन्हें केवल अपने प्रदेशके मुलतानकी अधीनता स्वीकार करनी पहती थी और उसको या उसके प्रतिनिधियों को जैसा जितना निश्चित होता कर देना पहता था। अत्यसख्यक
मुसलमानों के लिए इससे अधिक सम्भव भी न था, विशेषकर जब शासित
हिन्दू-जनता उनको अपेक्षा वीसियों गुना अधिक थी। इस प्रकार उस
कालका मुसलमानो शासन प्रधानतया क्षीजी और खहरो ही था। बहुभा
जन-साधारणको वह युद्ध, बिद्दोह, लूट-मार और कर आदि वस्ल करने के
अवमरोंपर ही, सो भी उसी सम्बन्धम, स्पर्श करता था।

वहुसस्यक भारतीयोंके वोच विदेशोसे आगमन, प्रजनन और धर्म परिवतन बादि कारणोंसे बढती हुई मुसलमानोको सस्या एक नवीर समस्या थी। प्राचीन यवन, पह्लय, शक, कुषाण, हूण आदिकी मीति मुसलमान भारतीय समाजमें आत्मसास् न हो सके। वाहरसे आते रहने पाके मुख्य-नीकरियोंने काकी कहर पर्याख्याको आयोज कर्ने वर्षे, बोर एस्क्रारियोके प्रति समके तील मिट्टेपची समा मुक्तमानीके प्रतान मारतीय निरोगो एवं अतिनुष्ट बाह्याचार और विचारवारान्ये पूर नरहे रक्षण हो अपना प्रचान कड्डिय नमा रखा चा। जक्ष आसामें स्ट्रेनर में नुसम्बद्धम बास्त नारतीयो और नास्तीयताने धर्मच कुन्द 🛭 वर्षे रहे चनके फिलाबी बर्वने स्थलन निवार अक्रियात और बनाविक्रके किए विशेष शतकास न था । अलोक मुसकसान नाई वह किटाये हैं हूं। रिवरिका क्यों न हो स्वयको अवेके अधि धारतीको थेव्ट बतान्छा ना धीर मेवानस्थव हिन्दु बारिक्के बोर्ने बावाजिक कराई व रक्ता में ।

तिन्तु वह रिवरित स्वेत ऐंडे ही लही चढ इक्टी मी। करने र^ह राजीतक पृष्टिये ही जुलकाल कालकॉली क्रीडे-वडे चारवीयोच्य ठड्योगे केमा ही परशा का जातन-सवाब की कक्के दिना न क्क बकरा था। मिन बारदीयोशो दस्कान अंगीकार करना नहांचा स्टॉन अर्ले मरिकास गुराने रीकिनीयाज आचार-विचार यो बनराने रखे। रहने सर्वारेक्य कुछ पुनक्रमान छड़ीय थाना बुक्तुरिन विक्री निर्वाहरी सीरिमा क्षेत्र अनुरोग वेश वर्णन निका गमिने अपन्या एवं मान्यान स्तामनो बहुठ-कुछ बारडीक्छके रेक्वे रच दिया। ग्रेरपूना वर्ड, मूल-नावन, नेपालके निकरी-पुकरी तुन्ती विचारों आदिके प्रचारने दोनी व्यक्तिकोचे बीचको धार्को धवता वर विवा । अनुत्र स्वयन, स्रीतन मुहत्त्वर कामधी भीत पुरावन जीवन-विधे पूर्वी करियोने वेदावी धाना हिनोर्ने भारतीय ग्रेम-नामासांशी बुधी विचारीर्ने रंगपर सस्ती स्टेक्ट राक्त क्यानत सक्षधनर, वृत्यनती वाक्षि वनवनिवर्ति रचा । अवेर बुबरो-नेवे नक्षित्रे द्वित्रीमें कविद्याची और श्रंत्यूच द्वित्री अस्त्री द्वित्र सांपादे प्रशासना असना विस्ता ।

शास्त्रमक दिल्लू कीर जैन-कविवाने बरवाहर्क्यक बीरवामाओं दर्न शारिक ऐतिहासिक सभी अस्त्रीता प्रचलन बीक्याना असम्बद्धे करके धारतीय इतिहास नुदर्श जहाँ बोरोंके स्वातन्त्रय-प्रेम, युद्ध और देश-प्रेमको प्रज्वलित रखा और उनके धर्मभावको पुष्ट बनाया वहाँ उनके उत्तराधिकारियोने मुसलमान सुफ़ो-सन्तोंके सद्श निर्गुण भिक्तका, किन्तु उनके प्रतिकूल उसके प्रेम-मार्गका नहीं, वरन् ज्ञान-मार्गका प्रचार किया। इस भारतीय धर्म एव समाज सुधार आन्दोलनके प्रमुख पुरस्कर्त्ता पूर्वोत्तर भारतमें रामानन्द, सन्त कबीर, पजाबमें गुरु नानक, मध्यभारतमें सन्त दादू, सन्त सुन्दरदास. दक्षिणमें ज्ञानदेव, नामदेव, तुकाराम और रामदास थे। वंगालमें चैतन्यदव, विहारमें विद्यापित ठाकूर, गुजरातमें लीकाशाह, वु देलखण्डमें तारणस्वामी थे। इन सभी सन्तोने अपनी बोल-चालको सबुक्कडी भाषामें पदरचना और व्याख्यानों एव सत्सगों द्वारा हिन्दू मुसलिम विद्वेपको दूर करनेका भी प्रयत्न किया। उन्होंन मन्दिरो और मूर्त्तियोंका विरोध किया, सरल निर्गुण घर्मका प्रचार किया, जाति-पौति और अन्य सामाजिक क्रुरीतियोंके विरुद्ध आन्दोलन किया। इनके शिष्य और अनुयायी हिन्दू, जैन, मुसलमान सभीमें-से होते थे। अपभ्रश मापास हिन्दीके विकासका भी इन सन्त-कवियोंने भारी प्रोस्साहन दिया। उन्होने भारतीय जीवनमें एक नयी स्फूर्ति भर दी, हिन्दू-मुसिलम वैमनस्यको बहुत कुछ कम कर दिया। इनके अतिरिक्त ब्राह्मण पण्डितो, जैन मुनियो, भट्टारको और यतियोंने भी अपनो-अपनी धर्म-सस्याओं में समयानुकूल परिवर्तन करके तथा अपने प्रभावसे जनता एव दासकोको प्रभावित करके और अपने कार्यों एव प्रेरणासे देशके नैतिक स्तरको सम्रत करके तथा धर्म, कला, साहित्य आदि क्षेत्रोंमें उसको सांस्कृतिक अभिवृद्धि करके देशके पुनर्निर्माणमें स्तुत्य योग दिया। उन्होंने कमसे कम भारतीयताको सलग और असुण्ण बनाये रखा। उपरोक्न अच्छाइयाके साथ ही आततायियोंकी कुदृष्टिसे अपनी बहु-नेटियो-की रक्षा करनेके लिए परदेकी, वाल-विवाहकी, सरीकी, छूतछातकी जैसी कुप्रयाओंका जन्म भी हिन्दुओंमें इसी कालमें हुआ और जाति-व्यवस्था भी अधिकाधिक जकडती चली गयी।

पूर्व-सुगलकालके प्रादेशिक राज्य

सध्याय ३

मुचन-साम्राज्य---अर्घगत

१६ची बागार्थ्य है के प्रितीय समझे बारण्याँ ही मारतीम प्रस्तियाँ मैं इक बचीन बारण्याच राज्य-बारीब हुई और पुडार-बंबके रुपले हरें देनी नरीन एक मध्या राज्य-बारीख हुई और पुडार-बंबके रुपले हरें देनी नरीन एक मध्या राज्य-बारीखड़ा बदब हुवा कि स्थित न देखा

क्षणी न्यांत्र त्या नाव्या एउन्याविकार व्यव्य द्वार त्या त्याचार प्राप्त क्योन्त्रम् गृतमस्याणी उद्याची इत्र देववी गया औरचा एवं स्थानित प्रयो तिया परंगु इत्र देवाचे राजनीतिक व्याचिक वर्ष बांस्ट्रतिक क्यांत्रिक वे विकारपर परिचा तिया।

आस्त्रीय इतिहास एक धी

मारणोंसे उनमें घर्मा घताया जमाद और अनुदारताया विष भी पुछ पम
होने लगा था। किन्तु वे यह भी समझते थे और उनपे मुका मोल्यो
उन्हें यह ममझानेम अभी न पकते थे कि इन दानो उपायोंके दिना उनकी
और उनके धर्म एय राज्यवा रक्षा इम देगमें अमस्मय है, अत स्वरक्षार्थ
ये इन उपायाया अवराय्यन हेते ही थे। उनकी राजनीतिय एक्ष्मूद्रता भी
कभीकी नग हो चुकी थी। देगाल, मानया, गुजरान तथा दिल्लापथके
उत्तरी भागवी मुगलमानी मन्तनतें और दिल्लीमें मुलतान युव एक दूसरेंग्रे
सर्वधा स्वताय और पृथव थे। उन सबमें हो परस्पर कूट, ईव्या, हेव,
वैमनस्य और गुद्ध निरातर चलते थे। उन सबका प्यान अपने अपने
राज्यको अद्युष्ण बनाये रखने और हो गका तो अपने निकट परोसियोकी
क्षति करके अपनी-अपनी धनिन और विस्तार यहाने तक हो सीमित था।

निष्म अनेक छाटे छाटे अरथी अमीर इना प्रवार परस्पर कलहमे ब्यस्त ये। पंजाबमे छेवर बिहार तक पठान मरदार पैले हुए थे। दिल्लीके लोदी मुल्तान उनवे मुलिया थे। किन्तु पंजाब और पूर्वी भारतके पठान सरशर नाम माधका हो उनके अधीन थे। वे स्रोदियोंके पतनके ही दुच्छुन

ये और परस्यर भी कलन्म रत थ । भारतकी इन सभी मुमलमान राजा द्यांतियोंका उस मध्य एक सूत्रमें संगठित हाना असम्भव था । इसके विवरीत, जन-साधारणमें गैर मुमलिम मारतीयादा अस्यिव सम्या-वाहुन्य था । विभिन्न मुसलमानी महतनतोमें ये राज्य-कमचारियों उपराजाओं एव सामन्तों, जागीरदारों आदिके रापमें भा वाषी संस्थामें थे इसके अतिरियत, दक्षिणापथके आधेसे अधिक दिलाणों मागपर विस्तु एव द्यांतियालों विजयनगर-माम्नाज्य था और उत्तराययमें सम्पूर्ण राज्य म्यानके अनेक स्वतात्र राजपूत राज्य थे जिन्हें मेवाहके व्यवस्थान राणाओंका नेतृत्य प्राप्त था। दक्षिण पूय भारतमें गोडवानाय विस्तृत हिन्दू-राज्य था, बुदेलखण्डके यहुभाषपर खालियरके तोमः

राज्यका दासन या तथा चन्दनाह, घरन, सराई आदिके अन्य अने

मगल-साम्राज्य---कर्ध्वगत

स्थानकार दिल्लाम में र सामृद्धि काने वह वह जनसमीती नामहिक नाग-राश्तिक नाही अधिक नवस के। वह कर करा कोई केना राजनीति-विकास देशनेताहका होता को इन बार्यन परिश्माश एक मूच दिशी लक्ष्या की बोहे-के ही प्रचलके बच्च मुनन्त्राता राज्यस्य अन्य वर दिश्व का करना बात वाह्य ब्राहरी निष्यार क्षम क्ष्मपार्थः जारतीय करणः आरक्षप नरकार मीटः सविक्षा नरज ही बारन कान प्रदेशन नुगणनानी जानगरा जल कर कार्त है। विज्ञवस्य राज्यसम् को पारवासको गाँकि त्य राज्य <u>स</u>ूच्य नेतृत्वरै मानवा मृहरान और वीक्रावा सान्यनावा सम्मानवे श्रेम कर बार्डे च। इंगो ब्रचार राजन्यान सानिकर चन्द्रवाद व्यक्ति चार विकर्ण मतर बारश्न ब्यालाको नरगको स्थित्यद वष्ट कर वचते में। दिन्तु दुवीन न मार्ग्यापीयोग कम नमन तब व्यक्तिन कारणीय राष्ट्रीयाप्रका बार्व कार्य ही नहीं हुन्छ वह - विवासी विशेषकान स्वतंत्र और श्यासीत्री रहाण मार उन्हें एक नुबने बीवना ना मन्दर निन्तु वह भी दत्तवा क्रमाट ^व मा को बनके राजनीतक बंगानका वृशल नगर्तात्र नगा बन्छ। क्यो मेंद्रवित बृद्धि सरमे-काले गान्य अरेच बोर बच वक ही बीक्ति की इती कारण कुनमकातीका झारम्यन बहुर्ग राज्य स्वाचित्र करकेने संस्थानी निक्री हुनी पारण दुन्ने हुत नेन्त्रे देवके विक्रिय मानीने बनकी नार्म मनारित 🗓 बड़ी और हमी वास्य १९वीं बती हैं हे प्रारम्पर नुमा मानी बच्चणी मेंत्री दिवन बीट वावज वरिक्षितिये को बारदीय नहें स्थान न स्था वर्ष । तैयातका राज्य बांधा बोरियाका अन्य देखनेता है इच्छूक या और इस बहैरको पंजायके दोलताओं मार्टि प्रश्न सरदारीयाँ बार नहरोती की क्या, किन्तु इन कार्यक तिए सबसे विदेशी बाजना बावरको ही मुँद राज्य । तह बनवता या कि तेमुच्यी वर्णि बानर की आर्थना बोर कोरिस्टेंका अन्त करके पत्ना साम्या और अन यह सर्व रिल्को व्यापार मादि बाक महत्र ही अपने अविशासना निल्हार कर केना है

वारबीय दुर्कदाना एक धी

ऐसी परिस्थितिमें यावर आया, सहस हा उपने लोटियोगा अन्त वर्गे दिल्लीवर अधिवार वर लिया और इस देशमें गुगुल-वश एव राज्यकी नींय ढाला । वह दीघा हा मर गया । उसके उत्तराधिकारीकी दग मणने भीतर ही देश छोड भाग जाना पडा । १५ वर्ष बाद बह पुन आया और समके पुत्र बब बरने मुगलबंश और साम्राज्यको इतना धनित गाली और स्यायी बना दिया कि घर अपन समयकी मगारकी एक स्पृहणीय शक्ति हो गया। मुस ठवंदाका अस्तित्य और दिल्लोपर उसका अधिकार तो लगमग तीन भी दय पयन्त बना रहा बिन् मुगल गाम्राज्यका घरमात्वय भाक लगभग एक भी वप हा रहा । अवबर्द राज्यभालवे मध्यो लेकर कीरंगज़ेवक राज्य-कालक मध्य पयन्त भारतका मुगल माग्राज्य और उमके गम्राट न पेवल भारतीय इतिहासमें हो यरन् सम्पूण सरकालीन विद्यमें गर्शिय शिवनशाली प्रतापी और वैभव-सम्पान पः भारती मुगलमानी राज्यवसाम इतना दीचकालोतवश ना अप काई न हुआ। धीरगञ्जेयद राज्य-शालव उत्तराधमें साम्राज्यमें अनेव दुवराताओंने पर वर लिया था और शोघन्पतनक चिह्न दृष्टिगोचर हान लगे थे। उसकी मृत्युक कुछ वप उपरान्त हो साम्राज्य दूत वेगसे छिन्न-भिन्न होने लगा। उत्तरयती मुग्नल नरेशाको अयाग्यता एव अकर्मण्यता, उनक मुसलमान सरदाराके विद्यान-घात और स्त्राथपरता, जोघपुरके राठौड राजाओंके नेतृत्वमें राजप्तीका उत्थान, महाराष्ट्रक पदावाजा और उनक सरदारोकी हुत प्रगति, राज-धानोंके निकट ही जाटाका और पजावमें सिषत्रोंका उदय, नादिरसाह भीर सहमस्याहके बाक्रमणा और सात समुद्र पारमे व्यापारार्घ सानवाले ञैगरजाको छल-यलपूर्ण मूटनीति, समने मिलकर मुगलाका पतन सम्पादित किया । सम्पूण भारतके एकच्छत्र धानिनदाला सम्राट औरगजेवकी मृत्युको साठ वर्ष बीतसे-न-चीतते उसका यशाज साहनालम नाम मात्रका हा मुगल-मन्नाद् रह गया था और मात्र दिल्ली आगरापर उसका अधिकार रोप रह गया था । १८५६ ई० में अन्तिम मुगुरू सम्राट बहादुरशाहका रामनावाद हिर्मुन्तास्त्र के व मानुद्दिक करने बहु बह अनवपाती है। ता दिन रामन्यनिके नहीं अधिक जबन के वह कब बक्व वोई देना रामन्यनिक्षक देनोता हुआ होता को दूर वार्याय विद्यालिक कर कुत हिरो अवना की बोहेनी ही बचाने का प्रतिक् नामनाव्या सारोग्ड अन्त कर हिर्मु आ अपना था आहु नाहरूम नामनाव्यालिक कर विद्यालिक व्याल अपनाव्यालिक स्वाद्यालिक स्वाद्यालिक नामनाव्यालिक स्वाद्यालिक व्याल आग्निक स्वाद्यालिक स्व

मानशा नुकरान और शांधाचरा व्यन्तमात्रशा कावापध क्या कर केडी भी। इसी करार राजपान पर्या गए, पामचाह कारिक राज्य विकार केडर भारते परामाणे मरावश धरिनव यह कर वरते हैं। रिस्तु दुर्विक में जारकियों कुछ नम्म वुक क्रीलम आरामिक रार्टिकाइक सांव करिंग

धी नहीं हुआ था। क्यांची विशंदनाय एक्या बहेत स्वार्तान्त्री स्वार्ता पाय वर्षे एक तुम्में योचना पा व्याप्त निन्तु यह थी। एम्चा इत्याद में या वो बाने पार्टरिंग बंदामा। एक्या वर्षा वर्षामंत्र स्वार बच्चा। वस्यो मंत्रीत्त्र पुर्व बाने क्यान नामा बहेदा बोट बंदा वह हो। विशेष्ठा पोर्ट पार्टी वर्षा क्यांचानों कारान वहांचा एक्या वर्षाण्या करानी वर्षों व्याप्त देशे क्यांचा वेत्रम वर्षों क्यांचा क्यांची क्यांची वर्षों वर्षों स्वार्तात्व हो यद्यो बीट हमी व्याप्त १६वी वर्षों है क्यांचानी पुर्वन्ता स्वार्तात्व हो विशेष क्यांचा व्याप्त वर्षों वर्षों हमें इत्या बहै । विवाहस प्रचा नामा वीरिक्शन क्यांची क्यांचा वर्षोंची और इत वर्षोंची नेपाल की त्वाहा आहमा वर्षोंची

भी बना किन्तु इन कार्यक्ष तिथ् धुवने विदेशी बाम्सन्त्रा ति नुद्द राजा । यह सम्बाता या कि रोजुरकी साँधि बानर भी कीरियोश। मान सरके जन्म सामग्रा मोर कर यह स्पर्ने । यो साँद राज बहुन के स्पन्ने स्वित्रारम्य विस्तारं कर केया।

व्यक्तीय प्रतिवासः एक परि

ऐसी परिस्थितिमें बाबर आया. सहज ही उमने लोदियोका अन्त करके दिल्लीपर अधिकार कर लिया और इस देशमें मुगल-वदा एवं राज्यकी नींव ढाली । वह शीघ्र हो मर गया । उसके उत्तराधिकारीको दस वर्षके भीतर ही देश छोड भाग जाना पडा । १५ वर्ष बाद वह पुन आया और चसके पुत्र अकवरने मुगुलवश और साम्राज्यकी इतना शक्तिशाली और स्यायी वना दिया कि वह अपने समयकी ससारको एक स्पृहणीय शक्ति हो गया। मगञ्जनशका अस्तित्व और दिल्लीपर उसका अधिकार तो लगभग तीन मी वर्ष पर्यन्त बना रहा किन्तु मुगल साम्राज्यका चरमीत्वर्ष काल लगभग एक भी वप ही रहा। अकवरके राज्यकालके मध्यसे लेकर कोरगजेवके राज्य-कालके मध्य पर्यन्त भारतका मुगल साम्राज्य और उसके सम्राट्न केवल भारतीय इतिहासमें हो वरन् सम्पूण तत्कालीन विश्वमें मर्वाधिक श्वितशाली प्रतापी और वैभव-सम्पन्न थे। भारतके मुसलमानी राज्यवशोमें इतना दीधकालोनवस भा अप कोई न हुआ। औरगजेबके राज्य-कालके उत्तराघमें माम्राज्यमें अनेक द्वलताओंने घर कर लिया था और शोध-पतनके चिह्न दृष्टिगोचर होने छगे थे। उसकी मृत्युके कुछ वर्ष उपरान्त ही साम्राज्य द्वत वेगसे छिन्न-भिन्न होने छगा। उत्तरवर्ती मुगळ-नरेशोको अयोग्यता एव अकर्मण्यता, उनके मुसलमान सरदारोंके विद्वाम-घात और स्त्रार्थपरता, जोधपुरके राठौड राजाओंके नेतृत्वमें राजपदीका उत्यान, महाराष्ट्रके पेशवाओ और उनके सरदारोकी द्रुत प्रगति, गज-धानीके निकट ही जाटाका और पजावमें सिक्खोंका उदय, नादिरज्ञाह भौर सहमदशाहके आफ्रमणा और सात समुद्र पारसे व्यापारार्थ आनेवाले अँगरेजोंको छल-वलपूर्ण कृटनीति, सबने मिलकर मुगुलोका पतन सम्पादित किया । सम्पूण भारतके एकच्छत्र शनितशाली सम्राट औरगचेसकी मृत्युको साठ वर्ष बीतते-न-बीतते उसका वैद्यज बाह्बारम नाम मात्रका ही मुग्रल-सम्राट् रह गया था और मात्र दिल्ली-आगरापर उसका अधिकार घेप रह गया था। १८५६ ई० में अन्तिम मुग्रल सम्राट् बहादुरशाहका नामाज्य दी दिल्लीके भी नेत्रथ बाल क्रिकेडी नहार-रोशारीके मीदार ही नीमित या । यह यह होते हुए जी इसमें समेह शही है कि मुक्कनाल भारतीय इतिहालका एक बत्सल बहुत्कर्ष वृत्त है । अवने सुदीर्थ बालके राजने दनत देवकी वक्तोकृती बन्तांत देखी । रे बाबर (१५२६-३ र्ड) तमरक्रमके तुर्वे नुसदान वैदुर्वन्त्री

पीपरी पीटीयें रूपक हका था। बक्रमा विद्या निजी कमरमैत रीपूर्ण नंदात्र (सम्बद्धावा पीव) बीरलबाहवा वृत्र का बीर नव्य-एदिएतने

प्ररक्षणांची क्षेत्री-ती. रियानसंका स्वाधी था ३ कावरकी वी प्रतिश्च मेंनीस सरशर जैनेक्श्रांके नयान जन्नताईन्द्रोकी नुवी थी। इस अलार वांसर तुम और मनोल एका-विश्वनका चन्न या । बन्नवा वया वया व्याप व्याप भीर दबके किए कडी-कमी चत्रताई पावका थी शरीन हुना। निर्दा मुक्तिरी एक रामान्य क्यांचि थहे । १४८६ ई. वे राजररी कर्ण हेक मा । तेरा वर्षनी अस्तवामें हो यह क्ररवानके जल्मे कोटे-वे नेपूछ राज्यरा रधनी हमा वयको नहस्तायांका आर्थ अवाधे पूर्वन वैतरके बाह्यसंग्रेसे प्राप्त करके बनायानको विद्यालयम् गैठनंकी औ ह की बार जबने गर्नर इन्दर्भो निश्चय किया निरमु बोसों ही। बार सह उनके हाको निश्चा नगर । स्थानेन सरकार्तिकी व्यवसाय कारण अरुपूर्णा की समये किन नगा और बन्ततः बढे प्रापः वयानंद स्पत्तेवने पानना परा । १५ ४ वे में यह बक्रवाजितराज बाह्य और वाली जरवनीको निवासकर क्वने वस देवेगर

भी ईरानके बाह प्रस्थातनकी ब्रह्मसाले वसने वस बार बमरहान्यने बिट ब्रुलावत किया विष्णु कवनेवाने वक्षे बिट विकास वाह्यप्र निया बीर बड़ कान्यर कानून नारब बीट जाना । अब इस दिवाने नड पूर्वतका निरास ही बग मा बाज्येंबोर्के भारते कातृत्वमें और बावधी दिवति बुद्धिका व थी । ऐसी

नारकीय प्रतिशता । एक एजे

काम राज्य स्थापित निया क्या कारकतो पात्रवानी बनाया । सर्गहे

निरमित्रे पारतपर्व ही बढे एक्शांत ब्रामित आवा क्षेत्र का बीर क्षेत्रे

314

इस देशकी ओर घ्यान दिया। भारतकी तत्कालीन राजनैतिक परिस्थित भी सयोगसे उसके अत्यन्त अनुकूल थी। दिल्लीका पठान स्लतान इयाहीम लोदी अयोग्य, मूल और अत्याचारी था। उसने स्वय अपने पठान सरदारो और सम्बन्धियोको भी अपना बाबू बना लिया था। उसके वतके ही बालमर्खा लोदी और दालतर्खा लोदी जो पजाब प्रान्तपर बिघकृत थे उसका त्रिनाश चाहते थे। उन्होने इसी उद्देश्यसे वावरको आमन्त्रित किया। वे समझते ये कि तैम्रकी मौति वाबर भी इब्राहीम लोदीका अन्त और दिल्लोकी लूट मार करके चला जायेगा और वे फिर सरलतासे दिल्ली राज्यके स्वामी बन जायेंगे। राणा सागा भी ऐसा हो समझता था। अत ये लोग वावरने आक्रमणामें तनिक भी बाधक न हुए। किन्तु वावर वीर योदा और कुशल सेनानी हो नहीं था, वह चतुर राजनीतिज्ञ भी था। १५१८ से १५२४ ई० के बीच उसने भारतपर चार बार आक्रमण किया। प्रारम्भमें उसने सीमान्त प्रदेशका अन्वेपण करके उसे अधिकृत किया, फिर शनै -शनै पजाबमें युसा, दौलतखाँ लोदीके विश्वासघातसे कप्ट होकर उसका दमन किया और १५२४ ई० तक काबुल से सम्पूर्ण पजाब पर्यन्त उतने अपना अधिकार भलीभाति जमा लिया । तदनन्तर १५२६ में उसने दिल्लीपर आक्रमण किया। इब्राहीम छोदीने अपनी दिशाल किन्तू निकम्मी सेना छेकर पानीपतके ऐतिहासिक रणक्षेत्रमें उसका सामना किया. किन्तु पराजित हुआ और मारा गया । दिल्लीपर मुग्नल वाबरका अधिकार हो गया । पठानोंकी आपसी फूट, इब्राहीम लोदीकी अयोग्यता, उसकी सेनामें उचित सगठन एव कुशल नेतृत्त्रका सभाव, बावरका तोपखाना जो युद्ध विद्याका भारतके लिए उस समय एक नवीन आविष्कार था, और उसका कुग्रल नेतृत्व इस विजयमें प्रधान कारण थे। छोटे-से किन्तु अत्यन्त अन्यवस्थित छोदो साम्राज्यको उसने अपने सेनानायकों-द्वारा शर्न - शर्न जीतना शुरू किया। जो सरदार जिस प्रदेशको जीतता उसे ही वह उस ् प्रदेशका शासक नियुवत कर देता।

रामा नागाने अपनी आजाहे निपशीन प्रच बह नव बेमा हो पढ बाबरको भारतकालै निकाल बाहर धरवैके किए व्यक्तिया हो पन बार । महनाम नेपारिकाने जो हमें सद्धारणा हो। शोधरोके विश्वट बमराहरें बाबरच बाल शाक्त्योका मुख हुना । शाक्त्यो कैंनवन और बहारामानी थीरना ६व पराक्रमणी केच-कुरकर वायरके मैनिक वर्षा वर्षे । स्वर्म बायर भी पत्रहा नद्या किन्तु बद्ध दद्धारित वा समने वर्तराका वर्षमा स्थाप पर दिशा न्यानी इवारत की बोट जनन निपादियों तोर नरगांग्ने स्पर्तिका अंबार िया । अन्तरः अवाय और बीबालने वर इन नुस्रने या विश्वमी गता बोर राजा अस्त्रित होकर बावन और बना । रिज्यी, मानदा और मान-रामके बरेमपर पापरका यथिपार हो ही पुत्रा मा मर देनमें इसी आराजे की अञ्चलनीकी बदेदकर दिवार प्रमान महारा सर्विकार कर सिका। जानरा नेते बंबवारी वक्षके वृत्र हुमार्नुकी दर्श प्रसिद्ध क्षेत्रकृत होए। प्राप्त हुआ का ३ न्याकिकरपर भी बाधरमें समियार बार किया । बह बही सुद्र-बार करके चन्ने कारेके किए नहीं बाबर वा बरन बस्ता स्थानी रहार अवस्ति वाने आया या अन वनने निर्देश प्रदेशों मीर मचर्चना विश्लीम करने वा निमेत्र मृत-नार और अस्तानता अरनेका अवन्य नहीं किया बरिक करनाती नुरवा और नुस्तरका बाह्यानय देवर शास्तिपूर्वक बने पहुनेका हो आहेल दिया । बनने बारने पूर- हुरायूँको जी यही अलाम पनपेरा पिया कि 'यह हमाके वार्तिक प्राप्तीको देन न

पहुँचार्च नथा—वर्शीन कडारी किंदू वांदव वह भावते हैं इत्त्रीव्यू भोरवार राजारणे निर्देश कर है आर्थी आर्द्धीर मात्र अन्त्रभार को बोर स्वारा कार्यम्य पानन की आर्थी आर्थी कहा वाहरी भरार की व रिका नाम्यवाल उत्तरी कहारी भोगवा हो न नी। क्यार कीर वार्षिक लग्नामा डीमैंके प्रारम वार्षिक कीरताई थी की बोर पी। इच्छा यह मी वार्ष्य है कि सुद्धार कार्य किंद्र थो खी। कार्या की स्वारम की स्वारम कार्य किंद्र थो खी। चसने मुल्मानके धनाय धादशाह चपाघि घारण की, अपने अधियारके लिए यलोफाको स्वीकृतिको भी कोई अपटा न यो और इस प्रयार धर्मको राजनीतिसे पृथक् रखनेका प्रथम चपक्रम किया।

षह अत्यन्त यन्त्राम्, वोर, साहमी, नुद्धिमान, सुशिक्षित, तिद्या और कलाका रिक्षक, धार्मिक, उदार, सर्वित्रिय और स्तेह्शील था। उनका मुजुकेवावरी या वावरनामा नामक आरमचरित्र एक अत्यन्त दिलवस्य रचना है। अपने पृत्र हुमार्यूकी रोगसे प्राणरक्षाके लिए उसने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया। १५३० ई० मे मुगल-वदा और साम्राज्यके मूल मस्यापक इस जहीक्हीन मुहम्मद वादर बादधाहकी मृत्यु हुई। बाधर मारत और मध्य-एशियाके बीचको कही था। काबुलसे उसे स्तेह था। अत उसने अपने धावको काबुल ल जाकर दफनानेकी इन्छा अन्त समय प्रकट की थी, बैसा ही किया गया। ईरानो सस्कृतिका भारतमें प्रविष्ट करनेका श्रेय भो उसे ही है। आगरा आदिमें उसने कही बाग भी लगवाये।

2. द्वमार्यू (१५३०-५५ ६०) वाबरका प्येष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी था। यह मुशिक्षित, नम्र, दयालु, उदार और स्तेहशोल था,
किन्तु उतना ही जितना कि उस कालमें एक मध्य-एशियायो मुसलमान
राजकुमार लिकको अधिक हो सकता था। शासन और युद्ध विद्यामें भी
वह साधारणतया याग्य था किन्तु साथ ही आलसी, अफोम श्रानेका
अभ्यस्त, कुछ अदूरदर्शी और भावुक भी था। इन दोपांके कारण जिन
परिस्थितियों उसने राज्य-भार ममाला और जा विकट समस्याएँ उसके
सम्मुत्र थीं उनके योग्य वह नहीं था। वायरने उत्तर भारतको पजावसे
विहार पयन्त विजय तो कर लो थी किन्तु वह राज्यको सुमंगठित नहीं
कर पाया था और शासन-प्रवासकी भी कोई योजना कार्यान्वित न हो
पायो थी। राजकोप प्राय खाली था जिसक कारण खाधिक कठिनाईका
सामना था। उसके तीन अन्य भाई कामरान, अस्करो और हिन्दाल उस

सदैव तंग करते रहे, विशेषकर कामरान और अस्करोने उसके साथ

प्रमुख बन्धेने नोर्ण कहर न रखी किन्यु हुवाहुँने गुळ बनने की होगी नार स्वस्त्रम और मुळ किछोट बाँगिय आनेपछा रहाले पार्च बनेंद बनेंद दिया और नोर्ड डार्मिन महीवाओं। स्वस्त्यों में तुर्व प्रस्त्रम प्रधान प्रस्त्रण को कियो किछोट संस्त्रम त्वस्त्र और ने पूर्व को भी किया न नार्ट कर को किए स्वस्त्रम की की त्वस्त्रम स्वास्त्रम पर वर्ष से बाई मान प्रस्तु को की की स्वस्त्रम की की त्वस्त्रम से। स्वस्त्रमाल के जन्म और काह्यस अर्थ निमो में त्वस्त्रम से। स्वस्त्रमाल के नार्य स्वास्त्रम स्वास्त्रम कर किना से। स्वस्त्रम स्वास्त्रम के की स्वस्त्रम से। स्वस्त्रम कर किना से। स्वस्त्रम प्रस्तु के स्वस्त्रम से की स्वस्त्रम से स्वस्त्रम से।

वीकारका प्रांत पण वैपाले था। प्रवण्य व्यावस्था वेदाणी करोणा व्यावस्थ मा। व्यावस्था विविधाले यह गिष्ट वायवस्थ को अस्पायार विव वीर वार्ष पुण्यों को बरणा सम्बाः । १९६४ हैं थे प्रमाणने वंदलेश्य आहमार किया। पुराने केणी नारा या। वाष्ट्रात प्रवास करायार के साम्यारण वाला वार विचा पित्र पूर्णाव्य विवास केणा । वार्ष हुमानी की कर्मी निविधाले पुष्याचे विवास निरावस्थ कुमाने कराया। वार्य बहुत कराया । वार्ष प्रवास कुमाने व्यावस्थाले प्रवास क्ष्मान कराया क्षा वार्य बहुत क्षा । वार्ष पुण्य वायस त्या क्षा विचास कराया क्ष्माने किया बहुत क्षा प्रवास केणा का विचास का विचास वार्य वार्य बहुत क्षमा वार्ष वार्य का वार्ष पुण्य वार्य का विवास क्ष्माने का विचास केणा वार्य १९६५ हैं में पुण्यासार मामाना करा विचास वार्य वार्यना कुमाने केणा वार्यना क्ष्माने कुमाने क्ष्माने क्षमा क्षमाने केणा क्षमाने केणा । वार्युव्या वार्यने क्षमा वार्य वार्यना केणा वार्यना वार्यना वार्यना का वार्यना का वार्यना वार्यना का वार्यना वार्यना का वार्यन वार्यना वार्यन व

दिक्कारों परान बरायर वैरक्षी सुरीके कंपनाची नुकर्ता निकारें इस कर्मकी मनुरा ही कीड़ की किर कंपर माना पहा र १५६७ ई. में कर्म वैरक्षीयों हराना मीर वैदासके जी पहुनराकों विजय कर किया हिन्सु सदनन्तर छगमग एक धर्ष गौड नगरमे ही ध्ययं बाछस्यमें विसा दिया। इस वीचमें दोरबाहने प्रक्ति सग्रह करक उस वहीं रोकनेवा उपक्रम किया। १५३९ ई० में चौमाक युद्धमें बुरा सरह पराजित होकर हुमायू थोडे-से सैनिकोंके साथ प्राण बचाकर दिल्ला पहुँचा। १५४० ई० में दोरबाहके साथ कन्नीजके निकट उसका किर भाषण युद्ध हुआ। इन युद्धमें भी बह पराजित हुआ और साथ ही उससे उसका मारसी राज्य भी छिन गया।

अब वह निराश्रित और असहाय था। उसके भाइयाने उसकी कोई सहायता नहीं की । ऐस हो ममयमे उसने हमीदाबानूके साथ अपना विवाह किया। पत्नी और मुट्टो भर सावियाके साथ यह सिन्धको और भागा, फिर मारवाह आया और जोधपुर-नरेशसे आश्रय चाहा। एनके बाद एक कई राजाओ और मुसलमान-मरदारोसे उसने आश्रय और सहायताकी याचना की फिन्तु किसीन महारान दिया। दोरधाहकी सेना पीछे पहा हुई थो, अत फिर उसे मिन्यका मरुभूमिको घरण लेना पडी और वहीं बमरकोट नामक स्यानमें १५४२ ई० में हमीदावानू येगमने अवयरको जम दिया। किसी तरह वचकर हुमायूँ कावुल पहुँचा कि तु उसके भाई कामरानने भी उसे आध्रय नहीं दिया, अत बालक अकसरका कामरानके ही लाश्रयमें छोड १५४४ ई० में वह ईरान पहुँचा और ज्ञाह तहमाहपसे सहायताकी याचना की । शाहने इस शतपर कि हुमायूँ शिया मत धारण कर ले और कन्दहारको बिजय करके उस सींप दे सहायता दनका दचन दिया । अत १५४५ ई० में शाह ईरानकी सहायतासे हुमायूँने कन्दहारपर अधिकार कर लिया। उसके बाद काबुलपर आक्रमण किया। कई वर्ण तक कामरानके साथ युद्ध चलता रहा। उस दुष्टने अपने भतीजे बालक अकवर-को क़िलेकी दीवारपर सीरोकी वौछारमें बैठाया कि सुअकबरका बाल र्योकान हुआ। अन्तत कामरान पराजित हुआ, बन्दी हुआ और अधा कर दिया गया । कुछ वर्ष हुमायूँमें कानुस्रमें रहकर ही अपनी स्थिति सुदृद

नो बीर बीरन लंगन की। नन्यहरकी बनने हैरानियोंने नामके बनुसर रिया ही व ना । १५५५ हैं वे बचने माहकर जीवनन दिया होता जैसार जरहान की विवादनी वोतनीय वालेदर के उत्तर वोदिन्दी मनुष्य की बहर ही प्रात्तर बीर दिए दिल्ली और बायरेसर में इस्प्रेंचा क्षित्रस्य ही ग्या किया हुए ही गाल बाद १५५६ हैं के बाराने हो दिल्लीने कार्य पुरस्कालकों बीडिगीर विशास्त्रस्य सिर्फेड वास्त्र ने हा दिल्लीने कार्य पुरस्कालकों बीडिगीर विशास्त्रस्य सिर्फेड

च्छू बच्चे रिराक्ते भारतीय राज्यविकारको नामक्षको सिन् हो दुव्य-प्राप्त करनेष्ठे पत्रम हैं। तुमा या। बच्चे रिराक्ती पार्टित सक्वाप बर्ध्याने सी पारस्तिक दूर्वरे क्वेचे वो काम क्याचा था। वक्का मार्टित दुव्ये वास्त्रम बोर रिक्काय-वार्तिक रिरा परिवर हो या। बक्की वाहे प्रस्ता न

यी। वापून करने एन पून बंदाराजीय पृष्टिन यह गायक्रेस पुरस्कीय कर्या वापूर्व पूर्वित पुरस्कार नाकराजीय वर्ष पूजाराव वंदाराज संकार कर्या है।

2. सक्तर (१९९६-१९ ५)—वित वन्त पूजाराजीय या।

2. सक्तर (१९९६-१९ ५)—वित वन्त पूजाराजीय पुरस्कार पुरस्कार पुरस्कार प्राप्त कर्या ह्या है।

वर्ष प्रस्कार पर प्रचलना सम्बन्ध नाव या और यह वरवा वेदावर्ष प्रस्कार कार्य प्रचल विकार पूजार व्यवस्था कर्य व्यवस्था कर्या विकार प्रदेश कर्य वाप्य व्यवस्था कर्य व्यवस्था कर्य व्यवस्था विकार वाप्य व्यवस्था व्यवस्था विकार वाप्य व्यवस्था व्यवस्था विकार वाप्य व्यवस्था विकार वाप्य व्यवस्था विकार वाप्य व्यवस्था विकार वाप्य व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था विकार वाप्य विकार वाप्

बानरे बॉट दिस्मेरर शाकामा कर दिना। दिस्मीके नुरक्ष प्राप्त एक्टीनचे को बात्त-मानंत कर दिया और देगुका नहीं व्यंतकर हो सन। रिक्तन्तर, शीकपुर, सहस्वकर बोकपुरका और, बरार, सामरेर सारेर रामोर्ड मिनरा कराई पीक्षण नाता ती स्वयंत्र कही हुन्छ। मानक्य, मीरमान, मेनाक मीर क्यारेर थी स्वयंत्र की तर्मन के सीर रिप्तीर रणयम्मीर, जैसलमेर, बूँदी, जोधपुर, बीकानेर, अम्बर आदि स्वतन्त्र राजपूत राज्योंका समृह राजस्थान सजीव आतक वना हुआ था । पश्चिमी-तटपर पुतवालियोंको शक्ति भी उपेक्षणीय नहीं यो । और स्वय दिल्लोके सिहासनके लिए तीन प्रतिद्वन्द्वी दावेद।र थे, आदिलकाह सूरी, सिकन्दरशाह सूरी और हेम्। हुमायुँकी दिल्लीपर अधिकार कर लेनेकी अल्पस्थायी सफलताने अकवरको भो उन जैसा ही किन्तु उनसे कम साधन और शक्तिसम्पन्न एक दावेदार मात्र वना दिया या। अत १४ फ़रवरी १५५६ ई० के दिन जब पनावके जिले गुरुदासपुरके अन्तगत कलानीर नामक गाँवके बाहर एक वाग्रमें ईंटोंके कच्चे चयुतरेपर अकवरका राज्या-भिषेक किया गया तो उस चौदहवर्षीय नरेशका राज्याविकार आस-पासके दस-बोस गाँबोंपर ही था. वह धन और जन दोनोंसे ही हीन था, मुद्रीभर सेना हाथमें थी और वैरमखौ-जैसे इने-गिने विष्वासी, स्वामिमक्त और उत्साही सरदारोंका भरोसा था। अकदरकी कुछ शिखा दीक्षा भी नहीं हो पायो थो और बह प्राय निरक्षर था ! उसी समय उत्तर प्रदेशमें भीपण अकाल भी पढ रहा था। ऐसी विषम परिस्पितियोमें अकवर और उसके माथियों के सम्मुख तीन ही मार्ग ये या तो हुमार्युकी मौति देश छोडकर भाग जायें, या सब आकांक्षाआको विलाजिल देकर सामान्य जनोंकी भांति यहीं वस जायें. अथवा राज्योद्धारका प्रयत्न करें। उन्होंने यह तीसरा योरोचित मार्ग हो पसन्द किया । इस दिशामें सबसे पहला क्षदम दिल्लीको हम्तगत करना था क्योंकि भारतकी राजधानीपर अधिकार कर लेना ही अकबरके राज्याधिकारके औचित्यको सिद्ध कर सकता था और अन्य प्रदेशोकी विजयमें प्रधान सायक हा सकता था।

वतएव अकबरको लेकर वरमर्खां ससैन्य यानेश्वरके मागसे होकर पानोपतको ऐतिहासिक रणभूमिमें आ ढटा। एक विशाल सेनाके साथ दिस्लोसे निकलकर हेमू भी आ पहुँचा। दोनों सेनाओंमें घोर युद्ध हुआ, हेमूको विजय हो रही थी कि शत्रुका एक तौर आकर उसकी औलमें यम बया और यह नेहीय शोकर निरंपता । नेताके विरदे ही वयकी बेमार्ने क्यारह तथ नयी । हेम् तसी हुमा । वैश्ववानि मध्यरके पाछिए राज्यो करने हानके नारकर काजी बननेके सिथ् बद्धा । एक नाले ननुकार भीर बदयार्थ विद्वापे सन्दर हाथ बढाना लीकार व जिया और स्पर्ने बैरमलारे हेमचा यस किया एक बन्द मतके बनुनार बैरमलाके बापहरर श्वकरते दवपर जानात किया और किर वैरमलूनि ज्वका किर कार हाना । विजयी मुक्क-हेला खचजोंकी जारती-कारती जिल्हीमें प्रविष्ट हुई, हेनुवा बद नवर-बाटरर बटका दिवा बया और कड़के अन्त्व हैनुके हुद मैक्टिकि दिराँका कुर्व बनावा क्या विश्व कि इव पूर्वकर्ती मुक्तान करते बारे के फिल्के बोर आवधार वकारणा वर्षकार हो वया ! बारिक्याह पूरीने वत्तरा यव पीई विशोध बहि किया और विकन्तर सरोबे को बाह्य-कर्मात कर दिखा पत खबा कर विद्या बाद कीर की एक मानीर मी दे से नदी। बारपारमा प्रचान करवार, केमापति कनी और व्यवसारक वैरम्बा हैं या । बचीरे नेपूर्णने शहराने बन्ती निवय-यात शास्त्र को । हेन्छी पराज्य और विकल्परके अवर्तनने पेसावरके जावना प्रयक्त बज्जाब पंजान बीर क्लैपनी क्या प्रोक्षण सकारका अधिकार अभा रिका । अव

बीर परिचयी बच्छ त्रीकार सम्बद्धात्र अधिकार सम्राहिता । वा स्मितिस्त द्वार प्रमुचे नित्र विकास नवा बीर वच्छी प्रमुचेन्द्री प्रमो मन्त्रेयस्य अधिकार का स्मित्र वच्छा नृत्री बीम्मुर हरिकार का किर मान्य स्मित्र प्रमुचेन्द्रीत्र केन्द्र देशके केन्द्र का निव्या नवा । उपचारीत पुराद की बात्र का किर मिन्न प्रमुच्या किन्द्रीत्र का स्मित्र प्रमुच्या किन्द्रीत्र का स्मित्र प्रमुच्या किन्द्रीत्र का स्मित्र प्रमुच्या किन्द्रीत्र का स्मित्र प्रमुच्या का स्मित्र प्रमुच्या किन्द्रीत्र का स्मित्र का स्मि

वारतीय इतिकृतः एक घरि

...

निरपराघ रक्षक तर्रीवेगको हत्या करने और उसके सामान्यत उद्धत स्वमाव एव वढ़ते हुए प्रभावके कारण अय सरदार मी वैरमखींमें कृष्ट ये। अत अकवरने १५६० ई० में उसे पदच्युत करके मक्का चले जानेका परामर्यो दिया और राज्यकार्य अपने हाथमें ले लिया। थाड़ी उहापीहके बाद वैरमने स्वीकार कर लिया किन्तु पजावमें पहुँचकर विद्रोह कर दिया। अकवरने तत्यरतासे उसका दमन किया और फिर हामा कर दिया और मक्का चले जानेका हो आदेश दिया। मार्गमें एक श्रवृके हाथो वैरमखीं मारा गया।

वैरमखाँके अंकुशसे तो अकवर मुक्त हो गया विन्तु अब अन्त पुरकी वैगर्मोके प्रभावने उसे आच्छन्न कर लिया। उसकी मौ हमोदावान वेगम तो उमे पुत्र-स्नेहवश परामर्श देती ही थी किन्तु उसको धाय माहमअगा उसपर शासन हो करने लगा और उसका पुत्र आदमखौ निरंकुश अनाचार करने लगा । पीरमुहम्मद आदि उसके साथी थे । स्वय अकबर आरोट वादिमें मान रहने लगा। १५६२ ई० में अकवरने आदमखौ और पीर-मुहम्मदको मालवा विजय करनेके लिए भेजा। मालवापति वाजवहादूर पगजित हुआ और मालवापर अकवरका अधिकार हुआ। आदमखौ और पीरमुहम्मदने इम अवसरपर क्रूर नरमहार और अत्याचार किये किन्तु वाजबहादुरको अकवश्नेक्षमा कर दिया और अपना एक मनमबदार धना लिया। उसकी प्रेमिका सुन्दरी नर्तकी रूपमदीकी भी रक्षा हुई। इसी वर्ष अकवरने राममृद्दीन अतकाको अपना वजीर नियुक्त किया था. किन्तु दुष्ट आदमक्षौ वजीरमे जलता या और एक दिन गराबके नशेमें महलको कचहरोमें घुसकर उसने वजीरका वध कर दिया। शब्द सुनकर अकबर स्वय वहाँ आ गया, एक ही घूँसेसे उमने आदमखाँको गिरा दिया भौर फिर क़िलेकी दोवारसे गिरवाकर उसे मरवा हाला। उसकी माँ माहमअंगाकी पुत्रशोकमें मृत्यु हो गयी । पीरमुहम्मद आदिको भी दण्डित कियागया और स्वयं अपने मामा ख्वाजा मुजरतमको भी जो एक नामिनिका हरवार वा सकराने साम-पण विद्या । इस स्वार १९४४ है से सप्तर वर्षवा स्वयान डीक्ट पूरे महोनोको सामान-मिर्मान के मार्टी कर मार्ट १९ पार वर्षों की सम्मान्द्र केरियार प्रायुक्तिने मित्र दुर्ग नेपालो और विद्यारके हुद्दु पूर्व पुत्राको स्वयं हरकण करिकार मार्ट

मता या और मलेक का कह नीरकी वरवाहकी विचारत करवेंके निर्

मनमेर बाबा करता जा । ऐसे ही एक बदसरपर १५६२ हैं में सम्बद्ध में वस्त्रका राजा जारबक्तां वजनेर बाकर स्वेश्वको सम्राहको अपीतार स्थीकार कर स्थे । १३१मा ही दहीं जरकारणी इच्छानुसार राजाने वसके बाम मननी पुरीका विमाह थी कर विवा । बढ़ राज्युत रानी ही मक्रमरनी ज्ञान राजाओं और उन्ने उत्तराविकाधी वहांबीरनी मन्त्री हर्दे । इह एजीके वार्द राजा अक्यानराज बीर वदीजे बहाराच मार्निक् संस्थापे शाहिते हाथ और वसके सामान्यके त्रमान स्टब्स <u>६</u>ए । सम्बदके बद्यहरूका वह प्रयान हवा कि बैडक्पीर बोक्पीर बोक्पर वासि राजपुरानेके बान वर्गिकाल राज्योंने बीडे-वे प्रसारके हीं। जनगरकी नमी-मता स्थीचार कर थी। बचने जी वनके चाय बवारतामा अर्थाय किया। वै बन्ते शल्दके बातलये वर्तवा स्वतंत्र थे, केवल बसादको बन्ता अभिनंदि लोकार करना होता या अर्थ पक्के कुशे और नियम-रामानेलें बैन्य-सहयोग देना होता था. पुरू निरित्ता कर सना क्यी-क्यो राजपानी-में बाकर सम्राट्यों मेंड बावि देशी पहली थी वे पाहते हो राज्यीन सेवारें की कर्ने कीई करण पर और मनबंध ने दिना बढ़ता ना । क्रमार्ट्स इक्ति और बामस्थ्यमें करका करनाव और प्रतिका जान-सिनी क्लकनार बरवारवे कम नहीं होती थीं । भरतून अक्रमर वटा पुरवर्शी या । यह जरकना महत्त्वत्वाओं से मीर

बास्तर्सी बाहारके शाचीन पाएग्रीन वालर्बको प्राप्त करवेकी बाहाग्री नहीं

मल्लीय इतिवास एक प्रति

100

अभिलापा थी। साथ ही उसने यह मलीभौति समझ लिया था कि इस उद्देश्यकी सिद्धि तथा उसके वश एव साम्राज्यका स्थायित्व तभी सम्मव है जब वह पूर्णतया भारतीय एव मारतीयोका वनकर राज्य करे, मुसल-मानों और ग़ैर मुसलमानोंके बीच कोई मेदमाव न करे, विल्क अपने व्यवहारसे मुसलमानेतर भारतीयोंका विक्वास, आदर और राज्यभिवत प्राप्त कर ले। और ये सब बातें उसकी अपनी उदारता, समदिशता, सर्वघर्ममहिष्णुता एव कुशल नीतिमत्तासे सम्पादित हो सकती थीं। अत अपने राज्यके इन प्रारम्भिक वर्षौ (१५६०-६४ ई०) में ही उसने युद-विन्दियोंको गुलाम बनाये जानेकी पुरानी प्रथाका अन्त कर दिया, समस्त हिन्दू एव जैन तीर्थोपर-से जो यात्रीकर सुलतानोंने लगा रस्ना था चसे उठा दिया, इसी प्रकार जिल्या नामक अपमानजनक करका भी जो समस्त मुसलमानेतर भारतीयोपर लगा हुआ था अन्त कर दिया। जिजया-का प्रवर्तन खलीफ़ा उमरने किया था और भारतके सभी मृसलमान सुल्तानोंने भारतीयोंपर यह कर लाद दिया था, फ़ीरोज तुग़लुक़के पूव म्राह्मण लोग इस करसे मुक्त ये किन्तु उसने उनपर भी यह कर लगा दिया था। यह कर अतिरिक्त आर्थिक भार तो था ही होनता और अपमानका भी सूचक था। जिजया देनेवाले भारतीय थे, वे शासकोकी जाति मुसलमानोंकी समकक्षता नहीं कर सकते थे। दूसरे, करके भारसे दबे रहनेके कारण वे कभी धनसम्पन्न नहीं हो सकते थे, अत विद्रोह नहीं कर सकते थे। अकवरने इन भेदभाव सूचक एव अन्याय-पूर्ण करका अन्त करके अपने-आपको छोकप्रिय बना छिया। राजपूत कन्यासे विवाह करके और अन्य मुसलमान पत्नियोंके रहते हुए भी उसे ही साम्राज्ञी पद देकर, तथा हिन्दुओको राज्यमें उच्च पद देना आरम्म करके उसने भारतीयोंका विक्वास प्राप्त कर लिया। साथ ही उसने मुसलमान सरदारोंपर, जो प्राय विदेशी थे, नियन्त्रण रक्षनेके लिए एक प्रित्वपाली भारतीय दल राजपूत-राजाओं आदि हिन्दू सरदाराँका निर्माण

परमा जारक कर दिया। बाबसावै करते स्वतंत्र में श्रीत है। दिल्लू-किर्र स्वतिक परमा रेगा होती प्रियमित बार्डि बाइडीय क्वीसावि वर्ष स्वतंत्र प्रस्ति करता रेगा होते पर प्रमाणीक प्रतिक परिवा गर्दी मूंचा रेगा वादी प्रशासि करते प्रवासी क्षा प्रधासिक प्रशासिक परिवा करते वर्षा हमना विचा। बाइन्डी बाडि वर्षणारीमा प्रीपत प्रकार रेगा वर्षी करती नाम-तेड्यामाच की सीचन है दिवा था। वर्षानी करतीन मीचना अस्तिकात जनकारण तथापति स्वीडिंग

कर केले करात्मा ही विचारिया सुवाधिय अधिकार होने दिया। कियुं नेताह और वार्ष क्रियोरिया स्वकारणे किए जो स्वांत र हुए। करण विद्वेश पुत्र स्वाट्या स्वाय सेवार तर्गक विद्यापित व्याट्या किए पुत्रकों के वाल नारों दी। १५६६ हैं में एकामारिया हुई भी सम्बद्ध हों हैं सा सन्धा और वार्ष को स्थायपार्थ किया व्याप्तिय होंगा हुए क्या करणों सार्वकार हो तथा। १५५२ हैं में कारी पुरस्तकारी पितन को बीर सुरस्त सम्बद्धारण को सामित्रा कर सिम्पा। बढ़के पार्च करियो हो करणे सम्बद्धारण को समित्रा कर सिम्पा। बढ़के पार्च करियो हो करणे सम्बद्धारण को सामित्र कर सिम्पा। बढ़के पार्च कर होंगा सा समार दर्श्य निवृद्ध-केलो स्वां पहिंचा बीर कारी स्थितिहरोस्ता दुर्घा वाद्य सम्बन कर

-

जारतीय प्रतिवासः युप धरि

दिया। इस प्रकार १५७३ ई० में गुजरात-जैसे अित समृद्ध प्रान्तका प्राप्त करनेसे साम्राज्यकी समृद्धि और शिवन अत्यधिक वढ गयो। समुद्रतट और प्रमुख बन्दरगाहोंपर भी उसका अधिकार हुआ। राजा टोहरमल गुजरात-का सूचेदार नियुक्त हुआ और वहीं सर्वप्रथम उसने अपने भूमि-व्यवस्था सम्बाधो महत्त्वपूर्ण सुधारोंका प्रयोग किया। गुजरात विजयके उपलक्षमें सीकरोमें बुलन्द दरवाजा बनवाया गया और उस नगरका नाम फतहपुर रखा गया। १५७५-७६ ई० में बगालकी विजय हुई, वहाँका सुलतान दाकदखाँ युद्धमें मारा गया और बगाल प्राप्त साम्राज्यका एक सूवा बन गया।

इसी वर्ष महाराज मानसिंहने हल्दीघाटीके सुप्रसिद्ध युद्धमें वीरवर महाराणा प्रतापको बुरी तरह पराजित किया। इस युद्धमें सिसौदियोकी वही सित हुई। हल्दीघाटीके युद्धमें राणाकी ओरसे उसके कई जैन-सामन्त यया बीर ताराचन्द, मेहता जयमल बच्छावत, मेहता रत्नचन्द खेतावत आदि भी वही दीरतापूर्वक छडे थे। पराजित होकर राणा अपने परिवार कौर बच्चे-खुचे मेवकोंके साथ पहाडों और जंगलोंमें चला गया जहाँ अत्यन्त कप्टमें चसके दिन बीते । मुगल-सेना उसका बराबर पीछा कर रही थी। राणाने अकवरकी अधीनता तव भी स्वीकार न की, किन्त अन्तत निराश होकर मैबाडकी छोटकर अन्यत्र चले जानेके लिए उद्यत हुआ। ऐसे समयमें उसके स्वामिभवत दीवान भामाशाहने अतुल द्रव्यसे राणाकी सहायता की । कहा जाता है कि यह घन इतना था कि इससे १२ वर्ष पर्यन्त २५००० सेनाका निर्वाह हो सकता था। और यह सब सम्पत्ति भामाशाहकी अपनी पैतृक तथा निजी थी। उसने अपने भाई ताराचन्दके साथ मालवापर आक्रमण करके भी कुछ द्रव्य प्राप्त किया था। राणा उदयसिंहके जैनमत्री भारमल कावहियाके ही ये दोनो पुत्र थे। इस व्यप्रत्याशित सहायतासे राणामें नये जीवन और आशाका . सचार हुआ और उसने नये उत्साहसे प्रयत्न करके चित्तौड और पारक्रमध्ये क्रेडकर तानुम् वे नेवादगर पूनः श्रीमधार कर किया। घर स्थानको नारक मानवादा देशास्त्र । व्यादकर्ती अञ्चयता। एवा बर्माहिक्ये करण मही मध्यन मध्यो वया यहां एकके संपर मी को गीतिनोटक राज्यनमी वये गुंदे और बस्त्रा परमा हो गर्कव्य कात तार्क नंबाद राज्येन बन्धानित यहां । याना श्रामाहित वये ने का हारा वार्क्य के अन्युक्ती हो एवान्ती वार्क्यर राज्य बादा पर्म किन्तु विद्योध-बदारके किए मान्या अस्त्याचीन पंछा । त्याज्यकर्वे और रावेक्यरिक्षेत्र एक परसा कारणे कीर राज्याने क्षार स्वस्त्राचे मी

१५८१ वे. में अपचरन काशनगर आक्रमण निमा और बाचे गाउँ

निरंश इस्रोक्तो नरावित्र करके बनील किया । १९८५ हैं में इस्रोक्यों पुराने संस्थान राजुक की शांधालगर एक सुना को नहा । १९८६ हैं में करानी, १९५ हैं में बांधा । १९५६ हैं दिल्ल में स्टार १९५५ हैं में विक्रीयनमा बाँट कल्याप्टर को अन्याप्टल व्योक्तार हो गया। सामन्यर वहरे दिल्ली कुनावर पुरानावित्र वाद राजुक की बाँ कर्मन वादित्रक लोगार कर क्लेश क्ल्याप्टल का प्रकार की वा वीत्राप्टलों क्लेश्य करने का बाता हा सामन्यत्र हमा । १६ हैं में बहुक्कानपर सामन्य हुआ। तुल्लानो राज्यां की स्टार संगोक्ता स्टील्टर कर की बीट स्टार मार्च व्याप्टलों है किया। वात बेक्के सुल्लाको नहीं ही क्लोना स्टीक्टर कर की वो किया करने संगोक्ता स्टील्टर कर की बीट स्टार मार्च व्याप्टलों है किया। वात बेक्के सुल्लाको नहीं ही क्लोना स्टीक्टर कर की वो किया करने सिरों करण स्थाप्त करा १९६ है से बेलके प्रकार एक बेक्किय हुक्का कर की स्थाप्त करने का प्रवेश हैं सत्रीरक्कारों पेटा क्ला नर दिल्ला कर किया करने । इह स्थार पहार दिल्ला करने की क्लानाकों हो बने क्ली नार वहने सार पहार

बरफा दिस्तृत सुच्छित वाकाल्य शंदशी विश्वाम का-सदश वधरा पूर्णि नामा प्रकारके कृषि एवं वालिन वरणायों स्वीकवित वाक्षोक-सम्बा बामपत

भारतीय इतिहास वृक्त प्रति

अन्तर्देशोग एव समुद्रो व्यापार बादिके नारण तत्कालीन विदवका सर्वाधिक महान्, प्रक्तियाली एव समृद्ध साम्राज्य था । उसने भारतका चक्रवर्ती सम्राट् वननेको बानी महस्वाकाक्षा प्राय पुरी कर ली थो ।

इस विशाल साम्राज्यका सगठन, शामन-व्यवस्था एव प्रवन्ध भी उसने बडे कौशलसे किया। दमन और समझौतेपर आधारित उसकी विजय-नीति दुनाली थी। जिन नरेशाने सरलतासे उसका आधिपत्य स्वीकार कर लिया और विद्रोह न किया उन्हें उसने वन रहने दिया, जिहान ऐसा नहीं किया उनका अन्त कर दिया । हिन्दू राज्य प्राय सव ही वने रहे और मुसलमानी मल्तनतें प्राय सब ही नष्ट ही गयीं और उनके प्रदेश सम्राद्-द्वारा नियुक्त हिन्दू एव मुसलमान सूवेदारोके शासनमें साम्राज्यका अग वन गयं । उसने शासनको पुणतया के दित किया, अधीन राज्यांके अतिरिक्त अन्य समस्त देशको १५ सूर्वोमे विभाजिन किया. प्रत्येक सूबेको सरकारोंमें, प्रत्येक सरकारको परगनी या महालोंमें और प्रत्येक परगनेको थानोमे विभवत किया । प्रत्येक थानके अन्तगत कुछ गाँव होते थे। प्रत्येक सूबेका शासक सूबेदार होता था, सैनिक-शासन, न्याय-व्यवस्था और वान्ति-स्थापन उसका कार्य था। उसके साथ ही एक दोवान होता था जो उससे स्वतन्त्र न्हता और भूमिकर आदि वसुल करता तथा सूत्रेके आय-अययको व्यवस्था करता था। एक वाकानवीस होता या जो सूर्वेके समस्त समाचार सम्राट्को वरावर पहुँचाता रहता या । सूवेदारके नीचे फ़ीजदार, कोतवाल, यानेदार आदि अधिकारी रहते थे और दीवानके अधीन तहसीलदार, क़ानुनगो, पटवारी आदि कार्य करते थे। सम्पूण शासन-यन्त्रका अध्यक्ष और सचालक सम्राट्स्वयं था और अपने मन्त्रिमण्डलको सहायता एव परामर्शसे यह समस्त राजकार्य करता था, यद्यपि सिद्धान्तत सम्राट् साम्राज्यमें सर्वोपरि शनित था, सवधा निरकुश और स्वेच्छाचारी था और समस्त पदाधिकारी उसक वेतनभोगी सेवक थे। राज्यके समस्त उच्च पदाधिकारी मनसबदार कहलाते थे। और मै ननवर १ अध्यारोहियोंने विक्रं ५ अस्वारोहियों तक्का नायकन्य एवं स्थानित्व भूचितः करते है । जितना बडा अधिकारी होता वंबरा जननाडी होंबा समझव होता था। बायोंके सम्तरिक प्रकल-ग्राक्तमा एव नदावक्र निर्द प्राप्त-वेचावर्गे स्वक्तम वी जूबक्यान्त प्रचारणया नार्यास्त्र ही वा । चितिन्न अविकारियोंकर निकाय स्वानेसी मो पुरी स्पष्टका को । नेवाका आवश्चिक निरोधका ब्रोता का । वैचार्क सरर्गाणो राजनेका निजय भी चाल निजा तथा छ। पडाडिक मस्तारोही बारारोडी जीर तीरामालेक क्यार्थ पूर्वपतित एवं किराज पपुर्विष नेशाची । राजा शोहरमक्क्षी सम्बद्धार्थे कृति-अनिकी नार्त-भीन पर्नेकरण प्रक्रिकरको ज्यासमा जारि मुख्य करते. पान की बंधे भी । प्रतिन्तर क्यांका शक एक-रिवार्ड डीवा था । सरकारी इकतापर्ने नडाई निर्माण को जानी कीं । स्थापार आदिशर की जनिय निरम्बण का । न्यार-पाननता सक्यर गाडो प्याप नकता था यह त्यां वासामानी नवीका बदानत था । शासक्यतः नाती तीव न्यावारीय द्वीते वे सीर बाय - राम्याको ब्राह्मको अनुसार न्याय स्टाटे से १ १४ प्रसार अस्परी बामान्यर प्रवृत्ताके बाव वेवनो तुपार धारत-शास्त्र वी मधन नरनेका प्रकल किया - वर्गनालकावणी शृक्ति बलकी न्वरस्था नाय दृष्ट मधोल दर्प भूतिपूर्व थी मिन्तु वस कालमें को यह क्योंक्स की भी भीर

बरनाव्यं बीर ताम नर्कत क्या बागा है। बरूर पुरस्ताक व्यं बीर सारकी पश्चिमाल्या था। क्या मान्य कार्य पीरना एक था, जीव बागि व्यं कार्यों । कार्य्य के क्यें पुरोच्य क्या के बीर क्या मान्य हुए। समुकारक डीजी समुद्रित बराव्याम क्योम दिवसी द्यानीय विविद्यास्य अग्नी पुरस्ताक प्रधा अग्नीस्य पास नर्माव्यं आंक्रक कार्य, शीपन कार्य दिवस कर्ष अग्नीस्य पास नर्माव्यं आंक्रक कार्य, शीपन कार्य दिवस

107

बारबीय इतिहास एक घीर

बहुत हुक तकन की गड़ी । परपूराः नहीं श्रीमा त्यूक व्यक्ते बीमरेजेंते भी

दित्यको भाँति नव नर-रत्नोंसे उसने अपनी राजसभाको सजाया या।
सगीताचार्य तानसेन उसके दरवारकी शोभा थे। मुसलमान होते हुए भी
चित्रकला ओर मूर्त्तिकलाको भी अकवरने प्रोत्साहन दिया। आगराका किला
और उसके मातर सुन्दर महल बनवाये, १५७०-१५८५ ई० तक वह
फत्तहपुर सीकरीमें रहा, उसे ही वह अपनी राजधानी बनाना चाहता था।
यहाँके घोखसलोम चिस्तीको कृपासे ही १५६९ ई० में उसका पृत्र
(सलीम—जहाँगीर) उत्पद्म हुआ था, अत सीकरीमें उसने अनेक सुन्दर
भवन बनवाये और शेखसलामका सुन्दर मक्तवरा बनवाया, स्वयं अपना
सुन्दर मक्तवरा उसने सिकन्दरेमें बनवाया। इन प्रकार कला-मर्मज्ञ सम्राट्
अक्तवरने कलाके विभिन्न अंगाको प्रभूत प्रोत्साहन दिया और भारतीयईरानी मित्रतास एक नवीन मुगल-कलाको जन्म दिया। साथ ही अनेक
कलापूर्ण दसनकारिया एव उद्योगाको सम्राट् एवं उसके अमीरोंसे अभूतपूर्व
आध्य मिला।

विद्वानो और विद्याका तो वह इतना आदर करता था कि उसके समयमें और उसक आश्रयमें विपुल साहित्य-सूजन हुआ। अबुलफ़जलका अकबरतामा और आइने-अकबरी, अलबदायुनो और निजामुद्दीनके इतिहास प्रत्य रचे गये, फ़्रेजीकी सूफ्ती कविता करता था, नरहिर, गग आदि अनेक हिन्दी कि यो थे, महाभारत तथा कई अप प्राचीन भारतीय प्रयाके भी उसने फ़ारसींमें और फ़ारसी ग्रन्थोंके सस्कृतमें अनुवाद कराये। कृष्ण-भिवतेके महाकवि सूर व अष्टछापके कविजन, राममितके गोस्त्रामी मुलसीदास और जैन-अध्यात्मके बनारसीदास आदि इसी कालमें हुए। पाण्डे रूपचन्द्र, पाण्डे राजमल्ल, प्रद्वा रायमल्ल, कवि परिमल आदि अन्य अनेक जैन विद्वान् और ग्रन्थकार सो उस कालमें हुए।

अकवरने दराकी सर्वतोमुखी सास्कृतिक अमिवृद्धि करने और उसे सास्कृतिक एकत्व प्रदान करनका स्तुत्य प्रयत्न किया। प्रजाके उत्यानके िण्य नेतीये तथा जावरणा जान-विषयं साहित दुरावांकी पास्मा इस्स निष्य हिला कीर विषयक्तियाः सन्त्रांतीय हरणा वस्य विषये बच्याची नामके केरीयो जावधी बीत्राम्य विद्या हार्या १ वर्षा पुरुषकार हिला स्त्रीते क्या दिखार वर नक्का मा वस यह क्यो कर्य नक्स्म ही हिला सम्बद्धांत मानक्स्म वसीत्रे विद्या ही स्वयुक्त मानि हिला है वि बच्याचे मानक्स्म वसीत्रे विद्या ही स्वयुक्त मानि हिला है विद्या हो ।

नामानो दशन कि वस्ताव से हैं मुस्पानीनों वाले क्यांचें सम्पन्त के स्वतंत्र कि वस्ताव से द्वाराना ही बचान की बीच में सप्ता का ना। मुस्पानीनांची और पहुर पुनवसानी सूर्गे। विकार का ना। मुस्पानीनांची और पहुर पुनवसानी सूर्गे। विकार का प्रकार के स्वतंत्र से पहुंची के स्वतंत्र प्रकार की सर्वेत कार्यत्व सरप्ता है से वी वा सरवारों कार्य गार्यों वहीं बर्गेंग हैं इत्युक्त मीनचेंद्र स्वतंत्र प्रवादनांचे वह वीच देख्य के

अच्छो लगती उमे ही अपना लेता। सभो घर्मी और उनके दिहानो एव गुरुओंका वह समान रूपसे आदर करता था। परिणाम यह हुआ कि हिन्द्र लोग उसके राज्यको हिन्दू राज्य ही समझने लगे और अपने धर्मी एव बाचार-विचार, त्योहार, चत्सवो बादिका स्वतन्त्रतापूर्वक पालन करने लगे। मुसलमानोके लिए मुहम्मद नाम रखनेका निर्पेष करना, नवीन मसजिदें न बनवाना, पुरानी मसजिदाकी मरम्मत भी न कराना बिलक अनेक मसजिदोका अस्तवलके रूपमें उपयोग करना, कुरानको टीकाओ. यरवी मापा और शरीयत आधिके अध्ययनको हतोत्साहित करना. स्वय अपने लिए सिजदा करवाना, इस्लामके रोजा, नमाज, हज आदि नियमीका पालन न करना और इनके विपरीत जीव-हिंसा और मास मक्षणपर कहे प्रतिबन्व लगाना, गोवघ बन्द करघाना, सूर्य, अग्नि और प्रकाशकी जपासना करना, हिन्दू, जैनो, पारिसया, पूर्तगाली जैसुइट पादरियो आदिको अपने-अपने धर्मायतन बनाने और धर्मोत्सव मनानेमें प्रथय देना. उन सबके गुरुआका आदर करना, अन्य घर्मवालोको यह छुट दे देना कि वे स्वय मुसलमानोंको भी अपने धर्ममें दीक्षित कर मके, अपने आचार-विचार, वेप भूपाको बहुत कुछ भारतीय बना डालना, इत्यादि ऐमी बातें थीं कि कट्टर मुमलमान उसे काफिर कहने लगे थे, कोई उसे पारसी कहता. फोई जैन, कोई हिन्द्र कोर कोई ईसाई। और वह सब कुछ या और कुछ भी न या।

तथापि इस विषयमें भी कोई मन्देह नहीं है कि जैनवर्म और उसके ।
गुष्मोंका प्रभाव सकवरपर पर्याप्त पढ़ा था। उसके शासन-काल के जैनोंसे
सम्बंधित जा निम्नोक्त तथ्य प्राप्त हैं उनसे यह भलो प्रकार स्पष्ट है।
१५७९ ई० से सम्राट्-द्वारा धर्माव्यक्षका पद ग्रहण करनेको महत्त्वपूर्ण
घोषणाके तुरन्त उपरान्त राजधानी आगराके दिगम्बर जैनोंने वहाँ एक
मन्दिर निर्माण किया और बढ़े समारोहके साथ बिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव
किया। स्वय राजधानी दिल्लोमें नन्दिसध और काष्टामधकी भट्टारकीय

टक्कालका एक वॉबलारी ना और सम्बद्धना समाद्त्रा स्थापन में था। धनार्थी बहारदारे वर्ता वनुराधवके किए एक विवास वागानंत्र विकास या मोर अमुखक सम्बन्ध ५ । आमान वैश-स्तुनोका सोशॉडार कराने कमरोहपूर्वक करकी प्रतिका की या। इस्ते वयक्कार्वे क्कमें राज्ये राजक्तको सरक्रत भावाने वास्त्रसामीश्रीरतका रणना ही करानी यो इस प्राप्त में सप्ताप्त की प्रमुख्य करते हुए कृति हैं किया है 'मुश्लेक समामते तत्राद बचनरी वरिका वायक कर कल खरके वसका क्लाबंब निर्मा हिंछन गयम बरके मुख्या था न निकारते में दिवाने वह बंधा हुए रक्ता वा बच्चे वर्गराञ्चने बढ्ने बहु बीर महन्यानका वो निनेत कर दिया ना क्योजि नक-राज्य अनुस्त्येश गुर्जि और 🙌 कारी है और क्य कुमार्गने अपृत्ति करता है। शक्त होडरमें पान्ते क्लियन सम्बन एक बन्त निवानके क्षिमी मानामें वामुख्यानीमरित विवासमा गा। क्य करिये भी बक्रवरके लुगान्त्रको और श्रेक्ट शहके वर्गकरनीमें इवडा को है। १५९४ है। न व्यक्तिय-विवादी कवि गांधकने समयपै रहकर बारत बोराजवारककी रचना को यी इस समझे थी बजार क्ष्मरको प्रचंदा वसके ग्राप गोरकाके वर्ज और शामरा नगरको सुन्धरक्राका वर्षम है। गांगरेलै अनेक विद्यानोकी स्वयंगर क्षा और विद्वयनोही होती थी । वपयेका गान्वे शतकात्रका कुछ वक्त वासकाता माबीर-मरेक राज्य बारनार्थ या । यह श्रीकुरपहुंबक्ते आह् अरेक्पर घान करनेवाके बोक्सक वादीन एनकाशकात पून या और प्रशा भनीता था। बीजरका बनस्य इकाका नारमानको अभिकारमे का बीने और बनाइधार-का न्यानार भी वक्की हामने वा बीर करूबी देखिन बाव हुन साब हना (परना) थी । प्रवासी मानों केला थी और अपने सिनके पानते में । एवर्च समार्के कोनमें यह प्रदिश्चि रचास हकार हका देशा था। समार स्वत्या बाल बानाल करता था और स्थान बाराज सचीव वसके जेंद्र करते है किर भारतीय इकिएस । एक रहि -

नीं(मो भी । घटानिया भीक-विश्वाची बहवाच बीनी शहू टोउर बक्रांस्मी

नागौरमें उसके दरवारमें जाया करता था। धार्मिक कार्यो और दानादिमें भी भारमत्ल लाको रुपये खर्च करता था। किय राजमत्लस उसने महस्त्र पूर्ण पिंगलजास्त्रको रचना करायी थी। दिल्लो, आगरा मथुरा, महजाद पूर, जौनपुर, मेरठ, हिक्बत, धीरीपुर, श्रीपय आदि अनेक नगर माम्राज्यके कदीय प्रदेशमें हा जैन धमके उद्यत के द्र थे। दिल्लो, ग्वालियर, घौरीपुर आदि कई स्थानोंम तो भट्टारकाय गहियों भी स्थापित थीं और इन दिगम्बर मट्टारका एव साधुआका भी समादप प्रभाव पढा था। जैन जाति इम कालम व्यापार प्रधान हा चली थी और प्राय सभी नगर-प्रभोमें उनकी छोटो-बही बरितयाँ थी। स्वय अवुल्फ्डचरने अपनी आइन-अक्तरोंमें जैनाका वर्णन और उनकी मा यताक्षाका यिवचन विया है। महाक्षि वनारसीदासक अध्वक्षयानर नामक आदमचितसे भी सम्राट् अक्तरको लाकप्रियता, तत्कालीन लोकदशा आदिपर मुन्दर प्रकाश पडता है।

इस कालमें अनेक जैन विद्वाना और विवयान भागतावें भण्डारकी, विद्यापक हिंदी साहित्यकी, स्नुत्य अभिवृद्धि हो। कमचन्द्रकी मृगावतीं चौपई, पाण्डे रपचन्द्रके परमार्थी होहाशतक एव गीतपरमार्थी, पाण्डे राजमल्लके पञ्चाध्यायी, लाटीसहिता, जन्बूम्बामीचिरित्र, अध्यात्मकमलन्मार्तण्ड एव पिगलशास्त्र, भट्टारक सोमकीत्तिका यशापरास, ब्रह्मरापमस्त (१५९६ ई०) के हृनुमन्तचित्र, मीताचिरित्र और भित्रव्यदत्त चित्रित्र, विशालकीत्त (१५६३ ई०) का रोहिणीव्रतराम, सुमितिकीत्त (१५६८ ई०) का धर्मपरीक्षारास, विजयदवसूरिका सीलरासा (१५७६ ई०), कल्याणदव (१५८६ ई०) की देवराज वच्छराज चौपई, पाण्डे जिनदाम (१५८५ ई०) का जम्बूचित्र, जानसूर्योदय, जोगोरासा और फुटकर पद, किंव परिमल (१५९४ ई०) का श्रोपलचिरत्र, मालदेवसूरि (१५९५ ई०) को पुरन्दरकुमारचौपई, जदयराज जतीके राजनीतिके दोहे (१६०३ ई०), विद्याहर्पसूरि (१६०४ ई०) का अजना-सुन्दरी

रात बारि मनेच धन्योका प्रचक्त शक्तवरके राज्यस्थामें हवा। बाही-अकरोके निर्वाणमें स्वयं अवुक्रमतकारे चैत-विद्वानीका सहयोग किया ज. बंदान बार्टिके गरेलीओ बंदाबकी क्यूंकि सहयोगके बंदक्ति के स्पे क्वादी बाती 🖁 🛊 बीकानेर-नरेवका प्रकान कर्नवन्त बच्चाका चारावे अकता होनेके

कारण बजादकी बारकों शा थया वा जीर वर्तने वसे बरक एक प्रतिप्रदेश संस्थी क्या किया था । नर्मक्याचे वृत्रेवर्ती गुक्रतानी-द्वारा मण्ड्य सर्वेच पानुवरी निरमृतियाँ यो नुक्कमार्थीं प्राप्त की बीर कोई बीरानेर वारिके विवयम्बरीये विकास क्षित्र । १९८१ ई. में क्ष्माट्ये केंद्राचर्म द्वीरनिवनतृतिको बुनानेके किए वृज्यक्तके सूर्वकार अञ्चयक्तके राज सन्देश मेंबा । रामादके निवन्त्रकार बार्यार्थ कुवचारी वेशक ही जनकर धारच भावे । ब्रमाद्रने कावा वृत-वाववे स्वाच्या किया और बक्तारे व्हिता स्री कारेक्टि प्रशासित होकर कहें नमलुक्ती क्याचि प्रदान की । आवार्य बीर क्षमके कई विश्व को काले बाप कारे में बसाइकी मिरमार वर्गविका

देते में । विजयतेन पन्ति बजादके वरवारमें "ईस्वर कर्ता उसी सी है दिक्तपर अन्य पर्योके विद्वालीके जनेक बारवाण स्थि विक्रिकर बहुमारक प्रक्रिक क्षांत्रम निहानको नाममै परावित करतेक बज्जानी क्योंने 'हवाई' क्यांक शास की । काल्ये काहीरमें की कर्ते करने पत मुकाना था । जीर शालुक्ताने बसादके क्लिट 'पूर्वग्रहसभान' को रचना थी और धरी कारब से 'पातवास सरसर सम्बद्धीन एउँकासभाग-स्थातक करकते में । वे प्रारमीके वी वर्षकर विवास में बीर प्रकृत होकर समारने करों 'कुकफान क्यांकि प्रचल की की । नहां मादा है कि एवं बार बधारको प्रयानक बिरामूच हुना पामुक्त बुकाने 🕮 बन्तिन हरू। कि बह हो कोई वैश-तकीय नहीं हैं, किन्यु काराएंगे पड़ा कि समपुर कराया दिल्ला है, यह कह देवें को नीवा पूर ही बावेगी । बर्टिने बकार्ड अस्टर-पर हाप रचा मोर करानी पीक़ा हुए ही गरी। राज्यके बमरान्टीने अतम व्यत्तीन इतिहास क्ष रहि

**

होक्रर कुर्वानोके लिए पशु एकत्र किये किन्तु मूबना पाने हो ममाट्ने वह मुर्वानी तुरन्त रक्तवा दो और पशुओका छुडवा दिया। उसने पहा कि 'मुसे मुख हा इन खुशीमें दूसरे प्राणियोंका दु न दिया जाये यह सर्वेषा मनुचित है। मुनि शान्तिचन्द्रका भी अकवरपर वहा प्रभाव था। एक वर्ष ईदके त्योहारपर वे सम्राट्के पाम ही थे। ईदसे एक दिन पहले उन्होंने सम्राट्से कहा कि अब वे वहाँ नहीं ठहरेंगे नयोकि अगले दिन ईदके उप-लक्ष्ममें हजारो लाखों निरीह पश्योका वध होनेवाला है। उन्होंने फ्रान गरीफ़को बायतोसे यह सिद्ध कर दिखाया कि कुर्शनीका मास और खून खुदाको नहीं पहुँचता, वह इम हिसासे प्रमण नहीं होता, बल्कि परहेज-गारीसे प्रसप्त होता है, रीटो और शाक खानेसे ही रीजे कबूल हो जाते है। वाय अनेक मुसलमान ग्रन्योंके हवाले देकर उन्होंने मम्राट् और उसके उमरावोंके हृदयपर अपनी बातकी सचाई जमा दी, अत मझाट्ने घापणा करा दो कि इस ईदपर किसी जीवका वध न किया जाये। यति जिनचन्द्र सूरिने अकबरना प्रतिबोध करनके लिए 'अक्ष्यर प्रतिबोधरास' नामक यन्य लिखा था । जिनचन्द्रको सम्राट्ने 'युग-प्रधान'को उपाधि दो थी । मुनि परातुन्दर भी सम्राट्से सम्मानित हुए थे और उन्होंने 'अकवरशाही र्श्वगारदर्गण' ग्राथको रचना की थी। कहा जाता है कि एक बार बाहजादे सलोमक घर मृत्र नक्षत्रके प्रयम पादमें कन्या-जाम हुआ। ज्योतिपियोने कन्याक ग्रह उसके विताक लिए अनिष्टकारक बताये और उमका मान देखनेका भी निर्पेष किया । सम्र।ट्ने अवुरुफ़जल आदि विद्वान् अमात्योंक साय परामर्श करके मन्त्री कर्मचाद वच्छावतको जैतधर्मानुसार ग्रहशान्तिका । रुपाय करनका आदेश दिया । मन्त्रोने चैत्र शुक्ला पूर्णिमाके दिन स्वर्णरजन कलशोंसे तीर्यंकर सुपाइवनायकी प्रतिमाका समारोहपूर्वक अभियेक किया। पूजनकी समाप्तिपर मंगलदीप और आरतीके समय सम्राट् अपने पृत्रो कोर दरवारियोंके माथ वहाँ आया, उसने अभिषेकका गमादक विनयपूर्वक अपने मस्तकपर चढ़ाया और अन्त पुरमें वेगमोंके लिए भी भेजा तथा उक्त

क्ति-पन्तिरको वन कान्य नुपाई गेंट वी । बजारने नुजरान प्रान्तके निरनार, यनुजर बार्डि जैन्द्रीवीरी रक्षा-में लिए सहयशारावर नुवेशार बायनवांको प्रत्यान मेता वा कि बेरे राज्यमे केन्साको जेननन्त्रको को शक्तिकाको कोई भी अञ्चल किमी क्रमारको धान न पहुँचा नके बोर नह कि इस बाहाशा साबान करने-माक्षा मोचय नवरमा याना बाला । अक्षा नायक येवना बुम्के बैन-मन्दिरोपे धिमाण्यामें विना है। अस्चरवे जैन-मृतियोंको सम्बद्धान वर दिसे प्रतिकार कारादकी कार्याक्रकामें सकारि (कीवॉलमानिकेम) बीचका की, प्रतिपत नव जिल्हाकर बाह नाम पर्वता समान अनावे हिंग्स बाह बरासी बारवादका कामीचे कर्माचारेका कियार बाद करवाडा समाज साहि वीओंना नरमोजन निधा करण योरखाका क्रमार निया आहि। १६ है अपन करना विद्यापन्तिय की विकास है कि दिसानेन बार्टर केन्युरक्ति प्रमानत अन्यान्ते कार्य वैसः येन वसरी बार्टि प्रमुखी-की हिमाना नियम कर दिया था, पुरान कैंक्शिकों जुन्त कर किया था, कैनदरबाक प्रति वाला प्रयोक्त की की दान-कुमादे नामीये वह बच्च बारण र शाला का परवादि १५५५ है में पूर्णवाली बैनार पारते लियेथेन बरन प्रत्यक्त अनुसरके अनगर अपने शारपात्क बाल पगरे निका वा कि संवयर बेंगबर्मका अनुपानी हो गया है यह वेंग-विवताया पालन करता है सैपरिवित्ते आन्यिकान को जात्नारायमध्ये बहुदा सात प्रकाहे मक्क नाम और बर्गने निपननो सन्त नामा अचारित कर दी है। र्वकारे, बहुबी चनुप्रती तीन महाज्ञिका पश्चमानी बाहि कैनल्सी, अपने बम्बदित राज्या बचेरतित रविवार सवा अन्य वह विनोत्तर, बी बच विचक्र वर्षि वामेके बनवन हो जाते हैं। जनवरने बीगॉहनाका निवेत

विवा का और इन बातामंकि शत्कावन करनवालींको कारी एक दिया बाइने-बरवरीयें जरनरको बन्ती वर्णनार्थं बस्त्री बस्त्रातिहरे

बल्य वा ।

*** बालीय प्रविद्वार एक श्री परिभाषक है। यह कहा करता हा कि 'यह निवत नहीं है कि मनुष्य वपने चररको पशुआको कल प्रनाय । मामक अधिरिया बाजपशीने जिल् कोई बाय नोजन न हानेपर भी उस मामभधाणका दण्ड जल्पायुर्व रापम मिनता ह, तम मनुष्याका जिनता स्त्रा गविष भागत माम पर्टी ई इम अपराधका गया ७०९ मिलेगा / मनाई, यहेलिय खाणि जीर्वाहमा गण्नेयाले जब नगाप बापर पहल है ता गामाणारियाको नगरमे भीतर रहनेगा पण अधिकार है ? मरे लिए यह कितने मुखकी बात तानी कि यदि मेरा गरीर इतना बड़ा होता कि मंत्र मामाहारी बंबल चमें ही साकर सन्तृष्ट ही जाते और अन्य जीवाको हिमा न करते। जीवहिमाका राक्ता अत्यात आपरवक है, इमारिक् मैंन स्वय माम खाना छोड रिया है।' रियया-प सम्बाधन बद बहा बरा। या 'यदि युवा अयस्यामे भी मेरी चित्तवृत्ति वन-जैमी हाती ता बदाचित में विवाह ही न यरता। किमम विवाह करता? जो आयुमें वहीं है य मेरी माताम समा है, जो छाटी है ये पुत्राप तत्व हैं और जा समयवस्या है ज है मैं अपनी बहनें मानता है। वस्तुत जीवहिंसा अकवरवा प्रिया थी। यह अधिवतर मांम नहीं खाया करता था और गोमास तो छूता भी न या। उनके मामे गामान अलाद्य पदार्थ था । वपक कुछ निश्चित दिनोंसे पण पिक्षयोकी हिमाकी अरुवरन मृत्यु-दण्डला अपराध बना दिया था । बिसिण्ड स्मिथने अनुगार अकवरका छगमग पुण ऋपम मांसाहार-याग और अशाकके समान भुदादिगुद्र जीवहिसा-निर्वेधवे लिए कडा आजाओका जारी करना अपन जनगुरुत्राके सिद्धान्तारे अनुसार आचरण करनेक ही परिणाम थे। हिसका-का कड़ी मजा देना मी प्राचीन जैन और बौद्ध सम्राटोंके अनुसार ही था। इन आजाआमे उसकी प्रजाके बहुत-से लोगाको, विणेषकर मसल-मानाको बढा कष्ट हुआ होगा। जैन-धममे प्रभावित होकर हो अपने अन्सिम जीवनमें अकवरने मामाहारका सर्वेषा स्वाग कर दिया या इसमें सन्देह नहीं कि वर्षा पर्यन्त जैनगुरुओने अकवरको घण्टो उपदेश प्रक्रिय हो बना कि 'अन्यारने कैन-वर्त कारण कर किना है। हो - छन्द-क्यांनी बायबंट बार्डर अन्य अनेक व्यविद्यावकार्यक बानुबार की असकर बैश-पर्नपर बडी सञ्चा पकता था । 'श्रुपार और वैश-वर्ध' 'सुरीस्पर मीर सम्रोतः 'जनवरक वैश-पुर साथि पुरशकें श्री वृत्ती सम्बद्धा समर्थन करती है । ब्रामपुर बीकरीके ब्रथनोमे बजादवे अपने बैश-पुरुवीके बैठनेके नियं एक विधिष्ठ तथा वैश-रकापूर्व तुम्बर क्रमी श्रमनायों यो सो 'स्पी-वियाशी बैंडक पहुंचाठी है। 'बुक्क-बाझालने प्रक्रांके शास नामक पुरुषको को एक विकास स्वतिका राजन है कि अवजरके बहुँका वर्षण नाकन करनेके कारण हो अन्त्रा-बोक्सी बच्छ बसन्त्रह हो सबे में और क्लीमी हेरना क्य बाल्योनके बच्चीको निहीत विकास । क्य फिर्मिन क्लीयको क्षणका जी ऐसे ही मुख्यमानीके कायोगने निकी वो सक्सरकी स्मातदाके शारम बस्तते बबन्द्रस वै । वजादके व्यक्तिय कर्व दुःवर्ग बीरी । १६ -१६ ४ ई अब व्यवस मोठ पुरुवधीय शिक्षेत्री क्या था पिन्तु १६ ४ ई में विकानुपर्ने सुरुद्ध क्षेत्र । इत बीचर्वे जनवरके बाल पुनी-धारतुमार मुख्य और वानियालनी मृत्यु हो पुरी थो। १६ २ ई. वे क्योनक पहरूपने गीर ब्रिप्ट वर्गदेवेचे ब्राह्माटके पराव क्रिय विश्व वर्ग ब्राह्माच्या व्यवस्था बक्षकारका वस करा दिला। जिल्हा बचीव जिल्हा बरता वी गा क्षेत्र कर को अब हुआ कि कहीं करते पूर्व पूचक्को ही क्राएर्सिकारी में बना दिना बार्ने । कता १६ ४ ई. में बक्रीयने आत्य-बन्नरेय कर दिया । निक्य जलेशर वृद्ध सभारते पुत्रको अन्त्री हातके चरश्चनामा सौर रङ कमरेमें बन्द कर दिखा निम्तू अनामें बाध कर दिया और करते क्या की ही सामा श्राप्त विकास मुख्य मिला । इस असार १७ वस्तुवर वर् १६ ५ ई. जी ६३ वदनी मानुनै जारद्यता यह न्यान् नुक्त बनाई

वालीय स्थितम् पृत्र धीः

चित्रे किनमा बनके श्रीयनगर करणन्त प्रधान वहा और क्ष्यूमी सम्प्रमें सपने निकालाके इति स्तरां अधिक स्कारण कर निवास कि म्ह पातशाह जलालुद्दोन मुहम्मद अकवर इस ससारसे कूच कर गया। वह न केवल अपने कालके ही अथवा केवल भारतवर्षके ही, वरन् सम्पूर्ण विश्वके सर्वमहान् ऐतिहासिक सम्राटोमें परिगणित हुआ।

४ जहाँगीर (१६०५-१६२७ ई०)—सम्राट अकवरकी मृत्यु होते ही साम्राज्य-भरमें श्राहि-श्राहि मच गयी थी। किय बनारसीदास-जैसे अनेक सह्दय प्रजा-जन उसकी मृत्यु से दु खी हुए। किय उस समय जीनपुरमें थे। अपने आत्म-घरिसमें उन्होंने िकखा है कि 'सारे नगरमें घोर और भगदह मच गयी। लोगाने अपनी-अपनी दूकानें बाद कर दों और घरोंके किवाह बन्द कर लिये, अच्छे-अच्छे बस्य, आभूषण और नक़द दपया-पैसा मूमिमें गाड दिया, घर-घरमें ह्थियार खरीदे गये, सब लोगोने मोटे मामूला कपढे पहन िलये, धनी-निर्धन ऊँच-नीचमें कोई मेद ही नहीं दोख पहता था, सब ही आतिवत एवं आधिकत थे।' किन्तु पिताकी मृत्युके एक सप्ताह पश्चात् ही नृष्ट्रीन मृहम्मद जहाँगोर पातशाहका शान्तिपूर्वक सिंहासनारोहण हुआ। उत्तराधिकारके प्रश्नपर किसी प्रकार-का कोई क्षगहा या मतभेद न हुआ

राज्याभिषेकके अवसरपर सम्राट् जहाँगीरने प्रजाके आस्वासन और अपनी उदारता-प्रदर्शनके लिए द्वादशसूत्री घोषणा की जिसके अनुसार सूमि-करके अतिरिक्त अय समस्त कर माफ कर दिये गये। केन्द्र-द्वारा शासित समस्त खालसा क्षेत्रकी सहकोंके किनारे तथा निर्जन स्थानोंमें सराय और मसजिद बनवाने, कुँए खुदवाने और लोगोको वसानेका आदेश दिया गया। आदेश हुआ कि किसी यात्रीका सौदागरी या अय माल उसकी दिना अनुमतिके न खोला जाय, यदि उसकी मृत्यु हो गयो हो तो उसकी सम्पत्ति चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान उसके क़ानूनी वारिसोंके सुपूर्व कर दो जाये किन्तु यदि कोई वारिस न हो तो राज्य-द्वारा इस कार्यके लिए नियुक्त कर्मचारी उस सम्पत्तिको अपने अधिकारमें लेकर उसका उपयोग सराय, तालाव आदिके निर्माण एव अन्य लोकहितके

मुख्यारणे मोर एक्सारको वो लोई शासाहार व करेना नवोक्त उस विशे वैनारका मुक्तिमूक्त क्षमूच हुवा चा व्या उस विशे किसी वो ब्लूबर्स सामवान करना सम्बद्ध है और पुरुद क्लावे व्यास्त वर्षीन सविक सनव

तक दर निरामीका प्रयोग निया है, रिक्सपरों तो बहु कमी में मानावार कही बरते में बात में वी ताले एमको बरावेण निर्माल मीर-दिलारी निरामका व्यूपोवण बर्णा है। कालो का प्रारमिक मीरामांशा आहंताने जाने कामान्योद पुत्रते कारोपोर्ट केम्पाल माना दिलारी है। एमके कामान्याद प्रवासनाता दिला कि व्यू माने रिपादी के कामान्याद करेंग्री मानान्याद कामान्याद करेंगा। यो तो कामान्याद करेंगा भी तो कामान्याद करेंग्री कराया प्रवास करेंग्री कामान्याद करेंग्री के कामान्याद करेंगा। यो तो कामान्याद करेंग्री कराया या व्यवस्थित वर्षानीय क्षेत्री के व्यवस्था कर्माण्याद करेंग्री है। महान्याद क्षेत्र क्षेत्रता केंग्री कराया या व्यवस्थित वर्षानी क्षेत्र मोने में क्ष्रता कराया क्ष्रता क्ष्यता क्ष्यता क्ष्यता वर्षान क्ष्यता क्ष्यता क्ष्यता क्ष्यता क्ष्यता क्ष्यता क्ष्य

..

जारतीय इतिहास एक धीर

नीर कर्मचारी भी सभी प्राय पुराने ही चत्रते रहे, जिनका मृत्यु हा जानी या जी पदच्युत कर दिये जात उनक न्यानमे ही नियोत नियुवित हाता थी। इस प्रकार शायनय हमें प्राय चोई परिप्रतेन नहीं हुआ। अपने आपको यायपरायण मिद्ध करनका उम बड़ा चाब था, इसी उद्देश्यमें मोनेकी एक जजीरते बैंघा घण्टा उसने अपने महलको विद्यक्तीये लटक्या दिया था।

वक्तक मुगुल-नरेशामें जहाँगोर हा ऐसा वा जा अपने माता-पिताका अनेक मनोतियाँ मानन और पोराकी पूजा बरनसे प्राप्त हुआ था और जिमका लालन पालन जनमे ही अपार वैभवके यीच हुआ। था। उमकी मिला-दोक्षा भी विविध एव नच्चमोटिको हुई यी । ग्राह्मण पण्डित, विद्वान् नैनगुरु, जैमुडट पादरी, सूकी यदि और मुमलमान मीलदी उसके शिक्षक ^रहे पे । वह मेघावी, प्रतिभाषाली, बुद्धिमान्, दूरदर्शी, भावुक, कलाममझ और विद्यारियक था। उसका आत्म चरित ही उसके अनुरू ज्ञान और विद्वतारा परिचायक है। अपने जानीय स्वभावके अनुसार कभी एभी वह क्राघमें आया एव अत्यन्त कर भी ही उठता था, किन्तु माथ ही बडा नरमदिल और दयालु भी था और पशु-पशिया तकसे वटा प्रेम पश्ता था। दर्शनशास्त्रम भी उस वडा प्रेम था, जिनसिहसूरि आदि जैनगुरुआ और जयम्य नामक प्राह्मण योगीक माथ वह घण्टो मार्शनिक विवेचन दिया करना था । जिनसिंहसूरि सम्राट् अकवरसे सम्मान प्राप्त जिनच द्र-सूरिके शिष्य थे। जहाँगारन उन्हें युगप्रयानकी उपाधि प्रदान की थी। अपन पिताको माति ही वह स्वतन्त्र विचाराका व्यक्ति या और इस्लाम उनका कुलपरम्परा धर्ममात्र था, बहुधा मुल्ला मीलवियोंकी उपस्थितिमें ही अपने दरवारमें वह ब्राह्मण जैन, ईसाई आदि विद्वानोंसे इस्लाम धर्म. **पुरा**न शरीफ और पैग़म्बर मुहम्मदकी कटु आलोचना सुनता और जब इमपर मुल्ला-मौलबी लोग झुब्ध हो जाते तो उनका उपहास करता। तथापि अकवरकी धर्म-सिंहण्णुताकी नीतिकी एक प्रकारकी प्रतिक्रिया उसके बमनमें पुरु 🗓 नदी जो । इस्ताद-बन और मुक्तवालींका वह अस्पर्दे वनिक एक मेशा था । देव-विजयके विक्रशिक्षेत्रे वसले कुछ बन्दिएँ और मृत्तिनोको भी शोहा । एजोरी नावक श्वानमें हिन्दुजीने बहुत-ही मुख्यसम कमानोडो हिन्दू काकर ब्याहा वा श्रह बनावार सल होनेपर बहाँगीर में माता निकास दो कि वहि कीई चलिएकों ऐना करेंचा हो को नारी दन्त निया नानेवा । को दिल्हु शादि इस्थापने वीतित होते इन्हें वह वडीका की क्या व्य । एवारि बॅपरेश्रुत कॉब श्रावित्मका क्ष्मने एक मक्तमान रनती-के बाद विवाह बच्टीकी बीर वसे ईनाई बनानेकी बनुपांत है दी वी । सनके सम्बर्धे अक्क नरील दिल्हु एव सैक-सन्दिरीका निर्मास हुवा । ऐश्रम साध-नची नवरने हो बसके राज्यक बॉन्स्स वर्णोर्स बस्तर नवीन मनिया नने में ! हिन्दु केंब आहिए को बचने बबोस्तव बादि बनानेकी वा वर्ष स्कानक थी इस्को दिशानी बादि स्वेद्धारीये भी बन्नाट् मान केता था। दिख बैंग मारिका बाले टीवॉडो बाबाएँ करवेची बी. पूरी स्वामीतता स्मे मुमरान बार्टि बाल्ट्रेके सैनियोंने बचके बल्टीय धावकृति द्विता-नियेक कर्र परधान को कारी करावे ने। रिज्य वीपानेरके एक वैत्यदि मानर्किन ने निर्मात राजक्तार संबद्धका पढ़ किया था. बसीके परावर्धने बोकलीर-का राजा धर्माबद्ध की बार्शनीरका विरोधी हो बना वह और निर्मा बोरकर श्रीकांगर काम नना गा । शायमें शायीकर बन्दवरके कानी बीर बनने ५०में यह वनवार वन्त्राक्तके दोनी पुत्रीको मी पुत्रकारण बीफार्नेर क्रिया के बचा या और यहां तथ ने निवर्धक होकर अपने हमें मैं में रहने को हो राजब्दिने बर्नेन्स हमेतीको और किया । सम्बाद्य बीर बीरताके बाय करते-करते नह नहें और जनवी निकाने बीटर रिया !

बीजर्मात हिन्दा के प्रया था बीर यहाँ वाद में तिवार्थक होच्या सम्मी हार्य-में में ट्राई के बीर पार्वदेश करिया होच्या परियोग्ध परि किया । प्रमाश्या और सीरामीक बाम कालेक्साओं कर को और जन्मी निवार्थन बीद्रार निया । सम्माग्य पुरस्क कार्यार्थ्य कार्याच्य थे । वार्यी वाद प्राथमी बहारीयर कार्य-सामीद्र कीर राजा पर्वाराह्य कार्याच्या हुए तथा । वार्यान्याय कार्य-पार्थ पर्वाराह्योगा कार्य कार्याच्या भीति हुए तथा कार्य-स्थाप । सीरामीद्र कीरण कार्य करिया थे परिवार के परिवेद कर दूसना करियोन कर्याच्या

114

वालीय श्रीवास वृद्ध ग्रीह

किये गये जहाँगीरके ये अत्याचार राजनैतिक कारणोसे हुए थे। वैसे जैनोंके साथ वह उतना ही उदार और सिंहण्णु था जैसा कि अन्य घर्मावलन् म्वियोंके साथ। उसकी घार्मिक नीति अकबर-जैसी उदार न होते हुए भी अनुदार न थी।

चम कालके जैन कवियो और साहित्यकारोमें मविष्यदत्तचरित्र, भक्तामरकथा और सीताचरित्र (१६१० ई०) के कर्त्ता ब्रह्मचारी-रायमल्ल, भविष्यदत्तचरित्र (१६१० ई०) के क्ता मासनपुर-सतौली निवासो पं० वनवारीन्जल, सुदर्धनचरित्र (१६०६ ई०) एव यशोधरचरित्रके कर्त्ता आगरा निवासो कवि नन्द पचमीय्रतकया (१६०९ ई०) के कर्त्ता चर्ज्जैन निवासी कवि विष्णु, मगवतीगीता (१६१२ ई०) के कत्ती विद्या-कमल, कृपणचरित्र (१६१४ ई०) के कत्ती कवि ब्रह्मगुलाल, ढालसागर (१६१५ ई०) के कर्त्ता गुणसागर, जीव घररास (१६१९ ई०) क कर्त्ता त्रिभुवनकीर्त्त, रविद्रतकथा (१६२१ ई०) के कर्त्ता भानुकीर्त्ति मृनि, सुन्दर सतसई और सुन्दरविलासके कर्ता कवि सुन्दरदास (१६२३ ई०), मृगाकलेखाचरित्र, टण्डाणारास, चुनहो, ढमाच बादि लगभग बीम-इक्कीस रचनाओं कर्त्ता प० मगवतोवास आदि उल्लेखनीय हैं। उपयुक्लिखित क्ति नन्दने अपने ग्रन्यमें आगरा नगरकी सुन्दरता, 'नृपति नूरदी शाहि' (जहाँगीर) के चरित्र एवं प्रताप और उसके सुख-शान्तिपूर्ण राज्यमें होनेवाले घम कार्योका सुन्दर वर्णन किया है। उस समय आगरेमें हीरानन्द मुक्कीम राजधानीका प्रतिष्ठित रईस था तथा आहजादा सलीमका कृपापात्र और निजी जीहरी था। १६१० ई० में जहाँगीरके बादशाह हो जानेके पश्चात् **उसने उस अपने घर आमन्त्रित किया और** भेंट दी थो । उस अवसरकारोचक वर्णन भी कवि नन्दने किया है। महाकवि वनारसीदास और उनकी विद्वद् गोष्ठी जहाँगीरके शासनकालमें आगरामें जम रही घी और कवि अपनी उदार काव्यधारा द्वारा हिन्दू-मुसलिम एकताको प्रोत्साहन द रहे थे तथा अघ्यात्मरस प्रवाहित कर रहे थे।



कि दन प्रातांसे उसकी विशेष क्षति नहीं हुई। मामाज्य अधुण्य बना रहा इसका काई विशेष श्रेय जहाँगारको नहीं है। इतिहासकाराने उस प्रिरोधी तत्त्वोका मिश्रम और मुगल समाटोंमें सर्वाधिक पुढिसान् मूर्व प्रतिपादित विया है।

पिरामनपर चैठनेके अगले ही यप (१६०६ ई०) उसके पृत्र राज-षुमार सुमक्ते विद्रोह बर दिया । अकारके जीवनमें ही मलीमके विद्रोहके पारण मुसम्बती राज्य प्राप्त बानेशा आशा हो गयी या बित् उसके प्रधान महायक उनके समूर अजाज कोका और मामा मार्नामह उन नमय अकसरके प्रतापम चुप रह गये और जहाँगीरको चन्हाने वान्याह हो जान दिया। अग्र खुमच्च स्वय कुछ माथी और द्रव्य इक्ट्रा करने पजायकी कोर कूच फर दिया और अपन पिताक विरुद्ध मिद्राह कर दिया । जहाँगीरने वडी तत्परतामे तुरन्त स्त्रय जाकर विद्वादया दमन किया, खुमस्की बादी किया तथा उसके साथियोका निर्दयताचे साथ महार किया। सिक्यांके गुर अजुनमिहन खुसम्बकी सहायता की थी अत उन्हें भी यात्रणा दवर मार हाला, एक दवनाम्बर जैन यति मानसिंह भी उसका समयक था अस चसके साथियो और अनुयागियोको राज्यम निर्वामित कर दिया गया। एक बप बाद फिर गुमरूके सम्बाधमें एक पड्यात्रका सन्दह हुआ अत राजकुमारको अधाकर दिया गया और राजा अनीरायको सुपर्दगीमें जीवन भरवे लिए नजरकैंद रग्वा गया। १६१६ ई० में उसे उसके गृष्टु आसफलींक सुपुद कर दिया गया जिसन उसे शहजादे ल्रंमनो १६२० ई० में मीप दिया श्रीर खुरमने १६२२ ई० में दक्षिणमें ले जाकर अपने इस अमागे बढे भाईको गुप्त रूपमे हत्या करवा दी। राजकुमार खुमरु मुशिक्षित, सुसस्कृत, उदार, कोमल हृदय और वडा सच्चरित्र या। सभी छोटे बढे उस चाहते थे। लोकने उसकी मृत्युको एक सन्तका विलिदान माना ।

१६०७ ई० में बगालके एक विद्रोही सरदार धेर-अफग्रनका दमन

चन प्रयत्नने पांचा बीट घट बाउबन दोनों हो बादै नव ३ घेट बाउनमी कुण्यों पन्नी नेहर्राधना और वसकी कुधेको बन्दी करके समग्र धान नवा और शाही जाल पूर्ण एक विवा बना । मैहरको देवते ही नहीं हैं। बनपर नादिन हो नवा किन्तु बार वय तक वह वह वसका निवास कराउँ धी मना १६११ ई में बेटबॉबनाने बस्टमें निरम् बर निय सीर पढ पॉचना मुरजहाँके नावले इतिहानमें गतिह हुई। मृत्यहाँ सावण मुख्यों हो नहीं का करन् जनका वृद्धिमता वृद्धिजन यस्मीतिनी दम पान-पूचम जो वी । पुबाबके दशके बाविष्टार अवस्थार विश्वके शायच कार कारिका में वर्ष क्या कामा है। और-मीरे व्यान राज्यकार्व उनने जाने हायने के किया और बहुचिए बाँवयतर विकास ही बुध रहते क्या - जनने पहले पाँठते कराब बरमाची करन बहाँमीरने पुत्र बहरनारके आव निषम् दिशा । शुरनहांचा वाल वंबाननेन व^{रिप्रा} सन्दार्ग सम्बद्धियाने जाना ना, मध्यरने उद्वे घरन रो नी और प्र क्रेने परपर लिकुन्त कर विका या । जब वह बचयानुरोत्सके नामने नक्रम, सा प्रयास करता हुआ। उनकी मृत्युके उपरान्त करता पुत्र और मुरन्धी-का मार्ड शास्त्रको प्रकार कर्ना हुन। । जानक्रवांको पुढी गुक्ताव वह^{न्} राज्यभार मुर्गमके ताथ विश्वती मी जल बढांबीएके बालनकारणे करारार्थने न्रावर्ग कान्द्रजा बीर नुरंग (कारक्दो) ना बंद्रस्त वर्ण ही नर्वे-नर्य था । पुरवर्श जान्वते आला बरबार यो करतो ये और निक्योगर भी अनुका नाम अधिन होने कमा था । १६११ से १६९२ है क्षत्र मस्तुत्र भूरमहोत्री हो सक्तरह । यही ।

नरमके निर्माणीयोगे अपने कल्याची नुपूत्रीय कीकाफी मेत्रा मित्र

का भारत मुख्यामा हा सम्बद्धा र पहा । मारमने नाहीपीर जिलायों और कमते मेनूदर पार्टीपरित सा है समा मा मिन्तु मोर्ड कमत नालानू हो जनने किर कमर हुन्छ सेकसार्य मुक्त पर से । कमते मार्टिक जिलीयों जबने कमते बातनान देनदारा और बहुत्त पेर एक कमते बार्टीमार की करता था । सम्बद्धान हमते कमरी राजनीतिक उद्देश्य था । यह पश्चिमी तटके पुर्वगलियोंसे मैत्रो वनाये रखना चाहता था, इमीलिए १६०८ ई० में उपने अपना एक राजदूत गो**आ** भेजा। किन्तु उस दूसके पुर्तगाली गवनरसे भेंट होनेके पूर्व हो इग्लिस्तान-के राजा जेम्म प्रथमका राजदूत मर ऑन हाकिन्स जहाँगीरके दरबारमें क्षा पहुँचा, उसने २५००० स्वर्ण-मुदाएँ सम्राट्को भेंट दो और अपने देश-बासियोंके लिए भारतवपर्मे च्यापारिक सुविघाओंको याचना को । सम्राट्ने वसके साथ वही सज्जनताका व्यवहार किया किन्तु उसका दूतकार्य सफल न हुआ, जिमका प्रधान कारण पुर्तगालियोका सीद्र विरोध या। हाकिन्स १६०९-११ ई० तक दो वर्ष यहाँ रहा। ' उमके विवरण महत्त्वपूर्ण है। तहुपरान्त अँगरेजों और पुतगालियोंमें भारतीय सागरमें गुद्ध हुआ । पुर्तगा-िल्योंने सम्राट्के सी चार जलपोतोंका अपहरण कर लिया इसपर सम्राट् चनसे रुष्ट हो गया और उसने उन्हें दण्ड दिया। ऐसी स्थितिमें जब अँगरेजोंका दूसरा दूस सर टामम रो (१६१५-१८ ई०) मुगल दरबार-में आया तो वह आसफ़र्ख़ों आदि मित्रयोंको कुछ घूस आदि देकर अपने देशके लिए व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त करनेमें सहज हो सफल हो गया। टामम रोके अपने वृत्तान्त और उससे भी अधिक उसके सेवक टैरोके लेख जहाँगीरके इतिहास और उसके दरबार एवं दरवारियों आदिके रोचक चित्रणके लिए वडे महत्त्वपूर्ण हैं। राजकुमार खुमरूके भी व्यक्तिस्व एव चरित्रकी इन अँगरेजोने बड़ो सराहना की है।

१६१२ ई० में बगालके विद्रोही सरदार उस्मानखीका दमन विया गया और दक्षिणमें अहमदनगरपर आक्रमण किया गया, किन्तु उस राज्यके सुयोग्य हन्त्री प्रधान मिलक अम्बरके कारण विशेष सफलता नहीं मिलो । मेवाहके विरुद्ध भी प्रारम्भसे ही युद्ध चल रहा था। राणा अमरिसह अपने पिता बीर प्रताप-जैसा दृद्धिति एवं चारित्रवान् नहीं था। वह कुछ आलसी और विलासी था। राज्यकार्य मी कम ही देखता था। मामा-राहका पुत्र जीवाबाह उसका प्रधान था। चूहावत आदि सामन्त सरदारोंके

करों का करती हो राजा अध्यय नुष्कीके विश्व पूर्व करता गि से कियु जन एक्सी भीर एकते राज्यको अधिक स्वारी जा रहे भी । जन्म एर १९१८ में अध्यक्षी कृतिको अधिक शेराता और मुक्तिकी एक्सी अधीतना स्वीकार करोगर विश्व कर दिवा कियु तर्जा कराई राज्यकर देवेत अपने तर्जव अधीत कार्या मुक्तिको देवे एरज्यकर देवेत अपने तर्जव कार्यकार का विश्व । अधीत स्वारी राज्यके परावम्मता लोगर एक्सी ही अस्तव असने जा। कार्यकार कार्यकार कर्जि लोग्ना कर्मा से मुक्किक आहे हुएसा कर्माक्स करों करां। केर्य

नों पेन मीर बास्टक का बनायक किया। वर्णाकां को प्रस्तुवाधि कर तब बदात किया का। मुदंव को युवायका क्या किए ही हो बदा थी। क्यारेशने बवर्शामु कीर वर्णाब्वाचा स्टेशनरेश्यो मृद्यियो कियोन करारर राज्यभीय क्यांस्ति कराव्ये कृत्यक बीरवरेल्ड कर बक बराव्ये राज्य मृद्यमक्षे किंव नवे रहे। कर्गीतिका योगान बीमाजब ही प्या और वस्त्री कराव्यु बक्का पुत्र बन्नवराज प्या की रामा वस्त्राविक्ष वस्त्र कर

बार्र-महित संस्पेरने तकार्के सम्मूच वर्गन्तत हुना बीर स्पर्ने हत्ता

६१६ ई वे बायराम तेल तावक महामारी वैगो। क्या बनासी रानने वर्गने वात्रकारिको इन बोगच महामारीका नांका रेगा सौरी वर्गन दिया है। मारान्तरीत मुझेसे तीलोवाक इन रोगका गदि वर्ग प्रकार प्रकार वा। दितन्तरार वर्ग कह बतार गारान्य रोपका बहु स्वीत रा। इसी वर राज्युमार लुईको निवासक्रीकी एवसमारी क्यारवस्तरार

होंने पर राजपुरार सुरंकते नेवायावालाया राजपार कार्यास्था स्वार पर परिचार पर किया । नवारते प्रारम् व हारण वहे राजपारी स्वारीय विशेष भीर रोजनवारी कारण विधा: १६६ वें के गोराके प्रतिद र्षे पुष्ट पूर्वर वहीरोपण विधार हथा। वह नव्यास्था तक्ष्मा वें सम्पन्त वें व्योगीर का बुचिन जीवर में एक नाविष्य सम्पन्ती ते वर्ष

जलर्ताच इतिहरू । दुउ दिर

था कि राजा और राज्यका वास्तविक धर्म इस्लाम ही है। पिछले दिनोंके ऐसे कार्योमें उसके परामर्शदाताओका प्रभाव भी काफ़ी था। १६२२ ई० में राजकुमार ख़ुसरूका वष हुआ। उसी वर्ष ईरानके शाह अव्वासने मुगलो-से क़न्दहार छोन लिया । इस घटनासे जहाँगीर वडा क्षुन्ध हुआ, वह स्वय वोमार था अत शाहजहाँको एक वडी सेनाके साथ कन्दहारका उदार करनेके लिए आदेश दिया, किन्तु शाहजहाँने स्वय निद्रोह कर दिया। क्रन्दहार-उद्धारका कार्य बीचमें ही रुक गया । जहांगीर अत्यन्त क्रोधित हुआ और विद्रोही राजकुमारके दमनमें जुट गया। दिल्लीके निकट १६२३ ६० में शाहजहाँ पराजित हुआ और उसका प्रधान सहायक सुन्दर ब्राह्मण युद्धमें मारा गया । श्वाहजहाँ राजपूतानेकी ओर भाग गया जहाँ मेवाडके कर्णीं हते मित्रता निवाही और उमे आश्रय दिया। तदनन्तर मालवा होता हुआ वह दक्षिण पहुँचा, वहसि तेर्सिगाना होता हुआ वगाल पहुँचा और वगाल एव विहारपर उसने अधिकार कर लिया। किन्तु वहाँ भी शाही सेनाने उसे पराजित किया अत फिर दक्षिण चला गया और वहाँ उसने मलिक अम्बरसे मित्रता की । १६२५ ई० में पिताके साथ उसकी सलह हो गयी, अपने पुत्र दारा और औरगजेबको उसने अपने सदाचरणके आस्वासनके रूपमें सम्राट्के पास भेज दिया किन्तु स्वयं उसके सम्मस चपस्थित होनेका उसे साहस नहीं हुआ और जहाँगीरकी मृत्यू पयात मेवाड-नरेशके आश्रयमें वा अन्यत्र गुप्तरूपसे ही वह रहता रहा।

१६२६ ई० में साम्राज्यके एक प्रधान सरदार महावतलीसे, को धाहजहीके विद्रोह-दमनमें और उसका पीछा करनेमें सफल हुआ या, मिलका नूग्जही कष्ट हो गयी। उसने अपनी स्थिति भयप्रद जान जहाँगीर और नूरजहाँको, जब वे झेलमके तटपर छावनी डाले पढे थे, घर लिया। किन्तु नूरजहाँकी चतुराईसे उसका प्रयत्न विफल हुआ और उसे प्राण विधानर स्वय भागना पडा। वह भी जाफर शाहजहींसे मिल गया। १६२० ई० में कुछ दिन रोगी रहनेके उपरान्त कश्मीरके मार्गमें सम्राट

बर्गनीरमी कृत् ही नथी। बाहीरके उनके महत्वरेंगे जबे स्टब्स्ट नया। तमरा बनेद तृत नृगक रहेंगे ही नारा जा नृद्य मा १६९६ हैं मैं तुनरे तृत परवेशों जो मुस्तिके ही बाहोपर बहुर है हिसा सम या। हीनत पुर साहरका मुख्योंका साहर या। वह निस्तृत निरम्स साहरका महिल्ला होंगे के नियम जा साह कर निस्तृत निरम्स

काफै कारा करना विचा । बाह्यपूरी चुरूल एंडन्सिके कियू वर्ष स्मा कोर स्थान बारुक्को आहं कर के कार्यको वादेश की हात कि बारी वसके क्ष्मेंक पुत्रक एसेपाएड जिल्हाम वस वर्ष पर्दाश कार्य । बारपाल ही वाज रामपर इंग्लिक एक्सी पायमें कार्य वाद महा मुख्य बंधके कम बाद बाने बाहतो मुच्छे कार कहार की वर्ष । ब्राह्म व्यक्त पुरस्के वस जायाप क्षेत्रिक श्रीको जॉर्व किर रिक्तों को बीट वर्षण्य पुरस्के क्ष्म जायाप क्षेत्रिक श्रीको जॉर्व किर रिक्तों को बीट बारपार स्थानकर्म वह क्षावाच्ये कार्यों क्षम दी व्यक्त दी व्यक्त । ब्यह्महाइन्हें

अध्याय 🎖

मुगल-साम्राज्य-अधोगत

शाहजहाँ (१६२८-१६५८ ई०) इस प्रकार अपन माई मतीजों-के रक्तसे रजित मुगल निहासनपर आसीन हुआ। आमफ़र्खी उसका प्रधान मन्त्री या, उसकी बेटी मुमलाजमहल जो साहजहाँकी अत्यन्त चहेती पत्नी यो साम्राज्ञी हुई। शाहजहांके दाराधिकोह, औरगजेव, मुराद और शुजा नामके चार वयस्क पुत्र तथा जहाँनारा और रोजनआरा नामकी दो पुत्रियाँ सुनिक्षित, राजनीति-निपुण और राजकायमें सहायक थे।

राज्यके प्रयम वर्षमें ही जहाँगीरके फुपापात्र वीरसिंह युन्देलेके पुत्र जुझारसिंहने बिद्रोह कर दिया । उसकी दबा दिया गया किन्तु वह फिर बिद्रोही हो उठा । जब झाही सेना उसका पीछा कर रही था तो १६३५ ई० में गोडोंने उसका वध कर दिया और कुछ कालके लिए धीर बुदेले धान्य हो गये । १६२९ ई० में खानजहाँ लोदीने अहमदनगरके सुलतानके साथ मैत्री करके सम्राट्के विकद्ध बिद्रोह कर दिया, उसका भी तत्काल दमन कर दिया गया, चार वर्ष बाद उसने फिर बिद्रोह किया और इस बार वह मारा गया । १६३०—३२ ई० में जब दक्षिण विजयके उद्देश्यसे सम्राट् बुरहानपुरमें छावनी झाल पड़ा था तो दिखन और गुजरातमें भयकर अकाल पड़ा । इस भीपण दुर्भिक्ष और उसकी सहयोगिनी महा-मारीके बारण त्राहि-त्राहि मच गयी और असख्य मनुष्य कुत्ताकी मौत तहप-तडपकर मर गये । सम्राट्ने कुछ कर माफ कर दिये और कुछ हव्य दान किया, किन्तु दुष्कालकी भीपणताके समक्ष यह सब महायता

भवान थी। १९११ में वे धाइन्होंकी चूंती वेजन बहुन्वच्याने व्याप नृष्यात सहकती महिल्हाने मृत्यु हो चर्चा। वसने सहाराणि १४ क्लामें हों की अनेकपीहत कारत, नावता माधित बाता की १९११ हो करती हिन स्पर्तिक संस्थान करते नुपनिक रकतेनोंने महिल्हा कार्यु हों स्माप्त सारायकार विश्वीचार्य वाले माधन कर दिला।

१६३२-३५ हं के बीच प्राप्तवाई ईवाइबोटर बलारिक हरित परा

थालीय इतिहास एक धीर

. .

स्वोकार कर ली, किन्तु बीजापुरके साथ निरन्तर युद्ध चलता रहा। अन्तत १६३६ ई० में वीजापुरने मो सम्राट्की शर्तीपर सन्धि कर ली किन्तु वह उसके पूर्णतया अधीन नहीं हुआ। उसी वर्ष राजकुमार औरगजेव दिसगका सूवेदार नियुवन किया गया। खानदेश, वरार, तेलिंगाना और दीलतावाद प्रान्त उसके धामनमें थे और १६४४ ई० तक वहाँ उसने शामन रिया। वह वहाँ निरन्तर युद्धोमें सलग्न रहा। अन्तमें सम्राट् उससे षष्ट हो गया और उसे कुछ कालके लिए वेकार एव तिरस्कृत रहना पद्या। १६४५ ई० में वह गुजरातका सूवेदार बनाया गया और १६४७ ई० में वल्ख और यदस्कांका सूवेदार बनाया गया और १६४७ ई० में वल्ख और यदस्कांका सूवेदार बनायर भेज दिया गया। मन्मवन्तमा यह बौरगजेवको बढ़ती हुई धवित और उसके स्वभावको देखकर उसके प्रवल प्रतिद्वन्द्वी माई दाराके सकेतपर ही हुआ था जो कि उस ममय पिताका मर्याविक कृपापात्र था।

१६३८ ई० में कुन्दहारपर वहाँके शासकके विण्वासघातसे मुगलोंका फिर अधिकार हो गया था। १६४५ ई० में राजकुमार मुराद और सेना-पित अलीमर्दानने बल्ख और बदख्यांपर भी अधिकार कर लिया था। किन्तु औरगलोव जन प्रदेशोंको अधिकारमें रखनेमें असफल रहा। वल्ख और इन्दहार दानों ही मुगलोंके हायमे निकल गये। १६४९ ई० में इन्दहारपर फिर आक्रमण किया गया किन्तु ईरानियोसे पराजित होकर मुगल सेना फिर लौट आयी। इन असफलताओंके कारण औरगजेंव और अधिक तिरम्बत हुआ। १६५२ ई० में फिर कुन्दहारका घरा बाला गया, इस वार भी असफनता ही मिली। तीसरी बार १६५३ ई० में दाराको मेजा गया वह भी असफन रहा। इन मध्य-एशियाई प्रदेशोंको अधिकारमें रखने या हस्तगत करनेमें शाहो-कीपका विपृत्त द्वव्य व्यय हुआ और अन्तत विफलता ही मिली। मुगलोंने कुन्दहारको छेनेका फिर प्रयत्न नहीं किया।

राणा जगतिंसहने वित्तीष्ट दुर्गका नवीन परकोटा निर्माण कराना पृक्ष किया था किन्तु बाहजहाँने उसे नष्ट करवा दिया । राणाके विद्रोहके

मारम बबके प्रदेशको समाह दिया नथा निवते रामा वर्ष पंगा। १६५३ ई. में ऑरंबबेंग फिरके प्रतिकता नुनेपार मनावर चेनी

मना और उनकी यस बारकी भार वर्षकी सुवेदारी व्यक्ति को निष् कांत्रगार्दपूर्व और धवके पूर्वपार्टी बाक्कोके क्रुपालको नारम वेक्की मेदोच्ये नाये वर्ति हुई थीं राज्य वर मान्त वहीं होता व्या त^{र्मव दर} प्रकारको सम्बन्धना थी। नोसकुच्या और गीमापुरके ताथ पुरुष सी विरन्तर पास रक्षने पत्रे । संबोक्ते वसे मुखिरपुर्भीका सेवा सुबोन्त

बोलान बारंग हुन। सोर पक्को सहायसाचे बस्त्री बावम अस्तरिका किया राचा बेरोलो पर्नाण कमारि को । औरंकवेश बहुद मुली दा सीर रिक्रमधी सारमर्टे किया वी निर्मा वह बचना विजुतो-नैका ही वर्ष-बंदु तत्वादा था यदा वह निर्वान्त-किटी नहाने क्यार बाक्सव करता च्य और बनके बन्छ करनेके बचाव बोचतां च्याता चा । इव नार्वते क्वकां प्रवास बहानक ग्रीरजुवना कानका नवीचित बरवार वा । व्य नहीं दर्

म्बलारी जा, किर गोजकुमाने क्ष्मावनी केवामे एक क्रावार वन वना, यदान्यर क्यांगिरिके मिनकानर वसी धानके बहुत-के जरेक्पर अधिकार फर्फ स्वर्ट बन्ता वर्क-स्वरून राज्य वया वैद्य । श्रीकड् याने युक्तार हारा स्वाने आनेपर मह बोररखेकी जिम्न वस और अक्ता एक प्रवान क्षांत्रार क्या नया तथा वर्ग वर्ग अर्थात सन्त्रो बालुस्थावाची मृत्युस्य, बाजानसम् प्रचान मन्त्री वंश तथा । बस्तुः इसी चीरजुशक्तरे व्यवीयके बीरवचेको बननी निकाशकाती नीविन्हास नोकडुच्या सन्तनी वह करना शासमा किया करेने हैवरावाल आहे लगेक वनरोंकी जुटा और १६५६ है में भोतपुरश्यका ही मेरा बाल दिया । सन्तर्वे स्पर्न बाह्यजहाँ ही मुक्तालनारा को नही अस्थि-आर्थना ज्लीकार कर की और औरंपवेसकी इच्छा के विद्या मेरा बहारेगी बाता है थी। फिर जी ग्रेक्ट्रपा राज्य

T 1

क्द इब करकड निर्मत और वर्षन् शुक्त रह करा या । ग्रेमायुर्क बाय में पुत्र नवता 🕡 पहुंचा था फिल्ह १९५६ है वे बुक्ताल बुहुन्सर साहित-वाल्डीय इविद्वास एक दरि धाहकी मृत्यु होनेसे औरगज्ञेबके हाथ अच्छा अवसर बाया। उसने मीरजुमलाको साथ लेकर बोजापुर राज्यपर तुरन्त आक्रमण कर दिया। १६५७ ई० में बीदर और तदुपरा त कल्याणपर उसका अधिकार हो गया। बोजापुरको पूर्ण पराजय निकट हो थी कि धाहजहाँको आज्ञासे उसे इस सुलतानके साथ भी सन्धि करनी पढ़ी।

उसी समय शाहजहाँकी गम्भीर बीमारीका समाचार ज्ञात हुआ और भौरगज़ेद दक्षिणकी समस्याको वहीं छोड उत्तरके लिए चल पहा । दक्षिण-की अपनी इस सूबेदारीमें उसने भीरजुमला और मुशिदकुलीखाँ-जैसे नवीन योग्य सहायक पैदा कर लिये थे और धन और धिनतका भी सचय कर लिया था। उसकी वहन रोशनआरा उसकी पक्षपातिनी थी। किन्तु समाद्का विशिष्ट स्नेह्पात्र उसका ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह या और उसे ही वह अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था, बड़ी बहुन जहाँनारा भी चसीको पक्षपातिनो यो । राजकुमार मुराद और शुजा भी शिक्तियाली भूवेदार थे और राज्यके दावेदार थे । चारो हो राजकुमार वीर याद्धा और अपने-अपने प्रदेशके प्राय अर्धस्वतन्त्र स्वामी थे। उन सबके अर्धान अपनी-अपनी पर्याप्त सेना थी। किन्तु जब कि दाराशिकोह उन सबमें अधिक विद्वान्, वैदान्तो आध्यात्मिक एव सूक्षी विचारोंका प्रेमी, उदार, सज्जन कोर जनिवय था, औरगजेव कट्टर सुन्नी, धर्मान्य मुसलमान, अनुदार. छल-कपटमें कुशल एव कूटनीतिज्ञ था, मुराद शराबी या और शुना सामान्य बुद्धिका व्यक्ति या । शाहजहाँकी आसन्न मृत्युका समाचार पाते ही गुजाने वगालमें और मुरादने गुजरातमें अपने-आपको सम्राट् घोषित कर दिया। राजधानी आगरामें धाराने सारे अधिकार अपने हाथमें कर लिये । अब औरगज़ेवने खुला विद्रोह कर दिया और शाहजहाँकी आजाके विरुद्ध भीरजुमलाको बन्दीगृहमें रोक रखा। तीनों राजकुमार ससैन्य राज-षानीकी और चल पहे। औरगजेवने मूर्ख मुरादको भुलावा देकर अपनी बार मिला लिया । उज्जैनके निकट घरमत नामक स्थानमें १६५८ ई० में

क्राविन्त्रमें रोका, मूत्र हुवा और व्याप्ती हेना परावित हुई। स्व पुत्रमें राजनुतीरी ही ब्रांत वर्षिक 🚮 । राधीर राश नैश्वन क्रीडकर मान रूप विन्यू बाली बीट राजीकी मत्त्रका बुवकर बाबुका शाला करनेके निर किर अन पर। इस बीचने बहुबावॉकी तेना अल्यके निवड बहुँच मनी क्रिमेने ८ मीक वर्ष साववरमें बाराबिक्यामें बनेन्य बनका प्रतिरोध किया। प्रमची मीरके राजपुर प्राच हवीसीयर, राजकर संघ । हारा करनी वरा-मी मुनके पारंच पराजित हुवा और आसपानी और ताल नवा । दुरल भीरंगबेगरे सामराधर पास्त्रमण एए विका और पूर्व एवं राजपानीको हम्मान्त काचे निया चालकार्यशे क्रिकेमें ही ईप कर निया वहाँ १९६४ है में बतनो मृत्यु हुई। मुशन्तको यो औरनक्रेशने क्रममे बनी करके माजितके वृद्धें हैंव नर दिया पहाँ दीन वर्ष बार उत्ता का कर नियानमा। सञ्जानगरिक होकर मराकारकी और बान बया और बड़ों बराशास्त्रिम क्लाना क्यरिवार एवं कर दिवा । बीर्रबर्वेडने स्वयं कार्य पुर गुरम्बर नुष्याननी, जिनमें धूमाणा का निया वा न्यामन बन्धेनुहर्ने क्षत्र क्षित्र और १६ ६ है में बत्तरी कृत्व हुन्या क्या थे। बाराके पुत्र नुकेमल विश्वकिने नवशक्ति विष्यु खावाची वारच की वी निन्तु धातक पुत्रने विस्तालकार नरके को बॉर्एबोबफे क्रिक्ट कर दिया। मुनेबलको न्यानिवरके शुनने हीए निया गया और कामपाएँ देखर सार बान्य नमा । बाराने क्षेटै पुत्र निर्मातरियकोक्ष्यो और बुधारके पुत्र प्रतिष बक्करों, को बननपत्त्व में प्राण-पान के दिया क्या और स्वय अस्ती एक-क्ष प्रीके ताम क्षत्र विवाह कर विवा गया : पाधन्त्रक्रेत्रूमा अनद प्रीहर भिना नवा वह वंजाको भिन्नः शकान्तर राज्य और फिर बुजरान वहँगा और दूस रेगा दलम करके अअमेरकी और बढ़ा । राजकृति मैसी की बाम्या की बहुपक्ता थ निर्मा । यह पर्श्यावय होकर किए बावा और मनेक विपरियों एवं बंकट केंक्से प्रयु, क्येक विकासकारोंका व्यवसर होते हुए व्यवस्थान इतिहास एक पति 440

का दोनोंकी केताओंकी समावती भीरते राजा वक्तवर्ताच्या राज्येह और

बन्तत वह पकडा गया । अपनी प्रिय पत्नी नादिरा वेगमकी मृत्युसे वह विक्षिप्त-सा हो गया था । औरगज़ेबने उसकी जितनी वन सकी दुर्गति की और बन्तम उसका वघ बण्या दिया । इस प्रकाण घाहजहाँका राज्यकाल उमके जोवनमें हो ममाप्त हा गया, उमकी मन्ततिका बहुमाग भी नष्ट हो गया । वृढे मम्राट्ने आगराफ किलेमें अपने प्रिय ताजमहलको ओर दृष्टि लगाये हुए हो अत्यन्त दैन्य, अपमान, धोक और सन्तापमें जीवनके येप दिन विताये, और मृत्युके उपरान्त ताजमहलमें ही मुमताजकी वग्रलमें बह दक्षना दिया गया ।

माहजहाँने ३० वप पर्यन्त शासन किया। यह अस्यन्त धनी और ऐस्वर्यभाली था । जवाहिरात सग्रह करनेका उसे वडा चाव था । अपने दरवारको शान शीकतको उसन चरम शिखण्पर पर्तृचा दिया या । कोहेनूर होरा उसके ताजकी जामा बढाताथा और मुप्रसिद्घ रत्नजटित मयूर-सिहामनपर वैठकर वह दरवार करता था (इम सिहामनको कल्पना एक चैन-कयामें वर्णित विमानसे छी गयी वतायो जाती है)। आगराके क्रिलेके क्ई विशाल तहखाने गोने-चौंदी और हीरे-गवाहरातसे पटे पडे थे। अपने चस अतुल वैभव-प्रदर्शनमें उसे वहा आनन्द आता था। स्थापरयकलाका भी वह वडा प्रेमी था और भारी निर्माता था। दिल्लीका लालक्रिला बिसके दीवानेखासकी छत चौंदोसे मढ़ी थी, दिल्लीको वि**गाल जामा**-मस्जिद, मुन्दर चौदनीचौक जिसके बोचने दोनो ओर वृक्तोंसे ढकी नहर वहती थी, आगराकी जामामस्जिद, आगराके क्रिलेकी मोतीमस्जिद, दोवानेखास, सम्मनवूर्ज आदि इमारनें और मबसे अधिक विष्वके आश्चयों-में परिगणित ताजमहरू इस सम्राट्की अमूल्य कृतियाँ हैं। अपने मदनोंमें सगममेरका उपयाग करनेका उसे बहा चाय था। शिल्प-स्थापत्यको मुगुल-कलाके विकासमें चमका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी प्रकार चित्रकलाका मी बच्छा विकास हुआ, उसके समयके चित्र अधिक सजीव है। उसके प्रथम अव्दुलहमीद और खफीखान अपने इतिहास-ग्रन्थ भी लिखे।

प्रान्ती-नाहित्वको पूरवाद ताला वास्त का विष्णु सामुजहाँ स्वयं क्षत्रिस् और विधाना स्थिक नहीं वा । वीटरबन्डी जन्मी वर्तिनर, नगरिष

बना सिंद को वे। स्वारित क्वानित कारण संस्थानित कारों है। वे रामान्या हमा काम कहत और तुनी संस्थार और स्वेतनार्थन मी काम में लिए कामर और सारोशित कामर्थ कोमा समाधी पर्यो हुक स्वारण ही थी। बहित काम्यादी भी और सारोशित पहुरात और सिंद्यां के काम्या काम्ये काम्यादी काम सीवार कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य हमान्य कार्य क्वानीय संस्था कर्म सांक्ष का अस्त्री कारण-स्थ्यों क्वान्य कींची मानित स्वारण मही व बारो थी। क्वाने सांस्य मी हमान्य कींदा कारण सांस्य कर्म सांस्य कर सांस्य कार्य कार्य कींदा कार्य कर्म सीवारी कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कींदा कार्य कार्य और स्वारी कार्य कार्य क्वान्य कर्म कर्म कर्म क्वार क्वानित होना सीच पर्या

717

वारतीय इविदान १६ धरि

बाता। वैसे राज्यके अनेक अघोन राजपूत राजाओं, सामन्त सरदारों, हिन्दू एव जैन पदाधिकारियों, सेठों और व्यापारियों आदिको सहन करना ही पडता था। उनको तथा बहुमरूयक प्रजाको सन्तुष्ट रखनेके छिए सामा यतया अपने पूर्वजो द्वारा प्रचलित सहिष्णु और उदार नीतिको भो वह बरतता हो था। जब वह अपने पिताके समयमें हो गुजरातका सूबेदार था तो उसने वहकि जैनोको प्रार्थनापर जीवहिंसा निषेषक कई फरमान निकाले षे, चाहे उनके लिए वहाँके घनो सेठोंसे राजकोपके लिए विपुल घन लेकर ही वैसा किया हो । कहा जाता है कि आगराके कवि बनारसीदास (१५८६-१६४३ ई०) शाहजहाँके मुसाहब थे और उसये साथ बहुधा गतरज सेला करते ये। अपने अन्तिम वर्षीमें जब उनको चित्तवृत्ति राज-दरबारसे विरक्त हुई ता सम्राट्ने उन्हें दग्वारमें उपस्थित न होनेकी सहर्प अनुमित दे दी। बनारक्षीदास न केवल श्रेष्ट मिव, प्रकाण्ड विद्वान् एयं अत्यन्त घाभिक थे, वे एक मानवतावादी विचारक माथे। उनके नेतृत्वमें आगरामें दिसयों उच्चकाटिक विद्वानोकी विद्वद्गोटी होती थी। पाण्डे रूपचन्द, चतुभुज वैरागी, भगवतीदास, धर्मदास, कुँवरपाल, जगजीवन आदि उन बिद्वानोंमें उल्लेखनीय हैं। त्लिली, लाहीर, मुत्तान आदि विभिन्न प्रमुख नगरोंके विद्वानोंसे इस सत्सगका सम्पर्क बना रहता था। वाहरके मी अनेक विद्वान् समय-समयपर वहाँ आते रहते थे। महाकवि तुलसीदास कोर सन्तकवि सुन्दरदासके साथ भी बनारसीदासकी साहित्यिक मैशी थी। इसी समय शान्तिदास नामके एक नग्न जैनमुनिका भी आगरेमें आना पाया जाता है। वैसे उत्तर भारतमें नग्न जैनमुनि उस कालमे विरले ही थे, चनका स्यान दिगम्बर भट्टारको, अहाचारियो और शुल्लकोने ले लिया था। इसी धासनकालमें स्वय वनारसीदासफ अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंके अतिरियत चनके विभिन्न साथियो और कथि सालिवाहन, पाण्डे हरिकृष्ण, मट्टारक जगभूपण, पाण्डे हेमराज, यति लूणसागर, पृथ्वीपाल, वीरदास, कवि समार, मनोहरलाल, खरगसेन, रायचन्द्र आदि अनेक दवेताम्बर-

विनिध प्रदेशीय बंस्कृत समाहिली यस एवं बच्चे अनेक मार्टनर वर्ग क्षेत्रिक क्षार्वोद्यी रचना की थी। दिल्कीमें लक्ष्ये खालक्रिकेने शामने हैं। माहजहरिक समस्यें ही। बैनीका यह प्रसिद्ध कास्त्रमिक्त बदा वा वो नी व्यक्ति भी बद्धमादा है। यह गणिर साही देशके क्षेत्र है क्यों स्वे स्प वर्जवारियोको प्रार्वनापर नक्षाद्वी जनुमति एवं प्रयमपूर्वक बना था र सीरंगजेश (१६५८-१७०)-१६५८ ई में बाबरावर मनि-कार करते ही श्रीरक्षेत्रमें अपने जापको बक्राब्द योगित कर दिसां मा सीर १६५९ ई. में निस्तीमें भागा निविद्या राज्याविधेक करके तर्प करने निव्य सम्राट्की बन्दीनुदर्वे शासकर नाई-क्लीओके रकाये जले हार्केने इत बाबमनीर पानबाइने साबाज्यको वावडीर नम्हाली । ५ वर्ष पर्नेत्र राज्य करनेके काराज्य ९ वर्षणी दीवाँयूमैं कहती तत्त्व हुई। अन्य दम्म राव प्रमाना प्रताप और वार्तक अपने-भरापे औटे-अन्ने नवपर महत्त्र का छ। इसमें नानेड नहीं कि जोरंकडेंच चीर-बीर श्रुष्टम नेजानाका मोडी राजगीरि-ग्द्र सुदर्गानिका तुक सर्वेत समय जानवाल और क्रियामी^{स्र} न्य । वद एक मति जीन्य ग्रांतक प्रशास्त्राको व्यक्ति ग्रान्त्रपान्यै और

रिकामर महारकों, वर्शनों श्वाकियों और बृहस्य विश्वलॉने काम-क्यके

स्तान गरेंच को किन्तु बात की स्मूर्यार्थी क्यों कायों जूरों बोर वर्गने भी या। अपने समीनावर्गने हुएयें वह अच्छा हो क्यों प्र सामें की देश अपने की हैं वें मोत्र बोर चरित्रण वहीं। असीन बाताओं तो व्यक्तिकों को की देरें सहीं या वार्त्र का काशा किरोत्रों ही वा क्योंग एवं मुर्तिक की हैं देश बहुदिक या। गीरा सी क्यापार को या ही क्यापार के स्वतिक की की हैं या इस बहुद पूछी गुणकामान को तें कर को वहां का करने हुए की मर्गिति या काले विकासी वह पारवा का की यो है कि बनने पूर्वार्थी मुन्तार्थित किंत्र की कारावश्यक की प्रकास कर वार्यार की या की की की की की स्वतिक की मुन्तार्थित की सामा की स्वतिक स्वतिक की स्वतिक की स्वतिक की स्वतिक की स्वतिक की स्वतिक की स्वति

416

बार्त्याच इतिहरत वच धी

गया है तथा ईरानियों और शियाओंका प्रभाव भी वहुत बढ गया है, और इन सबके कारण इस्लामघर्म और मुसलमानोकी सत्ता खतरेमें पट गमी है, ये सब विरोधी प्रभाव मिलकर शनै-शनै उसे हहए लेंगे, अतएव इस्लाम बोर मुसलमानोंको रक्षा उसका प्रथम घ्येय है, जो अपनी शिक्तका ययाशस्य अधिकसे अधिक विस्तार करने, मुसलमानेतर धर्मी और जातियो-का अत्याचारपूर्वक दमन करने और इस्लामकी प्रभावना एव प्रसार करनेसे ही सिद्ध होगा। उसकी दृष्टिमें साध्यका महत्त्व था, साधनोंके

औषित्यका कोई मूल्य न था। राज्य प्राप्त करने के प्रयत्नमे ही उसने षपनी यह प्रवृत्ति चरितार्थं कर दो थी। अपनी अभीष्ट प्राप्तिके लिए स्वय अपने जिता और राजाका बन्दा करना, अपने सगे-सम्बध्योका क्र्रतासे विष करना, विराधियोंको घोर यन्त्रणाएँ दकर नष्ट कर डालना, विश्वास-पात, ढाग, छल कपटका भो अवसर पहनेपर आश्रय लेनेसे न चूकना, कादि उसके काय प्रारम्भसे ही सर्व-विदित ये और उसको जीवन-नीति एव शासन-नीतिके परिचायक थे। किसी भी व्यक्तिका विश्वास करना वह जानता ही न या, विशेषकर घंडेसे बडे हिन्दू सरदारोंका भी वह सिनक विश्वास नहीं करता था और उनको अपमानित करनेके किसी अवसरको तो चूकता हो न या। अकबरका चदार, सिहण्णु, समदर्शी एव विवेक बौर बुदिमत्तापूर्ण नीतिका प्रतिक्रिया जहाँगीरके समयस ही होने छगी थी, किन्तु बहुत हलके रूपमें । शाहजहींके समयमें उसने और अधिक वल पकडा किन्तु औरगज़ेवने तो उसे चरम शिखरपर पहुँचा दिया। उसने यथा-सम्भव अकबरकी नीतिको पूर्णतया उलटनेका प्रयत्न किया। फलस्वरूप अनयरको नीतिक कारण जिस साम्राज्य-शक्तिका इतना सुद्द निर्माण एव अद्भुत विकास हुआ था कि वह बावजूद इन प्रतिक्रियाओ, मूर्खताओं सीर ष य अनेक दोषा एव भूलोंके हेढ़-सी वर्ष पयन्त सर्वप्रकार अक्षुण्ण वर्न रहो और चनके आगे भा और डेढ-सी वप पर्यन्त वय-स्थागित्वकी रक्ष कर सकी, औरगजेबकी नीसिके कारण वह साम्राज्य शक्ति उसके जीवन ध्यम्त्रे ही पुरुष वर्षर हो गयो भी र सक्यो मृत्युक्ते बारान्य बायन मोर्फिन विकर्णस्य हा गयो । बोर्शनेवर्ष अस्त्रे स्वय्त्यास्त्राहे देश पृत्री । मारि पूर्वेभी का नवस्ता नृष्टा तृष्टामांत्रीय सराम्य सारित्युवक्षिण्या एवं बायना रामार्थी नार्वस्था भारेद्योगस्य । बोर्च्य अस्तिना स्त्रे बायुमारा एवं स्वर्ते मुख्यमांत्री भारतान्य नोत्यान्य हा साह स्वर्णे मोर्गा को सम्त्रे पार्थेनस्था जाता मृत्य-माझाम्बङ एक राष्ट्रावार्थि सोरा स्तृतिक विकानीया स्वर्धा स्वर्ण पुत्र बोर पार्ट-वार्य्य साम्यार्थिः

विकार भी प्राप्त था। अपन पूर्वनो द्वारा वामानिक विकास वाक्रिक अपूर्व नेपय बदीश प्राप्त नुष्यानिका वाक्रमनाम अपनिका हैंद्व इस पुत्रकारन स्वतिवास वेपक जब और प्रदास भी वर्ष प्राप्त था। इसी वय प्राप्ति वाक्री मानिकारका निर्वाध हुवा था और स्वीर्ति इसके बीक्सकी बक्तमार्गी एवं निक्तमार्गी कार्याद्वाद हुवें, और स्वीर्ति

करवी करूपी राज्योविको हुँ हो व वर्णानिहार है। बोरंपरीवच्च राज्यकल को जानीन दिवाला दिवा वा वराया है १९५८ है १९८१ हैं कर बढ़ बारांचे ही यह और कुमकरा गरिनों बामस्वार्थी है बाब्या पहा १९४१ है १७०० है से बरसी कुछ करने बहु बीबन बातायों पूर्व को स्वार्थीन वर्णान्यों कुछ करने का प्रत्य प्रता करने विकास है। विद्यालय प्राप्त करी की वर्षणे नाममुख्या पूर्व भोनवाई की विज् मुख्याम करना ८ राज्यक्ती वृक्त ब्यवस्थानित राज्येक्स प्रतिक मां

या थी १९६०-६१ है में बढ़ा जर्मफर हो घड़ा। क्राएस क्लेस् मर्पित्ता करोमी माफी क्वा हस्य स्थामांत्व हो थी, न वो वो बाती हो भी क्या करोमा स्थामनीक्षित स्थूम करना बढ़ित हो खां। हमार्थ क्यामांव इतिहास्कारके क्यान्यावार हो इस मामीया हो नोई संस्था न हमा स्थामेंव पात्रक कन करोगे प्रशास क्या जो तहुब करते थी

बीर बाली केर्रे नार्व थी।

अपने प्रतिदृन्दिगोंके विषद्ध औरगजेवकी सफलतामें उसका प्रधान
सहायक मीरजुमला रहा था, किन्नु इसी कारण वह अत्यन्त धामित शालो
मी हो गया था। अन ओरगजेवने उसे मुदूर वगालका सुवेदार वनाया
और शुजाके अन्त करने एव आसामका दमन वरनेका भार भींपा। णुजाका तो सपरिवार भीरजुमलाके प्रयत्नांसे नादा हो गया किन्तु आसामके
युद्धमें १६६३ ई० में वह स्वय भी मारा गया और औरगजेवका एक कण्टक
दूर हुआ। उसके स्यानपर उसने अपने मामा धाइस्ताखाँको नियुक्त
किया जो लगभग ३० वप तक उस पदपर रहा। १६६० ई० में धाइस्ताखाँको धिवाजीका दमन करनेके लिए दक्षिण भेजा गया था, किन्तु पूनामें
उसको उपहासास्यद असफलताके कारण वहांसे वुलाकर फिर वगाल भेज
दिया गया।

दक्षिणमें १६५७ से १६६० ई० पर्यन्त मुग़लोंकी ओरसे प्राय शान्ति प्ही थो जिसका लाभ उठाकर बीर शिवाजीने बीजापुर-नरेशकी हानि कर-करके अपना राज्य जमाना प्रारम्म कर दिया था। शाहस्ताखकि उपरान्त राजा जयसिंह और शहजादा मुअवज्ञम शिवाजीके विरुद्ध भेजे गये। जय-^{सिह}के परामर्शवर १६६५ ई० में शिवाजी आगरे भी आया किन्तु सम्राट्-को विश्वासघाती नीतिका आमास पाकर निकल भागा। १६६७ ई० में बोरगजेवने राज्यके महान् स्तम्भ जयपुर-नरेश राजा जयसिहको सम्मवतया विसीके पुत्र कीरतसिंहसे विष दिलवाकर मरवा डाला । जयसिंहके चपरान्त पातबादेके सहायकके रूपमें जोधपुर-नरेश असवन्तर्सिहको शिवाजीके विरुद्ध भेजा गया। यह भी असफल रहा, बल्कि शहजादेने स्वय घूम लेकर सम्राट-से शिवाजीको राजाको पदवी मी दिलवा दो । शिवाजीको शक्ति उत्तरोत्तर धढ़ती गयी, साम्राज्यके सूरत, खानदेश आदि प्रदेशोको मी उसने कई बार सूटा । साम्राज्यको प्राप्तन-स्यवस्या इतनी शिथिल हो चुकी थी कि सम्राट् सिवाजीका कुछ न विगाड सका । १६७४ ई० में शिवाकीने अपना राज्या-मिपेक करके स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया।

१६६९ ई में मनुदा विकेषे बोकुक बाटके मैनुलर्म मार्टीने वर्षकर शिक्ष कर रिया या और नहाँके क्रीन्यारको जार दिया या । देलों बीर

के बहुओं व्यक्तिवर्शेको हरपाके कपरान्त काँठमासिः विक्रीक्षका दक्त हुन्य । १६८१ है में बार पिर बहक करें और फिर बाहों देनारे करना राग किया - १६८८ है में बनका विश्लेख एक बार फिर नवका और बनाएमें मृतु वर्णन पासू रहा। इती बीच १६९१ ई में जाटने विस्तारी मकरके नक्रमरको सूरा बीर कम बजादुक कुमले वा अपने निराध कर विदाये बान कर विवा, देखा बडा वाता है।

१६ २ ई वे भारतीयारे सत्त्वामियाने जवानक निर्देश निर्मा । ६३ पत्रमें हरेन क्षेटी शांकर्गक केन ने चल्ली देना चारी नर्ज क्यानर बस वित्रोद्दरर अन्यू कर पाना । अपने दायके ब्रूटानची नावडोंके दावीन बार्न करवारोंको देकर मी ओरंगहब बातनो वर्ति कम न कर बारी है इही श्रमपुर्व करवन शोबान्त प्रदेशके पठान इस्तीयाँने निर्मेष वर विद्या। प्राप्ती केनाका एक बना जान वस वर्गी एक वडी क्लबा प्रा । धारा

बक्क्सर्टिक् द्वारा अन्य वर्गेन क्षेत्रार्टिकीको थेशा पता निन्दु वर्ग निक्^क प्ते । १६७४ ई में बनाद कार्य वहाँ गया और इन्मेकॉना दनन निर्मा किन्द्र बान्ति १६७८ है। तक ही बाकर स्थानित ही बचा । १६७६ है है बार्रवर्वेश्वरे विकासिक सामानार किया और वृत्र श्रेक्सहानुरका वर्ष करत दिशा । एत मुक्ते उक्की हिन्दु विदेशा-निविध्य विदेश विका या और वर्षे व्यक्तिर मुक्तमान वक्ता वस्तावार कर विशा था । १६७६ है में राज्यकाके राजपूर्वने शिक्षेत्र कर दिया। आरम्पी नरेक जाननाविश्वये औरपरेचने बळ्यानितालकं बळ्यानीना राज्य कर्त चैन दिन था। जिल्हु वहने राजाको जानस्वक ब्रह्मनता वही सेती और १६७८ को वयस्त्र तमार्थ ही इकारेनर इस राज्यका मानान्त हैं।

मना । उनके दी पूर्वी और राजीको समार्थे काहीरमें रोज रखा । स्वयी रच्या राजपुरारोको न्यवनान क्या आवर्तको वो । विज्यु स्वांतकरा सैर बारतीय इतिहास । १५ पर्ट

2.3

<u>दुर्गादासके प्रयस्न और कौशसमें रानी और राजपुत्र सुरक्षित मारवाष्ट</u> पहुँच गये। औरगजेब बहुत शुब्ध हुआ। और उसने उनके पकटनेके लिए सेना मेजी । मारवारके सेनापति दुर्गादास राठौर, उसव माई मुकुन्दयास-सोची तया अय सरदार अपने राजा और राज्यको रहााफे लिए कटिवद हो गये। उन्होन अन्य राजपूत राज्योंमे भी सहायता मांगी। समय ऐसाया कि ओरगजेयकी घामिक नीति और राजपृत विरोधी चालान समस्त नरेरा असन्तुष्ट हो चठे थे। राजाबीका अब पहले-जैमी आन्तरिक स्वतन्त्रता नहीं रही थी, अ)रगजेय उनके राज्योका भी सीधे के द्वरो हो षासन करनेका इच्छुक था। जयमित और जसय तसिह-जैसे साम्राज्यके प्रयान स्तम्भ और शिवत-सम्पन्न एव प्रभावशाली नरेशींका एक-एक करके उसने अन्त करवा दिया था। जसवन्तसिंहकी मृत्युकावह पृरा स्त्रभ उटाना चाहता या और मारवाडपर पूर्ण अधिकार करना चाहता था 🌃 वह देश मालवा और तदनन्तर दक्षिणन मार्गके सीचमें पडता था। जिसकी नीयत और इरादे छिपे नहीं थे। अत समस्त राजस्थान स्वातन्त्रयः प्रान्तिक लिए उठ नड़ा हुआ और स्वय मेवाए नरेश राणा राजसिंहने युढका नेतृत्व ग्रहण किया। श्रीरंगजेव जिम मात्र जायपुरक राजाित्रहीन राठौर सरदाराँका विद्रोह समझता था उसन एकाएक जयपुरको छाड प्राय सम्पूर्ण राजस्यान-द्वारा घोषित भीषण युद्धका रूप छे लिया। सम्राद्मे अपनो सारी सैयदाक्ति केद्रित करक अजमेरमें टेरा ढाला और स्वय युदका सचालन किया। किन्तु इसी बीचमें उसका पृथ राजकुमार अक्षर राजपूर्तींसे मिल गया। इससे सम्राट् अत्यन्त चिन्तित हो उठा। अपने छल-भौरालसे उसने राजपूतोको विवदा कर दिया कि वे शहजादेको अपने आश्रयसे निकाल दें। लाचार अक्बर दक्षिणकी ओर भाग गया। इघर वीर राजपूत युद्धोमें सम्राट्की भारी क्षति कर रहे थे। अन्तत १६८१ ई० में औरगजेबने राणाके तथा राजपूतीके साथ सन्धिकर छी। राजपूत राज्यों-को जिजमासे भी मुक्त कर दिया, उनको सत्ता भी पूर्ववत् स्वीकार कर

थी और बान तारारण हों थी इन्हरी नाम मी। तर्गन वर्डरे पर बरहरवीश नाथ यह भी या कि रावशुस्तियों देवानेची कुरोन्साईं बरायारा और दमने दुव सामान जूरेनेचे थी स्वान्तमंत्रम् की ही गय मार्ग तब पान दिवापेंच वान ब्यान्ताओं आपना दानाय वार तिम्बा ही नया था अववर प्रतिनयों और नाम बया या और वार्ग मार्ग्स निकार पान विवाद करते ही सामाना वा और राजपूर्ण किस्म स्वित्त करते हों कि का स्वीत सामाना वा और राजपूर्ण की क्या भी ची जान करने गांवाचान्ते रावशुस्ति नाम वाद्य वहीं भी क्या भी हमें बना वर्गने की स्वत करता हमान की बाद प्रति का वार्य वहीं हमें बनांव वर्गी मुख्य वर्गन क्या दहा। क्योनींड की व्यां की स्व

हरपान करके मनने बनके बनिव कर भी किन्तु वीर करवान मी बन्त कर सनका रिपोर्टी ही बना क्यां अब १५८१ हैं में ही मीरंबरेंग बीमीजें के बाब राजिय गहुँचा बीर किर बन्त एक बड़ी क्यां है

प्रांचको स्वाप्त वीश्वरंति वृद्धि हिन्दु और गुरुवाम्त पार्टेंनी स्वाप्त कर्मार कार कर्मा । विभी प्रारमुख्य क्वार क्षेत्र कर्मा कर्मा मही १९८ में विकास कर्मा प्राप्त कर्मा कर्मा कर्मा १९८ में विकास कर्मा प्राप्त कर्मा कर्मा कर्मा १९८ स्वरंग कर्मा कर्मा १९८ स्वरंग कर्मा कर्मा १९८ स्वरंग कर्मा प्राप्त कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा १९८ स्वरंग कर्मा प्राप्त कर्मा क्ष्म कर्मा क्र किया तो मुअरुजमको मुक्त करके क़ाबुलका सूबेदार धनाकर अकबरके विरुद्ध मेज दिया । अकदर पराजित होकर वापस लौट गया । १६८९ ई० में बौरगजेबने राजा शम्भानोको पराजित करके उसे उसके ब्राह्मण प्रधान मन्त्रो सिह्त बन्दो कर लिया और तदनन्तर उसका वध करवा दिया। शम्भाजीके वालक पुत्र साहको उसने अपने महलोमें ला रखा और वहीं उसे पलवाया। अब औरगजेव प्राय सम्पूर्ण भारतका एकच्छत्र समार्या, किन्तु इसी समय समस्त मराठा जाति उसके विरुद्ध भष्टक चछो। अवतक केवल मराठा राजे ही उसके शत्रु थे और उन्हींसे उसका युद्ध या किन्तु अब समस्त दक्षिणापयकी जनता उसकी विराधी थी। भम्माभीके भाई राजारामने सुदूर जिजीको अपना के द्र वनाकर इस जातीय विद्रोहका नेतृत्व किया और उसके पश्चात् उसकी वीर पत्नी तारावार्ड पुढ सचालित करती रही । औरगजेबने मराठोंके इस देशन्यापी विद्रोहको भुचलनेका भरसक प्रयत्न किया। उसके मन्त्रियोंने उसे दिल्ली वापस लौट जानेकी सलाह दी, किन्तु वह मराठोको नि शेप किये विना दक्षिणसे टलनको सैयार न हुआ। अन्तत दक्षिणने ही उसका अन्त कर दिया। सन् १७०७ ई० में विकल प्रयत्न और निराशायस्त वृद्ध सम्राट् औरगजेव बालमगोरको औरगावादमें मृत्यु हुई और वही वह दफ्तना दिया गया। . उसके साय ही महान् मुगल साम्राज्यकी महत्ताका भी अन्त हो गया।

श्रीरगजेवको विकलता और उसके राज्यकालके उपरोक्त लाट, सिल, वृत्देले, सतनामी, राजपूत, मराठा आदि युद्धों एव विद्रोहोका प्रधान कारण उसकी अपनी राजनीति थी। उसकी सकीर्ण धर्मा धता, अत्यत्त अमहित्णु एव अनुदार धार्मिक नीति एवं मुसलमानेतर जाति-विरोधी राजनीति उसकी अपनी असफलताओ एवं उसके उपरान्त महान् मुग्नल साम्राज्यके द्वृत पतन-के प्रधान कारण थे। वह भारतमें मुग्नल-साम्राज्यको विश्वद्ध अरबी सस्कृतिपर आधारित एव इस्लामके नियमोक अनुकूल एक पक्ता मुसल-मानी राज्य बना देना चाहता था। प्रारम्भमें ही यह ध्येय एव तदनुसारो

नीति बचने निवित्तत कर की भी और शाम्बारीहर्क भीड़े बमर्व सामाह ही देते कारोलित करना आरम्भ कर दिया था तथा करा वर्ण में बरोका निर्दाह करता रहा । अबके वर्शेन्सको सीचै प्रकरी चान्नीति बुवि औं दर नमें। इस्कानमी शुरकाशः सामन वसमें गदी कोचा ^{कि} प्रतिक ग्रैरमुनक्यामी का प्रस्थाय-विशेषी प्रशुक्त सन्त कर दिश करें विनुषों और मुखबनायोर्ने एक जेव कर दिना कार्य मुखबक्तीयरिं बंगाबंदर अत्यादार विजे कार्ये जाना तदारके कर नादे वार्वे अप^{के} बाल पूजा और होन्छाका अवद्वार शिध्य कार्ने अनमें की कोड़ेनों की धीरतनमा है वर्जे शुचक रिता करने पान्य-वेपाने वर्जे मौक्ट पर्व धारे थे। बांध्ये ही निवृत्त है क्यू की की की कर-की पूरा गर रिया बाने क्लाफे स्थानमें बुतकावर्गाओं विद्युष्त शिया बाने और प्रामाने मुक्कनमोको शंका: क्रांका बीर प्रवास विश्वस सम को शहला नाने ! में वस क्यारी शामानीरदिके शासन में । मुख्य शादिका नड प्रतिन्द विरोगी नहीं का कि से जिल्लू हैं वरण क्लांबर कि स्वकी तक्ता और मार्थिक अमानके कारण शरकान और शूककानींची निवर्ति कारेंगें हैं। देवे बर्चफ ब्रिन्टू करके पित थी थे। सिन्टू बहाँ स्वयम और वार्चना प्रभा का ने क्लके सिक् परत यातु ही थे। इसी शोधको करने मुल्या

मोश्रदिर्वीचा एक मानीम निमुक्त किया कि वे बक्ता पूर्व संस्था त्रमाओं धीरि-रियाओं शाविका संस्थान करें, बढ़ त्रमान हो नामानार्थ भारतीय क्वांक्रम व्याप-विचानका शाकार क्या । सबवे अपने क्यांने क्यांने क्यांने

प्रचलित येथी रास्ता अवागीका अन्त कर विवा वी इस्वास्तानत में में बबा विका गीरीय बंबादीया तुमस्तात क्रारीका रर्कन इत्याँगिः भारतीय विकरीयर करावेके तथा बसून्य । वस बादि बाह्यतिवींको बनिय

करवेदर निर्देश क्या विमा । बंगोरा और मुख्यदर प्रशिक्त क्या दिया विम बोर मृतिककारी इंडील्साहित किया और शेरकुता व गेरोंने क्यांपैंगर स्वितीरा पाता निविद्ध किया । जुवककर बीरावरीरा बीरावरी क्व

कातीय हरियात एक पी

राज्यकरसे मुक्त कर दिया गया । जो हिन्दू अपना धर्म-परित्याग करके मुसलमान वन जाते उन्हें प्रस्कृत करने और राज्यकी नौकरी देनेकी व्ययस्याको । हिन्दुओंको राज्यसेवासे वचित कर दिया गया और एक फरमान निकाला कि महकुमें-मालमें यथासम्भव केवल मुसलमानोंकी ही नियुन्ति को जाये। महाराज जयसिंह और जसवन्तसिंह-जैसे प्रक्तिशाली हिन्दू मरदारोंका अन्त करना शुरू कर दिया। सभी मुसलमानेतरोंपर जिया कर लगा दिया। हिन्दुओं के धार्मिक मेले बन्द कर दिये और उनके होली, दिवाली आदि त्यौहारोका खुले रूपमें मनाया जाना वन्द कर दिया। नाट, सिख, सतनामी, राजपूत, मराठे आदि हिन्दुओंके जिम वर्गने भी जहाँ विद्रोह किया उन्हें निर्दयतापूर्वक कुचल दिया गया और इन विद्रोहोको कूर घामिक अत्याचाराका अवसर बनाया गया। हिन्दुओंके समस्त मन्दिरो, विद्यालयों एव अन्य वर्मायतनो और सास्कृतिक सस्यानोंको नष्ट करनेके लिए एक आम आज्ञा जारी कर दी गयी। हिन्दुओं के तीय्र विरोवपर वनारस फ़रमान-द्वारा इस आझाम यह संशोधन कर दिया गया कि पुराने मन्दिरोंको रहने दिया जाये किन्तु नवीन मन्दिर कोई न बनाया जाये और जो वन रहा हो छसे गिरा दिया जाये। राजा जयसिंह एव जसवन्तसिंहकी मृत्युके उपरान्त यह सशोधन फिर बापस छे लिया गया और अनेक प्राचीन मध्य मन्दिरोंका विनाश करा दिया गया। जहाँगीरके समयमें वीर्रासह वुन्देले-द्वारा ३३ लाखकी लागतमे निमित मधुराके अप्रतिम केशवदेव मन्दिरका, काशीके प्राचीन विश्वनाथ मन्दिरका तथा अयोध्या आदि अन्य अनेक स्यानोंके प्रसिद्ध मन्दिरोका घ्यस करने उसने उनके स्यानमें उन्हीं स्यलोंपर मसजिदें निर्माण करा दीं । हिन्दू आदिकोंके धर्मप्रचार, धार्मिक शिक्षा और उन्मुक्त धर्मपालनपर कडे प्रतिबाध लगा दिये। सस्कृत और हिन्दी साहित्यका तो प्रवन ही क्या, उसने फ़ारसी साहित्यके सुजनको भी हतोत्साहित किया, यहाँतक कि इतिहास-प्रयोंके निर्माणपर भी कहा प्रतिब घ लगा दिया। खफ्रीखी मादिके छिपाकर लिखे गये इतिहास,

वर्तियर टेवर्नियर बनुवी करेरी वादि गुरेंग्रिय वादिवीके मुखला सर्वे भौरियों रहे आपने वन तथा बारा चरवर सावत अन्यानीन शीत्राच देव-दया और नार्वप्रदेश: बसर्गायपर प्रशास बान्ने हैं : बरशर बीर पर वार्गियाका बारक्षकान्या कान-महान सेमाने बानधानमहीबन्ध वार्वकारी-क्यमें अञ्चल्यार की विश्वाचित्रा विश्वाचयता और वदार्वराता वर्ष मार्थित-स्थापना वर्ष निकासोची बडेमा आदि मन्य कारण बामान्यके कारने सामग्र हुए। निकारिक वीद्यिक संग्रहत बाटोके प्रतिप्रदेश मारवाहके राह्मेशली जनस्वती क्षत्रत्या और वस्त्रदेवे बलर्पना मेर मीर्रमवेशको इच एनीर्राच्छे ही है। रिन्दी-नादिग्यके बहारांव केवच विहासी देश जूनच अतिराव वर्षी इसी काममें हुए। रीतिकासीय दिश्ट्र वर्षियोंने आया श्रृंकार रक्तवा सीव हो प्रचारित रिया और धामा-रहेंचेंची विचारित्तव बुदनेमें बहलाई में ! इंडडे क्रिक्ट बैरा बनोटीया सारक्षण बक्षेत्रिय विवयंगिया सहतीयम् देश रहावाधे अवनगत विशेशीयराज बोशराज बाहि ^{हेरा} क्षिपेने प्राच विरावपूर्व जान्यात्वक विवासेंशः योजन विवा । वर्गे हारा गानिक शन्तीके बांतरिकत शंबाय विश्वविद्याचि धट्टम परिका नामृद्रिक धारमः राजनग्रेका, यक्तमधीय बनाव बार्डि स्मूरमपूर्व व्यक्ति मन भी एवं वर्षे । बावध निवादी वंद्य वर्षातीचन (१६४४-६८ है) नै बनमन ६७ रफ्ताएँ श्री को धनके विशासकाय ब्राह्मीकासमें बंध्यीय हुई । बान्यर्थ मधोतित्रथ (१६१६-८८ ई.) भारत साहि विदेश दिन्यी-के प्रशास निवास में जिल्ही जानाके क्षानिकालके बहेरिया क्षेत्रण मानाने क्यूनि क्यान ५ - डीडे-वर्ड अक्टब वा प्रभारचे बादने बादे है। क्षीतुरके बरवार अध्यक्तीके वीच वीचान श्राराक्षके किए क्यी-चन्त्रने बाल्यार्पेड नामक श्रीनविषयक जाचील क्रम्बचा काशालुबाद दर्व म्बास्य को मी । इविकन्तरे विस्तर्भव न्योन्तर्भव साथि स्थापक बामरेके निकट ही एनमर्वका अंश्वाम और वाहिलका ग्रीतकाहन कर धी

वास्त्रीय इतिहास वस धी

444

थे। साहिजारपुर-निवासी कवि विनोदीला उने जिल्होंने कई प्रत्योकी रचना को ह, अपने श्रोपालचरिय (१६९० ई०) वे अन्तमें लिया है कि 'उस समय औरगशाह बलोका राज्य था जिनने अपन पिताको घरशी वनाकर राज्य पाया था और चक्रवर्ती के समान ममुद्रमे समुद्र पर्यन्त अपने राज्यका विस्तार कर लिया था। काई विकास नवीन मन्दिर जैनाका उस नासमें नहीं बना, बुछ प्राचीन मन्दिर तोडें भी गर्मे होंगे कि तु किसी प्रनिद्ध मन्दिरका च्यम या तोघवा विनाश नही रिया गया प्रतीत होता। नागरा और दिल्लोमें किलांच निकट ही उस गालक पूर्वके वने हुए विशास नैनमन्दिर सुरक्षित एव विद्यमान रहे। दिल्लोक शाहजहाँकालीन उद् मिरिरमें दोना समय पूजन आरती आदिके अवमरपर बाद्य बजते थे। बौरगजेवने उनवा निषेध क्या। कहा जाता है कि याजे किर भी वनते रहे बीर औरगजेवने अपनी निषेषाज्ञा यापम ले ली । अहमदाबादके जीहरी गानिदासको, जो शहजादे मुरादका जृगापात्र रह चुका था, भीरगजेवने आगरे वुसाकर रखा और उसने अपना दरवारी निमुक्त किया। कन्नडी मापाको एक प्राचीन विकदावलोके अनुसार औरंगजेबने कर्णाटकक एक दिगम्बर जैनाचार्यका भी आदर-सत्कार किया था।

राजस्थानमें तो जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, धीकानेर, वूँदी, जैसलमेर आदि प्राय सभी राज्योंमें हिन्दुलोंके साथ-साथ जैनो भी पर्याप्य उन्नता- वस्तामें थे। मेवाडके राजा राजिसहका प्रधान दीवान सपयी दयालदास या। कर्नल टाडके कथनानुसार 'वह अत्यन्त साहसी और चतुर था, मुगलों- के अत्याचारोका बदला लेनेकी प्यास उसके झूदयमें सदा प्रज्वलित रहती यी। उसने तेज धूडसबार सेना साथ लेकर नर्मदासे वेसवा सक फैले हुए मुगलोंके मालवा प्रात्मको लूटा, सारगपुर, सरोज, देवास, माण्डू, उर्जन, चन्देरी आदि मगरोको विजय किया, किसी मुसलमान शत्रुको झमा नहीं किया तथा काजी-मुल्लाओं और उनके धर्मग्रन्थ झुरानको मो न वल्हा। उसकी प्रचण्ड मुजाओंके सम्मुख कोई धन्त्रुनहीं टिक्सा था। लूटका यह उसकी प्रचण्ड मुजाओंके सम्मुख कोई धन्त्रुनहीं टिक्सा था। लूटका यह

निपुत्र क्षमः ब्रावट जवने अपने स्थानी शामाको अन्य किमा । सरकार धनपुनार वनस्तिक्षे बाव केवर विश्वीतके निवट बहुवारे बाउनकी वारी रेगको नराज्यि विना फल्यकर शासनको जलकर रचयाचीरमें घरण केमी नहीं । ये बटनाएँ सीरवर्षेवके चावपूत मुख (१६७६-८१ ई.) की 🖁 । दराष्ट्रप्रक वर्गाना थो या । उक्ते 'राज्यानक्की यावके निपर रम्पार वारियानका एक विकेतुमा स्वेक्ष्यवंतका विद्याण प्रविद्य से बक्ताना का १६९६ हैं में महाशाना राजिशून इक क्रतमन आग्रे किया बा दिवके प्राप्त राज्यके वस हवार स्थाने बरधारी योजायें और वरेगी-की बाह्य से बंधे के कि शाबीय बावके वीवोंके बॉन्सरों और स्थानीयों मो रह गरिकार किया हुआ है कि कोई समुख्य क्यानी हरके भोदर निमी त्राच्येका सम स करे, यह जनका नुचन्छ हुत्र है और सान्य किया करने। मो जोप नर गा. जाता पथ होनेके किन हनके एनालीके लिपटी के गान बाता है पर अगर हो बाता है, क्षत्रका वथ नहीं रिका का क्षत्रका वीतिनोहि प्रशानीमें बारण केनेवाचे दियो राज्योधी नुहेरे मा कार्यहरी भागे हुए और बारायोगी की धनवर्तगारी बर्डा व नवड काँने । प्र^{हरू} में लूँची करालको नूरी जनके किए बात की हुई मूर्ति एवा वर्गीर्ने विषयान उनके ब्रह्मवरै बादि पुषरम् झावम रहिषे । यह क्ररमान जैन की

वानती रिया बचा लिहें वार्य हैं बहुतन्ता मूनेयाम को रिया बचा। वेनेत्रपुर गहाराज नारामीह राज्योग नेत्र वानना तुरसेन बेनेजी अन्या होन करना होन नाराम जा ने नीत्र मुख्य वावाद और तीर मेदा होनेंहें गाय-वार नाम्य प्रत्य हिम्म व्याप्त का निर्माण करने हुई पुर-वु हैं के कि रामकार नाम्य प्रत्य होने प्रत्य का निर्माण करने प्रत्य होने प्रत्य का निर्माण करने प्रत्य की प्रत्य हैं। विभागिया वार्य करने की प्रत्य हैं। विभागिया वार्य के हिम्म वार्य की प्रत्य की

łł

नारपीय इतिहास युकारी

युद्धमें घायल हुआ था। रघुनाथ मण्डारी जमवन्तिसहिक पुत्र महाराज अजीतिसह (१६८०-१७२५ ई०) का प्रधान दीवान था। जैसलमेर राज्य॰ में एक विशाल जैन ग्रन्थ-भण्डार था। वीकानेर-नरेश राजा अनुपसिह जिनचन्द्र सूरिको गुक्ष्यत् मानता था। महाराज जर्यसिहके समयसे हो आमेर राज्यकी नवीन राजधानी जयपुर जैनोका एक महस्वपूर्ण केन्द्र बनना प्रारम्भ हा गयी थी। वुन्देलखण्डमें ओडछाका वुन्देलानरेश वीरवर छत्रमाल भी जैनधमें प्रति अति उदार और महिष्णु था। जैन मन्दिरों एव वीपोंके सरक्षण, उन्हें दानादि एव प्रश्रय देनेम वह तत्पर रहता था। १६५९ ई० के, जेरठके चन्द्रप्रम चैत्यालयमें वस्त्रपर लिखे गये, एक सचित्र प्रमाल-पत्रसे जात होता है कि उस कालमें जैनी वुन्देलखण्डके राज्योमें प्रतिष्ठित थे और निविद्य धर्मपालन करते थे।

मराठोंका उत्कर्ष १७वीं शती ई० के उत्तरार्धकी एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है और मुग्रल-साम्राज्यके पतनका सर्व-प्रधान कारण। दक्षिणाप्यका पिर्विमी घाटकी पहाडियोंसे निर्मित वह उत्तर पिर्विमी भाग जो प्राचीनकालमें रिट्ठकों और तदनन्तर राष्ट्रकूटोंका केन्द्र रहा या और पूर्व-मध्यकालमें जिमपर देविगिरिक यादबोका राज्य गहा या तथा मुमलमानी कालमें जो बीजापुर, अहमदनगर और गोलकुण्डा राज्योंके अन्तर्गत पहता था, महाराष्ट्र या मरहट्टा देश कहलाया। छोटे कदके स्थामवर्ण, वलिष्ठ, फुरतीले, परिध्यमी, चतुर और चालाक मराठे ही इस प्रदेशकी जन सक्याका बहुभाग थे। उनमें-से अधिकतर खेतिहर और धेय गौवोंके पटेल आदि मुख्या थे। उनके अतिरिक्त चतुय-पचम जातियोंमें परिगणित मोदी धनिये, मजदूर आदि थे जिनमें-से अब भी बहुत-से जैन थे। काकणके वित्यावन ब्राह्मण भी जो अपने-आपको मराठोंसे मिन्न प्रकट करनेके लिए दक्षिणी कहते हैं, इस प्रदेशमें बढ़ने लगे थे।

राष्ट्रकूटोंके ही नहीं, उत्तरवर्ती पालुक्यों, होयसलों एवं यादवोंके

क्सन दक मो इस प्रदेशनों सैनोंदी संदगा नर्गारत भी राजनातिसे भी क्सन पुर नेता मा और समेक सामक्त स्वराद में देन ने निर्द इस्टी-दिसे स्वरादकोंदि पालाम्बाद करारेतार वर्ग मोद सीमेक्दर क्दंपैरो दक्ष विद्यानांके जबक स्वित्त स्वराद मो स्वादायों नार्य सेनोंदी क्या प्रदास का स्वराद स्वराद स्वराद मा (उन्हें सही) सामग्रीम समान स्वराद स्वराद

सम्मानुष्य प्रास्तिक स्वत्याचार क्रिये कार्य सेची और वी मणिक निर्मे पर्ये । सन्तरहे रुपातीय शैव-सैध्ययोचे और सहरहे पुन्तमामिन वर्षेर समान्यारीने इच प्रदेशने सैनवर्धको निर्मेण शाम कर दिया । क्षेत्रै स्थानि

साराज गीनावर्गन से बार थी। किन्तु सब्के ध्यानके दिव्युक्तीयों में ति मह में दुव्यानीके स्वादानांको प्रकारित दिवार से भी निर्मा सार्वे के नाथ कि नाथ

चापका वी निकास होने सबा को नयकी कहतायों । बास्त्रेस नामके सुकारम एकसान राजवाह-केंद्रे अध्यकातील वस्त्रोने सरकी बायाये

X E

वालतीय इतिहास एक दर्दि

सरल छ दोंमें अपने उपदेशा ज्ञारा महाराष्ट्रचे निवानियानी एकता, विषमी मुम्लमानाके अत्याचारींने स्वधर्म, स्वजातिकी रूना वरनेकी एकोहेदमता, प्राचीन गारतीय धर्मयोरोही गोरव गायाण नुनायर हीनता, निराशा एव रेतोत्साह-जैसे भागोपा बहिष्यार आदि मनोवृत्तियाका पोषण किया श्रीर धनै -रानै जागृतिको एम छहर देशमें फुँकनी अ।रम्भ कर दी। विजयनगरके महान् हिन्दू साम्राज्यका अमानृषिक अन्त लोगाकी स्मृतिमें गजीव पा---विजय नगर परम्पराके उत्तराधिकारी चार्टागरिके राजा सो अभी भी स्वतात्र धने हुए ये । आक्राता धर्मरायु मुसनमानोंके क्रूर हावांछ स्त्रधर्म, स्वजाति और स्वदेशकी रक्षाके लिए तीन मो वर्ष पर्व हायमल, यादव, यकातीय आदि भार-तीय राज्योंकि क्रूरतापृण अत्तमे प्रेरणा पाकर जिस प्रकार सगमने थीर पुत्रोंने चफन प्रयक्त किया था, मया अब कोई अन्य भारतीय वीर वैसा हो नहीं भर सकता ? यह प्रश्न लोगोंके हृदयमें उठ रहा था। विछले ५०-६० वर्षीते उत्त के मुग्रल मञ्चाट दक्षिणके मुमलगान राज्योंपर निरम्तर आक्रमण कर रहे ये और इस काल्ज ये दक्षिणी मुमलमानी राज्य पहले-जस असहिष्णु एव अनुदार नहीं रहे थे, किन्तु अब औरगडेवके रूपमें जो एक सर्वाधिक प्रयस्त मुमलमानसत्ताचे नवीन आक्रमण एवं अत्याचार प्रारम्म हा रहे थे वे पूर्व कालने अत्यन्त धर्मा ध मुसलमानीने अत्याचारीका भी अतिरेक कर रहे थे। दक्षिणकी अपनी सूबेदारीमें उसने यह स्पष्ट फर दिया था। फिर यह स्वय सम्राट्हो गया और उसने अपनी हिन्दू-विरोधी नाति उन्मुक्त रूपसे कार्यान्त्रित की। दक्षिणस उसकी सेनाएँ भी एक क्षणके लिए न हटीं। ये सब कारण और परिस्थितियाँ थीं जो इस्लामकी इस विनादामारी प्रगतिका सफल प्रतिरोध करनेवाले उपयुक्त नेताकी मौगकर रही घीं। और मराठा धीर शिवाजीके रूपमें वह नेता आ उपस्थित हुआ।

अहमदनगर सुलक्षानकी सेवामें मालोजी मोसले नामका एक छोटा-सा मराठा सरदार था। विधनेरका दुर्ग उसकी जागीर थी। उसके पुत्र पार्त्री मौनकेने बीड् क्वर्डि की । निशानपारीके बन्ति दिनोने तो पनि प्रथम प्रशासी मुसलादे रोपको जो परवाद न करके जाने प्रशासनानी रागाधा सीवित बनार्य रमनेका सर्वारवक्रकान क्रिया का । अनारा विकत-प्रयम होनेगर यस्य बीशपुरदे सूचनायको गीवरी का भी। मराबर मार्गित्रपृक्ष बक्षा बारा वृद्धिमान और बहार वह । राज्यनेवाचे निमुचीयी प्रमन भारी बोल्पानम दिया या । राजा शादानी मानमा समस्र तम प्रमन ब्रासान्य हो सप्ता बरेर यसे स्वाफी बाली। जिली ३ १६२ - ई. मैं ब्रिफ्नेर-के पूर्वत बाहबीती करते. जिलाहोंने विकासीकी बन्द दिखा। सीजासी स्वयं कर हाथान क्या बायान सरावेशी यन्या भी और नहीं पर्यान्त ऐं विविधाना की । पुनाके कामी बाचा क्षेत्र कुछ कालीकी कोडरेस्ट असियान-करके तिकारीका कान्यकाल जीता और विका-रीक्ट हुई । विकारीकी मित्रा-रीजा बदार कर्व फार्निक हुई को । जरम प्रस्त और नुडिंगोर्ने श्री ताथ-दी-नाथ उसने निकृत्या प्राप्त थी । बलाके असामे को नगर-ित प्रशार और बहरूव बंधाना हुए बाररेवर्ग प्रवय हरवाने पूर्वजीश बीरम बाबन शिक्षा और अनगी गहरचारांधाको बनेजिन निमा सम्ब

भ१९ भारतीय तृतिवासः एक सौ

भर दिया । उसन पूनामं ही रहते हुए आस-पासके अपने समवयस्क मावले ^{छड}के एक्त्र करके उनकी एक छोटी सेना सुगठित को और १६४६ ई० में १९ वर्षको बायुमें ही निकटके तोरनदुर्गको आदिलशाहके क़िलेदारसे छोनकर हस्तगत कर छिया । इस विजयसे उत्साहित होकर उसने शनै -शनै अपनो पूनाकी पैतृक जागीरका विस्तार एवं शक्ति बढ़ानी प्रारम्भ कर दो। मावले बडे सादे, तगडे, चतुर और पहाडी एवं जगली युद्धोंमें अत्यन्त निपुण थे। अतएव एक-एक करके शिवाजीने अनेक दुर्गहस्तगत कर लिय बोर कुछ नवीन भी निर्माण कर लिये। शाहजहाँने १६३३ ई० में अहमदनगर राज्यका अन्त कर दिया या और उसके पुत्र औरगजेवने दिसिंगको अपनी प्रथम सूबेदारी (१६३४-४४) में अविशिष्ट बीजापुर एव गोलकुण्डा राज्योंको एक पल शान्तिकी सौस न लेने दी थी। इस परिस्थितिमें शिवाजीका लडकपन बीता था और उसके भावी कार्य-क्रमकी योजना बनी थो। पूनाके निकटवर्ती ये दुर्ग राजधानी वीजापुरसे दूर थे े. और औरंगजेब उत्तरकी ओर वापस चला गया द्या । शिवाजीका पिता पाइजी सुलतानका प्रभावद्याली आमात्य था, अत छल-वल, घूस और विकारिश बादिके प्रयोगसे शिवाजीने इस अवसरका लाभ उठाया और षायहो बह बीजापुर दरबारकी ओरसे उपेक्षित रहा। इसी बीचमें चाहजीसे सुलतान रुष्ट हो गया और उसे बन्दीगृहमें हाल दिया बत फूछ समयके लिए पिताकी सुरक्षाके खयालसे शिवाजी शान्त रहा।

१६५३ ई० में औरगजेब फिर दक्षिणका सूबेदार होकर आ गया।
सुलतानोंके उससे उलझे रहनेके कारण शिवाजीको अवसर मिला और
उसने अपनी पक्ति और अधिक बढामी आरम्म कर दी। अव उसने
उनरा एव समृद्ध कोंकण और कोलावा आदि प्रदेशोपर भी आक्रमण किये
और १६५५ ई० में जाओलीके राजाको, जिसने सुलतानके विरुद्ध युद्धमें
उसका साथ देना स्थोकार नहीं किया था, मार हाला। अत सुलतान
अव सहन न कर सका और १६५८ ई० में औरगजेबके आगरेको और

रयाना होते ही शांबापुरने विशाशोके चननशं श्रीतकर्य बन्ते वर्षे । क्याच मानुका मरशारीको तो विकार्याम का ही बाद क्यापा अगः १६५६ हैं में प्रशासकों नामके एक बढ़े बन्धारको विधान बेनाके बाच विधानीको पषर बानके नियु येजा बात । विन्यू विवासीत अपने अन्य-बण-सीयणी सफरक्ता दश कर दिया अवधे आवर्ष ोराने वीतापुरणी ^{हुनारो} तिनर-बिनर कर विश्व और क्लको विनुक मुख्यानवर्धी अस्तरेण कर हो। सप विपान को वर्ष करिए और आध्य काडी वह वने, वह पुरन प्रदेशमें जो वार्ष बारने कवा - बीजानुरवाके ता विधानीकी बोर्स्ड दणस ही हो तेते थे. जुलागण आदिसाधाहका मृत्युके बाद अन्ते सर्वा सामी ल्बित नेमावनी बर्दिन हा रही वा 'बल्लु बीर्वारेव दिवारीकी बुडाली बरन व कर बक्ता का । इसने क्षते याना बनाव ब्यास्तापाँको विधानी ना राम करनेके निन्द श्रेषा । शिश्तु कर कार्राताची नुमाके न्युक्ते बारमन रहा को रहा ना विशासीने करना नारकर सबसी पुनरि गेरे मध्य प्राप्त बचावर काल क्या १६६४ ई. में विवासीने कुछारे बन्दरबाहुको बुधी छराइ मृद्ध । जब बारंपबेबर्ग बाहुबावे गुमरका बीर सदायान नर्गात्रको इनके विषक्ष क्षेत्रा । जनतिहासी नृत्योति क्षण्य हर्षे बीर मुरसामा नारमायन देकर सबन विकासको आवश व्यक्तिर एन्से कर किया । १९६५ हैं में बालक प्रश्नेपर विश्वतीयों अन्य हमा वि बारराज्य मिलालमात्र करना पाह्या है और बार्निक-दारा स्थि समें बक्तकी कोई श्रवा व करेगा । तक यह सकते पुरुष्टिक सर्पनिहरू पूर्ण रामांबक्की बारांग्या वर्ष अपने क्षेत्रकक्ष वेच बदककर निवळ बाता और बहाराष्ट्र पहुँच क्यां कार्र स्थितहर सक्ते औरंपस्थके विश्वा सुधा हुँवे सक कर किया । कर नुकारताके बाज पाता जनकर्यांक्रूको क्या दिना मेना बना फिन्दु में बीमों ही बर्याचा वृक्ष केवर बच्छे नाँउ रिधेयरें बिरिस ही करें, वर्तन प्रशादने बहु-नुपश्चर प्रशामि को शामधी परची मी रिक्क की और एक श्रोधके करने कहती वहा। स्तीकार करा में ! मारतीय इतिहास एक गाँव 111

रायगदका नवीन दुर्ग-निर्माण यारके शिवाजीने अपनी राज्य सला अप भन्नी प्रकार जमाला। अनेक दुर्गऔर विस्तृत प्रदेश उसके अधिकारमें पे। १६६७-७० ई० तक उपने अपने राज्यके आन्तरिय भागन-प्रयाधको व्यवस्थित किया । १६७० ई० में उसने खानदेशपर धावा निया और चौप वमूल का तया भविष्यमें भी दिये जानेके लिखित वचन स्यानीय घारी अधिकारियांने ले लिये। उसी वप सूरतकी फिर लूटा और अँगरेजो-की कोठोसे विपुल धन प्राप्त किया। १६७४ ई० म उसने रायगढ हुगको वपनी राजधानी प्रनाकर उसीमें प्राचीन प्रधाके अनुसार समाराह-पर्वक अपना राज्याभिषेक कराया और छत्रपति महाराज शिवाजीके नामस सिहासनारोहण किया, तथा अपना राज्य सवत्सर प्रचलित किया। १६७६ ई० में महाराज शियाजीने अपनी सुदूर दक्षिणकी विजय यात्रा की और गालकुण्डा पहुँचकर यहाँके सुलतानको अपना अनुवर्ती बनाया। बिजी, वैस्रोर, वेलारी आदि दुर्गी ओर प्रदेशोंकी अधिकृत करता हुआ वह बीजापुर पहुँचा और बहाँके सूलतानवे साथ भी उमने मैत्री सन्धि कर ली। प्रह यात्रा अत्यन्त सफल रही । अब शिवाजी दक्षिण भारतका एक स्वतन्त्र एव मर्वाधिक शक्ति-शाली नरेश था । बीजापुर और गोलयुण्डाके मूलतान जसका मुह निहारते थे । उनको साथ लेकर उसने मुग्नलाको देशसे बाहर निकाल देनेकी योजना बनायो । औरगजेब सीमान्तके अफग्रानो, साम्राज्यमें होनेवाले अय विद्रोहों ओर राजपूत-पुद्धोंमें उलाग रहनेक कारण कुछ न कर सका और वोर शिवाजी अपनी शवितके शिखरपर तथा अपने लक्ष्यके निकट पहुँच गवा। १६८० ई० में शिवाजोकी ५३ वर्षकी आयुमें मृत्यु हो गयी।

वीरगजेब उसके एक वर्ष उपरान्त दक्षिणमें आ पाया। शिवाजीका उत्तराधिकारी उसका पुत्र शम्माजी (१६८०-८९ ई०) हुआ। वह वीर और बोद्धा तो था किन्तु क्रूर, दुराचारी और विलासी भी था। अपने पिता-जैसा चरित्र, आदर्श और बुद्धिमत्ता उसमें न थी। विद्रोही शहजादे अकवरको उसने आश्रय दिया था। शिवाजीको सफलता और इस प्रवल दिन्तु राज्यमे वशेषे वश्यमे वशेषा वश्यमे क्रांतिक मेर्टिये स्वक्त मुख्या । वर्ग मीमार्ट्स भीर रोजनुत्वामा स्वक्त वश्येष्ठे वरास्त्र १९८६ है वे वश्ये प्राराम् १९८६ है वश्ये प्राराम १९८६ है वश्ये प्राराम १९८८ है वश्ये प्राराम होता है व्याप्त क्रांति क्रांत्र क्रांत

ही बन्त हो बना बराज परित्न बीर बराजेन्द्र बन्त व हुना। नह गर्द बुगा बरिक वेक्ने गर्द केब्बरावर्ष केंद्र करी। विकासी बुगरे दुर्ग प्रमापन की बन्दे वररान्त वरको करना वारवादि केन्ट्रमाँ करने बीरकेबको बन्दी कुन्तु स्केत वर्ष

एनं करेडू स्थी कि पीर विधानी क्या-अवसान के प्रियमंते कर का स्थान प्रतिक्रित कि ति है । करने वर्षमान करकार दर्श में कि वर्षम पर प्रतिक्र कि ति है । करने वर्षमान करकार दर्श में कि वर्षम पर प्रतिक्र कर कि ति है । वर्षम प्रतिक्र कर कि ति है । वर्षम प्रतिक्र कर कि ति प्रतिक्र कर के ति प्रतिक्र कर के ति वर्षम । वर्षम प्रतिक्र कर के ति वर्षम । वर्षम प्रतिक्र कर के ति वर्षम । वर्षम वर्षम कर के ति वर्षम । वर्षम वर्मम व

411

मास्त्रीय इतिहास एक प्री

एव प्रमावीत्पादक था, मनुष्यकी पहचान भी उसे अद्भुत थी। छार्चसम्प बितिसित हीन मावलॉको उसने दुईर योद्धा बना दिया था । उसका सैनिक संगठन अति उप्तत था । उसका विशाल एप प्रवितशाली सेनामें स्त्रियोंके रहनेका सर्वया निषेध था। नौ-राष्तिका निर्माण करनेवाला भी मध्यकाल-में वही प्रथम भारतीय नरेश था। देशका शासा प्रवाघ सुचारु था। अष्ट-प्रधान नामक आठ प्रधान अमात्याके मन्त्रिमण्डलकी अध्यक्षतामें प्राचीन भारतीय एव मुग्रन्थ दोना सासन-पद्धतियोंके उचित सम्मिथणसे अपनी णासन-व्यवस्थाका उसने विकास किया था। शत्रुको क्षमा करना यह नही बानता था, छल-मलसे जैसे बने उसका दमन करके ही दम लेता था। अपनी आवश्यकताके लिए लूट पाट करके धन लेनेमें भी उसे कोई सकोद ने पा। क्लिनु किसी महिलाका कभी अनादर या अपमान वह नहीं करता पाचाहे वह कितने ही कट्टर शबूसे सम्बन्धित क्योन हो। गो, ब्राह्मण कीर हिन्दू धर्मकी रक्षा उसका नाराधा तथापि वह समी धर्मीके प्रति ^{चदार} और सहिष्णु या और उनका आदर करता था। जन आदि सहिन्दू मारतीय धर्मोंका तो प्रश्न हो क्या वह मुसलमानोकी मस्जिदोका, क्रुरानका एव उनके धर्मका भी आदर करता था। शत्रुके रूपमें मुसलमानींपर उमने चाहे को ब्रत्याचार किये किन्सु घार्मिक अत्याचार कमी किसीपर भी नहीं किया। स्वयं उसके मराठा-राज्यमें जैन विद्यमान सो ये, कि तु उनकी स्थिति विति गौण, होन एव अनुल्लेखनीय हो चुकी थी और अब मराठा राज्यके महाणोंने उन्हें उमरने नहीं दिया। किन्तु सुदूर दक्षिणके दक्षिणी कर्णाटक, पुरुष एव तमिल प्रदेशोंमें अब भो मैसूर, भट्टकल आदि उनके दर्जनो छोटे-छोटे राज्य, श्रवणवेरुगोल-जैसे महान् तीर्थ और जैनविधी, मृहविद्री सादि स्रनेक महत्त्वपूर्ण सास्कृतिक के द्र छन्नत दशामें फल-फूल रहे थे। नाना प्रकारके षाह्याम्यन्तर अत्याचारो एवं विरोधी परिस्थितियोंके कारण पहले-जैसी चनको दशानहीं रही थी फिर मी वे प्रायः अच्छी दशामें विद्यमान थे। किलाडी मापामें किसने ही श्रेष्ठ जैनग्रन्थ इस कालमें भी रचे गये।

अध्यास म

सर्वित्रा काल (१७०७-१८४७ ई०) स्रोत्परेगी नृपूते वाच ही पूचन वासारकी बहुता नैना की प्राप्ता हो क्या नहीं हुवा वालीन शिह्यको नमकका की क्या है क्या । इन्द्र हो की कील वापूर्व काली नुस्कान राजवारिया की

एवं पहेंचे वरिक प्रेरण दिन्तु नुरस्तान तृत था। ११ ९ वि १४०० वि संग्रण तीभानी वर्षते मुख्यामती बालाध्यम् सुरस ब्राह्मक नेतनी वर्ष (१९६६-१००० वे) ही देने वि किस्ती देशने एव स्थापने एक्न्युक्तामा सनुसर किसा, मुख्याधीचरी तुझ वांव वो बोर वर्षते वर्षाण वर्ष तैसके प्राप्त मित्रके बात ब्राह्मकी दिन्तिय ता यहां एवं वीपने वी क्यारण मित्रके ब्राह्मकी प्रत्याचन कुम्म दिन्ता करा यहां हैया या स्थि वर्षते नार्मी कम्याचीक स्थापना वर्षाण्य नद्यां वर्षते हैं हैया या स्थि वर्षते नार्मी कम्याचीक स्थापना वर्षत्व व्यक्ति क्यां वर्षत्व हैं है। इस कुमी देशको पार्मी वर्षत्व वर्षते वर्षत्व व्यक्ति होते वर्षते वर्णते वर्षते वर्णते वर्षते वर्यते वर्षते वर्षते वर्षते वर्षते वर्षते वर्णते वर्यते वर्यते वर्यते वर्यते वर्ष

रचन्त्र हो रच । क्रथ्यलंकि चारकार्यक्री व्यवस्थानमें व्य दृष्ट

क्या इसके उसमा के ब बाब, कारकारों है और संबंध कार है पूर्व सार और पूर्वपूर्ण क्या कार बात्तिर और ध्यान्त्रांकों है। बार की सार्क किए कार्य के प्राचन कार कार की पास और न न्यांकों बातान बातांच काराओं कर बार्टिय है बच्चा रहन करने बादलें पहल सारकार के हैकर और धार्कों है किए रेक्स कारन हुने बादल किए, वार्टिन है प्राचनें प्राच बोई लागोय या धार्मिक भेद नहीं करता और देशको मामूच ननताना मुख्योग और सङ्गाम प्राप्त करनेका प्रयाम क्रिया । लाहोंने यान हितका केवल कापना निजवा या गुमलमार्थ प्राप्तका लोग मानिया दल्लामना हो दिन नहीं समझा यर १ उमे सम्मूच चारतका लोग मानिया पर्भो एवं शांतियोंने निमित्त कलिन भागोय जानावा किए मानिका प्रयप्त क्या । सत्त्व हपरोक्त भरपवालीन व्यवस्थान निर्माण चाराचे शक्ष-कर खादि नदारमना भारताय महारोंने सप्त खाल्यमं नारतको दिल्लू, नेत, मुसलमान सभी जनतान तथा लग्ने सभी मगीन निवकर सम्मादित विया था ।

ित्तु औरगडेयको विदेध एवं पदायाउपर आधारित गुनीतिने स नेयल उत्तक जोवनमें ही उदत स्वर्णमुगनातो अस्त कर ही दिया वरन् स्थय मुक्त साम्राज्यकी मीवकी इतना कोलका और उसके शरीरको इतना जजर हर दिया कि उसकी मृत्युके उपरान्त ही यह दूस वेगने साथ पतनके गम्भीत ^{गृ}द्वरमें हुवने लगा और अपने साम सम्मुण देशको भी *छे दू*वा । आगामी देइ-भी वर्ष (१७०७-१८५७ ६०) का बाह्य गारतीय दतिहासका स्राव-कार युग है, इग्रहिए नहीं कि उस कालके सम्यन्यमें हमें गुळ जात नहीं है बरन् इसलिए कि नो कुछ ज्ञात है उससे हमारे मम्नक लज्जास ज्ञुर जाते हैं। इस पूरे कालमें अराजकता, अन्ययस्या, छ्रष्टाचार, विलामिता, स्टूट-मसोट, मार बाट, षट्य त्र और विस्थामपात, परम्पर फूट और वैमनस्य-षा बालवाला था । इन्ही दुगुणा एव दूषित प्रवृत्तियोंस उस कालका सम्पूर्ण रितिहास भरा पड़ा है। देशमी राजनैतिक एकसूत्रता और संगठन ही नष्ट नहीं हो गये थे और उनमें स्थानमें अध्यवस्थित विके द्रीयरण और विष्ट्र-वनता ही उत्पन्न महीं हो गयो थी धरन् सम्पूर्ण देशका उत्तरोत्तर घोर नैतिक पतन होता चला गया । जिस हिन्दू पुनवत्यानके नेता एवं पुरस्कर्ता मराठा दोर शिवाजी, सिषणगुरु गोवि दसिंह, जाट नेता गोकुल, मेवाटके राणा राजिंसह और उनके प्रयान नाह दयालदाम संवयो, मारवाड़के

पूर्वायत पारीर, कुरोबंद्यकों चीर करवाल साहि स्वरुपांत रूपी गाराल में मी पुरस्थाय करवा कार्य क्यांति ही सारंत में उसे कर्मा मी करिया करवा पूर्व ने ने नारंति हों। कर्मा इंडरा नवकर और सहस्थ हो नया कि बात नहुर चारी करियों पूर्वेगा सेवरिय स्वरूपों कर वार्यू दियान दिवसे स्वरूपों कर देश से कर्मान्य इंड्रा प्रांत्यों क्यांति कुक्ता होन्यों के स्वरूपों कर देश से वार्य परराये से साम्यूपांत्र करियों कुक्ता होन्यों के स्वर्ण मी क्यांति क्यांत्र सार्वेग पहुंच प्रांत्यों के स्वरूपों कर्मा होन्यों क्यांत्र कर्मा क्यांत्र सार्वेग पूर्व सार्वोग्य सोमार्थी स्वरंतिक क्यांत्र क्यांत्र क्यांत्र स्वर्ण स्वरंतिक स्वरंग स्वर्ण स्वरंग स्वरं

बर्टीसन् हो नया। पुरानार, अवाचार धूर्ण अरवाचारका काव मोकसामा यह व कोई स्वयंत्र का अन्यवंत्रण (यहतंत्रमा वाणी कुरेरे वे कोर मानवेत्र बावक वरकोत्त्रारा बती जूरे वा रहे ये। विकास कार्मी वर्तनी मैंव यो। बोर को बताबे जांकत अर्थनेकी कुली जूर्व मीर पहुर्द कुरेरे

में से मेरंट हों करे-कों जानर हागी होन्दर देवांगे न्यायेन्यांचे देवें पूर्वर होतांने नाववंदे काम हो नहें बीत पहेंच कमी तुर्व में करियां हो करों थी। करों की कर्म कर्म करियां हा पार्याय कर्माय वर्तमा होतांचे नायंक्य, निर्माणका कार्याय, नीतांच कार्या वर्तमा वर्तमांच्या कीने में सिर्माणी हाय एवं नायंग्य, नीतांच कार्या वर्तमा वर्तमांच्या कीने हिंगांची मान कर्मायांच्या कार्यायांच्या की तीर्माण नायंच्या कर्माय हुन तीर्माण हुन क्यायांची पुरानितांच्या कर्मायांच्या हुन त्यायांच्या कर्मायांच्या क्या त्या क्या क्या कर्मायांच्या क्या कर्मायांच्या क्या तीर्माण क्या क्या तीर्माण क्या क्या होतांच्या क्या तीर्माण क्या तीर्माण क्या क्या तीर्माण क्या तीर्याण क्या त

एर्च वर्षर वस्य-एकियाई जुते हैं, बीवपुर वरेख बजीतर्बिड एउदीएके नेपूर्ण

वार्ताच इविदास : एक परि

अल्स्स्यामी वल प्राप्त करनेवाला राजस्थान, मराठा धिवतको घरम-धिखर-पर पहुँचाकर हुवा देनेवाले पशवा और उनके भोसले, गायकवाह, होत्कर, विन्धिया आदि सरदार जो अपने स्वतःत्र राज्य जमा बैठे किन्तु उस स्वत त्रताकी भी रक्षा न कर सके, भरतपुरके जाट, पजाबके सिक्ख जिन्होंने रणजोतिंमहके नेतृत्वमें चरमोत्कर्प प्राप्त किया किन्तु उसको मृत्युके साथ हो परामृत मी हो गये, मैसूरमें हैदरअली और टीपूकी अल्पस्यायो मुसल-मान शक्ति तथा पूर्तगाली, हच, फ्राम्सीसी और अँगरेज आदि युरॅपोय व्यापारी जिनके व्यापारार्थ किये गये परस्पर संवपमें अँगरेज हो अन्तत विजयी रहे और फिर भारतको हिन्दू एव मुसलमान धिक्तयोको पारस्परिक पूट, अहूरदर्शिता एव देशको गम्भीर पतनावस्थाका लाम उठाकर उसके पूरे भाग्यविधाता वन वैठे।

उत्तरवर्ती मुगलनरेश-ओरगजेवके प्रयत्नोंके वावजूद उसकी मृत्युके पश्चात् उसके पिता तथा उमके स्वयंके द्वारा ढाली गयी प्रयाके अनुसार उसके अविशिष्ट पुत्रों मुअज्जम, आजम और कामवरूशके बीच चत्तराधिकार-युद्ध हुआ ही जिसमें आजम और कामवल्श मारे गये और मुबप्जमने शाहमालम बहादुरशाह (१७०७-१२ ई०) उपाधिके साथ ^{सिहासनारोहण} किया । अपने पूर्वजो द्वारा सचित आगराके विपुल राजकोप-में-से लेकर सरदारों और सैनिकोंमें उसने घन वितरण किया और उन्हें चन्तुष्ट किया। उसके सोमाग्यसे मुनीमखाँ और जुल्फिक़ारखाँ-जैसे दो सुयोग्य और वृद्धिमान् अमात्म उसे सहायक रूपमें प्राप्त हुए थे। उनके परामग्रीसे चसने चिजया-कर चठा दिया। १७०९ ई० में जोघपुर-नरेश अजीतसिंह राठौरके अधिकारको स्वीकार करके और उसे राज्य सेवामें छेकर तथा गुनरातका सूवेदार बनाकर तीस वर्षसे चले आमे राजपूत-विरोधका अन्त किया। जुल्फिकारके परामर्जपर मराठामें परस्पर फूट डालनेके उद्देश्यसे धम्माजीके पुत्र साहूको मुक्त कर दिया और उसे दक्षिणमें जाकर अपनी पाची ताराबाईके साथ राज्याधिकारके लिए छडनेकी अनुमति देदी। नररान में नदी पुश्वरचान बबन कनम बन्दारित ही बानेवर मी वनके बत्तराजिकारिकाकी परत्पर कृत वैश्यान समेत्रा वृत्ते सहुरर्गामण्डे कारण इतथा सबस्य गोर अक्षमंत्र हो बना कि बात क्यूड नारवे सालेगाँव मुद्रीवर बेंगरेड स्टरशारी इन सम्बे विधान देखते. स्थापी वन बेंडे । इन नर्गातका दिन्दु द्यांकायाने वहानी जनसमान द्यांकावीके बाब ही वडी वरम् स्वयं परतारम् भी अवन्यदक्षर बन्नूच देशको इतुना निर्मात निरम्पत मीर परित्र क्या रिका कि देखवी बारवृद्धिक प्रचार कीमी रिका पर्ये बार्जिक एवं सामाजिक बीकार्वे सर्वावकत कुरीतिको अवैद्य कर वर्षे देलके स्वाचार वर्ष क्योग-बन्धे नष्ट हो वर्षे और बक्का देशा वार्टिक बोलय हवा बैदा पर्दे कभी यही हवा था। अल्बेड अस्तिया यत-सर सर्चल हा नवा । स्राचार, अन्यवार वर्ष आजवारका वर्वन ग्रेपनाना मा । म कोई पावन का म जनस्या । राजा-बजा बची सुदेरे वे और मरनेचे सारिक परफोन्डारा कती करे. वा रहे हैं। जिल्हा अबडे रुक्ती बीट थी। बीर को बच्छे अधिक अधिकेशी क्रमी अर्थ और पन्त लीरे में वे बॅनरेंप हो करें नकी। समन्द हानी होचर देखतो नराचीनदानी ऐसी न्दरह वैशिवनि सकत्वेनै कारण हो बने कीही बहुके करते वहीं भी न में क्यों थें। बार, देह-की वर्गके इस सार्तात सम्बन्धका प्रदेशक अराज्यक विर्णानका, बंबान्ति मैतिक काम बंबा बर्बचा क्यारिका बोडे-के विदेधियाँ-हारा इन महारेक्को वराबीवताकी वैदियोगे शकरते बानेका ही सम्मान बनक इतिहान है। इन इतिहानके अनुबानान है खननति नृगरे निर्मे हुए बत्तरवर्धी मुख्य-गरेव : यक्के स्थानिहादी एवं स्थानी बालमा बरचार और मुदेशार को अवसर गाउँ ही तकारण शाल क्या क्षेत्र किन्तु काकी ^{क्}री रबा न नर क्षेत्र नान्दिरमाह दुराँनी और व्यानस्थाह अमानी-वैदे मूर एवं वर्गर वस्थ-वृश्विकाई सुरेरे, शीवपुर वरेख वजीवार्त्यह राजीरके वैतुर्दर्ग

भारतीय इतिहास : एक धीर

पुर्वाराज राजीरः भूग्वेसात्रपद्धः और क्षत्रमाण कार्यः स्वतन्त्रपद्धः पूजारी

वस्यस्याने वस प्राप्त कर्णावाला राजस्यान, मराठा धारिनको घरम ितरपर पहुँचावर पुवा दनवाले थेणवा और उनके भागले, गाण्ययाप, होन्यर,
निषिषा आदि सरदार जा अपन स्थलात्र राज्य जमा धँठे विस्तु उत्तर
स्वतात्रवाको मो रहा । कर गर्ने, मरसपुरव जाढ, पजावके सिक्त क्रिकृति
रणजीतिन्ति ने नेतृत्वमे घरमोत्तय प्राप्त विषा विष्तु उत्तको मृत्युके साम
ही परामृत भी हो गये, मैनूरमे हैन्दबलो और ठोपूकी व्यत्यस्थाया मुसलमान शिवत सथा पुत्रगाली, रूप, मान्योमी और अंगर्रज आदि यूरेंपोम
स्थापारी जिलके रसावाराच किये गये परस्पर संघपमें बँगरज हो बन्तत्व
विजयी रहे और फिर भारतको हिन्दू एय मुसलमान धावितयाको पारस्परिक
पूट, अदूरदिना एवं देणको गम्भार पतनावस्थाका लाम उठाकर उतके
पूरे भाराविधाता बन बैठे।

उत्तरवर्ती मुगलनरेश-शोरगजेयके प्रयत्नोके बावजूद उसकी मृग्युके परचात् उनक पिता तथा उत्तरे स्त्रयन द्वारा हाली नवी प्रयाके अनुमार उनवे अविष्ठि पुत्रा मुखजतम, आजग और सामयस्यप योच वत्तराधिशार-युद्ध हुआ हो। जिममें आजम और कामबस्य मार गये और गुअरजमने शाहआलम बहादुरणाह (१७०७-१२ ६०) उपाधिके साध सिहासनारोहण किया । अपने पूर्वजो द्वारा सचित आगराके विपूल राजकीय-में-ने छेपर सरदारों और सैनिकोंमें उसने घन वितरण किया और उन्हें सन्तुष्ट विया। उनके शीमायसे मुनीमर्सी और जुल्किकरसी-जैसे दो सुयोग्य और वृद्धिमान् अमास्य उसे सहायय रूपमें प्राप्त हुए थे। उनके परामदासे चसने जिल्लान्यर उठा दिया। १७०९ ६० में जोधपुर-नरेदा अजीतसिंह राठीरके अधिकारको स्वीकार करके और उसे राज्य-सेवामें छेकर सथा गुनरातका मूबेदार बनाकर तीस वर्षसे घले आये राजपुत विरोधका अन्त किया । जुल्फिकारक परामर्शपर मराठामें परस्पर फूट डालनेके उद्देश्यसे पम्माजोरे पुत्र साह्रको मुक्त कर दिया और उसे दक्षिणमें जाकर अपनी षाची तारावाईके माय राज्याधिकारके लिए लक्ष्तेको अनुमति दे दी। क्षमारक नार्वित्र मृत्यु क्षित्र कर तीर वे कार्य क्षा कर । भारवाई क्षित्र कर है। यह तीर कर क्षारें वामक क्षारें है। विकास क्षारें कर है। यह तीर कर क्षारें वामक क्षारें है। विकास है। वह के क्षारें वामक क्षारें है। विकास के व्यापक क्षारें कर है। विकास के व्यापक क्षारें कर कर कि वामक क्षारें कर कर कि वामक क्षारें कर क्षारें वामक वाप कर कि वामक क्षारें वामक वाप कर कि वामक वाप कि वामक वाप कि वामक वाप के वाप क

वसके स्पाप्तन्य अनमें सीभी नादवीकी द्वारा करके सदका ब्लेक

पुन करियाराम् (१७१२ है) जनसम् हुना। जा बानमा निकास सार दुप्पारी सा। जाया मान्ने पर्यास् ही वर्षके मार्ट्स प्रवित्त हैं (१७११ ११ हैं) में नियाराने जनस्य स्व वर्षके जिहाना सर्व हारुक्त कर सिमा। जा भी निर्वतन निवारी, पुरानारे निवारा समें स्वारा था। जुरिस की ही काली निवारामा मान्ने कर्ने कुरीय स्वं मुन्न करवारे और वरसारितीश विद्यासो वर्ष कर दिया सारे रुक्तामान करवारिती है। वाल मिन्नकारानुष्य सीह के क्या है। एवं मुक्ताम करवारिती हुन स्व सिमा करते के वहंबा पर करवीन मान्ने एवं मुक्ताम करवारिती हुन सिमा करते हिया। वाल वहंबा कर करवारी मान्ने एवं मुक्ताम करवारिती हुन से सिमा करते हिया। वाल वहंबा कर करवार करते स्वत सारे कि हो से स्वाराम करवार करता और करके करवार स्व स्वार कारियोरा भी मुखाने वह स्वया हुना और सिम्प करवार करवार स्व स्वार कारियोरा भी मुखाने वह स्वया हुना अर्थके स्वस्था स्व

411

भारतीय इतिहास **१** व स्टी

प्रसन्न होकर फ़र्छंखिस्यरने अँगरेज कम्पनोको मारतमें ग्यापार करनेको मूल्यवान् सुविधाएँ दे दीं और उनके मालको भी तट-करसे मुक्त कर दिया। १७१९ ई० में सैयद भाइयोंने ही उसे पदच्युत करके उसका यम कर ढाला। तदुपरान्त इन सैयदोंने नेक्नुसियर, रफ़ीउद्दैलत और रफ़ीउद्दरजात नामक तीन शहजादोंको एक-एक करके बादशाह बनाया और थोडे-थोडे दिन बाद प्रत्येकका वम कर दिया। इसी कारण ये सैयदबन्धु 'राजा बनानेवाले' कहें जाने लगे।

अन्तमें उन्होंने फ़र्रुख़िसयरके एक अन्य चचेरे भाई मुहम्मदशाह (१७१९-४८ ई०) को वादशाह बनाया। वह भी वहा निकस्मा, दुराचारी और विलासी था, इसी कारण मुहम्मदशाह रंगीलेके नामसे प्रसिद्ध हुआ । किन्तु उसने सख्तपर बैठते ही सैयद हुसैनअलीका गुप्तरूपसे वघ भरवा डाला और उनके माई अन्दुल्लाको बन्दोगृहमें डाल दिया। १७२० ई० में एक अन्य शहजादे इब्राहीमने बादशाह होनेका विफल दावा किया। राठौर-नरेश अजीतसिंहका प्रभाव और शक्ति इस समय पर्याप्त बढ़ गयी थी। जयपुरके सवाई जयसिंह और उदयपुरके सम्रामसिंह भी चितिवाली हो रहे थे। इन तीनोंने मिलकर एक राजनैतिक समझीता भी किया था, किन्तु वह सफल न हुआ। मुग़ल-सम्राट् और उसके दरवारकी ओरसे राजपुत उपेक्षित होते गये और स्वय अपने-अपने राज्यकी शक्ति बढ़ानेमें व्यस्त रहे तथापि सवाई जयसिंह आदि राजपूत राजाओंके प्रभाव-से इस बादशाहने जिजया लगानेके प्रश्नको सदाके लिए समाप्त कर दिया। राज्यके जैन-घनिकोके बाग्रहपर उसने पशुवधपर भी कहा प्रतिबन्ध लगा दिया था। मुहम्मदशाहने १७२२ ई० में चिनकलीचला आसफजहाँ निजामुत्मुत्कको अपना वजीर वनाया, इसके पहले वह दिवसनका सुवेदार था किन्तु साम्राज्यकी पुन शासन-व्यवस्था करनेका दुस्तर कार्य उसे अपने वृतेके बाहर जान पढा अत अगले ही वर्ष वह फिर अपनी दिवसनकी . सुबेदारीपर चला गया और वजीर भी वना रहा । १७२४ ई०में हैदराबाद- कर देश बंध कर दिया और बबके आंत्रशरूपों को छने-जमें जानीसर करमा जारम कर दिया, बक्का एवंदायों पूर्विकासने गर् (१४%-१५ ई) दूरे बयम बीर स्थापन विद्यालय स्वाप्त कर्मा के कर्म एक्स करने क्या ! संगत्ने क्यारवारी वर्षण एवं शिशुत जरेवरण, वो योक्स्य व्यवस्था, यूर्वेक क्रायोंने करण स्वाप्त एवंदा बिक्स ! आरत्तुर और करके क्यान्याव सुरवस्य बहारे करण रास्त्र स्वाप्त !

सेनाने उसका प्रतिरोध किया। दो घण्टेमें ही युद्ध समाप्त हो गया, दिल्लीके लगमग बोस हजार सैनिक युद्धमें मारे गये, और बादशाह मुहम्मदशाहने स्वय दुरिनोकी छावनीमें जाकर हाजिरी दो । नादिरशाहने उससे नरमीका वरताव किया और मित्रता प्रदर्शित की। दिल्लीके शाही महलोंमें अत्यन्त सम्मानित अतिथिके रूपमें वह ठहरा । किन्तु पुछ लोगोने उसकी मृत्युकी झुठी अफ़बाह उहा दी और यत्र-नत्र उसके सैनिकोंको मारना शुरू कर दिया । इसपर नादिरशाहका क्रोध भडका और उसने क्रालेबाम-की आज्ञा दो । दिल्लोके प्रमुख वाजारकी सुनहली मस्जिदमें वैठकर वह नी पण्टे तक लगातार दिल्ली निवासियोका निर्मम सहार देखता रहा। अन्तत मृहम्मदशाह और उसके मित्रगोंके अत्यन्त अनुनय विनय करनेपर असल्य निरपराधाके रक्तसे अपनी प्याम बुझाकर उसने यह पैद्याचिक नरसहार रोका । तदन तर ५८ दिन तक बाही मेहमान रहकर उसने दो सी वर्षोमें सचित किये गये मुग्नलोंके अपार धन-वैभवको उन्मुक्त होकर ल्टा। शाही कोप और महलोंके अतिरिक्त दिल्लीकी जनताके भी सभी वर्गीको जितना बना लूटा-चसोटा । और सब कोहेनूर हीरा तथा मयुर सिंहासनके साथ साथ अन्य विपुल धन सम्पत्ति, जो अनुमानातीत है, ऊँटो. गर्घो और खच्चरोपर लदवाकर वह ले गया।

दुर्गनोकी इस अयकर नादिरकाहीसे दिल्ली धन-जनहीन हो गयी और दिल्लीका वादकाह मी जो साम्राज्य और अधिकारिवहीन तो पहले ही हो चुका था, अब धनहीन दिरही भी हो गया और उसकी प्रतिष्ठा भी समस्त प्रदेश नादिरकाहके राज्यका अग वन गया। मुहम्मदकाहके अन्तिम दिनोम अहमदकाह अन्दालीने, जो नादिरकाहकी मृत्युके उपरान्त उसके साम्राज्यके पूर्वी भागका स्वामी वन वैठा था, पआवपर आक्रमण किया किन्तु काहजादे अहमदकाह और बजीर कमालुद्दीनने उसे पराजित करके पोछे हटा दिया। इसके एक मास पश्चात् हो मुहम्मदकाहकी मृत्यु होनेपर उसका प्रश

पोरक्ष करान्ते । करान्ते रार्व पारवार बावण करनेश सरिवारी या ।
गाँ ग्रेरे साम्याध्याय वर वर विवादमा और करना पूर बहुआ करी
बहुद बहुआ कर विवाद होंगे १ है १ १-१ ८ ई । या के रिवर्णिया
बारवाइ हुए । सम्याधित के की रहेगार कर किया ।
स्वाद हुए । सम्याधित के की रहेगार कर किया ।
स्वाद के प्रध्याप्रधान सम्याधित काम किया के क्ष्याच्या काम किया कर किया ।
स्वाद के प्रध्याप्रधान सम्याधित काम क्ष्याचित काम किया कर किया ।
स्वाद के प्रध्याप्रधान सम्याधित काम क्ष्याचित क्ष्याचित काम किया कर किया किया कर किया क

वनसार बावरसाइयो वरकण वर्ष पृथ्यो वारावार वार्रावारमाई पृष्ट वार्यावार कार्रावारमाई पृष्ट वार्यावार कार्यावार (१८०४-५९ हैं) वे वार्यावार वार्यावार पृष्ट (१८९६ हैं वे वार्यावार वार्यावार (१८९६ हमार वार्यावारमाई) हमार वार्यावारमाई (१८९६ हमार वार्यावारमाई) हमार वार्यावारमाई (१८९६ हमार वार्यावारमाई) वार्यावारमाई वीर्यावारमाई वीर्यावारमाई वार्यावारमाई वार्या

मंत्रः भारतीय सुनवन्धनीने साम्यानीको सदापनाने अस्तर्दाको हुनक्लेकी

बारबारकी विषय कर विवाद १ ५४ ई के क्योर बाबीजरीयने

सामाध्या (१७४८-१०५४ है) हिल्लीका बाह्याइ हमा । स्वी चन हैराधारेट निवास चौर हिल्लीके बजोर साम्माद्रीयी ची नुब् ही बनी ची। सर बनवा तीना साहीवहीय बजोर हुन्या। सामानीके चेत्रावार इत्या सामान्य दिना और यह कान्यों बड़े हैं है देने किए अवधका नवाब शुजाउद्देश दिल्लोके बादशाहका बजीर भी बन गया था और क्योंकि वह अव्दालोका सहायक एव समर्थक था इसलिए उसकी इस विजयसे उसे तथा नजीवृद्दीला रहेलेको ही अधिक लाभ हुआ। उत्तर भारतको इन विपम परिस्थितियोंका लाभ उठाकर चालाक अँगजोंने वंगालपर प्रायं पूर्णिधिकार कर लिया था। १७५७ ई० के पलासीके युद्धके उपरान्त अब मीर जाक्रर आदि वगालके नवाब उनके हाथकी कठपुतलो मात्र थे। दिल्लोका बादशाह शाहशालम मात्र एक तमाशाई था। अहमदशाह अव्दालोका भारतके साम्राज्यको भोगनेका स्वयन भी उसके सैनिकोंके यिद्रोहके कारण भग्न हो गया और उसे अपने देशको लीट जाना पहा। वह फिर वापस न आया।

१७६५ ई०में इलाहाबादमें वादशाह शाहमालमके दरवारमें उपस्थित होकर अँगरेजोंके गवर्नर क्लाइवने २६ लाख रुपये वार्षिक करके बदलेमें उससे बगाल और बिहारको दीयानी और कहा एवं इलाहाबादके जिले अपनो कम्पनीके नाम छिखा लिये। वास्तवमें दिल्लीका बादशाह अव नाममात्रका हो बादशाह और सम्राट् था । वह अपने पूर्वजींक प्रताप और अधिकारको एक गोण एव टपेक्षणीय छाया-मात्र रह गया था। घटना-क्रमपर उसका कोई प्रभाव न था। दिल्ली दरवारका परम्परागत अधिकार-मात्र इतना ही रह गया था कि विभिन्न पर्सो-द्वारा किये गये वलात एव अन्यायपूर्ण कार्योंको उन-उन पक्षोंके कहनेसे अपनी शाही मुद्राको छाप-द्वारा याह्यत न्याय्य रूप दे दे । वादआह शाहआलम कमी किसी मुसलमान सरदारका या नवायका, कभी मराठा राजा सिचियाका और कभी जैगरेजी-का बन्दी या आश्रित रहा । गुलाम कादिर नामक एक रहेले गुण्हेने, जिसने चसके दरवारमें थोडा प्रभाव पैदा कर लिया था, शाहमालमकी दोनो आंखें फोड दीं। महादाजी सिचियाने उसको झैदसे वादशाहको मुगत किया और अपनी ही एक प्रकारकी क़ैदमें रखा। १८०३ ई० में वह अँगरेज कम्पनीका खान्त्रित हो गया और उससे प्राप्त वार्षिक पेंदानसे अपना निर्वाह करने छगा।

बहुन्तुया देवील (24%-५० हैं) नाजवाले बारफा है। में बेटोड स्वार्गारिक नैतानीमी नेवल बास्ते जिल बारका व वस्त्र स्वरा अपेल स्टेके कीमारी थे। स्वन्तुः तिस्कीर स्वन्यपीयीत नामकिनेपी पहार-देवाकों जीवर ही समझी बारधात जोर बाजार देविल है। स्वर्गेन बनने वृत्त्वील स्वरात नामकों सहित्र बार्ट्स प्रस्ता स्वरोत्त है। स्वर्गेन बनने वृत्त्वील स्वरात नामकों सहित्र बार्ट्स प्रसाद

को बरबार बीर फरे-पुराचे कात्र पहुने हिन्सूस्य कोने-हे श्रीकर-वाकरीने बाज दिल्लीने एक बाजान्य रहेंब्रुकी श्रीति क्लि विद्याच्य ही बड़के धार्मने

क्षत्रमा पुत्र मणवर क्रियोग (१८ ९-३७ वे) और उपनत्तर गीत्र

प्र नया गा । १८० वे के जमार्गक्त शिवकि कराज्य बक्का में में मार्ग हुआ । मित्रम नायाद व्याप्त प्रश्न के पूर्व मार्गक्त मन कर निया मार्ग के सन रेपूर्व मिर्गामित कर निया क्या तीर पूर्व मेरिकीये मार्गक्त कर्म हुआ को बाव क्याप्त मृत्यू हुई तथी और बस्के बान पुण्यों-से बाव्याद्वाचा नाया हुई कहा । मुस्तस्वामा नायान-१. हैंदूराबाइके निवृत्तम-ईरागम रहिनामें मार्गिया मुक्तमा एक मुग्त-वावस्थ कारहे नाय कर्माम

वांकी वार्थमीर स्वारंक क्षेत्रका वर्ण-तर्व कुक्कामी राज के और व्हों राज क्षामिक रुवामी में त्या कर है क्षामिक को पूर्व कहाँ ये। व्याप्त्रकार्य रेश: है में कुक्कार वांकिये करना वर्णार कोर स्रोता होता होतार कावा वा कुक्काराये कावी जारेब कावार्य कार्य के दुर्णना पाल स्वीते क्षित क्षित्रकार कर रिचा था। क्षित्र क्षामिक क्षाम

भागतेच इक्सिस १ एवं गाँउ

स्वतन्त्रता घापित कर दो, हैदरावादको अपनी राजधानी बनाया और मुगल साम्राज्यके दक्षित्रनके पूरे सुबेपर अपना राज्य स्थापित कर लिया। आसफ़जहाँ बहुत योग्य, चतुर और वृद्धिमान् था । अपने शासनके अन्तिम २५ वर्षीम भीरगजेय दिवलनमें हो रहा या असएव उसकी बहुत-सी धन-सम्पत्ति वहीं रह गयी थी। दक्खिनकी मुसलमानी सल्तनतोंका अन्त नरके जो यिपुल सम्पत्ति औरगजेवने यहाँ प्राप्त की थी उसका भी वहत-सा अश वहीं रह गया था। यिजयनगरको लटसे प्राप्त अवार धन इन सुछतानोके पास था। अँगरेज आदि अमीतक कुछ छ।न नही पाये थे, शिवाची और उसके उपरान्त पेशवाआन हो जा योडा-बहुत छीन पाया या उसके अतिरिक्त शताब्दियो क्या सहस्राब्दियोंसे संचित्र होतो आयी दक्षिण भारतकी अपार धन-सम्पत्तिका बहुमाग निजामके ही हाथ लगा था। उसके प्रवल प्रतिद्वन्द्वी पेशवा थे, उन्हींका उस सबसे अधिक भय या। पेशवा बाजोराय भारी विजेता एव पराक्रमी था, उसके कारण मराठों-में परस्पर फुट हालनेकी निजामकी चाल ससफल रही। अब उसने उनसे मित्रता बनाये रखनेमँ ही कुपाल समझी । १७२८ ई० में उसने पेशवाकी नियमित चौथ देते रहना भी स्वीकार कर लिया। १७३८ ई० में उसने पेशवाको दिल्लीको ओर बढ़नेसे रोकनेका भी प्रयत्न किया किन्तु भोपालके निकट पराजित होकर चुप बैठ रहा।

१७४८ ई० में वृद्ध निजासकी मृत्यु हुई और उसके दूसरे पुत्र नासिर-जंग और पोते मृजपक्तरजगके बीच उत्तराधिकारके लिए सध्य हुआ। फ्रान्सीसी अ्यापारियोंने मृजपक्तरकी सहायता की। युद्धमें तो वह हार गया किन्सु १७५० ई० में नासिरकी मृत्यु हो गयो और मृजपक्तर निजाम हुआ। उसने फ्रान्सीसियोंको बहुत-सा घन व जागीरें दी और उनको एक पलटन भी अपने राज्यमें किरायेपर रख ली। इस प्रकार फ्रान्सीसियोंका प्रमाव उसके दरवारमें बढ गया। मृजपक्तर भी घोष्ट्र ही एक युद्धमें मारा गया। उसके स्थानमें उसके लडकेको वैचित करके आसफ्रगहोंके तीसरे पृत्र

बबानकर्मक्को क्रम्पीकिनोके प्रतिनिधि बुबीने महीपर र्वद्रामा । १७५८ हैं में बुनीनो बचनी करकारने शावा बुन्य मिना और निराम शासने कुम्सीविवीके अध्यक्ता क्षम्त ही नथा । सक्तास्वर्वको आस्कर क्सन्त माई निराधकी बचाव अब नवा। धव निराम, वराडे और नैतृरना हैपरकारी दक्तिय जाएतणी अनुताने लिए परल्पर कंत्र रहे थे। औपरेजींप अन्तर्भे क्रूगोतिके क्रमी किन्नोका और क्रमी क्रिकीका क्रम क्रेकर और स्थ चाहा बरशा नगर मेंन करके का विश्वासवास करके का बार ही की नन्दीन करना बीर करनी चल्छिको बडावा गारन्त्र किछ । भारतीय रामार्थे और नपानेशे पृथनाने शास्त्र कर्ने बाचाओठ। इस्प्रता निक्ती नमें। १ ९५ वें में विकासको क्यूनि सरमी अञ्चारकशन्त्र-बीजनार्क धाकने चौदाकर गेंचु क्या दिला। जब यह क्रमश नाजिह को एक प्रकार है जबीन हो हो पहा । क्वी-वर्ण यह बहिया परायोजना हतको पूर्व हो वर्ती कि निवास बैंगरेंचीका एक वास्त्रकारी क्ष्मपरिवाद रह बता को बनकी क्यांचे रेतुक राज्य-रेज्यका व्यक्तिक वर्गणीन कर बक्ता था । वांची बुक वर्ष वर्ष स्कानका व्यक्ति उत्ताक बन्धर श्रीवनी निवस्त होईसे कन देखी राज्येक बाय-ताय दव गांव नायकी राज्य बताना की सन्त कर विद्या । स्वतिकार कार्ने शिक्षानाः पर्वतान वंद्यस कार्न सो वित्रके दर्ग-विक बनी व्यनिवर्गीयेन्त्रे हैं । विक्रमे की क्वीने वीनरेतांकी अलनामार्गे हैश्यमान्द्रे निजान की नारक्षमंत्रे समाय और शुप्रकाशोके प्रयान वैद्या बंदबाब वर्ष अधिमाणक वर्ष रहे । हैपश्यापनी निवासीके स्टबर्गेंड वाय-काम ही परिवासने पुष्ट मन्य सीटे-सीटे न्यकतान नवाच भी वे वी मनन निवासके सधीन में लिख्न क्यांगी मृत्युक्त बाद जल्दा समस्यक्त ही परे वे १ इसमें कार्रिकण वसम अवस्त्रीत अनुस दर्ग धोल गा। जालान्यो-की मुत्तुके कर्मण्य ही गाँहा ब्रह्मकर्ष को नहींचे असारकर स्थार राज्यपर व्यविकार करनेका जनता किया और व्यव्योक्तिकी ब्रह्मच्या और बनवर्गान १४४६ है में नारा नवा । वसके तुम भूगुन्तरमधीना पश्च

वास्तीय प्रविद्वार एक धीर

14

अगरेजोंने लिया। इस प्रकार कर्णाटकको इम छोटो-सो नवायीके आन्तरिक सगर्होंमें पहतेके द्वारा ही अँगरेजों और फ्रान्सीसियोका भारतको राजनोति-में सर्वप्रथम प्रवेदा और हस्तक्षेप हुआ। मफलताने अँगरेजोंको राज्य लिप्पा-को चत्तेजित किया। १७५१ ई० में फर्णाटकके उत्तराधिकार-युद्धके सिलमिलेमें क्लाइव-द्वारा अर्काटके सफल धेरे और विजयमे हो भारतमें अँगरेजो राज्यका सूत्रपात हुआ।

२ अवधकी नवाची-निजामके साथ हो, १७२४ ई० म नवादता नामक सरदारने अवच प्रान्तपर अधिकार करके अपनी स्वतः त्रना चोपित कर दी थी । अवधके नवाबोन पहले फैजाबादको और तदनन्तर लखनक को अपनी राजधानी बनाया । दिल्ली वादशाहीको अवनति, नादिरशाहके आक्रमण तथा देशको राजनैतिक अस्त-व्यस्ततासे लाम उठाकर मञादत्यां-के उत्तराधिकारो सप्टदरजगने, जो बादशाहका वजीर भी बन गया था, अपनी शक्ति पर्याप्त बढ़ा ली और अवध प्रान्तके अनेक छोटे-छोटे हिन्दू एव मुमलमान तालुफेदारोको अपने नियात्रणमें रखकर तथा उनकी सहा-यता-सहयोगसे अवधको नवायोको उत्तर भारतकी प्रधान शक्ति सन लिया। निजामके पौत्र ग्राजीवदीनके पश्चात् सफ़दरका उत्तराधिकारं अवचका नवाब गुजाउद्दीला भी दिल्लोका बजीर वन गया। इसीलिए वह और उसके कई उत्तराधिकारी नवाव-वज़ोर अवध भी कहलाते थे। अह मदबाह अन्दालीका वह सहयोगी और पक्षपाती या। पानीपतके तीस युद्ध (१७६१ ६०) में बह ससैन्य उपस्थित था किन्तु युद्धमें उसने की मिक्रय माग नहीं लिया और उसके समाप्त होते ही चुपकेस अपने राज्य लौट आया । १७५९ ई॰ में उसने शहजादे शाहआलमके माप विहारप भी बाक्रमण किया या किन्तु क्लाइयके नेतृत्वमें अँगरेजी सेनाके प्रतिरोध कारण विफल होकर लीट आया था। १७६४ ई० में यनसरके युद्धमें उस मीरकासिमको अगरेजॉके विरुद्ध सहायता की थी और उसे बादशाह शाह बालमकी भी स्वीकृति प्राप्त थी। फिन्तु इस युद्धमें अँगरेजोंको ही विज वाकर करने नाम किसा किसे बोर वार्य वर्ग असेरदेवंस ग्रह्मानों बोर्कियों विक्रिया स्था कर रिया। इसके स्वाधानकारी आवर्ष्ट्रीकाओं १७८१ हैं में अंतरेष वर्गनर गरित हैरितकों पूर्वत्वा सुंत्र वार्य रिया। वर्धा वर्षण्यी हेराके बालों कर्म और क्या क्रिक्स क्यांचे क्यांचे स्थान क्रिक्सा कर्म स्थान है त्यार क्यांचे गरित बारों प्रवों। वयानकी मीं बीर वार्याची मीं विश्वाके क्षांच सूचा। क्यांची संगति बार क्यांचा वया ब्या क्यांचाचे एतं बाराय-क्यांचा स्थानकी संगति बार क्यांचा वया ब्या क्यांचाचे एतं बाराय-क्यांचा

के प्रसिद्ध स्थाननांक्रें मिनांक्रे किए तांत्रिक्ष है जोर कल्यक नवार्त पर्य स्थाने नार्यों करते सक्यों प्रतिक्षि बात तक पत्ती आहें। बाके क्यापिकारी क्याप्तिकों स्थानक विश्वास तक्या स्थानक निकारी बीट निकार्त में । अधिया नवार्य वाचीवक्यांवासूची (८८६ ई) में बीच-क्याप्तिक निकार क्याप्तिक स्थानक स्थान क्याप्तिक प्रतिक्षा की स्थान क्याप्तिक निकारक स्थान क्याप्तिक स्थानकों तक्यों ति एक्यों स्थानकी

व. वयाक्रकी नवाबी-to t वं ने शोरकरूवे नुविरक्ती

भारतीय इतिहास एक धीर

floor and floors a

 खाँको वगालका सूबेदार नियुक्त किया था। विहार और उड़ीसांके प्रान्त भी शनै -शनै उसीकें अधिकारमें आ गये। यह एक योग्य शासक था। दिल्लोकी राजनीतिसे प्राय पृथक् हो रहकर उसने अपने सूवेका मली प्रकार बासन किया । उसका पुत्र और उत्तराधिकारी घुजाउद्दीन (१७२५-३९ ई०) अपने पितासे भी अधिक योग्य शासक था, वह सहिष्णु, उदार और दानशोल भी था। उसके वासनकालमें वगालने सूख शान्ति और समृद्धिका अनुभव किया । यह नवाच पक्षपातरहित और अत्यन्त न्याय-परायण भो था। उस कालमें ऐसा व्यक्ति अपवाद ही था। दिल्ली या शेप भारतको कुराजनीतिसे उमने कोई सम्पर्क नहीं रखा और यद्यपि वह एक सर्वया स्वतः य ज्ञासक हा या तयापि अपने-आपको दिल्ली बादशाहके अधीन और उसका सुवेदार हो मानता रहा और वार्षिक राज्यकर भी नियमित मेजता रहा। उसका पुत्र सरफ़राजसी (१७३९-४१ ई०) धार्मिक प्रवृत्तिका व्यक्ति तो धा किन्तु एक अयोग्य शासक था। उस समय उसका अधीनस्य विहारका नायव सूर्वेदार अलीवर्दीखाँ या जिमे गुजाउद्दीनने ही तरक्षकी देकर उस पदपर नियुक्त किया या और अपना प्रधान वजीर भी बनाया था।

बलीवर्दीखाँ बीर, सुयाग्य और महत्त्वाकाक्षी था। नादिरशाहके बाक्रमणका लाम उठाकर उसने अपने स्वामी सरफराजखाँक विरुद्ध विद्रोह कर दिया। मुद्धमें सरफराजखाँ मारा गया और अलोवर्दीखाँ (१७४१-५६ ई०) ने बगालके निहासनपर अधिकार कर लिया। भ्रष्ट दिल्ली दरवार और बादशाहकी घूस देकर उसने अपने लिए बगाल, विहार और उडीसाकी सूवेदारीका अधिकार-पत्र भी सहज ही प्राप्त कर लिया और उछतेसाकी सूवेदारीका अधिकार-पत्र भी सहज ही प्राप्त कर लिया और उछते स्वामि-द्रोह एव स्वामिवध-जैसे अपराधपर कोई प्रश्न न स्टा। तदनन्तर उसने एक पैसा भी राज्यकरके नामसे सम्राटको न भेजा और स्वतन्त्र नवावकी हैसियतसे राज्य किया। हिन्दू, मुसलमान, सभी प्रजा उससे सन्तुष्ट थो। मुश्चिदाबादको उसने अपनी राजधानी बनाया।

मार करनी प्रारश्य कर थी. और न्याप्त वर्ष तक बहु अग्रीके प्रनिधेवने मान गर । मन्त्रः १७५१ ई में बगरोंको बहीबा कान देवर यनने क्षमदे मार्नित जोत जो । बंबासकी चीचके ज्याने कर्जे ११ मार्च कारा प्रतिका देनेवा को जबने बचन दिया। जबकी बचने बारो मन नहीं में कि समने बंगामकं अवश्योको प्रथम दिया । ८ करकी सामुच्चे वृत्र क्रमोपारियो मृत्यू होनेपर प्रमुक्ते डाग स्तोतीत एवं वचवा बारूक स्वेहवायन वीहिय विराज्यीना (१४५६-५७ वें) स्वत्य द्वार । यह बीर योदा क्षे बडायय वा विन्तु अनुवर्त-होन बद्धत पुरुष था। जैनरेबीनर वर्षे शरणको ही अधिलात या। बनीदर्शितों को बरसी बनुसारि बन्दर निकारक देखें हुए का बीद बन्दरी श्रामिको बोमाने बाहर व बाने देखाचा किन्तु उदयो अन्तरे गरपाई ही क्लॉने बानी डिकेनची गुण वर की असरकी वे बच्चा वरने करें, क्षमके बारराधियोंको करण देने करे और १७१७ ई के बाही प्रस्तान क्ष्में को व्यानप्रीरक लोक्सार्य जिल्हा हुई की बनका की है। हर्यावन कार्य शाने समें निराय यह नव नहन व वर बना और बनने बन्हें यह बने बर्राने रोपा । बंगरेबॉर्ने नशायधे बाबा गायके रचकर यह दिया बीट क्षान्त्रच बहुच्यणाहम् कतार निवा मेंगा । नवामने अधिका होकर हार्मिन-श्वारणी क्षेत्रीयर अवकार कर विद्या । ब्राजन्तर श्रवस्तायर वाच हिया । महत्तनी बॉबरेंस सत्तरे मफर्नर और केलार्गत पास निकार । बंदान

बनके शास्त्रके शास्त्रकृषे ही। बस्टीने वनके राज्यपुर आजन्य और मंद

बिहार और वरीनाची सन्त सैंगरेंड शोधिनींटर भी श्रदानका समिवार ही नवा । मान्य करानार नहेंच्छे ही क्लाइन बीर बारबर नोर्पेसे क्त-पत्त-तेना क्रिक्ट बेनाबके जिल् एवाच्य हो वर्ष और क्लॉल बावस्तेपर नुषः वरिकार कर किया । भूने क्यारको नवलको प्रोप्तके अवसी मीर-बाहरकी, भी वर्धावरीक्षांका बालीई बीर वशतीश्वर क्य क्या चरचर

**

मिलाकर नथावके विषद्ध एक भीषण पड्यन्त्र रचा और सव तैयारी कर लेनेपर झूठा दोषारीपण करके नयावको युद्धके लिए ललकारा । १७५७ ई० में पलासीके भैदानमें दोनों दलोका भीषण युद्ध हुआ। नयावकी सेनाका बहुमाग जो भीरजाफ़र और उसके पुत्र मीरनके प्रभावमें था तमाशा ही देखता रहा। नवाब हार गया और बादी कर लिया गया, तदनन्तर मीरनने उसका वध कर डाला।

सिराजुदौलाके अन्तके साथ हो बगालकी स्वतन्त्र नवाबीका भी अन्त हो गया और इस विशाल समृद्ध देशपर बस्तुत अँगरेजोंका ही अधिकार हो गया । मीरजाफ़र नवाब बना । उसन मुक्तहस्तसे क्लाइप तथा झँगरेज कौ सिलके मेम्बरोको धन दिया। उसका अधिकार नाममात्रका ही था. वास्तविक शक्ति वलाइवके हायमें थी। वैसे भी यह नवाब निकम्मा, क्षयोग्य और अफीमची था। १७५९ ई० में शहजादा शाहआलम और नवाय वजीर अवधने उसकी अनीतिके लिए उसे दण्ड देनेके अभिप्रायसे बगालपर आक्रमण किया । नवायकी ओरसे सेना लेकर क्लाइव उनके विरुद्ध चला. इसपर वे विना लडे ही वापस लीट गये। मीरजाफरने प्रसन्न होकर मलाइवको ५-६ लाख रुपये वार्षिककी जागीर दे दी। किन्तु अँगरेजोंकी नीच-ससोटसे मीरनाफर भी तंग आ गया और उसने हचोंसे सहायता माँगो, किन्तु क्लाइवने उन्हें भी पराजित किया और उनसे हरजाना लिया। इघर नवाबका खजाना खाळी हो गया था, अँगरेजोंकी नित्य नयीन रुपयेकी मौगको वह परा नहीं कर सकता था। हिन्दू जमींदारोको सहायतासे हो सिराजका अन्त करनेमें क्लाइव सफल हुआ था और अब मोरनाफ़रके मी मुख्यत हिन्दू दरवारी उसके विरोधी एव विश्वासघाती थे। १७६० ई० में क्लाइबके इंग्लैण्ड रवाना होनेके थोडे समय परचात् ही कलकत्तेकी अँगरेज कौन्सिलने मीरजाफ़रको गद्दीस उतारकर उसके दामाद मोरक़ासिम-को नवाव बनाया ।

मीरकासिम वृद्धिमान्, योग्य, बीर और स्वतन्त्रता-प्रेमी या, किन्तु

भेरियोगी श्रीभागियोगी के पूर्व कर दिया था। वस्तर भीरी क स्मान्ति। (दो-द्वारा विते अनेवार्थ कर कारणांचा क्षेत्र के बहु के है। कारणां कारणां कर्तुंत्व की कारणांचे किरोदान कारणां पदा तो की मान्ति करायों दियोग किरा कोट कर विदेश कारणां विद्या किरा वस्त्र कारणां के की की दै के कुक्ते कर कार्य कारणां कारणांचा किरा करायों की की की की दिया। सीरपार्थ वृद्ध कार्याका किरा करायों की किरा करायों की की

शांपरम अरपोर क्यारणो पारकाणे संस्कृतर साह्य्य क्रिस क्या बक्तरोः मुझ्ये पर्यात्म होतर स्थाप स्थ्य ही क्या : १३५५ के में बीरायात वर क्या जीत क्यार पुत्र कामुश्य अर्थाद हुआ। स्थ्ये वर्ष क्यार्थ्यात्म होत्या साहय स्थाप क्यार्थ स्थाप का वर्ष साह जा प्रभाव का स्थाप साहयात्मा स्थाप का विद्यार सी एक्टियों के स्थापनी स्थापनी

वानुष्ठा सक्ता वाहराविकार, अथा वर्गनेय इस्तुरी दिन वी वरण कर विकास वर्गापार तानको पैदेश सावत व्यक्ति ही यदा है विकास वेपना विकास कर विकास के विकास के विकास कर विकास के वितास के विकास के विकास

नमूत्र प्रदेशकर व्यविष्ठार करने बन्ता राज्य बन्ता निया या । नर्मानामण मुरस्ताचार राजपुर, वरेली पीक्षोत्रीय व्यवि इतके प्रमुख नगर में । स्ट्रेडिंक नारण ही वह वरेण थी वृत्त्वस्थि सांचाल और स्टब्स्टर स्टेडर

446

बार्स्स,य इविहास पुत्र स्टि

कहलाता था, चहेलखण्ड कहलाने लगा । मराठोंके वाक्रमणोंसे परेशान होकर इनके सरदार नजीबुद्दोलाने अहमदशाह अन्दालोको आमन्त्रित किया था और पानीपतके युद्धमें १७६१ ई० में वह उसीकी ओरसे छडा था। अत तद्रपरान्त कुछ समयके लिए वह दिल्लीके बादशाका कार्यवाहक वन वैठा था। किन्तु अब्दालीके वापस जाते ही मराठोने रहेलोको फिर तग करना शुरू कर दिया। अतएव १७७२ ई० में बनारमकी मन्यिके अनुसार रुहेना नवाव हाफिज रहमसर्खांने अवधके नवावसे यह तय किया कि यदि मराठे रहेललण्डपर आक्रमण करेंगे तो नवाव उसकी रक्षा करेगा और बदलेमें ४० लाख रूपया पायेगा। अगले वर्ष जब मराठोने आक्रमण किया तो अवधके नवावने अँगरेजा सेनाकी मददसे उन्हें मार भगाया और रुहेलोंसे रुपया भौगा। उन्होने टाल-मटोल की। इसपर नवावने वारेन हैस्टिग्सको सहायतासे १७७४ ई० में मीरनकटराके युद्धमें रुहेलोंको वरी तरह पराजित किया । वृद्ध रुहेला वीर हाफिज रहमत युद्धमें मारा गया । लगभग धीस हजार रुहेले देशसे निर्वासित कर दिये गये। रहेलोंका रुहेनवण्ड राज्य समाप्त हो गया, और अववमें मिला लिया गया। कुछ रहेले और उनके सरदार इस देशमें फिर भी वच रहे, उन्हींमें-से एक रामपुरके सास-पासके प्रदेशका शासक वन वैठा । वही रामपुरके नवाबोंका पूर्वज था। किन्तु रामपुर प्रारम्मसे ही अँगरेजोंके सबीन एक छोटो-सी देशी रियासत-मात्र रहा।

दे मैस्रके नवाध—गगवाहिक प्राचीन गगराज्यकी परम्परामें कर्णाटकका मैस्र प्रदेश होग्रसल राज्यके और तदनन्तर विजयनगर माम्राज्यके अन्तर्गत रहा था। विजयनगरका पतन होनेपर इस प्रदेशके एक प्रान्तोय शासकने अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया। यह वश ओहेपर वश कहलाता है। १८वीं शती ई०वे मध्यमें ससकी राज्यशिक्त पुष्ट सीण हो रही थी और मन्त्री नजराज ही सर्वे-सर्वा हो रहा था। उसने राज्यके एक मुसलमान कर्मचारीके हैंदरअली नामक पुत्रकी योग्यता,

चपुरता एवं बुक्र-नैपृत्वके प्रवासित होनर १७५५ ई. में बन्ने क्रिडीनकमा श्रीतदार बना विशा । तत्त्वतार उसे जनकोरणी बालीर वे ची नहीं और राज्यका अकार येकापति भी सन्तर विकासना । १७६१ ई में साज्यका मनमन बाबा जान क्यांत्रे श्रविकारमें ही बना बीट यह मध्ये राज्यांत्री बोरते बार्ज्य राज्यका हो यातन करने बना । फिल् बसीया एक अनुबर साधीराम नामका प्राप्तान बक्का विरोधी ही शना और क्यके समुप्ति

बाव विकार बत्तके बहुतवा बहुबल करने बना । १७६६ हैं भी हैराने मानोरतका स्तम किया जीर को एक वितरेने शास्त्र बागी करने बाज दिशा - वनी क्य क्यने केरपुर वायक अक्रिक स्थापारिक अवस्थर विजय करके बरिवार पर किया। १७६६ हैं। में राजाओं मृत्यु हो वाले-पर असने राजपहणोंको को कुछ । उक्तने राजपी पुनवी आसमापके लिए विद्यारमपर बैद्धा दिया और स्थाने चामका क्षरें-कार्य हो नया । बार क्षाने निराम बोर मरावंकि काथ पूरनीविक वन्ति निराह करके

बरसे प्रतिका प्रकार करना शुरू विचार १७६० ई. में बक्की बच

बबके सरवादी किन निवानकी बंजुका रेमाको बंधरेजीन क्रान्तित किना फिल्मु १७६९ है. में ही हुरश्यको अंबरेयकि अक्टाबर्क क्रिकेटर यह दौरा सीर बंदने बाई ब्रांस क्रोनर विचय किया विचने स्थानार मेलीने एक हुमरेको सहानदा करनेका अथन दिया तथा विदेश अरेकोंको क्रीक्ष विश फिल्टु रेक रे हैं. में बच मधार्थि हैदध्यक्षीके सामगर बाजना दिन्ही बी श्रीपरेशीने नामके समुकार अस्तरे फोर्ड नहरूका न की १९९९ नह बक्ता चीर यनु हो नशा। १७५८ हैं में चानके बान कुट किए बानेके भारच सेन्द्रेजीने नागीनर सना शामस सामानार स्टब्स सामानार कर लिया, प्रमुपे हैंपरकको सीए समित्र शिव गुगा । निवास बोए नएसीके

शांच बचने जॉनरेडकि विदश्च मैंगी-मनित कर थी । स्थानको संदरेजीने चीव किया संगारि १ ८ हैं में हैंशरक्षणे जानी धारवानी बीरेलगून-वे वेना केक्ट पता जीर तको क्यांत्रकार मात्रमा कर रिकारीर जारबीच इतिहास । एक घरि वहीं भरपेट लूट-मार की। अँगरेजींके हायकी कटपुतली कर्णाटव का नवाब तो अपन या ही। रहाकि लिए बायो अँगरेजी रोना और उसके नायक कर्नल लेलीकी हैदरअलीन काट छाला और राजधानी अर्काटपर भी अधिकार कर लिया। किन्तु १७८१ ई० में अँगरेजोंने सर आयर कूटके नेतृत्वमें पोटोंनोवाके युदमें उसे पराजित किया। मराठोंने भो उसकी कोई मदद नहीं की। वह अकेला ही अँगरेजोंके साथ युद्ध करता रहा और उसने कई बार उहें पराजित भी किया। १७८२ ई० में हैदरअलोवी मृत्यु हो गयी।

किन्तु उसके पत्र और उत्तराधिकारी टीपू सुलतानने युद्ध जारी रक्षा। उसने भी कई बार अँगरेजोको पराजित किया और स्वय भी पराजित हुआ। अन्तत १७८४ ई० में दोनों पक्षोंके मीच मंगलीरकी सन्धि हुई जिसके अनुमार जो स्थिति युद्धके पूर्व थी वही हो गयो। १७८६ ई॰ में पेशवा और निजाम टोप्के विरुद्ध मिल गये और उन्होंने अगले वर्ष उसे पराजित करके एक जिला और ३० लाल रुपये उससे वसूल कर लिये। अँगरेज भी उनके साथ ही मिल गये। इसपर टीपू खुब्ध हुआ और फान्स तथा अफ़ग़ानिस्तानको उसने अपने दूत भेजे । अँगरेजोंके परम दावको चन विदेशियोंकी सहायतासे यह अँगरेजोंको भारतसे निकाल बाहर करना चाहता या। १७८९ ६० में उसने अगरेजोंसे सरक्षण प्राप्त ट्रावन्कोर राज्य-पर बाक्रमण कर दिया भीर लूट-मार मचायी। अब कॅंगरेजोके साथ खुलायुद्ध छिंड गया, मराठे और निजाम भो उन्होंके सहायक ये। स्वयं गदर्नर जनरल कार्नवालिसमे युद्धका नेतृत्य किया । कई युद्ध हुए किन्तु प्रत्येक वार टीपूने ही उन्हें पराजित किया, किन्तु अन्तिम युद्धमें वह बुरी तरह पराजित हुआ । १७९२ ई० में श्रीरंगपट्टनकी सिंघ हो गयी जिसके अनुसार उसक राज्यका लगभग आघा भाग, साढ़े तीन करोह स्पये और वचन पालनके आरवासन रूप उसके दी पुत्र अँगरेजोको प्राप्त हुए। टीप इस अपमानजनक सन्धिको न मूल सका। अँगरेजोंके विरुद्ध वह नैपोलियनसे भी नम-न्याद्या द्वारा पूर्वा । मेरोसीके शरीवरण करनेतर स्वर्ण केंद्र इस्टम्सर (स्वा) एत्यर १७६९ हैं में बाद वेकेसकोरे टोव्यर स्वाप्तण कर रिस्प । रिव्यर करी कीरोजिंग अब बनुस्त है पर । टोव्यरे बसी मीराज बीर शादकों बाद मृत्य किया । अस्यवर्णके मुद्राने परिस्त होकर बसी पीरल्यहानों बादम कीर को भी मुद्राने वे प्रतिकार बसी वित्त करते किया हाति मुद्राने किया को सामी अपनान्यक सी कि करने सरवीकार कर विता बीर कियारी दोनाके मीने हो सीराज पूर्वक स्वारा हुवा नाय स्वारा । टोव्येके विवाद प्रत्यक्षी अपनान्यक्री

सीर वचनो व्यापनाके थिए। शिनुके ही ज्युर जन्मी नृत्तिरासी नन्ती त्युन्त कर दिया। त्युन्तर त्याद शिनु राज्य वर्तनात एवं पाव आया है। शैनुके नृत्तिरी रेज्या नियान कर यो गयी। हैराजरी क्षेत्रकारी केश्वर की हुए वो बायला नृतिशान, जन्मकारी व्यापन करनेपाल नेपानों न्युर राज्योतिष्ठा, कुबार केशसी और सोर गोज

र्वतृत्त्वे होर्ड एरस्को पुराने बोवेवर संबंधे एक राजधुनारको बॉप विदा

था। कांध्री न्यापालीक जोती दीन की । यह तमारक्का गरेस जोत पुक्रम वार्थित होता हिन्दू जोर पुरुषमार्थित वीच यो। यह मेन व्यक्ति करात मां शेनू में बच्चा करात मां शेनू में बच्चा करात मां शेनू में बच्चा वार्या करात मां शेनू में बच्चा वार्या करात में में बच्चा प्रवादी करात में में बच्चा प्रवादी करात में में बच्चा वार्या मां होता करात में में बच्चा वार्या मां हो बच्चे में हिम्म करात बेर्पा देश करात में बच्चा वार्या में स्थाप करात में बच्चा वार्या में में में बच्चा वार्या में बच्चा में मार्या में बच्चा वार्या में बच्चा वार्या में बच्चा वार्या में बच्चा वार्या में बच्चा में मार्या क्ष्म वार्या में बच्चा में मार्या क्ष्म वार्या में बच्चा वार्या में बच्चा में मार्या कर्या में में बच्चा में मार्या कर्या में में बच्चा में मार्या क्ष्म वार्या में बच्चा में मार्या क्ष्म में मार्या क्ष्म में मार्या कर्या में में बच्चा में मार्या क्ष्म में मार्य क्ष्म में मार्या क्ष्म में मार्या क्ष्म में मार्या क्ष्म में मार्या में मार्य में मार्या में मार्या में मार्य में मार्या में मार्य में मार्य में मार्य में मार्य मार्य में मार्य मा

अत्यन्त वीर एव साहसी घोडा होते हुए भी कुणल सेनानी नहीं था और कुछ अदूरदर्शी भी था। सबसे बडा अपराघ इन पित्रा-पुत्रका यहां था कि वे अँगरेखाको नीति और उनके उत्तरोत्तर शिवन-सबर्धनमें बादक थे। विन्तु साथ ही य एकमात्र ऐसे नरेश थे जा प्रारम्भसे अन्त तक स्वतः त्र हो रहे।

चपरोबत प्रमुख मुसलमान पिब्तियों कि लिरियत कुछ आप छोटे-छोटे मुसलमान नवाब भी भारतमें यत्र-तत्र उत्तर्ग हो रहे थे, कुछ पहलेसे चले आ रहे थे, कुछ इसी कालमें लूट-मारके वलपर बने और पुछ कैंगरेजानी इपासे अस्तिन्वमें आये। रामपूर, भाषाल, टाक और जूनागढ़के नवाब, सिन्यके अभीर, लुटेरे विण्डारी मरदार इत्यादि इसी प्रकारक गीण गुसलमानी राज्य थे। य प्राय सब सह्य हो और प्रथम अवसरमें हो झैंगरेजाके अपीन होते चले गये।

राजपूत राजे —इस कालमें राजस्थानके प्रमूप राजपूत राज्य उदय-पुर, जोघपुर, जमपुर, जैसलमेर और घोकानेर थे। औरगजेबके समयमें राणा राजसिंहने समस्त राजस्थानका नेतृत्व किया था और मुगुल मम्राद्स सफल लोहा लिया था। उनको मृत्युके उपरान्त सग्रामिंह दितीय राणा हुआ। १८वी शतीके पूर्वायमें वह ही मैबाइका महत्त्वपूर्ण राणा था यद्यपि राजस्थानका नेतृत्व अब मैबाइके हाथमें नहीं रहा था।

जोषपुरके राठौर महाराज जसव तिमहकी मृत्युके थादमे ही लगमग दे० वर्ष तक मुगलोंके विद्रोही रहे, किन्तु १७०९ ६० में वहादुरसाहने महाराज अजीवसिंहका राज्याधिकार स्वीकार करके और उन्हें शाही-सेवामें उच्च पदपर नियुक्त करके राठौरोंको मन्तुष्ट कर लिया। अजीविस्ह वीर, चतुर और फुधल राजनीतिज्ञ था। फरखिंसयरके समयमें कुछ दिन दिल्ली-में रहकर उसने वादशाहीका सवालन किया और उस कालमें उसके विश्वस्त जैन दीवान रमुनाय भण्डारीने मारवाड राज्यका कुशलताके साथ सासन किया। अजीवसिंहके एक अप जैनमत्री खिमसी भण्डारीके प्रयत्नसे हो

ब्रान्तिकारी विरत्ने व्यक्तिया सन्तिया सीवत्या त्यान दिवा व्या । स्वयनगर चारतारने अमेर्निनरको मुखरान और अवर्तरका सुनेशार निमुक्त किया । न्द्रान्दरगादके वनवने भी बजीतीवर अन प्रान्तका मुद्देशर दश । क्वके कारान्त क्षमा बनराविकारी बोक्ता-गरेक वक्तरित थी हैंत्री में १ देक्षी न सम्बद्धान्त्रका मुदेशार हात स्वतीनामित्रकी प्रतित्रभीर प्रवाद बारपारीरर परवारचे वृत्रं बालाग्यूष्टे वर्णान वय वया वा व मन्त्रेर

बोर नुब्रश्चन्द्रो बुदेशारीके कारण सबसे राज्यको सार्वत बोर बर्ज़्य मी बारी बर बनी था । बहेन्दरे बचनवान बन्दर बचने बन्दाने रूपे हैं। बन्दे बार अमनविद्यों वांचा और बनाव की बाद बैना ही प्रा र वरपुरवे इव कामने बराश्च क्याई व्यक्तिया राग्य या । स्त्र मी बहा बोच्य चपुर विद्यार्थिक इसं प्रधारी वरेख का । सरहर नगर बारतीया निर्माणका और क्षेत्र बर्जाहरू अन्तेया वायान और इसे ही है।

विविध बार्राटरकरो की एक पाताने ब्रोतकारण दिया। करोतकारिकार रहे रियोग से म च्या बोट नक्षण कार्र एकाओं व्यक्तिय पर्वे ग्रेस का किए काले बनपूर, रिक्ती बर्जन गारवक जार्र वर्ष स्वर्गने क्वर-अन्तर स प्रावसीयर बन्तावे थे । रिल्ला बरवारने इक्का अन्तरिक ताल और अनल का । इस प्रकार सौरंगरीयका मृत्युक्ते साथ समायक तीक-मानीक वर्ग प्रस्ति कररोश्य बरेकीरे अधीरातः जांश वर्ष प्रकारके कारण राज्यका वर्ष पर्याना बनक सर्वता नन नया था । एक्य बंशावरिष्ट राह्मेर आगेर्जन्द मोर बचाई सर्गातहर्ते. परस्पर सेल और मैची थी चुटी ओर इन दोर्गीन निकर सह गीवना थी वशाशा या कि अपने श्रंतरन प्रजार हुएँ बच्चे बारबाड़ोको कोई दिन्यू-विशाओं वास व अपने हैं वे बीर बावै-कार्य मुक्क

मानोंको पराब्ध करके नम्बन बना को देखने दिन्द्र शास्त्र-प्रतिनामा कुरस्तान करेंगे । इकने कर्नुं आरी और गुलेकॉना मां बहुमंत्र नाम मां, और नेवसानीको निकालका को अध्यक्ष दिशा बढा । शरिकन बंबाब और

नवनके स्वयन्त्र हो। वालेके बालाञ्चला जो हुए काल हो पहाचा गई जालीय इधिताच एक धीर इनकी योजनामें सहायक हो था अठ उसे रोकनेका द्वाहों कोई प्रयत्न नहीं किया। नादिरशाह-द्वारा दिल्लीकी भीषण ट्वाह-मारके अवसरपर मी ये अपनी राजधानियामें बैठे तमाशा देखते रहें। किन्तु देशी बीच राणा सप्रामसिंह, महाराज अजीत मिह तथा बीर छत्रसालकी मृत्यु हो चुकी थी। राणाणा उत्तराधिकारी अयाग्य था किन्तु अजीतिसिंहका पुत्र अभयसिंह अपने पिठाका हो अनुमर्ता था। १७४३ ई० मे जयमिंहकी और १७४९ ई० में अमयसिंहको मृत्यु हो जानसे राजपूत पुनरत्यानको वह महान् योजना स्थल बनकर रह गयो।

हिन्द्रपदपातनाहीका समर्थक पेशवा बाजीराव प्रयम भी १७४० ई० में मर चुका था । उपरोक्त राजपूत नरेशोंक उत्तराधिकारी अत्यन्त अयोग्य और नियम्मे थे। एक ओर दिल्लीका बादशाह दूत वेगके साथ बल, धन और अधिकार होत होता जा रहा या और दूसरो और दक्षिणके मराठाने उत्तरापयके विभिन्न भागोंपर लुटेरे आक्रमण प्रारम्भ कर दिये थे। अब जन्होंने इन राजपूत राज्योंको भी न बख्शा। उनके साथ ही छुटेरे पिण्डारी सरदाराने भी राजपूत राज्याको लूटना-श्वसीटना शुरू कर दिया था। भागे दिनके इन सकटोने राजाओका नैतिक यल और अधिक कमजोर कर दिया। अन्त कलह और गृहयुद्ध आम हो गय। ये उत्तराधिकारके प्रश्तो एवं विवाह-मम्बन्धो आदि छाटी-छाटी बातोंके लिए परस्पर एक-दूसरेसे मी लड़ने लगे और मराठे उन झगडोमे हस्तक्षेप करने अपना उल्लु सीघा करने लगे। जैसा कि कनल टांडन अपने प्रसिद्ध 'राजस्थान'में लिखा है "जाति-विरोपका पतन स्वय उस जातिके द्वारा हो होता है। जाति-गौरवके सुयको अस्त करनके लिए यदि वह जाति स्वय आगे न बदे तो किसी अन्य जातिके द्वारा यह कार्य कभी भी सिद्ध नहीं हो सकता । जो महाशक्ति जातिकी प्राण-प्रतिष्टा कर देती है, जातिको नस-नसमें अपना अध्यर्थ तेज भर देती है उस महाशक्तिका जिस दिनसे जातिने अपमान किया और आल्स्य एव विला-सिसाके बधीमृत होकर जातीय भ्रातृमायकी जडमें कुठारापात किया उसी गानक मूँहरुके पुरोदिशमें नाशिक्याणे नवा थे। वेतन वार्निक निवेचने बन्दा डोफर क्ली - राज्यके बनेब जैन-मन्दिर और शींतवी गुवरा बार्मी वैतिश्रीका बोर अपनामः विना जीर करूपर नर्वकर अरहाकार रिमे ग्रेकी र्ष डीक्टबस्य-मेंने जनावन विज्ञान संस्कृती सैंबी डीलंके बारण ही हातीके पैरोंचने हुच्छनाचर वरशा शामा । समात राज्यसम्बद्धे क्रियं क्या करना मञ्जूत सी बीर रेपके शल्याचीन और वैद्यिक वामकी ही गरिवायक है है नदेरे मराठी और रिज्हारियोंके जिल्लो कार्य क्व बहवडीने इन राज्यी-की कार तीर हो की । कारा सर्क्य धानन सम्प्रतिकत हो वना का राजा क्रीय और सबके फालक करवार वालगी - निकारी और गांवर का मने में 1 राजस्तान निःशस्य वर्षे निम्मन्त हो बंदा था। देनी बोनमीन विवर्तिये वह अंबरेवाँके अपना गरब १२त बद्धाना की बचनत राज्यत राज्यत मोने अरबान पराचीनता जानी ग्रीपपणी तरपक करबंदा तारि दिनी पी बारको परकार व करके कहक और सहज ही क्लके बंदकनमें बारेकना मानकर बद्धम कर किया । इस प्रकार १९औं यहाँके आरम्मने मी सम्बुद्ध चीपनर क्यार्ट, बीपानेट, बैनकोट, पोछ वृद्ध समयर बाहि राजनुतानेके क्षेद्रे-वर्ष राज्यतः राज्य वीवदेवीको पराचीनताचे वर्तनानकाम-नर्वन्त की हिंसे बुरमित रहे गर्फ माने। मुनीवनगरने बीर क्रवस्त्व १ ३३६ में बारगी कृत्यु गर्मेच तिहोड्डी क्या पदा किन्यु बनके कच्छानिकारी निर्वेश वर्षे मधीन रहे, वतः भगके भीरका जावि तथा सन्य प्रदेशीके इनै-बिने राजनून

आर-वागरा एवं रिक्तीय वच्या नव्यके शास-राष वारींकी पनी बल्ती की बोरंगअपने इनकों १६६९ हैं में नोकल बाटके नेतृत्वने दत

भारतीय इतिहास एक हरि

रिस्पे बढ़ बाब्रि पतनके बलवामां चाँतती वची बात्री हैं।" जिल बनन १७६१ है में मारतकी तथी अवान राज्यश्रास्तिको पानीकाने क्षेत्रमें मीनन मुखने श्रीमन की बरनुरने साकि राजा। नावसंबद्धके स्नाम कियारी

राज्योंको को वही कीन हुई

या और वाही फ़ीनदारको भी मार दिया घा । कठिनतासे धौरगजेवने इस विद्रोहका दमन किया था। १६८८ ई०में राजारामके नेतृत्वमें बाट फिर मडक चठे और १६९१ ई० में उन्होंने सिवन्दरेमें स्वय अकबरके मकुबरे और शवका लूटा । सम्राट दक्षिणमें था और उनवे सरदार कठिनतासे इस बिद्रोहका दमन कर पाये। १७०५-०७ ई०में भज्जा जाटके नेतृत्यमें से फिर महक उठे । यहादुरधाहने भज्जाक पुत्र चूत्रामनका बाहो-मेवामें नियुक्त करके जाटोंको सन्तुष्ट किया किन्तु फर्रेलसियर उससे रुप्ट हो गया अन चुडामनने थून नामक स्थानमे एक सुरृढ़ दुर्ग वनावर शिवनमंख्य करना प्रारम्म कर दिया । बादताहन १७१६ई०में मवाई जयसिंहको उसका दमन गरनेके लिए भेजा । राजाने यूनपर अधिकार कर लिया किन्तु बादशाहको उसके स्राप दरवारियोन जाटांके साथ सुलह कर छेनका परामदा दिया। सचि जाटांके अनुक्ल थी और वे राजधानियो आगरा एवं दिल्लोंके निकट-वर्ती प्रदेशमें ही एक भवप्रद कावित वन गय । मुहम्मदशाहके समयमें चुडा-मनके पुत्रोंने फिर विद्रोह किया और जब शाहीमेना उनके दमनके लिए मेजी गयी तो उन्हान धूनके दुगमें शरण ली। किन्तु चूडामनका भतीजा बदन सिंह बादशाहम मिल गया और उसने थूनपर शाहीसेनाका अधिनार होनमें सहायता दी। अत बादशाहने उसे हो जाटोंका राजा बना दिया। उसके दत्तक पुत्र और उत्तराधिकारी सूरजमलने जाटोंकी धिवतका चरम शिक्षरपर पहुँचा दिया। उसन अपने राज्यको सुसंगठित एय शक्तिशाली बना लिया और यूनके अतिरिवन डीग, कुम्भेर, वर तथा भरतपुरमें सुदृढ़ दुर्ग निर्माण किये। भरतपुरको उसने अपनी राजधानी बनायी। उसने अपनी एक सवल घुडसवार सेना भी तैयार कर ली। नादिरधाहके आक्रमण और उससे चत्पन्न स्थितिसे चसने पूरा लाम उठाया था। किन्तु अब मराठे और बहमदशाह बन्दाली मी उसके राज्यपर बाक्रमण करने लगे। ऐसे बबसरो-पर वह अपने सुरक्षित दुर्गों में बैठकर रायुआको चुनौती देता था। १७५७ ई० में अन्दालीने जब मयुरापर उस नगरको लूटनेके लिए घावा किया तो

मूरजनको मीनून स्थानंतर क्षेत्रके लाच जोचम बुझ किया । स्वर्ति यह स्थानांच्या पीडे इटानेने तथनं नहीं हुना तथानि देने तीन विरोक्तन नुमा-स्था स्वरूपिकी मात्तने हमने पूर्व कमी गुड़ी स्थान पड़ा मा । १ ११ के गुम्मीन्तर्क मुख्ये गुस्तकात कमिन स्थान्नेनी त्यानुकानी निष्क स्था पा हिन्यू समेने नित्य पहाराओं विशित्याओं वर्तिय बुझमें समेने में न्येरे मात मही निया । स्थानस्थल स्थानांकी बालिय त्यान पुरस्तक साथ में स्थात सारवारण वर्तीस्थ व्यवस्थानी शिलू पंजा हो स्थान मा सम्पर्ध स्थात सारवारण वर्तीस्थ व्यवस्थानी शिलू पंजा हो स्थान मा सम्पर्ध

हैं में ही क्यों क्रवरके विकेश को अधिकार कर निया । फिलू मारी-के वर्गानके १७६१ हैं में दिल्ली सरकारके क्यें-वर्श नवीवर्शना स्वीत-

के बात एक नुवसे प्रावनामधी मुख ही वर्ध । बाके पूर वर्ष वसर्धावकारी कार्याविकार भोगव मी तुम्मी प्राा मार्मावस्थित मिर्मावस्था यह विवास पहुर, रिन्तु रेक्टर हैं में कार्य बाद कर किए में स्थानी त्रावना कार्य कार्य कर कार्य कर की साराय बाद कीए की की मार्में की पार कार्य कार्य कार्य कर है। मार्में साराय बाद कीए की मार्में के स्थानित कार्य की एक स्थान है। स्थान साराय बाद की की मार्में के स्थान की स्थान है के बाद कर है। स्थान साराय कार्य की मार्में के स्थान की स्थान की स्थान की स्थान किया। १८ ५ ई में मेरेक केमार्गी आई किसी पार प्रावस्था की स्थान साराय कर की निर्देशिय के साराय कर की स्थान की स्थान

रिक्का—विश्वनकि मन्त्रक पुत्र त्याक (१४९०-१५१९ वें) वे । समूक्षि पैताको सर्दिका एवं काम्याप्तवान निर्मुक एकेक्टरमधि बारान्यास्त्र प्रभार विभाव का । नवास्तित वारान्यास्त्र प्रभाव स्वाप्तकान्यः बहु एक कुत्राप्तवान्याः व विभाननार्योक्षय एकार्यक्षेत्र में कर्यक्ष वे । कर्यक शिष्य अगदको उन्होंने अपना उत्तराधिकारी नियत किया। गुरु अगद (१५३९-५२ ई०) ने सिक्कों (गुरुके शिष्यों) को एक धार्मिक सम्प्रदायके रूपमें सगठिन किया और उन्होंने गुरुमुखों लिपिका भो आविष्कार किया बताया जाता है। उनके उत्तराधिकारी अमरदास (१५५२-७४ ई०) के समय सिक्झधर्मको और उन्नति हुई तया चौथे गुरु रामदास (१५७४-८१-ई०) ने सम्नाट् अक्धरके आध्य एव सहायतासे अमृतसर स्थानको प्राप्त करके उस नगरको, उमके प्रसिद्ध गुरुद्वारेको तथा वहाँ सिक्ख धमके केन्द्रको नींव डालो। तदनन्तर गुरुका पद वश-परम्परागत हो गया।

रामदासके पुत्र गुरु अजुन (१५८१-१६०६ ई०) ने अपने अनुयायि-योंके सगठनको और अधिक व्यवस्थित किया और वह उनसे नियमित दान-दक्षिणा ग्रहण करने लगे। इस प्रकार जनकी शक्ति और घन काफी वढ गया। शहजादे खुसरूका पक्ष लेनेके कारण जहाँगीरने उनको मृत्युदण्ड दिया। १६०४ ई० में ग्रंथ साहियके सकलनका श्रेय भी इसी गुरुको है। चनके पुत्र हरगोबिन्द (१६०६-६८ई०) ने सिक्बोंका सैनिक सगठन किया । उन्होंने एक छोटी-सी अध्वारोही सेना भी बना छी और स्वयं भी तलवार प्रहण की । अनुयायियों की संख्या भी बढ़ी। अब सिक्ख एक राजनीतिक धितका रूप लेने लगे । उनके उपरान्त उनका पुत्र हरराय (१६३८-६० ई०) गुरु हुआ । वह णान्तिप्रिय था, विन्तु वह दाराशिकोहका पक्षपाती या बत उसे अपने पुत्र रामरायको आस्वासनके रूपमें बौरगजेबके सिपर्द करना पडा । हररायके बाद उसका द्वितीय पुत्र हरिकशन (१६६०-६४ ई०) गुरु हुआ और तदनन्तर हरगोनिन्दका द्वितीय पुत्र तेग्रवहाद्र (१६६४-७५ ६०) सिम्बोंका नर्वा गुरु हुआ। विद्रोहके स-देहमें बौरगजेवने गुरको दिल्ली वुलाया किन्तु मिर्जा राजा जयसिंहके पुत्र कुमार रामसिंहकी सहायतासे वह बहुत समय तक पटना, आसाम सादिम सुरक्षित रहे और फिर पगाब आये । वहाँ आते ही सम्राट्ने उन्हें पकडवा मँगाया और बडी क्रूरताके साथ उनका प्राणान्त करा दिया । दिल्ली कारेंके पूर्व की कारीन करने कारे पूर्व मा उन्हों उन्हों करना कारा विशेषी है दूसरे के दिखा का पूर्व के निकास कर है है के अपना की है किस्सी के अधिक की

दर्भ दूर में अपने विकास तथ्ये व्यव रिट अमार प्रदेश प्रदेश रूपी प्रदेश मात्र भी जेता नाम प्रकार प्रदेश प्रदेश कर मात्र रूपी प्रदेश मात्र के प्रदेश प्रदेश प्रदेश प्रदेश प्रदेश मात्र प्रदेश रूपी प्रदेश मात्र के प्रकार किंद्र प्रदेश प्रदेश मात्र प्रदेश मात्र प्रदेश किंद्र प्रदेश मात्र प्रदेश किंद्र प्रदेश मात्र प्रदेश के प्रदेश मात्र प्रदेश के प्र

रिर्देशी वर्ग है - जनगर क्रक्रांच्या बाहारस बार्गासके प्रीत्यानं वर्षेत्रे रीती पुराता तस सर्वारातः । क्रांग्यी क्रमूतन तसीतर्गाति वर्गागी सारका पक्ष निर्मा क्षेत्र पुत्रके काम ।स्वयूक्तके निर्माण प्रीत

करी गा करणमां क्रमी एन्सा कर सा जा क्या भो इंग्यी-रियारी क्षी गा । एवंदे क्यां किया क्या की स्थित दिल्लाकृत जा के कृत क्षारी दिला क्ष्मी की जात करेंद्र करियादी क्ष्मीयो व्यवस्थाने रियारी के दीला काले विकास करेंद्र कर वाचे की एवंद्र रियारी के दीला काले विकास करेंद्र कर की को एवंद्र रियारी के दीला काले कि विकास कर की कालेंद्र के की कालेंद्र की कालेंद्र की की स्थानी

होर पुरास्त्रभोर प्राव्युप्त वायाचार विव । केनापा पूर्वप्रवृत्ते वर्षे स्वाप्त प्रदेश वर्षे के स्वस्ता प्रदेश क्षेत्र का मान वार जिल्लु क्षानुष्त्रभारे स्वस्त है एए हैं के पर प्रकार का मीर व्यक्त गार्वप्रानिद्वित करवार आव गार्व्या का मान करवा का मान करवा का मान करवा का मान करवा है।

चिन्नु नर्मरायाद् जोर बहुबरशाह अन्यामीके आक्रमचीने न्याप निकारिये ओर स्थल- देवेका विधीयी अवस्तवाही नदी मित्रा । देवन्दर्श हो ही

माराधि इधिक्रम । एक पी

पंजायसे मुग्रहोका अधिकार हो उठ गया। इससे सिक्योंने लाम उठाया और अपनी दाकित बढ़ायो। अन्दालोकी सेनाओका ये निरन्तर परेशान करत रहे। पानीपतक युद्धके बाद अन्दालोने उनका दमन करनका प्रयस्त किया और १७६२ ई० में लुधियानाक युद्धम उहे पराजित गरन १२००० मिक्याका संहार किया, किन्तु फिर भो उनका आत न हुआ और ये उन दूने वेगस घरावर परेशान गरत रहे। आतत १७६७ ई० में अव्हालीन अपना असमर्थता स्वीकार पर की और फिर उन्हें न छेडा।

अव निक्यान सुयोग्य युद्ध-नताओं मन्त्रवसे बारह मिम्ला (सैनिक दला) में विभाजिन निक्यदल-द्वारा बहुमाग पंजाबपर अपना अधिकार जमा लिया। यह एक प्रवारका धम-सैनिक राज्यसग था। किन्तु अब बाहरी मनुकी अनुपस्थितिमे य मिम्लें परस्पर ही लहन रुगी, और एक प्रकारकी अराजकता एव अञ्चवस्था उरपन्न हा गयी। इन्ही मिम्लोमें से एक सरदार महासिह था। १७९० ई० में उसका मृत्यु हो गयी।

उत्तक पुत्र रणजीतिनिहन जिमका जाम १७८० ई० में हुआ था, १७ दपकी आपूमे ही अपनी पैतृक निम्लका नेतृस्व ग्रहणकर तिया और छाटे-मोटे पुदा-द्वारा अपनी ग्रावित बढानी प्रारम्भ का । १७९८ ई० में जब अब्दालीक पीते काबुलके अमीर जमनशाहने पजायपर आक्रमण किया ता रणजातिसिंह उपसा मिल गया। जमनशाह तो विफल प्रयत्म होकर लीट गया किन्तु इन अवसरम लाम उठावर रणजीतिसिंहन १७९९ ई० में उसक निक्ष्य अधिकारियोंसे उस प्रदेशको छान लिया। १८०५ ई० में उपन अमृत्यरप्रमी अधिकार कर लिया। लाहीरका अपनी राजधानी बनाकर उसने अब अपनी शिवतका विस्तार करना शुरू किया। इसकायम उसकी सास सदाकौर, जा स्वय एक मिस्लको स्वामिनी थी, तथा मिन फ़तहिस्त, जा एक अन्य मिस्लका स्वामी था, उमके प्रधान सहायक हुए। इस प्रवार राने काने प्रधावक समस्त सिक्स सरदारा और मिस्लोंको अधीन करके १८२३ ई० में रणजीत सिहन सम्पूर्ण प्रावित्र अपना राज्य जमा लिया। फ़तहिस्त तो उसका

बर बर्च मन्द अनुवर ही वय वया या और मधारीहको अनमें बन्दी हुं। वे बान दिया । शर्मा भीर अनुगांके सरक्षांत्रणों भी कर सार्व राजाने विनास चारण का और उन अदेवपर तान नार करने बाक्यक मी निमा किन्तु इस समय अँवरंड-सर्वित क्रांतर ब्रहेशने अव जो और *क्रांस* वर्षे बनमानके इस बार न बहुप दिया १८ ९ई में हो अनुनगरको नन्निनाग जनने बैना न कानका जैनरेशको क्यम वे दिशा वा । किन्तु छप गाँउ बनाम श्रीवाचने मुन्ताम तक अधिकार कर निया और बतार-नियमने कोशह क्षान हंक वेगावार्याची वेगाववात्रमा नेयावर और नार्नारणे विका कार्य क्षा अञ्चलनेत्रे क्षेत्रकर सस्ये राज्यों निया निया शिक्षको जी समने निजय करना पाठा दिव्यु निक्यके क्रदोरीने जी १८११ है में अंगरेफॉली जारीलका और लंदबल स्टीमार कर लिया वा अय-जैपरेश दक्षे एक कारणे वायक हुए । तथारि सैपरने केवर धन्त्रत्र हुए श्रीर नवनिष्णत्वे केवर नित्यको बीमा वर्गना रणबोद्धीमहरा निरूप मुख्येत स्वं प्रशिक्षणी यात्र चा । १८१३ हैं में बक्के बॉट १८२३ हैं में बोद्येराके नुसर्वे कर्मने काबुकके बाह्यालाकी नुस्ते बरहा पराजित रिजा का । १८६ है में अमीर योग्त प्रत्याप मी विक्लीय ब्रमस्य और

प्रपुत्र । साक यो सीम्या वृष्टीय हरूपण पर्यक्ता रिक्रम कर्म रिया ।
प्राथितिहाँ मिलार, कृष्ट एक एकामी होंग्रे हुए हो स्वा पड़ र पृथित्त हुए वर्ष रामार्गी-निषयक्ता रेग सीहर, पुत्र के केन्स्यम्भ्य पूर्व हिन्दु सामक का अनवी बया विद्यान कुर्यहर होर क्रिन्स एमी वो अक्सा रामार्ग करणा अस्ति होर होर हिन्दु हुए क्रिन्स रूपों रे पा दिना दिनी मार्गिक कर बारीय हेर्स्सप्य कर पुर्वेश रूपों ने सानो केरावे निद्मा करणा वा स्थानीतिहा सर्थ वादाय अस्ति हिन्दु स्थानी क्रियो निद्मा करणा वा स्थानीतिहा सर्थ वादाय अस्ति हिन्दु स्थानी क्रियो निद्मा करणा वा स्थानीतिहा स्थान क्ष्मि क्रियु १८४१ दे हे बस्ता नुमुक्ते प्रयाद हो स्थानक्रम

वारबीय इतिहास एक गरि

उत्तराधिकारी खडगिंसह एक वर्ष भी राज्य न कर पाया। खडगिंमहका पृत्र नौनिहालिंसह जा अपने दादा रणजीतिंसिहको ही मौति होनहार था अगले ही दिन मार डाला गया। तत्पश्चात् रणजीतिंमहका एक अय पृत्र होरिंसिह राजा हुआ किन्तु १८४३ ई० मे उमका भी वध कर दिया गया।

अब रणनातिसहके सबसे छोटे पुत्र दिलीपसिहकी जो छह वर्षका बालक मात्र या राजा बनाया गया। राज्यकी मारी शक्ति और सेना चमके नेताओं के हायमें थी। सना ही स्वयका राज्यका प्रतिनिधि और खालसा कहन लगी, उसकी महया द्विगुणिन हो गयी और वही ममस्न शायन, बजोरो, रामा एव प्रजाकी भाग्यविघाता वन वैठी । चतुर अँगरेज तो ऐसे ही अवसरकी ताकमें थे। १८४५ ईं० में दानों शक्तियों के बीच युद्ध छिड गया । मनापितयाके परस्पर अविश्वाम एव विश्वामधातक कारण एकके बाद एक चार युद्धोमे सिक्ख हार और अँगरेजोकी सहज ही विजय प्राप्त हो गयी। परिणाम स्वरूप जा मन्यि हुई उनके अनुसार जालन्यर दाआवका सम्पूर्ण प्रदेश अँगरजोको प्राप्त हुआ, मिक्स दग्वारन युद्धके हरचानेके रूपमे तान करोड क्पया दनका वचन दिया और एक अँगरेज अफ़मर राजा दिलापिंस्क सरक्षक कामे तथा शामनके प्रत्यक विभाग-पर नियात्रण रखनके लिए लाहीर दरवारमे समीय स्वापित हुआ। हरजानको रक्कम अदा करनके लिए कदमार देशका जम्मूके डोगरा मरदार गुलाव-सिहके हाथ वेच दिया गया। १८४९ ई० में व्ययका बहाना बनाकर अँगरेजान फिर युद्ध छेड दिया। निक्य वीरताके साथ लडे किन्तु पराजिल हुए। सिक्बराज्यका अन्त करके सम्पूण प्रदेश अँगरेजी राज्यमे मिला लिया गया और महाराज दिलीपसिंहको पेन्शन देकर इन्लैण्ड सेज दिया गया। वहाँ वह ईमाई बन गया और मृत्यु पयन्त वहीं रहा। भारतका प्रभिद्ध काहेन्र होरा भी, जिसे नादिरशाह छूटकर ले गया था आर जिस रणजीतिनिहन काबुलके अमार शाह्याजासे पुन प्राप्त कर निया था, अप्रहाय दिलोपिहम महाराना विक्टारियाका मेंट करवा दिया गया (वही निक्त को बारती रण्यान्याः राज्यः राज्यः सी. देवशी रुत्ता व बण को नै बण रुज्य बीदरेजीणी जेनाने जातीं हो नवे जीर ज्यात्त्वें बचके राज्यने बारा च नित्रं समाग्रह हुए

पहुन्दा—गोर्शनावां वे जनगणिकारी नामार्थ वो तम् ११६८९ है। वे कामन जबने आर्थ राजायन है। बावन सामगार्थ है होती राज्य सर्वत्तर तम्ब के के बोर्च जात्र वो वर्षात्र वाला बात्र विकास साहार राज्य है। उनका काम-स्वरूपन वनकर है। कृति सा नामग्रे साहार तम्ब नामग्रे के वे वर्षात्र वाला कामन कामन

नेताबान बचने राह्य वरकारोंके वित्र नहीं की बा रिरोकी क्रम

वर्षान्य वा जन्म वापा होरेन्द्र नाराम) रे वी रहेकी व है।

के की को मानवा बारे ही वरण निर्देश पर पा का देश कार्योह
दिन्द्र वह सारी गयाना था। वया निर्देश कर पा बर्गारे हैं कहें वे वह सारामित्र कर्मु कर गये। वे अवहा सारी जन्मक कर्मु है कहें तिथा सामा साराम्य कित हुए औरवंद वो मृत्यूक करामा ही वर-क्या मुन्न केनात्रीके वामाने के अनेके पार वा मानदेश हिए हैं है व मान हा अरहक परिवर्णना निर्देश की क्यांके क्यांक करा कर सार्वेद है। वसर बहु मुन्न पहा मुन्निकारवर्षों मीतिह क्यांका मानवाद्योग सारामित्र क्यांका मानवाद्योग सारामित्र क्यांका मानवाद्योग सारामित्र क्यांका मानवाद्योग सारामित्र क्यांका मुन्न हो वाहे व्यवस्था मानवाद क्यांका क्यांका क्यांका मुन्न हो वाहेर व्यवस्था मानवादी क्यांका क्यांका प्रविद्या है। व्यवस्था क्यांका क

पुत्र हो नहीं है और बनका बाबर जिनका है। बाहुने १००८ हैं। के रिल्मी स मानन बनारावर अविवाद कर किया और अवने-बरक्त राजा वादिन बर रिचा। कारावादि शीवहानुतर्गः अपना वेला बनाया और पुरसुक

. .

छिष्ठ गया। १७१२ ई० में ताराबाईका पुत्र मर गया और अब स्वय उसे भी पदच्युत करंके उसकी सपत्नी राजसवाईने अपने पुत्र शम्भूजीको राजा घोषित कर दिया तथा उसकी आरसे कोल्हापुरमें राज्य करना प्रारम्भ कर िया। मतारामें साहूकी स्थिति भी बिलकुल खाँबाढाल थी।

इमी समयमें कोक्णके एक चितपायन ब्राह्मण विश्वनाथका पुत्र बालाजो मट्ट मराठा सरदार धनाजी जाधवका मन्त्री था। उसक कहनेसे घनाजो तारावाईका पक्ष त्याग कर साहुमे आ मिला था। उसके साथ हो वालाजी भी आया। १७१० ई० में घनाजीकी मृत्युके वाद उसका पुत्र चंद्रभेन जायत्र फिर कोल्हापुरवालोके पक्षमें चला गया विन्तु वालाजी माहुकी ही सेवामें रह गया। उसकी याग्यता देखकर माहते उस अपना सेनाकर्त्ता (बढ़शो) बना लिया और तदनन्तर अपना पेशवा (प्रधान मन्त्री) बना लिया। इस प्रकार बालाजी विश्वनाय (१७१४-२० ई०) पेशवा वंशका सम्यापक हुआ । यह वडा चतुर राजनीतिज्ञ था। उनने एक-एक करके सभी लुटेरे मराठा सरदारोंका दमन किया और उन्हें बशमें कर लिया। करतेजी आग्रे जैसे अधिक शिवतशाली सरदारोंको मी समझौता करके अपनो ओर मिला लिया। अपनी शिवनका सवधन करनेके लिए इन अनुपासनके अनम्बस्त निरकुण लुटेरे मरदारोको अपने नियम्प्रणमें रखना आवश्यक था, अत साम, दाम, भय, भेदसे उन्हें दशमें करके उमने एक नवीन मराठा सघका स्थापना की जिसका आचार चीय और मरदेशमुखी या।

च मन-द्वारा नियत मूमिकरका दसवौ हिस्सा सरदेशमुखी कहलाता या और वह पूरा मसाराके भराठा राजाका मिलता था। चौय मूमिकरका चौथाई होता था, उसका २५ प्रतिशत मराठा राजाको जाता था तथा अय ६ प्रतिशत सहोत्रके रूपमें और ३ प्रतिशत नहगुण्डक रूपमें राजाकी देण्डापर अवलम्बिस था, जिसे यह चाहें 'उस दे। शेष ६६ प्रतिशत को मोनासा कहलाता था मराठा सरदारोमे वेंट जाता था। प्रत्येक सरदारको विया करता था उनकी भीवका श्रीकाता उसी तत्त्वारको प्राप्त होयाथा सीर बनने ही पर बाजा देना बोर लेपकाका बंदबाब करता का इन वरीके बरणन बरैरपे किए पोई एक निविषक रक्षम वा जुनियक्के नहीं निया बारेगा था बरन शिक्षिक गाउवा कोर प्रदेशोंकै धासकीन उन्हें प्रतिवर्ष नियमित त्यन बनुध विका आता था। परिधायत्वकर सीई मरस्र बारवार रिना एक प्रदेशका रुवाधी न हो यहता और बीच तमन्ति का रहता । इव करोको चवाहलेका साधार की श्रोहरकाच स्रांकन जानार मारिकी प्राचीन मुक्तिकासरकाकी समाना साहा का निन्तु स्वीकि इन बोधने श्रीरको दक्षा बोर देवशी एवं ब्रत्येक खानवती स्थिति बाव विगर पूरों का - कब जानीय आयारवर चीव देश दवीके लिए बनास होता वा बोर बहुध शालो वहा ध्युक्त व्य । वच्या बरशायेने 🗺 निवित्त राज्योंके काथ क्षेत्र करते रहते और इसके प्रदेशीने स्थानार करनेका बद्द नक्षत्र कृषे निरन्तर वका स्वतंत्रात्म बक्षाता हा । देवना दानाओं रिस्ताको अन्य स्थानिकरके नदीए। सैनर हुसैन असोहे को सानी मॅलिए बरायदा देगाँव वक्तके बहतेने बहताहै 😅 रांक्क्नी सुधीरी गीम पूर्व गरदेशकुर्या नमूख करनेका अधिकार 🛎 क्रिया । बन्ते धान देशय दिल्मी को तथा और बता उसने जनसे जोस्त्री आध्यातीका मदान्ति बराजरता का रामको देखा । इब देखबाद जीवजी ही बरायका बराम राश मीन ही नमा और नेप्रशा ही राजका -बर्वे-बर्ध हा नमा कंपचा पुत्र पेकता ताजीपाल जनम (१७२०-४ ई.) चनके मी व्यक्तिक महत्त्वाचाची। पुरुष्टिम ए५ पुरुष्ट वेत्तानी चा । वत्तरी कत्तर दिवाने विश्वार करनेत्री वीतिको अक्टाबा । क्ल अधिविति सीव्यापने बनती नीतिका विशेष किया और बहुर कि उन्हें नहके विकास माध्यपर अपने राजाको नुबन्धित वर्ष नुकालनिक्य करना चाहिए, उत्तरकी बीट स्थान

...

आओप इतिहास १% धरि

न्तित प्रदेश वह पाहे क्षियों भी राज्यका हो। योच शीर सरदेशमधी वनूस करमके रिग्ट में दिया बाता था। जिस प्रदेशका अविकार जिस सरदारण नहीं देना चाहिए। किन्तु बाजीरायने कहा, यदि हम जजर वृक्षके तनेपर ही मीचे प्रहार करेंगे सो उसकी झाला प्रसादाएँ तो आपसे आप गिर पढेंगो । उसको यक्तुनाके प्रभावमें आकर महाराज माहून भी अपनी स्वीकृति इ दो । अन्तर्व पेशवाने मालवा और गुजरातपर अनेक आक्रमण क्यि । इन आक्रमणामें मल्हरराव होन्कर, रानोशी सिविया, ऊदाशी पैवार, रघुजो भासले, पिसाओ गायकवाड आदि उसक अनुचर सग्दार अनुभवी एर मिद्धहस्त हो गये। उमरी युद्ध-यात्राओं और विजयोंके कारण राज्य-को विद्याल सेना सुदूर प्रदेशोमें व्यस्त रहने लगी, उसक निर्वाहका कोई भार राजकोपपर नहीं रह गया, उलटे लूट आदिका धन ही निरातर राज्य-में आने लगा और मराठाको शविन, प्रभाव एव आतक देशब्यापी होने लगा। १७२७ ई० मे महाराज साहृत पेशवाका राज्यके मर्वाधिकार सौंप दिये। पेशवाने १७२६ ई० में श्रीरगण्टून तक सुदूर दक्षिणमें भी धावा किया था। निजाम उसके लिए बाधक बन रहा था। उसन कोल्हापुरके राजासे मेल करके पेशवाके चौथ वसूल करनवाले व्यक्तिका निकाल दिया। निन्तु १७२८ ई० में पलखेडके युद्धमें पेशवाने निजामको पराजित करके चेंसे कोल्ट्रापुरका पक्ष त्यागने एवं चौष और सरदशमुखी नियमित रूपसे देते रहनेका वादा करनेके लिए वाच्य किया । निजामने अपनी कृटनीतिसे सेनापति त्रियम्बक दाभडेको पेशवाके विरुद्ध कर दिया किन्तु पेशवाने १७३१ ई० में दमोईके युद्धमें सेनापितको पराजित करके मार हाला। पेशवाके भाई चिमनाजीने मालवाके मुग्नल सूबेदार गिरधर बहादुरको भी पराजित करके मार डाला और उसका उत्तराधिकारी मुहस्मदर्खां वगश भी पराजित हुआ । तदन तर राजा सवाई जयसिंह माल्वाका सुवेदार हुआ। उसने पेशवासे समक्षौता कर लिया और सम्राट्म कहकर उसे मालवाका नायब सूबेदार बनया दिया । गुजरातके सूबेदार रामा अजीत-विहने भी पेशवाको चौष एवं सरदेशमुखी देना स्वीवार कर लिया। इसी समयसे गुजरातमें पेदावाके प्रतिनिधिके रूपमें गायक्वाहका प्रभाव बदन क्या । सारीपार बंधा-मनुमाने दोशाये एवं पिरानी वरिकार प्रतिवर्ग मात्र करात मा । सार्व विकारित सावधारा जो जाने करनार और वापने क्या विकार विकार प्रत्यान कर प्रशाद क्रिक्स है । १९४८ है में करनारां में क्याने की सावध्याने किया कुमारा क्रिन्ड बोध्यान कुमारे वेकसारे कार्योन के प्रताद मात्रिक क्या । बात की क्रिन्ड बोध्य मात्रिक कार्यों को मार्च करात वाल वाथा नामा बोट प्रभावके ताथि कार्यों को मार्च प्रशाद करने के स्वारों है है जार । १९५३ है में बीर क्याने करते मृत्ये करत वाशीन्त्र करने कुमेर्नकार राज्या क्यानी कार्यों कार्यों प्रताद कर तथा जा। के सावस्थान कार्यों क्याने कार्याची कार्यों कार्यों कार्या कर्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों क्याने क्य

रसामा क्रियेयो तथा योगी तो का कुक्तार वरके वा की कुम का । मेरे कम्म स्थार है तथा वंशायायों मुख्य हो वही । यह क्ष्मुरस्थियों यो स्थापने क्ष्मायमंत्र अर्थन क्लिप्टीक्सी वर्षाव्य है स्थापी मात्रव एक पुक्कार न्योतीके तथा कहार समुद्ध के यो पूर्वाद है क्या बाता है कि सामीपरस्थी वर्षायां मात्रवर्ध मिल्ल स्थापनामाने क्ष्माया करकी थी । किन्तु देखानामें किम मर्थितपूर्व मृत्यार सामि सामानीका विशेषकों सामाना क्ष्माय स्थाप मात्रक देश

मास्तामीको देवचे निकल्क बह्दर गरे। किन्तु क्याकी वेचा पुरुवानियोने मेचीनको स्रोतनि स्थास यो बीर वय दम योनीन नाविरवादने विस्त

श्रम्य विवेशी प्रविक्तांक्षे मृत्या स क्षरं कोट नः वनवागरमानी पुणाना एवं वाल्यि है कहे । सामीरामात कृतविका सन्त्यामी वालीराम (१७४ – ६१ हं ...) वन्ते

वाजीरालका पून वेक्सा वाकाजी वाजीराल (१७४ −६१ ६) वर्णने प्रकृष्ट अञ्चलीय हर्जिहासः एक सवि विताको मौति महत्त्राकांको तथा उपकी उत्तराभिमुक्षो भौतिका तो अनुमर्ता था कि तु उस जैमा बीर योद्धा, वृधाल सेनानायक और राजनातिपट्ट न था। जयपुर, जोधपुर आत्मि उत्तराधिकारणे झगडोंमें (१७४२४९ ई०) हस्तक्षेप करने और फल्य्स्वस्त्र उन राज्याको लट खसोट करनेमे ये
राजे भी मराठोंसे विद गये और उन्हें अवना छण्ड समझने रूपे। १७४९ई०
में छप्रपति माहको मृत्यु हो गयो। उमकी वसीयतके अनुसार ताराबाईके
पोतेको मताराका राजा बनाया गया, कि तु सागवाईने स्वय हो उमका
विरोध किया और राजाराम राजा बनाया गया। उमने राज्यके सर्वाधिकार
पेनाको मौंप दिये। अब मताका और कोन्ह्रापुरके राजा नाममात्रके
अनुल्लाकनीय छाटे में राजा मात्र रह गये। विस्तृत मराठा साम्याज्य एव
विशाल मराठा शिवतका एकमात्र स्वामी पेशवा हो था। १७५० ई०
में उसने पूनाको अपनो पृथक् एवं स्वत प्र राजधानी बनाया।

उसके मराठा सरदारों में बरारका रघु नी भोमले ही उसका प्रवल विरोधी और प्रतिद्वन्द्वी था। पेशवाने उसे भारतक पर्वी प्रा'तोंके सम्वन्धम मुली छूट देकर सन्तुष्ट किया। अब भोंसले और उसके सहायक भास्कर पण्डितने प्रति-वर्ष वंगाल, बिहार और उड़ीसाको गेंदना एव क्टूना शुक्त कर दिया। भास्कर पण्डितको वगालके तत्कालीन नथाय अलावर्दीखोंने मरवा दिया, इमने मासलेके आक्रमणोकी भीषणता और अधिक बढ़ गयी। अन्तत अलीवर्दीखोंने मोंसलेको उड़ीमाका समृचा प्रान्त देकर और वगालको चौधके क्यमें १२ लाख क्ये प्रतिवर्ष देनेका बचन देकर उसस अपना पिण्ड छुड़ाया। पेशवा निजामके उत्तराधिकारी मलावत्रजगमे उल्झा किन्तु उसके फान्मीमी सरक्षक बुसीने १७५१ ई०में पेशवाका कई वार हराया। १७५५ ई०में पश्चाको कहांची शावनको नए करनेकी मारी भूल पंगा १७५८ ई० में युसीके हैदरावादसे हटते ही पेशवाने निजाम राज्यका अन्त करनेपर कमर कसी, अहमदनगरपर उसने अधिकार कर लिया। अरा निजामके कुशल तोपची इग्नाहीमगर्दीको अपनी ओर मिला लिया।

पेनचाके कार्य शराधिकराच जायने चतुन्तरके मुख्यें निजानको बुधै गर्प पराजित परके बड़े अपने बीलनाबाद अमीननंद बीआपूर, बहुबद्दपर और पुरक्रमपुरके मुत्रनिश्च वर्ष श्रवा ६। साथ पाने वर्शवक्ष सामका प्रदेव रेमवाणी बीप वेलेके किए साध्य कर दिशा । समर संसालें दुल बीचर्ने देखना-के मार्ग रामीक्षाने बंधने १७५४-५६६ के बाह्यशनमें शत्रावानेके बन्द्राय नश्यपुर, बाह्य मुँदी मादि विशिक्त राज्योजे सहन्तार अरके बीच ब्यूच नी और रूप रिप्पी अफर शास्त्राह नहमत्त्वाहको बहुन्ते ब्रामान्य माधननीर द्वितंत्रको बादयाद श्यानेवे वहीर इवाइस्क्लको सहस्ता ना । नर बहार मराडॉफे पुषश्चा सवीन वा । वंशके डाजारेंमें ती - वंबने बन्दें प्रश्य के दिये । सूरवायक बादने राजाये जी बन्दीने सद-धार की मीर जिर गाँबक्को कोट को । १७५६-५७ ई. वे व्यक्तकाह सन्तानी रिल्मी माना और बच्चे पानवाहन गंगाव और अस्तानके हुने जान्त गर निये । रिम्मू उपने केड किरते हो। राजीवारी १७९७-५८ हैं से किर कत्तर भारत्यर बाहनक किया और इन बार शबार तक बाता किया वया यहाँवे बन्दानीके प्रतिनिविको वयाचर बन्धी औरव अरीनावेदस्ताँको मानक निमुख्य गर निमा । जब नरामांची चारित अपने बरन मिखरण नहें ब नहीं था । जन्मानके जीशावधी और बरव सावरने अंबानारा कामे पर्वन्य जनका बामारा केंब नदा का और वाल-बार माराने के बॉन बमुच नरदे में । राजपुत्र भार, खूँने विच्छा बरशार और मिताब बमी बनशा मीहर मान्य के अवन क्षत्रश आनंद कर । देशी समय व्यविभागी नेपालका विशालके बाच पूर क्रिय नवा मा जिनको नवाबार पाकर राजीका बतारमें बसाजो निर्मितका इसे नग्द्ररराय होर कर नामक माले करधारीको क्षोतकर, त्रांक्षण क्षात्र करा का । अध्यानी मराग्रीके गरावगर विशे वसे आसम्ब और अविकारका क्ष्मा जिल्ली बरवारवर क्षमके बहुत हुन् तमाचनो खहुन वही कर वचना या । सबवर मनाव बीर पट्टेपाने भी जी। बराइकि प्रदेशाय के बारतमें दालाब और

٠.

जारबीच इतिहास एक सीं

मुनलमानोंको रक्षा करनेके लिए उमे माग्रह आमित्रत किया । अतएव अव्यालीने एक विद्याल मेनाके माथ फिर क्षाक्रमण किया । १७५९ ई० में हा उगने परावपर पुन अधिकार कर लिया, १७६०ई० के प्रारम्भमें ही उमन दत्ताजी निधियाको पराजित करने मार ढाला, राजधानी दिल्लीमें प्रवेश किया और होन्करको मार सगाया । तदनन्तर वह अलीगढ़मे धेरा हालकर मराठाँके आगमनकी प्रतीक्षा करके लगा । अवधका नवाच शुजा-पदीना और रहेना सरदार नजीवृद्दीला धरीन्य उसमे आ मिले । मराठे दिनिगाम निजामके साथ हो उसस हुए ये। उत्तरके य ममाचार पाने ही पेपवाके भार्ट मदाशिकराव साळ और पुत्र विद्यासरावकी अध्यक्षतामें बिगाल मराठा सना बन्दालीका सामना वारनेके लिए नल पडी । इयाहीम-गर्डोंका प्रशिद्ध तोपद्याना भी उनने साथ था । उन्होंने बाते हो टिल्हीपर अधिकार कर लिया और लब्बालीक रसदक आगार मुजन्पुरपर मी पन्दा कर लिया और फिर पानीपतके मैदानम या हटे। मन्हरगव होन्दर, महादाशी मिचिया आदि मराठा सरदाराम अनिरिक्त मुरजमल मार भी उनमें का मिला। १७६० ई० के नवस्वरमें ही दानों मनाएँ पानीपनमें आ बटी थीं, गुट पुट हमले बमते रहे, निन्तु मराटा सेनाकी ^{रम॰} ममाप्त हा चलो यो छोर सैनिकोंके जनिस्कित गाहे, बैज आहि प्यामी भारे माने लगा। १४ जनवरी १७६१ ई० के बात कालता पाना-प्यका यह बीवरा भोषण युद्ध प्रारम्भ हुआ और शीमरे पहर वह समाप्त मी हा गवा ।

स्म मुद्धमें भराते पणनाथ पराणित हुए । नवय माळ योग विज्ञान-सव युद्धमें बारे गयं तत्तव २० साम मन्द्रार मी नाम खाय, मृत और महाम ग्रीनर्गामा के.दे विज्ञान मो। मनाधेको ४७००० मना गय क्रिनेमत ब्राह्मिम विज्ञानिया नीका श्राक्त धादिस सहुत पाट हा दपका अनते ब्राह्म नाम आगा। गाल उसका कारने मोगला माद सह स् सी विधेश अर्थन न होने दी और बचकर जाव निकन्ध । नामा फार्डमीन मी बच निषका । जूरमक्त नाह मो बुहम नाव दशक ही बना दश और बुक्का शामा पत्रकता हेम काले राज्यकी और तम दिया । राज्यकीरी मारतीन श्रामे ही जपना क्षत्र क्या किया या । जपन्य व्यवसायने वे जन्मी रामकानियोग ही बैंडे रहे - इस बुज़के चीरवासम्बन्ध नहाराध्यमा कीर्र घर देशान या निवर्ते अपने विश्वी-व-विश्वी जारबीवणी क्रमुके निव बोच र जनाव्य बच्च हो । स्वयं बाध रोजने बस्त नेवस्य ो बाड नार्यः की बहारफ के किए क्षत्रकों और यथ पदा या हर ह बह बक्कारकों क्षते ही अरवेते वर क्या । इस प्रशासने वेत्रपातीक समावन्ति विधी परपालको सबस्य कर्मन प्रारतीय बासामको सम्बन्धे क्यांने स्थि र्श्वतं वार विका ।

ररन्यु चपुर सुवावहीलावे अपनी वा जरनी जेनाको कोई बाँड न होने ही और विजयका का ग्रंथ जैसे केंबर वह अपने शामधी और नवा । अव्यक्ति ने वसीनुरीका रहेतेको विग्नीका बजीर बना विधा अनल्याम सार्घात तमा बन्दे परबारपर पुक्र बनमके निष्ट् बहुंगोंकी समन्द्राची स्वर्हना हो गरी । पेनवाके महात्रवार्थिन्य डोल्कर तो आक्रवी नीतिके नपनेर होनके नाग्य गत्रने ही शिशक तथा था। निर्मित्राने थी अपनी और अपनी केंगी-

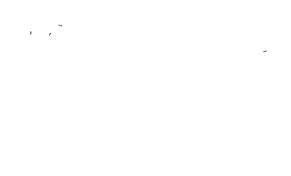
निए सधा बानेकाम सनिक इसे निर्मातक पुढ वा किन्नु बुक्कमा**र्यो**नी को प्रमुख विचेत्र सहस्र कही बाह्य । अपने नैतिसहेके विदेशके साहब बाली-बीको स्वरेप सीट सम्मा पता बोर यह हिए कवी पत्नी बडी बडा । सर्व मारबंधे दिन्यू एव नुकरमान श्रोनींची ही। १८७६-सर्वितारी इच मुद्रके नारम मीर मी समिक दिर्वक हो नहीं। शरहत शक्ति निवेशकर वेक्सके प्रदर्श मोर प्रतिक्रमा का थीते. समस्ते किए सर्वमा समाक्षी करा र और प्रति

रेफोर्ने वह रिम्ह और मनसबात बतिरावार बीच धारतके कामान्यके

बदण तान कॅनरेडॉन वृदी शरह बढावा

बान्ताओं बाजीसको पुत्र और बस्तराविकारी वेबस्त ताकस्य^द

व्यारवीय इतिहास । एक गर्डि



वेनीतर्फ रार् देतेका अपन दिया । इन बकार नराइतिहे १६र्पकी मूर्गता मीर ररायांच्याचे नाम्य अवरेतीमा मगुद्रा राजगीतिनै वर्षत्रका हणातेत हुना । मूर्व सेनरेडीले अपने ही कार्यके सम्मरन्त्रारा को वर्षी नुग्तको सन्ति विरोक्षी मध्य - कारण बारेन हेरिहण्यके अपने विरीपी पत्रवे पाना चान-रीतके ताब १७७६ई - में ब्रान्टरकी शन्ति कर सी. और बडाचा बनावर यह क्षेत्र रिका - भागा चारमधीमधी नेमाने सम्बद्धि सँगरेवाधी बुरी बार नराजिन बाके बनके लिए हास्कित्य और अनुश्चनत्रमक सीच कर्यगर बाई शास्त्र कर दिशा एक ए ई. वी शश्र्वीवती इस सम्बन्धी हैंप्यामी क्रम्बोनार पर विश्व और दिए बुद्ध केंद्र रिया । तराध्य बरगारि उन करन मर्थापनः शांस्तशासी निम्बनाही का क्ले बेनरेबाने फोट निमा। १७८२ ई. में मानवाईको मन्त्रिक अनुसार व्यवस्थित नायमर बीर. मैनीन लाई क्रिये विक्रियाको मार्कियनका राजा स्वीकार कर विद्या और

रावोचाओं केवान दिसका कर करकाून करने किए । इस बन्दिने सरास

श्वतीतिवे भी संगरेजीया प्रमुख स्थापित 🚮 पता ह नेप्रचा नायप्रशय नागानय ((कटए-१५ ई.) के सनवने नामा बहुनरीय: राउद क्रांगी और नवतर्था या. तथा नहादाया विश्विक ज्वांगा महामक सीर नगर्वक वा । नराक्षे कर वैनरेवाके जिन ने सेनूरके वुक्रीने क्षप्रोप जैनरेत्रीया बाग रिका मीर डीपुरे पामपी अपने दिग्स बेटाना । रंभरंप है में बन्होंने बर्बात मुद्राने निकासनी हराकर बनने मीर हरजाना और बीजनाशावण वर्ष जान निवा, किन्तु वची वय देशनाओ कुमु ही मती । यह विस्तालाम मा । रायोकांके पुत्र वाजीगांव द्विपीयने क्रोपर अधिकार करना माता । माना फानगन बनका विदेशों ना नवारि बडी देशका तथा १८ हैं में साला कश्वरण की वर बंधा ह बाब डोल्फर और निरिचया चोनीने ही नुगा - बंदबारमें स्थाना प्रमुश्य बमाना बहा । होस्करमें देशमा और शिन्तिकारी परास्थि कर तिया । देवंचा बान बार जेंग्रेडोफी धरनमें नमा नश सीर १८ र ई में मेंग्रेडोसी सहारण मिन्यको सब निर्मे मानकर वह उनने अधीन हो गया। इस मियको सिचिया, होत्कर, मामले लादि मभी मगठा मरदारोंने जो अब प्राय पूनाके प्रमुखसे स्वतन्त्र हो गये थे, बडा अपमागजनक माना और जैगरेजाक साथ युद्ध छेड टिया।

अवतक अँगरेजोंकी शक्ति पर्याप्त बढ़ चुकी थी, १८०३-०५ ई० के मराठा मरदारोंक साथ किसे गये इन सुदामें औररेजाको ही विजय हुई और उन्होंने पेशवाके माथ-हो-साय मिन्धिया होस्कर, गायक्वाड और भासलेका भी सहायक सम्बियोंने जालमें जकडकर अपने अधीन कर लिया। वाजीराच द्वितीय अपने पिताका ही भौति मूग एव दुष्ट प्रकृतिका व्यक्ति पा। वह पूना मात्रका हो राजा रह गया था किन्तु अपने पूच जाको भौति पूरं मराठा सधका अध्यक्ष धनना चाहना था जो अब असम्भव था। उसका मन्त्रो त्र्यस्वकजी भी वटा धूर्त और दुष्ट था। इन दोनोने पड्यन्त्र फरके गायकवाटके धर्मातमा विद्वान् एव सुयोग्य बाह्मणमात्री गगाधर-शास्त्रीका वध फरवा दिया, जिससे समस्त मगठा ससारमें सनसनी फैल गया। अँगरजोने भी हस्तक्षेप किया और अपराधा व्यस्यकको प्रस्तिका विफल प्रयत्न किया। १८१७ ई० में एक सचिके द्वारा उन्होन पेणवाका ष्टुछ और इलाङ्गा द देनके लिए तथा मराठोंका मुखिया बननक अधिकारका त्याग कर दनके ठिए बाध्य कर दिया। पेशवान इस सिंघको तोडाफ ७०-स्वरूप १८१८ ई० में अँगरजीक साथ युद्ध छिड गया अन्य मराठे राजे भा उनमें उल्झ गये और पराजित होकर सभीन कैंगरेजानो प्रदेश एवं धन और अधिकार देकर और उनकी पूण अधीनता स्वीकार करके पिण्ड छुडाया। पेनवाका तो राज्य, पद, अधिकार मब छीन लिया गया और उसे पेजन देकर कानपुरके निकट विठूरमे रहनके लिए मैज दिया गया जहाँ शहरज भेठकर उसने जीवनके दोप दिन विताये । १८५१ ई० में उसकी मृयु हो जानपर उसक दत्तक मुत्र नाना साहिय घुः घुपन्तको पे शनः भी बाद कर दा गयो।

तीब वर्षां भीतर हा लगारा और कोल्हापुरक हो राज्य स्वास्ति वर निर्दे वे । बतारा राज्यके आजपने *हो* पेंचराओंका अञ्चलक हुना व्य व नराडे नहीं व शंक्रणी बाह्यण के दिन्तु क्रयोजे सम्बर्ध माह्य-परित भीर बस्मन मगाः। नम्बारोत्तर नक्ता शतन्त्र स्वर्शकः बरके शतनी बांकाः मा महान रिशान दिया था। कान्यापुर राज्य का बाराओं ही नामगण की बारान्या । रह का बतारा भी tox's है से बारूबी मुख्के करास्त क्यों रिवरियों अन्य हा बसा और वेशवाशकों का अनुवे कार्र रिजयपूर्ण में ही । पेयम बाजाराव बचन ही बेबबा बॉल्डबर ब्यून्सॉरफ निर्माडी मा मीर क्य व्यक्तिया बचन काम सम्बद्ध वनार्थ ीर कटाने हुए रिकामी मामक्यात रचना पानमे जात्रका गेंदार राशांत निर्मानका, मण्डररार क्षेत्रकर जारि बरदारीक तकार वर्ष वसीय ताल दिस्तील तर्व दिलारित रिका था । बबक अनेक मुद्राने बाच केवर व तरवार वय अस्ति वेना प्रश्च और अनुवयन पर्याण क्यांब कर यहे थे। इसके इसराविकारी बाबाबी बामीरान्ते बनववे ता बन्दी जाँतर इतुना वह दवी थी हि वेषचा उन्हें वह करमका नाइब न कर जनना वा । बजी शानवे बन्दीने बारगढे निविद्य मानामै अपने स्थानी केन्द्र वा क्या किसे में ज्या नारफ भारमें बड़ीरा (बुक्यान) में निर्माणका मातिवरमें होहदरमें इस्टीरमें माननेन नागरने शनाहि ।

मराहा राज्य-शिवाभोड बंबजीने परत्यर क्षत्रकर बंबकी मृत्यु ह

१७६१ है व मानीपण्ड मुक्क करातन तम बादासि त्या और मेमपाची रामर्थित एवं दिव्योध्य क्षेत्रम करण काम मानी रामर्थीत सिक्त-दिव्या दश्याना हो और व्याप क्षेत्र। तेत्त्रमुं के तुम्हें वर्षे सप्ती स्माप्त कर्में हो स्वीत व्याप्त के सिक्तन्त्रम हो स्वाप्त सैतर-मामरा दुवते ही स्वीतंत्र व्याप्तके से वामर्थन कर्मा क्षार कम्म होशा मानी मने क्षार क्षार्थ हारा सम्मी प्रामाणिशायो स्वीत कराना समायद क्षार्थ करी। यह मुद्देशे क्षाराम्य कर व्यक्ते सुनि-सार्थन

348

वास्तीय हस्तिक्षा पुत्र धीर

पेणवारे आधिपत्यमे मुक्ष, स्वताय राजा घोषित करना प्रारम्भ कर दिया, किन्तु योस वर्षरे भीतर हो दूसरे अँगरेज-मराठा युद्ध (१८०३-०५ ई०) के फलम्वम्प जन मभी मराठा राजाशने म्बयका अँगरेजाना सहायश-मधि योजनाम जक्कहवाकर उनकी अधीनता स्वीकार कर ली और १८१८ ई० के तीसरे युद्धक उपरान्त तो वे अँगरजोग पूर्णतया अधीन और आश्वित हा गये, उनको हो कृपापर अवलिकत हो गये आर अँगरेज उनके आन्तरिक मामलो, उत्तराधिकारक प्रस्त, ज्ञामन-प्रवाप आदिमें भा गुला हस्तकोप करने लगे। उनके से जिसका जब चाहा अगरेजाने अत कर विया, जो वच रहे वे वतयानकाल प्यन्त चलत है। मराठों और विस्णा बाह्यणोंके कुछ अन्य भी छाटे छोटे राज्य थे। जाकी भी यही गति हुई। उपरोक्त राज्योंके कित्तप्य प्रारम्भिक नरेज यथा मल्हरराव होत्वर, अहत्यावाई, महादाजो मिधिया आदि अत्यान चतुर, मुयोग्य एव पराक्रमी य और अपने काय कलापके लिए इतिहाम प्रसिद्ध है किन्तु उनके प्राय सभी कार प्रायम मभी उत्तराधिकारी निकम्मे और अयोग्य हो रहे।

धर्मे और संस्कृति—इस हेद मौ वपंक ऐतिहासिक अ वयुगमं धर्म और सस्कृति-जैम प्रकाश पुजोको वात स्टाना ही स्वथ है। सम पालको धार अराजकता, अशानि, मार-काट, लूट-ज्यमेट, ईट्यि-ट्रिप वैर-विरोध एवं सहस्वापी घार नैतिक पतनके श्रीच जहाँ छाटे बढे किसीकी भी प्रिष्टिश, प्राण और धनकी सुरक्षा नहीं थो, धम और मस्कृतिकों ओर घ्यान देनका किस अवपाश था। उस काल्य राजे रईस, नवाव, अमीर, मामन्त और सरदार अधिकत्तर या ता निर्मम छूटेरे एवं क्रूर अरवाचारों थे अयवा कायर आपसी, बिलामी और दुराचारों थे। विसीकों भी अपनी किमी प्रकारकी म्यायितका काई विद्याम और मरोसा न था। अत या तो वे नितान्त अविवकी हो स्वार्थसाधनमें रत हा जाते या फिर निर्दृन्द हो विषय भोगों इब जाते। इस कालमें किमी भी धर्म, जाति, वर्ग या प्रकार निर्मी भी तेजस्वी महात्मा, सन्त, महान् समाज-सुधारक या

विन्द्र बन्नेन है कान्यु मैंनेया नक्षा तो बनाना है क्षानाविन्द्रीने मान्य इसमान बंदा का उपनिवासी मंत्रित वृद्धित हुने बड़ी की की स्थानार्थ पत्र मानवित्र का इस कान्यों मानवित्र की तुर अन्तर कार्य दिस्ती इसमान की अर्थ इस नाम्य विनाय इस देहन्दी कार्य दक्ष्मी देश अर्थ में में में मानवित्र कार्य की मोनवित्र में मानवित्र कार्य कार्य कार्य के मानवित्र मानवित्र कार्य की मोनवित्र मानवित्र कार्य कार्य कार्य

राजाः बावररणयः वर्षातः इत्र रिवः वरणाद्योशीः **वर्षात्वरः निर्धारितरः रिवे** वर्षातरम्य वर्षा विद्यासन्तरं प्रापतः समार्थः

ती है. नेवाना को जन्मून रिनाशनों वं परेशकर राज्यों-देने वार्थित राष्ट्रण नामत ही. है किये में शिवां वार्याच्या कराई समा कराई समा कराई समा कराई समा कराई समा त्यां कराइ कराई के दिशांगे नेवार्थित व्याच्या देन हुन्ये देने नामत बार्डि हिलों पालाके कपानी वार्याच्या हुन्य हुन्ये हिल्कें करावा जाता ब्राह्मान कराई करावां कराई सुरा हुन्ये हिल्कें करावां जाता ब्राह्मान कराई कराई पाल्य वा वार्याच्या कराई है के देनेंद्री मेंत्री आपना थी। मेंत्रूच मानार्थ कराई सार्थित हमारे कराइ कराई सार्थित कराई मान्य कराई कराई सार्था हमार्थित हमारे

विकासिक्याओं आंबाबिक श्रोतिम किया। अपने आस्पाताविके देखें वैतिक पापने में क्यों वर्षि शावक हिमेदे बताव पार्टन सार्यन ही हुए। अस्मी प्रोत्ती प्रतिभागों के साववंद प्रयुक्ति हुएक-दिवे सामुक्तांद प्रतिकारी मो सीमा सुने हुवित कथा विशः पुत्र सेर्टनार्टिंग प्राप्त कुरा-दिवे और साले हस्तेनिये परि सस्ताव में।

विक्रिय क्रांटेवे बीर आर्थशारिक वायावें करवीय शृंकापुरित कर्तियाँ १५८२कर बार्य वायववाटा सरक्ष्मीय वायवी-विकासी राजानीयी बीर बान्डे करवारियोग क्यांट्रिय क्रिया जीर बन्डी पानुपरी एवं

्रामी प्रकार नदानि इत जल्मने शास्त्रात मृहस्मध्याद्य क्षोर *वर्त*ने

फुछ वशजों तथा अय मुसलमान नवाबोके प्रयत्न, प्रथय और प्रोत्साहनसे चदूमापा और उर्दूशायरीको अभूतपूर्व उन्नित हुई और नजीर, नसीर, मीर, सोदा, हाली, जीक, दागु, ग़ालिव बादि अनेक उच्चकोटिक गायर हुए, तयापि उद्के इन शायरोंने मो. इश्क हक़ोकोंके वहाने इश्क मजाजीके कामोत्तेजक गात गा गाकर अपने आश्रयदाता नवावा, अमीरी, रईसो और उनक दरवारियोका विलासिता, काहिलो और विषय-भागामें अधिका-धिक गुक्ते होनेमें हो सहायता दो । यदि कुछ और किया तो यह कि उन्हें निराशावादी बना दिया। कोई नैतिकता या सत् स देश इस उदूशायरीमें मी न था। दिल्ली और लम्बनऊ उदूशायरीके प्रधान केन्द्र वन गय थे। तत्कालीन हिन्दा एव उर्दू साहित्यके आधुनिक प्रशसक मले ही उनमें गृढ भय ईहवरीय प्रेम, अन्य अतिशय ऊँचे-ऊँचे भाव एव जादश खोज निकालें. क्लिं जिस कालमें और जिन लागोंक लिए वे कविताएँ-शेर या गीत. गुजलें लिखी गयी थीं और जो उन्हें पढ़ते या मुनते थे उनपर तो इस माहित्यका काई सत्प्रमाव पडा वृष्टिगोचर होता नहीं, प्रत्युत देश और जातिके नैतिक पतनमें ही वह भी साधक ही हुआ प्रतीत होता है।

घानिक, तात्त्रिक, राष्ट्रीय या किसी भी प्रकारके वैज्ञानिक साहित्यका उस कालमें प्राय काई सुजन हुआ ज्ञात नहीं हाता । आमोद प्रमादमें
मग्न और शरात्र, अफ़ोम एव कामिानयाके शरोरभागमें सवत्रकारके गमप्रस्त करनेवाले इन राजे, रईम और नवार्वोने सगीत और नृत्य आदिको
भी अपनी ऐशका साधन बनाया, अत प्रात्साहन दिया । किन्तु इन महान्
कलाओं को भी नीच उद्देशोका इस प्रकार साधन बनाकर विकृत एव
पतित कर दिया और उनका विकास एव उन्नति करनक बजाय उनक रूप
एव पूल्यको अदयन्त गिरा दिया । विविध कुन्यसनाका जिम देश और
समाजमें बोलबाला था यहाँ सत्साहित्य और कलाआको प्रया प्रात्साहन
मिल सकता था । चित्र एव पूर्तिकलाकी भी प्राय यही द्वा थो इन
वानमें उनकी माधना, विकास या किसी उत्रवाग कृतिका निर्माण नहीं

हमा प्रचीत होना । चन शामाओं और वश्वलीने स्थापल एवं दिक्तर राश यी कीर्य क्योप क्यास का किनी महत्त्वपुत्र हतिका निर्माण की निया। किन्तू, रैन ज्नलकान आधि किमीका जो कीई नहरूक्तूर्व वसीराण-सं^{त्रि}र-मन्त्रित आदि शी इस काममें अवा जना ही नहीं हमसे अपने किए में रिनो उप्लेखनीय गर्वर पूर्व राज्यासार आदिका निर्वाच मी बन्हीने बाब नहीं किया - बर्जनहुनी वेबमानाएँ, बहुन्बावादि प्रतिद अपूर्ण मण्डे निक्क्ष्येका स्वत्रमन्दिर अञ्चलक्ष्ये नवावी-बारा निर्दित बनके दो-वस इमानदाहे या रुल्किय विकास-जयन एवं क्यान नेक्साओंदाग हुए रीजोरर बनाने को कोई-कोई हिल्लू गॉन्सर ऐसे ही बरुवकरना के-एक सन्त क्साहरण मरनार गई का करते हैं फिल्हु ने तो बोर्ड निर्देश शकेक्यीर बन्धपूर्वियों 🛍 देनी बात की ै । नहरें, बांच बहर्ष कारे बनानेश तो बोई अल ही गरी क.

मा की में जो नह कह होतो नहीं। हमिन्नी बता बोचनीय की मीर क्षान-सन्ते एवं व्यानार हतकते वह होते वा रहे के र मारतकर्ष सन्द सभी विकिस प्रदेशीयें नियत हिन्दू जैन वहीं टीक्क्रेंच देवरे विकिस बादाने बनी करणांके वालागान । आधान-सदान यूर्व यूक्तुवराके न्यास-कुम नामन पत्रवे बावे वे जिल्लाहरू बधान्ति एवं अधाननात्रे नुसर्वे बर परके भीतर ही नुरक्ता निप्रियश न भी तो सर्वप नाना धनार के चीर कार्जों स्केति व्यास्त मानीन क्षेत्रर सूत्रर सीबीनी सार्ग करवेदा काई शाहन ही न कर बचता ना। जन उठ कानने ने वीर्थ-बामार्थे प्राप्तः बन्ध हा रही जिनके कारण निर्देश स्थानीने स्थित सीची दम क्लंक नकान्य स्मारकंत्री नका भी विचरकी क्ली नदी। लिपू बीन प्रार्टिकोंके लेके : स्वीतार साहित मी प्राय: शन्य-के हो मने : प्रचन धी बनताके अवस्ते बार्क किए बरनाड हो न वा दूसरे बन्हें निर्श्यक्तापुर्व मनानेशी सम्मापना का व रह बती थी।

नार्श्वाच इतिहास एक प्री

बान्द्रतिक केन्द्र और बिवार्गस्थान थी। अक्चत एमं बनान्त होते प^{क्} Les

गये। मावजनिक निष्ठाको कोई ब्ययस्या हो नहीं रह गयी। प्रत्येक समाज और वसमें घोर रूढिवादिता, मकीर्णना एवं अनेक आचिविस्तास त्रीर मुरीतियाँ घर कर गयी थी। धर्मन परम्परागत नामो, प्रधाओं र कतिएय बाह्य आचारो मात्रका रूप ले लिया या । तेजस्दी धर्मानार्यो , सन्ता, मुघारको एय विद्वानोकि अभावमें प्राण एय घनवी रक्षामे ही सदैव चिन्ताकुन जनमाघारणका चार्मिक जीवन सडन लगा था। वया इस्लाम, वया रीव, यमा वैष्णव, यया जैन और यया मियल अथवा अप्य वार्डभी घर्म, सबको प्राय तवा-मोल्लाची। मभी घर्मीमें घोर विकार अनेक पन्य उपपन्य, जो स्वय परस्पर एक दूसरमे वैमनस्य रखते थे, सथा एक प्रकारको शिधलता उत्पान हो गयी थी। थोडे ही मुमलमान हागे इस्लाम-के सिद्धान्ताको भली प्रकार जानते हो, उसके नियमोका ईमानदारीके नाय पालन करते हा और अपने धर्मके विकद्ध कार्योको न करत हो या कुफ कही जानेवाली प्रवृत्तियोमें रत न रहते हों। हिन्दुऑक साथ अपना विरोध बनाये रत्वनेके लिए ही अथवा जपनी राजनैतिक शक्ति बनाये रखनके लिए ही वे मुसलमान थे। जब हिन्दुओ या जैनो आदिकी सहायना भीर सहयाकी आवश्यकता होती तथ वे उनके धर्मके प्रति अत्यात सहिष्णु एव चटार हो जाते, जब विरोध होता तो बडेसे वडा अद्याचार करनेमें न चुक्ते। परिस्थितियोंने सन्त गुरु नानकके सीघे सरस्र धर्मकी एक मैनिक सगठनका रूप दे दिया जिसकी राज्य और शनितिलिध्मामे बह षर्म कमने कम उस कालमें तो इय ही गया था।

जन-माधारण हिन्दू, राम और कृष्णके रूपमें विष्णुके तथा शिव, गणेश, हनुमान्, दुर्गाके मुख्यतथा और सामान्यतया तैतीम करोड देवी-देवताओं के उपासद हो गये धीर उनके लिए शैव, शावन, वैद्याव बादिका बहुया कोइ मेद नहीं था, किन्तु प्रान्त, प्रदर्शों, जानियों और वर्गों को दृष्टिसे कहों शैव मतका, कहीं शावतका, कहीं रामभितवा, कहीं कृष्ण-भितका, कहीं जिगायत आदि अय किमी सम्प्रदायका यिशेष पक्ष था



नहीं पहना चाहिए। इसके विपरीत मेसूरके हैररप्रली और उसके वेटे टीपूने अपने राज्यके जैन-गुरुओ और जैन तीथोंको दान दिये और उनके थनणवेलगोल-जैसे तीर्थोश सरक्षण किया । स्वय औरगरेवके मुहम्मदशाह थादि वगर्जोने जैनाके आग्रहपर जब-सब जीवहिंसा प्रतिबाधक फरमान जारी किये, और सीमसी भडारी, रात्र कुपारामशाह, राला हरमुखराय, गजा सुगनचन्द आदियो अपना खजाचो बनाया तथा अपनी दिल्ली, आगरा आदि राजधानियामें भी जैनोकी धार्मिक स्वतन्त्रनामें विशेष वाधा नहीं दी । वंगालकी नवाबीमें मुशिदाबादका जैनवर्मानुषायाँ जगतसर और उसका घराना अत्यन्त प्रतिष्ठित था। धनकुवेर जगनमेठ उस राज्यका स्तम्भ था और लेंगरज भी उमका आदर करनेपर विवश थे। व्यापारियो-के रूपमें जा घोडे-बहुत जैनी बगाल, विहार, उद्दोसा, आसाम आदिमें थे उनको दशा अन्य हिन्दुओंसे भिन्न नहीं थी। यही दशा पत्राव, विन्ध आदिमें यी । दोप उत्तर भारत-दिल्ली-आगरा प्रदश, मध्यभाग्तक मराठा राज्य, राजस्यान, गुजरात आदिमे जैनीका अनेक्षाकृत बाहुल्य था, किन्तू यहाँ भी उनकी धार्मिक और सामाजिक दशा प्राय वहाँके अप हिन्दुओं जैसी ही यो। सुदूर दक्षिणक तमिल प्रदेश एव मैसूर अधि दक्षिणी कर्णाटकी प्रदेशोमें जैन-धर्म इस कालमे भी अपेक्षाकृत उन्नत दशामें रहा । अब भी कई छोटे-छोटे जैन राज्य वहाँ विद्यमान थे। उस प्रदशके जैन-तीर्थो एव गृहओका सन्धण एव कन्नड भाषाके जैन-साहित्यकारोका प्रश्रय वहाँ बराबर बना रहा । अनेक धार्मिक एव लीकिक ग्रन्य इन विद्वानोंने इस कारुमें भी वहाँ रचे । कई ग्रन्य ती ऐतिहासिक महत्त्वक भी हैं, विदीपकर वहाँकी एक जैन रानो रम्माका प्रेरणापर देवचाद्र-द्वारा रचित राजा-विलिक्ष्ये (१८३४ ६०) पर्याप्त महत्त्वपूण है । माहित्य-मृजनको दृष्टिस उत्तर भारतमें उम कालमें जैनोंके प्रमुख बन्द्र —गुजरात, दिल्लो, आगरा, और जयपुर थे। संस्कृत, हिन्दी, गुजराती आदि भाषात्रामें साहित्य-सुजन घलता रहा । किन्तु उसमें गद्य एवं पद्यके हिन्दी साहित्यकी हा बहुनता पड़ी बीर बच्छी प्रकारी बारपुर केल सर्वांच्यी एवं । इस केंद्र में पाँचे सरावस्त्री कारते स्ववंद्य प्रशासकार केल बाँगी एवं साहित्यानी मान मिनते हैं जिसमें बादमा एवं वर्डम प्रशास प्रदान्त्र है —मेलाएस, रोडराजल पुरस्तान कुत्रका वर्जीविक्द स्वाप्त्य प्रशास व्याप्त्य क्ष्मियन नदान देशका पुन्तामः देववान प्रमासकार रेग्वियव साहार्यकार्य सम्मान्त्रसाम साहर । पंतर्ग्य एवंद्रवासकार स्वाप्तेक रहिल्लीक वाली कार्यों इस्मुल्यार

और तुरमण्य मण्डपुरके बचाक विकास वादि हव अतन्त्रे प्रविद्य

प्राणियोंने ने हैं। प्रस्तुक राज्योंकी प्रास्त्रीकी यो इस कार्य हैंगे सीतों मानपूर्व मान निवा है। यूर्णम्लामें देशकांव सावण हैंगे या जिनमें निर्मेणसात प्रकृति का स्वाप्त के स्वयुक्त स्वाप्त की एक करण-स्वयुक्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त के स्वयुक्त स्वाप्त की एक करण-स्वयुक्त स्वाप्त स्वाप्त प्रकृत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त की स्वाप्त स

मारा ना चा। इक्या हुव राज्यक ब्रह्मा वाराध्य कर्गों कार्यों (२० १-४) हैं) च्या पालिश हाय हुए वह उसके क्षा मेंने भी वारा-नारण वर्ष एक्सीएंडी जायवा हुआ होनेंक दान-नी-क्ष्म गीर पीड़ों एवं हुआ क्षाणी था। बस्तुर क्षार बोल्युर पार्म के बस्तिय और नार्योग्नाकों को राज्यका क्षार व्याप्त को के करार विकारित हुवी नार्याच्या का दिला वा कर- बहुए एक्सी मोने एक्स विकारित हुवी नार्याच्या हिला का जोर बाल्या मीलिक कर विचा-रेशों पाना मानवार कामपुर को करे। ब्रावीवार्क वाण्य कर्मा पीना सेनों पाना मानवार कामपुर को करे। ब्रावीवार्क वाण्य कर परिवा-स्थान कर्मा वार्याकों को स्थान विचान क्षार कर क्ष्म कर्मा कर्मा स्थान क्ष्मी कर क्ष्मा की एक्सा विकास क्षमान्य कर्मा कर्मा पार्मी कर्मी कर क्ष्मा की एक्सा क्षार क्ष्मा और कर्मुपर वार्मिन क्षार क्ष्मा कर क्ष्मा कर क्ष्मा क्ष्मा कर क्ष्मा कर क्ष्मा कर क्ष्मा क्ष्मा कर क्ष्मा कर क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मा कर क्ष्मा कर क्ष्मा क नेनाको मार मगाया, और दोनो राजाओको अपने-अपने राज्यमें स्यापित इस दीवानने साम्मरको भी म्मल्मानोंमे विजय निया और दोनों रामाबाँक बीच जेंटवा दिया। राजापर बादशाहको प्रसन्न करनेमें भी यह नीवान सहायक हुआ और राजाक साथ दिल्ली गया तथा जब राजाको माउवाका सूवेदारी मिली ता उहाँ भी उसके माथ गया। तदुपगन्त राव कृतागम, जिवजी लाल (मृयु १८१० ई०), अमरचन्द (१८१०-३५ ई०) आदि प्रमिद्ध जैन दीवान जयपुर राज्यमें हुए। दीवान अमरचन्द गिद्वानीका भागे आध्यवाता या, निधन छात्रोंकी छात्रवृक्ति देता या, स्वयं मी वडा विद्वान् और धर्मात्मा या और अनेक मदिराका निर्माण एवं ग्रन्थोंको रचना भी इसन करायी यो। राजाका मारा दाप अपने कपर छेकर और अपने प्राणीको बिल देकर औंगरेजींक कोपने उसने जयपुर राज्यकी रक्षा की था। इस कालमें जयपुर राज्यके जैन-साहित्यकारोंने विशेष ऋपसे हिन्दी वटी बोरीके गद्यका अभूतपूर्व एव महत्त्वपूण विकास किया। जयपुरके विद्वानीका देशके अन्य प्रदेशोंक चैन विद्वानोंके साथ भी बरावर सम्पक रहता था। ग्रायोंको प्रतिलिपियौ फरनेका एक विशास कार्यालय भी इन कालमें वहाँ स्थापित हुआ जहींसे मर्वत्र ग्रंच मेजे जाते थे। अनेक जैन मिंदरोंके अतिरिधन जैन-मूर्तिकलाके निर्माणका भी केन्द्र जयपुर बना। केवल जयपुर नगरमें ही उस कालमें लगभग दम-वारत हजार जैनी थे।

जीवपुर राज्यमें महाराज अजीतिनिहसा प्रधान दीवान रघुनाथ मण्डारी था, जिमसी भण्डारी महाराजमा प्राइवेट सेकेटरी (तनदीवान) या और अनुपसिह जीधपुर नगरका धामक था। विजय भण्डारीकी राजाने गुजरासके सूबेका कार्यभार सम्हालनमें लिए मेजा था। हमरी बार पोमसिह मण्डारोको अहमदाबाद भेजा। मेहता सम्रामसिह और मावन्तिमिह जिलाधिकारी थे। अनयिनिहके समयमें सूरतराम मण्डारी दीवान या और रतनिसिह मण्डारीने अपने राजाकी ओरस १७३०-३७

रै में नुप्राप्त की सामेरणे मुदेशारी पूप्यकार्गांड को थी। वार्थ प्रदर्शने प्रदान परि से प्रदर्शने प्रदान परि से प्रदर्शने प्रदर्शन व्यवस्थ क्षेत्री प्रदर्शने प्रदर्शन व्यवस्थ क्षेत्री प्रदर्शने प्रदर्शन व्यवस्थ क्षेत्री प्रदर्शने प्रदर्शने प्रदर्शन व्यवस्थ क्षेत्री प्रदर्शने प्रदर्शने प्रदर्शन व्यवस्थ क्षेत्री प्रदर्शने प्य

का वेदोक्त चेदियु आर्थ व्यवसूर्ण धवान रहे । धारामें वैत व्यक्

नारबीय इंग्रिट्स एक प्री

सरदार और संदेशन के अध्योगन का बहारकीय नहीं और निधान

मग दम प्रतिशत थे, राजधानी उद्यपुरके अतिरिक्ष, निसीट, वेदारिया-नाय, ऋषमदय, बोबोल्बी, बरुवाडा ने रहा आदि प्रसिद्ध जैनतीय एव केंद्र ये। मदारक रेगरपुर, बौगयाहा, प्रतापगढ आदि उरराज्यामें भी जनाशी अच्छो प्रतिष्ठा यो।

जैसलमेरम एक विदाल एव महस्त्रपूष जैनग्रापभण्डार था। इस राज्य-में जनदीयानामें राजा गुरुराज (१७६२ ई०) का सम्त्री मेन्ता स्यमप-सिंह बिधिय प्रसिद्ध है। बाकानर राज्यम इस मालगे जैनदायानाम अमर-पाद मुराना अत्यिक प्रसिद्ध है। यह बार सनानी भी था, पई युद्धामें चमन विजय प्राप्त की भी और भाटिगार मान जाव्याम्त्रीका युरो तरह पराजित करक उमके पूर्व भटनरका भी हस्तकत कर लिया था। अजमेर मेरवाङ्गाया ज्ञामण १७८७-९१ ई० प बीच जैनवीर घनराज शघवी या । उसने चार वय तक निरन्तर मराठाक विगद्ध युद्ध गरके इम प्रदेशकी रहा। वा भी और प्राण रहते उन्हें उमपर अधिकार नहीं करने दिया था। चूँदी, कोटा, अलवर आदि अत्य राजपृत राज्यॉम भी जैनोकी प्राय ऐसी ही स्यिति यो। सम्पृण राजस्यानयी जनसम्बाका लगगग उस बाग्ह प्रतिसत वर्तां जैन थ, और यहा ऐना प्रदेश अब रह गया या जहाँ जैन मात्र सेठ साह्कार जीर व्यापारी ही नहीं थे वरन् उनमें-से अनेव वीर यादा, सैनिक, सामात सरदार एव राज्यमात्री भी थे तथा शायनम विभिन्न पदींपर मी बिना भेदभावके नियुक्त हाते थे।

इस पालके सवस्यापा नैतिक पतनके प्रभायसे जैनधर्म और जैनी जन
मो अस्त्रें नहीं थे, हिन्दुसाँका जैनिबिद्धेप मा यदा-कदा एय यद्म-तय महक
उठना या और वही सक्यामें जैनी लोग अपना धर्म त्याग कर वैष्णव भी
धनने लगे थे। भट्टारबीय विश्विलाचार, रुढ़िबादिता, संकीणता, अदिक्षा,
जाति-पौतिके कठार बचन, छूआछूत, बालियाह, बहुपत्नीत्व, सहमरण
आदि सनेक सामाजिक कुरीतियाँ क्या हिन्दू, क्या जैन और क्या मुसलमान,
समोमें स्थाप्त होतो जा रही थी। सम्पूर्ण भारतीय समाज एक अजीव

निरामानार वर्ग निप्रतिकारके बनाइको चैनकर अधनतिबीत वर्ग 451 61 1 इसमें कालेज नहीं हैं कि इस बहु-भी बचके मुचके मारम्ब तर की भारतीय मध्यमा और मंत्रुनि ननारके नवी देवींने अधिक बडी-नडी के

बह क्य रवदे करा कर नशीवे विकास वर्ता। इस कामने जन्म देखीने विधेवपर यरंतीय देवांल अब बागुगपूर्व समानि की जारको बनुपूर्व

अवन्ति सी ।

अध्याय ह

यूरोपवासियां-हारा भारतकी ऌट

थीरगडेयके जोवामें हो निर्देशकि मुगलगानेतर भारतायाचा राज भैतिक पुनस्त्यात प्रारम्भ ही गया था, और उसकी मृत्युक उपरान्त १५० यपने बीच यह पुनरावान अवने चरम जिलाक्यो पहुँग्वर देश और जाति-का बिना कुछ हित किये ही इतयगी अवनन भी हा गया। हिन्दू राज्य-मिनिने प्रयम्ह स्त्यानम मन्तुत्र मुगलमात तला दय देशमें पराभूत हो ही पुरी पी, बिन्तु छम हिन्दू राज्यशक्तिमें स्वयमे एबसूनना मधी। शात, जाति, पर्ग एव व्यक्तिगत पक्षपात, पृत्र, यैमनस्य, स्वार्धाचता एवं अहूरदिशतान उस महान् प्रयत्नको पाल दिखानेथे पुर्वे हा व्यक्षे बार दिया। इतना ही नहीं, श्रीमा कि पय जब्यायम बणन किया आ चुका है, देश और दसवासियाको स्वय जनक अपनीन हो घार अराजकता, अशानि, अध्यवस्या एवं अीतिनताम नुमाना आपनारमें हुवी दिया। पौरणाम यह हैया कि सुदूर पश्चिमन उटकर आय कतियय गृक्षाकी लालुप दृष्टिने हैस प्रकार क्षेत्र विश्वत, आहम एवं मृतप्राय भारत एप भारतायनाना मन्पट रक्तजायण एव मान भागण करनका समुत्युक्त अवसर दला । गात समुद्र पारस आनदालंडन मुद्दा भर अनुस्लम्पनीय, शवित एय साधनविहीन, विन्तु चतुर छाहमी एव गृन यूरोपीय कुटेरान अपन आपका कुछ नहींस मेच कुछ बना लिया । १७०७ स १८५७ ई० पमन्तके भारतीय इतिहासका पननी मुखी भारतीय रूप ती पूर्व अध्यायमें दल ही चुक है, प्रस्तुत अध्याय-में प्राय इगी बारुमें भारतमें भारतबासियोंके ही घन-वल और वृतपर निरायानार नवं निर्वारियारके स्थापकों श्रीपकर अध्ययिक्त कर पत्ता था। सन्ते व नों को स्वी है कि इन वेशकी व्यक्त सुपक्त सारव दक्त में भारतीय नाम्या और नीवृद्धि तंत्रारके सभी वेशिन वरिक करी-नार्ट के बढ़ कर नवड़े करना तक नवीन रिज्य करी। इन वापसे कर्ण देखी

स्थानति ग्रहे ।

विदेशकर बुरेबीय देशोने अब बन्दवपूर्व कर्णात की आरामे अनुवर्ष

चस ममय भारतका ममस्त पिश्वमी जलमार्गी व्यापार अरवीके हायमें था। पुतगाली उ हें हराकर पश्चिमी ममुद्रतटपर जम गये।

१५०५ ई० में अलमिष्ठा उनका गयनर हुआ। उसने पुर्नगाली वन्नियोंने लिए कृष्ठ किसे भी बनवाये। १५०९--१५ ई० मे अलबुकर्क भारतम ुनगालियोगा गयनर रहा । उसने गोआपर अधिकार करक उसे यहाँकी पूतगाला बस्तियाकी राजधानी बनाया । समने मलक्काकी विजय किया, रंका सक्षात्रा, चरम्ज बादि द्वीपोमें पुतवाली वस्तियां स्वापित की, भारतम गोत्रा राज्यको कुछ विस्तृत करने संगठित किया, उत्तम द्यासन स्पत्रस्या की और शामन-प्रबन्धमें हिन्दुओंको भी नियुक्त किया। मुमलमानोंसे पुतगाली वडी घृणा करते ये। मुसलमान स्त्रियोस विवाह करने और मुसङनाना तथा अन्य भारतीयायी ईसाई बनानेका भी वे प्रयत्न करते थे। अल्युक्कं भारतमें पुर्तगालका एक विशाल एव सम्पन्न उपनिवेश स्थापित भिग्ना चाहता था। उसी समयमे व्यापार गीण और ईमाई मतका प्रचार तथा पुतगाली राज्यका धावत-मवघन पुतगालियाका मुख्य उद्देश्य वन गया था। दक्षिणके विजयनगर और बहमनी गज्यो तथा गुजरासक मुल्तानोंके भी राजनैतिक सघपमें पुतगाली आये। मृग्रलकालमें भी पश्चिमीतटपर वे एक महत्त्वपूर्ण शक्ति बने हुए थे और सूरत आदिस हें इक लिए जानेवाले मुमलमानोंके मागमें भागे वाघक होते थे। अत उनका जव-तब दमन भी किया जाता था। अकवरकी इच्छापर गाआक पुतगालियाने सम्राट्के दरबारमें जैसुइट पादरियोके दो तीन ईसाई घम प्रचारकदल भी भेजे थे। १५८० ई० मे स्पेनके राजाने पुतगालको अपने राज्यमें मिला लिया, तभीसे भारतके पूर्तगाली राज्यको स्वदेशका राज्याथय समाप्त हो गया और उसकी अवनित हान लगी। शाहजहाैन विगालके पूर्वगालियोंकी ज्यादितियोंसे चिढकर उनकी बुरी तरह मुचल डाला था। तदन तर फ्रामीसा, डच और अँगरेजोंने उनके पूर्वी ब्यापारके ण्काधिपत्यको नष्टकर दिया। अन्तत गोजा, डामन और द्यूके अतिरिक्त

इक्लिमचानमें गुरोपके निवानियाका भारतवर्षक क्षाव करायन राज्यक कुमानिकाके हारसे सुखा - ५वी दक्षी शाली हैं - वर्षने ही कुमान और मारतना मान्हतिक एक शामनिक स्टार्थ वरासकास स्थापित हो वदा या। ४वी मनी ई. पूर्ण विकासके पास्त साहासको राज्येतिन हो न्यासारिक सम्बन्ध की इरबंध काली स्वासित हुए। की कई क्यांन्सिनी हंड मके । तहननार शेमन शासामध्ये प्रत्यंप आक्रम रोजवे ताम भारतरा स्वाचार बड़ा-पड़ा था। होना वेडांके बॉच दूक राक्ट्रन जारि हो जी-क्ये । देशान्त्रीर देशाई प्रतके बदनके बी-तीन बी वप परनाय है देन इंबाई वस-बनारक बोलन बारतमें बाना नताना बारा है किन्द्र तहुनरान्य क्याबर एक इचार वर्ष तक शतकाव विष्क्रेय रहा । भूरोगका व्य अ^{न्तर्पुर} बा इस्कानके अवन्तवेतके नगमून ईवाई वर्ध वर्ष बुरोपकी पन्ति हरापने एन राधमूत हो रही थी। कई ती वर्ष तक अपने मन्तवामी अवस्था बारिया बढ़ार करतेके सिए व्रशासन ईनाई मन्द्र दुर्क मुस्तानाने बार्न वर्तवृक्ष करता रहा । १४५० है में वृक्षी हरता कुन्युन्तिवाकी विजनी कारान्त क्यों जारत एवं अन्य कृषी देखीके काम नुरोतका सम्पर्ता विराध्यक्षके किए सबस्य हो तमा वहाँ मुग्रेपमें एक तमीन मासूचि चेंग्नी साहस और पराध्यका सहय हुआ । पारतके करामानीस अमनीजनामे स्थानियों तर्वत्र प्रथमित की । ऐसे जपूर्व तेवाके ताथ स्थापार करके व्यव

क्रमंके जिल्ला स्वेष मुरेरवानी क्रमाधित से किन्तु कोई नार्न ना सा स्वार पुराद है से बारको क्रियाम मास्क्र साथी कई जानां एवं माने क्रियोची क्रमाने कर मानेक स्वार्थित साहान्यक स्वरूप कारको क्रमाने प्राप्त केन्द्रियों के प्राप्त केन्द्रियों कार्यक्र कार्यक क्रमाने क्रमाने रोजके नार्वित मारको स्वीवधी-निषयो स्वार्थ क्रमाने स्वार्थ कार्यक क्रमाने क्रमाने क्रमाने क्रमाने क्रमाने साहत्य साहको क्रमाने स्वार्थक स्वाराम्य क्रमाने क्रमोने साहत्य क्रमाने कर पर्ता नि

क्प्रीके श्वारा और उन्होंका क्यबोन करके किस प्रकार पूर्व मेंबरेबेले हुई वैपमे कल्टी प्रन्ता एवं प्रमुखका विकास विकास कल्का वक्त करना है। सबसे पोछे प्रारम्म हुआ किन्तु उन्होंने वही शोध्रताके साथ उन्नति की। १६४२ ई॰ में सर्वप्रयम फ्रान्सके तत्कालीन प्रधान मन्त्री रिशलूने तीन मम्मिनियाँ इस उद्देश्यको लेकर स्यापित कीं, किन्तु वे थोडे समय पश्चात् ही मग हो गयीं, ब्रिसका कारण सरकारो कमचारियो एव पादरियोंका अनावश्यक हम्तक्षेप था । १६६४ ई० में फान्सके बादगाह लूई चौदहमेंके मन्त्रा कोल्बर्टने एक नवीन कम्पनीकी स्थापना की जिसका उद्देश व्यापार चतना नहीं या जितना पूर्वी देशों में फान्सकी राजनैतिक शिक्तकी स्थापना एवं फ्रान्सके राजाको दाक्तिमें वृद्धि करना और ईमाई धर्मका प्रचार करना या । फलस्वरूप १६७४ ई० में फ्रान्सिस माटिनने भारतके पूर्वी तरपर फारसके पाण्डुचेरो उपनिवेशकी नींव डाली और बगालके चन्द्रनगर-में एक ब्यापारिक कोठी बनायी। सदनन्तर फ्रान्स और हाल्ण्डके दीच होनेवाले युढाँसे इस कम्पनोको भारी क्षति पहुँची और १७२० ई० में चेसका पुन मगठन हुआ। उसी वर्ष मारीशस द्वोपपर सथा १७२४ ई० में मलादार तटवर्सी माही नामक स्थानपर फ्रान्सीसियोंका अधिकार ही गया।

फान्सीसी गवनर डयूमा (१७३५-४१ ई०) सत्कालीन दक्षिण-भारतको अध्यसस्यित दशाको देखकर बहुकि छोटे-छोटे राज्योंके राजनैतिक मामलॉम हस्तक्षेत करके अपनी धावत बढ़ानी प्रारम्भ की। तन्जीर राज्यमें उत्तराधिकारके लिए होनेवाले युद्धमें उसने एक पक्षको सहायता की छोर उससे कारोकल प्राप्त कर लिया, जिनसे फा सोसियोको धवित, अधिकार कीर प्रतिष्ठामें पर्याप्त विद्व हुई।

वैदनन्तर इप्ले (१४७२-५४ ई०) मारसमें फान्सोसी गयर्नर बनकर आया और उसके साथ ही फार्स्सासी करूपनीके जीवनमें विजय एप राजनीतिक विकासका नकीन अध्याय प्रारम्भ हुआ। धूप्ले निम्हायों, स्वरेशमक्त, अस्यन्त चतुर एवं यूटनीतिपटु था। अपने मेहोसी मारसीय राज्योकी राजनीतिका उसने मसी प्रकार अध्यान कर निया था। अपने मयोनस्य कर्मसारियोंके साथ वह कठोर उसवहार करसा

प्रशा और बाई प्रशेष न पर नथा। हिन्तु के छीटी-केने पुत्रपति विभागों कुछ हिन पूर्व छह कर्षी बाती पति बीर पुत्रपति पीतारी बरावा भी सराना बातिन पत्रपत्र सामीतिकार कर्युम्ब पूर्व निश्त करवार की हुई थी। रे हिन्द्रपर १९६१ ई. जो बीवा प्रमान कर्यु है होती पुत्रपत्रीं बिल्डरों भी विषयण अरहा नव प्राम्यों करवा सी करी बीव साराने बर्गिन्द्रपत्रपत्र कृष्णना क्यांग्रप्त हो सामे।

ार्यपर-विकासी देव को यह दुवान कावित ही क्षेत्र में। ६६ हैं में बूरी देवान तथा करणार करनेते किए वस्तुत्व कुछ जनकी वस्ती बीर बार हा जनवा हीत वस्त्रीन कालेले स्त्रुपार्थ क्ष्यां करणार्थ करणे प्रदास्त्राव्य कर्या किया करणा कराई कर्युक्त स्वरूप से बार्स के वस्त्री दिन्न बेरदास्त्रोध क्षेत्र विद्यानकाले वारण जारतोव क्यापार्थ कर्यों की

जारून योज है निक्क बादा गार सारामंत्र ही होंगी वाहित्यों आरं दीर स्थापोर्ट (म्यू मुद्र बक्ता पूर्व । स्थापाय हिन्दे क्योंने स्थित मेरेप्टारात पर कर राज्य जिल्ले स्थापास्त्रकार १९५५ हैं हिल्ले स्थापंट राज्येंन्स हाम्लेक्स हार्क्यका द्वारात पर काम्लेट संदर्भ काम्लेक्स कार्यें स्थापास्त्र । संदर्भ कार्यें स्थाप्ट राज्यां स्थाप्ट संदर्भ कार्यें संदर्भ कार्यें स्थाप्ट संदर्भ कार्यें संदर्भ कार्यें संदर्भ कार्य संदर्भ कार्यें संदर्भ कार्यें स्थाप्ट संदर्भ कार्यें स्थाप्ट संदर्भ कार्यें संदर्भ कार्यें स्थाप्ट संदर्भ कार्यें संदर्भ कार्य कार्यें स्थाप्ट संदर्भ कार्यें संदर्भ कार्यें स्थाप्ट संदर्भ कार्य संदर्भ कार्यें स्थाप्ट संदर्भ कार्यें स्थाप्ट संदर्भ कार्य संदर्भ

क्षणों अविश्वास व्यासीय शोतंत्रां उनके किन वर्षी बीर दिन्तुया सर्वे रो-इर स्वासीये ही करण सारण तीम स्रीत्यर यह कया किन्तु व्यासी स्वादीर दश्या प्रयोज्ञिय वर्षात्रा प्रयास प्रयास प्रयास प्रमुख्य कर्णा प्रशास रूपमा देश-केला करेड वासी देशपात्री विश्वासी वेतीये यो सरकी सन्ता देश-केला करेड वासी देशपात्री विश्वासी वेतीये यो सरकी सन्ता देश-केला करेड वासी देशपात्री हमारी हमी यो सरकी

रमें। अंतरेड ओर फान्याबिरोणे कर्षे बीमा हो इन देगण निवासं बाहर क्रिया। अपने मूर्तिकों वेद्योंको देशा-वेखी जल्बीतियोचे जी नूरी देशके वार्य अगुरार करके किया कर्याबारी स्थापित करें। जलब्बीतियोज स्थ स्वरूप

चद हो गया और मद्रास धँगरेजोंको वापिस मिल गया।

इस युद्धके फलस्वरूप इन योगों विदेशी जातियों हो अपने पहोसी मारतीय राज्यों को कमजोरी मालूम हो गयो, और अपनी वस्तियों के बासपास सी-मी मीनके क्षेत्रमे ये भली-भीति परिचित हो गये। अवनक उन्होंने यह भी ममझ लिया था कि देशी राजाओं पारस्परिक झगहों में पड़कर कितना लाभ उठाया जा मकता है। उन प्रकारक हम्सक्षेपकी पहल ताजीरके मामरे में ऑगरेजोंने ही करने फामीमियीका प्य प्रदर्शन किया था। दूपलेका स्वय भारतीय स्थितिका अच्छा झान था। उसने यह भा अनुभव कर लिया था कि यूरापीय युद्ध-प्रणाली एव मैनिक अनुशासनके कक्षपर सुर्थवस्थित यूरोपाय सनाआक हारा अधिक गरपावाली भारतीय सेनाआको कैसी आसानोक साथ हराया जा मकता है और अपनी शिंव खूब बहायो जा मकती है। अत उमने अवसर मिलते ही पडासो राज्योंकी राजनीतिमें भाग लेनेका निद्धय कर लिया।

अवसर भा तुरन्त आ उपस्यित हुआ। १७४८ ई० में आसफ जाहको मृत्यु होते ही निजाम राज्यके उत्तराधिकारका द्वन्द छिडा। उधर क्णांटकमें चौदा साहव वहाँके नवाव अनवक्दीनको गदीसे उतारकर स्वयं नवाव बनना चाहता था। निजामका पोता मुजक्र प्रज्ञ जो चौदासाहव मिल गये और उन दोनोंने फ्रा सीसियोंसे अपने प्रतिद्वन्द्वियोंके विरुद्ध सहायता भौगी। दूछे ता अवसरकी ताक में ही था, सहप तैयार हो गया। तीनाने मिलकर अनवक्दीनपर हमला कर दिया, वह पराजित हुआ और अम्बरके युद्ध १७४९ ई० में मारा गया। उसका लडका मुद्दम्बरलो तिक्विराप्ति भौगरे कों परणमें भाग गया, चौदा साहव कर्नाटकका नवाय हुआ और इस उपकारके लिए उसने फ्रान्मीसियोंको ८० गाँव प्रदान किये। अब तोनोंने मिलकर मुजफ त्र पुत्र पराजित हुआ, तथापि थोडे ही समय परचात् नासिरजंगके मारे जानेसे वही हैदराबादका निजाम बना। उसको

या । बनको जारांका मारतमें बहुन्तीयो सर्वशन्ते कस्पीक नहांक भीर बार्ग एक अच्छा विश्नुत पास्य बसाकर अन्ते वेजको साम चौरा मीर बंधरा बीरव बदानेको भी । वैधे नृष्टा सारतके शालाररा स्थ उपनेके बिए ही इन व्योगीय नव्यनिवोती स्वापना हुई थी। कार्ने र् इन नवन रेपक बैनरेको और जाल्लोनो ही हो बळातिको छ नदी थीं व्यागारिक मिनव्रविता वर्षे मिनव्यती को इनमें पुरस्पर की 🗗 क्का मुक्त राज्यी बरावरगारा काव स्टाकर वे बच्नो । उनैतिक स्रीर मो बडाने सनी की । यूक्त बीर इन्हेंबडवें इस कामार्ने इसाधारिक संपूर्त मी भी । मनः मारवनं से बोलो चन्नानिसं परस्पर लड़ने असे । फिन्तु वर कि फल्हीमी रामशीको कहा इस देखके कही अही-नहीं की अवरिने नामनी बनाये स्वाजित्व सार्वन एवं बमुद्धि जान्त कर चुनी वो । मृत्योची परागोपी कोजा यह लाविक साधनसम्बद्ध जी वी व्यक्ती बार्राणे वन्तियों भी वर्गकाकुन अविक मूर्शक्त मुच्छित एव विकास में और दनवैनको पाना मा बालममा भो बचके बागोंदें बोर्ड इत्बक्रीर न मा रिन्यू बान्धीनी जननो इक बरकारी काली वो क्रको शासकी बडी-

क्यारर पूर्वजर निर्वत की क्यांचे कर्मचारियोकी निवृत्तिन की कर्मच भी बरारा ही करावी की कीट राज्यार तथा बर्चन कर्मचारिती हरूने कोट के राज्य नामनीवा जात्यार तथी कुरावीच बात करवा था। हरी प्रधार एक्सिटिक स्वित्तितृतार्थी काम्या शास्त्र किए जो क्येरोडो क्यांची-की निर्वति स्वीत्त्र पुरुष्ठ की क्यांचा चारवार्थे स्वीतंत्र की क्यांचा क्यांच

भी कि मुरोरमी रंजीन्य और जुम्बके बीच प्राप्तम द्वीनेग्रक्षे दुवके वान ही किंद्र नया ना, पान्तीन वाहानवाके बातहूब बुम्बीनियोक्टे निर्मेद कर्म-भवा न स्थि। दुर्जने नाहान्यर अंशन्त ही करवा कर स्थित रिस्ट संपर्दानी को बाद सम्बोधियोजी परास्तित स्थित। १७४८ है है सीचे

न्यर्थक का पार मानवाशयाका पराम्य त्या । १४४८ है . में साथ वैपंकि दीन एत्यावपक्की वर्गित ही वार्यक कारण वारतने जी क्लका नुवे

आस्त्रीय विकास न स्वा प्रति

4 4

चंद हो गया और मद्राम अँगरेंजोंको माविम मिल गया ।

इस युद्धके फल्टबक्टा इन बीगों बिदेशी जानियां ने अपने प्रशासी भारतीय राज्यों के कमजारी मार्ट्स हो गयी, और अपनी बित्तियां वासपान मो-मो मोलक दीवम में नजी-मोनि परिचित हो गये। अवतक जिहीने पर भी ममदा लिया था कि देशी राजाआर पारम्परित अगदाम पड़र किता लाम उठाया जा मकता है। लग प्रवास रम्परियों पड़ल ताजीग्में मार्मर्थें अगरेजान हो करके प्रशासीयांचा प्रप्रधान किया था। इस्तेन यह भा अनुभव कर लिया था कि यूरागीय पुज-प्रणाला एवं मिलन अनुधासन में बलपर सुव्यवस्थित यूरागीय सनाआक दारा अधिक सम्यायांकी भारतीय सेनाओंको वैसी आमानोक माय हराया जा मकता है और अपनी यादिन सूर्य बढायों जा मकती है। अन उनने अवसर मिलते हो पडासी राज्योंकी राजनीतिम भाग करेनेका निद्ययं कर लिया।

अवसर भा तुरन्त आ उपित्यत हुआ। १७४८ ६० में आसफ जाह की मृत्यु होते ही निजाम राज्यके उत्तराधियाण्या हुन्द्र छिडा। उधर कर्णाटकमें चौरा साहव बहांक नवाय अनवनहीनको गहोसे उतारकर स्वयं नवाब बनना चाहता था। निजामका पोता मुख्य करण और चौरासाहय मिल गयें और उन दोनोंने फा सीमियाने अपने प्रतिद्वन्द्रियोंने विषद्ध महायता मौगी। टूफे ता अवसरकी ताक में ही था, सह पराजित हुआ और अम्बरके पृढमें १७४९ ई० में मारा गया। उसका छड़का मुहम्मदअछी तिस्विराण्यकीमें लगरेजोंकी छरणमें भाग गया, चौरा साहव कर्नाटकका नवास हुआ और इस उपकारके लिए उसने फान्सीमियाको ८० गाँव प्रदान किये। अब तीमोंने मिलकर मुख्य कर्य पराजित हुआ, तथापि थोडे ही समय परचात् नासिरजंगके मारे जानेसे वही हैं दराबादका निजाम बना। उसका

बहामताके किए एक क्षान्तीशी हैता. हैंदरावाश्ये निवृत्त्व की नगी, क्^{रान्त्री} विमोत्री पुत्र कर और कई जिले निने स्तर्ग बुध्वेको थी एक वाकीर निको । बद् सन मारधीय क्यानोत्री जैव-मुनाने बन्हींची वाई उत्त-नार्ट पाने बना । कुल्बीको देशापति बुबोको संरक्षकार्म वृत्रकारकंत्र राज्यानी दिश्यक्तर पहुँचा मिन्तु एक कशांत्रि नाग्य तथा । बुबीने बक्के स्थानी माजक्रमध्ये ही एक पुत्र समामतक्षणको नवाच वयाचा और स्वर्ध वाले बेरमकने करने ठास वर्ष (परानालों हो कार प्या । पूर्व गांव सेन्स न्यूर वर्ष दूरवर्धी या. राज्यमें क्वीका प्रवास तमोद्रीर या । बन्ती केवास क्षर्य प्रकारके लिए को निवास्त्रे बताये बरकारका प्रदेश जिल क्या ना। रेक्प्ट हैं में बुबीको पापन बुबा किया कहा और बक्के मानेके बार ही निवान राज्यके कुम्बोरिक्तीचा प्रवास असके किए वर स्वा । की बीपर्वे १ ५१ हैं में अंबरेकोचे कर्याटककी राजवानी अफॉडका क्व^क वेश शक्कर और गाँशवाहरको पर्णाव्य करके मुहम्बरक्वीको प्र^{मूहक} या नवार बना विवा या और इस सकार कुलेके आमें कार्यको निवर्ण गर दिना था । इन कमाचारीको सात करके अपन्यश्री करकार कुलेले ^{सह}

गर दिना था। इस कायावरोको जात करके खुम्मकी बरफार मुम्लेले भी हो गयो और उसने रुप्पार है है को पायन बुम्म किया। वसने करिया के स्वयं कार वर्षिकार क्षित्र के स्वयं कार करिया है माने करिया के स्वयं की रुप्पार की स्वयं की स्व

. .

बारबीय इतिहास : एवं ^{हरि}

षाण्डामके मुद्धमें बँगरेज नेनानी सर आयरगूटने लैलीको पराजिस करके बन्दी पर लिया और इंग्लैण्ड भेज दिया। वहाँसे उसे भास जानको बनुमति मिल गयी किन्तु उमकी सरकारने उमे भृत्युदण्ट दिया। युसी भी कैदमें डाल दिया गया। अगरे वर्ष पाण्यीरीपर भी अँगरेजोंका मञ्जा हो गया । १७६३ ई० में पेरिसको सन्विसे इन गुद्धका आत हुआ। इन सन्विके अनुसार भारतमें फान्सीसियोकी पावित एक-दम घट गयी, उनकी सेनाकी वस्या बहुत कम करके नियत कर दी गमी और प्रदेश विस्तारपर भी प्रति-वन्य लगा दिया गया । यगालमें ये अब केवल व्यापारीके रूपमें ही जा सकते थे। हैदराबादमें उनके प्रभावका अन्य हो हो गया था, फर्णाटकर्मे मी कोई अधिकार नहीं रह गया था और उत्तरी सरकारके जिले भी र्थेगरेजोंके हायमें आ गये। अब पाण्डुचेगी, च द्रनगर आदि दो-सोन छोटी-छोटी बस्तिया एव उनमें स्थित उनको ग्वापारी कोटियाके अतिरियन भारत-में फा सीसियोंकी कोई सत्ता न रह गयी और भविष्यके लिए भी कोई आशा न रह गयी। फ्राप्तको मरकारके लिए उमने इन भारतीय प्रतिनिधियोंके युद्ध एवं माग्य परिवर्तन अत्यन्त गोण घटनाएँ थी । वह इस प्रयत्नके तथा उसकी विफलताके मुल्यको तबतक औक ही नहीं पायी यो ।

आस्ट्रिया, स्वेष्टन, स्वाटलैण्ड आदि अन्य यूरोपीय देशोंके निवासियोंने भी नारतके सायव्यापार करनेका प्रयत्न किया किन्तु मब ही अमफल रहे।

इम कार्यमें जो सबसे अधिक सफल हुए ये यूरोपके उत्तर-परिचममें स्थित इिन्हिस्तान नामके एक छोटे-से द्वोप देशके निवासी अंगरेज ज्यापारी थे। उन्होंने न केवल पूर्तगालियों, डचों, छेनों, फ्रासासियों आदि अय यूरोपोंय जातियोंको ही भारतीय ज्यापार क्षेत्रसे शनै अनै निकाल बाहर किया वरन् पहिचम देतोंके साथ होनेवाले इस महादेशके सम्पूर्ण ज्यापार-पर अपना पूर्ण एकाधिपत्य स्थापित कर लिया। इतना हो नहीं, देशके सबतोंमुखों पतनसे लाग उठाकर उन्होंने इस पूरे महादेशपर अपना पूर्ण राजनैतिक प्रमुत्व भी स्थापित कर लिया। देशके राजा-नवाव, सामन्त-

सरकार और-दानू और उन को देखके वनिवाँको ही सुटकर देखना वन देवमें ही रक्षणे में जिल्हु इस नहरू लुटेरोने की मारतमांक बसी करें भीर बंधी शामनीको मुद्र-कटकर चौगांक कर दिया और वस स्टब्रे गुपुरस्य रवरेम स्वतानि वर्ग स्वताध्यको सवदीवृत्ती लोक्ति क्वार्टिक सनूनपूर्व पर्व अनुमानलीतः भरम-विकारगर गाँचा दिया । क्लके इस्तम्बेनके पूर्व कत्तर सबक राकडी मीयन क्याक्षता एवं अग्रान्तिक समयूव इत रेक्टी नगनाचा बहुमान प्रमन्त्र भ्रामं च हुन्दक वस्तकाद, कारीवर आदिको नीर्र स्वायो प्रति नदी पर्देशी वी व उद्यंती सन्तावक ही को देएका आधार भी भेरे देशे पक रहा का और सर्वेक देशवादी ही। बहुका माप उस पे म । जिल्ले ही प्रान्तो-अवेची और राज्योगें कव-तव सुबावय मुख-वा^{हिन} मारिका मा अनुसर जोदा रहता या । नित्तु अंबरेजेली वर्षकेतुर दृष्टि वर्गा निर्वय कारा-वज्ञ हवर' वस्तराद, व्यवसायी ज्यासारी वर्णेकी भीर क्रापूरार राज्य और लगांग कोई थी व बचा। जिसके जिन क्^{रूपि} मी कुछ मी क्रीना-संपद्ध था। जनता च्या चक्र कन्द्रीने क्रीना जीर अच्छाप रिया । बाब ती मारतमाविकोको नाह कह-सहकर बन्द्रह हुई शास्त्रह करनेका प्रकल विश्वा कि क्षणने दुम्हें बीर असान्ति वस्प्रमस्या, क्रम्प्रस्था बीर अरबावे मुख रिया है, हम तुम्हें बच्चापूर्व युधायन दर्ग मुखा जात कर है है और इन मालना तनवर्धी करार निरम्ब यह शासनसम्ब है। यह बंद पूर्व सैंपरेशिया हान या और बकेयर नमक विकामें है समार बर जिल्लू बन रुपय बेक्सी पदा देशी धोफरीन ही गयी को उत्तरीहरू होनी था पत्नी की सीए जाने की होती. चनी चनी कि वजनें न दी वर्ग क्रोरों सक्तको और न क्यार पनन क्रिक्त कारेके डोमेंपाओं नैनीरीरी भद्रमून बरबेको सामः कोई श्रृतितः सामर्थ्य ता प्रवृत्ति रह नवी ग्रे । १ क्वीं शरी है। में जारमाने नुष्ण जेनरेख क्यानाधी वर्ष-वयन मारत

समी और रपाल-कात वर्षों भीतर हो। समूमि इस देखरे सन्ते करिन्य स्माचरित सट्टे समा निर्मे और बाव हो पूर्वपत्तिओं, त्रचों साथ त्रार्थियाँ इ. इ. आस्तीन इतिहास । एक परि प्रतिइन्द्रियोको प्रतिइन्द्रिताके क्षेत्रस निकाल बाहर किया । उससे प्रगले पवास-माठ वर्षीमें चन्होंने अपन भारतीय व्यापारणा समुप्रत कर लिया, चमक द्वारा अपने-आपना और अपन दन एवं राज्यका गुममुद्र कर लिया तथा भारतवयमें अपने व्यापारिक अटाका जाल भी धिरतृत कर लिया कोर गुष्ठ मुद्दू मुरक्षित ने इ.भी बना लिय। तदनन्तर अगेर पद्मास वर्षीमें फ्रान्मीसियाँक रूपमें एक नवीन मिन्सु सर्वाधिय प्रवल प्रतिद्वाडीना ए हें सामना परना पड़ा, किन्तु उन्हें भा अन्तत ऑगरेजान युनल दिया, साथ हो फ्रान्मानियोगो पुचलाव प्रयन्तमे उन्होन देशने तान छोटे, और पटोक्षी देशी राज्याके अन्त याजह एवं उनकी विष्यावस्थाना लाम चठाकर अपनी राजनीतक प्रतिनयी सुदृढ नीव भी इस दशमे जमा दी। सब उनका ही सला और वहा और आगके पनाम वर्षीम उन्हान दूतवेगस एक एक मान्य ग्रमस्त दक्षिणापथ एव उत्तरापथमी विभिन्न हिन्दू एव मुनजमान राज्य दाविनयोंपर अपना प्रभाव एवं आधिपत्य स्थापिन मार िया। और उसमे बाद अराजनता बालके शेष पचास-साठ वर्षामें सिन्य, पराव, बदमीर, नेपाल, वर्मा आदि सीमात प्रदेशाको भी अधीन करके तया पहरे हो बधीन कर लिये गये राज्यो एवं प्रदेशोपर अपना पूर्ण मनुत्व स्थापित परये और समूचे महादेशको नि सस्य करके एव अपना बनाषर उस सुदासन, सुरक्षा, याय, सास्कृतिक पुनक्त्यान आदि प्रदान करनेका दाग भी प्रारम्म कर दिया। किन्तु इसी युगक अतमें बहुभाग भारतने अँगरेजोंके मजवृत पजीसे देशको मुक्त करनेका भी एक भगीरथ प्रयत्न किया । देशमे दुर्भाग्यसे या सीभाग्यसे अथवा उसक नेताओंक स्वयंमे दोपने वह प्रयत्न विफल हुना। फलस्यरूप देशमें जो पुछ सस्य वच रहा या वह भी कुचल हाला गया और अब सम्पूर्ण भाग्तवर्ष वस्तुत. लेंगरेजा-🖭 अपना दास और अपनी सम्पत्ति वन गया। भले ही अनेक अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिमों सथा इस प्राचीन देशको नष्ट न होनेवाली प्राण शिवतके पुन सचारके बारण अँगरेजोका वह प्रभुत्व पूरे सी वर्ष भी न चछ सका।

१६वीं बनान्ये हैं में बन्तरतात हो एक बील में रहेड वर्षानर बानी व्यक्तिका करने जारत साथे थे । १५८८ वें में बंबरेजीने संस्के मारमेरा नारक एक माध्र महाबी वेडिकी वराजित करके क्रिय-विश्व वर क्या या । इत विश्ववदे मुरीपर्ने इत्थिलतापथी प्रतिद्वा वह समी बीर अंपरेजींकी नाविक धर्मनाकी पान जन करी । जब अंगरेज अस्तात, मी मुचरत्या समुत्री वाष्ट्र और वाविक अुटेरे 🗗 वै बूर-पूर समुति वारे मारने करे । बगुरी भागारने क्लो नियदवर्थी वर्ष कीम तब्दे बनिय बड़े-बड़े में जीर प्रकृष्ट कारण करणा हैया जाकदार ही रहा का । कार पुनिवस्तोत्रे निक्ष्मे की वर्षाने जारको ताब न्यापार करके व्यापाना है। र्थे वे । जाराके सनुवासारीय पत्र-वेक्नकी बद्यानियाँ हर्रेक-वर्गे अर्थाकी भी। यह रोपी बारमेहाची परावर कुर्वशक्ताली-हारा स्थापित धार्यः के बाप नवीन बसूरी कार्नेत श्रीनेनामा वानावाय मीर वर्षोक्य व्याच्यी त्वर्ग बद्ध वर निमंबर जैवरेंब स्थानारिनीक किए नारी प्रेरक गरंब हुए। पूर्व माधारक बान होनेशक बानवी बाधावे में ततुन्य हो पने । बा

वप् १६ हैं में संबोधको प्रावणों क्रमणे पुत्र वेश्व मार्गारियों देव कामी सार्गित की बाँद कांद्र मिल समी पार्म इक्तिमें में मार्थ स्थारि पूर्वी देवें का स्वाराप स्थारिक स्थारि अँगरेजो कम्पनीने गुजरातमे मुगुल सूचेदारसे सूरत, सभात तथा अय दो स्यानोंमें व्यापार करनेकी अनुमृति प्राप्त कर छी। उन्होंने यह समग्र लिया या कि पुर्तगालियाका दमन किये यिना मफनता न मिलेगी, अत एक भीपण समुद्री युद्धमें च हाने पुर्तगालियाको हराकर अपनी स्थिति जमायी । इसो समय उनके राजाका अधिकारप्राप्त राजरून मर टामस रो (१६१५-१८ ई०) मुगलसम्राटके वरमारमें पहुँचा । सम्राट्यो बहुमूल्य मेंट और उसके बारफ़नहीं सादि मन्त्रियोगो पूस देकर सथा अपनी चातुरीरे उसने अपनी ईस्टइण्डिया कम्पनीये लिए मुरसमें व्यापारिक कोठी स्थापित करनेका कर-मान प्राप्त कर लिया । सम्राट् स्वय इस योचमें पूर्तगालियोंसे रुष्ट हो गया था भीर उनपर अँग्ररेज़िन जो समुद्री विजय प्राप्त की थी उससे उन्होने स्वयको पूर्वगालियोंका प्रयल प्रतिद्वन्दी सिद्ध कर दिया था, अत समाटने इन दोनो चजातीय फिर्रागयोंको परम्पर लष्टानेका अवसर खोना उचित न जाना भीर अँगरेजाको मो प्रश्नव दे दिया। सूरतमें हवोंने भी अपनी कोठी स्यापित कर ही थी। १६१५ ई० में अँगरेजोंने पूर्वमालियोंको फिर एक जहाजो युद्धमें हराया और १६२२ ई० में ईरानियोकी सहायतासे सर्मूज-द्वीपपर भी अधिकार करके पुर्तगालियोंकी अत्यन्त श्राप्तिहीन कर दिया। १५८० ई० से ही भारतके पुतगालियोंको अपने देशके राज्यसे कोई आश्रय या सहायता मिलनी बन्द हो ही चुनी थी।

अब अँगरेजोने बगालकी खाड़ोमें भी पुसना प्रारम्भ किया, मछली॰
पट्टम्में एक अड्डा बनाया और फिर १६२५ ई० में आरामगाँवमें अपनी
काठी स्थापित की। १६३९ ई० में आरामगाँवकी कोठीके अध्यक्ष फास्सिस
हैने चद्रगिरिके विजयनगरवशी राजाके प्रदेशीय नायकसे लगभग दस
हजार रुपये सालाना किरायेपर एक मील घौडी एव चार मील लम्बी
सम्द्रतटवर्ती भूमि प्राप्त कर ली। इस कायमें निकटवर्ती सेनवामकी
पुर्तगाली बस्तीके पुर्तगालियोने भी अँगरेजोंकी सहायसा की। और
इस स्थानपर १६४० ई० में मदास नगर सथा सेण्टजार्ज दुर्गकी

नीय परि । ६६ है है बारामां क्षापुण्य हुम्मों के बीरिट्रें वार्थि बागी मार्गाम्य थी। १६६६ है है हुआ हो हाता बामी दिन्छें गाँ। उत्तर्वार्थीं काल दिवाद करने व्याप्ट स्वाप्ट देश्य प्रमा विद्या मा १६६ दे में मान न का त्याद वस्त्र मीता कालाम विद्यार स्वाप्टिय वे दिवा नु एवं कोड़ोंने सामन कीया व्याप्ट (१६६८-१) तब वे तबन भी पुण्य तिमान काला वीन्दिर कीडी म्याप्ट । श्री १६ दे के नु एक क्याप्ट वार्ड मी बाद मार्ग्य देश्य स्वाप्ट प्रमान कर वन मार्ग १६६६ है में कार मार्ग्य देश्य स्वाप्ट प्रमान कर वन मार्ग १६६६ है में साम मार्ग्य देश्य

हैं मैं बनने बार्ग बारकार। नवर बोर डोर्ट (विकास) शेर सामे क्यां भोरोंने कारों स्थानिक वा : रही बार्ग हैं एसीओं । परमांत्री बस्से हुई वांका बोर बीमारों मा मा रिपार हुआ बिन्नु बोलिया -बास्पर्क राम्बनियोंनी मुन्द नैतर सम्बन्ध माने कर जिया बोर हुई । हुँ है तुहरू बस बायार मान वर्ष किया - विन्नु बस्स कोरोंक अनुसारिकों हुंब्ली होते हैं है

11

मानगार ी भी हुम्मी लीत अलगी अनुमांत जिम्म वर्गी और मर्थ १६६

त्रान्तु वाच क्षणस्य व्यातास्त्राद्या प्रयास कार न्यास स्वरं मा आर्ट्याम प्रविद्वालः यह प्रक्रि

शात न हुए और १६९८ ई० में कुछ अन्य व्यापारियोंने राजाजा लेकर एक नयों कम्पनीकी स्थापना कर हो और यह दोनों कम्पनियाँ सारतीय ध्यापारके एकाविकारके लिए परस्पर लप्टने लगीं। अन्तत १७०८ ई० में दोनाको 'सयुवन ईस्टइण्डिया कम्पनी' नामके अन्तर्गत मिछाकर एक कर दिया गया। इस समय मम्राट औरगजेनकी मृत्यु ही चुकी थी। मारतीय इतिहासका मीपण अराजकता युग प्रारम्भ हो रहा था। अपने व्यवतकके गत सी वर्षोंके कालमें अपनी व्यापारी कम्पनीके आश्रयसे नेंगरेज जातिन अपने प्रतिद्वन्द्वी पुनगालिया एव उचींका सर्ववके लिए हमन करके पिवसी देशोंके साथ होनेवाले भारतीय व्यापारपर ^{अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया था, दशके विभिन्न ब्यापारिक} केन्द्रामें अपनी व्यापारी कोठियाँ स्वापित कर ली थीं तथा देशके पहिचमी वटपर बम्बईको, पूर्वी तटपर मद्रासका और वगालमे कलकत्ताको केन्द्र वनाकर और इन स्थानोमें अपन सुदृढ़ दुग एव वस्तिया वनाकर सपनी न्यिति सुदृढ़ एवं स्थायी कर ली था। इसी वाच मारतमें कम्पनीकी उत्तरोत्तर उन्नतिके फलस्वरूप कम्पनीके हायरेपटर, हिस्सेदार, कर्मचारी बादि ही नहीं इन्लैण्डक अन्य ज्यापानो, व्यवसायी, नाचारण जनता, राजा जीर मत्री मा पर्याप्त मालदार ही ाये थे। कम्पनीके जी कर्मचारी भारतमं कार्यं करनेक लिए आते थे चन्हें वेतन बहुन थोडा मिलता था, किन्तु उसकी पूर्ति करनेके लिए उन्हें व्यक्तिगत ब्यापारकी सुविधा दे दी जाती थी, अत कम्पनीक वहाने भारतमें आनेवाला प्रत्येक अँगरेच कम्पनी क प्रमान ब्यापारके अतिरिक्त अपना स्वतन्त्र व्यापार भी करता था भीर मालामाल हा जाता था। १७०८ ई० के पूर्व शिवत्थाली मुगल सम्राद्के भयसे और उनके व्यवस्थित सावदेशीय प्रशासनके कारण सेंगरेजा-की यह प्रवृत्ति अति सोमित ही रहीं, किन्तु अब उत्तर मुग्रङकालकी वित्तरोत्तर बढ़ती हुई सराजकता, अशान्ति एव सन्ययस्याका छोटे-चहे समा

रोपवासियाँ-हारा भारतकी छ्ट

मानेके क्यानव प्रवर्गीय पर तक कॅनरेज मुक्त-पाकास्थर। पार्च पर्च किमा-निम्म सीमा जीर देशकी विश्ती हुई राजनिक स्थानी पुराना देलते रहे। इसी बीच इकाफ हैं में दिल्लीके निकाने नारबाद प्रस्तीत भरतो और उत्तक वरशारितीको तुन जारि वेकर बन्होंने दिया। धामानर विने ही न्यापार करवेची कृत तथा सन्य अनुस्य मुनियार्दे शास वर वी भीर पुरुषर माने न्यापारको स्वाते रहे । देवको सम्पर्धका स्व बिय नवा शना क्या क्याने अपने केली एवं कीडिनॉकी चोरी, टाउँमी, कुरैयो बाविते एका करवेके बहानेते कन्द्रोंने क्य जन्मी वेटा की तैयार कर की जिल्हें बेंबरेज बक्करोंने जरीन एवं अनके जांच प्रशिवन जांच मारतीय रैनिक सी बड़ी श्रेक्यामें रखने प्रारम्य कर दिने । इसी बड़ानेने क्योंने बनने दुनोंची थी नुमूह कर किया और सम्मी वस्त्रिमों दर्व सीडियी वी विकेशमी भी कर को । अनवा क्यानी देश अवसी बहाराओं कि निषट पहरा ही था। किन्तु वर्धा कान (१७२ ६) स्मर्वाची कानी क्षा बंबरित होकर तरे बलाझ और वर्क काव वैदातने किये म क्तरी । सबके मुख्येम्य वर्ग शीवनायम्यः नवर्गरीके हातमे स्वन्तीविजीकी पूर्वी बरिनवीं एवं चारतने बनके केन्द्र बीहा ही लुबहिय एवं बरपूर ही नर्व । कृत्वीची कलती बरकारी को सबके नार्मकर्या यो बरकारी पर्नेपारी में बोर बंबरा प्रचान बहेरन को राजनीतक ही मां अब मीत वर्गोंने ही चनकी व्यक्ति और अविकार अस्तितक वह समें । यह सर देशकर औररेज वह विकास हुए, हिन्तु कुछ कर की स बके और अर्थ-नरकी शाक्षमें बैंडे रहे । सुम्बीकी कारगीके बाज वृद्ध सेव्हेंका अर्थ की कारणे तान प्राचेणका वृक्ष तील केना विश्वका कार्यन वह वैरहरणारी बेनरेवी कम्मनी वहाँ कर एकती थे । कुम्बर्शवर्शका त्रवान ^{क्रे}न 🖽 रानुद तरपद स्थित पाणुलेरी था । जसके मिश्ट ही प्रक्रिकरी होर हैं रेवींचा पीठ केन्द्र-वेशिय या और नोड़ों पूर यक्तरमें कन्ना इच छान्छ NAME AND ADDRESS OF A

जाकरीय इविदाल एक दी

111

१६७६ ई॰ में ही पाण्डुचेरीके फान्सिस मार्टिन नामक गवर्नरने एक छोटे-से स्थानीय सरदार होरखाँके लिए वल्दूरका दुर्ग आक्रमण-द्वारा हस्त्रगत करके फान्सीसियों और अँगरेजोंका मार्गदर्शन कर दिया था। अब १७४० ई० के रूगमग पाण्डुचेरोके निकट ही दक्षिणकी ओर स्थित छोटे-से तजौर राज्यमें उत्तराविकारका प्रदन उपस्थित हुआ । गद्दीके लिए दो दावेदार थे। फा सीसियोंके भयसे उनसे पहले ही अँगरेजोंने एक पक्षका समर्थन किया, पुरन्त फ्रान्सीसी गवर्नर इच्माने दूसरे दावेदारका पक्ष ले लिया। मामला विना कुछ रक्तपातके ही निपट गया। किन्तु अँगरेजों और फ्रान्सीसियो दोनोको ही तन्जीर राज्यमें थोहा-योहा प्रदेश मिल गया। १७४० ई० में यूरोपमें ही फान्स और इन्लैण्डके बीच युद्ध छिष्ट गया। अब तो कोई बाघा हीं नहीं रही, भारतमें भी अँगरेज और फान्सोसी परस्पर छहने लगे। १७४८ ई० में एलाशपलकी सिंध-द्वारा यूरोपका युद्ध बन्द होनेपर भारत-में भी युद्ध बाद हो गया। इस युद्ध के फल्स्वरूप किसी भी पक्ष को कोई विजय या लाभ प्राप्त नही हुआ, दोनोंकी स्थिति पूर्ववत् ही रही, मद्रासपर फान्सीसियोंने अधिकार कर लिया था वह उन्हें वापिस मिल गया । तयापि इस युद्धने इस देशमें उन दोनो जातियोको सैनिक शक्ति भोर राजनैतिक आकाक्षाओंको नींव हाल दो एव उनके राजनैतिक उत्कर्प-की सम्भावना दिखा दी।

इस सम्बन्धमें यह ज्यान रखनेकी बात है कि १८वीं शताब्दीके इस मध्यकाल तक अँगरेजों या फान्सीसियोंकी भारतकी राजनीतिमें अथवा भारतीय राजे-नवाबों, दिल्ली दरबार या प्रान्तीय शासको अथवा छोटे-मोटे सामन्त सरदारोंकी दृष्टिमें भी कोई गणना ही न थी। बहुत-से तो ऐसे थे जो इन्हें जानते भी न थे या जिन्होंने इनका नाम भी न सुना था। अनेक ऐसे थे जो इन्हें अति तुष्छ एव चपेक्षणीय समझते थे। शेष वे जिनका इन लोगोंके साथ ज्यापार आदिके कारण कुछ निकट सम्पर्क पड़ा या इन्हें अपने अनुप्रहका याचक और अपनी द्यापर आध्रित एक सामा य

ग्रामी वर्ग-मार नगरते में ह बनशी शृक्ति में मैकारे नुपूर निरेत्नी ामप्रक शाहा के लिए अनेच अन्तिम प्रदावत अनेक देवने अनेक ने े दनको परापर अपनीवन सर्वेशके विशेश करियेजार वे जिससे का । तथा और जिल्ले अवारायय महिन्दा लहाउता देखा आहार सहिती जेती मारमेचीका बनाम का - के नारगारिक क न्यमट् में शाहितात स्मार क्या में स्व कारे कार बारता व त देखें का मनत पार्ट कि इन कीरे प्रमा । प्रमाणना क्षेत्रको कार्योतको विगति कर्ण शास विशे काने । यह दम मेरे व अब समाह गाउँ हव अनिकारका कर्ण इस्तर प्रमध अध्यक्ष अवस्ता या और वर्धा के यह ध्री बेस्स ही म म िं ब बक्त देखती है। उन्यक्तिको ही क्षेत्रकर क्या वर प्रामेशी नीर्रियो-साप ही नहीं है बागू हैने विचार बाय है। की बारे देमका रहा मोचन करके उसे निर्धीत करके हो दन मैंचे । देवकी बयानि, अन्यसम्य बीर नैतिक दान तथा राज्याविकारियोंडी इस वर्णशार्म बतारवासगान बैंबरेड वे ब्रान्ता ताब ब्राला शास्त्र कर दिया । दक्षिकडे वधानके बरको तथा बान शालीय शृषेशांकि स्थलप ही अर्थ नारिएकपंत्री बरंडर मूट बरालीके शतकारी जारी, विक्ला, ब्हेंचों मारिके क्रायानी बोर नेपराबॉको कत्तर्मात्तृती विशवन्तरावति वन स्वय एक रिप्पी बादबादनके ही नहीं क्लून देवके राजनैतिक अधिक और नैतिक पर्ण-को रिल्क्टर पहुँचा तिमाना । जीवरिश्लोक ही अध्यय प्रवारेंचर गुन देवचा बानाजी बाजीराण्ये बुर्जर मान्तीय शाविक तरदार मात्र और धनको बन्छ भगाती यांनाको अब कर दिया ना । विकासने जाने गेटके भरादा बरशारीकी बध्यक्ताने एक बक्त मानिक वरित्रना निर्माण पूर्व दिकान किया का जीर में नरशर वने अञ्चल बचाने हुए ने। कनुगी श्रीनके महत्त्वने अन्तिम देशके जिली की जल्द करेयने बम्पनालने देशको नामित्र बरिनाने विकासको बीट ज्यान हो। नहीं दिया था । मुरीने वानिशोंके प्राप्तक वशाहरणने जो बन्दोंने जोई बनक नहीं निया और नहुर

वालीय इतिहास अकटी

र्यो पेपताओंने की वर्षेन्युषे सापनमं भी हाम की रिवे ।

रेजर८ हैं। में विकास साम्याह सहस्रद्वात मन गया, विकास निकाम राज्यका सहयावन आसप्तत्रात्र निजामान्त्र भी उसा गर मर गया। मह क्षारम् बहण्यपार करण्यान्ते जनस् सरमपुर आक्रमण विकासः टूपरो शोरा पाणाओका सराहा ग्राम्य का सालवा, गुल्याप, मण्य नीरस, राजस्थान, संगाय बिलार और उत्रीमाना ग्रेटना गुरू कर दिया । ण्य ग्रमयम विश्वास काउपके जन्माध्यमपुरवा प्रथम ज्याक्यम व गुपा । निवासका प्रधम बना पूप मोर जिल्लोमें शकीक यन बैठा था, कृमका पूप नाविरक्ता निवासक विकासकार देशा विष्णु जसका जातका मुझपक्तकारेन स्वयं निजाम यनना चाइना था । इसी समय संगोटन का गंधाय धमाव रिडेहान फारगीसियोंक मद्रामका हस्त्रगत करनेके कारण ऑगरे-बाका महायनार्थ का मानियानी शत्रुना माल ले जुरा था आर चनके द्वारा पर्राप्तित मी हा चुका था। अत का मानियाने उस पदच्युरा सरके वसने एक ग्रम्याची चौदा साहत्ववा नवाय यातिकी गोजना की। धाँगरेन बनकहोन और उमके पुत्र मुहन्मदअलीके पर्णाटयमे और नामिरकामें हैदराबादमें पद्मपाती हुए । अत एकाजपत्रवी मन्पि हा जाने और गुरेंपमें मा बीबी और अँगरेजी सरकार कि बीच युद्ध बस्द हा जानेपर भी भारतमें इत दानो जातियोंके बीच युद्ध चालु रहा। प्रारम्ममें मातीमी ही दर्णाटक बीर निजामराज्य दोनोंमें हो सफन रहे बीर फलस्वरूप उन्होंने घन, प्रदेश ^{ी वि}त और प्रभावका पर्याप्त लाम किया। अँगरेज यह सब देखकर चुर बैठनेवाले नहीं थे। इन प्रारम्भिक विफल्ताओंसे ये बढे शुक्य हुए। इस धमय वलाइव नामका एक साधारण धरका आवारा अँगरेज युक्त महासकी कोठीमें मुत्तो या। उस कालको परिस्थितियाँके कारण भारतमें जैगरेन पम्मिक प्राय समस्त कमवारी मृद्यों भी थे, व्यापारी भी थे और मैनिक भी थे। क्लाइव एक दो छुट-पूटे युद्धोंमें भाग लेकर एक छाटा-मा नेना-नायक वन गया था। उनने अपने गत्रनरमी यह योजना मुझायो कि छोदा

न्याचारी यम-मात्र नजारी थे । बनशी व्यक्ति में बैचारे नपुर निरेशन प्रमार कार्यारके नित्र करेक कोशिश शहाकर अबके देखने आलेगाने भीर धनकी बसापर वक्तिका रहनेवाँक किर्नेता बन्तिये-बाच में स्थिती हा परमा और प्रिप्टे बनायका मुक्ति। नुप्राथना हेना बादर्स अनिब्रिप्टे भारतीयों हा कलार था । ये बारक्षी क बा नाना रूचे बातिनात स्थार्थ मारगर्ने रुप भीते भूगा मारुनीय बहुत देशमें। यह समझ बादे कि एन मीटे बरागरियार अपने प्रधान सबनी सालीनमें विधित साम तान नाम निर्मे हैं जो अदनर पाने ही यहें इस मेंथे. वे कब नयश गार्व तब प्रतिनारका बाई बचार बबक हाक्ये हैं। ह बचा ब्यार और तब धी से ध्रा की नगब ही स बंधे कि में बबल देशको पात्रकाशिनको हो बनकर बन कर जानेगाये मेंपीनिये-बाज 🗗 नहीं है बाज हैने क्रिक्ट बाव है. वो लाई देगका रस्त मीवण बर्गा दने निर्मीत करके हो एवं सेंग्रें । देवको ब्राह्मीत अल्लामा बीर वैतिक वंपन क्या राज्याविकारिबीकी इस कुल्यापन बतानवान्याका अवर्थनेने प्रान्ता काक कराना शारक कर दिया। क्षतिकके अवाकरे बरवरे तथा बाब हान्तीय नवेतारिक स्थानम हो बार्च नहीरकार्य मर्थभर तृत सश्चानीके वास्त्रानीं, बारों, विक्ती श्रांची शारिके वरासी बीर पेक्वाओंको कत्तराणिमुक्ती विकट-वातावीने क्षत सुवस एक विश्ले मारमाहतूके ही नहीं कर्तू वे वेशके राजवैशिक मार्थिक और नैयिक प्राप्त शो विकास वहंबा दिया था। वीगरेजीके ही बकाव दवारेगर मुर्न रेक्का बाबाजी बाजीराणमें एकर मारतीय गाविक बरसार मात्र मीर

वानी क्या बहुवी प्रीत्नां तह कर दिया था। हिराबों सार्व वैपर्ट माइत बरावीं में सम्बद्धां है एवं ब्यूबा पादिक एतिना दिन है विकार किया जा गी. में घरदा कर मानुष्य करते हुने हैं पूर्व प्रीत्नी प्रदूरणी समीवा देशके मित्री की क्या नी को मारकारी देशनी वादिक परिचले विकास ती है। यहाँ दिया हो। यूपी-स्वारी वादिक परिचले विकास ती स्वार्म है। यहाँ दिया हो। यूपी-स्वारीं के स्वार क्याडरणें से वास्त्रीं की स्वत्न हों। सिना सी साई-

. 411

भारतीय इतिहास पुत्र दक्षि

१७५४ ई॰ की सन्धि भली प्रकार कार्यान्वित भी न ही पायी थी कि १७५६ ई० युरॅपमें फान्म और इग्लैण्डके बीच सातवर्षीय युद्ध छिड गया। फलस्यरूप ससारके जिस किसी भागमें भी अँगरेज और फान्सोसी पास-पास हुए वे परस्पर लढने लगे, भारतमें भी दानों जातियों में लडाई प्रारम्म हो गयी । विन्तु फ्रान्सीसियोका सेनापति लैली १७५८ ई० के पूर्व भारत न पहुँच सका और जब वह यहाँ पहुँचा तो बगालको अद्भुत विजयके कारण अँगरेजोकी शिवत दसगुनी वढ चुकी थी और उनका स्थिति बहुत सुदृढ हो चुकी थो। ललीने दूसरी भूल यह की कि हैदरावादसे बुसोका भी वापस बुला लिया, फलस्वरूप निजामके राज्यमें भी जो मारी प्रभाव बाठ वर्षीसे बुमीने जमा रखा या वह सर्वया नष्ट हो गमा और इस राज्यमें भी अँगरेजाका अपना प्रभाव जमानेका अवसर मिल गया जिसका लाभ चन्होंने नासिरजगकी मृत्यूपर सलाबतजगकी नवाब वननेमें सहायका देकर तुरन्त और पूरा-पूरा उठाया। उधर लैलीके नेतृत्व-में फान्सीसी सेनाको ऑगरेज सेनापति मर आयर कूटने १७६० ई० में वाडवाशके युद्धमें बुरी तरह पराजित किया, लैलीने भागकर पाण्ड्चेरीमें शरण लो। बँगरेजोंने उसका मी घेरा डाल दिया और १७६१ ई० में उसपर अधिकार कर लिया। चन्होंने लैली आदिको बन्दी वना लिया शीर भारतमें फ्रान्सीसियोकी आकाक्षाका अन्त कर दिया तथा स्वयको सजातीय (युरोपवाधी) प्रतिद्वन्द्वियोंसे सर्वया मुक्त कर लिया। इसी वर्प पानीपतको ऐतिहासिक रणभूमिमें भारतके साम्राज्यके लिए मराठों कोर बक्रगानों, अथवा हिन्दुआ और मुसलमानों, या भारतीयों और विदे-शियोंके बीच भीषण युद्ध हो रहा था। सारे देशकी आंखें उघर ही लगी हुई थों, दक्षिण भारतके पूर्वी तटपर इन विदेशी फिरगियोंके बीच होने-वाले इस छाटे से सवर्षकी ओर किसीका ज्यान भी न था। विन्तू वास्तवमें भारतके भाग्यका निर्णय १७६१ ई० के पानीपसके युद्धमें शायद उतना नहीं हुआ जितना कि पाण्डुचेरीमें फान्सीसियोकी पराजयमें हुआ। इस मारवको राज्ञपानी अर्थादका है स बाल दिवा बावै जिलका करियान सर होना वि सौदा नामय विचनायानीका थेना ब्रधानर अहाँ उनमें मुसम्बर समीको केर रचा है। अपनी पात्रवानीकी प्रशांक ईनाए बीहा सारेगा मीर मुहस्मात्रनी मुक्त हो बार्वता । यह धोतना वार्वाच्यत को वरी । १४९१ f & unter mit withalt beit mateu fter bim frei all भी दिल क्षत्र यथ अवस्थी वीरे नहां रहा : बात्रे शीवता बक्त हैं कोशनार्थ पर्णातंत्र हुना और अंगरेशोंके निय संगीरके राजाके हारा नार्प तना । शहरत्वत्रता वीवदेशीयो सहावत्राने वर्णादक्या नवाद हुआ । दर्प शासके काम्बोर्डिकरीका समाय वर्षका बढ वका और अविदेशीका प्रमाय सरिकार और वॉन्ड अन्योवंत वह वर्षे । इन क्यान्ताके वारम समाहरती प्रतिद्वा और नान मी एक्सन वह को। कल्लकी नरवारने बुक्ते हे रह होकर ub aren any first offe bubbe & it nighturk are nier unb इस बळका साथ किया । बक्दीरका बैदा और अंबदेशहरू सर्वादकी मरासीहर ब्रमालयारन वह कामने बारतीय शक्तीक्षित्री एक बायना तुम्ब मीन अनुन्तेवकीय वर्ष वर्षप्रणीय चटना थी। विश्वीशा वी प्रशास इसकी और बारक नहीं हुन। फिन्यू एवं तुष्क बीतने ही यह बेनके बाद पंचार नहीं है जीवर ही मेंगरेबोर्फ निवास बास्त्रीय शामान्यका कर बारम कर किया ह १७५३ हैं में क्लाइक इंप्लेच्य क्ला बना, तो क्ल बाद वाल्य सोटा मीर बाकों कुछ नया भेगरेती शोरकामा वर्ग केमा तो सामा । अलो ही बनने सम्बद्धि है - बील प्रतिकार्त निवस नारतीय न्याविक वासूत्रीके वेरिया ना विकार्य नामक प्रतिक पुरुष पूर्वको अस्तराह करके बनको प्रतिनको सह कर दिया । यह पुरुष्ठे वदलेषे वधानी वस्ताहि निकट ही हुन भूवि प्राप्त कर की । प्रतिकारी तरपट शह श्रेंदरेश कामरीकी तनववर निजी मूबन्पति थी । वित्रवृत्तेत्रा नाव इव बात्रवा क्ष बाह्यस्य है कि कैंके वेंगरेपनि वर्ग-वर्गः चारतके समुद्र-सहयर शिक्षयेः 🚮 वाग्री क्रेग्री-क्रेग्री भारतीय गारिक वांत्राचीश क्या कर दिया ।

ध्यालीय इविदासः एक ग्री

...

समम्म प्रतिद्विद्विश्वेंनो पछाड बर समत स्यापारम नेमृत्य कर लिया था। यगालक विभिन्न प्राराम समयो अनेक स्यापारिक कोडियां फैल गयी थीं। प्रम्यकता समय प्रपान काइ था जहाँ स्वाहाने सुदृढ हुग, गुगडित बस्ती तथा जल और पलकी दिविध सँग्यामित्रते सुर्शित हातर अपनी हालि बहुत बढ़ा की थी। अलीयर्दियाँ उनपर पृग नियायण भी रुपे हुए था और भोतर-ही-गीतर समस भय भी माना था। सहीं बादू बनानेका समने समी प्रयत्न पही किया।

किन्तु १७५६ ई० में उनकी जिसतान मृत्यु हो जानेपर उसका वौहिय तिराजुद्दीना बगालका नवाब बना। यह बीर एर्ध समाग्रय सा था किन्तु अनुभवतीन अरहड नथयुवन था। अँगरेज स्वापारियोंकी व्यावतियोंकी देग-सुनकार बह पहलेस ही उनसे चिंडा हुआ था, अब इसी वर्ष गुरोपमें सप्तवर्षीय युद्ध छिट जानेके समाचा जानकर इस देशमें भी परस्पर युद्ध हिल जानेको बागकासे बगालक अँगरेजा और प्रान्मीनियाँन अपनी-अपनी बस्तियोंकी क्रिलेबन्दी मण्नी और गैनिक भर्नी करनी मुक करदी। नमयने यह दशकर उन्हें रोका। फ्रामीनी तासुरत मान गर्य दिन्यु अँगरेजॉने उसकी अवशा की और एक अहमन घृट्टतापूर्ण उत्तर नवाबनी लिख मेजा। 'नवावके मुख विद्रोहिया एवं मयानक अपराधियोंको भी उहाँने शरण दी और नवायकी माँगपर भी उन्हें उनके ब्रियकारियाक निपुद नहीं किया। शाही फरमानाको आटमें व्यापारके बहाने भी वे देशमें अनाचार करने स्मे थे। यह सब नवीन नवाद महन न फर मका अत उमने उनकी क्रासिमवाजारकी कोठोपर अधिकार करके वलवत्तेपर धावा कर दिया। कलकत्ताका गवर्नर, सेनापित और अन्य बहुत में ऑगरेजा भाग निकले और कुछ मारे गमें। घोछ ही नवासका अँगरेजॉकी वंगाल, विहार और उडीसामें स्थित प्राय सभी कोठियोपर अधिकार हो गया। इस पराभवका समाचार जैसे ही मद्रास पहुँचा अँगरेज चिन्सित हो उठे और उन्होंने अपने कर्णाटकके

नातवर्धीन पुत्रने अँगरेडोले भारतीतियोको आरतने ही नहीं बुरोलने वर्षरिका और कमाराजे. परिचारी हीच-समृद्ध और असोलामें कर्षत्र पराजित णिया और समेक्षे जाँचनार, बाँग्स और जनायको हानि शहुँचायो । १७६३ रै में रैरियमी शन्तिक हारा योगों देशोंके बीच युद्ध बच्च हो परा । इक बुढ़के गीरागर्ने बचाइयमें की जंगालते क्रांग्य बाकर काल्पीकर्मोरी परामित करनेमें दिस्ता देखना ना और फिर सुरस्त बंबाई बार्स समार विक्तुराचे क्योला क्ष्माना क्षमा कर दिया गा १ इस प्रकार १७६३ ई. में नाफ्से कर कोई वृक्ष्येय यक्ति संबदेशों है। हास्तुरही या प्रक्रिपती न रह बच्चे नी और न किसी बन्चके करता होनेकी ओई सम्मानना प्र कारी को । वती कुछ के प्रशंकत और कनीके बीच खेंबरेबोजी को बबते समिक महत्त्वपूर्व वयमना ही क्षत्र कर्षी बंदाकर्य प्रत्य हुई। बुनैरार मुर्विस-दुनीयां बीर प्रशासीन तथा पराच संबोध-धिक्षकि यात्रन (१७ ७-५६ र्द) वें समयम प्रवाह कर्व काना बंगाब देखक निवादिकोने चारलारिक नकिप्नुता क्यारता लुख-धान्ति बीर नुवाक्तकः क्ष्ययेत किना वा। इन रिकार्ने वह क्षान्त सारतमें हाफ बरनार था। इनक पूर्वी मैं बर्मीशर ठरूला थे, बस्य आविक ब्रखोल-क्ल्में अधि बनुवार के, मनिकाद नागरिक स्थापार जी सुक्ताचा चैत्र केल्लि हार्पी स्थानक या १७४ में के ही रचनी योकतेके मेहनपूर्व गराजीने प्रीपम मुद्देरे माळनमाँ-शांच देशको अवस्य 🗗 पर्याप्त हान्य पश्चिमको यो. जीर सम्पन्ति कराम कर यो थी। जिल्लु नवान जानीवर्शीस्त्रीने जरूपी चतुराईने वस्त्री औ मान पा किया था । वंदाक्रमें कालीची अन नाएगोर्थनम जैनरेड भागि स्तिकी कारापी नुवेदारी और नवालीकी क्वारताके कारण स्वाननाठ-पूर्वश्र अपने व्यापारकी बराधीतर बक्तत परते पहित्रे । जाना बन्नत

समस्त प्रतिद्वन्दियोंको पछाड कर उक्त व्यापारमें नेतृत्व कर लिया था। वगालक विभिन्न नगरोंमें उनको अनेक व्यापारिक कोटियाँ फैल गयी थीं। कलकत्ता उनका प्रधान केन्द्र था जहाँ उन्हाने मुद्दू दुर्ग, तुगटिल वस्त्री तथा जल और थलको द्विवध सै यशिवतसे मुरक्षित होकर अपनी शिव वहुत वढ़ा ली थो। अलीवर्दीखाँ उनपर पूरा नियन्त्रण भी रस्ते हुए था और भोतर-ही-भोतर उनसे भय भी खाता था। उन्हें शत्रु बनानेवा उसने कभी प्रयत्न नहीं किया।

किन्तु १७५६ ई० में उनकी नि सन्तान मृत्यु हो जानेपर उमका टोड़िक सिराजुद्दीला वंगालका नवाव बना । यह बीर एव सदाग्रय ता था 🞉 अनुभवहीन अल्तृष्ट नवयुवक था। अँगरेज व्यापारियोंकी उष्ट्राहरू देल-मुनकर वह पहलेसे ही उनसे चिंढा हुआ था, अब इसी वर्ष कुर है सप्तवर्षीय युद्ध छिष्ट जानेके समाचार जानकर इस देगमें के, दूरपुरर युद्ध छिड जानेकी आधकासे वगालके वँगरेको और प्रशहरीय हुँ अपनी अपनी यस्तियोंकी क्षिलेबन्दी करनी और मैंटिह द्वर्ण कुन्न्न शुक्त कर दी। नवावने यह दखकर उन्हें रोका। हार्ट्य के हुन्द मान गये बिन्तु अँगरेजोंने उसकी अवझा थी ॐ रि ४००० घुष्टतापूर्ण उत्तर नवाबको लिख भेजा। 'नवाबके हुत किहारिक, गाई मयानक अपराधियोको भी उन्होंने घरण दी और हर्ना क्रिक्टर मी उन्हें उसके अधिकारियोंके सिपुर नहीं किए। इन्हें १४० हर्निक आहर्में ब्यापारके बहाने भी वे देशमें अनाषार उपने की है। महस्व नवीन नवाव सहन न कर सका अत उमने रुख प्रतिकार प्राप्त कोठोपर अधिकार करके कलकत्तेपर धावा कर दिला स्टाइन्स गवनर, सेनापति और अन्य बहुस-से अँगरेज़ कर पित्र और कुछ जारे गये । शीछ ही नवावका अँगरेजोंकी वगाल, जिल्ला और उर्गाटक वि प्राय सभी कोठियोपर अधिकार हो गर्रा हो स्टान्टकर ना जैसे ही मद्रास पहुँचा अँगरेज चिन्तित हा हुँ की निर्मा कर्न कर्न

बौर १५ - दिन्तुस्तानी विचादिकींको वेना सबके बाच करके शबकताने बिए स्वामा कर दिशा । इन्होंने बाते हो बक्कशा वादत के किया वर्गेर्डिक नवाद वहाँ जोडे-के रीतिक क्षोतकर मध्यी शतकातीकी राध्य मा जुना या । सब में इनबोदी ओर को । नशनकी एक क्रेसने बाव मुस्तेत मी हुई रिश्नु हार-बोवरा निषय होनेके नुव ही होनों पक्षकि बीच बन्दि हैं। नवो । बॉररेडोशो जनमे वय कोटियों और बहुके बॉबस्टर शास्त्र विकास वे । नवाबके गरित अन्याचारके सम्बन्धमें अंगरेशीओ जहनानैके जिए हालैक-हारा कैपाये वने वकवत्तारी वालकोडरीनियमक निध्ना सप्ताप-गा समाइतमे इन सरकरपर कोई क्रफेल ही नहीं किया। उनमें इन बमय बार्स तारमानी बोर चनुरान्त्रि काम क्रिया । बहु बहु मी बल्का व्यक्ति पुरुषीको बोग नवावके साथ जैनरेवांके विश्वहः सैधी-सन्ति करवेणः प्रयत्ने कर रहे हैं, जंदा वह नवाबको तनिक को बच्चनूह नहीं करना पाइचा था। नवानके विद्या जो पूर वादशीय वह चया गुरू वा चवनी क्याच्या वी ममानके जैनरेवाँची जीरते. बच्चनवान रहनेतर ही निर्मार में और की गार्कोन्यर करनेके पूर्व बहु बनाकके शालातिर्वाची कुल्ककर समस्य नदा देशा पाइका या जनर इसी सन्त सम्बाधीके शिल्मीयर दिने वर्ने बाक्रमण बच्च कर्यकर गराठा श्रीक्ले हुत बक्षाचे - विधान स्मर्थ कमनीय या प्रक्रमे सर्वेण कामना सरवार भी होत् कर रहे में जता यह मी

बीर क्याइवको सर्वावकार वैकर समा एडिंग्स बाटबन एवं ९ मोरी

सेंपरिश्विको क्षणा निव वयाने रक्षणा चाह्यका था । चाह्यकम्म सेंपरिशेषे चन्त्रपरशो पित्रय करके दुर्व शक्का निर्मात करके जन्मिनिस्तितो कुणके सम्बा । इत प्रशास सेंपरिशेकि विवास न्यायका युक्त स्थल सहस्यक यह हो चया । स्थापन निराह्मोतिसमा सम्बादस्तित विवास निवस्त्र होकर चीहर

व गरा । व गरावन दियानुहोत्रसका अन्य करनेके सिद्ध वृक्ष निवयन होकर चौठर दी-बोदार एक कर्वकर वहताना करना सुक्त निवा । क्यानके कृत्व सीर

44

वासीय इतिस्था एक पी

चगकी फीजके प्रधान बख्नी मीरजापरकी, जो इस समय यगालके मुमल-मान सरदारोंमें मबसे अधिक धानिनदाली था, नयाव बनानेका लोभ देकर मराइवने अपनी धोर फोड लिया । नवाउपी मामी अपति अलीवर्धीसाँगी पुत्रवयु घसोटी वेगम, मन्दार गारलतोक्षमी, राजा रायदुरीम, जगतसेट यादि नवाबीक स्तम्भ भी अँगरेजोंसे मिन्न गये। वास्तवमें प्राय सभी बगाली हिंदू जमींदार और सेठ ध्यापारी भी नयाववें पतनवे दनछूत में और व किसी-न किमी रूपमें अँगरेजोंके पष्टवायमे महागक हए। नयावके अन्त होनेकी मुरसमें उसके कोष एव सम्पत्तिकी लुटमें सभीका हिन्सा निश्चित हुमा । अमीचाद नामवा एक धनी मिकल शौदागरकी मार्पत मगदयने मीर-जाफर आदिके साथ सम्पर्क बनाये रखा। अमीचन्दको भी हिम्मा मिन्ना था, बिन्तु धूर्स क्लाइवने उसके साथ भी जाल किया और समझौतेंके जाली मस्विदे भी तैयार किये। नवाबी दरबारके नरदारोमें परस्पर भी ईट्या हेप और फूट थी, सभी अपने अपने स्वार्थमें अप्ये थे, नवावक, राज्यके, देशके या जनताके हितको किमीको कोई चिन्ता न थी। तत्कालोन देश-व्यापी अनैतिकता और पतनके प्रभावसे बगाल भी अछ्ता नहीं था. और १७५६-५७ ई० मे वर्षीमें ता अँगरेजोके प्रोत्माहन एव सहयोगस वगालके प्राय समस्त राज्याधिकारियोकी कुचालेंकि कारण यह प्रभाय अपने चरम शिक्षरपर था। धूर्त अँगरेज इसी अवसरकी तात्र में थे। पर्यन्त्रकी सव याजना पूरी और पक्की हो जानेपर क्लाइवने नवाबको एक अस्य त उद्धत एव पृष्ट पत्र लिला जिसमें उमपर फान्सीसियोंकी महायता करनेका मिथ्या दापारीवण मी किया । थोडे समय तक उत्तरको प्रतीक्षा करनेके उपरान्त वह सेना लेकर नवायको राजधानो मुशिदाबादमे २३ मील दक्षिणको ओर स्थित पलासीके मैदानमें जा पहुँचा । नवाबने वहाँ कुछ सेना पहलेसे ही एक न कर रखा थो। उसकी संख्या पर्याप्य थी किन्तु उसमें ईरानी. अफ़ग़ानी, अन्य मध्य-एशियाई तथा भारसीय हिन्दू, मुसलमानोंगा अद्भुत अन्यवस्थित मिश्रण था। अधिकांश सिपाही राज्यभक्तिके कारण नहीं वर्त्तक केवळ केनेके जिल् सन्तेवाले ने । नवाय स्वाजितीही एवं विश्वात मानी सरसारोंके विका हुआ था । समये श्रीरमाजर आस्मानीक और पान-बुर्गवरी बयोगदार्थे लेगारा शासाय था. यो वेबक शसाया देववेके सिन् बही पुरुवार निर्म्यत बना रहा । जिर थी नवादकी धन्ति स्तानी की जि मेंगरेवो देशका वहाँ चिक्क की बेप न रहता। इसी कारण समाहर मानन्द मपनीत जीर चिन्तित वा वह स्प्रांतके क्रांची-द्वारा ही नवावकी क्रेमली र्वत ररनेके रक्षाने था । किन्तु नवे-वहे बरदारों और वाची ग्रेलिकीने विस्तातकारको देखकर वक्तके विस्ताची वैतिक वी इतोत्वादित में और पहुंचे वालेने ही में पीछे हुदले करें । नवान स्वर्ध मनसं क्या और नैपान क्षीरकर कार कर्ता जलका बच्ची हुआ और जल्लामूर्वक क्ष्मण वन कर दिया पर्य । क्षत्रवर सी कारवी क्षेत्ररेजींके और राज्य की स्थानके और वा माहर हुए, फिन्यु १७५७ ई. के. पताबीके इब ब्रोटे-के. मुख्ये नवीकरे र्वसम्बन्ध हो नहीं पूरे देवका जान्य क्लिय कर विद्या । वंदाबके निया-विपेति सराधे कुर्वाच्यः एव बात स्थायीनकानेः पर्वाच्या होकर अस्ते देखते एक मारदीय बालनका बला करके वधे अवके राज्य, वसकी बल्दा तथ प्रक्रियको निरान्त विरोधी महाप्रारितीके शार्थीने स्वर्थ ही और दिशा । इस बैक्नें बेरोडॉको सहस्थारा कारव स्तरी प्रानीच्या या संस्थाति क्यों की बरन् क्षमका बीजाल जानानी क्लिक्सकार कीर स्वर्डनाईक

या जीर या रहने देवका दुर्जान तथा देवलातियोंनी वस्त्री मुर्चना महुर पिछा विस्तादस्य एवं निर्मे सामान्याता । प्रमाणि दुर्जे प्याप्ति बेंग्डीवो राज्यांनी प्रमाणिक एवं स्वापी मेर्च बन माँ। अस्त्राम बेंग्डीव क्षारा- वृत्तीवार ज्यापारी हो में बाद में राज्य बन माँ। अस्त्राम बेंग्डीव क्षारा- वृत्तिवार ज्यापारी हो में बाद में राज्य बन में 1 हव बन्तिक कारणांत्र मान्याला और बन्ता क्षारा कर बार्ची पर पीन्ती पीजार होता नाम नाम और प्राम्म विस्ताद पूर्व राज्येतिक बोर्ची-प्रमाणिक सेंग्डाम कारणांत्रिक क्षारा मार्चा व्यक्ति केंग्डी-वार्य पारणी संप्रमाण और व्यक्तिवारिक क्षारा व्यक्ति क्षारी क्षारा मार्ची मार्चिक हो मी

वास्तीय इतिहास । एक र्या

उसका प्रारम्म बगालसे ही हुआ जिसे सर्वप्रकार लूटनेमें उन्होने कोई कसर न रखी। वलाइवने अपनी सरक्षकतामें नीच मीरजाफ़रको नवाव धनाया । म्वयं क्लाइको लगभग ढाई लाख पोण्ड नकद और तीस हजार पौण्ड वार्षिककी जागीर मिली। कलकत्ता कौन्सिलके अन्य सदस्योंकी भी किसीको पचास हजार और किसोको अस्सो हजार पौण्ड मिले। कम्पनी-की सेनाके विभिन्न अँगरेज अफसरोंको सव मिलाकर साढे वारह लाख पौण्ड तथा सिराजुदौला-द्वारा कलकत्तेके घेरेमें जिन अँगरेओंकी जो कुछ क्षति हुई थो उसके मुआवजेमें पौने दो करोड़ रुपये उन्हें मिले । सिवाय अमीचन्दके अन्य देशी सामन्त सरदारोंको भी हिस्से मिले। वडी धान्तिके साथ जी भरकर सैकडों वर्षसे सचित वगालके राजकोपकी लूट हुई और वह बिलकुल खाली हो गया । अँगरेखोंका देना फिर भी काफ़ी वाक़ो बना रहा जिसका तक्काजा नवाबकी गरदनपर हर समय सवार था। अब अँगरेज हो वगालके वस्तुत स्वामी थे। घटनाका सवाद पाकर शहलादे अलीगौहरने अवधके नवाबके साथ बगालपर आक्रमण किया, किन्तु जैसे ही क्लाइव उसका सामना करनेके लिए बढ़ा वह विना युद्ध किये ही अवध धापस लौट गया। भैगरेजोंके अंकृश और नित्य नयी मौगोंसे तग आकर मोरनाफरने चिनसुरा के डचोंसे वात-चोत करनेका प्रयत्न किया । इसपर अँगरेजोंने जल और यल दोनोंपर इचोंको बुरी तरह पराजित किया और उन्होंने अंगरेजोंको दस छाख पौण्ड हर्जाना देकर अपना पिण्ड छुडाया । इसके बाद डचोंकी भोरसे भी अँगरेज सदाके छिए निश्चिन्त हो गये। १७६० ई० में अब अत्यन्त धनवान् वलाइव इग्लैण्ड चला गया ।

मनाइवके जाते ही कलकत्ता कौन्सिलके सदस्योंने मीरजाफ़रको उनकी माँगोंकी पूर्ति करनेमें असमर्थ पाकर पदच्युत कर दिया और उसके दामाद मीरक़ासिमको नवाब बनाया। इस उपलक्ष्यमें उससे खूब धन लूटा, लाखों रुपये और कई जिले प्राप्त कर लिये। मीरजाफ़रके पतनमें उसके हिन्दू मुसाहव और सरदार भी सहायक हुए थे। मीरजाफ़रसे हो अँगरेजोंने यह

म्बाचारियोके द्वाप भी ऐसे पत्र सैच-बेचकर वे करना बनाते ने । अवरेकेंके कम्प्लीकी बीरहे को बीर प्रत्येक बेंबरेशके व्यक्तिवय करमें की शता-वर्गा सनीचे पुरसीएँ भीर व्यापार सीनी ही साम-साथ हुन शक विक्ते । कारतीके इन क्रमचारियोगे न्याय-काराम विकासन्तिका और सहस-कामानका बाद स्थित मी न का केनल क्यकेन्द्रमी कामपर ही क्यांनी पृष्टि थी । स्तम सपने जेवरेच काफिकोची हानि व्हेंचारीने में नहीं पूजरी में । जिब एरड़ नमें मित्री बाद बढानेके तक्तनमें ही में और में । निध किती दिव्येशारीके ऑगरेक जॉन क्वीय कविकारीका वपनीम करने समें । बहुना ने बाक्य-कारमें राज्याविकारियोके वार्यने की रोवे बटकारी है । कार्व द्वारा म्यापारिक विकासनावी (वस्तरों) के दुवस्त्रोको राज्यकी मान मी बहुद कम हो नहीं थी : जैपरेच कुरेरॉना एक निरंपुच कमिरेची एवं वविकारपूर्व वक समस्य वैकार का गया । गीरकादीन वीम्ब ची-८ हीश्रीनान्द और कुमक पावक गा। गोर्ड बनवर्ष ही राज्यकी स्थानमा दुर्ज क्षेत्र करके कवने वॉर्शकॉफ शाक्तेको कुछ क्षत्र करनेका अपाद निया। करते निक्षं कई त्यस स्वयोंकी बहानवाले हो संबर्धन १७६१ है। में नान्यु चैरीके बढ़में बच्च वर्ष काल्डीकिरीको क्रवकीयें वर्ष्य हुए ।

किन्यु वीरहासिनकी समस्ताएँ सियत थी बहु पर्स्तर था। वेरोपी-हारा देक्की मीचन कुछ बीए समीति थी बाहे बाह्य न थी। बज्जे बाहे प्रेतृक्ति प्रस्ताना पाहा वृत्तिपरसाकी हुएकर पुरेश्की राज्यानी क्याना पर्यन सार्थ निर्देशियोजी कैयार्थ नराति किमा बीर कहा व्यक्तिकाह करते करा। बालबाह बाहुसाहम बीर सम्बर्ध क्लाकों भी कहते बहुत्तका

समिकार यो जरूर कर किया था कि किसी वो सेवरिक स्टेटेका सम्बद्ध किसी यो व्यक्तिके ऐसा सांवकार-का के सकता है कि तिसके क्या प्रोजन्ये मान राज्य-करते जुला रहेवा। स्वतः कम्प्योके कोटे-वर्ड कर्यायो सन्ते निज्ञी क्याराप्ये से इस सांककार-नामेक स्वयंत्रीय करते ही से वैसी

मोरो ३ इयर क्षेत्रने क्षोतिकको *पर्मा*नोक कर्मगारिकीयो निकारण नी

किन्तु कुछ परिणाम न निकला। इसपर उसने समस्त कर उठा दिये। इससे अँगरेजोंको जो दस्तकोंके-द्वारा विपुल लाम होता था वह बन्द हो गया। वत युद्ध छिड गया। पटनामें मीरकासिमके जर्मन कप्नान समकने २०० अँगरेजोंका वध कर दिया और तदनन्तर १७६४ ई० में वष्मरमें अँगरेजोंके साथ मीरकासिम, अवधके नवाव और वादशाह शाहमालमका युद्ध हुआ जिसमें अँगरेजोंको हो विजय हुई। मीरकासिम और अवधका नवाव अवध माग गये और शाहआलम अँगरेजोंकी शरणमें आ गया।

अब तो अँगरेज बगालके ही सर्वे-सर्वा न थे बरन स्वय दिल्लीका वादशाह उनके सरक्षणमें था, देशमें उनकी शनितकी धाक जम गयी और भारतीय राजनीतिमें उनकी प्रतिष्ठा वढ़ गयी। वनसरके युद्धके कार्यको पूरा करनेके लिए फ्लाइवको कलकत्ताका गवर्नर एव सेनापति बनाकर फिर भारत भेजा गया। उसने १७६५ ई० में इलाहाबादमें शाहबालम और गुनाउद्दीलाके साथ सन्धि करके अपनी कम्पनीके लिए वादशाहसे बगाल. बिहार और उडीसाकी दीवानी अर्थात् इन प्रान्भीकी मालगुरारी वसल करनेका अधिकार प्राप्त कर लिया जिसके बदलेमें बादशाहको २६ लाख रुपया गापिक देनेका वचन दिया। अवधके नवाबसे उसने कडा और इलाहाबादके जिले ले लिये. उससे परस्पर सहायता करनेकी धर्त कर ली भीर उसकी सीमापर उसीके खर्चेंसे अँगरेजी सेना रखनेकी बात तय कर ली। अब दिल्लीका बादशाह अँगरेजोंका एक प्रकारका पे शनर था. अवयका नवाब बजीर उनके प्रभावमें या तथा खर्चे एवं हर्जानेकी रक्षमके लिए ऋणी या, और वगालके हो वे पूरे स्वामी थे। मीरलाफरको नाम-मात्रका नवाब बना दिया गया, पुलिस एव दण्डविधान ही उसका एक-मात्र अधिकार-क्षेत्र रह गया । कुछ ही मास उपरान्त वह मर गया क्षोर उसके येटे नज्मुदौलाको नवाब बनाया गया । मीरजाफ़रके पुनरुत्यानपर मो उसे खूब लूटा-खसोटा गया था। स्वयं स्क्रेपटन नामक एक अंगरेजके शन्दोंमें 'नवाब सो कम्पनीके नौकरोंके लिए एक ऐसा वैंक बना हुआ था चतरा धीरान ही अंगरेशोंके हारा ही नियन्त किया बाहा में गौर कराकी केमा की परिनिद्य एक निवात की । वेशावर्जे डोड्सा बारान मन क्यि हो नया । सँतरेन सद्भारी और सनके नारतीय कमनारिमोण व्याव देशके बोच-चोचचे दिक्क तथा । करानीके अञ्चापारी, कवागरियोंका भ्रष्टापार भीर वांत्रक वद ववा । नकाइवने वयती वेताका बुधार वीर बंगठन किया तथा कमानोके कर्मनारिजींवर थी निरम्पय रखने गौर बर्गरे प्रश्रमारको कम करतेका प्रथल किया। किया १०६७ है में नगाइन इंग्लैंग्ड बानत पाना जाना और कुछ वर्ष बाद राजान होकर एका बारव-हरवा करके वर क्या । रोडरे शासको बोग प्रश्य हा थे। कमानी जीए क्यान रोनॉर्फ कर्नचारी मनवाको कुरुवेने शुक्त कथाने हुए थे। बहे-बड़े करीयाधेली मो कोई प्रतिक्क का सुरका थ रह कही थी । वाकनुवारी जाविक वर्षक भारतेने कर-तमः दिश्योणी तकः क्रियोणी थी जुडवेर्ने सोई जिल्हा म भी । तमा निश्वहार हो वसे । इस बीचमें होनेसके संशक्ति संदर्श भवतर बस्तर्ट (१ ६७-६९ ई.) और व्यक्तिर (१७६९-७१ ई.) वी बनोव्य हो है। १७९९-७ 🐧 है संख्या देवहें सरका बनानक धुनिक परा विकर्षे एक विद्वार्थी अधिक क्लारा मुक्ती वदा-स्वयूक्तर मर

निक्यों ने नर जितनी बार बौर जितना पार्ट्से काना निरा कें।

वर्गे । दरकारमे कुछ ९ - योच्य शीम करोड़ सकाम-मीहियाँकी बहानको किए निकार । बकावनी बीचनता राज्य-कनवारिनोंके सत्या-भार्ति करण और वर्षक वह नगे। जनातने जनलकर स्नारके मार्कन

मा बो कर कर हो दिशा नवा और वसे देन्यन देकर जन्म कर दिना बया चान ही सन करवानि ही सरकारी कर्मशरियोने वेड्रे बना सन्तरू नीविक बन्धान्त्री क्षत-क्षत्रोहकर बरगारो जीवमें १७७१ वें में १ ६८ हैं

की मरेवा मी अभिन राजनार पहुल करके बंधा कर दिया। १ - १ ई

में बारेन हैरिया बंबाकरा कर्कर करूर जाना । यह बड़ा नुस्कि पूर

भारतीय इतिहास एक धी

नीतिश था। व स्पनीके अन्य सभी व मंचारियोकी भौति वह घूमखारी और अष्टाचारसे भी मुनत नहीं था। जनताका घोषण और लूट घेगके साथ चलती रही। देशके उद्योग-धाधे शनै -शनै अत्याचारपूर्वक नष्ट कर दिये गये। भारतमें अंगरेजोकी घाकित एव विस्तार, और ससारमें इंग्लैंग्डका घन-वैभव, ज्यापार, उद्योग-धाधे, प्रभाव और प्रभुत्य दिन दूने रात चीगुने बढ़ते गये। भारतकी इस लूटसे प्राप्त घन तथा स्वय भारतके ही कच्चे माल तथा विशाल भारतीय बाजारके वल्पर ही इंग्लैंग्डकी औद्योगिक क्रान्ति एव संसारमें उसके ज्यापारिक प्रभुत्यका सम्पादन इसी समयके लगभग प्रारम्भ दुआ।

वारेन हैस्टिग्सने अपनी दो साल (१७७२-७४ ई०) की गवर्नरीमें पड़ोसी राज्योंकी राजनीतिमें हस्तक्षेप करके कम्पनीकी शक्ति बढ़ानेकी प्रया चालू रखी। अपने ऋणी अवधके नवावकी इच्छापर रुहेलोंके साध युद्ध छेडकर और फलस्वरूप उनका विनाश करके उसने अवधको हो जो लाम पहुँचाया सो पहुँचाया, स्वय अपना लाभ किया और कम्पनी की शक्ति और प्रमायको उत्तर भारतमें पविषम दिशामें और अधिक विस्तार दिया। इस युद्धमं पड़ना अँगरेजोके लिए अन्यायपूर्ण और अनु-चित या । उसके लिए स्वय अंगरेजोने हैस्टिग्सकी कडे शब्दोंमें निन्दा की है। रुहेले सरदार हाफ़िज रहमतखाँने अंगरेजोंका कुछ भी न बिगाडा था। वह स्वयं भी एक उदार एवं सहृदयं शासक था। अपनी मुमलमाने-तर प्रजाने प्रति भी उसका व्यवहार अपेक्षाकृत अच्छा था। युद्धके उपरान्त ववधक नवाबोंके शासनमें इहेलखण्डको दशा एकदम विगष्ट गयी। किन्त उस काछके इन अँगरेजोंकी दृष्टिमें उचित-अनुचित, न्याय-अयायका कोई मूल्य न था। जा बात भी उनकी शक्ति-सवर्द्धन और स्वायसाधनमें सहायक होती वही उचित एव याग्य थी और उसे करनेमें वे कभी न चुकते थे। वारेन हैस्टिम्सने इसी कालमें बगालके घासनको भी व्यवस्थित करनेका और उसमें सुधार करनेका कुछ प्रयत्न किया, किन्तु इन सुधारो-

वेंगरेजोंने को सुरक्षके शाम नुषक्ष विद्या । १७७३ हैं के रेपुरेटिय ऐक नारा इच्छैरको नरकारने वर्षत्रका कारणीके कार्योवे वैशानिक झाउ-भीर फिया १ इब विचानके अनुसार बंदाखदा अवर्गर बारतना वर्णाए-मनरम नहनाता साथ तथ तथी और बहाब बानई बाविके वयमधीर बनना बाबिपत्व हुना ५ वप वसका गार्वकाल विवत किया वना, बनकी नहानराफे किए चार गरकारेकी एक रीनिक बसाबी नहीं और नकारी हैं नुपीन गोर्टके मानने क्योंक्य बक्तकत स्थावित की नहीं जिसके मन वर्ष-मेर नगरक और उड़की क्रेस्टिक्क अविकारक बच्चा स्कान में। मान्यारी-सम्बनी व्योते तथा बोडी वर्ष शासारिक मानमेति इंग्लैनानी नररारको बचनन रकता आकारक हो यहा । इस अकार इस पदानेप-हाण इंग्लैंग्डरी करकार या कड़िए कि कार्य बॉवरेडी शाल जारती बस्ती राज्य-बन्तिके विल्हारने अलब करते विकारती केने समा। राज्यकि निक्रमें बागे कार्योंकी एवा सविकार्त किये बावेशके कथ कार्योंकी संगरित करणारका क्रमचेन एकपीय क्षेत्रका वर्ष क्रिकालकाम क्रम्य ही क्या । निय प्रशास राज्यका केलाके बोगरेज बंबालयें और बिर वसरें जाने महभर गांवनमी प्रदेशोंने लेवरेजो खांकाका बावान जिल्हार और चंबर्जन मध्यों ने वर्ता प्रकार वर्ती सहवर बहाब केमने वे सुपर रक्षिणने

टर्मिन तुमुन बानम जीर नेनांतक देखोर्थ बेना हो वह पहुँचे। ठंनोर नामिनि वर्णके छोटे-कोट राजामोद्यों तो काहीन त्राप्त करने मदीन कर ही किया ना बीद करीटनवर त्याप बंगाकले पहलारी चांति ही काफें हार ही किया ना बीद करने राजाने मी त्राप्त कर्य करने नंति ही काफें हारणों नवसुगति था। बक्के राजाने मी त्राप्त कर्य क्यांत्रित कर्या है वार्णि

बतलीय प्रतिकाल एक पति

वें जो नप्पपी बीट अंबरेडकि हिलीं तथा अविकारीकी बुरसाओ वृद्धि है। प्रमान थी । संस्थानियोंके विजेडके बावसे अदित कुछ क्लास्तीत थी जैन-रेजेंकि जलापारीके विकट बंबायके कुछ कारोंने इस नामने हुआ लिप्ट

निजाम और उसको राजनीतिपर उन्होने अपना प्रभाव जमा ही लिया या, अब उसे और अधिक सुदृढ़ करने तथा मैसूरमें हैदरअलीका अन्त करने तथा निजाम और मराठोकी शक्ति सीण करनेके लिए उन्होने भारतके इस भूमागमें अपनी वानितका सगठन, विस्तार एव सवर्धन करना प्रारम्भ कर दिया था । इसी नीतिके अनुमरणमें उनका हैदरअलोके साथ प्रयम मैसूर-युद्ध (१७६७-६९ ई०) हुआ, यद्यपि उसका परिणाम चनके लिए बुछ लाभदायक न हुआ। इसी प्रकार पिरुचमी तटपर सम्बई विन्द्रसे उन्होंन मराठोंकी समितको क्षीण करनके लिए वैसा ही प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया या। १७६१ ई० की पानीपतकी पराजयके चपरान्त पेदावा राज्यको स्थिति विषम्न हो उठी यो । अन्त कलह, परस्पर फूट, सामन्त सरदारोंके स्वतन्त्र राज्य स्थापना आदिस उत्पन्न परिस्थितियो-ने इस भागमें भी अँगरेजोको स्वर्ण अवसर प्रदान किया। तीनों केन्द्रोंके द्वारस अँगरेज भारसवर्पको तीन महत्त्वपूर्ण दिशाओंसे आवृत करते चले आ रहे थे। तीनो ही केन्द्रोंके अँगरेज अधिकारी प्राय एक-दूसरेसे स्वतन्त्र रहकर हो अपनी-अपनी दिशामें अवतक अग्रसर होते रहे थे, किन्तु उनमें चहेष्य, हित और पद्धतिका एक-सूत्रता ०व साम्य तथा परस्पर सहयोग एव सहायता अमीतक भी बराबर वनी हुई थी। रेगुलेटिंग ऐक्ट-द्वारा उनका पूर्ण केन्द्रीयकरण एव एकसूत्रीकरण करनेका प्रयत्न किया गया, जिसमें प्राय कोई कठिनाई न हुई। अवतक अँगरेजी नीति और पद्धतिका ययावस्यक विकास हो चुका था, उनकी शनित अत्यधिक वढ़ गयी थी, स्यिति अत्यन्त सुद्द हो गयी थी तथा उनके प्रमान, अधिकार और साधन पर्याप्त थे। उनकी भारतीय साम्राज्यकी नींव मजमूतीके साथ जम गयी थी, अब मात्र तेजीके साथ उस साम्राज्यका विस्तार करके समस्त देशको उसमें ब्याप्त कर लेना था जिसके सम्पादनमें वे मनोयोगक साथ जुट गये। इस काल तककी घटनाओंका कुछ विस्तारके साथ विवेचन इसीलिए किया गया है कि अँगरेजोंके च देश्य, उनको नीति, पढित, मनोवृत्ति, जातीय

ऐक्-बारा इंटरेश्वडी परकारने अर्थश्वन कराशके कारोते वैवानिक हत्त केर विधा । इस विकास अनुसार बेनासका सवर्वर आएका वर्करः बनाम करनायः बन्द तब नुवाँ और बाला बन्बई शारिके बच्चारीत हनका नारितान हुता ५ वर्ष वक्का नावकात निनत दिना नया, हनकी मरावराक मिर् पार गरम्पाँची एक क्षीमिक बचावी वर्धी मीर कमकते हैं मुद्रीय फोर्टके बाजने क्योंच्य सरावत स्थापत की करी. जिनके बन वर्ष-मेर प्रमान और सकते केटियाको अधिकारके सर्वमा स्वतान में। नत्वपृज्ञारी-कम्बन्दी ज्योगी क्षण ष्टीजी एवं वस्त्रारिक शावणीन इत्त्रेप्तकी गरकारको सक्वत रक्षमा बात्मारक ही बदा । इन प्रधार इब नकालेकताय इंग्लेंक्सी बरवार का नाहिए कि बागूर्व अंबरेडी. राष्ट्र आरडों अस्ती राम-वन्तिके रिस्तारने अलब करने रिचनरमें क्षेत्रे बना । कार्याने रिक्षमें अमी नार्योंनी क्या वरिष्यमें क्षित्र वालेखांचे क्षत्र आयोंनी बीचरेज त्तरकारका क्षत्रकेत कहबील औरक्षत्र एवं जनिवासकार जाना ही दवा । जिन जवार कम्मन्ता नेन्त्रके जीतरेज बंधावनी और किर वतने जाने बहुकर गांत्रपनी अवेदांनि अंतरेशी वास्त्रपत अपकर शिल्यार ीर तरेपर्नेन कर रहे में बन्ध प्रशास पूर्वी करवर महास केलाने ने सुहर श्रीतनमें स्रीरण गुपुर आला और क्लीटक हैगोने वैश हो कर रहे थे। उनोर कार्यक्रीर वर्षाक्षे क्रीडे-क्रोंसे चामाओंक्री क्री क्ष्मूनि माकः कर्तने अमेन कर ही किया या और नर्माटक्का नवाच बंदाक्के प्रचानते मंदि ही वनके हाक्यो नरपुरभी या » वसके राज्यों थी शावः वसी काव्यों वंताकर्णवा बोलपूर्व गीवरा धारम रशाधित करके. अनुमें क्योंटक देवारी गया एवें

भाषक मनस्तारों भी नहमेन्द्रे नहीं वर्षिक क्षोपनीय क्या रिवा मा

..

आस्त्रीय इतिहास एव एडि

में भो बराबी बीर वेंबरेशोंडे दियों तथा वदिवारोंकी तुरवाकी रूटि हैं समल बी। मेन्द्रात्रिकोंडे तिहोटे कावके सदिव एक व्यक्तियों में बेंक रेकोंडे साराबरांकि विश्वत बंगाबके तुरु व्यक्तीने दल बाजने हुया दिन्हें बेंबरेशोंने क्षेत्र स्टावके ताम तुषका दिया र १००६ हैं के देड़मेंदिन निज़ाम और उसकी राजनीतिपर उन्होने अपना प्रभाव जमा हो लिया था, अब उसे और अधिक सुदृढ़ करने तथा मैसूरमें हैदरअलोका अन्त करने तथा निजाम और मराठोकी शक्ति कीण करनेके लिए सन्होने भारतके इस भूभागमें अपनी शक्तिका सगठन, विस्तार एव सवर्धन करना प्रारम्भ कर दिया था । इसी नीतिके अनुसरणमें उनका हैदरअलोके साथ प्रयम मैसूर-युद्ध (१७६७-६९ ई०) हुआ, यद्यपि उसका परिणाम चनके लिए कुछ लाभदायक न हुआ। इसी प्रकार पश्चिमी तटपर वम्बई वेन्द्रसे उन्होंन मराठोंकी खिक्तको क्षीण करनके लिए वैमा ही प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया था। १७६१ ई० की पानीपतकी पराजयके उपरान्त पेशवा राज्यकी स्थिति विषन्न हो उठी थी । अन्त कलह, परस्पर फूट, सामन्त सरदाराने स्वतन्त्र राज्य स्यापना आदिसे उत्पन्न परिस्थितियों-ने इम भागमें भी अँगरेजोको स्वर्ण अवसर प्रदान किया। तीनों केन्द्रोंके द्वारस अँगरेख भारतवर्षको तीन महत्त्वपूण दिशाओंसे आवृत करते चले का रहे थे। तीनों ही केन्द्रोंके अँगरेज अधिकारी प्राय एक-दूसरेसे स्वतन्त्र रहकर हो अपनी-अपनी दिशामें अवसक अग्रसर होते रहे थे, किन्तु उनमें चट्टेश्य, हित और पद्धतिकी एक-सूत्रता एव साम्य तथा परस्पर सहयोग एव सहायता श्रमोतक भी बरावर बनी हुई थी। रेगुलेटिंग ऐक्ट-द्वारा चनका पूर्ण केन्द्रीयकरण एव एकसूत्रीकरण करनेका प्रयत्न किया गया, जिसमें प्राय कोई कठिनाई न हुई। अवतक अँगरेजी नीति और पढितका यपावस्यक विकास हो चुका था, उनकी शक्ति अत्यधिक वढ़ गयी थी, स्यिति बत्यन्त सुदृढ़ हो गयी थी तथा उनके प्रमान, अधिकार और साधन पर्याप्त थे। उनकी भारतीय साम्राज्यकी नींय मजबूतीके साथ जम गयी थी, अब मात्र तेजीके साथ उस साम्राज्यका विस्तार करके समस्त देशको रसमें ग्याप्त कर छेना था जिसके सम्पादनमें वे मनोयोगक साथ जुट गये। इस काल तककी घटनाओंका कुछ विस्तारके साथ विवेचन इसीलिए किया गया है कि अँगरेजोंके च देश्य, उनको नीति, पढति, मनोवृत्ति, जातीय

बरवाएँ इन्होंकी पुनरावृत्तिकात है। बद्ध: क्षतवा संक्रिप्त विवरण ही पर्यन्त होना भी नक्तर-मनरलॉर्ड बाबारते काकश्रवानुसार निम्न बचार 🕽 ---- यारेन द्वेरिकास (१७७४-८५ व) नालका त्रक तैररेक नवनर-क्यरण था। पाके बच्ची निवृत्ति गाँच वर्षके निम् की की की किर पाँच क्वेंबे किए और बचा की नवी जी। अबके नार्यशाकके शासन शनेके बस्के ही गर्र मन्नद्रेश वर्षार पेयवा बरवारणे राजनीतिये बस्क दशा । देवचा परगके बाल क्वडका व्यथ व्हाकर और राजीवाना पंच केवर क्यूने अपने अपना को वंद्यकती बदमाओं पुनरापृत्ति करनेती तीची - तिल्लू विचलन वच्छा चावनीतिक क्षाब कहनतीतक कुटनीतिक पानुबीके जारण वर्ते स्थाने केलेक वेले पत बन्ने । १७७५-८१ वं के मध्य वेंगरेड-क्टास युद्धमें पांचा चलागीयने शिनियतः हीत्यार, वानरचार भौतने बर्राट बनी नरावा बरवारींगो बचा निजाब और ईपरवंजीगो मी बस्ती बोर दिया किया । इनकर वस्त्र वस्त्र की की की क्षेत्र करें द्रीकर महान करकारने हैंचरवालेके बाव नुद्ध क्षेत्र विद्या । हैदरवाकी स्वर्ष बीवरेडींको क्याँटर के बाहर कियान वेलेवर तुल्ल हुना था। यदा प्रवर्त मेरिक-मध्यम कुळके बांचने हो बुचया अंपरेश-निवृत कुळ (१७८०tucy है) भी एक हो कहा । इन वहाँकि बारम्य बरनेने सम्बद्ध भीर महानके वयगरीने वयगेर-अवस्थ वारेन ईतिरामधी पीई समुबक्ति य स्थीरांत बढ़ी भी थी, अतः बश्च बुक्त तम्ब तक बुद ही वैदा रहा । अव-स्वान्त वृत्ती पूर्व परिचामी तटके व्यवदेशीया जाक-विधाल मिटने ही भा

परित्र एवं जनतरशाविताका औक-दोक परिवाद निक्र जाने । आवेगी वर

क्लान पूर्व पूर्व परिवर्धी राज्ये वर्षप्रदेशित वार्क्सपान प्रिप्त है। यह वर्षाया प्राप्त हिम्स प्रिप्त के प्रश्निकारी प्रश्निकारी वर्षाया प्रिप्त हो। प्रश्निकारी कार्य हो। व्याप्त प्रश्निकारी कार्य वर्षप्त हो। वर्षप्त कार्य कार्य कार्य हो। वर्षप्त कार्य कार

41

नाल्टीच इविद्वास । एक इदि

मराठा सरदारों और हैदरअलोके साथ जैंगरेजोंक युद्ध हुए। अँगरेजाकी कूटनीति और नातुरी साथ-माथ अपना कार्य करती रही। परिणाम यह हुआ कि १७८२ ६० में सालवाईकी सिंघसे मराठा युद्धका और १७८४ ६० में सालवाईकी सिंघसे मराठा युद्धका और १७८४ ६० में मगलीरकी सिंघसे मैसूर युद्धका अन्त हुआ। अँगरेजोंका प्रमाव उनके समो विराधी राज्योंवर छा गया। उनकी सबको ही घिषठ-विस्तार और अधिकार कुछ-न-कुछ घट गये और अँगरेजोंके पर्याप्त वढ़ गये। अब उन राज्योंवा अत करने या उन्हें पूर्णतया अपने अधीन कर लेनेका मार्ग भी अँगरेजोंके लिए सुगम हो गया।

इम कालमें देशके प्रत्यक्ष शामनका काम अँगरेखोंको केवल वगालमें ही करना पड रहा था। उसक क्रिए उन्होंने प्रचलिन मुग्नलकालीन शासन पदितिके ढाँचेको हो अपनाया और उसमें अपने हिसोकी सुरक्षा एव उद्देश्यों-की सिद्धिकी दृष्टिमे आवश्यक सुघार करने प्रारम्भ किये। उनकी इस पासन-पद्धतिसे देशका विशेष लाम नहीं हुआ, अँगरेजोंको ही उसके अधिकाधिक घोषण और लूटम सहायता मिली। देश और जनताके हितकी उन्हें विका थी भी नहीं। किन्तु रेगुलेटिंग ऐक्ट द्वारा स्यापित व्यवस्था स्वय चनके लिए भी सदीप और अमुविधाजनक यो। गवर्नर-जनरल और उसकी फीन्पिलके बीच सद्भाव एव सहयोग रहता ही न या और राज्यकायमें अडचन होती थी । अत इन्लैण्डके प्रधान मन्त्रो पिटने अपने १७८४ ई० के पिट्स इण्डिया ऐक्ट द्वारा कम्पनीके ल दनस्य प्रधान कार्यालयपर तथा उसको मारतीय नीतिपर अपनी सरकारका नियन्त्रण एव हस्तक्षेप और मुदुढ़ कर दिया और गवनर-जनरलके अधिकारोमें भी वृद्ध कर दी। इसी बीचमें अपने कार्यकालमे वारेन हैस्टिंग्सनें कतिपय अन्य जघन्य कार्य किये थे। उसके अन्यायपूर्ण रहेला युद्धका उल्लेख किया ही जा चुका है। उसके वगालके एक प्रतिष्ठित एवं सम्भान्त राजपुरुष महाराज नन्दक्मारको व्यक्तिगत राजुताके कारण अपने मित्र सुप्रीम कोटके प्रधान जज सर एला-इजा इम्पे-द्वारा जालसाचीके झूठे मामलेमें फ्रांसीको सचा दिलवायी।

भटनारों दश्वीको पुनरावृश्चिमात्र है। वट क्षत्रका बंकिन्स विवरण ही वर्गन्य होना थी नक्नर-स्वरकोधे बाबारते बाबकाशभूनार निम्न प्रशार है ----१ बारेन डेस्टिया (१७७४-८५ ई) भारतका प्रथम बॅबरेड नवचर-मनरस था । पडले बस्को निवृष्टि गाँच बबेंके किए की सवी मी फिर गीन गरीडे किए मीट वहां वी गरी थीं । कक्षके कारफाली प्राप्तन होनेचे अन्ते ही कां बावर्डका वर्तार वेसका बरमारकी राजनीति वेसमा तमा । रेक्सा राज्यके शन्तक्षक्कका साथ काम्बर और राजीनाका ^{सह} मेकर बचने अभी पान्तवे की बंगाककी बहुगानी पुनरावृत्ति करवैसी बीचो । विस्तु विषयाच यराठा राजनीतिक याथा श्रवन्तीतके कुडनीतिक पालुपंके जारण बक्ते स्वयं केलेक क्षेत्र वह वह । १७०५-८१ हैं के प्रथम बैंबरेब-बराम बढ़ने गांगा चक्राचीको विशिवता डीलबट, वारकगाँउ भौक्रमें बादि क्रमी नरावा करवारीको तथा निकाय बीर विरामकोको मी कफ्तो ओर किसा निया । इसपर कन्यदेशकोंके बैश्व ही सहेदनके होरिय ब्रोकर बहाब शरकारने हैपरवाक्षके बाव वृद्ध क्रेप दिना । हिरस्कारे स्वर्न र्वेगरेबोस्पे कर्नादक्षे बाहर निवाक देनैवर एका इसा वर । यदा प्रवन भेगोथ-गराम प्रवण गोलाँ ही बुत्तरा वेंगोय-गेवूर नुद्ध (१७८०-रंकटर है । भी करू की बचा । इस नकोके आरम्ब करतेने बानाई मीर वडावके कार्गरीन ववर्गर-कारक वारेच (विश्वभूको कोई अनुवर्गः ना स्थिपूर्व बही की भी। मधा शह कुछ समन तक पुत्र ही बैठा पहा । यक्क स्थान्य पूर्वी एवं पविषयी तरहे जीवरिजींका नाम-विज्ञान विरुत्ते ही वर्ग रहा का निवके कारण जैंगरेजोली राज्यकाका धर्मित और प्रतिद्वाकी मन्दि देव करती. काम ही जिल्लाकमातः अवनवंत्र वार्षि बाक्रमंत्रे वर्षे करेंगके किए क्रांकित की शहरा परणा किन्तु समके पूर्व हो शारेन इतिहालने बन्तर जीवरेग अभितको कैलिए। करके इस नुस्ते सना दिया र परिचमी ठढ, पूर्व कर और क्था भारत जानि विकिन स्थलीन देखना

भारतीय इकिहास एक प्री

41

मरित एवं अवसरवाधिताका ठीक-टीक परिचय दिशा कार्य । बावेकी धन

प्रयाका अन्त करके बगासमें मालगुजारोका इस्तमरारी अर्थात् स्थायी बन्दोबस्त किया और सिविल सर्विसकी भी स्यापना की । कानैदालिस एक उच्च घरानेका सम्पन्त व्यक्ति, ईमानदार और अनुभवी शासक था। चसके पूर्ववर्ती अधिकारियों द्वारा किये गये अत्याचारा एव अनाचारोको भुलानेके लिए उसे मेजा गया था। ऐसा करना अँगरेजोंकी गहरी कूट-नीतिका प्रदर्शन था। इस प्रकारकी क्रिया प्रतिक्रियापर हो वह अवलम्बित थी और सदैव चलती रही। एक शासक आता जो जो भरकर जार-जुल्म, रूट-खसोट करता उसके तुरन्त उपरान्त ऐसा व्यक्ति भेजा जाता जो जनता-के बौसू पोछनेका और उसे पुराने अत्याचारोंका मूलकर अँगरेजाकी सदा-घयता, उदारता एव न्याय-परायणताको प्रघसा करनेके लिए प्रोत्साहित करता । किन्तु इन दोनो ही गरम और नरम प्रकारके अधिकारियोंके हाथमें वेंगरेजोंके अपने मोलिक हित समान रूपस सुरक्षित रहते । १७९०–९२ ई० में दूसरा अँगरेज-मैसूर युद्ध छिड़ा जिसके परिणामस्वरूप टीपू सुलतान-का राज्य और शक्ति अत्यन्त घट गये और मद्रास प्रेसीडेन्सीका सी पर्याप्त विस्तार हो गया । इस कालमें उत्तरापयमें महादाजो विन्धिया सर्वाधिक धिविद्याली हो रहा था, वह चतुर, बृद्धिमान् और प्रतापी मी था। अँग-रेजोंने उसके साथ मित्रता ही बनाये रखी और उसके कार्यों में हस्तक्षेप नहीं किया। १७९४ ई० में उसकी मृत्यु हो गयी। १७९३ ई० में इंग्लैण्ट-को सरकारने कम्पनीको आगेके २० वर्षोके लिए भारतीय व्यापारकं एका-विकारके लिए नया आज्ञा-पत्र प्रदान कर दिया था।

दे सर जॉन शोर (१७९३-९८ ई०) पहलेसे ही कम्पनीका कर्म-घारी था और कार्नवालिसका सहायक था। वह सिविलियन मनोवृत्तिका था और देशी राज्योंके मामलोंमें हस्तक्षेप न करनेकी नीतिका अनुसरण करना सथा पिटके इण्डिया ऐक्टका अक्षरण पालन करना चाहता था। अत पूर्व सिवको अवहेलना करके उमने मराठोंके विरुद्ध अपन मित्र निजामको सहायता न दी, फलस्वरूप खर्दिक युद्धमें निजाम बुरी तरह नन्तपुनारने हैरियमको नारी वृषकोरीका सी वच्छासीह किया था। स्टेन की तहानवाडे हैरिटपाने अपने कियदे हो। सत्य सर्वत कार्योको बी वैवनर दे दिना था । व्यक्तियत समुद्रा एवं धनके शोकके वारम हो जलने रचारक^{के} समृद्ध एवं निशीन राजा चेत्रविद्युका अविद्वित्वापुण निर्ववहाके बाल विमाध

क्या और बक्के राज्यको सुदा। जनके बोधने ही बक्के अववरी प्रतिक्रि वेरगोंडो वी चरकर करा-सडीटा जीर अपनामित किया । वतने मनेक बाज दिने बोबोचे ताब कक-रप्तरपूर्व स्थापारिक वर्ष राजपीतिन कवाँजै किने बनुचित वेट बीर वृत्र की । इस इस नाओं है किए सार्व इसामीन क्षं बक्तरवर्ती अमेश अंगरेकोचे क्ष्मणी वर्ताच निम्मा की है। इंक्रेंच मानव मानेपर क्यरोक्त करराजीके किए सक्कर बुक्कमा मनागर सँगरेसी

की न्यान-परानवराचा भी जुन दोन किया गया। सन्दर्भ व्य बयानान निरंपपत्र दिस हमा । न जी होता तो आरंद बीर आरहेनोकी की बीचें बहु बर चुना का बसकी पूर्ति असम्बन की और बसकी तमित्र भी पूर्ति करवेचा अंगरेवांको सवको कराना वा शरकारकी, स्वध्नमं त्री की क्याल ल बा : विकित्ताके लावे और लगे बर्वर-अवराजके आलेके गीप क्षत्रक होता बहोते तक नैक्क्रवंको प्रकृत बाजवार बीवाल । कार्य बनमें जैनरेबोका रोक्पूर्व एवं प्रक्षकारपुत्र कावन और अधिक प्रव्न हैं। बढा । महायानी निर्मित्रण नगरे । मुल्लीकी कैयानीह मादन्य दिनीयनने ब्यानको रह कार्य दिन्ही स्टबारका वर्तको या । बादबाह ब्रह्माकन

मी क्तमी क्यापर मार्कित था । विश्विताने जीवरेजीने की जंबाक विहार बाविकी चौनकी बाँग की। र. कार्व कर्मकाशिस (१७८६-६६ है) को क्यरेर-अस होक्के बाम-वी-बाच प्रकार केलापींट यो। बना विवा बना और सीविवके क्रस्तोते जनर को पूरा अनुस्य अदान कर विधा नवा । वक्षने क्रस्तीकी

414

मीक्रीमें बुवार करने अञ्चलारको कम करने बीट क्याक्टीका बुवार करवेका प्रकार किया थेवा शिक्राध-ताश प्रचक्रिय वाचाधारपुर्व क्रियाचे चर्चात इतिहास १५ प्री

प्रयाका अन्त करके वगालमें मालगुजारीका इस्तमरारी अर्थात् स्पायी बन्दोबस्त किया और सिविल सर्विसकी भी स्थापना की । कानेवानिस एक उच्च घरानेका सम्पन्न व्यक्ति, ईमानदार और अनुभवी शासक था। चसके पूर्ववर्ती अधिकारियो द्वारा किये गये अत्याचारों एव अनाचारोको मुळानेके लिए उसे भेजा गया था। ऐसा करना अँगरेजो≆ी गहरी कूट-नीतिका प्रदर्शन था। इस प्रकारकी क्रिया-प्रतिक्रियापर ही वह अवलस्त्रित थी और सदैव चलती रही। एक शासक आता जो जी मरकर जार-जुल्म, लूट-खबोट करता चमके तुरन्त उपरान्त ऐसा व्यक्ति मेजा जाता जो जनता-के सीस पोंछनेका और उस पुराने अत्याचारोंका भूलकर अँगरेजोंकी सदा-धमता, उदारता एव न्याय-परायणताकी प्रशसा करनेके लिए प्रोत्साहित करता। किन्तु इन दोनों ही गरम और नरम प्रकारके अधिकारियोंके हाथमें अँगरेजोंके अपने मोलिक हित समान रूपसे सुरक्षित रहते। १७९०-९२ ई० में दूसरा अँगरेज-मैसूर युद्ध छिड़ा जिसके परिणामस्वरूप टीमू सुलतान-का राज्य और शक्ति अत्यन्त घट गये और मद्रास प्रेसीडेन्सीका मी पर्याप्त विम्नार हो गया । इस कालमें उत्तरापयमें महादाजी सिन्धिया सर्वीधिक धिषतसाली हो रहा था, वह चतुर, वृद्धिमान् और प्रतापी भी था । अँग्-रेजोंने उसके साथ मित्रता ही बनाये रखी और उसके कार्योमें हस्तक्षेप नहीं किया। १७९४ ई० में उसकी मृत्यु हो गयी। १७९३ ई० में इंग्लैण्ड-की सरकारने कम्पनीको आगेके २० वर्षीके लिए भारतीय व्यापारके एका-विकारके लिए नया आज्ञा-पत्र प्रदान कर दिया था।

दे सर जॉन शोर (१७९३-९८ ई०) पहलेसे ही कम्पनीका कर्म-चारी था और कानवालिसका सहायक था। वह विवित्तियन सनीवृत्तिका था और देशी राज्योंक मामलोंमें हस्तक्षेप न करनेकी नीतिका अनुसरण करना तथा पिटके इण्डिया ऐक्टका अक्षर्य पालन करना चाहता था। अत पूर्व सचिकी अवहेलना करके उसने मराठांके विरुद्ध अपन मित्र निजामको सहायसा न दी, फलस्वरूप खर्दाके युद्धमें निजाम वृरी तरह प का हुआ। में है 1 इस प्राप्त कारानाई क्रेक्सीए ऐका है।

राजार पानसे केंग अब तम अपने विज्ञान अवाद अवाद में स्टेंक्स कराव साम में स्टेंक्स कराव साम में स्टेंक्स कर किया है।

स्टार नेपान पराप्त कर से सी में राजान में मिला केंग्स के स्टार में स्टार सम्हमी (1950 है क्षा से प्रेम्शिने

बारह का व अलब के क्यान अब वह वह वह वह वायर-वाया मानी साराज बाज बीरिका प्रवेण विका । यह बक्त नाहकी अधिकेती वाण-करणही क्यं प्रमाणिक ता । इस नक्य सेटी बनके अपने सेटी प्रीते पान क्रांच के के बनके बाब ऐने चीरच वर्ष उद्याद बुद्ध है संसम् के स्थि बर बच्छे राज्यका भीतन-सम्ब निर्मात छ। आराने दीए बचना गाउँ द्वार ना, मर्गात नुबन्धे नाम निवास ती तमने यह दा नदा मीट शाली दिशीके बाद निमान्तरी धरमें समा । बात त्ये किन्तिया बन्दान वर्शावाणी मा । बज्ञानेची भीतरी दक्ता मी बहुत लग्नव थी। इसके बर्जवारी बरस्स कमाने रत में अनुकारत निवत तथा था और खबाना शामी का । मैंके बनीने गुरमा मार्थेश वहागावसासर संस्पृत साराध्य कर दिया। निवान करकर भेंगरेबी के पूछ तरह कवील हो गांत और शुक्रवे करवी सहावता बरनेके लिए भी लोग हो नगा । १ ८-९९ है के इस चीने संगोदन र्केषुर युक्के अन्दर्वण्य तीचु और बंगके राज्यना तथा ही करा । राज्यना बीर बन्नदिना एक वहा दिनका अंगरेडीने तक्त क्रिया थीन बनने निनीने बाँड दिया और अपनी अध्यक्तामें मैनूरका एक क्रोराना द्विग्टू रागा श्वाणि कर दिया ।

सर वेमेडकीने अवसी सहावय-वान्य गया चाणु ही । हो राज्य

न्यस्थीय इतिहासः एक इति

127

वंगरेजोंने साथ यह सिंघ फरता वह शिनवार्य रूपसे वंगरेजानो अधीनना स्वीकार कर लेता, किमी देशी या विदेशी धाय धिनतके साथ वह मिध- विग्रह नहीं कर मनता था, उमें अपने यहाँ एक वंगरेज रेजीहेण्ट और सेना रखनी परती थी जिसका मत्र खर्च उम देना परता था और किमी अप विदेशीं ते तह अपने यहाँ नीकर नहीं रख सबना था। सबसे पहले निजाम इस बाधनमें वैधा। तदनन्तर त्रवधके नवायसे हहेललाण्ड और गोरखपुरके जिल्ले बरवम छीनकर उसे इम सिच्धमें बौधा। १८०२-०५ ई० में मराठोक साथ युद्ध छेड दिया और परिणामस्वस्त्व पेशवा, मिधिया, होलकर, मासले आदि मराठा राज्योंको पराजित करके उन्हें अपने अपने राज्योंके मूल्यवान् प्रदेश वैधनेपर विवश किया गया। भरतपुरक जाटों और राजस्यानके प्राय सभी राजपूत राज्योंका भी इन मिध्योंमें जकड लिया गया।

इन सिधयोंके फलस्वक्त्य भारतमें अँगरेजाको स्थित अत्यत दृढ़ हो गयी, उनका राज्य विस्तार प्रत्येक दिशामें देशके अन्त प्रदेश तक पहुँच गया घन, आय तथा ज्यापार अत्यधिक वढ़ गया, सिधमें वँधे राज्योपर उनका साम्राज्य स्थापित हो गया और उनके पास एक सुशिक्षित विशाल सेना हो गयी जिसके लिए उन्हें कुछ भी खर्च न करना पहता था। इन कथित अनीगनत भित्र राज्योकी विदेशी नीतिपर भी उनका पूर्ण अधिकार हो गया और उन्हें अन्य यूरापीय जातियोंके आक्रमणका काई भय न रहा। इन सिधयोंके लिए वेलेजलीने भागतीय राजाओपर वहा दवाब हाला तथा उनक माथ अत्याचारपूर्ण और सख्नीका वरताब किया। उसने उनकी या उनकी जनताकी भावनाओंका तिनक भा खयाल न किया और न उनकी त्याय्य अधिकारोंपर ही मुख ध्यान दिया। उसकी तो केवल अँगरेजी राज्यके विस्तार और सुरक्षाकी खिता थी। देशी राजा नवाब उसके दवाब और अत्याचार तथा अपनी स्वयकी अमहाय अवस्था, अयोग्यता, फूट, स्वार्य-परता एव नैतिक पतनके कारण उसका कहा माननेपर विवस हुए।

संपंत हांबाएकारों और राज्योतिकोंने नानो पह वार्ति रोप्तें रा कुर्वितिकों स्त्री कर्वता को है, किन्तु आरतीय राज्योती राज्योतीर रा कुर्वितिकों स्त्री कर्वता को है, किन्तु आरतीय राज्योती के परिते राज्योंने वास्त्रपनेत्रा सामा आरतीय त्रीवित्ता प्राप्त को देश पर प्रत्य स्त्रा ने किन्नते नान्योर सामानी त्रीतिकारी हो ने वास्त्र करना करना करना करना सामान्य करना

रेकर कार्य-के विषे चाहा कहा एज्यको श्रीवरीश एज्यके निका केनेका खद्भ बहुता मेनेरिकेस हामचे का बचा। हामका उनकी साथ पत्मकरीने यो। इब क्षीन मामकी कने कार्यके वालियाना की हूं जीर कहा हूं कि इसके हारा माराकेस करेका पूर्वनामा चरित्यहोना और दुर्वक हो नमें। एजना हैं

नहीं रेकेडबीने को नामी एकावा वाध्यस्त हिस्सार वारिता हुए।
वास यह उंदीर एकानी क्यारिकारी कार्यवाद कार्य करार में
एकावा कर उपने के बीरीची एकारी विकास सिवा। गुराठी नामीने
कार मी बीरिया बात बीर कार्यकरी कार्यकर्त का प्रधान किया है।
कार्यकर कीर बीरीची एकारी प्रधान कार्यकरी कार्यकर्त कार्यकरी
कार्यकरी किया पता और कार्यकरी नामानीचारों के कार्य केरा करा करा कि विवास पता। वाली एकारा विनेती वास्त्रक राजिए में विवास कार्यकरी
कार्यकर कीर ही आपना की कीरीची वास्त्रक राजिए विकास कीरी कारा कीर ही आपनानी यूकी राजि वास्त्रकों करेश वार्यकर विद्या करा कारावार्यकर में वीरीची कार्यकरी है हिस्सा बूकी हो है। वो विकास कारावार्यकर पता की कीरीचील कार्यकरी कार्यकरी कार्यकरी कार्यकरी कीर कर केरा भारती कीरीचील कार्यकरी कार्यकरी कार्यकरी कार्यकरी कीरीचील कार्यकरी कीरीचील कार्यकरी कीरीचील कीरीचील कार्यकरी कीरीचील कीरीचील कार्यकरी कीरीचारीचील कीरीचील कार्यकरी कीरीचील कीरीची

 कार्नेवासिसकी कुन अवर्गनर-नवस्थ श्वाकर वीता पता शंख्य प्रश्रेष प्रमाण सम्बद्धाः एक प्रश्रेष षुष्ठ मास पदचात् ही उसकी मृत्यु हो गयी । उसके स्यानमें---

६ सर जार्ज वालों (१८०५-०७ ई०) नियुवत हुआ। उसने मी हम्तक्षेप न करनेथी नीतिका पूर्णसाके साथ पालन किया। वेलेजलीकी नीतिक परिणामों और अँगरेजोकी गूढ दुरिमसिन्धकी यहुत-से मारतीय अनुभव करने एने थे किन्तु विवदा थे। तथापि १८०६ ई० में वैलोरमें अँगरेजो सेनाके मारतीय सैनिकोने भीषण विद्रोह कर दिवा जिमका कठिनाईसे दमन हुआ। साथ ही देश-मरमें उपद्रव खडा हो गया, सुण्डने सुण्ड हाकू सर्वत्र घूमने फिरते थे और नि शक लूट-मार करते थे। बुन्देलखण्डमें तो पूर्ण अराजकता फैल गयी, अनेक छोटे-छोटे सरदार परस्पर लडने-सगडने लगे। उधर पजावमें रणजीवसिंहका स्वतन्त्र सिवस राज्य उत्तरीत्तर सानित्राली होता जा रहा था। यूरोपमें नैपालियन बोनापार्ट अपनी शक्ति-के शिसरपर पहुँच गया था। अँगरेजोंका वही सबसे अधिक बलवान् एवं महान् ग्रन्नु था जिसके कारण उनकी वही भयाप्र स्थिति थी।

७ लार्ड मिण्टो (१८०७-१३ ६०) के गवर्नर-जनरलका पद सँमालनेके समय उपरोक्त समस्याएँ उसके सम्मुख पीं। सत उसने ईरान, अफ़ग़ानिस्तान और पजादके नरेशोंके पास दून भेजकर उनसे मैंत्री सन्वियौं कर लीं और उन्हें फासीसियोंके विरुद्ध अँगरेजोंका मित्र यना लिया। सिन्धके अमीरोंके साथ भी इसी प्रकारकी सिंध कर ली गया। उसने वुन्दलवण्ड आदिके सन्दारोंके पारस्परिक झगडोंका निबटारा किया और डाकुऑंका भी कुछ दमन किया। मिण्टोको यह गर्वथा कि मारतीय धांवतयोंके विरुद्ध शस्त्र टठाये बिना हो उसने सारी अराजक्ताको दसा

प्रसिद्धान (१८१३-२३ ई०) के प्रथम वर्षमें हो वस्पनीका नया आज्ञा पत्र क्षमले वीस वर्षों किए जारी हुत्रा जिसके द्वारा भारतीय व्यापारपर चसका एकाविकार समाप्त कर दिया गया। १८१३ ई० के इस आज्ञापत्र-द्वारा ही प्रथम यार अंगरेज कस्पनी सरकारने तीस

बेंबरेज प्रतिहासकारों और राजनीतिकोले अपने एवं वाति वीरफी इत कुनीविको बडी अर्थना की हैं. फिल्मू जारतीय राजाओं बीर नरामीरर इन वरिवर्शना वहा बुरा प्रजान क्या । अब अन्हें रिवेधियोंके ना वरोती रान्योके बाक्कमोदा मनवा नामारिक होहोता हाता कोई तय न रहा मना में क्लिमेरे कमनोर आवादी और विकासी हो सर्गे । वसका वार्य-सम्मान भी बाठा रहा और राजनैतिक बीचन वि सरव ही नमा । राजकै पालन-तरमाची ओरते थी में निवृक्त हो नवे । वहरूम बनाचार मीर सरनाचार बढ़ने करे और अन्तर्ने इन बत्याचारों और कुशनवडी दुर्गो देवर करोंने जिपे पहा का राजको संबोधी राज्यमें क्रिया क्रीए। क्ट्रन बक्षमा मेंगरेज़ीके शुक्त मा क्या । टावस मनरी मादि नाम्पर्रामें ची इस क्रमेंच अचलों को कसीरी सामीचना की है और नहां है मि इस्पे हारा नारक्षेत्र नरेश नुनक्ता चरित्रहोन और पूर्वल हो स्वे । प्रत्य हैं मही बैक्रेडकोने को जनने राज्यका बंबाक्यन विस्तार करनेपर दु^{स्} हवा था, तंत्रीर राज्यंत प्रसार्यायकारके अवशेका काम कामर वर्ष राज्यका क्रम्त करने वने वीगरेकी राज्यमें किया हैका। सर्वारी स्पर्मीने बाब भी नहीं फिना का भीर कर्नावफ़ के क्यारीके बाद भी बंगाध-वैद्या है। बरताय दिया गया । यन वरेवीकी बाध-सावची नैन्द्रमा देवर अनन कर दिया नवा । जनने राज्यानर सँगरेशी। साम्यय स्थापित कर विश्व नना की प्रायः करेप ही प्रारम्भवे पश्चन देशी शासनकी स्टेशा स्रायक तिहन और बरधानारपूर्व गा : वैथे तो समावत ीर हेरितन सूचे ही दन नीतिया शास्त्र कर शुक्रे में शिन्तु जब वैकेजानि की वृक्त व्यवस्थित नगरक वृत्ते वैच का देवर मास्त्रमें मैंनरेजीके अभूत्वको बनुसारतीस कार्ने बहुरा एर्न फिरार बना विश्व और कान ही वैश्वके वैत्तिक कृत संप्रकृतिक स्टानों से विकार र पहुँचा दिया । वैकेशकीकी दन श्रीत शुक्त गोडिके कररान्त हम्ही बहुद कोशिको कारकारका की असक्त-

2. कामचासिसको कुः कार्नतर-जनरक ब्यावर वेना का निन्दु

थी, युद्ध छेड दिया। ब्रह्माने इस प्रथम युद्ध (१८२४-२६ ई०) के फल-स्वरूप ब्रह्माश राजा पराजित हुआ और सहायक सिघमें वैंघा। भारी रक्तम और आसाम प्रान्त जँगरेजांने हाय आये। मतोपुरका राज्य भी उनकी अधीनतामें रहा। उनकी पूर्वी सीमा भी अब सुरिश्व हो गयी। १८०६ ई० में भरतपुरमें दुर्जनमाल विद्रोही हुआ जिमकी देला-देखी मालवा, बुन्देलखण्ड एव मराठा राज्योमें विद्रोहक चिह्न दीप्प पटने लगें। अगैरेजोंने दुर्जनसालको कुचल दिया, भरतपुरके किलंपर अधिकार कर लिया और खजानेको जी भरकर लूटा, किन्तु भरतपुर राज्यको

क्रायम रखा ।

मुपार और शान्ति-मार्योकी ओर अधिक घ्यान दिया। इसमें समयमें सर्व-प्रथम अँगरेजोंने अपने एक प्रतिष्ठित अधिकारी टामस मनरोके मुगसे यह महलाया कि ब्रिटिण सरकार एक सरक्षक रूपमें भारतको अपने अधीन रखेगी और ससका घ्येम भारतीयोको अपने देशका शासन करनेके योग्य-बनाना है। यहींसे अँगरेजोंने विश्वमें अपना यह दम्म प्रचारित करना शुरू किया कि भारत-जैसे पिछडे, अधकत, अरिसत और असम्य देशोका सरक्षण करना तथा उन्हें उन्नत और सम्य बनाकर अपने पैरोपर प्रदा कर देना इस गोरी जातिका स्वेच्छा एव परोपकार वृत्तिमे ग्रहण किया हुआ नार और उत्तरदायित्व है। अँगरेजोका यह दम्मपूर्ण ढोंग वर्तमान पर्यन्त चलता रहा है। अस्तु वेटिकने घोपित किया कि प्रत्येक भारतीय जाति, धर्म या रंगके किमी मेद-भाव बिना किसी भा सरकारी पदपर नियुक्त किया जा

सकता है। उसने फ्रीजो सर्च कम करके तथा धासन सम्बन्धी अन्य आधिक सुधारो-द्वारा सरकारकी आय और वचत यहायी, पिवयोत्तर प्रान्त-का यन्दाबस्त पूरा कराया और इलाहाबादमें बोर्ड ऑफ़ रेवेयू स्थापित किया, अदालतोंमें सुधार किये तथा उनकी भाषा फ़ारसीके स्थानमें उर्दे कर दी। सतीकी प्रथा, नरबलि, शिशुहत्या, स्थियोंका ज्यापार आदि

१० सर विलियम वैटिक (१८२८-३५ ६०) ने शामन-

वार्ष में १ व्या रायाण योगरेश केवले यह बोरके सेवार जान है उसे दान हों हों है वार्ष मोर्ट रिनार-विकास कर सिया। बार्क की बारण मार्ट की हों है में तीवारी मार्ट प्राथम प्राथम है दिया है वह निर्माण प्राथम है देवा प्राथम केवल कर सिया का बात है कि वार्ष मार्ट केवल है के तिवार केवल के ता की वार्ष मार्ट कर सिया केवल की वार्य मार्ट की वार्ष मार्ट केवल है कि वार्य मार्ट में तीवार केवल की का मार्ट मार्ट की वार्य मार्ट मार्ट की निर्माण है कि वार्य मार्ट की वार्य मार्ट म

 सार्व परम्पर्ट (१८११-१८ है) वे ब्रह्मके धराफे बा^ल विवये बायानकी निगय करके पूर्व बंगाचार सम्बन्ध करनेन्स देवारी की थी, युद्ध छेट दिया। ब्रह्माचे इस प्रथम युद्ध (१८२४-२६ ई०) के फल-स्वम्प ब्रह्माना राजा पराजित हुआ और सहायक सिपमें बँधा। मारी रक्षम और आसाम प्राप्त अंगरेजोंके हाथ आये। मनीपुरका राज्य भी चनकी अधोनतामें रहा। चनकी पूर्वी सीमा भी अब सुर्गदान हो गयी। १८२६ ई० में भरतपुरमें दुर्जनसाल विद्रोही हुआ जिमकी देखा-देखो मालवा, बुन्देलखण्ड एव मराठा राज्योमें विद्रोहक चिह्न दीख पटने लगे। अंगरेजोने दुर्जनमालको कुचल दिया, भरतपुरके किलेपर अधिकार कर लिया और खजानेको जी भरकर लूटा, जिन्तु भरतपुर राज्यको जायम रक्षा।

१० सर विलियम चेटिंक (१८२८-३५ ई०) ने शासन-सुयार और शान्ति-वार्योकी ओर अधिक व्यान दिया। इसके समयमें सुर्व-प्रयम अँगरेजोंने अपने एक प्रतिष्ठित अधिकारी टामम मनरोके मुख्ये यह महलाया कि ब्रिटिश सरकार एक सरक्षकके रूपमें भारतको अपने अधीन रखेंगी और उसका ध्येय भारतीयोको अपने देशका शासन करनेके योग्य बनाना है। यहींसे अँगरेखोने बिख्यमें अपना यह दम्भ प्रनारित करना शुरू किया कि भारत-जैसे पिछ्टे, अदायत, अरक्षित और असम्य देशोका सरक्षण करना तथा उन्हें उन्नत और सम्य बनाकर अपने पैरोपर खडा कर देना इस गारी जातिका म्वेच्छा एवं परोपकार वृत्तिसे ग्रहण किया हुआ भार भोर उत्तरदायित्व है। अँगरेजोका यह दम्भपूर्ण ढाग वर्तमान पयन्त चलता रहा है। अस्तु वेंटिकने घोषित किया कि प्रत्येक भारतीय जाति, घर्म या रंगके किसी भेद-भाय बिना किसी भा सरकारी पदपर नियुक्त किया जा सकता है। उसने फ़ौजी खर्च कम करके तथा शासन सम्बन्दी अय आर्थिक सुघारा-द्वारा सरकारकी आय और बचत बढ़ायी, पहिचमोत्तर प्रान्त-का यन्दोबस्त पूरा कराया और इलाहाबादमें वोर्ड ऑफ रेवे यू स्यापित किया, अदालतींमें मुघार किये तथा उनको मापा फारमोके स्थानमें उर्दू कर दो। सतीको प्रया, नरबलि, विश्वहृहत्या, स्त्रियोंका व्यापार आदि वासाबिक दूर्शिमोंको यो जन्मुनवार वर्ण्योव क्यान स्ता । दुर्जे भी मा भी कम यो जो। नुसंबोक उस्कि क्योंग कोने वॉन मंत्र या निवक्ते कारण बातारों वूर्व माने व्यक्ति को शेवन स्वोक्तान करों ने उसीन निवास कारण। बूरिशिव व्यक्ति को शिक्तानी व्यक्ति निव ८८९६ में बीत ८८९ है में कारणारों को प्रतिक्रानी व्यक्ति निव ८८९६ में बीत ८८९ है में कारणारों को योजीन में विधाने किए क्षण्य कारण। किन्नु वैशामों की हि बातारों को विधाने किए क्षण्य कारण। किन्नु वैशामों की ह बातारों कारणारों को विधान केरण क्षण्य कारण। किन्नु वैशामों की ह बातारों कारणारों कारणारों कारणारों कारणारों कारणारों कारणारों की कारणारों कार

देवी राजनिः कारान्यने निरंत्रको गीति कामानास्य इस्तानेत व वर्रेत

दें हैं में उपार्टम क्रमार और दुवीक एम्मीया क्या कर के एक्से की स्वित्ती पामले निम्म निमान । श्रीहर जम्म प्रमित्त हिम्मिया निम्मिया निमिया निम्मिया निम्मिय

मासीच इतिहास । प्रच दक्षि

स्पेरत १४ ।

वृद्धि । इस पदपर मैकालेकी नियुनित हुई । साथ ही पालियामेण्टने यह घोपणा भी की कि भारतका कोई निवासी अथवा ब्रिटिश सम्राट्की कोई प्रजा अपने घर्म, जन्म भूमि, वश या रगके कारण किसी सरकारी पद या नौकरीमे विचत नहीं की जायेगी ।

११ सर चार्ल्स मेटकॉफ़ (१८३५-३६ ई०) ने प्रेस-एक्ट-द्वारा समाचार पत्रोको स्वतन्त्रता प्रदान की।

१२ लार्ड सॉकलेण्ड (१८३६-४२ ई०) के समयमें प्रथम अफ़्रान युद्ध हुआ। इस युद्धका उद्देश्य रणजीतिसिह्यो सहायतासे कावुलके स्वायोन शासक दोस्तमृहम्मदको, जिसपर अँगरेजोंको अपना विरोधो होनेका स देह था, पदच्युत करके शाहशुजाको अफ़्रग़ानिस्तानका अमीर वनाना या। अँगरेजों सेनाने सि एके मार्गसे अफ़्रग़ानिस्तानमें १८३९ ई० में प्रदेश किया। इस युद्धमें अँगरेज बुरो तरह पराजित हुए। १८४२ ई० में जब पराजित अँगरेजो सेना सन्वि करके वापस लौट रही थी वो अफ़्रग़ानोने उसे काट हाला और १६००० सैनिकोमें से केवल एक उस दु खान्त घटनाका वणन करनेके लिए जीवित वचकर आ पाया। आँकलैण्डको बड़ी निन्दा हुई और वह वापस इन्लैण्ड बुला लिया गया।

१२ लार्ड पिछनवरा (१८४२-४४ ६०) ने अफ़ग्रान युढको समाप्त कर दिया। उमने पिछली हारका कुछ प्रतीकार करके वाहवाही कूटी। दोस्तमृहम्मद हो काबुलका बादशाह फिर धन बैठा। ऑकलैण्डने सिम्धके अमीरोके साथ सिंध करके उन्हें रेखाडेण्ट रखनेपर विचध किया था और उनपर वाधिक कर भी लाद दिया था। १८४३ ई० में अमीरोंपर कुछ हुठे दोषारोपण करके युद्ध छेड दिया गया और मियानीके युद्ध में उन्हें पराजित करके समस्त सिंध प्रान्त अँगरेजो राज्यमें मिला लिया गया। इस अन्यायपूर्ण कार्यको स्वय इंग्लैण्डकी पार्लामेण्टने निन्दा की किन्तु उसे उलटा नहीं धर्योक्त उससे अँगरेजोंको भारी व्यापारिक और राजनैतिक लाभ जो हुआ था। ग्यालियरमें उत्तराधिकारका प्रश्न उठा,



१८५२ ई० में अँगरेज ध्यापारियोंके हिसोकी रक्षा करनेके वहाने ब्रह्माके माथ युद्ध छेडा गया और राजाको पराजित करके तथा सहायक सन्यमें वौधकर सम्पूर्ण दक्षिणी ब्रह्माको अँगरेजी राज्यमें मिला लिया गया। अब बगालकी खाडोका सम्पूर्ण समुद्र तट, कुमारी अन्तरीपसे मलाया प्रायद्वीप पर्यन्त खँगरेजोंके अधिकारमें था।

हलहोजी एक कट्टर साम्राज्यवादी था, निर्वल देशी राज्योंके साथ उसकी कोई सहानुमृति नहीं थो। वह उनके अस्तित्वको वनाये रखनेका विरोधी था। उसका यह दृढ विस्वास था कि ब्रिटिश शासन इस देशकी जनताके लिए परम लाभदायक है, चाहे वे उसे पसन्द करें या न करें। अत उसने देशी राज्योका अन्त करके उन्हें अँगरेजी राज्यमें मिलानेकी एक नथी योजना बनायो जिसके अनुसार किसी राजाकी औरस पुत्रके अभावमें मृत्यु होनेपर उसका राज्य समाप्त कर दिया जाता था। इस समय अँगरेजोंके आधिपत्यमें अवस्थित देशो राज्योको उसने तीन श्रेणियोमें विभक्त किया। प्रथम वे नेपाल आदि स्वतन्त्र राज्य थे जिनमें भारतकी अँगरेज सरकार राजाकी मृत्युपर उपयुक्त उत्तराधिकारीको गद्दीपर वैठाती थी, दूसरे वे राजपूत मराठा आदि राज्य थे जिन्होने मुग्रल सम्राट या पैशवाके स्यानमें अँगरेजोकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। और वीसरे वे राज्य थे जि हूं अँगरेजोने ही बनाया या विजय किया था। इस वीसरी श्रेणीक राजाओको तो उसने दत्तकपुत्र छेनेके अधिकारसे भी विचित कर दिया। अब भीतर बाहर किसीके भी विरोधकी कुछ परवा न करके उसने जिल्ला बना इन गज्योंका अन्त करना शुरू किया। सवप्रयम नागपुरके भोंसला राज्यका अन्त और उसकी लूट हुई। १८४८ ई॰ में सतारा राज्यका अन्त हुआ, तदनन्तर उढीसाके सम्मलपुर, वाघट. चदयपुर आदि राज्याका अन्त किया गया। १८५३ ई० में झौंसीकी रानीक दत्तकपुत्रको समा य किया। पेशवा वाजीराव, द्वितीयकी मृत्युपर उसके दत्तकपुत्र नानाको भी अमान्य किया और उसकी पेन्सन बन्द कर भी। १८५६ है के पुचालनका तीच बनाकर अवस्थी नवारीया में मत्त कर दिशा कीर जग अभ्यक्ती वेंबरेजी शास्त्रमें रिशा किया । मे तम वार्ष मरधन्त प्रकोर अनुभित्त और सन्धानपूर्व में । पूर्व की मन्ने मन्त्रियों के क्षेत्र क्षेत्र अपने व्यवस्थित की अंबरेश के बान्य वर्धी विना । इन नापरित समस्त देवने बांचव श्रीय एवं सनगीय वैन नया । १८९६ है में करानीको जबा बीतकाका काळावन निका निवास क्षारा करने व्यापार - करनेका शिवकार जिल्लाक हो सील निया गया और क्षमधी यावर-गरकवार्वे कुछ वहत्त्वपूत्र वरिवर्धव सवा अविक निकास नर दिवा पर्य । बक्रपीतीन स्वय देखी बान्सरिक वास्तर्वे मी नाएन्वे मुचार मिने चरकारको बैनिक वनित बढ़ानी निक्तों बीर चोरबींकी मी पार्ट्य अपने में और कर्व-विकास्त्र बावपानीके बाद प्रकल स्थि। क्छके क्षत्रकों बरवररको क्षाचिक साथ २४५ सावक बरवर १०४३ बाव ही नहीं । बालप्रतिक बालींक किए बन्नाले जान केनेशी प्रधा जी करीने चमानी और क्षानंत्रनिक निर्माण क्षियार वी स्वार्टिक किया। वर्तीने १८५३ ई में बाकि-बास जासकों देश बालू की खबा तार साथ और कारके टिकडीकी शासका की । यह चार्क्युक्की सम्मस्ताने सामुनिक देशो विकास सींव काती वर्गा और कार्ड वैकानेने चारतीय स्टब्सियान स्थाना । १६ बार्ड देशिय (१८५६-५८ हैं) के बारा है १८५७ हैं हैं

थी। कर्माटक और शंजीरके पान्तकपुत वर्षधोंकी हो। क्याबिर्ज की की

क्षण का व्याप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त हों। हिन्तु इसी वर्ष प्राप्त में दा प्राप्त में प्राप्त में दा प्राप्त में भी में प्राप्त में प्रा

वासीय इतिहास एक परि

4 *

ऐसा महान् विद्रोह था जिसमें धँगरेजों के तत्कालीन परिचमोत्तर प्रान्त, सवप, जिहार, बुन्देलखण्ड और मध्यभारतको जनता, सँगरेजो सेनाको विभिन्न छावनियों के मारतीय सैनिक, अनेक देशो राजे, नवाब, जमींदार, सालुकेदार आदि सम्मिलित थे। अँगरेजों को देशसे निकास बाहर करनेके लिए एक बार तो हिन्दू और मुसलमान मी मिलकर एक हो गये थे। यूरोपमें उस समय क्रीमियाका युद्ध छिडा था और इन्लैण्डको शवित उसमें लगी हुई थो। भारतके जो अनिगनत देशो राजे नवाब खुले रूपसे इस विद्राहमें सम्मिलित नहीं भो हुए थे उनमें-से भी अनेकों को विद्रोहियों के प्रति सहानुभृति थी।

मुसलमानेको उत्तेजित करनेके लिए अवधके साथ किये गये अन्याय-का तथा दिल्लाके वादशाहको उसका साम्राज्याधिकार वापस दिलानेका नारा था और हिन्दुओंको उत्तेजित करनके लिए पेशवाके दत्तकपुत्र पृथुप्त नानाक पेशवा साम्राज्यको स्थापनाका नारा था। हिंदू मुसलमान जनसायारणमें अँगरेजो और उनके शासन-द्वारा लोगोंके धम-कर्मको नष्ट किये जानेका प्रचार था। रेल, तार, डाक, अस्पताल, स्कूल आदिकी स्था-पना तथा सती आदिकी प्रथाओंकी बन्दी उदाहरणमें प्रस्तुत किये जाते थे। सैनिकोमें नयी क्रिस्मको बन्दूको और उनकी मुँहसे खोली जानेवाली कार-तूसोंने धर्म अष्ट होनेकी बात, गोरे सैनिकोंका प्रभुत्व एव अधिकाराधिक्य आदि उन्हें भडकानेके लिए पर्याप्त थे। छावनियोंने रक्त कमल और ग्रामों-में चपातियोक वितरण-द्वारा विद्रोही आन्दोलनका प्रचार किया गया।

रिवदार १० मई १८५७ ई० को मेरठको वंगरेज सैनिक छावनोमं इस विद्रोहका प्रथम विस्फोट हुआ और दायानलको नाइ यह आग कोछ ही एक जिलेसे दूसरे जिन्ने दृतवेगसे फैलने लगी। मेरठ, दिल्ली, लखनक, कानपुर, झौसी, रुहेलखण्ड, वृद्देलखण्ड, बिहार आदि अनेक स्थानोंमें जेलोंको सोझा गया और सेनाओंके गोरे अधिकारियोका ही नहीं जहाँ जिस बैंगरेजको देखा उसका सफाया कर दिया गया। नाना साहिब, तात्याटोपे, मांनीको रासी व्यवस्थानी विचारके वर्षीतर दुवितीत्व बीक्सी अवस्थान, देवम इवरण्यत्व वाच्याद बहुएत्यात आदि श्वित्वत वरेशोने निर्मोदेशे-के बारता थे। अपेट वर्षाति केरे वाके वर्षे वर्षक व्यवस्थाने अंबद्वित विकास केर्या वर्षक वर्षाति केरे वाके वर्षे वर्षक व्यवस्थाने अंबद्वित विकास कर देवी

वर्षकर वरसद्वार मार-साट सूद-पाट बगावकता और अधानिका और यसा पंग वेंबरेडी केमके अवरेड का किस्सा औरसे आदि मार्गीय

वैभित्र सीन पार विवोदिसी वित्यू एवं नुकामान विराह्मी कार्मी निर्देश निर्देश करनाके कर्य मेर प्रार्थना थी प्रपटन किया किया । करांच्य निर्देश करनाके विकाद हुं भीत सिहित्यों करना बहुकाने बार पुरस्क क्षेत्र कर प्रार्थ मेर क्ष्म क्षांचारीं करना बहुकाने बार पुरस्क क्ष्म पर ताथ मेरिक करनाकर प्रदेश हैं या गो। कराने भीत करा बीत हुआँ पर कृत को गो। एक-इस अंतरिक्षों तुम्पन कर्मा पीनी सैन्देशी परित्रों करांची से पुरु व हुआ। एक बार भी पिहां करांची भीत पार पुत्र क्ष्मांचेन पर निर्देश पारा कराने केसामें बीतनाम करांच क्ष्मा विद्यास्थास करांचा क्ष्मीरण्या पुत्री बीत क्ष्मीरों करांचा करांचा करांचा विद्यास करांचा करांचा क्ष्मीरण्या पुत्री बीत क्ष्मीरों भीता करांचा करांचा वह स्वीरण करांचा

बान्य हो नहीं हुआ हा। विधिष्ठ में बान्य कैनेब्यामें नहीं नाम्यम बान्यीयम् सादि वहीं बीन्य में निर्माणी अर्थिपतील साथ ज्यानित्ताच्या स्वृद्धा मी बोर्ट सादि वहीं बीन्यों मान्य मान्य मान्यियाद, पर आप कार्य मान्यिय पर दिवार बा। इस पोर्चीमी पुत्र मार्गिक मिल्ला क्यानेन्यामा निर्माण कार्यों कार्यास्त्र से आप पूर्व में मोर्गिकी अपूर्णमें कारियास कार्य पर प्रतासित कार्या बारामी में पहुँच्य, पीठि प्यानित मान्यास देखन बाह्यों मान्या पूर्ण मान्या मान्यास पूर्ण विधिकार जमा पाया था और उसके फलस्वस्थ अनुमानातीत विविध लाभ उठाया था। वह इस मोनेकी चिडियाको सहज ही अपने हायसे निक्ल जाने न दे सकते थे। अधिकांश भागतीय नरेशोंने विद्रोहमें भाग नहीं लिया वग्न वे अंगरेजोंके ही महायक है। वगाल उडीमा, मद्राम, महाराष्ट्र, गुजरात, सिन्य, पजाव आदि प्रान्त विद्रोहके प्रभावसे प्राय अछूते ही बचे ग्हे। अपने मिक्स और गौरसे नैनिकोंकी सँगरेजोंको पूर्ण स्वामिभित प्राप्त थी और इन्हींकी महायतासे उन्होंने उनके देश-माइयोंका दमन किया।

इस प्रकार यह महान् क्रान्ति विफल हुई और फलस्वरूप अब सम्पर्ण देशपर अँगरेजोंको सत्ता और अधिक दृढ एव स्थायी हो गयी। इन्हैण्डकी सरकारने भारतका राज्य कम्पनीके हाथोंस छीनकर अपने अधिकारमें ले लिया, और वह अब इंग्लैण्डकी महारानी विषटोरियाका मारतीय साम्राज्य फहलाया। लाई कैनिंग अब कम्पनीकी ओरसे नियुषत उसका गवर्नर-जनरल नामक कर्मचारी न रहकर इंग्लैण्डकी महारानीका प्रतिनिधि शासक. भारतका वायसराय कहलाया । इंग्लैण्डके मन्त्रिमण्डलका एक मन्त्री भारत-पंचिव हुआ जो अपने लन्दनस्य भारत-कार्यालयके द्वारा इरन्पेडको सर्कार-के निर्देशनमें भारतका शासन-सचालन वायमराय बादि भारतमें नियक्त बिषिकारी बगसे कराने लगा। इलाहाबादमें १ नवम्बर १८५८ ई० की दरवार करके वायमराय मैनिंगने उपरोक्त ध्यवस्थाको कार्यान्वित किया और महारानी विक्टोरियाका घोषणापत्र पढ़कर सुनाया किसमें यह विस्वास दिलाया गया था कि कम्पनी और देशी नरेशों के बीच की गयी समस्त सन्वियों एव प्रतिशाओंका पालन किया वायेगा, देशी नरेदीकी गोद लेनेका अधिकार प्रदान किया जाता है, सरकारी नौकरियोका द्वार सबके लिए खुला है, जाति वर्ण या धम उसमें बाधक न होंगे, जनताके र्घामिक मामलोंमें सरकार किसी प्रकारका हस्त्रक्षेप न करेगी, और जिन लोगोंने विद्रोह-कालमें अँगरेजोंकी हत्या करने-जैसा महान् अपराघ नहीं

आस्याय छ प्रनस्त्यान प्रप (१८४० १०)

संबंधाने माजको थी सरका सूद्य और सबसे है हेक राज्यों में जाय सोमार रहूँगा दिया स्वार्धा कहाँहें आहे सबसे दियों दियों स्मारीके दृष्टि हो कहा एक पुराश पुराश पर काम साम-नार्था में स्मारीके दृष्टि हो कहा एक पुराश पुराश पर काम काम-नार्था में स्मारीक पर की मुकामा सामारीक राज्यों स्वार्ध में स्वार्ध में स्वार्ध मुख्य सामारिक पी क्योंने कर्क मित्रक पर प्रदान वर्ष में से हों। पारत्योंना सामारीके कर्क मित्रक पर पर प्रदान वर्ष में पहले सामारिक सामारिक सामारिक स्वार्ध में

रेमने पूछे बत्ती स्थाप पाँचे रेखा था जान विश्वारे देखाँ जो बहुत हो । बारण वर्षी मार्ट पहा। कारतीन नवाल्य या हांगरन महादेखाँकों (गीवरप्पारी) उर्दालन सामने जो बाने वेत्रपति वर्गितन राहालन प्यूर्णि दक्षी नहीं। (८९७ है से हिल्माने वर्गपत्र हो हैनेन्द्रपत्र राहिना-सेन्द्रि वर्गपत्रवालों भागवाली यह गर्वाल्या-नवित दर्ग स्थाप साहत्व-स्वार हिल्मान हों जो सामने सामने विश्वार पूर्व स्वारणि हिल्लाम

त्राच की। इस प्रवृतिः और स्वकारणी किए भी मर्थक प्रेम रहे जिलाग प्रयास स्थास बादणी को भावितीक बीच में स्थितियांचा भारते वाहोज को

स्तर व वाक्षण के वाक्षण कारण कारण की वीची वाक्षण कारण है। राष्ट्रीय क्षण्टर या । वाक्षण कारण कारण कीची वाक्षण कारण है। तुष्ट कोस्त वाक्षण रेक्षण हैय कार्य औरण कारण है। विशेषी दुष्ट्या क्षण कुष्टर वाक्षण कारण यो पारवर्ष और उनके क्षिप्रीची कारणांकर एवं कस्तुका कारणेंग्र मान वाक्षण या। किरोह

भारतीय इविद्रासः एक रहि

किन्तु उनका यह दम्म भी एक प्रकारसे ठीक ही था। उसके लिए मारस-वासी स्वय ही जिम्मेदार थे, अपने स्वयंके दोषो एव त्रुटियोंके कारण ही वे स्वय गुलाम बने थे। देशका दुर्भाग्य भी था कि अनेक दोर्घकालीन ऐतिहासिक परिस्थितियोने देशको उस कालमें वैसी विपम स्थितिमें ला हाला था और कोई ऐसा तेजस्वी प्रतिभाशाली बीर या वर्ग उस समय स्त्यम न हुआ जो देशको उस अन्व-कृपसे उदाग्वा। किसीको ठगनेमें ठग-का जितना दोष है उतना स्वय ठगे जानेवालेका भी है। तथापि इसमें एदेह नहीं कि भारतके इतिहासमें सबसे वहे विदेशो लुटेरे अंगरेज ही सिंद हुए और उनके द्वारा भारतकी महान्, दीर्घकालीण एव व्यवस्थित लूटका सम्पूर्ण सम्य विश्वके इतिहासमें दूसरा उदाहरण नहीं है।

व्यक्तीय इविद्वासः वृष्ट इहि ***

प्रमुख बहेरर व था। राजनीतिक अल्याचारी एवं वर्धकर धोनाने हैं मन् वरराधन का अन्य कार्यक अस्तावारने वेशवृत्त महार वे स्व भी बातरे में कि वर्ष से देश करवेगा असम करेंते हो। समसे तून प्राप्त र्वितक दर्भ गाविक क्रोक्सोकी विद्विपी गारी शाका क्लोबी कुमानमा है है इत अपार समये इक देवने आलवनके क्यान्य अपने देवनी गर्हे मानं कम मुद्देश्वेन प्रतिकृतिकारीयो कुनकारि वाजनी-वान कार्नि वि महानेवके महारारार पूर्व क्लावकार क्यांक्य पर किया। क्य माधारी बनायिके विकारपर गुर्वेचा दिला और वक्ते करने देखने एक अलगा विर्ण कारी बोडोरिक व्यासारिक एवं मार्किक कार्यित कराव कर ही । समये के वर्गीतें को नार्ग जिल्हा हुक्तेको राज बच्चीने बहाउट जिल्हाच गर्नम स्रो वैत्राक्षद्र संका पर्वत्य सम्पूर्ण जारतपर्वतरः यसके सीमान्य सर्व सम्बद्ध प्रदेशी वर्षिय वरना क्ष्म्यान क्षमान्य स्वापेत कर किया और वरके द्वार्य क्षपने केसा आदि जीर छान्द्रकी निरूपनी सबसे वरी पूर्व क्रमते अधिक समूचे करिय क्या दिशा । इस कार्यमें क्याने देखके और शक्कीरिक वर्ष केंद्रिय बरावरा बरवर बाज ब्रह्माचा कवं पत्तवको क्याने द्वितके जिल्ल और अधिक बोरनादिय किया और खिर इन परमपुष डोक्को प्रशासित करवेर्व ने इसर्व इस कि इस वा परीनगार मुस्ति हम निक्रम पविच अनमत वर्ष विक्रमें इस बाले बार्गानरीके देवपर क्या शरके क्वापा बंध्यान कर रहे हैं और वर्षे बुकाबित बुकान बुक्तेश्वर एनं वनुसर नाम्नेका श्रुप्त गनान कर रहे हैं ।

क्षिमा व्यावनी सामा किया करा। सरकाः भागतमे अवश्विते शासमके ही बस्केन्द्रसा बावित श्रीर्थ मनपा मनीत्राम पापर्रोकी काठाके वार्तिक बाजनीतें सर्वता हरायोप न करतेंगी गोरिली ही बरवा था। ये हिन्दू, जैन, तिक्क ज्उधन्या गासी मापि बाबी प्रपक्तित पर्वोक्ते जांच श्रद्धिम्न वृत्तं बनवर्धी रहे से । ईडाई वर्ष

प्रमान करना पालपर्व था क्षण कवनी क्षमक ही लोसकाहन दिया कीर बत्तरा व्यवस्थित अचार बाब् कराया । तथापि वर्धप्रचार कारा वर्षे किन्तु उनका यह दम्म भी एक प्रकारते ठीक ही था। उसके लिए भारत-वासी स्वय ही जिम्मेदार थे, अपने स्वयके दोपों एय शुटियोंके कारण ही वे स्वय गुलाम वन थे। देशका दुर्भाग्य भी था कि अनेक दोर्घकालीन ऐतिहासिक परिस्थितियोंने देशको उस कालमें वैसी विषम स्थितिमें ला टाला था और कोई ऐसा तेजस्थी प्रतिभागाली बीर या वर्ग उस समय उत्पन्न न हुआ जो देशको उस अध-कूपसे उवारसा। किसीको ठगनेमें ठग-का जितना दोष है उतना स्थय ठगे जानेवालेका भी है। सथापि इसमें सन्देह नहीं कि भारतके इतिहासमें सबसे बड़े विदेशी लुटेरे अँगरेज ही सिद्ध हुए और उनके द्वारा भारतको भहान्, दीर्घकालीन एवं व्ययस्थित पूटका सम्पूर्ण सम्य विश्वके इतिहासमें दूमरा उदाहरण नहीं है।

अध्याय 🖪

पुनरूपान पुष (१८४=१६४७ 🛍)

बेंगीयोपे आरवको की बरकट लक्षा हैए जबके में नव परनको की बान तांभारर परेका हिरा, श्रवार्थ क्यूफें बाई अपने निर्मे हिर्मी मीर रम बाँडो दृष्टिने ही बढ़ी। एर बुवाब नुबहित दर्व बनाव धावम-नालया वी

हर देवको ब्रधन की जो नुवस्त्राताराई चरणीनाई नाम है व्यरस्थापर ही बच्छी। नुस्ता आकृत्वि को क्वारि उपने एक अवस्थी क्वा बोर बेंड वी - राजननीय जवाबोरी अपने अधिक जनत पानन इस

रेतने नाने कतो साबद गरी रेका का जन्म दिसी देवने की बनके वर दादर क्यों नहीं रहा । भारतीय प्रवास्त या इतिहरू व्यक्तितीकेंग्रे

(ग्रीहरदादी) क्रॉक्ट बाक्ने जी मार्च इंगरी वर्धेनन प्रवास प्रति ममद्देश हैं है कि विकास सम्बन्ध हो ईलीयने पर्वित्त-मैन्द्रके ब्रालाकालके आधार्यी यह ब्रमाध्य-गर्दात वर्ष व्यवस्था प्राची

mur feefen gi alt und nicht fann qu'femit frange क्रम्य को ।

इस स्ट्रांड और गारण्याने किए जी मनेफ रोध रहे जिल्हा हचान

कारक पांचरों हुई आविनीके बीच न निर्देशका बाधे बार्च र हुई

राजीर क्ष्मार का । बन्नीवे कारण भारतके अँगरेशी बायमने अन्तर्नितित

मूच बहेरम अपान इंग्लेंबर वैश्व और अंबरेश कान्त्रिके इचली, स्टापी और

दिन्तीकी सुरक्ता करत बुकार बालगरे अन्तर्यक्ष

u.

बोर क्यारे

निकारियोंकी स्वासारिक रा^के ı sinin





ज्यिति हित-सरक्षणको पूर्ण प्राथमिकता थी । निष्य । सक भारतपर्यका प्रसासन एवं उन्नति अँगरेज जातिके अपने नियो भी प्रकारके उरक्षपम साधक था उसे उन्नत बनाया गया । यदि उससे भारतीयोको उन्नति होती है तो यह और भी अच्छा । किन्तु जहाँ और जिस रूपमें भारतको इस उन्नतिसे स्वय अँगरेजोंके अपने उत्कपमें बाधा होनेको सम्भावना होती वहीं उत्तपर रोक और नियन्त्रण रूगा दिये जाते । इंग्लैण्डके हितके सम्मुख भारतका हित सदैव गौण रहा ।

प्रारम्ममें जो अंगरेज भारतमें आते रहे वे प्राय छोटे घरोंके अशिक्षित, अवारा, लोभी, धृतं एव चरित्रहीन होते थे। व्यक्तिगत व्यापार और लूट समाट-द्वारा जल्दो हो धनी बनकर स्वदेश लौट जानेपर चनकी दृष्टि रहता थी। किन्तु १८वीं श्रताब्दीके उत्तरार्धमें बगाल और कर्णाटकमें राज्य-सत्ता हायमें आनेपर तथा तदुश्यान दुतवेगसे भारतके विभिन्त भागामें अँगरेजी सत्ताके प्रसारके कारण वक्त वगके लोगोंका अनुपात घोरे-घोरे घटने छगा और अच्छे घरोंके सम्पन्न पुशिक्षित अँगरेख मी अव आने छत्ते तथा उनकी सख्या शनै शनै बढ़ने छगो। ईसाई पादरी भी बहुएस्यामे आने लगे जिनका प्रधान उद्देश्य यद्यपि धर्मप्रचार और अधिकसे विक सक्यामें भारतीयोंको ईसाई बना डालनेका या किन्तु साय ही उनमें-से अनेक सुशिक्षित, परोपकारी वृत्तिके तथा दयालु भी होते थे। १९वीं कातीके पूर्वार्धमें बगाल, मद्राप्त, बम्बई आदि जिन प्रान्तींपर अँग-रेंबी सत्ताको स्यापित हुए चालीस पचास वर्ष बीत चुके थे और फठस्ब-रुप जहाँ अँगरेजोंने अपना प्रशासन बहुन कुछ व्यवस्थित कर लिया था वया शान्ति स्यापित कर लो थी वहाँके भारतीय ३ भी शासनके विभिन्न विमागोंमें काय करने छगे ये और अँगरेजींके सम्पर्कतः पारचात्य आचार-विषारों और मम्प्रतासे परिचित हो गये थे। उनमें से अनेक खेँगरेखी . भी भी सोस चुके थे और सीस रहे थे और अब वे जातीय सुमारकी , जबत होने छगे थे। बगालके राजा राममोहनराय, महर्षि देवेन्द्रनाथ करने हाथमें कर किया तथा पश्चिमा वैश्वीम जैन्द्रा पायर पुंच बड़ीक यन्त्रीको भी स्थापन करनेकी सीर वे अपूर्ण हुए ह र्वीकरे, बुध वनीचा जैनरेय अधिवर्तारवृति अपने बैनिय म प्रयादकीय कार्य-वार्थ्य क्षत्रकाद्य जिल्लाकहर का अधीके होरान्ये विशे क्ष्मन और निजासने मेरिस होकर व्यक्तिन कर्या ही बड़ी दब देवरे बार्रिस क्या धर्व वर्गन कुराप्तक प्रतिशास बार्गरना बाल्यन जारान कर निया। १८वर्षे कही है के कहुकेशाओं ही कारावरीये एक बीली कवित्रको और असर दोने एक मुक्तकान अस्त्वेची स्थारना हो। असी की बर विकास बोलाने कार्रकामधी चतुःचामा सना नदासाहत साहि गर्दे बीरण प्रमाण संगरेत्रीने अनुसन् विश्वा और आव्या विश्वाप्त अञ्चलकी बीजारीएक किया हवा एवं। क्षेत्रकं १७७५ ई. के बंबाल ब्रोडवार्डक बीनाइटीको स्थानमा थो। सैवेडियम हाम्हेडके स्थानांत बाहिके बातारहे दिन्यू को पा बंदकन किया और मुक्तमानी शामुख्या तो अंबक्ट किया। हेजर रेपरने वंश्वलया थव विज्ञा, जारहात वर्गामांग्याची वीच हानी श्रीर मेंनाच परम्यका निर्माण विका । हैगरी राज्य बीसकुवने सुर्ण केन्द्रण प्रतिके माधारके जारतीय वजी वर्ष शर्वनीया सम्मयन प्राप्त किया । बारते बुरोवर्ष भारतीयोका बातिशी वर्षो वर्ष छीन-रिधामार क्रम विका । यर प्रमणे विशिष्ट वाहि वाच विदानीने की बारवर्ते विविधियम् बावमानी बहामा त्यां वार्त्य हेरिटाह वर्षे, प्राप्ती सरवी कार्य मानामीका क्षाना संबंध जारा सम्मानकारीक बा १ कहने जी

कररोग्ट निरामीको प्रोत्सारण किया । १९वीं पराध्योते पूर्वार्थे बारते । जवीच बार्विक मार्थीक विकासीको पुर लग्न ववेक मार्थीय बार्ट में स्मार्थी क्या राज्य विवाद कर्या विविक्त वीवेकी बांज समस्का स्मार्थ

नार्गाच इविद्या (. ता है

राष्ट्र, वे प्रवार केन आदि हैने ही नहानवाद के 3 क्योरण जार्री ने नेपक मारहीन रिपेपकर चारणे जेन आरवाही जुनाड़ी खारि रेको मारपार्न दिल्ला सेवे करें और जारुरिज आरपार करन दुक क्योरे हुंगा, देशके अनेक प्रदेशोका सर्वे हुआ तथा अनेक स्थानीमें गर्केटियरोका निर्माण हुआ और भारत तथा भारतीयताके अध्ययनकी प्रभूत प्रमति हुई। कर्नल टॉडका प्रसिद्ध राजस्थान, पर्नल मेकेंजीका लेख संग्रह तथा एलिकन्स्टन आदिके इतिहास प्रन्य लिखे गये। न्यय अंगरेज अधिकारियोंका ही एक दल ऐसा था जो भारतीयोकी विक्षाका माध्यम सस्कृत आदि प्राच्य मापाओको बनानेके पक्षमे था। मैकालेके तीग्र विरोधके कारण ही उनकी बात न चलो। उपरोक्त समस्त प्रयत्न व्यक्तिगत थे तथापि उन्होंने मारतीय साहित्य, संस्कृति और इतिहासके आधुनिक अध्ययनकी सुदृढ़ नीव जमा दी और इस प्रकार इस देशका सर्वमहान् उपकार किया। इन दर्जनो उदार मनीयो, विद्या-व्यक्ती अँगरेज महानुभावोंने ही अपने कार्यों एव इतियोंके द्वारा भावो पीढ़ियोंके भारतीय विद्वानोका सो प्रय प्रदर्शन किया ही इस देशके निवासियोंमें घर कर जानेवाले होनताके भावोको धने-धने दर होनेमें भो भारी सहायता दी।

इसके अविरिक्त सम्पूर्ण देशको एक केन्द्रीय शासन-सूत्रमें बाँधकर, रेल, डाक, डार आदिका न्यवस्था करके तथा सहकों आदिका निर्माण, मार्गोको सुरक्षा और शान्तिको स्थापना-द्वारा अँगरेखी शासनने देशमें एक-सूत्रता एवं एकजातीयताके भावको प्रोत्साहन दिया, जाति, वर्ग एवं प्रान्ती यताके भावोंको शिष्टि किया, और 'देशके बाहे जिस कानेमें रहते हो हम सब भारतवासी ही हैं इस मावको उत्तरीत्तर पृष्ट किया। अँगरेखोने बान-बूझकर मले ही इन प्रमृति प्रवृत्तियोंका पोषण न करना चाहा हो कि तु सनके कार्योस इन परिणामोंका लक्ष्य या अलक्ष्य रूपमें स्थमावत प्रकट हाना अनिवार्य था।

इस प्रकार खेंगरेजोने देशको भीषण लूट एव शोपणके तथा उसे पराधीनताको वेडियोंमें जकड छेनेके वायजूद जाने या अनजाने इस देश और जातिके पुनक्त्यानके बीज भी बो विये । १८५८ ई० के उपरान्त देश-की आन्तरिक शान्ति, उसम शासन ब्यवस्था और शिक्षा-प्रसार सथा एक

हीरहर पो चानेरर शास्त्र होना रहा। नाने वर्षको स्वति यो पूर्व सोती सहि हिन्तु देखा कार्य पूर्वि जेनसीय वर्षित सर्वेश स्वति प्रमारका कार तथा स्वत्य नांच पूर्व वाननस्वारक संतरेद स्वति स्वत्य पो से पर तक एवं केवार प्रचिप्त स्विकारिक स्वता स्वतिकार स्वाच्याद साहब सोत स्वत्यन्य यो पूर्व स्वत्य प्रमास स्वाच्याद साहब सोत स्वत्यन्य यो पूर्व स्वत्य स्य

आर्थ केंद्रिल (१८९८-१६) वार्य विशेषण प्रथम (१८६-१६ ६) वर कोण वर्षिण (१८९४-१६ है), वार्य केंद्रि (१८९४-६१) वार्य परिचा (१८८४-१८ है), वार्य किस्सा (१८९४-८८ है), वार्य किस्साम (१८८४-१८ है) वार्य कार्यण (१८८४-८८ है), वार्य केंद्रियामा (१८८४-१८ ६ है) वार्य केंद्रियामा (१८५४-१८ है) वार्य कार्यण (१८९४-१६ ६ है) वार्य केंद्रियामा (१८५४-१६ है) वार्य केंद्रियामा (१८५४-१६ है) वार्य केंद्रियामा (१९४४-१६ है) वार्य केंद्रियामा (१९४४-१६ है) वार्य केंद्रियामा (१९४४-१६ है) वार्य केंद्रियामा (१९४४-१६ है) वार्य किस्सामा (१९४४-१४ है) वर्षिण (१९४४-१६ है) इस नब्बे वर्षके ब्रिटिश शासनकी प्रधान विशेषताएँ वैदेशिक नीति, बान्तरिक शासनका वैद्यानिक विकास, देशकी धार्मिक, सामाजिक एव धांस्कृतिक प्रगति, राष्ट्रीयताका विकास और स्वातन्त्र्य सघर्प है जिनमें उक्त शासनकी कतिषय सुदेनें और कुदेनें दोनों सम्मिलिस हैं।

चैदेशिक नीति—इस कालमें भारतीय शासनकी वैदेशिक नीति विटिश साम्राज्यकी वैदेशिक नीतिका ही अंग थो। भाग्वीय साम्राज्यकी सुरक्षाके लिए उसके सोमान्त प्रदेशोंको निष्कण्टक करना तथा उनके उस पार स्थित पडोसी स्वतः त्र राज्योको अपने प्रमावमें रखकर उहें 'धवका सम्हाल' राज्य बना देना, तथा ब्रिटेनके धातुओंको कुचलनेमें अपनी पूरी धिक्त लगा देना ही मारतकी विदेशो नीति थी।

१८६३ ई० में लाई एिलान प्रथमने सीमान्तके पठानोका दमन करनेका प्रयत्न किया और भूटान नरेकके साथ भी एक सन्धिकी। १८६५ ई० में जारेन्सने उस सिंघको अमान्य किया और भूटानियोंको पराजित करके अपना करद बनाया।

दोस्तमुहम्मदको मृत्युके उपरान्त १८६३-६८ ई० में अफग्रानिस्तानमें उत्तराधिकारके प्रकार गृह-युद्ध चलता रहा। इस प्रसगमें वायसराय चारेन्सने 'वर्तमान राजाके प्रति मित्रमाव रखने और उसके राज्यके अन्त - फलहमें क़तई हस्तक्षेप न करनेको' नीति बरती। रूस मध्य-एशियामें अफग्रानिस्तानको ओर बढ़ता वा रहा या और भारतके लिए एक खतरा था, किन्तु लाँरेन्सने युद्ध मील लेना ठीक न समझा। उसके उत्तराधिकारी मेयोने मो इसी नीतिका अनुसरण किया। अफग्रानिस्तानका अमीर शेरअली १८६७ ई० में स्वय भारत आकर अम्बालेमें वायसरायसे मिला और विविच प्रकारकी सहायताको याचना की। वायसरायने उसका वहा शिएाचार और आवभगत की किन्तु सहायताका कोई स्पष्ट वचन नहीं दिया। फिर भी अमीर उसकी मित्रता, सौजन्य और शक्तिसे प्रमावित एव सन्तुष्ट होकर लीट गया। रूसके साथ भी एक सिय को गयी असके अनुसार रूसी

चिन् बहोरके बाद श्रेपरेनीके विच्छ भी विद्यानको पुर कर हो। समैर में समाद नवश्ववद्वार वातवदानी वान येव विश्व किन्तु वह किर की बार रहा १ १८७३ में में स्थितीये बीवारर व्यवसार करने मेरमनीकी बदबीय कर दिना । चलने नागवराय नाववृत्वते बद्धारताकी माध्य क्षेत्र व्यक्ते प्रवचा शिरस्कार कर विद्या । विद्वार अधीरने पविनेति क्का-बाद बाराज कर थी। करा कार्ड सिटनने जाते ही नार्ट-शामित्यानके यात पुर केव रिया । एक यावक पूर्वती कुर्धीनकी पुर अस्तान हैं। क्या वर्ष । वेंगरेज क्यांके विरोधी थे । क्यांनि अवसामित्सान-**बर शास्त्रम कर रिया। येरक्की पर्धानंत्र होकर सुद्धी प्राम पर्ध** और १८७९ ई. में क्यके पुत्र वाजवसांकी समीर क्लाकर मास बरधारते वसे बरामे गारीच्यामें अवन किया हिन्त बसे बेंबरेंड रेंबी-डेक्टकी हत्ताने नदुरुषके क्लेड्से निर्धावित करके ध्यास जैन निया बसा । क्यर समुद्दिनाको अप्रशानिताकार श्रीवशार कर किया । १८८ हैं में बारत करकारने बढ़के बाब बर्निक करके और कियों करन रिटेडी परितरे बानाय न रखतेया नमन केवर अवीर ताव्य कर निया । इकार सीटा और विवरिक्षों क्षेत्रीको कार्याको निवस हो सर्वे स्थ हिस्तेनिस्तान निर्देश राज्यवे विका क्रिया बना १ इस शहार क्रया-एकिनानें क्षिपॉरी मानंदाय नगरे तथ एक दिशमें वक्षम प्रतिपेष हो स्था। फिर भी कड़ी अपकर होते ही जो और वध्य-एडिस्सर्वे जीवरेड-कड़ी क्षेपर्व tcct के tsew (तक नमता रहा । ब्रोमान्तके स्थान वजीवीं-

बरकारचे बहुदाविकालकी श्वालकाकी काव्य रखनेका बहुदातक दिया

के बान भी भारत कारकारकों बनुकार नकतो पूर्व । कार्य नर्पर्य १९ १ वें में नहीं केच हातकर एक प्रतिकोशन कोच्या प्रदेशना एक पुत्रक पूर्व मनाव नहीं बातित क्यांतित की । इसी वर बनुद्वांत्रकारी में मुद्र हो में थी। कार्य पुत्र हरीयुक्ता वसीर हुआ, वर्षके वाक स्त्रीत कीन कर को को और वह बीराजीका जिस क्या एन।

...

वार्ताव इविदान । इक धीर

इसी बीचमें पूर्वकी दिशामें ब्रह्मा राज्यके द्वारसे भारतपर फा सीसियोंके आक्रमणका भय बना हुआ था। ब्रह्माका राजा मिण्होन (१८५२७८ ई०) वटा चतुर था, उसने अँगरेजोंके साथ भी मित्रता बनाये रखी
और फान्सके साथ भी सम्बन्ध रखा। किन्तु उसका युवक पुत्र और
उत्तराधिकारी थीबो मूर्ल, अयोग्य और अनुभवहीन था। उमपर
फा सीसियोंके साथ मित्रताके करनेका दीप स्थाकर भारत उरकारने युद्ध
छेड़ दिया और उसके राज्यका अन्त करके उसे १८८६ ई० में अँगरेजी
राज्यमें मिला लिया।

लाई कर्जनने १९०७ ई० में एक अँगरेज रूसी मन्विके अनुसार हैरान देशको भी दो प्रभावस्त्रवामें बाँटकर दक्षिणी ईरान धौर फारसकी खाडोपर सपना प्रभाव स्थापित कर लिया। विव्वत दशपर भी जो गाममायके लिए जोनके आधिपत्यमें था रूस और भारत-सरकार दोनो ही अपना प्रभाव स्थापित करनेका प्रयत्न कर रहे थे। इस सम्बन्धमें नी १९०७ ई० में अँगरेजो और रूसियोंमें यह तम हो गया कि वे दोनों ही जीनके जरिये तिव्यतसे सम्बन्ध रखेंगे और उसके किसी भी प्रदेशपर कभी मी अधिकार न करेंगे।

१९१० ई० में अफ़ग़ानिम्तानक अमीर ह्वीवुल्लाका वय कर दिया गया और उसका पुत्र अमानुल्ला अमीर बना। १९१९ ई० में उसने बिटिय प्रदेशपर आक्रमण कर दिया और धीसरा अफ़ग़ान युद्ध छिड गया येपा थीझ ही समाप्न भी ही गया। अफ़ग़ानिस्तान अब सर्वया स्वतन्त्र और अँगरेजोंके नियन्त्रणसे मुक्त राज्य ही गया। १९२९ ई० के उपरान्त होनेवाली उसकी राज्य क्रात्या और गृह-युद्धामें भारत-सरकारने कोई हस्तक्षेप नहीं किया और पुन द्याप्ति होनेपर नादिरधाहको अमीर भाय कर लिया।

इसी वीचमें १९१४-१८ ई० के प्रथम विष्वगुद्धमें भारत सरकारकी पूर्ण पित्त अंगरेजोंकी ओरसे जर्मनीके विरुद्ध प्रयुक्त हुई। जनतासे गुद्ध-

क्या रुपट्टा किया बना । जारतीय सैनिक कार्बीकी ब्रोकार्वे सन्तर,

रिकाले वररान्त इंतीवारी बरधारी बाने १८५८ ई के बाराने मेक्सर वाक्यार्थ अस्मित्रव" वर्णात् 'ऐस्ट आर के वेटर व्यवनेष्ट शॉड इंकिस के हाप नोर्ड बॉड क्योंक एवं बोर्ड बॉड डाइरैक्सरेरो स्थान करके काराजें सेंद्र हमिना कन्नीके बाहबका करा कर दिया वा कीर क्कको धारमेर नर्ल्य हाकों के की थी। इस कार्यका पार विदेश और क्षत्रको एक बरस्तको क्षेत्रा नवा को चारत-क्षत्रम क्षत्रकार, स्वर्की बहारवार्ष किर १५ क्यानीसे एकपरावर्धशाचे होनास स्टेरिना स्टॉल हुँ। बाँद कम्पनमें इन्तिया गाफिक वक्त वरिक्वक कार्योक्त हुन। । बार्टर-रा नवर्गर-भारत्य वय राज्यसम्ब प्रदूषाचै क्या । देवने जान्तरिक वागर वें निवेत परिवर्षन नहीं हुवा । बारवारान वीत्रको बामन्यान बाननीरवें बारित स्थापन करतेलें हों. अपनी कपित बनानी । क्याची नरन गीरिके कारण अंगरेच 'दशकू गेर्निन' नमुकर बक्का काश्चाव करहे ने । बार्केंके क्षमाने वैनाके-प्राप्त निर्मात क्षमान स्थाति कामून कारोपिता हुए और हार बोर्टानी स्थापना हुई बचा नाम बोनानो और क्रीवशारी क्याक्टी-शारा नाम-पालाको गाँवेशे कार एक अध्यान वर्षे ।

बरमारने तरका बावनके सम्बर्धेत जिल्ला और या नह बामान्याण

Q.

विनर्रोके अधीन प्रान्तोंमें विभाजित था। प्रत्येक प्रान्त कमिश्नरोके अधीन र्गिश्नरियोंमें, प्रत्येक कमिदनरी कलक्टरोंके अघीन जिलोमें, प्रत्येक जिला व्हिंसीलदारोंके अघोन तहमीलोंमें, प्रत्येक तहसील परगनोंमें और परगने ांंबों या महास्रोमें विभाजित थे। सेना, पुलिस, जेल, डाक-तार, शिक्षा, म्यापार, वित्त, पब्लिक वक्सं आदि विभिन्न सरकारी विभाग प्रान्तीय एव फेन्द्रीय आधारोंपर सगठित हुए। बदालतोमें वादो-प्रतिवादी या अभियुक्तोंको सहायताके लिए वकील मुख्तारोकी प्रथा प्रचलित हुई। १८६१ ई० में इण्डिया कौन्सिल ऐक्ट पास हुआ जिसके अनुसार वाय-परायको सहायताके लिए एक कार्यकारिणी समिति सया एक व्यवस्थापिका सिंभिति बनायो गयो । कार्यकारिणीमें स्वय वायसराय, जिसके अधिकारमें परराष्ट्रनीति भी थी, सेनाके शासनके लिए सेनापति, शान्ति-रक्षा तथा आन्तरिक शासन आदिके लिए गृहसदस्य, वैक, करेन्सी, ऋण, व्यय, टैंदे आदिके लिए अर्थ-सदस्य, कानूनके लिए न्याय-सदस्य, वाणिज्य, बन्दरगाह, जहाज, रेल बादिके लिए व्यापार सदस्य, शिक्षा-स्वास्क्य बादिके लिए शिक्षा-सदस्य, तथा उद्योग एवं श्रमके लिए एक अन्य सदस्य सम्मिलित थे। क्रानुन बनानेके लिए ६ से १२ सदस्योकी एक परामर्श-दात्रो व्यवस्थापिका समिति वनी जिनमें आघोंका ग्रीर-सरकारो होना आवश्यक या। पटियाला और काशीके नरेश तथा खालियरके दीवान दिनकरराव इस समितिमें मनानीत किये गये। वस्वई, मद्रास और वगाल भान्तोंको कौन्सिलोंको भी क्रानुन बनानेका अधिकार मिला। व्यवस्थापिका-द्वारा बनाये गये अधिनियमोंपर वायसरायको विटोका अधिकार था, छह मासके लिए वह स्वयं भी कोई आर्डिनेन्स जारो कर सकता था।

चपरोक्त आधारोंपर भारतके आन्तरिक घासनका विस्तार और पैमानिक विकास उत्तरोत्तर होता गया। १८७१ ई० में प्रथम सार लार्ड मेयोने भारतको जन-सङ्या गणना करानेको योजना की किन्तु पूरी गणना १८८१ ई० में हुई। इसी सायसरायने १८७० ई० में म्युनिसपल ऐक्टों- तान आर्त होने कार्य-वार्थ अस्पीर स्वाधीत प्रवास्त्र आप केरि कर्में बारदी स्त्रीर दिया । बी में दिनाई हैं में हुए बनाइमा आप कीं बार्धि का मिल कुछ कार्य स्वर्थीत मुन्दिरिटिवर्डियों स्वाप्ति ही पर्वे दी दिला पूर्व को मोनेनी बाराम दीने में से बाद ही मांच्यातिकार स्वर्थीत दूर्व होते हैं मोट बाराद ही विश्व में । क्या प्रवास सार्याल स्वर्थन दिलाम्परिकेशाद दिला मांच १८८८-४५ में सार्व दिला

पूर्व गोर्डाको मीर वर्षक स्वरूपन कीर विकास हिला। स्वेच गाउँ नेस्य प्रांत्वस्त क्योंक हुएँ वर्षकं सरिवार को स्तेर करने स्वायत क्यां स्वरूपनाय स्थितिक होने करें । देशती क्षांत्रेने स्वायत्वस्त्र क्यांत्रिय सामित स्वरूप हुएँ। १८९१ में बिहुच्या क्षांत्रका कोजना नेहर तथा हुआ स्थित

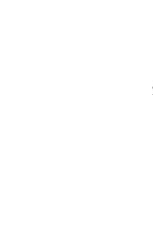
वृद्धि हुई, क्षमधे कारण-मेराज्ये थी पृद्धि हुई और वरीज निर्माणका विद्वारम् भी स्थोनार वह जिल्हा बना १ केल्क्स क्ष्मीप्रेक केरलारमध्ये

वसर्व सामीय करिन्तीक विश्वासार्थं वस्त्यों हारा पूर्व काले करें हैं। इस्तीय वर्तिनीक विश्वासार्थं वस्त्य कर्मा है। इस्त्रीमीं इस्त्रीम वर्तिनीक विश्वासार्थं कृष्य के को । १९९५ के विस्थासार्थं नुमार्थं क्यारार्थं वस्त्रीय कार्ये विराय देखा यह इस्त्रों इस्त्रीय अनुसार क्यारार्थं क्यारार्थं कर वस्त्रीय की बीट विश्वास वस्त्रीय को अर्थार्थं क्यारार्थं कर वस्त्रीय के स्त्रीय की बीट विश्वास वस्त्रीय को अर्थं क्यारार्थं क्यारार्थं कर वस्त्रीय क्यारार्थं कर क्यारार्थं क्याराय्यं क्याराय्यं क्याराय्यं क्याराय्यं क्याराय्यं क्याराय्यं क्यार्थं क्याराय्यं क्याराय्यं

"दिमिन बरकारकी गीकि प्रकाशनके शरदेक विशानमें बारकीनींका बाँगी

त्तर अधिक सहयोग प्राप्त घरते जानेगी है जिससे कि वे दाने -रानै. स्वायत्त-शामनगा विकास करके ब्रिटिश साझाज्यके एक अभिन्न अगके रूपमें अपने देदामें भी उत्तरदायित्वपूर्ण शागन प्राप्त करनेमें समर्थ हो सकें।"

फलम्बङ्य माण्टेरयु-चेन्सफोर्ट मुबार प्रस्तुत हुए जिनके आधारपर १९१९ ई० का गवनमेण्ट ऑफ़ इण्डिया ऐक्ट पास हुआ। इसके बनुमार भारत-सचिवकी इण्डिया की सिल्में भारतीय सदस्योकी सहपा बढ़ायी गयो, वायसरायको कार्यकारिणीम भी सदस्य वृद्धि हुई, उसको व्ययस्या-पिका समितिको कौन्सिन ओफ स्टेट्स तथा लेबिन्नेटिय एमम्बली नामक दा सदनोंमें विभक्त कर दिया गया जिनको मदस्य-सख्या क्रमश ६० सीर १४४ नियत हुई। जनको अधिकार-वृद्धि भी हुई और निर्वाचन-क्षेत्र ^{विस्तृत} हुआ। प्रान्तोमें द्वैच शामन स्यापित हुआ, सरक्षित विषयोंपर गवर्नर और उसकी कार्यकारिणीया पूर्ण अधिकार था और हस्तान्तरित विषयोंपर प्रान्तीय लेकिस्लेटिन की मिलके जाता द्वारा निर्वाचित सदस्योग्ने-सं नियुक्त क्ये जानेवाले मन्त्रियोंका । विभिन्न जातियोके प्रतिनिधत्व, प्रत्यक्ष निर्वाचन और मताधिकार-विस्तारको मी प्रथय दिया गया । म्यनि-सिपल बोड, डिस्ट्वट बोर्ड, टाउन एरिया कमेटो आदिके अधिकारीमें भी वृद्धि हुई और इन सस्याओको प्रान्तीय मन्त्रियोके अधीन किया गया। नगरोंको उप्ततिके लिए धम्प्रवमेण्ट ट्रस्ट स्थापित हुए। ग्राम-प्रचामतोंके सगठनका सिलसिला १९०९ ६० वे डीसन्ट्रेलाइजेशन कमोशन (विकेन्द्री-करण आयोग) की सिफारिशोंस ही शुरू हो गया था, अब १९२२ ई० से स्यानीय अधिनियमी-द्वारा उनका उत्तरप्रदेश आदिमें व्यवस्थित सगठन शारम्भ हुआ। सर जान साइमनने भारतका दौरा करने तथा विभिन्न दलोंके नताओंके विचार जान छेनेके उपरान्त सन् १९३० ई० में अपनी रिपाट प्रस्तुत की, तदनन्तर १९३०-३२ ई० में छन्दनमें तीन गासमेश का फोन्सें हुई जिनमें भारतीय नताओं के साथ ब्रिटिश राजनीतिशोंने भार-



मारतका प्रथम गवर्नर जनरल होकर रहा, तवनन्तर १९४८-५० ई० पक्रवर्ती राजगोपालाचारी मारतके गवर्नर-जनरळ रहे, इस योचमें ए देशो विशिष्ट विधान निर्मातृ-समा सर्वसन्त्र-स्वतन्त्र भारतका प्रनातन्त्रात्म विधान निर्माण करती रही। आधुनिकतम आदशॉपर, देश विदेशोंन विधानोंका सम्यक् अध्ययन करके भारतीयोंने ही अपने देशके लिए यह सिवधान स्वय बनाया जो २६ जनवरी सन् १९५० ई० से कार्यान्तित हुआ। तबसे तबत सिवधानके अनुसार ही स्वय मारतीय जन पूर्ण स्वतन्त्रताके साय अपने देशका शासन कर रहे हैं, यद्यपि स्वतन्त्रता प्राप्ति-की एक प्रधान शर्वके अनुसार दशका एक वहा माग पाकिस्तानके रूपमें ज्समें सबया पृत्रक् फिर भी कर दिया गया।

विटिश राजकी कुदेनें अग्रत लगभग दो सी वर्षके और पूर्णत क्षामग सी वपके ब्रिटिशराजन भारतवर्षको अनेक भयकर कुदेने प्रदान की जिनक कुफन यह देश ब्रिटिशराजके नारम्मचे ही मोगने लगा, कुछको बदतक मोग रहा है शोर सम्मवतया आगे भी न जाने कवतक मागेगा। सबसे वही कुदेन तो इस देशक इतिहासमें छग जानेवाला यह लज्जा-ननक अमिट क्लक है कि तीस करोडसे अधिक जन-सरुपावाले इस महान् भाचीन देशको जो सम्मता और संस्कृतिम किसीसे पीछे नहीं था, जिसमें चस कालमें भी न राजाओं और न राजनीतिज्ञोंका अमाव था और न शूर-वीर योदाओंका, हजारों मीलकी दूरीपर स्थित एक छोटे-स विजातीय विदेशने जिसका विस्तार, जन-सरुपा, शक्ति और धन-सैमव मारतके एक राज्य या छोटे हे प्रान्तसे अविक नहीं था, अपने मुद्दा-भर निकृष्ट श्रेणोके तथा व्यापारके उद्देश्यमे आनेवाल प्रतिनिधियोके छल-कौशल द्वारा इतने सहम भीर सुगम रूपमें अधीन कर लिया। कुछ ही दशकाँके मीतर सम्पूर्ण देशपर, उसके समस्त प्राकृतिक सीमा ताँके उस पार पर्यं त, उनका मुत्व छा गमा और फिर एक शताब्नीसे अधिक काल पयन्त सुदूर लिण्डमें वंडे-वंडे ही में अपने एक लाखसे भी कम प्रतिनिधियों द्वारा तीस-

चामीन करोड़ बारसमाहिकोंक नुपानलपूर्वक सामन करते. है । मारपर्व सनी बनोंड जैनरेडीको अल्या हीय-चार जालने वर्षात्र करो. नहीं पी भीर इस प्रकार क्षेत्र भेवरेज क्या क्ष्मारने सांच्या जारक्यानियों र मान्य करण रहा । नाय ही इप वेंगरेजी जानगर विदेश स्वयन्त्रार भारतयो बहुब बामी बदर । सन्दर्भ प्रतिवया माजिनमे नेवर पार्ट्स वार्च करनेशमे होटेने की . श्रेनरेय कर्मशारी का राजरके बंशसाय करन साही भरवान केन्द्र कुई टिंडर बतादे काले. प्रतिरंग करीयों सामा इस देवदे दुर्गान्त बाह्य दर्श । हीने भावेंद्रको स्टारवरी वरने को इंग्लैक्ट आरम्**डे (तर्**क इसर निरम्बर सर्ग रहा । यो राज्येतिक क्षेत्रोरिक क्ष्यता क्षम बकारके आहोत वा विदेश इंग्लैंग्स्ने इन देखदे निरम्तर काने हैं करका आदी लुई सबस रहा। इंड्रेन्डके राजा राजी राजपूजारी शामिक सारत आनवतार समय बहुकि राजाओंके राज्याधिकेंक बर्धार अपनरींपर की दरबाद, असूर्व और स्थान्त-नगरीर विगे बाते हैं कामें विगुध हवा कार होता था। हुति देवींके नाथ होनेपाने प्रश्नेत्वके जात्मुतीने की प्रम देवकी जनुवानानीह बारिक बढाक्टा देनी नहीं विगत्ने वर्तिरक्त काली बारक्षेत्र वीर्देने वाले बान की बैशरी क्षमा पुरस्तानीन एवं पुरोतराला वार्टिक बंदराने देश-की सन्तरको दिवस गा। बावसादि बामली इएछेस्ट विस्त मार्न भारती पृत्ति इस देनपी बन्तापर उत्तरीत्तर व्यवसायिक लावे बार्वसमें विभिन्न चिनिय अस्त्रभ वर्ग परीक्ष राज्य-करी और वरपाये आणि मार्टि की मारी की । रहमें-मुहाको सन्त करके चाँदकि इसीवें की उनके भूम्पने नम पाँठी रलपार और कातता क्लती बालुबी एवं बाववसी बतीय मुद्दा बयभित करके देखती करेग्सीके बाब विश्वतात दिना बया मीर धनके हारा भी अनवाना बोधम हुना । शाबी-रज्याहोने नुर्वश्रीरा हम्परी वो रहते ही शहर पुक्र कुछ किया नवा वा औ येव का का कियी प्रकार वेचित होता. यहे सुरुषेके नई चवान निशास जिले वर्ते । अवैक .. जातीय हविदासः एवं ^{रूपि}

व्यवसरोंपर इन्लैण्डके राजा-रानो, राजकुमारों मादिको मूल्यवान् भेंटें, कई-कई वार प्रत्येक वायसराय और उपकी लेडोको दिये जानेवाले मूल्य-वान् उपहार, रेजोक्षेण्ट, पोलिटिकल एजेण्ट आदि अन्य अँगरेज अधिका-कारियोका दी जानेवालो घूसें, प्रत्येक राजा-रईसके इन्लैण्डकी सैरके लिए जाकर वहाँ अपने वैभवका प्रदर्धन करना एक रिवाज मना देना, प्रत्येक राजा नवाबके पीछे एक आघ गोरी मेम लगा देना और इन निकम्मे आलसी राजा-नवाबों और रईस जमींदारोको चरित्र-हीन एवं विलासी बना देना, छोटे छोटे जमींदार्रा और रईसींमें रायबहादुर, जौबहादुर, राजा, रावराजा, सर मादि अनेक उपाधियोको प्राप्त करनेका चस्का और होड लगा देना जिनके लिए वे अँगरेज अधिकारियोको घूम देनेमें विपृत्व द्वव्य व्यय कर डालते थे, इत्यादि अनेक उपाय काममें लाये जाते थे।

टीमटाम, दिखावा, फ्रीयन-परस्तो, पिर्विमी सम्पताका अविवेकपूर्ण अनुकरण और अगरेजोकी विना हैयीगादेयताका विचार किये नक्कल करना भारतीय जनताके विभिन्न वर्गीमें छुनको वीमारीकी नाई फैनने छगे।

देशके विदेशी ब्यापारको खँगरेजोंने बहुत पहले, १८वीं शताब्दीमें ही, पूर्णत्या अपने अधिकारमें ले लिया था, शर्न शर्न आन्तरिक व्यापारके महत्त्वपूर्ण अगोंपर भी वे छा गये। अनेक बैंको, बीमा-कम्पनियों, विभिन्न एव विविध व्यापार करनेवाली अगरेज ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियों या प्राइवेट फ़र्मोंका देशमे जाल फैन गया। स्थान-स्थानमें उनके ऑफ़िस, हिपो और एजेन्सियों खुल गर्वी। स्थानीय खरीजके व्यापारको छोटी मोटी देशों और एजेन्सियों खुल गर्वी। स्थानीय खरीजके व्यापारको छोटी मोटी देशों कौर एजेन्सियों खुल गर्वी। स्थानीय खरीजके व्यापारको छोटी मोटी देशानदारी ही मारतायोक हाथमें अधिकतर रह गयी। इसपर भी सट्टे वयनो, स्टाक एक्सवेंज आदि अनेक वैव जुआका चस्का भागतायियोंको लाग दिया गया जिसके फलस्वरूप उनमें पहनेवाले अधिकाश मारतीय अन्तत वरवाद हो होते रहे किन्तु सरकार तथा उनके प्रधान सचालक कैंगरेज कम्पनियों या व्यक्तियोंको लाभ ही होता था। मुडदीह,

स्मे । और दारोज व्यु कि व्यक्तिका क्लोक्लोको निर्द मोहेनी किल श्रेषे कार्रेशके देवी जुर वी बच्चनीय जनशाय तथा दिवे वर्षे और है बहामचंदर तुरस्वत्थितं वाधे चुर्र वैव अवनुती और सन्त कहनावै ! देशके समेश रिविश एवं निविश वादीय मन्त्रे और स्वरकार भी अन्य क्ष १८वीं के १९वीं वालिक शास्त्र तक अवल्लाक नड कर लि क्षे थे । वर्तम परिचनी चेनके वान्तिक वर्तान-कर्याको प्रारम्ब बरनेकी बर्गात बोर पुनिया वाध्ययविश्वयेथी बहुत रोक्के हुई । इसके हुँ ही बेंबरेजोंने पाप' कर ही बहत्तपूर्व एवं कृतवाल प्राणीतर जन्म क्षाविकार स्वामेश कर किया था। वश्ववस्था बडी प्रवत्न क्रिय बाता वा कि नारतमें क्यरोनमें कानेशब्दी इलोक क्रोडी-वड़ी नात् 🔫 इंडीरडचे ही तार्ते । बाध्य देवीमें बचनेपाची बस्तुएँ खेळार एनं मनिन बार्ची डीनेपर मी भारत करवार-हारा क्यूपर क्याने को सार्थित बायस-४८, यट-४२ वानिके सारव वे ईव्हें खर्चे बन्द्रे बन्द्रेगोंसे क्लेंड क्रमिक ग्रेमी पन्डी थीं । जहीं ग्रेडि स्वर्थ बारवर्षे बन्दे बस्तुबंधि सर्वे वी बरती **पाठी** मी । स्तर्भ इस वेसवे बनी बस्तर्थ मी इस्ते देखने हंखेलाँ बनी मस्तुमीरी सरेबा म्हेनी पहली थीं. बीर बतनी बच्ची मी म्हाँ हैं^{डी} वीं । मन्त्रीवे नगी क्रोडी-वड़ी देशिक क्योरको क्रेयक खोळ जीर माण्डी को बनाविनय नर्गा-नदी कर्नुवॉने देखकी छी-वडी सरस्वारिमों हर्व हुन्हें कमानीका अन्य कर निवा । और अब इंब्वेंग्ड वारिकी जाँदि इस देवरी भी कुछ क्योंची स्वरवाधियोंने क्य परमुत्रोंकेन्द्रे पूछके निर्मातके किए देव^{के} ही थानिक वर्षान कर्ने आरम्ब किने श्री वर्गी वर्श वर्शन्यस्त्रीय सम्बन्ध करमा परा । तम जानसम्ब क्षम और विशेषक नहीं । क्षमूँ इंडोपारे ही रिपुण न्यम करके वेंशले बकुते से शतितामा आहा संबदेशो सामगर दर्णना के भारतके ब्रह्मर पहुँचनेने कराय वा श्रवते अभित्र देवो अनगर देव^क मीयर ही रेच हररा एक स्थानके दूसरे स्वाचनर से वालेने क्या नारा ना र *** नाल्यीय इतिहास एक धी

कारचे शाहि बन्त अवैक प्रशासि चुत-लावन की माध्यमें बैन्सी

र्लेगरेजोंके साय स्वतन्त्र ज्यापारको मीति वग्तो जातो यो तया सँगरेज म्यापारियों और ज्यवसायियोको सरकार सर्व-प्रकारको सुविधाएँ और प्रोत्साहन देती यो ।

अँगरेजॉको यह स्पष्ट और निश्चित नीति यो कि भारतवर्ष इंग्लैण्डकी फेंग्टरियोंको विपुल एव श्रेष्ठ कण्या माल प्रदान करनेवाली जल्पादन-भूमि थोर उनके पवके सैयार मालको निरन्तर म्वपाते रहनेवाला सुगम **ए**य लामदायक बाखार बना रहे और ऐसा ही होता भी रहा। अँगरेजोंने वपने शासनकालमें दिश्वके अन्य सभी देशोंको इस विशाल देशका चपरोषत द्विविध लाग उठानेसे यथाशक्य वंचित रखा और स्वयं इस देश-में मो देशो उद्योग घ घोको प्रोत्माहन न देकर वरन् उनमें बावक बनकर उक्त द्विविध लाभपर अपना ही एकाधिकार अक्षुण्य बनाये रखनेका प्रयत्न किया । फउस्बरुपः भारतके बलपद इंग्लैण्ड अपने औद्योगिक एव ब्यापारिक विकासके चरम दिखरपर पहुँच गया । इसी वातान्दोके प्रारम्भमें पाण्डच महुराके बीर विदाम्बरम् पिल्छेने एक देशी जहाखी कम्पनी वनानेका प्रयस्न किया था जिसके कारण सरकारने उसपर राजद्रोहका अपराध स्याकर उसे जेलमें सद्याया । ऐसे न धाने कितने उदाहरण मिलेंगे । जहाज, रेल और उनके बनानेके कारखाने, जूट, नील, चाय, तम्बाक (सिगरेट) आदिके उत्पादन, विभिन्न खनिजाँकी साने इत्यादि इस देशके लनेक प्रयान व्यवसायोपर अँगरेजोका पूण एकाधिकार या और अवतक बहुत कुछ चला भा रहा है।

देशके धन और भूमिके चिरकालीन भयकर शोपणने उसे बाद, भूमभ्य, अकाल, महामारी आदि देशे विविध्तियोंसे लड़ने और स्वरक्षा करने-में अशमय एव असमर्थ बना दिया। साथ हो उपरोक्त स्थितिके कारण ये देवी प्रकोप आये भी बड़ी सख्यमें। १८५७ ई० के पूब अराजकता काल-में तो प्राकृतिक उत्पातोंके अतिरिक्त नित्यप्रति धने रहनेवाले लूट-मार, युद, अशान्ति आदि मानुषी उपद्ववोंके कारण देश बराबर अकालपीहित-

बैता बता ही पहा और बजाबार धीर्वतानीय बहायारेगी, बैंडी-बारोबी अनिरिचनना एवं बन्धाः बानायात्रकी कविनाहची सर निकार त्रीपम मदान-वेदी स्पिति बनाने हुए थी। जबके बदाएड भी दिही tett-tt, test-or test oc tett-to tt # bit धिनम भारति चर्वपर पुनिस यहै । वजी-सभी क्षत्रहे बाच जवलक वार्रे और जीवन वय स्थापन कीम काहि महामहिंशींचा की बीच ही साधी। क्रनडामें क्रम्मी पार्शित या कार्यक सायवर्ज वही यह नहीं की कि वान क्षी बाबके पुरशानकी सकते संबित क्षर्य का करीए बाबके तिकाल के जाएँ। क्षत्र प्रम क्षणारीने सर्वपर पेत्रवाची तक्षणनाकृत कर कृती वर बरे । वेषणे सामान्य व्यक्ति एरं पातासातको वही हुई अविकालोक आरम अकार में महानारीके वर्षान्ते मुक्त विष क्षम्य अवेदांनि वाशकनीतित्रीके नहारत्रार्थ चन वा बच्च निवसमा नाता नहीं औं उन कारण शहरा लक्षण नह नाती। क्षरकारने मन्त्राम-रक्ता कीच सन्त्राम और बाह-गीडिगोंची बहाराने बीमनार्यं, महामारियोंको शेकने जीर समके बचन करवेते उत्तार आदि भारतन्त्रार्थं की दिन्तु में कम करेश आर्थान्य रही और वेक्सी प्रवेश क्रांत्रका निर्माण क कर क्यों » इन तर बोक्समाँ मोर श्रक्तमाँ में भागी विकास कर केने और विकार साहित्री ग्रीक्समॉका बार्यांक विकास कर निवे जारेगर को वह बकाब क्योंकें को देखके रिविश कार्यी क्षी नवंबर दुविता पर पृथे हैं, जनेश विकासक वाहें का पूरी है और वर्षे बार बदावारियों प्रश्न क्यो है । पुष्पाचित करें कारेगांके देखके सामारिक संबद्धपार्क विदेशन रागीर्वे धारी क्ल्याचार, अवाचार और ऋष्टावार वा । देवस्तविनीके वर्वेश नि:परबीकरणये कर्षु स्थाना एवं आस्थ विशेषके जिए सम्बर्ध हो

क्षवता बना दिया या, क्योर सीर्थ क्षत्रक और निर्वीदशाबी कृषक दिस या और क्यूँ परनुवारेकी वर्ष कावर बना दिया था। देवती वृद्धार बनवा, बानीन प्राप्त, बीटे-बोटे शस्तरार एर्ड वॉनक और गोरी, इस्बो 114

जारबीय इक्सिक **एक** दरि

एव नगरों के छोटे छोटे दूकानदार ये। और ये ही लोग निम्न वर्गके बहुमस्यक राज्यकर्मचारियों-द्वारा निरन्तर पीस जाते ये । एक लाल पगढ़ी-वाछेको देखकर सारे ग्राममें अज्ञात विपत्तिको आशकासे शून्यता, मय और विपाद छा जाता या । जिला अधिकारियोकोको घूस, रिस्वत आदिके द्वारा बपना मुट्टोमें रसनेवाले जमींदार और साहकार पुलिस और बदालतोंके सहयोगसे इम ग्ररीब जनसाधारणपर मनमान अखाबार मरते थे, निरन्तर उनका लहू चूसते थे और उन्हें पनपने न देत थे। भारतीय पुलिस जुलमका बादरों थी। कहीं किसी राजनैतिक, कानूनी या नैतिक अपराघके होनेका सन्देह मिलता कि सारे गाँव और वस्तीपर आफ़त था जाती और मले बादिमियोंका धन एव इपज्रत जो भग्कार लूटा जाता। नित्य नये बननेवाले भानुना और अदालतोंक जालने जनताकी नस-नस धींच दो। अदालतोंके पण्डे, बकील और मुख्तार, मुक्तरमेबाजीको प्रोत्साहन देते। न कुछ वात-पर माई-माई और पहोसी पडोसी आये दिन लड़ते रहते और उस लड़ाई-का निपटारा करनेके लिए अतिवायत इन वकील, मुख्तारीं, पुलिस और वहमकारोंको दारण छेते. अपनी शान्ति, समय, धनित और कारबार नप्ट करते और जीवन-मरकी ख्न-पसीना एक करके सचित की हुई कमाई चनकी जैवोंमें माते, सदाके लिए ऋणके भारसे दव जाते और स्वय अपनींके शतु बन जाते । न्यायका ढोल बजाकर इस मुक्तदमेवाजीने देशकी बनताका जितना खुन चुसा है, उधका जितना नैतिक पतन किया है और चेषे अपग बनाया है उतना शायद किसी अन्य चीजने नहीं । और इसके छिए सँगरेज तो परोक्ष एव अल्ह्यरूपसे ही उत्तरदायी ये, वास्तिक एवं प्रत्यक्ष उत्तरदायी तो देशी वकील, मुख्नार, अदालतें, अहलकार और पुष्ठिय-कर्मचारी थे। दुर्भाग्यसे मुकदर्मेवाक्रीका यह विप स्वतन्त्र भारतमें मी घटनेके बजाय और अधिक बढ़ रहा है।

देशमें अँगरेजोंने शिक्षाका प्रचार किया, स्कूल, कोलेज और विश्व-विद्यालय स्रोक्षे, पर्याप्त-द्रव्य भी व्यय किया, किन्तु उसमें अंगरेजोंका बहेरव बारवीबॉको वास्तवर्थे मुक्तिवित करके बकुन्यत बरामा वर्धे छ । बरका मूल क्टूरेंक थी. बाले जागानक दिन्त एताँदि काम करवेंगी बहुनदरस बनके राष्ट्रवींचा निर्माण करना वा बो बॅबरेडॉरी अन्य हुई मार्च्य स्थानी, अन्तराना और वर्षे-वर्षी बन्हों ह और वे इन वार्वर बक्र भी हुए, इस राज्यबन्ध वृत्रे स्थानिमक्त नावृत्तीके बक्रार ही में इस्ते कर्ण त्रव इच देवार जुबनतार्शिक बातन कर बक्र । बाने बहु समी गृति क्षिए वेंगरेरोले संगरेरोको विभाका साध्यय सनामा तथा संगरेर क्षम्यानबी-हारा बेंगरेवी काहिता. बेरहरि कना और स्थितनम् अन्यान मध्यमा । चंपरेय पार्टक्के उपनियोज इतिहानके वाय-नाय संगरेव केमार्टि कोई स्व किकाने वर्षे जारतच्येक ऐके इतिहास यहाने निमने पर-पश्चर मारतीय कार्यांको अन्ये वेश आदि पुर्दवी और शंख्यांको हेन्छ का सनुबन हो। जीर काशांके प्रथम किए। जुक-सुक वाले हमा जैररेडींगी वे अत्यन्त प्रधार, बवालू वर्गात्व बन्द और पूर्वत्कृत देवता क्यांने कर्य क्रिके चनकी चरित्र वृद्धि और व्यक्तानो क्या जन्मी क्येंडमरमे होनक्करो समित कर तनके हुकार्षे पर चारे । और प्रायः यहे हुन्छ । सम्बारक और नाइन पुरुषाने केचल बहुदा ईशाई नावरी होते वे से कार्योको स्वरेगीय वर्ग स्वजातीय वर्ग संस्कृतिका समावर करवा ती कियादी हो ने वर्षे स्ववर्त जीर बचानका जी दिशोबी बना देते है । ईसर्प वर्ष, राज्यमी धराता गीर संग्रेतिमतको ही में सब्जूस प्रथमो स्मी में । विकासारियों विद्या कार प्रशेष गरीका-स्थानी हिलियोगा कोये, बम्पारहारिक नियाची जान जानि समेश बीच इस विसान्तर्जाने ऐसे वे को जिल्हित कारवीमांको बरकारी वा बैर-बरकारी बैंगरेबी सावरींकी स्पृ बीरी, बकाक्स, बम्बावकी बक्ता नुक बोती-बोटी शक्करी वर्धर करके मतिरिक्त और किसी जीव्य बहीं बाले क्षेत्रे से । भारतीयोंके किए एवं विकास क्षेत्र शिक्ष केवर बीवरी करना ना नीर नीवरियों क्यों में कोनी व होती कि चनवें कर कार्रिकोड ना दिया जाना जायोग पुनर

भारतीय इतिहास । एक दरि

समये जा सकते, अत अनेकॉको घोर निराशामें जीवन नष्ट करना पहता। देशनें फिर भी ९० प्रतिश्वसे अधिक निरक्षर ये, और जब इन थोडे-से धिक्षितोंको यह दशा थो तो इन शिक्षासे देशको क्या वास्तिविक लाम हो सकता या यह अनुमान ही किया जा सकता है। सरकारी नौकरियोंमें भी प्रारम्भमें, विक्क १९वीं श्वी ई० के प्रारम्भ तक तो अँगरेज धिकारी भारतीयोंपर विद्वास हो नहीं करते थे और उन्हें सरकारी नौकरीके योग्य हो नहीं समझते थे। बादमें वे यह घोपणा करने लगे कि सरकारी नौकरीका द्वार प्रत्येक भारतीयके लिए खुला है, किन्तु तब भी किसी उत्तरवायिक-पूर्ण या ऊँचे पदयर भारतीयको चाहे वे कितने ही योग्य हों नियुक्त न करते थे। १९वीं शती ई० के उत्तराधिमें भी मुरेन्द्रनाथ बनर्जी-जैसे अनेक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने आई० सो० एस० की परोक्षामें उत्तम सफलता प्राप्त की किन्तु उच्च नौकरी प्राप्त करनेसे विचत रहे जब कि उनके साथके तथा उनसे कम योग्यतावाले अँगरेजोंको प्राय- मिकता दी गयो।

. धरकारके प्रस्नयमें काम करनेवाले ईसाई मिधनोक्ते व्यवस्थित जाल-हारा मारतीयोंको ईसाई बनानेका प्रयत्न फिया गया तथा निम्न जातियों-के असहय अधिक्षित दीन भारतीयोंको ईसाई बना भी डाला गया और चनके रूपमें अपने राज्यके स्थायित्वका इस देशमें एक स्थायी स्तम्म निर्माण किया गया। ऍग्लोइण्डियन या यूरेशियन गोरोंके रूपमें भी एक अन्य ऐसे बर्गका निर्माण किया गया।

अँगरेजोंने इम देशमें साम्प्रदायिकताके तीज़ विपकी भी स्वार्यके वद्यों भूत हीकर खूव फूँका । सर्वधर्म समर्दाधता, बहुसक्षकांसे अल्पसस्यकोंकी रेसा, न्याय, उदारसा आदिका बहाना लेकर उन्होंने हिन्दू और मुसल-मानोंके बीच ऐसे फूट और वैमनस्यके बीज वो दिये जैसे कि पूर्व मुगल काल-के सुलतानी शासन या औरगजेंबके कट्टर मुसलमानी शासनमें भी शायद म ये। हिन्दू और मुसलमान एक-दूसरेके जानी दुरमन हो गये, आये दिन

न प्रमाणिक वेहें और रहनार होने को अपन इस दूरना पीटन स्वार्ग (बायत्व दूरा) वेधने बेरोजी शालनाराओं को बतारे सामर्थन वार्योग्ड हमें ऐरियामिक कुमेंगा वही शिकार कार्य कर किया पर भी स्वार्ग को स्वार्थ को बहु बना पहला को बहु देव बोधा ही हक साम्य गुलम वही परिस्तास्त्र वहीं हो आहां कि बुद क्षेत्र वेशों हो स्वार्थ से बार्ग वहीं परिस्तास्त्र को अस्त कार्य को बार्ग के स्वीर्थ कर हमें, से बार्ग वहीं परिस्तास्त्र को अस्त कर हमें,

बंश वार्त्रास कारियो ही इस देवते पूत्रम् अरखे शास्त्रम कर स्थित मान् इस देवते भी हो जो काम यह जिल्ला वंत्रस इसे मिसप्रेटरि बीत्रसामको करते परिचयी गाउँक्यान बोर हुम्या पूर्वी बंद्रमाने वर्ती मुर्ग गाउँक्यान करते देवते जन-काम वर्त बहुन्ति कर दिया । उस्मे हो गुरी गाउँक्यान करते व्यक्ति कर्तान्तिक वेद्री प्रशासित वेद्रमा

नी क्योंके विशं नुष्यानेके नियं कीत थी। हम बहारेचारी मुर्चेजपूर्वक चुन्यान बनाई, दीर्च दान वन्न को हुएँ यह मुन्यान दानने राजने जंकता वर्षात्र्यात बनाव्यार औरचन करने बोरं बनावित मिंडिक तम्म कर केनेता स्वितंत्र वर्षा अहेन्द्रकार से वो हो कर्ण-वित्तर और बोर-पार्थित स्वितंत्र करके बने बीर अवेच करोड़ी अपना हुएँ बीई बीड की । बोर्चित मायका जिल्ला क्षेत्र तिसा निरम्न वन्ने मूली केपार निया सी की नहीं कीत्र हैं।

निर्देश्य यास्त्रकार्ध वर्धिकल सुदेखें—आपकार्थ किय वर्ध हर्ष स्वर्ध कर क्षेत्र काल पूर्व वर्धहुक्त पुर्वेद पूर्व क्षेत्र प्रस्तुत्व पर मन्त्रकार मुर्वेद वर्ध हैं। सम्बंद बर्च नहीं पूर्व देवर्ड प्रस्तुत्व पर मन्त्रकार मुर्वेद वर्ध है। सम्बंद वर्ध केत्र पुरस्तकार्य पर पर्वाचित्र वर्धाव्य क्ष्यां कर काल प्रस्तुत्व कर्म कर स्वर्ध कर्म स्वत्रकार्य क्षेत्र स्वाचार है, स्वयु कर्म का स्वत्यक कर्म कर्म क्ष्यों क्षेत्र विभा स्वर्धी द्वार क्ष्यों कर स्वत्र वर्ध कर स्वर्ध कर्म है। प्रस्त्यक्ष पर कर्म क्ष्य कर संबद्ध वर्धवाद्ध हों है। देवरे

बारतीय इंडिएस्स एक परि

.

जो प्राकृतिक, स्वामाविक, सास्कृतिक एव ऐतिहानिक पूर्णता यो उसे प्रयम बार राजनैतिक, आयिक एव प्रशासकीय एक्सूत्रतामें वीयकर च होने परिवार्ध और पृष्ट कर दिया । देशका विस्तार सभी दिशाओं में चसकी मैनानिक सीमाजा एवं अंग-उपागा तक पहुँचा दिया। ऐतिहासिक कालमें ऐस अनेक भारतीय नरेश हुए जिनमें-ने कुछने पिस्वमीतर दिशामें काबुज और कन्दहारसे भी कुछ आगे तक अपने राज्यका धिम्तार किया, पृष्टने पिरचममें अरवसागर और ईरानको खाडीपर अपना प्रमुत्व रखा, फुछने उत्तरमें कदमोर, नैपाल और भूटान ही नहीं विज्यत तक अपने राज्यका विस्तार किया, कूछने पूर्वमें आसाम और अराकान तक ही नहीं त्रह्म देश तक अपना प्रभावसेत्र यदाया, और फुछने दक्षिण एव दक्षिण-पूर्वों लंका, मलाया प्रायद्वीप तथा पूर्वी ढीप-समूहके अनेक द्वीपोपर अपना विकार विस्तार किया। किन्तु ऐमा कोई एक नरेश कभी नहीं हुआ निसने एक ही साय उपरोगन सभी सीमान्ता और सीमापार प्रदेशापर वपना प्रमुख जमाया हो । चन्द्रगुष्त मीर्य, अशाक, समुद्रगुष्त, अलातहान खल जी, अकवर या जीरगजेय, इन महान् सम्राटों में एक भी ऐसा न पा जिसने सम्पूर्ण देशपर अपना पूरा, अधूरा या नाममात्र मी अधिकार फैला पाया हो। देशका किसी-न-किसी दिशाम सीर कुछ न-कुछ भाग उनके आधिपत्यके बाहर रहा हो । चक्रवर्ती सम्राटका जो प्राचीन मारतीय नादर्श या उमकी सिद्धि इतिहासकालमें यदि कमी हुई तो प्रिटिया धासनके अन्तर्गत हो, और उसके अन्तके साय ही वह भग भी हो गयी या कर दो गयी। किन्तु एक बार प्राप्त हो जानेवाली तथा एक शताब्दी पयन्त स्यागी बनी रहनेवाली वह पूर्णता एव एकता फिरसे भग्न और खण्डित हो जानेपर भी यह प्रदर्शित कर गयी कि यह कितनी सगम. सम्भव, युक्तियुक्त और आवश्यक है। स्वतंत्र मारधीय राष्ट्रके लिए वह एक सजीव प्रेरणा वन गयी जी उसे निरन्तर यह स्मरण दिसाती रहेगी कि उक्त मौलिक पूर्णता एवं एकताकी पुन प्राप्ति राष्ट्रीय सत्ताका

एक अभिकार्य कर्मान्य है । देवने क्षेत्र कुम्प्रवर्षका अधिन्तुत्र अपूर्वपालित कुने केरिया अधारण-का तका अबसे करात्र वान्तिवृत्ते वात्रावरण शुरवा, वर्शानावत्र वरदेशी स्थापन्य आरिका सम्बोध इत कालवें किया वैना पूर्वशायने बहुत करें बदनरीतर दिया था । यनधी बत्तमता हती जानते ताह है जि त्याना हीनेदे बार की हवारे अन्ते वर्तवाय प्रधानकीने बन्ने बाद्य करीका स्प बारा निया और चान रखा है। वचने बनेब दोन प्रतियों वा पुत्रमारी भी भी जन्म निरम करे अवस्य कृतन्त्र बन्ध-बन्धावर सम्बद्ध सम्बद्ध सन्तरना बुद्रश्रेराजीयो जीन्यात्त्व देना जवान्यनके निर्देश पार्थने प्रशास और जवाबन-अवस्थे वृद्धि, वृद्धिव वार्टश्री अनुसरसम्बन्ध्ये क्यार्टको जरगारी खुनी, करो सर्वामें बचानक वृद्धि, प्रचनित विकार पर्वतिके द्रीपः राज्योव केराओंकी नियुक्तियोंने बहुना विद्यारिकी, स्टिप्टी म्य प्रशासका असीन अन्तरीति । संस्थिति विशेष सामाने कारीका सुन्त-प्रतिकृत प्रदाक्षको ही एक वातका थेन हैं कि इतके विकास देववा वर्ता-इस्तान्तरम विवयः वर्षे व्य धारतन्त्रवे स्थानमे इद्याननः नद्यशेष्याने

रवानमें लाबीना। निरेती बाधनके स्थानमें लावेती दालन बर्धीन्य पर्धीर **बॅनरेडोडे** स्वानने मारतकार्डनरीयो लिक्किट केना और अर्थ-ध्यनसाम की हरतान्त्रदिक्ष होन्य स्त्यारि प्रतती कारफर्क-व्यक्त मुख्या बरकार्य बीप्रस्त एवं बर्मनारे बाव बन्मारित ही बचा। हैनी बहुन झाँचरे इक मचार कन्यांत्रा होनेवा विश्वके पूरे श्रीशावने बाजर एवार ही क्षराहरूच निवे ही निवे । और इनका प्रवाप चेन बस्त ब्रामनम्बरागांधी तथा कुछ अंबोर्ने बरफानीन अंबरेज राजनीतिज्ञांना है। इसमें भी सम्बंद बही कि वह बारतीय सावन बंगरेजीके नक्षेत्रा नहीं करन् नहीं स साधार पर्या बाता था। बैंके ही वस चनुर व्याचारी आदिने वह अनुवर किया करने मारतको सरक्याता अध्यक्ष व स्तेत्वा वक्ष की बातेने अूरतेको सरस पुरिवाणी की, वस्ति देशके हुकड़े-पुक्षी करके सकते क्यारायकारणी

चन्होंने कुछ कलंकित ही किया।

कि तु अँगरेज इस देशसे क्यों चले गये और भारत स्वतन्त्र कैसे हो गया इन प्रश्नोंका उत्तर है देशमें उदित राष्ट्रीयताकी भावनाका विकास श्रीर फलस्यरूप किये गये स्वातन्त्र्य-आन्दोलनकी उत्कटता। अँगरेजोंने भारतवानियोंके हृदयमें राष्ट्रीयसाकी भावनाका उत्पन्न होना और पनपना कभी भी नहीं चाहा और न स्वातन्त्र्य-आदोलनको कोई प्रोत्साहन दिया, षरन् उन्होंने समय-समयपर अपना अत्यन्त क्रूर एवं भयकर दमनचक्र चलाकर इन दोनोंका मूळोच्छेद करनेका ही मरसक प्रयत्न किया । तथापि इन दोनोंके उदय और विकास एव अन्तिम सफलताका भी श्रेय अनेक अर्घोमें अँगरजोंको और उनके धासनको है। अँगरेज जाति चिरकालसे राजनैतिक स्वातन्त्र्यका उपभोग करती आयी थी। भारतपर राज्याधिकार स्यापनके कुछ पूर्वसे ही उनका देश नामके लिए राजतन्त्र किन्तु वास्तवमें प्रजातन्त्रका रूप लेता आ रहा था। भारतसे होनेवाले कल्पनातीत आधिक लामके कारण उनके देशने दूत-वेगसे उन्नति की थी। उसके उद्योग-धन्धे. व्यापार-व्यवसाय, शक्ति समृद्धि, प्रभाव और साम्राज्य विस्तार ही न केवल घोझताके साथ अत्यधिक वढ गमे और उन्होंने उसे विश्वको प्रधान शक्ति वना दिया, वरन् शिका, साहित्य, ज्ञान एवं विज्ञानकी भी उस देशमें अभूतपूर्व उन्नति हुई और उसकी शासनप्रणाली अधिकाधिक जन-तन्त्रात्मक होती चली गयो । शक्ति, सत्ता और समृद्धिके साथ शिक्षा, सम्यता और सस्कृतिके योगने अगरेजोंके जातीय चारित्रमको भी उसत एवं परिष्कृत किया, तथा उनमें वुद्धिमत्ता, विवेक, दूरदिशता, उदारता, सिहिष्णुता, स्यायपरायणता और स्थलन्त्र विचारक्षमताका पोषण किया। वहाँकी सत्ताघीरा पालियामेण्ट द्विदलीय रही जिसमें एक दल नरम उदार परिहतापेक्षी और शान्तिप्रिय रहा और दूसरा गरम अनुदार स्विहतापेक्षी और प्रतिक्रियावादी रहा। जब जिस दलके हाथमें सत्ता आ जाती उसीकी नीतिका प्रमाव उस देशके ही शासनमें नहीं भारतके प्रशासनमें भी छक्षित

होता, बोर सरनारात्र आदि क्या वृध्यिकारी वो अही रक्षत्र कारायी या प्रायमितिमें में विद्युत्त किये जाते । क्या आराके वृद्धां-अलावों मेंते सरकारात्रियों कार्य तरव और वार्षी नारत मीतिका प्राप्त वृद्धां अपने व्याप्त प्राप्ति करेंत्र करवेवारि अर्थान कार्य पूर्व । आराकार्य हैं कार्य कार्य प्रीपार करां कृतिक सुध्यान्त आक्रमें स्थापी कार्य कार्य मेंत्रे वृद्धां नार्यों वार्ष्य महास्त्र मात्राची कार्याची कार्यों कार्य प्रेप कृत्य साम्रोक्त कार्यों वहां कार्याची कार्याची कार्यों कार्य प्रेप कर्म साम्रोक्त कार्यों रहें , वार्ष्य कार्यों कार्य हार्यों कार्य कार्यों क्रायों कार्य विद्यान कार्यों कार्य के नार्यों कार्यों कार्य कार्याच्या कार्यों कार्याची कार्यों कार्यों क्रायां कार्यों कार्यों कार्यों कार्याची कार्यों के कुत्य कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों के कुत्य कार्यों कार्यों कार्यों के क्ष्य क्ष्य क्षयों कार्यों कार्यों कार्यों के क्ष्य क्ष्य क्ष्यों क्ष्य क्ष्य के क्ष्य क्ष्य कार्यों कार्यों के क्ष्य कार्यों कार्यों के क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य कार्यों के क्ष्य कार्यों कार्यों के क्ष्य क्ष्

. .

वास्तीय इतिहास एक ग्री

साहनी होते पे वे सार्वप्रनिक भाषणो, समाचार पत्रों, स्मृति-तत्रों अथवा उच्च अविकारियोंके साथ व्यक्तिगत मेंटाके द्वारा सरकारसे टक्कर छैने लगे।

नरम दलके शासनमें उनके साथ सहानुभूषि प्रदर्शित की जाती. भाष्वासन दिये जाते, कुछ अधि €ार और मुविषाएँ भी प्रदान कर दी जाती । किन्तु तदुपरान्त अष गरम दलका गासन प्रारम्भ होता तो प्रति-क्रिया होती और सरकारकी बालोचना एवं अधिकार-मौंगको रागद्रोह और षृष्टता माना जाता । उससे नेताजा और उनके अनुपावियोंका क्षोम बढता और ब्रान्टोल₁में कुछ गरमी असी सो दमनचक्र चलाया जाता । फुल-स्वरूप सारे देशमें सरकारकी निन्दा होने लगती और आन्दोलन और विधिक उम्र रूप घारण करने लगता। दमन नीति उसे स्यायी रूपमें दवा देनेमें सफन भी हो जातो तो देशको सहानुभूति आन्दोलनकर्ताओंके साध कोर अधिक बढ़ जाती और स्वय इंग्लैंग्डमें पदण्यून नरम दल सत्ताधीश गरम दलको कटु झालोचना करने और उसे पदच्युत करनेका नया बहाना ट्रैंढ़ लेता तथा भारत और उसके नेताओं के माथ सहानुभूति एवं समवेदना प्रदर्शित करता । सत्ता प्राप्त करनेपर वह पूर्व मौगोंके अनुसार भारतीयों-को कुछ अधिकार प्रदान करता। किन्तु इस बीचमें भारतीयोकी मौग चससे कहीं अधिक बढ़ चुकी होसीं, अत उस अधिकार प्रदानसे भारतीयों-को कुछ मी सन्द्रोप न होता और आन्दोलन दबनेके बजाय और अधिक चल पकडता और प्रगतिवान् हो जाता । ब्रिटिश शासनके प्राय प्रारम्भसे अन्त तक यही क्रम चालू रहा। स्थय अँगरेजोंने ही मारसीयोको अपने विरुद्ध लडना सिलाया, उसकी विघि और पद्धिस बनायो और उसके साधन भी प्रदान किये। अस इसमें अत्युक्ति नहीं है कि इस देशमें राष्ट्री-यताकी भावना और स्वास ज्य-आन्दोलनको उत्पत्ति, विकास एव सफलता-का श्रेय अनेक अर्शोमे ऑगरेजो एव ऑगरेजी धासनकी है।,

भारतवर्ष लोकको अपेक्षा परलोक और स्वार्थको अनेक्षा परमायपर

वृद्धि रामनेवाना धान्तिर्देश वर्गतान सावसारियत देश है। निवीय वर्गान्य नशकार, बच्चाई बाहरी दवा बनवेदना बदारण महिन्तुण स्पर-कारन और रचीनवैरका बार्टि कुछ इस देखके निवादियोंके बरेवरे बायान पुत्र रहते पत्रे आहे हैं। निवत्तान बीट बाधायत्वका प्रथम बोई बार्ने बरावर रहता बाद्य है : अनिया मेवा विद्यान्त्रदश और विचारबी कर्य-में में बागी किसोसे पीछे नहीं रहें । स्वाध-रताय और सार-कवियापकी सपूर्व गीरता तिथीनता और वाहन इक बात्रनाच देस मेरे अध्यक निक्ते नकिन है। वर्गरोप हो वर्धगोर हो नकता है वट इस भारतीय करिता बार्च रहा है और इनके रस्तन्त्रता इस्तन्त्रन बसीटु असे बर्तन्त्रन्त्रन और पुनर्रोते कविनारीया कायर कार्यते वर्षय सम्बद्ध वर्षे प्रतिपत मार्चारिक रही है। निर्देश्य कविषेको स्थार्थन्य वैद्यापिक मानानियो के सन्तरके बाजन इस देवती बनेत बार परावृत्त हीया पता। 🗺 क्ष परावर वर्षस सर्मेश्वर एवं अल्प्स्यास रहा और चारक्रेस आयो क्या तथा बनके स्थालन्य होगरों यह कथी थी वित्रोच न कर क्या है क्षेत्ररेत्रीचे वर्षे को कीए जिल्ले की विशेषी बाजान्या कन केवनर जातन करवेची मोरपने कार्य कर्षों पार्टिया होतार रहता तहा । कर्षे बारकेपारि रंको रंका पहा और वह देवनै कार्यको जालपाल कराय ग्रा । देवान क्रम वर्षेत्र देवमें ही पता देवके बक्का क्योच-वच्चों और व्यापास-वच्चेमने के कारण विदेशीया जो तम विद्यानिकाहर इस देशमें बाह्य प्या । देशमी मार्थिक कामार्थिक एवं वार्थिक निवादि और बहुवान बोक-वोदमस्य मी क्षमका विक्रेण समान गती पहर । देखकी जबने प्रतिकारी व्यक्ति समान बहैर सामीन प्रपत्न प्रविन्तादिक संस्तुतार और कारीवर बचा कीर्ट-केंद्रे हुबानरायें रूपं न्याधीरवेंगा यहे है थे। देखरे मिल तथा मिल-कारणें में और अब भी है। मुशतवालीके जारक-स्वेचके पूर्वकी को बाद ही ^{स्ट्रा}

रिक्सीके पूर्वी कुमराजी एवं बालीय जुनववाले मरेबॉकी यो स्पर्य पूर्वेच यह बहुम्बर करता तक वो हो वहीं । बोट बैडा कि करील परिल

.

भारतीय इतिहास यस परि

नाय ठोकुरने सन् १९३१ ई० में अँगरेख मनीयी एच० जी० वेल्ससे कहा या-'मुग्रल शासक भी गाँवोंके प्रगतिशील सामाजिक जीवनमें कोई हस्तक्षेप नहीं करते थे। दरवारी शासकोंके बावजूद भी जातीय जीवनकी घारा महजरूपसे पली आ रही थी। मुमलमान वासकोंने (अँगरेजीकी मौति) कोई शर्ते घोषित नहीं की और न भारतीय शिक्षा-दाताओं और ग्राम-यासियोंको अपने आदर्शपर चलनेके लिए पीडित किया ।' वास्तवमें प्रत्येक प्राम अपने नम्बरदार, मुक्तिया, चौकोदार, पटवारी, दुकानदार, साहुकार तथा विभिन्न आवश्यक कार्य करनेवाले व्यक्तियोंसे पूर्ण और अपनी शुद्ध जनतन्त्रीय प्राम प्रचायतसे शासित पूर्णनया आत्म परिपूर्ण, स्वनिर्मर और स्वतन्त्र था । साम्प्रदायिक एव जातीय पचायते अनेक ग्रामों, नगरों और पूरे-पूरे प्रदेशोंकी जनताको अपने स्वायस शामनमें बौबे हुए थीं। राजा-महाराजाओं, सुलतानों और वादशाहाकी स्वाधीनता-पराधीनता उनमें स्वयंमें परस्पर एक-दूसरेके सम्बन्त्रसे थी, सामान्य जनताका उधसे कोई सरोकार या विद्येप हानि-लाम नहीं था। अपने राज्य या प्रदेशको स्त्रा-षीनताके संप्राममें माग लेनेके लिए यदि सामान्य जनताका आह्वान किया जाता तो वह भी उसमें महर्प भाग ले लेतो । किन्तु प्रथम तो उपरोक्त पराधोनता भी प्रायः अल्पस्यायी और पश्चितनशील रहती थी, दूसरे ये स्वाधीनता संग्राम भी क्षणिक एव अल्प हानिकर होते थे, तथापि वे देशकी समस्त जनताको सदैव सजग सचेष्ट और आत्म-रक्षा में समर्थ बनाये रखते थे। १९४७ ई॰ में प्राप्त स्वतन्त्रताकी नदीके वास्तविक अट्ट एवं अअस चद्गम स्रोत भारतवर्षको उपरोक्त भारतीयसा, स्वभाववैशिष्ट्य और सनातन संगठनमें ही अन्तर्निहित हैं। उन्हें अन्यत्र खोजना उपर्ध है। अँगरेजाने इन स्नातोंको सुखा डालनेका सर्व-प्रयम भगीरय प्रयत्न किया किन्सु साथ ही उनके फूट पड़नेके अन्य द्वार स्वत ही खोल दिये जिनके कारण ये मुरुक्षोत भी सवया न सूख पाये । राष्ट्रीयताकी मावना और स्वात अप-आन्दोलनने इन स्रोतोको सूखनेसे रक्षा की और इन्होंने द्विगृणित

रेगरे बाद पहण्ड आगोलनारे अनुसूर्य वन वृदं जबार जवान की। पुनकाचान---परागोक व्यवसन्धानने उन्हे जब्द कर देवी गरेंग

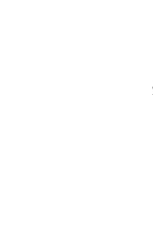
पुरस्त्यान-नरमान धारण कारण वाक वह स्था वह स्था वह साम व समा वरणप्रा-आरोपके सिन् मुद्ध करते हैं। जिन बनाव नहार सर्वे मेरेबोरर मेरेबी शावन कुछ करती हो गया वा वहां बेगाही स्था मेरे बेगार विहाद-वैती बरवाएँ होती गहीं। हैंदश्य है से वुछ मण्येत स्थान कार्याद स्थाप स्थापनी सेंग्रीकी शावनी वृत्य कार्यों स्था

दिना पथा। १९२१ प्राप्तेचे पूर्वपेने ही राजा प्रमानिशयक केयपणा हैए. वेरेम्पान ट्यूर मार्गिचे देशनो अनुभ करवेता अत्रवन आराम कर मिस वा। मान्निके १८१३ १८० और १८९३ है के साजान्ती (स्टेप

र्वे को कर्मनुषको भारताब विशान्तमानी हिलाई, १८५८ वें वी महारानी विक्रोरिकाको निवारित और १८६१ ई के पुनिवस गौनिक दैन्य मार्टिक कुण्डरका अनेक चारतीय अंदरेशी विका प्राप्त करने मने में और प्रशब्द कावनते अन्तर्गन क्ष्मों बैंड व्यविकारीने अवस्य होने स्पे में । रशायों दशानक शावकृष्ण वरावहेन विदेशातक ईरहर कर विद्वाराण मीनवा रूपोनेतेच्य, स्थानी जात्याचात वादिने वर्व बीट बनाव बुचारे बाल्योकन प्रवासर देवको जानून सरना शासम् वर हिसा था। १८७६ हैं में पुरेष्ट्रगांव समग्री, आनन्यकाडण बीख हार शामात्र बोचुनी कार्यव बारधीर बॅपमी स्थापन की, धोवले बीट समावेग वर्षेश्वय आहा प्रतिका बोबासीमें क्याना को जीर दिन्द्र नहरकता सैन-महाबका साहोरको संपुत्तन व्यक्ति वर्षेत्र क्षमा-बोक्साप्रदेशों त्री एकतिय हुई । आई रिकान्साध कर्महुनार त्रेष केल पर कर रिवे आनेहे जिल्हा केवी. जानाओर जो स्वानन्तापूर्वक क्रमाणारमध निकतने समे । ओगोरो अपने स्थान्य विश्वार मण्ड बरवेषे हमा कर्षे वरने मन्य वैक्यांतियों एक नहींनावेके नित्र समेव बायन वर क्ये । इत वर्गा रिक्कर राजवीतिक बार बावोंको अवक वर्ग पुर करना कुम गर विधा।

१८८५ ई॰ में ए॰ बो॰ ह्यूम नामक एक खँगरेज चिविन्यियनने चर वित्यम वैहरदर्न, सर हेनरोकाटन, नार्न यून आदि उदा हृदय औररेडॉ सीर मुरेन्द्रनाय बनर्शे, दादामाई नीगेजी, फ़ीरोतसाह मेहना, दिनसा वासा, स्टरुहोन सैयदजी, के० टो सैला, नहादेव गोविन्ट रानाडे बादि मारतीय बद्गाानी मन्त्रनेकि सहयोगसे सम्दर्धमें इण्डियन नेशनल भौरक्को स्यापना को । व्योमेराचन्द्र वनर्जी उनके प्रयम समापति वने । भाग्यनचे ही काँग्रेसको पूरे देशका प्रतिनिधित्व प्राप्त हुसा। उस समय सरकारके प्रति काँग्रेसका भाव पूरा मत्रीका था। जोर बहुत पीछे तक इस स्स्माका तस्य द्वितित साम्राज्यक व्यक्तीत स्वराज्य प्राप्त करनेका दना रहा । १८८६ ई० में बायमराय इक्रियनने क्रियेन नेताओंको कलकत्ताके राबनदन्में प्रीनिमाजके लिए आमन्त्रित किया। किन्तु उसके स्वरान्त ही काँद्रेसने अपनी नीति विरामात्मक एवं आलीवनात्मक बना सी अञ सन्दार उने संकाको दृष्टिमे देखने लगा और १८९० ई० में लाजा प्रचारित का दी गयी कि कोई मनकारी कमवारी उनमें माग न लें। मुमल्मानॉके नेता सन सैयद अहमदखीने विधिमका विशेष किया और १८८८ ई० में अपर इच्डिया मुमल्मि एसोमियेयनकी स्वापना की, फिर मी क्यिसके छडे अधिवेद्यनमे २२ प्रतिदान मुसन्मान मे । १८८९ ई० में० चार्स्स दैहला नामक पाल्यामेण्डका एक छडन्म काँग्रेन अधिवेदानमें सन्मिलिङ हेरा और फुरम्बस्य १८९२ ई० का ऐस्ट पास हुआ। किन्तु बनताका बन्दोप बढ्डा ही गया।

महाराष्ट्रमें शोकमान्य बाल गंगाधर तिष्टवने राष्ट्रीय आन्दोहनकी वह का दिवा। उन्होंने अपने 'केमरा' नामक मराद्ये समाकारपत्रमें नरकारको साद्र कटु आयोक्ता करनी प्रारम्भ की और विद्यार्थियोंको वितेषित किया। उनका पत्र बन्द कर दिवा गया और स्त्रय उन्हें बैन्में बाल दिवा गया। पत्राहमें शाश सावत्रराय और बगाएमें दिव्यनवन्द्र पाछ मी उन्होंकी नीतिके समर्थक ये। विद्योगमें बह नरम और गाम दी



तिरोष नहीं किया। युद्धकालमें श्रीमती एनीवेक्षेण्टने होमध्वल आन्दोलन षालू कर दिया और अपने पत्र 'न्यू इण्डिया'-द्वारा उसका उत्माहपूर्वक प्रचार किया।

१९१६ ई० के छलनऊके काँग्रेस अधिवेशनमें नरम और गरम दल फिर मिलकर एक हो गये, मुसलिम लीगके माय भी समझीता किया गया नो छखनऊ पैक्ट कह-जाया और स्वायस-जासनको सरकारसे माँग को गयो । कांग्रेसने एनीवेसेण्टके होमएल आन्दोलनको मो अपना लिया । भारत-मिवव मोण्डेग्युने भारतको युद्ध-सेवाओको स्वीकार करते हुए उसे सन्तुष्ट करनेका आस्वासन दिया और १९१९ ६० का ऐवट पास कराया। किन्तु इसके पूर्व ही राज द्रोहके दमनके लिए रीलट ऐक्ट पास कर दिया गया था जिसके फ़लस्वरूप अमृतम्रसमें हायरगर्दी मची और जनतापर मयकर अत्याचार किया गया। लोकमान्य तिलककी हमी वर्ष मृत्यु हुई, महायुद्धका भी अन्त हुआ और महात्मा गान्धोने जो दक्षिण अफोकामें गीरे सोगोंके विरुद्ध छेंडे गये आन्दोलनके कारण पर्याप्त प्रसिद्ध हो चुके घे, भारतीय स्वातन्त्रय-भान्दीलनमें पदार्पण किया । उन्होंने रीलट ऐक्ट और जिल्यांवाले यागुके हत्या-काण्डका तीच विरोध किया तथा जनताको अस-हयोग आन्दोलन चालू करनेकी सन्ताह दी । तुर्कीको युद्धमें घमीटने एव खिलाफ़दको नष्ट करनेके कारण मुसलमान भी अँगरेजोंसे चष्ट हो गये चे और उन्होंने खिलाफ़त आन्दोलन छेड दिया। महारमा गान्योने जो अव कींग्रेस तथा स्वातन्त्रय-सम्रामक नेता बन गये ये और पूण अहिसक नोति-के पालक थे, खिलाफ़त आन्दोलनको अपनाकर मुसल्मानोंको भी अपना सहयोगी धना लिया।

१९२१ ई० में असहयोग एव खिलाफ़त आन्दोलनने वटा उग्ररूप पारण किया। स्कूल, कौलेज वन्द हो गये, अनेक वकील-मुख्नारोंने बकालत छोड दी, कुछ लोगोने सरकारी उपाधियाँ त्याग दीं, बहुतन्ते सरकारी कर्मजारियोंने पदस्याग कर दिया, विलायती वस्त्रोंकी होलियाँ जलीं, विदेशी बर्डू में स्व विरुद्धार हुना बीर बच्ची बहुं बहुंगी ब्यूम कर यो। विश्व अरामा (बिट्रू बीर बोर्ड्डमी) व्यवसे सामोजको बागो कामा पूँ कामा। अर्थपारण करनामा सोवित कार बना पता साहस्य रूपी, व्य स्वेद बेता सोर हुनारी वार्यपारी से सीवे हुँग विदे बसे। विशु अरूप्यमीये पारस्य पूर बीर वैक्शन कामा करा दिया वस विश्व के स्वाप्त मीहाद सार्वित मीचय काम्याविक यो सहस्य कहे। १९६९ में विश्व के साहस्य कामा काम्याविक यो सहस्य करे।

बेहुकी द्वार्याध्यक्षे वर्षवाक्या तरण 'पूर स्वाधंकार' सांग्य हिंदा द्वारामा नामार्थि वेहुताचे तार्वेवने वरिषय बाह्यपंत और वायार्थ्य बार्वाध्यम पर्यु विशे वरि ताक डायु वर्षाध्य वर्ष देवें वर्षाण्या सार्वाध्यम नामार्थ्य हात्रा अंदर बार्वाध्य परिवाद वर्ष व्यवस्थि दिव्यं सार्वाध्यम नामार्थ कर्षाध्य अन्याद्धि तामार्थ परिवाद वर्ष प्रवास मार्थ्य ते भी पर बार्व्यक्षमंत्र वे व्यवस्थ मार्ग्य वर्षाध्य प्रवास क्रिय बार्या क्षेत्र क्षार्यक्षमंत्र व्यवस्था मार्ग्य क्ष्या कर्षाध्य कर्षाध्य मार्थ्य क्ष्या क्ष्य इंडिंग व्यवस्थ कर्षाध्य कर्षाध्य क्ष्य क्ष्य इंडि. क्ष्य क्ष्या क्ष्य कर्षाध्य कर्षाध्य कर्षाध्य कर्षाध्य कर्षाध्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य वर्ष कर्षाध्य कर्षाध्य क्ष्य क्य क्ष्य क्य क्ष्य क्ष

मन्त्रिमीया मुक्त कर दिशा और नान्धी-प्रश्वित समझीता ही नमा । १९११

441

वास्तीय इतिहास एक प्री

🧐 की दूसरी गोलमेज कानकेन्समें महात्मा गाची, प० मदनमोहन मालवोय एव श्रीमती सरीजिनी नायडूने काँग्रेसका प्रतिनिधित्व किया किन्तु कोई समझीता न हुआ। सत्याग्रह आन्दोलन फिर छिड गया, नये वायसराय विक्तिगढनने कठोरताके साथ आन्दोलनका दमन करनेका प्रयत्न किया और अनेक स्पेशल आहिने स जारी किये। नेताओं और कार्य-कत्तिओं को जेलोंमें भरा जाने लगा। शासन सुधारके प्रश्नपर भी बहस चलती रही किन्तु साम्प्रदायिक प्रश्न सबसे वही बाघा थी। उसने निर्णय-के लिए इरिलस्तानके प्रधान मन्त्री रैमजे मैकडानल्डने अपना कम्यूनल एवार्ड दिया जिससे और अधिक अस तोप फैला। महात्मा गान्धीने अनदान बारम्भ कर दिया। देशमें तहलका मच गया। अतएव प्रधानमन्त्रीने महात्मानीसे समझौता कर लिया जो पूना पैयटके नामसे प्रसिद्ध हुआ। १९१२ ६० में तीसरी गोलमेज कान्फोन्तके प्रस्तायोके आधारपर १९३३ ち का स्वेतपत्र प्रकाशित हुआ और उसके आधारपर १९३५ ई० का ऐक्ट पास हुआ। वायसराय छिनछिषगोने इस ऐक्टको कार्यान्वित किया सौर १९३७ ई० के चुनावमें सात प्रान्तोमें कांग्रेसकी विजय हुई और मन्त्रिमण्डल वने । किन्तु द्वितीय महायुद्ध छिडनेपर सरकारी नीतिसे महमेद होनेके कारण उन्होने पदस्याग कर दिया। सर्वत्र आर्डिनेन्सीपर बाधारित निरक्षा गवर्नरी शासन चालू हो गया । काँग्रेसने युद्धमें देश-द्वारा अँगरेजोंकी सहायता किये जानेका विरोध किया और आन्दोलन छेड दिया। मुसलिम लीग और कांग्रेसका परस्नर विरोध एवं मतभेद भी षढ्ता ही गया । मुहम्मदबली जिल्लाके नेतृत्वमें लीगने पाकिस्तानकी मौग वेश कर ही।

सन् १९४२ ई॰ में स्वातन्त्रय-आन्दोलनने अति भीषण रूप धारण कर लिया। 'भारत' छोडों प्रस्ताव पास करके काँग्रेसने ही नहीं विस्क सारी जनताने आन्दोलन मचा दिया। रेलको पटरी हटाना, सार काटना, स्टेशन, डाकसाने आदि जलाना, ऐसे अनेक चरनात भी यत्र-तत्र हुए।

क्यर मुख्ये वर्णनी जीर कापालको निजय हो रही की भारतीय केर मेवामी मुमापणक बीशने जाफी जावाद हिन्द वेताला निर्माण करके बारानको बडान्छाके समाना और बहुएगर जासनस कर दिना और मारतके बाक्रमणनी सैवारी थी। बरनारने शतका बळोरतके सर भारतरिक विशेष्ट्रका वसन करना सुक किया, मुखका की राजा रहनों कवा और निवरम्द्रीको चित्रम होने समी। १९४४ है में बाक्सपर वेरेकने नाते ही राष्ट्रीय गैयाओंके कान बयाबीक्षेत्र प्रथल कान् कर मिने र १९४५ है में विविधेट शिवन और शास्त्रियायेक्टरी हेक्टरियन माने। नहरूद वर राज्य हो पया या और बॅबरेडॉने वारहको स्वक्रम नार्पेस मिरपर कर किया था। शिकाबर १९४६ ई. वें वं बराहरका**ट के**हनी मन्त्रित्सम् अन्तरित करणारणी क्यापदा कर ही वही । १६४७ ई हैं मन्त्रिय राजवराम बाहण्डेरको कठे ही बराहरकाचावडी गरियों युर कर थी। ३ जून १९४० वे भी विशिश शक्तिमार्थको बास्टीन स्वयनका ऐक्ट पार किया और वर्ध क्ष्री १५ वयस्तको आक्षरी स्थान कर दिवा क्या ना यो नदीए आरवस्त्रिक श्रिकुल्लाम और राज्ञिका

१९५ र् वे कार्यान्य हुवा। स्वातन्य-वान्येकाश वेद्युत्व कर्ष वेद्य-श्रा करवे कार राजवेदिक कर होने क्या जाव जुवान्ते अकटा ग्राप करनेके कारण काग्रेम हो सत्ताम्ब्द हुई और केन्द्रीय एथ प्राय समस्त राज्य सरकारें काँग्रेसी वलकी हा बनीं। सवनात्र स्वतन्त्र गणवात्र भारतीय राष्ट्रका इस प्रथम प्रजातन्त्रात्मक काँग्रेसी सरकारने समस्त देशो राज्यों और जर्मीदारियोका अन्त कर दिया, देशकी विविध क्षेत्रीय चत्रतिके लिए प्रदम पचवर्षीय योजना चालूकी और उसकी समाप्ति होते-न-होते ढितोय पचवर्षीय योजना चालू कर दी । अन्तर्राष्ट्रीय जगत्में भो भारतने सम्मान एव प्रभावपूर्ण स्यान प्राप्त कर लिया। देशको स्वतन्त्र करनेमें चाहे वह स्वतन्त्रता कितनी ही छुजी, पुटिपूर्ण और चेलसर्नोंसे भरी हुई रही, इस देशक निवासियोको स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके योग्य बनानेमें और स्वतन्त्रता-प्राप्तिके उपरात उसका संरक्षण करनेके लिए उनके समर्थ होनेमें अँगरेजी शासनका मी हाय रहा है — इसमें सदेह नहीं है, तथापि इस सबका प्रयान श्रेय भारतवर्पकी भारतीयता. देशवासियोंका अन्तर्निहित स्वातन्त्र्य-प्रेम, उनके अनगिनत विविध बलिदान कौर विषम परिस्थितियोमें किये गये चिरकालीन सवर्षको ही है। देशने स्वय स्वप्रयत्न से ही स्वतन्त्रता प्राप्त की है और उसी प्रकार वह उसका सफल सरसण एव उन्नति करेगा।

बिटिश छासनमें देशकी कृषि, उद्योग-घन्यों, व्यापार और व्यवसायों-का भी पुनवत्यान हुआ। विभिन्न नियमित बन्दोबस्तों, टेनेन्सी ऐक्टो, भूमि आलेखों और सुविस्तुत भूमि प्रशासन द्वारा देशकी कृषि-मूमि तथा कृषि योग्य भूमिकी समुचित व्यवस्था की गयी। कृषि आयोगों तथा सरकारी कृषि अनुसन्धान समिति, सहकारिता विभाग, कृषि प्रदर्शानयो आदिके द्वारा कृषि और कृषकोकी दशा सुधारनेका प्रयत्न किया गया। नहर, कृषे, टच्च्वेल, बांच आदि विभिन्न उपायोको विस्तार देकर विचाई-का सुप्रवाध किया गया। चकबन्दी, नवीन प्रकारके रासायनिक स्नाद तथा यान्त्रिक उपकरणोंके प्रयोग भी कहीं-कहीं चालू किये गये। इस कृषि-प्रधान देशको लगभग तीन चौथाई जन संख्या खेतीपर ही निर्मर रहती क्षार कुटमें अनेनी और जापानकी विजय हो रही की आसीन कीर नेताची तुमाचच्छ बोधमें मध्यो बाजाय दिल्य केमावा तिमीप ^{करके} बारामको बहान्याचे अससा और बहान्य आक्रम कर दिना और मारवर्षे भावनक्ती वैगारी भी। सरकारने भावना वजीरवादे वार मान्तरिक विशेदका दवन करना सुक किया, बुद्धका भी नावा नक्कने क्षमा और विकास्त्रीको विकास होते समी । १९५४ ई. वे समस्यान वेबेक्टरे कार्त ही राष्ट्रीय नैदाओंने वाय कम्मादिक प्रमूल वास् कर कि ! १९४५ ई. में नेजिनेड विका और वातिमानेक्टरी वैक्रीनेक्न बाते ! महाबुध बंद बंदान्य हो क्या वा और वैंदरेवींने वारतको स्वक्रन करनेस लितन कर किया था। विकासर १९४६ वें. यें. यं असकरकान नेहनी मनियानी बार्कारन क्रमारको स्थानना कर दी वसी। १६४७ ई वे वन्तिय शामनास्य नाक्ष्यवेशमधे आसी ही वत्ताकृत्वान्तरमधी कार्रार्थ मूक कर दी। ३ जून १९४७ वें जो जिसेच दार्कनारेक्ट वासीन स्यतनका ऐस्ट पाड किया और वती वर्ष १५ जनस्तको आरक्तमे स्टब्स कर विद्या करा जा की अजीए जारदर्शक जिल्हाना और राविस्ता बारक दो सब्द करके शैलोको पुज्ज-पूज्क श्वयन्तरा प्रधान कर की नहीं है क्ष वर्ष भावक्योद्धाने स्वराण बारताय राज्यका क्यारेट बनरक स्वर वैदेशारेको द्वार क्रांत्रात्मात्मारको कार्यान्त कार्य कारान्तक कार्यानी ब्बरस्ता को। इस कारूमें विज्ञासन्ते गरियासक्तन विन्<u>रा</u>न्तिये

कराना हो। इव जावन त्रिवासको वारायक्कान स्थाप्तकार स्थिति । स्थापन विशिष्ट कर तथा। काले क्षानी कुक्कान सामार्थित पोर्डाम्में बोर काले कहीं वरित्र करी राक्सी मुक्कामेटर कराता राजित्सकों बारत मानी। क्षेत्र राज्यात एवं बारत हुत कीर कराने करने माने राज्या माने। क्षानिक स्थापनी वांचे की हुई। व्यानिक पर राज्यात विश्व कराती रही वो १६ वर्षा राज्या है व सम्मान्त्र होगा। क्षातकार सामग्री रही व स्थापनी । स्थापनी क्षानी कराती राज्या क्षानुकार करते के

...

जास्तीय इविदास : एक वर्षि

मिर्ले सून कातनेका कार्य करती थीं, कपडा इन्लैण्डमे ही बनकर आता था। जमशेदजो टाटाने लोहेका कारखाना पहले ही चालू कर दिया था । कुछ अन्य चोचांके कारखाने भी स्यापित होने लगे,। १९१४ ई० के महायुद्धसे **इ**न चद्योग घ घोंको भारी प्रोत्साहन मिला और उन्होन अमूतपूर्व प्रगति की । लोहा, सूत और चीनीके उद्योग विशेषरूपसे चमके, कुछ मिलें वस्य भी बनाने सर्गो । १९१८ ई० को सरकारी इण्डस्ट्रियल कमाद्यनकी रिपोर्टमें देशको औद्योगिक उन्नतिके महत्त्वपर बल दिया गया और उन्नतिके अनेक चेपाय सुझाये गये । १९२४ से १९३९ ई० के बीच भारतीय मिल-उद्योगने अपूर्व उन्नति की । वैगानिक अनुमन्यानद्यालाओ और कई स्थानोंमें पानीसे पैयार की जानेवाली विद्युत् शक्तिने मा इस कायमें भारी सहायता की। प्रत्येक प्रान्तमें एक औद्योगिक विभाग खुल गया, सरकारने सहायता, प्रश्रय क्षौर कुछ द्रव्य प्रदान किया । रेल, मोटर, तार-डाक आदिसे यातायातकी सुगम सुविधा भी ब्रह्मन्त सहायक हुई। दूसरे विष्वगुद्धने भारतीय मिल-चियोगको और अधिक प्रोत्साहन दिया। फलस्वरूप स्वतन्त्रताप्राप्तिके समय तक भारतीय उद्योग-धन्धे पर्याप्त विकसित हो चुके थे और दैनिक चपयागको उन वस्रुओंमें-से जो पहले विदेशोंसे आयात की जाती थीं, अधिकतर अब भारतमें ही बनने छगों। इतना ही नहीं, कुछ वस्तुर्गोका भारत कतिपय विदेशोंको भी नियान करने लगा । मिल-उद्यागके उत्यान-क कुछ पहलसे ही भारतीय व्यापार और व्यापारियोंकी दशा भी उन्नत होने लगो थी। उद्याग घ वाक उत्यानने उसे और अधिक उन्नत किया। घीरे घोरे दशके अन्तरिक व्यापारका अधिकाश तो उनके अधिकारमें काता हो चला गया, घोडा घोडा विदेशो व्यापार मा उनके हायमें आने छमा। अनेक अँगरेजी या अन्य विदेशो कम्पनियों और फर्मोंमें भो भारतीय हिस्सेदार, साझोदार या प्रधान कायकर्त्ता, मैनेजिंग एजेण्ट आदि होने लगे । षर्तमानमें देशका अधिकांश देशी एवं विदेशी व्यापार देशवासियोंके हायमें हैं। ब्यापार और उद्योग घन्घोंक संघालनके अतिरिक्त घकील, बैरिस्टर,

नह हो जानेने वेदीरार और सांवक बार बड़ क्या वा। वार्रों निकारित स्वार्टित हैं कराल जीव कुन, वन वाल बादि रागोंने किल मिर्टे करावार्टित और कानेने वन क्यांचें क्रियार केंग्रेस कर कर पार्टित में क्यांचें कर कार्टित केंग्रेस कुने केंग्रेस केंग्रेस कुने केंग्रेस कार्यों केंग्रेस कुने केंग्रेस कार्यों केंग्रेस केंग्र केंग्रेस केंग्र केंग्रेस केंग्

मान्द्रोक्तको इफ्ल्यदाका जेन देशको नहुनान धारीम नक्तानास कर्मी

हैरद प्रीतन्य करावेने बाराके ताव- सवी बहुरापूर्व क्वीन-क्वी क्षेत्रप्रमानुर्वक नष्ट कर विचा वा । १८५७ है के कराया में 📷

किने की धारती है।

मानी है। वॉटरेबॉफे प्रारम्बक प्रवली-प्रारत देवके वरेक वर्षेत्र वर्षेत्र-वन्त्री

रकों का बरमार्थ करने इनस्पालकों कीई होत्याहन स्वी रिया रित्यु वर्षक्रण और सामृतिके बतान का गुक्कण कीर वास्तिके पुरित्ये कुत पुरस्ती वार्योकोंने परित्यों तात्रिक उपक्रीतर केर परित्यें कार्योक्त्याचीय पुरस्ताम प्रारंक कर रिया | दर्का दे कर पार्टिके सिक्सी क्षेत्रा भेद में बीट १८८५ हैं कह बतु हैं। हो पार्टिके हैं में बीटी क्षा भेद में बीट १८८५ हैं कह बतु हैं। हो में में रित्यें रि मिनें सूत कातनेका कार्य करतो यों, कपड़ा डब्लैण्डमे ही बनकर आठा या। वमधेदको टाटाने लोहेका कारखाना पत्रले ही चालू कर दिया था । कुछ अन्य चौजोंके कारखाने भी स्थापित होने लगे। १९१४ ई० के महायुद्धने इन च्योग-च घोंको भारी प्रोत्साहन भिला और उन्होन अमूतपूर्व प्रगति की। छोहा, सूत और चौनीके रद्योग विशेषरूपस नमके, कुछ मिलें वस्त्र मी वनाने लगी। १९१८ ई० की सरकारी इण्डस्ट्रियल कमाधनकी रिपोर्टमें देशको अधिगिक उन्नतिक महत्त्वपर यन दिया गया और उन्नतिके अनेक चपाय सुझाये गये । १९२४ से १९३९ ई० वे बीच नारतीय मिल-उद्योगने अपूर्व उत्तरि की । वैतानिक अनुसन्धानद्यालाओं और कई स्यानोंमें पानीसे वैयार को जानेवाली विद्युत् शक्तिने मा इस कायमें मारी सहायता की। प्रत्येक प्रान्तमें एक औद्योगिक विमाग स्नुज गया, सरकारने सहायता, प्रश्रय भीर कुछ द्रव्य प्रदान किया । रेल, मोटर, तार-डाक आदिसे यातायातकी सुगम सुविधा भी अत्यन्त सहायक हुई। दूसरे विश्वयुद्धने भारतीय मिल-उद्योगको और अधिक प्रोत्साहन दिया। फल्स्वरूप स्वतन्त्रतामस्विके समय तक भारतीय उद्योग-याचे पर्याप्त विकक्षित हो चुके से और दैनिक उपयागको उन वस्तुओंमें-छे जो पहले विदेशोंसे आयात की जाती थीं. अधिकतर अब भारतमे ही बनने लगीं। इतना ही नहीं, कुछ वस्तुओंका मारत कित्य विदेशोंको भी निर्योत करने लगा । भिल-उद्यागके उत्यान-के हुछ पहलेसे हो भारतीय व्यापार और व्यापारियोंको दशा भी सन्तत होने छगी थी। उद्याग धन्धोंके उत्यानने उसे और अधिक उन्नत किया। घोरे-घोरे देशके आन्तरिक व्यापारका अधिकास तो उनके अधिकारमें बाता हो चला नया, थोडा-थोडा बिदेशा व्यानार मा सनके हायमें आने लगा। अनेक अँगरेजी या अन्य विदेशी कम्पनियों और फर्मोमें भी नारतीय हिस्सेदार, सासोदार या प्रघान कायकर्त्ता, मैनेजिंग एजेण्ट आदि होने लगे। वर्तनानमें देशका अधिकांश देशी एवं विदेशी व्यापार देशवास्त्रियोंके हाथमें है। ब्यापार और उद्योग-धन्वोंक सचालनके अतिरिक्त बकोल, वैरिस्टर,

क्षरपरमी बाधयो जुनिवाओं और शिवानी प्रशासने कार्यवाले वीर्यसी वैद्यानिक व्यक्तिकारीके शांच कालिने जीवन निर्वाह मेहना बनावा जीवने स्तरको क्रेशा बद्धाना जीवन बीवबको स्वरतना बद्धाना और बीक्स-भेजरको बरिल दर्भ क्य बना दिया । इन प्रकार परिचर्म देखींके ल्युक्त मारवरा वर्षतीमुक्ते साविक वृत्रसन्तम हुआ तिक्के काम मी है बीर इन शनियों थी है। विमा-सादित्व ताम-निवान और क्काबॉका की पुरस्त्यन हुना ! बराज्यताराज्ये शाधारी बच्ची विश्वा-गावन्ता और प्रके दल्प किन्स-विन्त और प्राय: नष्ट हो जुड़े में १ व न्तरीके प्रारम्भिक वरिसारिकी ने बचने स्वार्थ और मुस्तिमके जिय भेंदरेती प्रोर्शनमें पुत्र गाणी^{मीमी} मानवरण बर्जून भी और क्रमधे पुलिके किए असन पानु विद्यान क्यो काममें 40 दावस कार्यक्षेत्र, बाई सार्यंद सेवरंस वार्यासीने में ईखाई वर्षमा अभार वरनेकी माननाके मारतीमीरी विकित करनेकी मन्तर पासू निमा काराबाता और शक्षक वनानेका एव नारबाट में कोका इक क्यानार-एक की विकास और शाहनिक्का कई प्रासीय मान्यमंत्री अनुवार प्रचावित किया । पुत्र संगरेत अविदर्शारमंत्रि स्थान्तः चुकार बनया विकास स्थिते किए सार्थन साहित्व गर्न, बंसिंगे, पुण्यस्य और प्रविद्वासम्य जनस्य न्यानु वित्या और संसाम द्वीत्यांत्रम्

कोमारहोणी पीप शारी । जक्षणीमें वृक्ष महरका मोर स्वारकों पर्ण बंस्तुत परित्र स्थापित हुए । १८मी कही है के महिता पर्णी करनेका मनलिक करनाक १९मी कहीके अथन कहीं मेरीसी

ŧ٩

भारतीय पश्चित्रसाः एक प्रति

मुक्तार बहर्यों शांतिबहर बोध्दर इंगीनिया, करारांच केवर बारायक नपकार करावार विश्ववहूद केविवेद आहे देवे दूरायों बीर वै-नाम्परी यहा देवा बेटों क्यों आहिको क्यों क्या कर वार्यों मेर्न हो राज्येति आहि समेक योग वाराया हिंदिय क्याचार्या बीस्ट हुए। विश्वये तथा यहारी कारायानि वार्योग सामाण्ये स्वित्त शिक्षा और अँगरेजेंकि निकट सम्पर्कते लामान्त्रित राजा राममोहन राय, राषाका तदेव, जयनारायण घाप आदि भागतीय प्रतिष्ठित लनोंने और इन्हैंण्डमें ग्राण्ट तथा विल्बर फ़ोर्सने भारतमें विक्षा-प्रचारके आन्दोलनको प्रगति दी। १८१३ ई० के सम्पनोके चार्टरमें सरकारने इस मदमें एक लाख रुपया यापिक न्यय करनेकी स्वीकृति दी, १८१५६० में गयर्नर-जनरल लाई हस्टिंग्सने अपने सरकारी महिंदिमें शिक्षा-प्रचारके महत्त्वपर जोर दिया, १८१६ ई० में कलकत्तेमें हिन्दू कॉलजकी स्यापना हुई, १८२३ ई० में कलकत्ता वुक सीसाइटी एव कलकत्ता स्कूल सोसाइटोको स्यापना हुई तथा ऐडम और विल्सनकी अध्यक्षतामें सार्व-जिनक शिक्षा कमेटीका निर्माण हुआ। १८३३ ई० के चार्टरमें शिक्षा-न्यमी सरकारी रक्षम दस लाख कर दो गयी। १८३५ ई० में लाई बैटिक-ने शिक्षाका माध्यम अँगरेजी निहिचत किया। १८४२ ई० में पब्लिक इनदूरशन कमेटीके स्थानमें कौन्सिल बॉफ एजुकेशन स्थापित की गयो। धयुक्त प्रान्तके गवर्नर सर जेम्स टाम्सनने देहातो स्कूलोंकी स्यापनाका कार्य मो प्रारम्म कर दिया । १८५४ ई० में चार्ल्स वुष्ट-द्वारा प्रस्तुत सार्व-निक शिक्षा सम्बन्धी रिपोर्टमें कहा गया था कि "शिक्षाके सिवाय और कोई प्रश्न ऐसा नहीं है जिसपर सरकारको सबसे अधिक ध्यान देना पाहिए। भारतवासियोको वे नैतिक एव आर्थिक लाम जो केवल विद्योग-चैनसे ही प्राप्त हो सकते हैं, उपलब्ध कराना सरकारका पवित्र कर्तव्य हैं। हम चार्ते हैं कि भारतवयमें ऐसी शिक्षाका प्रवार हो जिसके द्वारा जनताको यूरोपके साहित्य, विज्ञान, दशन, कला आदिका ज्ञान हो।" रिपोटमें यह भी कहा गया था कि "सार्वजनिक शिक्षाके लिए मातुमाया ही प्रधान माध्यम है परन्तु अध्यापकोंको अँगरेजीका ज्ञान होना आवदयक हैं। देशो भाषाओंको अबहेलना नहीं करनी चाहिए, किन्तु जहाँ कहीं र्थेगरेजी मापाके पढ़नेकी इच्छा प्रकट की जाये वहाँ उसका प्रचार करना फ्लाध्य है।" फलस्वरूप विभिन्न प्राग्तोमें पूपक् पूपक् व्यवस्थित शिक्षा- भोगानी, राजनो तः साहि सर्वतः नवीन परवनातः विदेश साम्यवस्त्री वरित हुए । विक्रमी श्रम बससी बहारगावे क्यमेशमें बानेयाने क्यस्मित कारराजी काराधी मुक्तिवाओं और जिल्हाशी प्रधानमें मानेकांचे परिवर्त देशर्रावक सार्वित्वारोहे काथ आपने बोचन निर्वाद बेंद्रमा बनावा सोस्त-रारती क्या बारता जीवन बीवनती समाता बांगी बीर बीवन भेवर्षको बाँटम क्वे दश बना दिया । हम छनार परिचरी देवीके बनुसर मारका नरंतीनुची कार्यक पुरस्तका हता सिक्के धाद वी है ^{होर} रूप शांचर्यां भी है। चित्रा-बादिएक जान-विज्ञान और कथावींका की दुवस्त्यन हुना ह मराज्यवातालमें पारवंदी काची विकान्धरण्या और वनके बार्य किन्न-विन्य और प्राप्त- नष्ठ हो जुड़े थे । यजनीये प्रार्शनक सविवसीयों नै बरने स्वार्व और जुनिवाके जिल् अंवरेती वर्ध-विजे पुत्र व्यासीनीचे बालस्वरण बहुनुव की बीर सन्ती वृतिके किए प्रवान वालु किया न क्वो नावनें केरी बानक वार्यनेत नार्ट कार्ट बेररेक नार्टरकेने में र्रताई मनका समार कार्यको मानवाहे बारसीयोगी विकास करनेकी मचल पासू विन्या, साधस्त्राच्या और शताब क्लानेका वल वारकान्य की बोस, रूप बनाचार-१व मी निकास और शर्रातमधा वर्ष चारहीर षामार्थाने बनुवार प्रशासित किया । १९७ जेंदरेज जनवर्धारेजेंसे स्थान्तः कुषाय नवरा निवासा गुलिके किए जातीन पार्टित पर्ने बेस्स्टि, पुराशस्य और श्रीव्हाशस्य अस्त्रम्य चानु किया और बंगान स्थियदिन शोबाइयोपी बीम बाबी है कळकरीने जुळ करावा जोर बनारवर्षे दर्ग संस्तृत कांक्रेज क्यांक्त क्ष्य । १८वाँ क्ष्मी हैं के मानिक कार्य क्रमरीका जनत्तीके क्रमराका १९वीं वर्तीके जबन करने लेपीनी भारतीय इस्टिम्स वृत्त सी 11

नुक्तार अटभी कालिबार गोकर एंग्रीनिवर, जम्मारक केवर वस्तारन वक्षार जनावन विवसप्ततुर वेदेनिव ज्ञार कि वरकारी और बैर-करनारी स्टारों क्या वेंग्रे, क्रमों व्यक्तिय वर्गों, जन्म वरकारी मान क्या है। बनातिक गरमारी बनवा गरमार-दाग स्वीहत उपरोक्त मनारकी निक्षा-मन्याद्याके झाँतरिकत बना इ ई ग्रेन्का निक्तमानती, प्रोक सर्वेश महिला विदय बचालव, नाम्बीआका संबाधम-वेन। महर बपूर्ण संस्थापं, मण्यारकर रिवर्ष इन्स्टीनपूर वीत खनेक प्राप्यविद्यामीन्दर, छीन्द्रजिक संभोषक मन्द्रल, स्रोत दाग्य एव सनुगापान-मम्बन्धी विदारेग्द्र, गाम्बदादिक विद्यालय, गाउ प्रलाख और मदरम, सार्येत्रनिक चित्रकाम्य शादि यथ-तथ गुल गये । छापनानां, साम्पदायिक या व्यवसामी घराणानस्थामो और कवी, समाचारपत्रा आपाहित पानिक सामित्र विमालिक पन-पविकालों सादिने या ज्ञानका प्रमार करन और देशको िरित बरनेमें मारी याग-दात दिया। गिनमा और देखियो आदि मनोरश्यक सामुनिक उरकरणीन का जनगामारणका शिक्ति करनेमें महायना हो। अगेव प्रकारट भारतीय विदानीन प्रारम्भमें पारमात्य दिश्वनाने पद प्रवर्धन या महयोगमें और कारान्तरमें अधिशांशत स्वतः बान कीर विशासक प्राय मभी विभिन्न एवं विदिध क्षेत्रमि आश्चमें अनक एव स्तुर्य काय विया और भारतीय प्रतिभाकी प्रतिष्ठा विदवमें स्मापित की ।

षाय हो विभिन्न भाग्तीय भाषाभा और जाक सपन-भपने साहित्यका भी अभूनपुर विश्वास हुना । जनाना, मगठी, गुकराती, समिल, व प्रह,
जहें और हिन्दी आदि प्रमुग देशा भाषाओंने रतुरय प्रगति नी । सस्कृत,
भाइत, पालि और अपध्या आदि प्राचान भाषाभाग अध्यवनको भी
भोग्नाहन मिला । हिन्दी, धगला आदि प्रचलित देशो भाषाभाशा सम्पक्
विश्वास विटिश शासनकालमे ही हुना । यो उनको नाव्य-भाषाना उद्गम
पूर्व पर्योप्त विश्वास पिछली पाँच छह प्राताब्दियासे होता आ रहा था, किन्तु
पर्य-भेपत और उमपी सैलियाना विश्वास प्राय इसी कालको देन है।
भाइत भाषास विवसित और पूर्वमध्यनालीन अपध्रण भाषाने हारसे उदित
होनवाली हिन्दा इस देशके प्रवाससे लगर जिहार और हिगालयको तराईस लेवर ममदापर्यन्त सहुभागमें अध्यहारमें आनेवाली सर्वाधिक प्रचलित

१८८२ है. में यर विकास हम्परनी सम्बद्धताने एक विका-नानेन निवृत्त हुवा क्षिमें वित्रारिश की कि समाची प्रिमाण प्रचार स्व मुचार बरकारका सर्वेशवन कशन्य होना चाहिए, सबके बिए सबै निएक्ट प्रयालगील गहता चाहिए, बार्शिकक विकासर निर्मेष प्रयान देख पारिष्यु स्वर्णेता प्रचन्त्र स्थानीय हैर-क्रस्तारी शांबरियोंकी सीत हैय चाहिन, रकुमोंको ग्रीम यस कर रेगी माहिन और उनन जिलाने बरमारकी इसकोर वहीं करना पाहिए । जारांगक की बाध्यवित विकास सरिक बर बार म्युन्तिस्य दर्थ विक्तिका बोडीडो बीड स्थि नगा । १९ ४ ई मैं श्रीव्यवम मुमीर्गातरीय ऐच्य पाण हुआ। १९१ ही में वासप्रायानी कार्यशारियोध्य 🚮 वृत्र बारस्य विकान्यिकायम् कर्वोद्धरः अधिकार्धे स्ट्या १९१३ है में विकासिकामानक कर हाकोर्ट जहतरके अस्तानीक 🤒 रपस्त वारावधी जन्मेन्द्र सावधा परचा बाबपुर कस्तात, रिस्सी, धारा आरि सन्त सरेप स्थानि को क्रिसेस्टावन स्थान्त हो जिल्ली हैं कुछ केवल परीक्षा केलेशके ही थे। अनेफ क्यरीने गांवेस की पूर्व मोर प्राप्तारे मिडिल इनं केषेपारी स्कूबोफी संस्थाने मरपनित र्^{दि} हुई। इनके व्यक्तिरका प्रावटकी विकास और वैकेटकाबा ईसीमिनकी, इन्हि

दिवाम स्थापित 📺 १ हेटएक हैं। वे ही अनुस्तानुस्त समर्थेने निराधियाँ सम कुर्व दिवीयांग्रेज स्थापित दिये जाने असे । विवासियोंग्री वेंच्या मी

रूतरेको गहरे करो ।

**

सम्बद्ध कर्मीया हुए । १९६५ हैं के देखताए विकासिकार वेंद्र इस्तमार्थक विभाव का स्वाध क्षेत्र कर्मात्र कर्मात्रीय अस्ति हैं स्तिपरिकों को दिया गया । १९६७ हैं हैं सारोधक क्षेत्रकर्म अस्ति कर्म क्षा नहीं-नहीं कर्मात्र हैं क्षा स्त्रा । १९६७ हैं हैं सारोधक क्षान्य क्षान्य क्षान्य क्षान्य क्षान्य क्षान्य क्षान्य क्षान्य अस्ति क्षान्य क्ष

भारतीय प्रविद्वास । एवं धी

मार्थर स्थापनार्थिक विकासि विकासि सिंग भी भी भीत स्वान विकेश

प्राप्त फिया है। अनिगतत सरकारी अथवा सम्कार-द्वारा स्वीकृत उपरोक्त प्रकारकी शिक्षा-सस्पात्रोंके अतिरिक्त कवी व्र टैगीरको विश्वमारती, प्रो० कर्वेश महिला विश्वविद्यालय, गान्योजीका सेवाधम-जैमी महत्त्वपूर्ण सस्याएँ, मण्डारकर रिसर्च इन्स्टीटघूट जैसे अनेक प्राच्यविद्यामन्दिर, सांस्कृतिक संबोधक मण्डल, खोज बाध एव अनुमाधान-सम्बन्धी विद्याकेन्द्र, साम्प्रदायिक विद्यालय, पाठशालाएँ और मदरसे, सार्वजनिक पुस्तकालय बादि यत्र-तत्र खुल गये। छापेखानी, साम्प्रदायिक या व्यवसायी प्रकाशन-सस्याओं और फ़र्मो, समाचारपत्रा, साप्ताहिक पालिक मासिक वैमासिक पत्र पत्रिकाओं आदिने भी ज्ञानका प्रमार करने और देशकी शिक्षित करनेमें मारी योग-दान दिया। सिनमा और रेडियो आदि मनोरजनके आधुनिक उपकरणोने भी जनसाधारणको शिक्षित करनेमें महायता दो । अनेक प्रकाण्ड भारतीय विद्वानीने प्रारम्भमें पादचात्य विद्वानोंके पण प्रदर्शन या सहयोगमे और कालान्तरमें अधिकांशत स्वत मान और विज्ञानके प्राय सभी विभिन्न एवं विविध क्षेत्रोमें आरचर्यजनक एव स्तुत्य काय विया और भारतीय प्रतिभाकी प्रतिष्ठा विश्वमें स्यापित की।

साथ ही विभिन्न माग्तीय भाषाओं और उनके अपने-अपने साहित्यका भी अभूतपून विकास हुआ । वगालो, मराठी, गुजराती, तिमल, कन्नड,
उर्दू और हिन्दी आदि प्रमुख देशी भाषाओंने स्तुत्य प्रगति की । सस्कृत,
प्राकृत, पाल और अपभ्रदा आदि प्राचान भाषाओंके अध्ययनकी भी
प्रोस्साहन मिला । हिन्दी, बंगला आदि प्रचलित देशी भाषाओंका सम्यक्
विकास विटिश शासनकालमें ही हुआ । यों उनको काव्य-भाषाका उद्गम
एयं पर्याप्त विकास पिछली पांच छह शासाव्यियासे होता आ रहा था, किन्तु
गद्य-लेखन और उसकी शैलियोंका विकास प्राय इसी कालको देन है ।
प्राकृत भाषासे विकसिस और पूर्वमध्यकालीन अपभ्रश भाषाके द्वारसे उदित
होनेवाली हिन्दी इस देशके पनावसे लेकर बिहार और हिमालयकी सराईसे लेकर नर्मदापर्यन्त बहुमागमे क्यवहारमें आनेवाली सर्वाधिक प्रचलित

तीर माना रही है : बीर भागाताल शिवुन अर्थरताल सपुन प्रसिद्धान एवं रीतियाल-बेटे वानीहे विवादीक्त समावत १ है है दें दें पर्यनके रोपकलाने इस जानाका कार्रिशिक कान्य कर बोक्यानका बामान प्रचारत पत्र बोट शामिक तन्त्रीके द्वारा - विदेशपट १८मी १९वें बतीये बारशः नवपूर वाशिके वैन-वर्णवर्गके व्यालीके वयार व भी पर्याच स्थापी एवं विश्वतित ही चुके में । १९वीं वातीके नकाक सरवा क देशती

के प्रथमन बोर विद्याके प्रचारते करवारी वृत्तं हैर-करवारी अन्तर्मे हर मानाने बढ़ कर केता आरण्य कर दिशा जिनमें बढ़े जात दरे देशकी प्रान्त्राचाने परंतर अस्तीन कर दिया । जारतवर्षे अवरेशीया नामं मीर तरकतर बहुंची प्रका प्रश्चितिका समके मार्थवे भारी। प्रपारद वरी रहीं रिश्तु राज्य विवयनार-वेने वनवेडी, नारतेलु हरियक्त-जैवे वेपरों वस क्षप्रनार कार अवस्थित साहित्यक तारिकारी, केषणी, अंत्रावी अस्ति

विजिल्ह सैकिनोर्ने शिक्षित-विचाक नव-नय वाहित्वरा अबूर निर्माण कार्रे बते प्रस्तिकोस बनाकर और बक्का सकार करके बढे राज्याचा वर्ष रिश्र । देवची इव समल बान मानुधि एवं वीदिक प्रवर्शके बानवर वन्तुर्य बारवंदराका १५ प्रतिदानके जवित्र वाणी भी विश्वित को क्या द्यागर सामार ची नहीं है। क्यारि इस नगरत्यान सीर क्षत्रके लिए हिन्ने वर्ष सामगर्नी पुरस्थाते बन्धवारके ही थात्र है । स्रोत्य बन्धानीने संगति को सन्तरि हुई । रिविट-स्थिपक वैक्रानित

क्यांत्वक एवं क्यांगी शांतिक प्रतिकार पात्रनीति वर्वकान क्रमान

बारच मानि निवरींगर अंडरप्यूच पुग्यमी बीट प्राचीन सम्बोधे समुधार व बाबोपपारकम् व्यासामी-स्मीतः बुगन्तारितः बंबोस्ति बंस्कर^{स्ति} श्रद्धिरिका दिन्दी चैनका, बंराडी जुजराती तानिक कन्नव साथि प्रमुख बारशीय मानाजीते कान्य नारक करक शहबन क्रक्टाव नहाँ है. बाहिरियम बच्चलीयमा जीवन-परित्र जात्व-धरित्र निवास शादि न^{च्या} रमक बादिरमधी क्षेत्रेक जीव एककार्यका शुरूप हुआ। वंगीपके बेपर्वे

बारतीय इतिशस्य एक पनि

611

भौतिक पर्व वाद्य दोनों प्रकारके शास्त्रीय एव सोकप्रिय स्पोंका विभिन्न संगीत-विद्यालयो, कला के दों, नाटक-समाजा मिनेमाओं एवं रेडियो-द्वारा पर्याप्त विकास एव प्रचार हुआ। नृत्य-कलाका भी पुनकत्यान एवं विकास हुमा। इस कलाके बास्त्रीयरूपी, त्रिमिश्न प्रदेशोंमें प्रचलित लोकरूपी. पारचात्यम्पा आदि विभिन्न प्रकारोका विकास एव समन्वय हुआ। चित्रकलाके पुनरुद्वारका श्रेय कलकत्ता गवनंमेण्ट स्कूल आंक आर्टके प्रिन्सिपल ई० बा० हैयेजको है जिनके प्रमावमे अवनोन्द्रनाथ ठाकुरने भारतको प्राचीन कलाको पुनक्छजोवित करनेके प्रयतनमें एक नवीन धौनी-हा विकास किया । नन्दलाल वोम, अव्दुर्रहमान चुग्रवाई, ढाँ० सुरुमान शादि अय अने क प्रसिद्ध चित्र कारोंने चित्र कलाके पुन एत्यानमें प्रमुत सहयोग दिया । मूर्त्तकलामें विषयको प्रत्याकृति बनानेको ओर अधिक रहा, उसके भावपक्षको इस कालमें विशेष प्रोत्माहन नहीं मिला। स्यापत्य कलाके क्षेत्रमें भी सादगो सुविधा और उपयागिताको और अधिक ष्यान रहा। इस कालमें अनिगतत सरकारा और ग्रैर सरकारी इमारतें वेनी, किन्तु वस्तुत कलापूर्ण कृतियाँ कहलाने योग्य उनमें शायद दा चार हो निवल तो निवलें। वास्तवमें इस युगमें कलाका भी पुनस्त्यान तो हुआ, किन्तु सभो कलाओ र अधितक पाश्चात्य सम्पताको भारी छाप और प्रभाव रहा।

घम और समाजका इस धर्मप्राण देशमें अविनामाओ सम्बंध रहा है। सामाजिक जोयनका प्राय कोई अग ऐमा नहीं रहा जा धर्मके प्रभावसे ओत प्रोत न रहा हो। इस देशकी सस्कृति मा प्रधानत धर्मानुमारो ही रही, और धर्योकि विचार एव निश्चास-स्वातन्त्र्यका भी इस देशमें सदैव सम्मान हुआ है, अत यहाँ प्रारम्भसे ही कई-कई धर्म और उनसे सम्बन्धित सस्कृतियाँ साथ-साथ बहुधा सद्भाव और सहयोगपुषक ही फड़तो फूडतो रहीं। सुदूर प्राग्ऐतिहासिक कालसे ही चलो आयो भारतीय सस्कृतिकी द्राविष्ठ आर्य, प्राटव वैदिक अथवा श्रमण बाह्मण स्प विशुद्ध स्वदेशो द्विष्य चारा जिनकेन्द्रे जनवरा सर्वन जीत नववादि वृत्ती वरेख या और हैंगीन ह्वाचान बहुनानेवाण बतारन्तिवनी प्रदेश का कुक दुवरेगर दिया-ब्रांतिक्या करनी: सबनाके साथ पानी आर ही थी । देनिसाबिक सामने मनगमारा मैन बोडाहि करोंने और बाह्यमवारा धैर नैव्यवनि करींने रिकृतित होतो नावी वामै । जुननमानीके बार्वते वृत्रे की की बच्च विदेशी कारियों इस देवने आयों कर्युं भारतीय बनाव और बंग्युनिवें वरकारे बाल बारलवान् कर निवा वा और मुनवधानी शानके आरम बंध बाते बात में पूरफ-पूरण का रिक्तु वाहार्या एक का वा होने बंदा दिये में दिनिय बाग माने दिन्दु मैन लाहि अनुधारियों-वागः सम्जानामे समान बदनी पूर्व बक्तरोत्तर वि निश्न होती का रही थी । इत्तराज और कुनन-मानीके सावनाने बनके नि कि बहुक्त व्यव बार प्रधार धार्या और वने पुत्र मने जाइ अधन दिने । इन्ताव और मुनवनलॉर्ग बास्ट पूर्व-क्या मानवराष्ट्र हो थ थर बचा विन्तु क्वडी बुक्का और विदेवीयाँ क्षं निवादीयदाको अनेक संयोगे बहुत यस कर विचा । जारतके शस्त्रव सीर मुत्तसमाय क्रम्य दल्लामी देखींकै दल्लाम**ीर मृ**त्तममानामें नहीं दे^ख निम हो नवें । इनके सांतर्रि का बहुवान सन्दर्भ नामाजिक वार्तिक स्प क्षेत्रज्ञिक क्षेत्रको मुक्तकाली पाक्रको विदेश हुन्दर्भीर की नहीं क्रिके मीर न बकार नोई बान बनान शाना । नोईन्द्रे बाध्स्वत परिचार्यने काम नड किर अपनी काम महिने अवस्थि होने कहा । अध्ययक्यानाम को अवास्ति और कम्पण्याने नह सतीव बोरप नी पिषणः <u>वर्ष</u>ण दर्ग बरक्रम्बन्धना गर्न गण गा। शोर तथ अंगरेश चामनके गर्नी प्रशास स्वार्टित ही वालेवर को पुत्रस्थानका सुबंध विश्वा को करा क्षायकों परिवास्त्वकं परिवर्गी सम्बद्ध एवं श्रीकृतिके बाच चक्रवे बाले-बास्से बंधर्व करते पारा । शास्त्रवर्ते श्रामा वच्च अवस्था बच्चतः व्हें स्पारीन निवासी यह सामें थोड़ेन्से में हिन कानकीने हारने परिचयी सम्बुधी विदेश प्रवादित करनेके जीला तो का नहीं। अनेक व्हिटेस्सॉटनेंगि स्वर्थ को उत्ता

जातीय इतिहास दक्ष प्री

सम्यतासे अत्यधिक प्रमायित करना प्रारम्भ कर दिया । पश्चिमके धर्म, विचारों, आदर्शों, रहन-सहन, वेशभूषा, आविष्कारों, पद्धतियो एव प्रणा-लियों, समीका भारतीय जीवनपर प्रभाव पढा । इनमें भी सन्देह नहीं कि कित्यय जिज्ञासु अंगरेज मनोषियोंने प्रारम्भसे ही भारतीय धर्म, सस्कृति, साहित्य और इतिहासके ज्ञानका पुनरुद्धार करना भी धुरू कर दिया था । और यह कार्य उत्तरोत्तर उन्नति करता गया तथा उसने भारतके सम्बचमें पिचमी जगत्की धारणाओंको परिवर्तित करनेमें, उनकी भूलोका सशोधन करनेमें और भारतकी सास्कृतिक विभूतिका आदर करनेमें पर्याप्त सहायता दी । तथापि भारतका यह प्रभाव अधिकाशत बौद्धिक ही रहा, व्यवहार-इंष्टिसे उसका फल प्राय नगण्य ही रहा ।

अस्तु, अँगरेजोंके सम्पर्कस देशमें जा जागृति हुई उसका एक परिणाम धर्म और समाजमें सुघार करके उसे यूरोपवासियोके आदर्शपर उन्नत बनाने-के प्रयत्न थे। सम्या, प्रभाव और व्यापकताकी दृष्टिसे अपने अनेक, वहचा परस्पर भिन्न एवं विरोधी, रूपोके बायजूद, देशका प्रधान धर्म अब कथित हिन्दूषमें या और प्रधान समाज हिन्दूसमाज था। हिन्दूसमाजमें भी वर्ण एव जाति व्यवस्थाके कारण भारी अनैषय था। उनमें भी अवण अछ्त शद्री-की सख्या आधेसे अधिक थी जिहें चतुर अगरेजाने दलित जातियां या 'परिगणित जातियाँ' आदि नाम दिये । उनकी सामाजिक आधिक बौदिक एन नैतिक दशा अवस्य ही अत्यधिक शोचनीय यी और जितनी थी उमसे कहीं अधिक वणन को जाती यो । १९वीं शतीके पूर्वार्धमें हो राजा राममोहन रामने घम एवं समाज-मुघारके उद्देष्यसे बाह्य समाजकी स्थापना की थी। इसमें वर्ण व्यवस्था और मूर्त्तिपजाका बहिष्कार या और इसका झकाय अंगरेजियत एव ईसाइयतको सोर अधिक था। उस कालमें सँगरेजिक साथ सान-पानका सम्पर्क रूपनेवाला या समुद्रपार जानेवाला व्यक्ति जाति और पर्मस स्युत कर दिया जाता था, और ऐसे लोगोंकी संस्था दिन प्रतिदिन बद रही थी। क्राह्म-समाज उनको आश्रय देता या, अत उसका प्रचार बोर प्रचार बहुता गुरा । केमानगर विनने को और अभे बहारा । देशा-नाम सङ्ग्रे बाह्य-मानावरा प्राथम वैति व जारहीहे बाव मान्यम वर्णन के स्थानन कार्टर क्षाप्त नगमके अपने प्रमुखे कुछ नहीं ग्रानाची ^{क्रान} रियो । इस्तर समुदानको आराज्यमं विर्मुण कोरतस्वाती धार्वनानारीके का स्थापना हुई है अगरेद वीर्तन्य राजादे और शतकृत्व नीतिन संबीत कर प्राचेश नवास्त्रे २ व ने १३ वे १ शताहेने वकाय-नुवारके 🗗 वर्^{तर} त देवन राष्ट्रेयन कोनाइटोकी ी. जान्ही बांधन ब्राम नीमनेने कॉन्ट्र क्षोत प्रतिकार्यः जीव्यक्तिकी की क्षताना की । त्यांकी पाकपुरूप वर्षक निर्मे की बैदान्ती दिचाराच्या प्रचार हिमा अबके विरुप्त काली लिकानानी तका रक्षको राज्योजेन (रहेकोने की कादर जारनी। सध्यानकारे कुरेंद्र और अमेरिकाफे निकानिकोक्त असर्थित किया । यामहत्त्व निर्मी ती क्ष तथा मुखापुरू अन वटा ३ १८४५ है के वैदव स्टामनीने मारबार जारबों । कुछ जनीय रूप देवर विशेषोद्यस्य वीमारबारी रमाना हो । बारती वृत्तीतेत्रका इव जेपने शुप्त वार्य विका । संबंदी कोर्निको प्रारक्तिमें वचका नका क्यार हुआ। १८०५ ६ के ही सर्वार न्याची रक्तन्यमं सामक्ष्यातको स्थाननः थी। वै सी धर्महर, बूर्वि देवे वीगरिवनाके विशेषी ने नवाम-नुवारके वसने के और वार्मिक ^{हैरिक} बर्मका पुत्र- बचार करना चाहते से : चेताब और कलट बरेबर्ने वार्य-नवानपा बहुत प्रचार हूं । । विल्तु बहुरे बार्वपाय अल्लोलाने सर्वे

कुरानिश्चेको पुर करनेका प्रशन किया, व्यक्तिशानिक नुवार बोर सिक्षात्र परि के नार्यको कांग्रे वहाया और मुक्तकाका एवं ईनाइका-हास अनकांग्रे अ^{स्त्र} बनोने रोक्षित करवेने जारी वामा ही वहाँ बनात्व बर्नोरी बटु मानीवर्ध वर्ष मीमान कारान करके क्ल-लामारलको वासिक भागमध्ये में ^{हेर्स}

र्युंबारी । विन्यु दवना थी चन कामा हो हुआ ननातन धर्म यो अर्थन माने चंतरम वर्ष नरक्षम कन्त्रेत्र अवून क्षुत् । आवरेक स्थानी रिमासान

में राजनगरी नवाशका स्वास्त्र को । बनावर्ने ईस्वरक्त विद्यासन्त्रे

वालीय इन्द्रिल पुत्र धी

R.R.

विषवा-विवाह आ दोलन चलाया । अन्तमें महात्मा गा घोने समाज-मुवार-को अपने राजनैतिक आन्दोलनका प्रमुख अग बनाया और विशेषकर बछूत कही जानेवाली जातियोंके उद्धारके ठिए हरिजन-आन्दोलन चलाया । अप भी अनेक घामिक और मार्माजिक नेता इस युगमे हुए। वज्ञानिक शिक्षा, पाब्चात्त्य विचारों एव सम्यताक सम्पर्क विदेश-यात्रा आदिन भारतीयाके दृष्टिकोणमें भारी परिवतन कर दिया। रूढि, रीति, प्रया, चास्त्रोय त्रक्तव्य और पण्डितो पुराहितोके फ्तवोंकी अपेक्षा युनिन भौर तकको अधिक महत्व दिया जाने लगा। अनेक बन्वन तो आधुनिक सम्पताके स्कूल, बस्पनाल, रेल, होटल, छापानाना आदि विविध उप-करणोंने स्त्रय ही ढोले करने प्रारम्भ कर दिये था। इन सबक मुयोगमे चपरोक्त आन्दोलनोके फलम्बरूप धम और समाजमें प्रमृत सुधार एव जागृति आ गयो । दलित जातियोको दद्या सुघरन रूगो, स्त्रो-जातिमें शिक्षा, स्विनिभरता, परदेका अमाव आदि वेगके साथ बढ़ने लगे, विदेश-यात्रा, विधवा विवाह, विजातीय विवाह आदि वुरे न समझे जाने एगे और वाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, कन्या-विक्रय आदि हेय समझ जान लगे। इस प्रकार हिन्दू जातिका पर्याप्त पुनरायान हुआ।

मह्या और प्रभावमं बहुत कम होते हुए भी मारतीयता, प्राचीनता, देशमें ज्यापकता एव सास्कृतिक ममृदिमें कांचन हिन्दू धम और मानकों प्राय समकक्ष जैनधर्म और जैन-पमाजमें भा उपरोक्त युगानुमारी प्रवृत्तिया, विचारों एव क्रान्तियोंका प्राय धैमा ही प्रमाव पटा। अब भा दशक प्राय प्रत्येक भागमें पाये जानेवाले जैनो अधिकाशत मध्यमध्यम एव उच्चमध्यम सगक ज्यापारप्रधान ममृद्ध एव मम्पन्न मारतीय थे। मामाजिक मगटन, निक्षा, सदाचार, स्वधमझान एव धामिक्ताकी दृष्टिसे वे अप ममाजोंच बहुत कुछ आगे थे। बिवाह गम्बानी कुश्याओं, छूताछूत, विदेशनमन, धर्मशास्त्रोंके छापे जानेका विशेष, स्या जातिको धनिक्षा, परवा आदि अनेक कुरीतियाँके सम्बन्धमें मध्य एव उच्च वर्गोंके हिन्दुओं जैसा ही

मीर प्रभार बहुना करा । केयहक्त शैनने जहे और वाचे बहुता । रेनेक नाथ राष्ट्ररते ब्राह्म-कमाथका प्राचीन नैहिक ब्राह्मिके साथ बन्नाय वर्तने के प्रवतान कार्य क्राह्म-कार्यके कार्ने उनको एक क्यी शामाची का रिया । इतके अनुकरवर्षे सहाराष्ट्रक निर्मुत क्षेत्रवरवाची आर्काः)-वर्णन की स्वात्मा हुई । अहारेव वीविन्द रामारे और रामकृष्य वीक्ति संस्टार कर प्रार्थमा नवाबके त्रमुख र्वता वे । रालाहेवे तमात्र-नुवारक ही वरेर्ड हे देशन स्पूर्वश्रम कोशास्त्रीकी और बादको बोधान हच्य बोह्नपेने पर्वेदर श्रीप इन्किया बोशाइटीची जी स्थापना की । स्थानी 'छवडूका परम्ब्यूनी वी वेदाची विवारोका जवार किया करके किया स्थायी विवेद्यानारी दया स्थानी राज्योजी विदेशोगें की शाकर बारतीर सम्बन्धकारी बुरैर और सम्रोत्काक निधानियोगी प्रवासित किया । धनवृत्त्व सिक् भी एक गंगा सुधारकमा का बना। १८७५ ई. वे जीवन स्थायराजी भारतीय नामधीको कुछ नवीच कप केवर विशेष्ट्रोदिकक बोतास्त्रीकी स्वापनः भी । सीवती एमीनेक्षेत्रतं इत खेवर्वे स्पूत्र काव किया । संगरेनी पोनीको माराप्रेपीने स्वका बसा बचार हवा र १८७५ हैं के ही स्वयं स्थामी वसानास्त्रे आर्जवसामको स्थापना की वै को वन्दिए पूर्वि स्र् प्रीयनिश्वाचे विधेकी में बनाम-नुवारके शबरों ने और वासिन ^{हरिस} बमना पुन प्रचार करना पक्ष्मी में। पंत्राय और बत्तर प्रदेवनें सार्न-समायका मृद्य अकार हुमा । किन्तु कही कार्यक्रमान कान्द्रोक्सने सर्वेत दुरोशियोंको हुर करमेका प्रमान किया हमी-आधिके नुवार और विकासमार-

क्यावरा बहुत अवार हुआ। रिल्यु बहुर्ग आर्थकाम वाल्योक्काने केली ट्रिकिटर्नेन हुए वर्णक असल किया स्थानातिक कुमार और स्थित स्थानातिक क मार्थका मार्थ करणा क्या स्थानातिक पूर्व देशस्वतीनार क्यान्यों कर्में पार्थि और करार्थक मार्थ करणा साही क्यान्य पार्थि कृत क्यान्यों पर्योग्यों। रिल्यु स्थान में एक लाजाराच्या व्यक्ति स्थानात्में मोर्थे प्रोण्यों। रिल्यु स्थान में एक लाजा हो हुआ करान्य कर्मी मार्थे स्थानी। रिल्यु स्थान में एक क्यां हो हुआ करान्य कर्मी मार्थे स्थानी। रिल्यु स्थान में एक क्यां हो हुआ करान्य कर्मी मार्थे स्थानी। स्थान स्थान क्यां स्थान क्यां हो स्थान क्यां स्थानिक स्थानी स्थानात्में स्थान स्थान स्थान स्थानात्में स्थानात्में स्थानात्में स्थानात्में स्थानात्में सस्याएँ स्थापित हो गयी जिनसे सोध स्रोज एवं विविध विषयक साहिरय-का सुजन तथा प्रकाशन होने लगा । यान्ठ-पाठशालाओ, वालिका-विद्यालयों एय उच्च सस्फुनविद्यालयोंके अतिरिक्त जैन स्कूल, वॉलेज, छात्रावास, बाला-विश्वाम, अनाथालय आदि भी शीघ्रताके साथ स्थापित होने लगे। स्त्री-शिक्षा, अन्तर्जातीय या विजातीय विबाहके पक्षमें और वृद्ध विवाह, क्राया-विक्रय आदिने विरोधमें उग्न आदोलन चले और पर्याप्त सफल हुए । दस्सापुजाधिकार-आन्दोलनने विमो भो व्यक्तिक धर्मपालनकी स्वतन्त्रता अपहरण करनेकी प्रयाका अन्त कर दिया। समाज सुधारके चेंद्रे इयसे ही दिगम्बर जैन परिपद्-जैसी सम्याण मा स्थापित हुई । तीर्थ-क्षेत्रोंके प्रवासके लिए कमेटिया बनीं कितु इस प्रसगको लेकर दिगम्बरों और स्वेताम्बरोंमें कई तोथोंक एकाधिकारक प्रश्नपर खेदजनक मुक्कदमे-वाजियां भी चलों जिन्होंने घातक माम्प्रदायिक वैमनस्यमें वृद्धि की, जो किनिप्रय नेताओंके मत्तप्रयत्नोमे इघर कुछ दशकोंमे किचित् शान्त पह गया है। अँगरेज प्राच्यविद्योने १८वीं शताब्दीके अतिम पादमें ही जैनद्यर्म एवं साहित्यमें रुचि लेनी प्रारम्म कर दी थी। १९वीं शताब्दीके पूर्वायमें अनेक अँगरेज विद्वानोके प्रयत्नोंसे जैनधर्म, सस्कृति, साहित्य, पुरातत्त्व और इतिहासके अनेक अगोपर स्तुत्य प्रकाश पड़ा और घोरे-बोरे जैन-विद्या भारतीय विद्याका एक महत्त्वपूण अग वन गयी । १९वीं शतीके उत्तरार्घमें र्वेगरेजोंके अतिरिक्त अनेक जर्मन, फ्रान्सीसी, इटालियन आदि अन्य परिचमी देशक प्राच्यविदोंने भो जैन विद्याके अघ्ययनको प्रभूत प्रगति प्रदान की एव जैन धर्म और उनके इतिहाससे सम्बन्धित अनेक आरमक धारणाओं का चेफल निरसन किया। वीरचन्द राघवजो गान्घो, प० लालन, जगमन्दरलाल जैनी, चम्पतराय वैरिस्टर आदि अनेक जैन विद्वानोने यूरॅप और अमे-रिकामें जाकर जैन धर्म एव दर्शनका प्रचार किया। भारतमें अनेक जैन एव अजैन प्रकाण्ड भारतीय प्राच्यविदो एव विद्वानोने जैनाध्ययनको उत्तरोत्तर प्रगतिवान् किया और यह क्रम चाल है। इस प्रकार इस युगमें

नारम भेप्यतर जामानिक बंबटन क्य न्यवर्गावरवती अधिक निवरतने उन्हें पुरुष प्रगारिक लाग अपने क्ष्में और सक्षात्रका सुवार करनेतें अस्ति माद्यश्य भाव समय क्या (त्या । १ वी सती ई के सम्बद्धण नग्युप मान्यापार जारि अनेक नेन्तानें दिल्लोको प्रीह एक क्षे रहा ग्रीकार्ने क्तरा विगुल वर्धेनक साहित्क निर्माण होता रहा वा और पूर-पूर जलीर्वे नैरुश प्रतिक्षक क्या पर्देचना रहना यह । अलोक अभिर प्रमुख देनिर मानार्जिक विश्वसम्बन्ध का कड़ी एक छोटा-कटा यहन्त्र-बन्दार मी इस् ना मोर प्राय निश्च साम्य-नवा होना वा । इतने वनका वार्तिक मीर्ग भीर शामानिक कीवन वी बहुत कुछ बँका हुआ। थर । १९वीं समीकें मध्यमें रिल्लीके व जिलवन्त्रव चवार्डा डोटो-डॉडो क्यारें विकासमेंने वास्तिक एवं ब्रोडिक विवयोगर क्षियो वर्षाय स्थित वी । क्ष्य प्राप्त (बत्तर प्रदेश) के बचन विकासचायन राजा विवस्तान रितारे केन्द्र के बैन वै जिल्हा प्रमालोगे दिली व केवल विश्वानंशनाजोंशा एक पन्ध विकर मनी बरन् कालकार्वि जा छड्डि काव-बाल बङ्गा प्रकीप होनां मारम्य ही परा । अपूर्ति सम्बं ती दिल्लीने वर्द कुप्तकें निर्मी । १८५ हैं में हो। भारता नगरमें एक जैन, कार्निक पुस्तक कर कुत्रों जा। किय परायभोत्रे क्रापे मानेपा (तम् वन्तियोशी वर्षिः वैत्र पुरस्तकानियोगे में ननमा पंचान वर्ष क्रम विरोध किया । क्रिन्तु विरोधके बारमूर क्रीरेडे मान्योलनमें प्रमादि होती वसी। १८७५ ई के बेंद समाधारपत्र मा निकालने प्रारम्भ हो वने और कुछ हो वक्षकोने क्रिका नुजराती वहरू मराठी व्यवस्थी-क्यू वाणि विविध शासाओं ने वास्ताविक स्टॉबर्ड मातिक वैनातिक वय-प्रविवासाकी संक्ष्या वर्तनीयर पहुँच मन्छ । १८८^५ 🕻 में जिल्लाकर बैंग महासमानी बीर स्वयंत्रकर कोदान्तर बाल्य न बोर चैन नेन मेल एकाविनेक्स (नारत चैन स्कूतरहक्क) वी स्नास्ता

को पता निर्मित्त स्थानोने अनेक क्षेत्र कारहरिक दुवं क्षावित्ति

भारतीय इतिहास त्युक्त रहि

न राषड् वनमें भी या । विल्यु स्रोधक विवया सम्पन्नाना वर्ष अवस्थितमे

गुषलमान नेताओको भाँति राजनीतिक लाभोकी ओर अधिक रहा है और धर्म, समाज एव सस्कृतिके पुनक्त्थानको ओर कम ।

पारसी समाज छोटा-सा किन्तु सर्वाधिक समृद्ध, सुशिक्षित एव गठा हुवा समाज है। बँगरेजी शासन और सम्यताका सर्वाधिक छाम उसने वपनी व्यापारिक, बौद्योगिक एव सामाजिक उन्नति करनेमें उठाया।

बीद धर्म लगभग एक सहस्राब्दीके उपरान्त अब कुछ दशकोंके बीच इस देशमें बाहरसे आकर फिरसे उदय हो रहा है, देशमें उसके अनुपा-वियोंकी सहया चाहे अधिक न बढ़ रही हा किन्तु समर्थकों एव प्रशसको-की कमी नहीं है। धार्मिक दृष्टिसे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पुनस्त्यान इस कालमें बीद धर्मना ही हुआ है।

ईसाई धमने अँगरंजी शामनके आध्य, सरक्षण एव सहायता, सहयोगसे भारी उन्नति की थी। निम्न जातियोको दीन ग्रारीय अशिक्षित जनताको ईसाई बनानेमें उन्होंने अधिक ध्यान दिया और उसमें वे पर्याप्त सफल भी हुए। उनके मिश्नानों और पादिर्योने स्कूला, अस्पतालो, अना-पालयो आदिके द्वारा देशको लाभ ही पहुँचाया, सेवाभावका आदर्श भी भली प्रकार प्रस्तुत किया, किन्तु इन सत्प्रयत्नोमें यही सबसे वहा कलक हैं कि इस बरामें ईसाई धर्मका प्रचार करनेके पीछे पिष्टचमी गोरी ईसाई जातियोंके राजनीतिक उद्देश्य ही प्रधानरूपस कार्य करते रहे और सम्भव-तया अब भी कर रहे हैं। वैसे ईसाई समाज अपेक्षाकृत शिक्षित एव सामान्यतया उन्नत समाज रहा है।

इस प्रकार गत धाताब्दोके पुनस्त्थान युगमें भारतवर्षने जीवनके विभिन्न क्षेत्रामें नवीन आगृति, प्रगति एवं उन्नति की । इस सर्वतीमुखी पुनस्त्यानने स्वतन्त्रता प्राप्तिक साथ एक वडी मजिल तय कर ली । देशका पुनस्त्यान ही चुका, अब वह सवप्रकार समर्थ सचेतन होकर अपने पैरोंपर खडा है और सम्यताकी दौडमें विश्वके अन्य सम्य राष्ट्रोंके साथ समान स्तरपर माग लेनेके लिए कटिबद्ध है । यदि अपनी सांस्कृतिक

वय मध्यको आन्तरिक मुखा । तर्व चूनकचानके माधनीनाच सैन वर्षेत् म होता. वे प्रतिशय-सम्बन्धी झानको भी अनुपूर्व वसरदार हुँगी है धनका पाने जनगणन कोत अनिया बन्द वर्ष वर्षणारी में

तमानि का नाम पुरनावने को सकताने कृत वैद्या हाने प्रदेश विक्री रहान बायर पात्राता । १८३९-१ ८ ई) वे अवर्गाता क्य बनाता। समार मृत्य प्राथम बागावन बनावा पाच बनावा था। हिन्तु इय क्ष्योर्ट লম বা প্যাৰ-পুৰাংভা *বা ভা*গ । ল বা লা প্ৰায়-কল্ম কৰ্ম-কল্ম सर्गरम् वर्षः अनुरक्षाः नारक वाश्यः प्रारम्भवे स्वयमानायां ही सर्विष् मा न हुना का व...व अवस्त अव उथ क्यार बडी विकृत में और सर सत्त दिश्व स्था था था व श्रीय प्रत्य सक्त्युष्ट में बीर करने होंगे ब्रॉटक को स रिकार) ह प्रदेश विशेषा थे। १ १५वे जिलाकी भी शृह्य करी मा बोर निरा परित्रमें का बाद सदमन में दिल्लू में एके मोनसे चिटा मनी (tare ५ ई.) अनेनपुर वर मैदर बहनायों (tate-

ct) mask when faut mult (tern-trivif) मादि वैनाओन मुननवानावे कानुनि वैद्या की और मान्नम मुनिय-निद्या रचून मचन्त्रे नक्षत्रह वर्गा स्थेनकर, सद्यानारस्त्र हिस्स-कर तथा बेम्बाई एवं नंबहन क्यारर करती कर्मारका प्रस्त निर्धे । सुमनमान नेता भे शास्त्रान हो सानो जोकाहुन स्थानकाचा सानत बरण बरणारन अवनी जातिके निए विदेश खरिकार और रिवार्स कॉमना सुरू वर वा भी । वर प्रजन्त अन्त कड़ कान रहा । सुनवसल^क माण्यराजिक वैकारत का जिल्लाविद्येयका सनके मैचाबाने सदैव मोरकारी रिया किनो दुष्टन मर्गंड नात्रशास्त्रिक हो आर-नाम, सट पार और सन्तर्वे समान्य वेदाके मान्य-मान्य हा काविके कार्य वासने जाते ।

निपंतपर्तते भी समवानुवादी प्रवन्ति को किन्तु विदेश नहीं । देखने विभावत्के क्रमण्डक कर्यु सन्द्रः यंत्राची द्रवं क्रिम्बी द्वित्रु बैन ब्राहिकी बाच-दी-नाच मारी गंध बसान पहें दिल्लू बनके मैदाबीचा सन्दर्भी बारबीय इकिश्वास । एक दवि

प्रमुख तिथियाँ

१. देशो भारत

१ करो	इसे ६ लाख वर्ष	पूर्व	पूर्व पापाण युग
लगभग	६०००००-१५००	० ई० पूर	पुरातन पापाण युग
10	१५०००-८०००	11	नव्य पापाण युग
,,	6000	"	घातु-युग एव मानव सम्यता और
			संस्कृतिका उदय, ऋपमन्युग
"	६०००–२५००	22	सि घु घाटो सम्यता-पूर्वकी मानव
			एव पश्चिम और दक्षिणकी विद्या-
			घर (द्रविष्ठ) सम्यताएँ
14	3000-2000	21	वैदिक आर्य-सम्पता
"	२०००	"	रामायण काल, अयोध्याके
			श्रो रामचन्द्र मगघमें २०वें तीथैं-
			कर मुनिसुव्रत, दक्षिणमें वानर-
			वशी तथा ऋग जातिकरावण आदि
,,	१४४३	"	महामारत युद्ध, महाराज कृष्ण,
			२३वें सीयंकर अरिष्टनेमि
*1	8800-000	27	उत्तर-वैदिक काल, उपनिपदोकी
			रचना, नागोंका पुनस्त्यान, ब्रात्यों
			एव श्रमणोका पुनरुत्कर्प
) :	१०००	"	हस्तिनापुरका विनाश

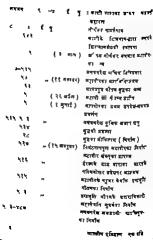
ममुख तिथियाँ

००१ मासीव इदिहास । एद धी

नरम्नापके कारत केंद्र एवं क्यारेय शक्तांता जारतको भारतिन्यानी. परकल करते हुए और पन्हें क्यारोशर सनुपत कारते हुए वह साने नहेंद्र है तो नह मनस्य ही स्व-रर-नानाकार सकत सामन कर केना. हर्

कोई करेड़ करें है।

aco-eso so do	पार्टीलगुत्रनरेटा अनुगढ, मुण्ट, नागदाम धादि
YC: " (45 "	गोतमबुद्धका परिनिर्वाण (मृष्ट्) मगपन जोगनाम वारवास्ति-द्वारा विजयवंश (पूपनन्तवः) को स्थापना अवस्तीका मगपकात्त्वम मिलगा
4£4 ,,	मनावीर-परमानाक धन्तिम धहत्वेदलि सम्बु- स्थामीमा नियान
225-20A "	मगय-मम्बाट नन्दियपा पालागोना, वैसासस्या पर्ताणान
626 "	निद्वपन-द्वारा कीलग विसय
śέ€ " ,*,	मगप-मसाट् महापित्रन् अप्तिम श्रुतमेपाल भटवाहुमा (जैन) मप- महिन रक्षिण पशका विदार मगदमे हादणपर्योव
	दुभितका प्रारम्भ
344 "	कर्णाटको क्टयप्र पवसपर मद्रवाहका देहत्याग
३६३ ,	मग्यमे राज्यक्रास्ति, नवनन्द्रमञ्जी स्वापना
३६३—4०९ ,,	मगपया नन्दमग्राट् महापद्मनःद
326 °°	घनान द और उसके माई -८ नाउ, आर्य चाणक्य यूनानी सम्राट् सिकन्दरका पजाय एवं सिन्धपर आक्रमण
₹28 ,,	मौय चाडगुष्नका नन्दोंके विकद्य विद्रोहारम्म
३१७ ,,	मगथमें राज्यप्रान्ति, नन्दवशका अन्त, सौर्ववश- की स्यापना
३१७-२९८ ,,	मस्राट चन्द्रगृष्ट मौर्य
३१२ "	सम्राट् चन्द्रगुष्त-द्वारा सविनाविजय
प्रमुख तिथियों	got



१५८ ई	० पृ०	स्नारवेलने मगध-नरेशको पराजित किया तथा
		यूनानियोनो मध्यदेशसे निकाल बाहर किया
१५३		कुमारी पर्वतपर खारवेलने जैनम्नियोका महा-
	•	सम्मेलन किया
१५२	,,	खारवेलके हाथीगुम्फा शिलालेखको तिथि
स० १५०	11	जैन मरस्वता आन्दोलनका प्रारम्भ
ल० ८५	n	शकोंका भारत-प्रवेश
७४-६१	,,	चज्जैनीमें खारवेलके वशज महेन्द्रादित्य गर्दभिल्ल-
	••	मा राज्य
६६	,,	शकोका मालवामें प्रवेश, पुरातन शक संवत्-
		को प्रवृत्ति
६१-५७	**	उज्जैनोमें शकोका राज्य
ړ4७ د	>>	विक्रमादित्यके नेतृत्वमें शकोकी पराजय, मालय-
		गणकी स्यतंत्रता, विक्रम सवत्का प्रवर्तन।
		सुराष्ट्र, मथुरा अदिमें शकक्षत्रप वद्याकी स्वापना
۷	ई 0 명	[०-४४ ई० जैनाचार्य कुन्दकुद स्रोर उनके पाहुदग्रन्य
२५-७५		दिगम्बर परम्पराके आगमोका सकलन
२६-६६		सुराष्ट्रका क्षहरात नहपान, गीतमापुत्र शातकर्णी
६६	•	दक्षिणव दिगम्बर मूलसघमें उपभेदोंको उत्पत्ति
७८	ई०	चप्टन-द्वारा पश्चिमी क्षत्रपवशकी स्थापना, उज्जैनी-
		की विजय, शक सवत्का प्रवर्त्तन
७८-१००	Ęο	पुरुपपुर (पेशावर) का कुपाण सम्राट् कनिष्क,
0		बौद्धाचाय अश्वघोष
90		ै जैनसघका दिगम्बर एवं क्वेतास्वर सम्प्रदायोंमें विभाजन
१२० -१		ः जैनाचार्यं समन्त्रभद्र
(70-1		THE WINDS
प्रमुख ,		300
·		

116	् चन्द्रमुग्न-वाश क्याना सम्राग सेन्युक्करो स्टाट
11 ,,	चार्टानपुरको साममधार्वे बुनानी सामपुर वेदेण नीवका मानवन
**	मधार पारमुण नोर्वेदा राज्याना और मै मृति समग्रद चरमवेन्द्रोच (दक्षिण दर्मारह) को पदा सामा
396 8 W	बीर्व नधार विस्तुनार अविश्वाप
37:717	मार संशेष
c 9c 9	समीव का शासाजिये ह
112-61	कृष्यि-वाष्ट्र
948-44	मदान के विकासकाया विश्वाचा जाना
444 ts	चित्रका वर्ष चींबची वीर्व-सामाञ्चल सर्विती
	वसार् वर्णात (शहवाची वर्णावची) क्लक्
* * .	क्तारा चनेता माई स्वरंथ और उसने रोपन
Markey "	^{के} डनमें निमुक्तशास नामसञ्जल बंबकी स्वातमा
Placing	समानिय गोर्थ बनादिक वंशव
100	वर्षिय-स्टब्सी सार्वस्य १
141 14	पुष्पानिम सून हारा नक्यके जल्दन नोर्न वह-
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	प्रयक्त श्रम
torer	नवनमें धून बंध वाद्यावनमें नुक्यकार, पर्वश्रीम
•	गाम्मीकि मनु रम्हि
\$w\	चारवेशका जीवराज्यानिवेक
***	मार्वतना राज्याविषेत्र
ttv	ः नारवेजनाराः वेडनके बारावाद्य-वरेच चाराविन- नो विवय
	मास्त्रीय इतिहास : यस सी

१५८ ई० पू०	स्याग्वेलने मगध-नरेशको पगजित किया तथा
	युनानियारो मध्यदेशसे निकाल वारर विया
१५३ ,,	फुमारी पर्वतपर खारवेलने जैनमुनियाका महा-
	सम्मेलन किया
१५२ "	यारवेलके हाथीगुष्का विलालेखको तिथि
₹०१५० ,,	जैन सरस्वता आ दोलनका प्रारम्भ
ल० ८५ ,,	दार्गोका भारत-प्रवेश
PR £ 5 "	चण्जैनोमे ग्वारमलक वराज महे द्वादित्य गर्दभिल्ल-
	स्त गाउव
ξξ ,,	धकोका मालवामें प्रवेश, पुरातन रा क संवत्-
	का प्रवृत्ति
£ 9-40 ,,	उज्जैनोमें शकाका राज्य
r 40 "	विक्रमादित्यके नेतृत्वमें शकोकी पराजय, मालव-
	गणकी स्वतत्रता, विक्रम सवत्का प्रवर्तन।
	सुराष्ट्र, मथुरा आदिमे शक्तनप वशाकी स्वापना
८ ई०।	पू०-४४ ई० जैनाचाय फुन्दकुन्द और उनके पाहुद्दयन्य
२५-७५ ई०	दिगम्बर परम्पराके भागमोका सक्लन
२६-६६ ई०	सुराष्ट्रका क्षहरात नहपान, गीतमीपुत्र शातकर्णी
६६ ई०	दक्षिणक दिगम्बर मूलसघमें उपमेदोको उत्पत्ति
७८ ई०	चप्टन-द्वारा पिरवमी क्षत्रपर्वशकी स्थापना, उज्जैनी-
	की विजय, शक समत्का प्रवर्त्तन
७८१०० ई०	पुरुषपुर (पेशायर) का कुपाण सम्राट् कनिष्क, बोद्धाचाय अध्यक्षीप
७९ ई०	जैनसद्यका दिगम्बर एवं इवेताम्बर सम्प्रदायोमें
	विभाजन
१२०-१८० ई०	जैनाचार्य समन्तभद्र
ममुख विधियाँ	808

tt tv f tes f m t f	महासम्बद्ध बहरावन क्षम मुहर्गन झीनहा हैन निव्यन्तिन्ताम अनुस्ते देखोरणी स्थारण । मानव हम बद्धां अन्तु दर्शिय साम्ये पूर्व नग्ने भागवरावका सन्तु वर्शिये साम्यर्थकरा उपयोग्नि साराहरूके साम् और क्षमण
tret	क्लाको हा वैकृतह वर्ताना प्रकरीन
ल ३५ ई	वैद्यालीका व्यवसर्थन गराम
ં મહેરે (नुस्त तकन् व क्लानी क्रण्या प्रसीत पाउट्टा प्राचनका संबद्धार सर्विद्यार मुख्य वैस्थी स्थानका
1001	मझाद सबुहबुख वर्शनीहै शिक्षुनीह वरमा पुरास-स्थानामा
int-stri	कम्मार चलानुध्य दिचोद विजयातिक स्थार्गी सर्वेत्राम
4 Y 8	 व सम्बद्धानिक अस्कृत्स्वचर्यम् अंक्टरेख कायम् विक्रेणः सम्बद्धानम् अवस्थ-सम्बद्धाः
\$ FSYMORY	मंत्र व्यक्तिया काॅर्बियो
2 PANTY	बनाद् पृ कारमुख
vit f	र्गेरहुवास्त त्रवम् सारकश्रवेदः अत्यापारी वि ^{त्रवी} स्रोतरचा क्षत्र
¥84-¥46 €	वार्थानरेस (नंद्रवर्ग कन्तव
# Yterrect	 मृतिय वर्गन करान कुण्यवमें प्रथमण निर्मेष्
141-741 (वस्त्रजोमें देशींज-तारा श्वेत्सम्बर आवनीया लंकनी
ነጻነት ለፍሎ ጀ	वशाद् रूपमृत्य
A43-45A (बैगानार्व पूजनाह देवनस्ट
#1	भारतीय इतिहास एक धी

४६५-५५५ ई०	महाकवि भारिव
४७३-५१५ ई०	हूणराज तोरमाण (कल्किपुत्र), जैनगुरु हरिगुप्त
४९२-५५२ ई०	गगनरेश दुविनीत कोंगुणी, चालुवय जयसिंह
	विष्णुवर्घन
४९७ ई०	पूर्वी गग मवत्का प्रवर्त्तन
५०५ ई०	वराहमिहिरकी पंचसिद्धान्तिका
छ० ५२०-५५० ई०	चालुनय पुलकेशि प्रथम
५३० ई०	मालव-नरेश यशोधर्मन द्वारा हूण मिहिरकुलकी
	पराजय
ल० ५५० ई०	चज्जैनोमे राजपि देवगुप्त
५५०-५७६ ई०	क्न्नोजमें मोखरि ईशान वर्मन, काचीमें सिहविष्णु
	पल्लव
६०० ६३० ई०	पल्लव महेद्र वर्मन प्रथम
ल० ६००-६८० ई०	जैन।चार्य अकलक देव, भतृहरि, कुमारिल भट्ट,
	धर्मकीत्ति, महाकवि दण्डो, वाण आदि
६०४ ई०	वच्चनिद-द्वारा पाण्डघ मदुरामें जैन द्रविडसधका
	पुन सगठन
६०५-११ ई०	वल्लभोका मैत्रक नरेश शिलादित्य धर्मादित्य प्रयम
६०६-४७ ई०	स्यानस्वरमें सम्राट् हपवर्धन, गौड नरेश शशाक
	(६१९ ई०)
६०८-४२ ई०	वातापीका चालुक्य-मम्राट् पुलकेशिन् द्विताय
६०९-७० ई०	गगनरेश भूविक्रम कोंगुणि
६१५ ई०	कुटज विष्णुवर्धन, वेंगिका प्रथम पूर्वी चालुक्य नरेश
६२९-४३ ई०	ह्वेनसागमा भारत-प्रवास
६३०-६६८ ई०	पल्लव नर्रामह धर्मन प्रथम
६३४ ई०	रविकीर्तिका ऐहोल शिलालेख

अवसम्बद्धा वास्तिवयो राजस्तानि बीज विद्यानी 147 6 बाच गार tvi z f शासका क्षाप्राट विक्रमादित्य जनम र्गय विषया ए नवकान to wer f ter te d चास्य शितपादिग्च \$ \$10-077 भारतम्य विजयादित्व w 4 वंशासने आरिपुर 33 w 250 वय जीवबर नचरन 3 -44 8 बधीयमें इस्रोमर्गन 911-014 E वदमीरमें क्रांक्शक्ति व्यापीय WHE WAS E पामाण विक्रमाशिय क्षेत्रीय We without I राध्यक्त अधिवर्ष west & वलमङ्ग लूरि-वरेशान्वरोध ८४ वन्छ स्थाल बनराव कुनशन्तारा वृक्षणाचे भागीत्वर वेर्व work if स्थान \$ \$4-24W राज्यं व कृष्ण अवव WE O-CRY & र्वकारी पालवंदो समग्रक *** ? \$ \$ वैभिना भूती बाकुका विकासकी नपूर्व WIR E पाम-गरा विक्योपे शोधर-वंशको स्थापना # 8476 E पूर्वर मिद्धार गरेश वरतराज 11 वक्रोरागपुरियो क्षूयव्यवस्था \$ 274-744 राष्ट्रपुट ह्य बचारावर्ष स्वामी वीरकेन-बारा जीववळ नावक बडाक्ककी we f श्वमाधित Ħ **पंचराया**र्थ WCT E विवर्धेणका हरियंश आस्त्रीथ इविदास । वृत्र सर्वे ...

-७९३ ६० कन्नीजमें इन्द्रायुचका राज्य ७२३-८१४ ई॰ राष्ट्रकृट गाविन्द तृतीय जगसुग ८१५- ७७ ई० राष्ट्रकृट सम्राट अमोधवर्ष प्रथम नृष्तुग ८१५- ५० ई० . गग राचमल सत्यवानय प्रथम ८२८- ७२ ई० वगाल-नरेश देवपाल ح الاراق و الاراق ا कन्नौनका गुर्जर-प्रतिहार मम्राट् भोजदेव ८७८-९१४ ई० राष्ट्रकृट कृष्ण दितीय स्रकालवर्ष रु० ९०७ ई० . परान्तक प्रथम चोल ९३९- ६७ ई० राष्ट्रकृट कृष्ण तृतीय, ९४७ ई० गुजरातमें मूलराज-द्वारा सोलंकी वशकी स्थापना ९५४-१००२ ई० खजुराहोका घग चरदेल ९६१- ७४ ई० गग मारसिंह ९७३- ९७ ई० ' तैलप द्वितीय, कल्याणीके उत्तरवृतीं चालुक्य वंशका सम्धापक । ९७४- ९५ ई० घारामें वाक्पति मुज,परमार ९७७ ई० व्यालियरमें सज्जदामन कच्छपघट ९७८ ई० , श्रवणवेल्गोलको गोम्मटेश बाहुबलि, मृत्तिका निर्माण ९८५-१०१६ ई० ॰ राजराजा चोल ९९७-१००९ ई० चालुक्य मत्याश्रय इरिव वेदिग १००६ ई० मुनीन्द्र वर्धमान-द्वारा हा्यसल राज्यकी स्थापना १०१४- ४२ ई० चालुक्य सम्राद जयसिंहे दिसीय १०१६- ४२ ई० राजे द्व चोल १०१८ ६० ई० अधाराका भोन परमार र्श०७६३११२६ ई० । चालुक्य, विक्रमादित्यू, (विक्रमाक) -१०९० ई० ६ कन्नीजमें चाद्रदेव द्वारा गहदवाल वंशकी स्थापना मेंसुख-विधिमॉ (त ⁴3 । । । □ । 0,1 R.

१ : ४-११४२ है : मानुनवाहेवा बयोग्ह विद्वारात्र कोर्नवी होबबल गरेच विन्त्रिय राजानुव्यानार्व tt t Ytt ११४३- ७६ वं ः युवरानका पुनारताम बोबंधोः वैनायार्ने हेन्स वजनेर-बारवरका स्वित्रसम् वीमृतः विकी **₩** ₹₹5 € बर्गमशाम क्षेत्रर कानानोर्ने विज्ञान कवापुरि, शावकनार किंग्रे HIST- TO E कत बताधी स्वालवा termen ne नरमञ्जा पत्रेक रिक्तीयें पृजीस्थ चौद्यान कडोवरें वर^{का} H EEWS SEE 1944 42 f नाधीनीवरेगी कारत-नामा tate # रेपनिविक्तं सावसंत्रा प्रथम शार्थकके कचार्धम धन्त्रण पत्नी tiert f taes f ः हारचन्त्रके होनचळ शतका प्रस्त इप्तिरं एवं पुरुषकाश्चाय विवक्तार धाली bant & eliteria. this tree f विकासकार्थे श्रीवा वीक् १४८६ ६२ ई. विज्यानगरी बरहित ब्राह्म वसीन रेपे १५ ५ वें विजयनकारी बारव बंखको स्थापना 24 5 7 8 विश्वकायर-गरेख प्रकारियराव thin if वाणिणीयाचा कुछ, शित्रकापार नैकार्य २. विदेशी शासनमें भारत दिवरी शतका आसम wit मरमॅक्स क्रिक्शर अवन बाह्यस्थ ः पुत्रम्कर्णन जाविकसारा वादिएकी वराज्य सीर first waterand server भारतीय इतिहास । एक परि 10

९८७ ई० ९९६-१०२७ ई० ११९१ ई० ३	मटिण्डेके राजा अयपाल साही-द्वारा सृबुक्तगीन गजनवीकी पराजय महमूद गुजनवीके कुटेरे आक्रमण, अलविष्यनी तराइनका प्रथम-गुढ, राजपृतीं-द्वारा मृहम्मद गोरीको पराजय
११९२- ९३ ई०	त्तराइनका दूसरा मृद्ध, पृथ्वीराजकी पराजय, दिल्लोपर मुसलमानाका अधिकार
११९४ ई०	जयचाद्रकी पराजय, वात्रीजपर मुमलमानोंका अधिकार
रै१९७ ई०	भीमदेव मोलको-द्वारा ग्रारीको सेनाआको पराजय
११९९ ई०	मुहम्मदिबन विख्तयार खलजी-द्वारा विहार व वगालपर अधिकार
१२०६ ई०	गोरीको मृत्यु, कुनुबुद्दोन ऐवक द्वारा दिल्लीमें गुलामयंशको स्यापना
१२१२-३६ ई०	इल्तुतिमश दिल्लीमा सुनतान
१२२५ ई०	चंगेजर्खा मंगोलका आक्रमण
१२६६ ८६ 🕏	वलवन
१२९० ई०	जलालुद्दोन खलजी द्वारा दिल्लीमें खलजोबदाकी स्थापना
१२९६-१३१६ ६०	क्षलाउद्दोन खलजी
१३२१ ई॰	ग्राजो सुग्रलुक-द्वारा दिल्लीमें तुग्रलुक्वशकी स्थापना
१३२५-५१ ई०	मुहम्मद तुग्रलुक, अफोकी यात्री इञ्चवतुता
१३४७ ई०	दक्षिण (गुलवर्गा) में बहमनी राज्यकी स्पापना
ममुख तिथियाँ	084

1144 11 1 E धानकेलवा पानको वंद्र र्तेमुग्रमंत्रका भारत-बाहनम् और स्टन्धर 1256 FE 2436 E erferente einer eine बीनपुरका स्पृति बस्तनप H tratt बारह (बालका) का गुण्छान होर्घन दोगी 2 × 39 € नुबन्दर बंगका जन्म दिल्लीमें सैयर अगरी म्याtxtet का-बंबर निकासी-कारा नवनीरका मुक्तान अनुवक्तावदीन (मुक्तात) trtu-t f tris-cat शासदसः युवतान बहुन्द नमयो दिन्त्रीमें बहुत्तेच क्षेत्री-दारा क्षेत्री वंदरी tyn t स्थापना वैधाइवै राजा पुरुष tynn this d मुजरापना बुक्तान बहुन्द वेनहा \$ 95-63 YS ः ब्रह्मणी शास्त्रका प्रतिस्थ सन्ती सहनूर गर्यो B yers your वराग्वी समस्त्राती क्षत्रना tyes that if रिल्डीकः नुचताय निकन्दर बीडी travalet è बीजापुरकी बाविक्याही बस्तका tvs tss & mentanggal fermanal seems tura then & वंशासका भुत्तराम हुवेनपाद र्णवाली वारणोडिनामाचा कारीकटवें जानवर्ष tyte f एन्बुवर्जनाय बीआर्वे वृर्ववाकी स्टब्सी स्थापन 27 25 2 25-4175 ा विकासि इकादिक क्रोमी ANTE ESCOR बोसकुण्याची पुतुबबाती मारबीय इतिहास *। एक* वर्षि *15

THE BUILDING

1141 22 f

श्रीरीवयस्य नुवलकः रिस्त्यीके तुवी बाब्रामस

रैज्यर ५४ ई०। ग्रामीमी गुवर्भेग सुद्धे रेज्यर-५४ ई० . दितीय श्रीवरक का छीनी पुढ़ रैप्परे ६० वलाहर-द्वारा अर्थाटका पेरा, अँगरेखी राष्ट्रनीतर शिशिका सूत्रपाय रे७५६ ६३ ई० सोसरा ॲगरत फाम्मोमी युद्ध १७५६ के अहमदवाह धन्यसंन्यास विम्लीकी सृट रेष्पं रं प्रामीना युक्त, संगालपर अंगरेओंना प्रमुख १७६१ है॰ पानीपतवा सामग पुत्त, मराठोवी पराजय, पंचताक्षावा प्रत्य १७६१-८२ ६० मैसूरका हुंदरअली १७६५ देव : लाट मलाद्व संगालका गयनंत, इलाहाबादकी गरिय रै७६७-६९ ई० प्रथम ॲंगरेज मैगूर युद १७०२ ०४ ६० चारेन हेम्टिग्स बनाल्या महार १७३३ ई० नेगुलेशिंग ऐस्ट रै७७४-८५ ई० यारेन हेस्टिमा अँगरको भारतका गर्वार-जनरल रै७७५ ई॰ सर विलियम ओम द्वारा बगाल एधियाटिक -मोराइटाकी स्वापना १७७५-८२ ई० प्रवम अंगरेज-मराठा युव १७८०-८४ ५० दूसरा अंगरेज-मैसूर युद

१७८८ ई० विद्या दिवस चेवड १७८६ ९३ ई० ए। इंकानियालिस (ग० ज०), इस्तमरारी यन्द्रोग्रहन

१७९३ ई० सम्पनीका चाटर १७९३ ९८ ई॰ सर जॉन कोर (ग० ज०), हस्तक्षेप न करने-की नीति

ttya f ममनेनी करानीत्री स्वास्ता es et क्यार्थिकार मुख साम्राज्यांकी क्यों कार्ये बीरवरेका ग्यामिक tt ct 24 मधन-मञ्जू बीरंपच व tree t netal-ger met been ferfe tized तिश्राणेश सार्व्यक्षेत्रेड बराज्ञ साराधी स्वास्त 16 1 राज्य पुत्र बीरंग्डेक्श व्यापनवर विवरेडोपी यमस्या यादेवी स्वयम to stood क्राज्यमानाय क्राज्याकाम् व वंद्रशासार विरेक्तिसाम् मारक्षी सर्, अवरेक्षेत्रा प्रमान Parent. 19 8-27 6 मुक्त-बारबन्द्र बारहरवाद् जनव t ct नंतुला हैन्द्र इत्तिया बन्तवी (बेररेवी) t tolk f प्रथम नेपारा कान्यादी विरस्तात teles वेंगरेबांची कार्याट वर्षकृष्टिकरके स्वाप्तारी व्यक्तिकार प्रार्टिक t Roor # वेदण बाजीगाव प्रचय t teref देशायास जानस्याह विश्वयन्त्रम रूप निकास tath e f वाम्नोनी नश्मर हणूबा ton t नारिरमाह क्रांग्रेज माजनम दिल्मीची गुर धीर दुरवाकाण्ड tor sed नैयस बाणामी बामीसार torevet अवन धेररेज काल्डीमी कड 1= मार्गाम इतिहाल : एक इवि

बह वर्षे संवरेक

ttv f

१७४२-५४ ई० • फ्रान्सीसी गवर्नर हुप्ले १७४९-५४ ई० द्वितीय अँगरेज फान्सीसी युद्ध १७५१ ई॰ वलाइव-द्वारा वर्काटका घेरा, वँगरेजी राजनैतिक शक्तिका सूत्रपात १७५६ ६३ ६० तीसरा अँगरेज फान्सीसी युद्ध १७५६ ई० अहमदशाह अन्दाली-द्वारा दिल्लीकी लूट १७५७ ई० पलासीका युद्ध, वगालपर कॅगरेजोका प्रमुख १७६१ ई० पानीपतका तीसरा युद्ध, मराठींकी पराजय, पेशवाओका पतन १७६१-८२ ई० मैसूरका हैदरअली १७६५ ई० लाई क्लाइव वगालका गवनर, इलाहाबादकी सचि १७६७ ६९ 🚓 प्रयम अँगरेज-मैसूर युद्ध १७७२-७४ 🛭 ई० : वारेन हेस्टिग्स बगालका गवर्नर १७७३ ई० रेगलेटिंग ऐक्ट १७७४-८५ ई० वारेन हेस्टिंग्स अँगरेजी भारतका गवर्नर-जनरल १७७५ ई० सर विलियम जोन्स-द्वारा वगाल एशियाटिक सोसाइटोकी स्थापना १७७५-८२ ई० प्रथम अँगरेज-मराठा युद १७८०-८४ ई० दूसरा अँगरेज-मैसूर युद्ध विदस इण्डिया ऐक्ट 20CX \$0 लाड कार्नवालिम (ग० ज०), इम्तमरारी

वन्दोबस्त कम्पनीका चाटर १७९३ ई० १७९३ ९८ ई० सर जॉन शोर (ग० ज०), हस्तक्षेप न करने-की नीति

१७८६-९३ €०

```
चैत्रावमें रामग्रीय निष्ठः शिवा राज्य मेरवाप
to a talk f
                 नार्ड वेनेत्रको (म. च.) नारका वन्तिका
tore to a f
                 भीवा अंगरेज-तेतृत वृक्ष होतु तुम्लत्वा कर
$ 22.58#5
                 बुन्दर भैनरेज-भराउर नज
21 Park $
10 4 4 25
                 शरक्षार्जनाथीं (च व )
                 माई विग्री (घघ)
  1 0-13 E
     1412 f
                 काश्मीका बार्टर
 1 48 455
                सार्व हेस्टिन (व व )
                 राजा राजबादुरशावनारा हाहा बनावधी
  1615 €
                 रभावना
                नेगाक बुद्ध और सिमीनी मी मन्ति
     tett f
                 रिकारियोधा दवन
  $ 25 $15$
                कीवना मधाप्र पृत्र, बराहा धरिनवा पत्रा
  1014-15 E
                 माई एण्डएरे (व थ )
  1571-76
   1 stress
                 जनम वर्गा वड
  $282 14 B
                 मर विशिवन वैश्विक और वसके मुचार
      2 215 £
                 गिमको समारोका स्वय
      1411 (
                 वकालाका कार्य ह
  1011111
                 नर चार्ल्य येडशक् (व. घ.)
                 सरह बाक्तीपह ( स. स. ) अथम अपना हुई
   tell vi f
                 कार्यक्तिमचरा (च व )
   terrort
      रिटर है । फिल्को अंगरेश राज्यन निवास
                 वार्वहावित्र (शंस ) अपन क्रिक्त हैर्नेन
   terr ve f
                 विकासम्बद्धाः १९व
   torous t
                 जारी समझीती
      teret
                 पंतास राज्यका सन्त
```

1288 E0 प्रजावको श्रीवरेकी राज्यमे विन्तानर १८५२ ई० दुसरा वर्मा गुद्ध, दक्षिणी बर्मापर अँगरेजाका अधिकार १८५३ €0 धांनी राज्यका अन्त, कम्पनीका नाटर, भारतमें रेसका उसरी होता १८५४ €0 चान्म ब्यामा निधा-सम्बाधी रिवाट **{८५६ ई**0 बयधकी नदायोका अन्त १८५७ ६० . अँगरेजी द्यामनवे विषय देशस्यापी सैनिक विष्लव 4046 E0 विद्राहका दमन, भारतया घासन इंग्लैण्डकी सरगारा वम्पनामे छोनकर अपने हाथमें लिया. महारानी विषटाश्याकी विज्ञप्ति, ऐपट फार दो घंटर गवनमेण्ट आफ दण्डिया, लाह पैतिम प्रथम यायसगय १८५८-१९४७ ६० पनसम्यान स्म इण्डिया की सल ऐवट १८६१ ई० 9200 fo म्युनिसिपल ऐषट द्वारा स्वायत्त शासनकौ मान्य करना 8503 E0 प्रथम जन-गणना भारतीय मध नामर संस्थाकी स्थापना १८७६ ई० विभिन्न स्थानोमें म्युनिसिपल व हिस्ट्वट बोहोंको 2663 CX 50 स्यापना इण्हियन नेपानल काँग्रेसकी स्थापना 2664 Eo अपर इण्डिया मुमलिम एसोनियेशनकी स्थापना 2666 €0 १८९२ ई० दुमरा इण्डिया कौन्सिल ऐक्ट सगभगं आ दालन १९०४-०५ ६० मुमलिम जीगकी स्थापना 1,7,880£ £0 मेसुख तिथियाँ

10 F 9

1

ł

₹**₩\$८** ₹**८३९** € र्पनावये रणजीत तिह दिश्य राज्य संस्थाप 1486 16 48 मार्ड वेकेसकी (न स) तहाएक वन्ति नय \$ 97.58#\$ चीना अंगरेश-मेनुर युक्त होतु सुच्छरका स्प बुक्ता जैनरेज-नराहा बज 16 4-04 E गर काम वाची (व व) 14 4-71 € लाड विच्हो (व च) \$ #155 थम्पनीका चार्टेर ₹ 49 4555 णाक्ष ≹स्टिम्स (थ स.) \$ 2555 राज्य रायमीशृतसम्बद्धारस ब्रह्म स्थानको स्मापन 2024 E वेपाल-पुढ धीर सिर्वाडीका दन्ति \$ 25 2759 विन्हारियोका श्रमन tetwite f बीबरा मराज बुद्ध मराज दक्तिका राज ₹ 25-425 भाड पंचारत (व भ) B FF-4758 त्रमम बर्गी वज 1272 14 # गर विभिन्न देखिन और क्लंके नुवार १८३२ र्रे विलावे समाचीका बास tarr f वस्त्रमीका बार्टर 1214-45 8 यर पत्रव नैटक्टक (ग.स.) 1614 98 नाप्र वाक्ष्मेच्य (स. स.) जनम अञ्चल सुर tart me बाड एक्सिक्स (ए व) tont क्रिक्सो बॅबरेबी राज्यमे विकास terre t मार्वशासिय (४ म) अपन विलय पूर्व विकासका राज्य Parons F वार्व स्वर्धनी teret क्याच चारवदा क्या भारतीय इतिहस्त एक धी

पजाबबो ऑगरेजी राज्यमें मिलाना १८५२ ई० दूसरा वर्मा युद्ध, दक्षिणी बर्मापर अँगरेजोका अधिकार १८५३ ई० . झाँमो राज्यका अन्त, कम्पनीका चार्टर, भारतमें रेलका जारी होना १८५४ ई० चालम वृहकी विक्षा-सम्बन्धी रिपोट १८५६ ई० अवधकी नवाबीका अन्त १८५७ ई० . अँगरेजी शासनके विरुद्ध देशम्यापी सैनिक विप्लव १८५८ ई० विद्रोहका दमन, भारतका शासन इंग्लैण्डकी सरकारने कम्पनीसे छीनकर अपने हाथमें लिया. महारानी विषटोरियाकी विक्रप्ति, ऐक्ट फ़ार दी बैटर गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया, लाई कैनिंग प्रथम वायमराय ' १८५८-१९४७ ई० पुनक्त्यान युग १८६१ ई० इण्डिया की सिल ऐक्ट १८७० ई० - म्युनिसिपल ऐषट द्वारा स्वायत्त बासनको मान्य करना १८७१ ई० प्रथम जन-गणना १८७६ ई० भारतीय मध नामक संस्थाकी स्थापना विभिन्न स्थानोमें स्युनिमिपल व हिस्ट्विट बोहोंकी १८८३-८४ ई० स्यापना डण्डियन नेघानल काँग्रेसकी स्थापना १८८५ ६० अपर इण्डिया मुमिलिम एसोसियेशनकी स्यापना 8666 €0 दूमरा इण्डिया कौन्सिल ऐक्ट १८९२ ई० वगभंगं सान्दास्त १९०४-०५ ई० 11 1 2 3 0 5 \$0 मुमलिम कोगको स्थापना

क्षित्रका मूरत कांववेदन, भरम और वर्ग 2 . 25 दल असम हुए विन्दी-वार्ने दिवास समस्त्रीक ब्रीड द्विता देख t ef दिल्ली बरबाए, इंब्लिनको राजा और रामीके \$ 4575 अन्यक्तके कावाची \$ 354759 नरीपीय स्वापन वर्षितका सन्तरक क्रांक्वेश्वन वरम-शर्थ वस 2 2579 विके युक्तमानीके दाश कदमत वेल, वर्ष बैनेन्टवा होनळक शासीचन माचेप्-नेप्डडोड रिनीत वक्तिस बाड डॉप्डस 2722 \$ ð-c ओक्कम विकरकी मृत्यु, राज्योदी करिके 2 173 हैला करे महारात नान्त्रीका बस्त्रपीय बान्दोबन, विकास 2 5573 राज्यों कर \$ \$593 काम्य वेकामतीको स्थापना \$ 2525 कडिनचा शक्कीर अधिरेक्षण पूर्व स्थामीनार्ज सरय शोकिन 233 6 नाइक्त क्योबनची रिचेट 2 525 गरान्ता नानीके केन्द्रकी स्टीका सारार्थन मानोक्तन और शामाबद्ध शासम \$ \$ \$ -- \$ \$ \$ नण्डको शीव अलमेश काला मह \$ 5575 रेम्द्रे वेकदानस्था काव्यव व्याप \$ \$533 E धेर-पर 1515 F क्वरीवेच्द्र जांद्र इतिहता हैच्द्र t tuf वर्ष प्रान्तीने कवित प्रतिकारकारित स्थापना ... मारबीय इतिहास । वृत्र दवि

१९३९-४५ ई० विश्वयुद्ध

१९४२ ई० 'भारत छोछो' बान्दोलन, सुमाप बोसका झाजाद हिन्द प्रयस्न, मुहम्मदबलो जिन्ना-द्वारा पाकिस्तान-की माँग, स्ट्रैफ़ड क्रित्सका भारत आगमन और मारतीय सप-योजना प्रस्तुत करना

१९४४ ६० वेवल याजना

१९४५ ई० फीबनेट मिशन एव पालमेण्टरी हेलीगेशन

१९४६-४७ ई० अन्तरिम शामन

१९४७ ई॰ (१५ अगस्त), इन्हेंण्डकी सरकारका इण्डियन इण्डेपण्डेस ऐपट, भाग्तवर्षका विभाजन और स्वतन्त्रता

१९४८ ई० (३० जनवरी), महात्मा गान्योकी हत्या

१९५० ई० (२६ जनवरी), भारतीय संविधानका कार्यो-न्यित होना

. . . कांत्रमका सुरह समिवेदम अरम और नार ₹**8 1847 E**¥ 37 75 विष्टी-गार्के रिकार्न वयनवेष्ट ब्रांड इनिया रेब tere f दिल्ली बरबार, इंजीन्डके राजा बॉर छपीडे भारकारे कान्यरको 151×12 € ः सुरोशीय सहस्रद्ध \$ 2225 E परितका सक्ष्मक समिवेश्वय वरक-नरह रूप विने वृद्धसम्बद्धि काव कक्षत्र रेगर, रूपे वैनेष्यका होत्रकत सामग्रिका tsts f नान्द्रेल्-नेव्यच्येष रिनीर्ट वर्कनेक्य बांत्र प्रीयम ऐस्ट 2222 \$ नोकमान्य विकक्षी भूत्यु, बाग्यीबी वर्षिकी See all 2572 £ महाला नान्त्रोका बरहाबीय आम्बोत्तम क्रिकाम अस्त्री कर terr f बास्य वंशक्तींकी स्वाचना ttre f क्षतिका काहीर व्यक्तिका वर्ष सामीमा करत श्रीविक 848 E बाहनत करीक्षकरे रिपोर्ट 1 125 महत्रका मान्त्रीके नेत्रशर्वे समित्रक शासनी मान्दोत्तम और बरनाव्य प्रारम्ब 259-126 क्त्यको तीन शेकनेव कान्य माँ \$ 1929 रिने वैकरानसका कानुशक द्वार \$ \$577 और-भग \$ 7175 नवर्षिया बांड श्रीकरा देश t wirs को प्राचीने कांचेस सीमान स्वीची स्थाना कास्तीय इक्सिक । एवं परि